

शहाहार यसा एडाए ट्या एउट



🛘 भी अधियमी कुमार पाठक

अन्य उत्सर्वों की समाप्ति पर वैदिक धर्म की बस के उद्भोग लगावे जाते हैं और वैदिक धर्म की अन्य मत मतान्तरों से वलना करके इसे ही आर्थ समाज के विद्वान तथा वपदेशक सर्वश्रेष्ठ बताते हैं मैने कई आर्य विद्वानों से पूछा कि क्या ससार मे वैदिक धर्म का कही अस्तित्व है इसके वत्तर में प्राय मधी ने यह कहा कि वैदिक धर्म का अस्तित्व तो है परना आजकल इस निन्दू धर्म कहा जाता है परन्तु एक दो विद्वानो ने स्पष्ट रूप स स्वीकार किया कि प्रथक स अन्य मतो की तरह वैदिक धर्म तो नहीं है और आर्य समाज जिन सिद्धानतो को मानता है वे वैदिक धर्म के सिद्धाना ही हैं परन्तु इन सिद्धान्तो पर आचरण करने वाले पारवार बहुत कम हैं वास्तव मे अगर देखा जावे तो

आर्थ समाज के सत्सानी तथा

वैदिक धर्म का ससार मे कोई अस्तित्व ही नहीं है क्योंकि हिन्दू धर्म मे तो भिन्न भिन्न विचारों के लोग हैं अर्चात् ईस्वर को मानने बाले न मानने वाले मूर्ति पूजा करने वाले वया न करने वाले इत्यादि इसमे तो बहुत से सम्प्रदाय हैं जिनकी अपनी अपनी अलग पुजा पद्धतिया हैं फिर इसे वैदिक धर्म बैदये करता जा सकता है

महर्षि दयानन्द ने हमे बताया था कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है हिन्दू नहीं इसीलिए उन्होंने आर्थ समाज के नाम से एक आन्दोलन चलाया और उसके दस नियम बनाये जो लोग्र आर्थ समाज के सदस्य बनते हैं उनके िए क्र अनिवार्य है कि इन सदस्यों के परिवार एक ही वैदिक

नियमों के अनुसार चले महर्षि न यह भी कहा कि वह कोई मत अथवा पथ नहीं चलाना चाहते वह तो सत्य सनातन वैटिक धर्म को मानते हैं जिसे ब्रह्म से जैमिनि मृति तक सभी मानते आये हैं आर्य समाज का लक्ष्य इसी धर्म का प्रचार प्रसार करना है जो वेद पर आधारित है भवविं ने 3 दिसम्बर 880 को आर्थ समाव मुलतान के मंत्री मा दवाराम वर्मा को एक पत्र लिखायाकि 88 में होने वाली जनगणना में आर्य लोग धर्म के खाने मे वैदिक धर्म तथा जाति के खाने में आर्य लिखाये परन्तु खोद है कि आर्य नेताओं ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया हर 0 वर्ष बाद जब ननगणना होती है तो सार्वदेशिक आर्व प्रतिनिधि सभा द्वारा सब आयाँ को यह निर्देश दिया जाता है परन्त यह कुछ पता नहीं कि कितने लोग इसे मान कर अपने अपने को वैदिक धर्मी लिखाते हैं मेरे विचार मे तो सभी आर्यधर्म के खाने मे हिन्द ही खिलाते हैं इसलिए अगर वैदिक धर्मी बन जाते तो वैदिक धर्म की वृद्धि होती इस लिए इस बात का तो खुब प्रचार होना चाहिए कि सभी लोग जनगणना तथा अन्य सरकारी फार्मो इत्यादि मे अपना धर्म क्रिन्दून लिखाकर वैदिक वर्म ही लिखाये तथा सरकार के भी बह सरकारी अधिकारी इसे मना करें पेसा करने पर वैटिक धर्म पक जवितजाली धर्म के रूप मे ससार में सब से बड़ा हो महता है क्योंकि इसके सब सिद्धान्त बद्धि अनुकूल हैं इस वरह सब आर्य

९९ दयानन्दास्ट 4 वार्षिक शुरुक 50 रूपये आजीवन

श्री प० मनीषीदेव जी नही

रपव

आर्य समाज माहल टाकन अमृतसर के पुरोहित प मनीची देव जा शास्त्री का दिनाक 24 99 को देहाना हो गया श्री मनीची देव जी न अपने जीवन में आर्य समाज की बहुत सेवा की है अपने पुत्रो व पुत्रियों को भी वैदिक विचार से ओव् प्रोत किया उनके सपुत्र प राकेश शास्त्रां पुरोहित आर्य समाज सै चण्डीगढ तथा अनिल कुमार जा नरेश कुमार तीनो ही पुरोहित रूप आर्य समाज का सवा कर रहे है उनके दामाद प अनिरुद्ध जी शास्त्री आर्य समाज माइल टाऊन लुधियाना मे परोाहन रूप में कार्य कर रहे हैं उनका सुपुत्री विशोका यात सन्यास का दाक्षा लकर स्थान स्थान पर भूम भूम कर वेद प्रचार कर रही है

इस प्रकार श्रा प मनीष देव जी ने अपना सारा परिवार आय समान के अपर्ण किया हुआ है और उनके सभी बाचे आर्य समाज का संवा कर रहे है यह उनको आर्थ समाज के प्रति बहत बड़ी देन है वह स्थय भा जावन भर अन्तिम समय तक आर्थ समाज का कार्य करत रहे उनका अभाव सदा आर्य समाज मे खटकता रहेगा हम परम पिता परमात्मा स प्रार्थना करते हैं कि वह उस पवित्र आ मा को सदगति प्रदान करे तथ उनके परिवार जनो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति द

हम सभा कार्यालय के सभी कमबारा उन्हें अपना श्रद्धाजान भ करते है धर्मदेव आर्यं कार्यालयाध्यक्ष

करते हे अब हो आर्य समाज

अलग नहीं हो सकता पर हिन्द तो कोई धर्म ही नहीं है अगर वैदिक धर्म लिखान म किसी का सकोच हो ता उसके साथ हैकेट में हिन्दू भी लिखा जा सकता है आर्थ नेताओं से निवेदन है कि परस्पर लढाई झगढे द्वेष की बाते छोडे परस्पर मिलजल कर इस पर विचार करे तथा महर्षि दयानन्द का आदेश मान कर सभी आर्य परिवार अपना धर्म वैदिक धर्म हा

धर्म को मानने वाले होगे आजकल कोई आन्दोलन चलान मे भा अक्षम तो अन्य हिन्दओं की तरह आर्य होता जा रहा है क्यांकि इसक सदस्यों के परिवार भी अलग लिए कार्यकर्ता हा नहां मिलत अलग विचारों के हो रहे हैं जिस अगर सब सदस्यों के परिवार वैदिक तरह कि घर मे अगर परुष आर्य धर्मी हो तो आर्य समाज कभी समाज का सदस्य है तो ऐसे शिथिल नहीं हो सकता क्योंकि अधिकतर पुरुषो की स्त्रिया अपने घर से ही कार्यकर्ता मिल पौराणिक अथवा र धा स्वामी जाये जिस तरह एक ईसाई अथवा इत्यादि हैं पुत्र पुत्रियों में से कोई मुसलमान की सन्तान भी उसी धर्म हनुमान चालीसा पढता है तो कोई को मानने वाली होती है ऐसे ही शिवजी पर जल बढाता अथवा आयों की सन्ताने भी हो जाती ने नास्तिक है इसीलिए बहुत से आर्थ समाज हिन्दुओं से कभा

आर्थ सदस्यों को यह बेदना रहती है कि उनके परिवार आर्य समाज मे नहीं आते महिला सदस्यों की सख्या अगर्व समाजो मे काफी कम है विससे उनकी सन्तान पाता पिता के बीच में फराकर गर जाती है कि वह किसे ठीक समझे किसे इन्ही कारणो से आर्य समाज के सत्सगों में बहुत कम लोग आते हैं और आर्थ समाज शिथिल होता जा रहा है आखिर लिखामे और किसी योग्य व्यक्ति आर्थ समाज हो एक आन्दोलन है और आन्दोलन हमेशा नहीं चला शेष पुष्ठ ५ पर

## मनस्मति में प्रतिपादित धर्म का स्वरुप

🗆 भी आरोक कुमार कमाल कारा कमाल किलिय बटेएल 🕸 ल कुरुकोत्र अस्पित्यतः।आआ

नामुजत्र हि सहायार्थं पिता

अकेला ही जीव जन्म और

माता च तिष्ठत । न पुत्रदारा न

मृत्युको प्रप्त होवा है। एक ही

धर्म सत्कर्म का फल सुखा और

अधर्मका फल दुख भोगता है।

अर्थात् सुभाशुभ कर्म ही जीवातमा

के साथ जाते हैं जिनका फल

जीवात्मा सुख दुख रूप मे भोगता है इसलिये जो मनुष्य धर्म को

प्रधान समझता है और धर्म के

अनुष्ठान से जिसका मन पाप से

दर हो गया है । ऐसा व्यक्ति

परमात्मा को शीध प्राप्त करता है।

को धर्म कर विनाश करता है उसे

धर्म नष्ट कर देता और जो धर्म

की रक्षा करता है वह धर्म से

रक्षति रक्षित । तस्माद्धमौ न

इन्तव्यो मानो धर्मी हतोवधीत ।।

अर्थात् ब्रह्मचारी गृहस्य वानप्रस्थ

तथा सन्मासियो आदि सब अनुष्यो

को योग्य है कि निम्नलिखित दस

लक्षणो से युक्त धर्म का सेवन

और उससे विरुद्ध अधर्म का त्याग

ग्रोचिमिन्द्रिय निग्रह । धीर्विद्या

सत्यमकोधी दशक धर्म

अस्तेम शौच इन्द्रिय निगह धी

विधा सत्य और अक्रोध इन दसी

अर्थोत् भृषि क्षमा दम

1 धृति सदा वैर्थ रखना

द्रष्टान्त-महर्षि दक्षित द्वारा

असुर वृत्रासुर के वध के लिये

अपनी अस्थियों से वन्न निर्माण के

लिये यह सोचकर देह त्याग दी

कि शरीर तो एक दिन वायेगा ही

वह किसी का उपकार करता जए

चक्र मुझ प्राणी का परम सौभाग्य।

? क्षमा निन्दा स्तुति मान अपमान हानि लाभ आदि दुखो

धन्य हैं महर्षि दक्षिण की धृति

धृति क्षमा दमोऽस्तेय

प्रयत्न से किया करे।

लक्षणम् ॥

का नाम धर्म हैं

अर्थात् सन्तोष

अत चारी आश्रमी वाले

सदा सुरक्षित रहता है । धर्म एव इतो हन्ति धर्मी

जाति धर्मस्तिष्ठति केवला ।।

मनुस्मृति के रखबति। मनु मानवीय संध्य के प्रथम महाप्रव है मनुस्मृति सभी स्मृतियो मे प्रधान लिये सहायक बनता है । परलोक में माता पिता पुत्र पत्नी और समझी जाती है । इस ग्रन्थ की सभी विद्वानों ने प्रशसा की है इस नावी (गोत्रीय) कोई भी सहायक ग्रन्य में मनु ने ईश्वरीय ज्ञान वेद नहीं होता केवल एक भर्न ही को प्रमाण मानकर अपनी मान्यता सहायक के रूप में सहता है प्रस्तुत करते हुए मानव धर्म का विश्लेषण किया है

धर्म का लक्षण करते हुए मन् ने लिखा है कि

वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन । एतच्चुर्विध प्राह्व साक्षाद धर्मस्य लक्षणम् ।।

अर्थात वेद स्मृति सत्यपुरुषो को आधरण और अपने आत्मा के अनुकुल प्रिय लगने वाला आचरण दूसरों के साथ करना ये धर्म के चार स्पन्ट लक्षण है

आचार परमो धर्म श्रत्यक्त स्मातं एव च अर्पात् वेद और वेदानकल स्मतियों में कहा हुआ अत्यारण ही शेष्ट्र धर्म है जल आत्मोनति चारने वाले दिन को नाहिये कि वह इस बेच्ट आचरण

सदा प्रयत्नशील रहे तस्मादस्मिन् सदायुक्तो नित्य स्यादात्भवात द्विज ।

आगे आचरण की महत्ता को निखे हुए कहा है आचाराद् विब्युतो विद्यो न वेद फलमञ्जूते। आचारेण तु सयुक्त सम्पूर्ण फलभाग भवेत् ।। अर्थात् जो द्विज धर्माधरण से 'हित है वह वेद मे प्रतिपादित धर्म जनित सुख के फल को नहीं प्राप्त कर सकता है तथा जो धर्माचरण करता है वह सम्पूर्ण

पुख का प्राप्त करता है धर्म का जान वही व्यक्ति प्राप्त

कर सकता है जो अर्थ तथा काम स आसक्त नहीं है परन्तु भोगी कामा लोभी और स्वाधी व्यक्ति को धर्मका वर्षभा अच्छा नही लगती यह एक दृष्टाना से स्पष्ट किया जासकता है दुर्योधन न यागेश्वर श्री कृष्ण से कहा था कि

में धर्म जानता हू ह कृष्ण किन्तु धर्म की ओर मेरी प्रवृति नहीं होता \* और अधर्म भी मैं जानता हु कन्तु उससे हटने की पन नहीं करता है

मनुष्य को धर्म के अर्थन मे जन्दबाजी नहां करना चाहिये। जिस प्रकार छोटी दीमक धारे धीरे पूरी न्या का निर्माण कर नेता ह उसी Jकार मानव का उद्विग्न हुए **बि**ना

न करना । यबाशकित धीरे धीरे धर्म अर्जन करना चाहिये तभी धर्म परलोक

दृष्टान्त-स्वामी दवानन्द ने अपने हत्यारे को न केवल क्षमा किया अधितु उसे बचाने के लिये अपने पास से धन देकर उसे किसी दूर देश में भागने के लिये विवश भी किया। क्या यह श्रमाशीलका की पराकाच्छा नहीं है।

3 दम-मन को विषयों से रोकना । मन को सदा धर्म मे प्रवृत्त कर अधर्म से रोक देना अर्थात अधर्म करने की इच्छा भी न ववे ।

दब्दान्त एकान्त में ताजि के समय जब अपारा दर्वसी कामार होकर कुन्ती पुत्र अर्जुन के कक्ष मे आई तो अर्जुन ने कहा जैसे कुन्ती देवी मेरी माता है वैसे ही आप भी मेरी माता है आप अपने इस पुत्र पर प्रसन्न हो। अर्थात् उर्वशी का यौवन रूप नुगार अर्जुन के दम (मन के समम) को भी विचलित नहीं कर सका

4 अस्तेय-चोरी त्याग अर्थात् बिना आज्ञा वा छल कपट विक्वासभात का किसी व्यवकार तथा वेद विरुद्ध उपदेश से पर पदार्थ का ग्रहण करना चोरी और उसको छोड देना साहुकारी कहाती है । काय वचन और मन से परद्रव्य को न चुराना ।

दुष्टान्त- एक बार एक छोटा लढका अपने पडोसी के घर गया। पड़ोसी के घर में उस समय कोई न था। लडके ने देखा एक डोली में ताने सेन रखे थे । लेकिन उसने उन सेबो को हाय तक नहीं लगाया। पडोसी जब घर आया तो उसने देखा कि डोली में सेव वैसे के रैसे रखे हैं उसने लडके से पूछा क्या तुम्हे सेव अच्छे नहीं लगते। तुमने सेब क्यो नहीं चुराये? यहा कोई देखने वाला तो था नहीं लडका कोला मुझे सेन बहुत अच्छे लगते है । चारे कोई देखने वाला हो यान हो मैं तो देखने वाला था और मुझे अपने को कोई चोरी बेईमानी का काम करता हुआ नहीं देखना चाहिये धन्म है छोटे से लडके की

अस्तेयता । 5 **शीख-जै**से स्वर्ण पात्र जल मात्र से धीरे से शुद्ध हो जाता है प्पन्तु स्वर्ण भातु अग्नि मे तपाने से मैल नष्ट होकर शुद्ध होती है । तसी तरह मनुष्य की बहरी शुद्धि स्तान आदि से हो जाता है उसी तरह प्राणायाम करके मा आदि इन्द्रियों के दोष श्रीण डोकर निर्मल हो जाते हैं।

मे भी सहनशील रहना सामर्थ्य इन्डिय निरुध-इन्डियो रहते हुए भी अपकारी का अपकार को वस में रखना अधर्माचरणो से रोक के इन्द्रियों को धर्म में डी सदा चलाना। विषयों के प्रति आकृष्ट इन्द्रियों का प्रत्याकर्षण

दुष्टान्त--एक रावकुमार की पत्नी बहुत सुन्दर थी । एक दिन राजकुमार को राजकार्य हेतु बाहर जाने के लिये उद्यव होना पडा राजकुमार को परम धार्मिक अद्रोहक को छोडकर अपना रूपवती पत्नी की रक्षा हेतु कोई दूसरा नहीं दिखाता था । मैं अपन श्रम्या पर तम्हारी पत्नी को शयन कराकगा । उसकी रक्षा लोकाचार के विपरीत व्यवहार के बिना मुझे नबर नहीं आदी । अगर आपका यह तर्त स्वीकार हो तो आप अपना पत्नी को मेरे घर रख सकते है अद्रोहक की यह बात स्वीकार ली राजकुमार ने । छ महीने बाद जब राजकुमार लौटा ठसको पत्नी के सम्बन्ध में जितने मुख उतनी बाते सुनने को मिली राजकुमार न अद्रोहक के प्रति अपनी नाराजगा प्रकट की तो अहोतक ने उत्तर दिया पीठ की ओर तुम्हारी स्वा को करके अपनी पत्नी की ओर मुख करके मैं सदा एक शब्या पर सोया हू । तुम्हारी स्त्री के स्तनो न भी मेरी पीठ को जब स्पर्श किए। है मुझे माता के स्तन का बोध हुआ है इसलिये मेरा भाव सदा शुद्ध रहा । घन्य है अद्रोडक का

इन्द्रिय निग्रह । 7 भी-ज्ञान तथा सदाचारण द्वारा बुद्धि बढाना मादक द्रव्य बुद्धिनाशक अन्य पदार्थ दुष्टा का संग आलस्य प्रसाद आदि का छोड़ के ब्रेक्ट पदाओं का सेवन सरपुरुषो का सग योगाध्यास रा बुद्धि का बढाना

दुष्टान्त-सच्ची घी उस कहते हैं जो सत् असत् का सहा सही निर्णय कर सके जो असत मे भी भूलकर प्रकृत न हो तथा सदा सत् के सम्मुख रह इस प्रकार की सत् बुद्धि के प्रतीक हे पिषिला नरेश राजा जनक वे नित्प अनासक्त तथा ज्ञानियों के भी गुर è i

**8 विद्या**-परमात्मा आत्म तबा प्रकृति का यथार्थ ज्ञान तथा उसके अनुरूप कर्म करना । पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त यथार्थ ज्ञान और उनसे कथायोग्य उपकार लेना विद्या इसके विपरीत अविद्या है । शास्त्रों में विद्या को कामधन कहा नवा है अर्थात् वह गाय जा समस्त इच्छाये पूर्ण करावी है विद्या की प्राप्ति के लिये ईश्वर जीव और प्रकृति के स्तरूप लो (शेथ पष्ठ 6 पर



मदिर मार्ग नई दिल्ली बुलाई गई थी । वह बैठक आदरणीय सुमेचानन्द वी चम्बा भारत भाग गढ़ मंदरस्त बुदारा भा का । यह गठन आरतभा भूतामान या अध्याम मार्च बिति कहारे पुरुषपाद स्वामी स्वामान्य वी अग्राध्यक के उपरोक्त अनुसाद सुराहर थी । इस को बुराशने के रितमें जो एजेडा भेका गया था उस का विषय था सावदिक्क आर्थ प्रतिविध्य सभा गढ़ रित्रस्ती के शुनाव छ 11 98 को सम्मन हुये रोशिकृत अभी भी गतिरोव हैं इस के समस्यम में विश्वाद ।

इस बैठक का निमन्त्रन पत्र मुझे भी आया था और मैं 20 1 99 की बैठक में गया तो इस बैठक में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष यति मडल स्थामी ओमानन्द जी स्वामी दीक्षानन्द जी स्थामी विद्यानन्द जी स्वामी सुमेधानन्द जी चन्ना स्वामी इन्द्रवेश जी स्वामी अनिवेश जी प्रो हेर सिंह जी श्री सुर्यदेव जी पढित हरबस लाल जी हमाँ आचार्य भगवान देव भी भी तिय कुमार भी सास्त्री श्रीमठि सतोव कपूर श्री विद्वाल सव तथा अन्य कई सदस्य वहा उपस्थित थे । वह बैठक स्थामी सर्वानन्द जी महाराज के सरक्षण में और स्वामी दीक्षानन्द भी महाराज की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। बैठक के आरम्भ में स्वामी दोशानन्द जी महाराज ने कहा कि आब हमें आर्य समाज के सगठन को मजबूत करने की बात करनी चाहिये। सारी बात स्पष्ट रूप से सामने आनी चाष्टिये । ताकि कोई समाधान निकल सके। स्वामी दीकानन्द भी ने सर्वप्रथम स्थामी अग्नियेज भी को अपने विचार रखने के लिय कहा । स्वामी अग्निवेश जी ने 8 नवम्बर 1998 को जो सार्वदेशिक सभा का चुनांच हुआ उस ८ बारे में अपने विचार रखे और उन्होंने कहा कि उस समय जो परिस्थितिया थी उस के अनुसार चुनाव हुआ। परन्तु कई कुछ नियमानुसार नहीं हआ। लेकिन वो कुछ भी हुआ आर्य समाज के सगठन को टुब्टि म रख कर वह किया गया। उन्होंने कहा क अब जो कुछ हो गया है हम सब को मिल कर सभी अधिकारियों को सहयोग देना नाहिये । इसी प्रकार के विचार स्थामी इन्ह्रवेश जी प्रो शर सिंह जी श्री सुपदेव जी ने भी प्रकट किये । उन्होंने भी कहा कि अब जो हो गया है उस को हमें मान लेगा चाहिये। आचार्य धगवान दव जी ने बताया कि डा॰ सच्चिदानन्द जी ज्ञास्त्री मंत्री सार्वदेशिक सभा में 8 11 98 क साधारण अधिवञ्चन के लिय 3 10 99 को अहर पोस्टल सर्टीफिकेट गरा एजेडा जारी किया और पर्वेश पत्र सार्वदक्षिक लभा के सभी प्रतिनिधियो को भेजे और 8 11 98 का सार्वदिशक सभा का नुनाव इसी एजेंडा के अनुसार होना चारिये था । उन्हान कहा कि जो प्रतिनिधियों की सूची 1795 में बनाई गड़ थी उस के अनुसार यो चुनाव किया गया वह अवैध है और भी सिन्नदानन्द जी भारती द्वारा जो एकेंद्रा जारी किया गया था उन प्रतिनिधियो द्वारा जो चनाव किया गया वह ानयमानुसार हुआ है । आचार्य भगवान देव की न सुझाव दिया कि हम अश्वलत में नहीं काना चाहिये। इस का फेसला यति गडल के सन्वासी वर्ग ही कर दे तो यह आर्य समाज के सगठन को मजबत करने के लिये ठीक रहेगा । आचार्य भगवान देव जी ने कहा कि आज सार्वदेशिक सभा के झगड़े के कारण सभा क अकोण्ट बद प्ट हैं इस के लिये उन्होंने सुझाव दिया कि स्वामी सर्वानन्द जी स्वामी दीक्षानन्द जी ओर स्वामी सुनेधानन्द जो धम्बा यह तीनो सन्यासी और दोनोपक्षों में स एक एक व्यक्ति ले लिया जाये। जो सार्वदेशिक सभा के थक खातो का संचालन करे। स्वामी सुमेधानन्द जी चन्ना वालो के इस्ताक्षर अतिकार्य हो। इसे कमेटी के संयोजक भी स्वामी सुमेधानन्द जी हो । इस प्रकार सभा के बैंक खातो को सच्चालित रक्षण जाये। जब तक पति महल इस अगडे का समाधान नहीं निकाल लेता तब वक वह व्यवस्था जारी रहे। णंडत सिय कुमार जी सास्त्री ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया और ार द्वारा आ तारणा ग या इस अस्ताव का अभवा निकास है। श्रीमति सतीव कपूर ने भी इस बात का समर्थन किया। इस पर प्री हैर सिंह की ने कहा कि अब चुनाव तो हो गया है इसी को समना काहिये। स्वामी दीक्षानद जी ने मुझे भी बोलने व लिये कहा। अब मैं मव पर आवा मेरे मन मे विचार आया कि आध मैं आर्य समाज के उच्च कोटि के सन्यासियों के समक्ष बोलने का रहा हूं। इसीलिये मैंने निक्षम किया कि मैं वो भी कहुना बिल्कुल सच कहुना ताकि सभी को वस्तु स्थिति का पता चल सके । इस के परकात मैंने 3 10 98 से लेकर 8 11 98 तक की कुछ भी सावदेशिक सभा के कार्यालय में हवा उस के सम्बन्ध में सारी शात बतार्ड । मैंने कहा कि आप आर्य समाध के उच्चकोटि के सन्यासी है आप इस सारे विकाद को अच्छी तरह से देख लो। वो भी निश्चय करना हो कर लो ठाकि सार्वदेशिक जैसी उच्च सस्या लंडाई झपडे से बच सके । उस के पश्चात माननीय पश्चित इरबस लाल जी सम्प्रं ने सारी स्थिति को स्पन्न रूप से बताबा और गुरुकुल कागरी विश्वविद्यालय के सम्बन्ध मे कई प्रकार की करा कार्य ।

इस के परचात् श्रीमीत सतोव कपूर ने भी अपने विचार रखे और बैठक दोपहर के भोजन के लिये स्थानित हो गई । भोजन के बाद पुन बैठक आरम्भ हुई और फिर सारी बात पर क्वां हुई लेकिन इस के बाद स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यति महल किसी विवाद में पहना नहीं चाहता और बैठक हान्ति पाठ क परचात् समापा हो गई ।

बैठक जब बुलाई गई तो जामी सुमेधानन्द जी चम्बा वाल जालन्धर आये तो उन से मेरी बात चीत हुई। स्वामी वी बहुत उच्च कोटि क सन्यासी हैं उनके मन में आर्य समाज के प्रति बहुत तहप है । उनका प्रयास है कि आर्थ समाज का सगठन बहुत मञ्जूत हो और आर्थ समाज उन्नति करे । उन्होने बहत ही यल कर के यति मदल की इस बैठक का आयोजन किया था परन्तु इस बैठक का कोई लाभ नहीं हुआ। मैं समझता हु कि आर्य समाज म आज सच्चाई को कहने वाले बहुत कम लोग ह क्योंकि सच इसलिये कहना नहीं चाहते कि कहीं हमारी कर्सी न किन्न वाचे। जब बैठक समाप्त होने वाली थी तो पुण्यपाद स्वामी ओमानन्द जी ने सक्षिप्त में अपने विचार रखे और उन्होंने कहा कि आर्य समाजी हमेशा सच बोलते थे और यदि आर्थ समाजी अदालत मे गवाही दे देता था तो जज महोदय उस आर्थ समाजी की गवाही को सच मान कर मुकद्दमें का फैसला कर देता था। स्वामी जी न कहा कि हमें सब बोलना चाहिये लिकन बैठक में सब सच्चाई का पता चल गया हम अफसोस है कि आज हमारे मध्य में आर्च समाज में ऐसे निवर व्यक्ति नहीं रहे जो सच्चाई का सामना कर सकते हो ।

महर्षि द्यानन्द सरस्वती जिन्होंने आर्च समाज की स्थापना की थी उन्होने इसलिय आर्य समाज की स्थापना नहीं की थी कि हम सच्चाइ का साथ न दे और डर कर हमेज़ा काम करत रह । आय समाज क कायकताओं में काम करने का बहुत जाश है लेकिन काम करने वाल व्यक्तियों को जिस प्रकार से अपमानित किया जाता है उन के विरुद्ध बेब्नियाद दीपारोपण कर के उन्हें पीछ धकलने की कोशिल की जाता ह इस से कार्यकर्ताओं का मनोबल गिर जाता है।

आज इस बात की जरूरत है कि हम गहराई से सोचे कि हमें अर्थ समाज के संगठन को किस तरह से मजबूत करना हे। सार्वदक्रिक संभा सार ससार की आर्य समात्रों की सर्वोंच्य सस्या है यदि महर्षि दयानन्द सरस्थता जी ने प्रजातत्र तरीका आर्य समाज की सस्या को चलाने क लिये बताया था उस को हमे मानना चाहिये । सार्वदेशिक संधा के नियम उप नियम बने हये है। यदि हम उन पर अमल नहीं करेंगे तो संस्था कैसे चल सकरी इस सर्वोच्च रास्था के नेताओं को नियमों का पालन करना चाहिये। यदि सार्वदेशि इ सभा के नेता नियमी का पालन नहीं करने तो प्रान्तीय सथाओ जिला सभाओं व आर्य समाजों में नियम का पालन कैसे होगा. म यह लख लिख रहा हू तो मुझे लिखते हुये बहुत दुख हो रहा है कि आब आर्यसमाज के सार्वों व सगठन म ऐसे कोड निष्मश्च आदमी सामने नहीं आ रह वा सारां समस्या का समाधान निकाल सके । पद तो आते जात रहते हे लेकिन पदो के लिये सस्था को खराब नहीं करना चाहिये । अभी भी कुछ नहीं बिगडा और सबम से काम लेना चाहिय और निन्मश्व होकर सस्था के हित मे काम करते हुये आर्य समाज के सगतन और सार्वदेशिक सभा के सगतन को मजबूत करने के लिये कदम डठाने वाहिये ।

हैंदराबाद में सार्वदेशिक सभा का जो चुनाव हुआ उस में श्री समचन्द्र राष बन्देमातरम् प्रथान चुने गये थे और दूसरी और स्वामी विवानन्द जी ने सार्वदेशिक सभा का प्रधान अपने आप को बोधित कर दिया था और तीन वर्ष तक मुकद्दमेवाची चलती रही । लोग कहते थे कि हेदराबाद म मलती हा गई है लेकिन अब मलती नहीं होगी परन्तु हम ने इस से कोई सबक नहां सीखा भी पमझता था कि यति मडल की बैठक में इस सर्वोच्च सगठन ह्य कोई ठोस परिणाम निकल वायेगा और सगठन मजबूत हो वायेगा परन्तु इस यति मडल की बैठक में सार्वदेशिक सभा के दी पश सामने आये है इसलिये मेरी राधी आय समाज के नेवाओ से विनय प्रार्थना है कि सार्वदेशिक सभा के रागठन को "बबुत बनाने के लिये गहराई से सोचे । ताकि समय वर्षाद । हो और अदालतो मे मुकद्दमेवाकी न हो । ताय । (प्राप्त पाना वेषाय ( हा) जार जारताम में दुक्तिर्भागायों ने ही। स्थानी ओनान के बहुत कम अवसर स्थानी ओनान जो के साथ पुत्रे वाताचीत करने का बहुत कम अवसर स्थित है किन इस बार जब में दिख्ली में ठहरा तो पुत्रे स्थानी जी से बावाचीत करने का पुर्त्त मीका सिक्ता । स्थानी ओनान्य में जो सामदिश्यक राभा के प्रयान बने हैं उनकी यह हार्दिक इच्छा है कि सभी द्वारां समान्य हो और सभी मिल कर काम करे और किसी भी तरह का विवाद उत्पन्न न हो । स्वामी ओमानन्द वी से मिलने के परचात मुझे आहा की किरण दिखाई देती है कि स्वामी जी खारे विचाद को खल्प करने का प्रयास करेगे और इस प्रचास में मैं स्कामी बी का हर सभव सहयोग करूपा और आज्ञा है कि आर्य समाज का कृष्यन्तो विश्वमार्थम् का नारा सफल होगा।

अफ्रिकी कमार जर्मा प्रश्लेष्ट सभ्य महत्य ।

## अरिविन का विकासवाद मूर्खतापूर्ण प्रलाप है

िनदे अवीप कुमार जैन आवार्य 21 आगतेक, संदुर, (उन्तर) अक्षात

डारबिन वाद के काएण जो नारितकता और मूर्जाण का दौर प्रग्रम्भ हुआ उसने पिहान की विभिन्न शाखाओं को प्रभावित किया। अनेक वैद्यानिक सुष्टि रचना स्वयमेव मानने स्थो। उनको मान्यता मे आस्पाए व ईक्यर तो है नहीं कापक मारोर रचना भी जर परार्थों

स्वयंत्रय मानन (स्पा ठनका मानवा मे आत्माप वह देखर तो है नहीं अत्यव्य हारीर रचना भी जह पदार्थों की रासायनिक क्रियाओं से स्वत हो गई होगी । इस भ्रामक चिन्तन के फलस्वरूप उनमें बीचमाज के प्रति मनता मैंत्री समाज हो गई एव स्वार्थ का चरानोकार्य हो गया।

विकासवाद से प्रवनन विवान को जो गतात दिशा मिली उससे प्रकृतिक प्रवनन क्रियाओं और क्रह्मपर्य के सिद्धानों को छोड़ वैद्यालिक स्पनाति करे स्तरी के स्टब्स को दूसरों या उसी सीशी के स्टब्स के हाररों में उसी सीशी के स्टब्स के हाररों में उसी सीशी के रोहे प्रयोगी को अगा हो गया और ऐसे प्रयोगी से वाली अधिकार की अशा से करने लगे। इस प्रकार

अविकार के बहुत तै के किया में अपित में

िताए हो हैं। यदि प्रशासन यह नियम अना- दे शकन्तु उनके सिद्धाना और प्रयोग पहले उन्हीं पर लागू किये आयेगे तो वे इसके लिए कदापि तैयार न होग किन्तु बावेला मचायेगे। इससे उनको अग्रस्मा का चाप प्रकाशित हो जाता है

धर्म का बात मुख्य अनुस्ता में अपने मान्या एक कान से दूरोर भाग में निकार देने की अनुष्य मोगों में का मार्च है नहें की अनुष्य मोगों मार्च मार्च में करते देने की अनुष्य मार्च मार्य मार्च सके। मुझ में ऐसी दृष्टि विकसित करने का श्रेय महर्षि दशानन्द कृत प्रन्यों को ही है।

क्राविण ने जारमा और ईश्वर का अस्तित्व वहीं माना। अस बच्च पहांचीं के एसस्यक्ष्य वी हारी क्रियाओं के फलस्यक्ष्य वी हारी रचना का होना मान रिक्षा। उत्स्के अनुसार पारम्भ ने एक कोशिकाओं वाले विधिन्न क्षेत्रीं का विकास बुजा। विकास की इस मुखला के अन्तर में क्ष्टर से मान्या की रचना हुई।

अब विज्ञान का जडत्य का सिद्धान्य क्या कहता है ? यह कि बिना बाब्ध क्स लगे जड पदार्थों की स्थिति या आकृति स्वय परिवर्तन नहीं हो सकता। इसको व्याख्या कर्त पर स्पष्ट

होता है कि इस गुण के कारण ही 1 कुर्सी मेज आदि जरू पदार्थ स्वय ठठकर दूसरी जगह नहीं जले जाते।

2 जह वस्तुष् अपनी गति वा गति की दिशा अथवा आकृति मे स्वय परिवर्तन नहीं कर सकता । 3 जह पदार्थ स्वय ही जुडकर

उ वह पदाब स्वय है। गुडकर प्रम्म कम्प्यूटर आदि मशीन नहीं बन सकते और न ही दूसरे कर पदाबों पर वे स्वय हा इस प्रकार कल लगा सकते हैं कि विभिन्न भागीने बन सके।

4 रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप बने पदार्थ भी पूरा तर बड पदार्थ होते हैं उनमें बहत्त्व का गुण कियाओं में मान लेने वाले पदार्थों के समान ही वर्तमान होता है।

5 रासायनिक कियाओं से मशाने स्वय नहीं बन सकती। 6 जड पदार्थों से बनी

6 जड पदाचा स बना कम्प्यूटर आदि अच्छी से अच्छी मशीने भी स्वय नहीं चल सकती फिल्त किसी के चलाने से ही चलती है।

7 जह पदाधों में स्वय मशीन चलाने का सामर्थ्य नहीं होता इसी कारण चलाने वाले के अभाव में डजारों वर्ष तक पढ़ी रहने पर भी मशीन चल नहीं पाती ।

8 महीन कितनें ही समय वक्त कैसे भी विशेष पर्यावरण या परिस्थित में रहे मा रखी आये किसा दूसरी मझीन में परिवर्तित नहीं हो जाती क्योंकि पर्यावरण या परिस्थिति भी जह मिर्मित होते हैं। अत जहरूप गुण के कारण उनमें सुजगारमक क्षमता का अभाव होता है।

इस व्याख्याके आधार पर विचारको कि —

शरीर में इदव इतना उत्तम पम्प मस्तिष्क अत्युत्तम कम्प्यूटर है इसके अविरिक्त पाचन एवं उत्सर्जन एव तत्रिका तत्र रक्षा प्रणाली आदि उत्तमीतम रचनाये हैं प्रेसी मजीन अपने आप कैसे बन सकती है ? इस महीन के विधिन भागों के आस्वर्गंत्रनक कार्यों पर विकार करे-जिक्का कैसे विभिन्न स्वादों का ज्ञान कराती है गुर्दे कैसे रक्त को झनकर शुद्ध करते हैं शरीर से व्यर्थ पदार्थ किस प्रकार उत्सर्जन तत्र द्वारा बाहर निकाल दिये जाते हैं। शरीर की भीतरी दूट फूट शरीर की आन्तरिक क्रियाओं से ही ठीक हो जाती हैं इदय सरीर में किस प्रकार से रक्त को पम्य करता है रक्षा प्रणाली किस प्रकार शरीर को विधिन रोगी से बचाये रहती है आदि आदि । ऐसी ऐसी उत्तम मशीने इस

छोटे से शरीर मे हैं। वह मे जहत्व गुण होने से मशीने वन जाने या मशीने वना देने का सामर्थ्य नहीं है। स्पष्ट हैं कि इनका कोई रविपता है और वह जह नहीं हो सकता।

अब माता चा चित्रत तो सरीर रक्त करते नहीं जो बसते तो अपनी स्थानों को मुखं दुबंश दोगा जा कुरूप रच फिर देख देख दुखी हो उनके इसाब हेडु वे बुखा इस उसर भाग दौड क्यों करते ? असरव हम समस्य सरीरों के रिवरता का कोई अब नहीं है अर्थाद् इंस्सर की पुष्ट होती है।

सारास रूप में बढ पदार्थों में बडल्य पुण होने से वे स्वय महीने नहीं बना सकते। यदि वहाँ महीने रचना देखी जाती है तो हसका अर्थ है कि रिवरता अर्थक है। अत सहर रचना को देखकर हैंग्यर की पूष्ट होती हैं और वह पूष्ट हार्राले के विकासपाद पर एक भयकर उत्काशपाद है। अब भागन कहीर स्वय चलता

अस भागक सरार स्थव चलता है महीने बनाया च चलाया है जबकि सह मिर्मित आफो से आफो कम्प्यूटर आदि मशीनों में भी कहत्व के कारण स्थय चलने मशीने बनाने व चलाने आदि के गुण नहीं होता इससा यही स्पष्ट होंगा है कि मानक मरीर में बोई जह स भिन्न च्यार्थ विद्यमान होना चाहिये। असा सरीरस्थ चेंगा का असीरत्य प्रदेश होता है। पड़ा इस शका पर भी विचार कर लेवे हैं कि यह शरीरस्थ चेवन ईश्वर नहीं है। अरीरस्थ चेवन ईश्वर का अस

करारस्य चतन इत्यर का अक् भी नहीं है क्योंकि पदार्थ के विभिन्न अशो में पदार्थ के ही गुन होते हैं। यदि शरीरस्य चेतन इत्यर का अश होता तो यह दुख न भीगता।

यह ईस्वर से ठरपन भी नहा है क्योंकि तब ईस्वर का छोटे छोटे भागों के रूप में क्षय होन

से वह सर्वच्यापक न रह जायेगा शरीरस्य चेतन भिन्न भिन्न है क्योंकि एक के विचार उच्छा अनुभूति दूसरा नहीं जान सकता। अस उपर्युक्त चिन्तन से

अह उपर्युक्त चिन्तन से विभिन्न आत्माओं का अस्तित्व सिद्ध होता हैं और यह डारविनवाद पर पुन भयकर कुउारामात हैं। अब डारविन के विकासवान के इस भाग पर विचार कर लेते हैं

जो यह बतादा है कि विभिन

स्पीशीओ (भोडा कुता बन्दर मनुष्य आदि प्रजातियों) की उत्पति एक ही आदि जीव में हुए क्रमिक परिवर्तनो से हुई है। इन परिवर्तना का कारण स्पाशजों में पर्यावरण के अनुसार अपने को डाल लन की क्षमता है इस क्षमता का अनुकुलन भगता कहते है उदाहरण के लिए इस क्षमता क कारण ही मरूस्थलीय पौधो मे बढ तत्र अति विकसित हो जाता है ताकि जडे दूर दूर फैल बोडा बोडा पानी कटोर पौधे को जीवित रख सके। इसी क्षमता के कारण डी म<del>रूप्य</del>लीय पौधो जैसे नागफनी में पत्तिया शल में स्थानातरित हा बहुत कम क्षेत्रफल वाली हो जाता है जिससे पत्तियों के छिड़ी रा होने वाला वाष्पोत्सर्जन बहुत कप हो जाता है और पौधे में जल वा विजेष हानि न होने से पौधा इस शुष्क व गर्म जलवायु म भा जिन्दा रह सकता है इस अनुकूलन क कारण कुछ सरीसपो (रेगने वाल जन्त उदाहरण मगरमध्य क्रिपकली आदि) में अग्रपाद (आगे के बैर) पखो में बदल गय

और पक्षी बने।
अब विचार करो कि जह
जब पदार्थों से बनी भरति ने में
जडत्य गुम के कारण दूसरी मतान्
में स्वय बदल जाने की क्षमर
नहीं डोती भरते ही उन्हें केंद्रे भर प्रसंदित्य में सिंह में सिंह में
अविचार के सिंह में सिंह में
के रिए बची न रखा जाये क्योंने
भर्मांदरण में किता ने शि अरती
के रिए बची न रखा जाये क्योंने
भर्मांदरण में जी जब निर्मित हो।

(शेष पुष्ठ ७ पर)

#### प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव संपन्न

13 जनवरी को प्रभार आज्ञर मे वैदिक वाक्यय में मृत्य का स्वरूप विषय पर होने वाली शोध सगोच्टी ने इस वर्ष वेद सम्मेशन का स्वरूप ले लिया । भवकर शीत होने पर भी वैदिक विद्वानो एव श्रोताओ की अप्रत्याशित उपस्थिति ने शोध सगोच्छी को बेद सम्मेलन के रूप मे परिणन किया शोध सगोस्त्री की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० कृष्ण लाल जा (दिल्ली) कर रहे यं एवं सयोजन कर रहे थे हा० निरुपण जी विद्यालकार इसके अतिरिक्त अन्य पधारने वाले विद्वानो मे प्रमुख थ ठा० अवनौन्द्र कुमार वा श्रामति शशि विवास दिल्ली वि० वि० हा० मनोरमा विवासी लखनक डा॰ सुभाष वेदालकार जयपुर राजस्थान वि०वि० हा० जयदत्त उप्रैति कुमायू वि० वि० अल्पोडा प्रो॰ वेदप्रकाश शास्त्री डा॰ महावीर अग्रवाल डा॰ सोमदेव शताश गु० कागडा वि० वि० डा० कृष्ण कुमार गढवाल वि० वि० इ.० श्रीमति डार्मल आनन्द दयालवाग वि० वि० आगरा आदि प्रसिद्ध वैदिक विद्वान उपस्थित थे

14 जनवर को सामवेट पारायण यह की पूर्णांदुति के साथ ही अनेक प्रतिष्ठित विद्वानी के

भाषण एव प्रवचन सुनने को मिले अत्रपति शिवाजी के जीवन से समित संस्कृत नाटिका विद्यार्थियों के शारिरिक व्यायाम प्रदर्शन तथा धनुर्विद्या प्रदर्शन का कार्य मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा इसी अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे गुरुकुल कागडी वि० वि० के कुलपति डा॰ धर्मपाल जा पधारे हुए थे यहा की उपस्थित एव जनता की श्रद्धा को देखकर उन्होन कहा कि यहा का उत्साह पूर्ण वातावरण गुरुकल कागडी के प्राचीन उत्सवी का स्मरण दिला रहा है शिक्षा जगत मे प्रभात आश्रम की उपलब्धियों का भूरि भूरि प्रसङ्गाकी अन्त में स्वामा जो महाराज ने आशीवचन के रूप में सक्रान्ति पर्वका महत्व प्रतिपादित करते हुए वैदिक

सिद्धान्तो का अनुसरण करने क लिय लोगों को प्रेरित किया इस प्रकार अञ्चल का 26व वार्विका सव हर्वोल्लास पूर्वक सपन हुआ

#### हांसी में वेढकथा एव गायत्री महायज आर्य समाज मन्दिर हासी म भजनो पदश्क महाशय जबर सिह

दिनाक 9 2 99 सं 4 2 99 तक रात्रि ह से 10 बजे वेदकचा प्रव गायत्री महायब प्रात 7 से 9 वर्ज तक होने बारहा है जिसमें कथा वासक पूज्य स्वामा माधवानन्द जी सरस्वती हिसार यह के बहा आचार्य रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता आर्थ समाज हासी एव

दोपहर 12 बजे यह की पूर्णहृति क साथ कार्यक्रम सम्पन होगा आर्यसमाज माइल हाऊस जालन्धर का जुनाव

सतीय कमार आर्य

खारी वेद प्रचार मण्डल हासी होग

व डी० ए० वी स्कूल के बच्चो

का भी रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जामेगा 14 2 99 हो

इनके अतिरिक्त आर्थ स्कूल

का चुनाव आय समाज माञ्चल हाकेस जालन्धर आर्थ समाज जालन्धर छावनी का वामिक चुनाब दिनाक 3 99 को सबसम्मति से निम्न प्रकार हुआ औ क्य देवराज प्रथान श्रीमता राजदुलारा विशव्य उपप्रधान श्रीमविकमलारान उपप्रधान का कमलाजित ननेजा महामंत्रा हा ओप प्रकाश मंत्रा हा विराध्य सिङ्ग्राणा मत्री श्री राजकुमार सन्दल कोषाध्यक्ष श्रा धर्मेश कुगार सह काषाध्यक्ष त्रा सूरज प्रकास प्रचारमंत्री श्री राजकुमार स्टोरकापर

कः ऋतम्भय पुरोहितः अन्तरम सदस्य श्रीमति सोनियाः प्रीति देवन प्रम प्रभा सुदेश रानी राजनी बाला कान्ता राना । श्री भीरत कुमार श्रा हरिन्द्र समा श्री भमनीर श्री विद्यासागर श्रा प्रेम नाथ औ बिकारी लाल की गिरधारा लाल श्री बसरा श्री अश्विनी कमार लाल श्री बस्त्य .... जना श्री राकेत कुन्यर जनतेल राज प्रधान

#### अमतसर में वैदिक भाषण प्रतियोगिता

आर्य पुबक सभा शक्ति नगर के रात्वावधान में आर्य समाज मन्दिर शक्ति नगर में (सात भिन्न भिन्न स्कूलो मे प्रतियोगिता कराने के उपरान्त) वैदिक भाषण प्रतियोगिता (फाइनल) कराई गई जिस की अध्यक्षता श्री दर्शन लाल जा ( प्र गन केन्द्रीय आर्थ सभा) ने की जिस म 21 छात्र छात्राओं ने भाग लिया समारोह मे अध्यापक गण एवम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे

निप्नलिखित विषय थे जीवन का महानता में चारत्र का योगदान 2 आर्य संस्कृति के प्रतीक श्री राम 3 अण्टाचार एक

राष्ट्रीय समस्या प्रथम स्थान कुमारी सपना सरस्वता डी० ए० वी० द्विताय

### बठिण्डा मे धर्मवीर हकीकत

राय का बलिटान दिवस आर्य समाज बठिण्हा के प्रागण में बाल हकीकत राय का बलिदान दिवस बडी धूमधाम के साथ श्री बिहारी लाल जी मगला को अध्यक्षता मे सम्यन्न हुआ सर्व प्रथम हवन यज्ञ आर्य समाज के सुवाग्य आचार्य प्रवर श्री प० सुनील कुमार जा पुरोहित के सान्निध्य में हुआ माताओं द्वारा यह के बाद ात गाय गय अन्त मे श्री बिहारी लाल जी ने सचालन करते हुए सबका धन्यवाद किया और अपने बंट नरेश मगला

के पुत्र की खुशा में जलपान की व्यवस्था का बाब् राम

को नेता मान क आर्य समाज का उन्तति में जुट जाये क्यों कि नाउन्य पन्या विद्यतेऽनाय इसक अतिरिक्त दूसरा रास्ता नहीं है आर्य समाज आखिर एक सगठन ही तो है कोई धर्म नहीं है अब तो हालत यह हो गई है कि किसा आर्व सदस्य क पुत्र/पुत्री को अगर आर्थ समाज क स संगो मे आने को कहा जाये ता या तो वह झूठ मूठ हा भर लता है अथवा स्पष्ट रूप में कोई तो यहा तक कह नेता है कि उनके माता पिता आय समाज में जाते हा है जिसका अनिप्राय यह हाता है कि वह (पिता जी) आर्य समाज

गढवाल मे बसन्तोत्सव आय समाज सावली आदि पचपरी गढवाल के आर्य सभा सदा

द्वारा बृहद् यह से बसन्तोत्सव के पावन् पर्व का सुभारम्भ हुआ भजनोपदेशक आ बच्चाराम जा आर्य द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किय गय माज के अध्यक्ष श्रा हमराव

जी प्रिय त की अध्यक्षता मे वसन्तासय का कार्यक्रम सम्पन स्थान कमारी रात आर्थ समाज लोहगढ वृतीय स्थान कुमारी काति सरस्वती डा॰ ए॰ वी॰ को प्राप्त हुआ मुख्य अतिथि बहन लक्ष्मी कान्ता वा चावला विधायिका ने स्मति चिन्ह तथा परस्कार वितरित किए

सभा के पदाधिकारियो श्रा सत्यनारायण ना शुक्ल (प्रधान श्री हीरा लाल जा कन्धारा वरि उप० प्रधान जामूरारा लान ज धवन (महामत्री आ विजय नगरा जी उपप्रधान श्रादिनश कमार जा कोबाध्याक्ष नालित सचदव (प्रचार मंत्री तथा सदस्यो न सक्रिय भूमिका निभाई अन्त म प्रीतिभाज का आयाजन किया गया

## फिरोजपुर में बसन्त पंचमी पर्व

आर्थ समाज राना का तालाज फिराजपुर शहर म बसन्त पचमा का पर्व विशय समाराण से 22 99 का मनासा गया इस में महा मा आम मुनि दम्पत्ति यज्ञमान बन मत्रा जा ने हिन्दु धर्म का रक्षा हत् बलिदान देन वाल धर्मवार हकाकत राव तथा अन्य बलिदानी दश भक्ता का नावन पर और बसना की महना पर प्रकार हाला

सन्तोष कुमार मत्रा

पुष्ठ का शेष)

के सदस्य है इस तरह टाल मटाल करक बात समाप्त हो जाता ह इसलिए आर्य विद्वाना सन्यासिया और आपं प्रतिनिधि सभाआ क अधिकारिया स मरा नम्र ानवदन 🛎 कि वे परस्पर विचार विनिमय करक महर्षि दबानन्द क आदेश का पालन करे तथा आर्थ जनता का अपना धम वेदिक उम सभा सरकारा कागज पत्रो तथा जनगणना क समय लिखन का निर्देश द ओर इसका खब प्रचार किया नाय

अभा तक वेदिक धर्मियो का बास्तविक सख्या कहा सरकारा रिकार्ट में हे हा नहां होना चाहिए

हुआ मच सचालन समाज क मत्रा गगा प्रसाद सोम्ब द्वारा किया गया आयं सम्बसदा ने वसन्तऋतु के महत्व पर प्रकाश ढाला

अन्त म सभा का समाप्त कात हुए ब्रा प्रियवत जान सभा का बसन्त ऋतु के आगमन क श्रभकामनाए दा

## आयं समाज जालन्धर छावनी

का कार्षिक चुनाथ 24 1 99 को सासग के भाद हुआ सिमे सर्वमम्मति निम्न अधिकारा चुन गर्ा प्रधान मा जनक राज जी महाजन 2 वशिष्ट उपप्रधान आ चमन प्रकाश जा नन्द 3 उपप्रधान श्री चन्द्र प्रकाश जा गुप्त 4 उपप्रधान श्रा काशीराम जी अग्रवाल 5 मंत्री श्री स्वदेश कमार जी लाला 6 को वाध्यक्ष श्री ववाहर लास महाजन ७ उपमत्री श्री राम सिह 8 पुस्तकाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जावंद 9 सेवादल अध्यक्ष श्री रमेश जी 10 आहिटर श्री बलदेव राज जी शर्मा

-स्वदेश कमार लाला (मश्री)

वानना आवस्थक है । ईश्वर बीव और प्रकृति पृथक पृथक है । जीव चेतन अल्पन्न कर्ता मोबता वध मोक्ष मे आने वाला है । परमेश्वर सच्चिदानदस्थरूप सर्वंत्र सुष्टि कर्ता निराकार कर्मफलदाता और नित्य शुद्ध मुक्त स्वभाव है । इन तीनों के स्वरूप की जानना विद्या और न जानना अविद्या है । भौतिक विद्या से सासारिक दु ख दूर हात हैं जबकि आध्यात्मिक विद्या से मोक्ष की प्राप्ति होती है

दुष्टान्त- स्वामी दयानन्द ने बदो और शास्त्रों के प्रमाणों से यह सिद्ध किया है । ईस्कर जीव प्रकृति तीनो अब अर्थात् जिनका कभी बन्म नहीं होता और न कभी ये जन्म लेते हें अर्घात ये तीन सब जगत के कारण हैं। तीनो अनादि हैं। औइम् ईस्वर का मुख्य निज नाम है। शिव शकर विष्णु महादेव ब्रह्मा रुद्र इन्द्र गणेश शक्ति लक्ष्मी सरस्वती देव देवी यम आदि सब गुणो के आधार पर ईश्वर के नाम है इन नामों के कोई भिन्न भिन्न देवता नहीं है ईश्वर में अनेक गुण हैं धन्य है महर्षि दयानन्द की विद्या ।

मत्य—सत्य समझना सत्य मानना और सत्य वैसा करना जैसा आत्मामे वैसामनमे जैसामन मे वैमा वाणी मे जैसा वाणी मे वैसा कर्म मे वर्तना अर्घात जो पदार्थ वैसा हो उसको वैसा ही समझना वैसा ही बो नना और वैसा ही करना भी

दुष्टान्त-राजा हरिश्चद्र का गण्य धन तथा वैभव गया पत्नी दो बचना पड़ा स्वय विकना पड़ा स्वय चाडाल बनकर शमशान का चौकीदार बनना पठा यहा तक कि इकलौता पुत्र पत्नी उस पुत्र की लाश लिय रोती हुई सम्मुख । पर हरिश्वद ने रामशान का कर लिये बिना पुत्र का अन्तिम संस्कार करने की अनुमति नहीं दी । धन्य है राजा प्ररिश्वन्द्र की सत्यता

10 अस्तोध-फ्रोचादि दोवो को छोडना । क्रोधादि दोवो को छोडकर शान्ति आदि गुणो को ब्रहण करना। ब्रोध को अक्राध से और दुष्टता को साधता से जीतो । वैर का बदला प्रेम से देना ठचित है । मनुष्य को शतुन समझे मन से किसी के प्रति शंत्रुताका भाव न रखना ।

द्वच्टान्त-वेर भूणा भाव से महर्षि वसिन्छ के परमशत्र विश्वामित्र ना त्रसिष्ठ को मारने के शिवे जाना ८ तुमहर्षि वसिन्ठ का विश्वामित्र क पमा करना अर्थात् क्रोध की क असे बीदना। धन्य है महर्वि वसिन्ध का असकोथ।

क्या महीं वर्ग के दस लक्षण हैं। आगे चलकर इस विषय मे अधिक विवाद हुआ । मनुष्य को धर्मातम बनने के लिये क्या इसके अविरिक्त किसी अन्य गुण की आवश्यकता नहीं है ? क्या ब्रह्मद्वान ईश्वर उपासना आत्म साक्षारकार आत्मदर्शन आदि धार्मिक कृति के लिये आवश्यक गुण नहीं है। तब धर्म की परिभाषा इस प्रकार की गई । बतो अध्यतम नि श्रेयस सिद्धि स

धर्म । अर्थात् जिससे अभ्युदय यानी उन्नवि और कश्याण सिद्धि अर्थात् प्राप्ति हो वह धर्म है । कहने का भावार्थ यह है कि वदि उपरोक्त दस धर्म लक्षणो के अतिरिक्त कोई गुण शेष रह जाते हैं तो उनकी पहचान यह कि जिस गुण से उन्नति और कल्याण प्राप्त हो वह धर्म ही है। अत यम नियमों के सेवन

का विधान किया जाता है । अहिसा सत्त्व अस्तेच ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाच यम हैं शौच सन्तोष तप स्वाध्याय और र्डज्वर प्रविधान ये पाच नियम हैं। यमों का सेवन नित्य करे केवल नियमों का नहीं। क्योंकि यमो का सेवन न करता हुआ केवल नियमो का सेवन करता हुआ मनुष्य कर्त्तंच्यो से पतित हो बाता है इसलिये मनुष्य को यम सहित

नियमो का सेवन करना चाहिये । अहिंसा--किसी की हिसा न करना। अफ़िसाका अर्थ है प्राणिमात्र को मित्र की दस्टि से देखना। किसी को किसी प्रकार कादुखन देना। सब पर दया सबकी रक्षा करना परन्त

अहिसा धर्म केवल निर्वलो के लिये है चीर डाकू अत्याचारी हत्यारों के लिये नहीं। इन अपराधियों को तमित दण्ड न देने से अत्याचार अन्याय और हिसा की विद्ध होती है। हिसक की हिसा न करना अहिसा नहीं अपितु हिसा है । अत दुव्हो और हिसको को मृत्युदण्ड देना धर्म है । श्री कृष्ण ने कस और शिशुपाल को मारा श्री राम ने बालि को मारा । क्या श्रीकृष्ण श्रीराम डिंसावादी थे ? कटापि

नहीं । हिसा स्वार्थ के लिये होती है और उन महापुरुषो में स्वार्थ लेशमात्र भी महीं वा । उन्होंने केवल अवर्ग अन्याय और अल्याचार को मिटाने के लिये द्रप्टों का सक्षार किया । इसी

प्रकार यह में पशुओं को काटकर होम करना पाप है । स्वय मास मक्षण करना पाप है । वाचिक अहिंसा का पालन करो । मन में दृढ निरुषय कर लो~मैं आज से किसी के प्रति कठोर जब्द नहीं बोलुगा। दूसरो को शनि पहुचाने का विचार मन से निकल जाना चाहिये। किसी की डानि मत सोची। अत मन कर्म और क्वनो से किसी के प्राणी की हानि न करना अहिसा है ।

सत्य-विश्वास से पहले किसी सिद्धान्त की समुचित परीक्षा करनी चाहिये ।

क) जो ईश्वर के गुण कर्म स्बभाव एव बेद के अनुकूल हो वह सत्य और उससे चिरुद्ध असत्य है । का) जो सुष्टिक्रम क अनुकूल हो वह सत्य और उससे विरुद्ध

असत्य है । ग) आपा अर्थात् सत्यवादी धार्मिक विद्वान का वचन सत्य और

इससे विरुद्ध असत्य है। व) अपने आत्मा की पवित्रता के अनुकूल सत्प और उससे विरुद्ध असल्य है ।

ड) प्रत्यक्ष (इन्द्रियों का सीघा अनुभव) अनुमान (प्रत्यक्ष के आधार पर चिन्तन) उपमान (समानता से वस्तओ को समझना) शब्द (आप्तो का वचन) ऐतिहा (सच्या इतिहास) अर्थापति (कारण के बिना कार्य नहीं होता) सम्भव (ससार में क्या सम्भव और क्या असम्भव है) एव अभाव (अस्तित्व मे होना व न होना ) जो इन कसौटियो पर रखा उतरे वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है । अब सत्य और असल्प का निश्चय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का

अस्तेय-चोरी त्याग । इल कपट बिना आजा परावे धन द्रव्य पदार्थों की प्राप्त वैसे निषद कर्म को मन वाणी और शरीर से किसी भी प्रकार न करना ।

त्याग काना चाहिये ।

बद्धावर्ष-उपस्थेन्द्रिय का सयम । आठ मैथुनौ का अभाव । अपरिवद-ममत्त्र बुद्धि से संप्रह का अभाव अत्यन्त सोलपता स्वत्वाभिमान रहित होना।

शौध-बाहर और भीवर की पवित्रता । सत्वपूर्वक सुद्ध व्यवहार से प्रव्य की और उसके अल से आहार की एवं पथायोग्य बर्तांच से आचारणो की और बल मिक्कादि भले ही वार्षे परंतु इस मनुष्यपन से शरीर की शक्ति को तो पाकर की क्या धर्म से पुत्रक कामी न डोवे ।

तुद्धि कहते हैं और राग देव तथा कपटादि विकासे का नास ग्रोकर अन्त करन का स्वच्छ और सुद्ध हो जाना भीवर की सक्ति है ।

सतोष-वृष्ण का सर्वधा अभाव । सम्बक् प्रसन्न होकर निरुद्धम रहना सरोव नहीं । किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उदना करना डानि लाभ में हर्ष वा शोक च अध्यक्ता। तप~कच्ट सेवन से भी

वर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान अर्थाद स्वधर्म पालन के लिये कच्ट सहना। स्वाञ्चाय-वेद और सत् शास्त्रों का अध्ययन एवं ईश्वर के

नाम और गुणो का कीर्तन । **इंड्रकर ग्राणिशान-इंड्कर** की भवित विशेष में आत्या को अर्पित

अत मनुष्य को धर्मका आचरण बीवन में सदैव करना वाहिये क्योंकि वही मनुष्य का साथ देता है। जो पुरुष धर्म को प्रधान समझता है और धर्म के अनुष्ठान से जिसका मन पाप से दर हो गया है । ऐसा व्यक्ति परमातमा को जीघ प्राप्त करता है ।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थं प्रकाश में लिखा है कि ज पश्चपातरहित न्वायाचरण सत्या भावणादिवुक्त ईस्य राज्ञा चेदो स अविरुद्ध है उसको धर्म और जा पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिच्याभाषणदि ईश्वरराजा भग वेद विरुद्ध है उसको अधर्म मानता ह

आगे स्वामी दयानन्द न स्वमन्तव्यामनाव्य प्रकाश मे शिक्ष है कि मनुष्य उसीको कहना कि सनगङ्गील होकर स्वात्सवर अन्यों के सुखादुकाऔर लाभ हानि को समझे अन्यायकारा बलवान से भी न हरे और धर्मात्मा निर्वल से भी बरता रहे । इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामार्थ्य स धर्मात्माओं कि चाहे वे महाजनाथ निर्वल और गुज रहित क्यो न हो उसकी रक्षा उन्नति प्रियाचरण और अथर्मी चाहे वह सनाय महाबलवान और गुजवान भी हो तथापि उसका नास अवनवि और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्चात वहा तक को सके वहा तक अन्यायकारिया के क्ल की हानि और न्यायकारियो के क्ल की उन्तरि सर्वमा कर। इस काम में चाहे उसको कितना

दारून दुख प्राप्त हो चाहे प्राप

#### आर्य समाज, घाटकोपर का उत्सव

के रस से परिपरित चवन तथा

यवा पीड़ी को राष्ट्र रक्षा हेत

समाज में ज्यापा अज्ञान, अन्याय,

अभाव को समूल नष्ट करने पर

प्रधान सार्वदेशिक प्रतिनिधि सथा,

श्री शूर जी प्रताप भाई, श्री

मुजफ्कर इ.सैन, श्री इरिनाई

कोठारी उत्त चिन्तक आदि का

हैं। इन्होंने अवल्या के द्वारा किये

कर्मों से बने कर्मबन्धों से स्वत:

उद्योधन प्रेरणध्रद रहा।

कैप्टन देवरत्न आर्य ४५

बल दिया गया।

आर्य समाब चाटकोचर मुम्ब्यं का वार्षिकोत्सव व प्रवम संस्कार शिविर समारोष्ट गविदिनों अस्पन्त उत्साह पूर्वक मनाग गया। आकार्य चन्द्रदेव जी "कुलपवि" आर्व गुरुकुल कृष्ण पुर फरसाबाद का राष्ट्र के नाम सन्देश व वेदानकल

वैदिक राष्ट्र की स्वापना तथा युवकों हेतु समय के महत्व का आंकलन व प्रति बद्धता का निर्देशन हुआ। प सुरेत सास्त्री मुम्बई द्वारा प्रभुभक्ति

से जहत्व गणवृष्य होता है । अव:

ऐसी सुबनात्मक शक्ति कह नहीं

(पक्ट 4 का शेव)

रखरा । वो फिर एक कोशिकीय ही सरीर रचना मानी है, रचियता बीवो के शरीर रूपी मशीन में जड़ ईश्वर का अस्तित्व नहीं माना । पर्याचरण के कारण इस प्रकार के बैन मत के अनुसार ये कर्मबन्ध परिवर्तन कैसे सभव हैं कि नई-नई सुक्ष्म द्रव्य (अर्थात् पुरुगल) से वटिल एवं श्रेष्ठतर स्पीशीओं का बनते हैं तथा हव्य को आकर्षित विकास होता रहे। अन्त मे आदमी कर शरीर रचना कर लेते हैं। रूपी श्रेष्ठराम मशीन बन जाये ? सिंध पाठकवन्द । यहा जरा अत: डारविन का एक स्पीशीज से विचार करें कि ये कर्मबन्ध बड दसरी स्वीशीज में बदलते जाने का पदार्थ से बने डोते हैं। अत: इनमे कबन ऐसा ही है जैसे कोई कहे कि बहत्व गुण होगा कि नहीं ? तब मेरा कलम विशेष परिस्थितिया प्राकर वे स्वत: शरीर ऋषी उत्तम मशीन कमशः साइकिल, स्कूटर, कार, कैसे रच सकते हैं ? क्योंकि रलगाडी में बदलका गया फिर वाययान बढ़ में स्वय महीन रचना का धनकर आकाश में ठड़ने लगा। एक सामर्थ्य नहीं होता। फिर आत्माओ स्पीशीन का दूसरी स्पीशीन में के लिए प्रत्येक बार सीरमण्डलादि परिवर्तन का अर्थ है- एक मशीन का भी कैसे रखे जा सकते हैं ? स्वतः धीरे-धीरे दूसरी मशीन में क्यों कि कह पदार्थों में अइत्व परिवर्शन और वह परिवर्शन जड़त्व होता है । अतएव ईस्वर एव के सिद्धाना से स्पष्टतया विरोध रखता आत्मा का अस्त्रित्व सिद्ध हो जाने है । भौतिकों का यह सिद्धान्त गलत से जैनादि नास्तिक मतो का नहीं, किन्त एक स्पीशीय से दूसरी खण्डन भी हो जाता है ? स्पीतीय का विकास-वो किसी ने असी । बार-बार विचार करने देखा नहीं, केवल कल्पना की है-ही पर ईंग्बर और आत्मा का अस्तित्व गलत हो सकता है। स्पष्ट है कि सिद्ध होता है । जब सर्वहवितमान एक कोशिकीय प्राणियों का विभिन्न ईश्वर सच्टि का स्वामी है और स्योशीजों में क्रमशः स्वतः विकसित यहा उसी के निवम चलते हैं, होते हुए अन्त मे मनुष्य बनना सभव किसी अन्य के नहीं, वो उसके नहीं है, अतएव डारविन के इस कमन नियमों को बान, उनके पालन में पर भी व्राजपात हो जाता है। प्रवत्त हो हम क्यों नहीं आत्मोद्धार साराज रूप में दारविन का करते हैं ? मनमानी करके उसके

विकासवाद एक मूर्खकापूर्ण प्रलाप ही करेव के भाकन क्यों बन रहे हैं ? है कि जिसने शरीर रचना रासायनिक वगत्पिता परमेश्वर, सब आत्माओ क्रियाओं से ही मानकर आरमा व को कल प्रदान करें कि इससे इस ईश्वर के अस्तित्व को पूरी वरह नकार आर्यावर्त में तथा बाहर के सभी दिया और मनुष्य बावि और उसके देशों में वेदों की पुत: प्रतिका हो ज्ञान-विज्ञान को गलत दिशा दे, निविज्ञ अंचकार में थकेल दिया। और सब स्वस्थ, बली और विद्वान हों. दीर्घाय व्यतीत करते हुए एक लने शाध जैन मत का भी खण्डन

सत्र में बंधे रहें ।

इस बढ़ाय के सिद्धान्त से कर लेते

## अमतसर में मकंर संक्रान्ति पर्व

आर्थ महिला परिषद्, अमृतसर की ओर से महर्षि दयानन्द धाम. बाजार इसली कटडा मित सिंह. अमृतसर में मकर सक्रान्ति के उपलक्ष्य में दो दिवसीय महायज्ञ ज्ञान्तेद और सामवेद के मंत्री पर अधारित महायज्ञ का आयोजन किया गया ।

यज्ञ के ब्रह्मा पद को पश्चित सिकन्दर शास्त्री जी और श्रीमति शकुन्तला जी मे सुशोभित किया। यज्ञ के समय महर्षि दयानन्द धाम का हाल खावाखाच भरा हुआ था । वेद मंत्रो से सारा वातावरण यहपय हो गया । यज्ञ के उपरान्त श्री सिकन्दर शास्त्री जी, श्रीमति शकन्तला जी, बहिन आज्ञा वती जी, बडिन अनिता जी के मधुर भजनों ने सारे वातावरण को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस समारोह मे वेदमन्नो के भावों को प्रकट करते हुए श्रीमति जगदीश आर्या. अध्यक्षा पंजाब प्रान्तीय आर्थ महिला परिषद् ने कहा कि आज विश्व में नारी जाति, जिन महत्वपूर्ण पदों पर आसीन है इस का सारा श्रेय आर्य समाज के सस्यापक महर्षि दयानन्द जी को बाता है । आज विश्व मे नारी जाति प्रत्येक क्षेत्र मे प्रतिस्पर्धा है अगर वास्तव में नारी जागृत हो बाए तो सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है । यह जागति केवल वेद के अनुसार जीवन ढालने से सम्भव हो सकती है। श्रीमित बगदीश आर्या ने सभी नारी जाति को वेद पढने और उस का अनसरण करने की प्रेरणा दी

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये श्रीमति सुनीता पसाहन श्रीमति कन्ती देवी, श्रीमति उपा बजाज, श्रीमित लता पसाहन श्रीमति बेबी ने विशेष सहयोग टिया ।

#### दबानन्द माइल स्कूल रायकोट में गणतन्त्र दिवस मनाया गया

आर्य समाज रायकोट के भवन मे दयानन्द माहल स्कूल चल रहा है । इस द्वारा 26 जनवरी 99 को गणतन्त्र दिवस मनावा गया । प्रण्डा लक्षराने की रसम श्री राजकुमार जिन्दल सी ए ने अदाकी जिला आर्थ सभा लुधियाना से श्रीमति रावेश हामाँ प्रधान, ह्रो विश्वय कुमार सरीन महामत्री, श्री रणवीर भाटिया कोबाध्यक्ष, श्री नरिन्द्र भल्ला जी श्री मतवाल चन्द की प्रधान दाल बाबार लुधियाना, श्री रमेश सूद

वी दाल बाजार लुधियाना, स्वामी सुमना यति जी, श्रीमति जनक रानी, श्री ओम प्रकारा कसी जी और लगभग 20-25 ठार्व सदस्य इस प्रोग्राम पर ण्डुचे ।

बच्चो ने "पजाब की धरती" एकांकी प्रस्तुत किया। इस में सरिता कन्नौजिया ने घरती मा का अभिनय किया। जिसकी सभी सण्जनो ने बहत प्रशंसा की और भी बहत से नन्दे-मुले बच्चों ने रगा रंग प्रोग्राम प्रस्तत किया ।

श्रीमति राजेश सम्बं जी प्रधान जिला आर्प सभा लिधियाना ने बच्चो को आबादी के साथ-साम आर्थ

समाख के नियमों पर चलने की प्रेरण दी ।

श्री अशोक कुमार कन्नोजिया महामत्री आर्य समाज ने मच सचालन किया ।

श्री विजय कुमार सरीन, श्री रणवीर भाटिया, श्री मतवाल चन्द जी लुधियाना ने भी भाषण दिया। ब्री रमेश सूद ने स्वामी दयानन्द जी और स्वामी श्रद्धानन्द जो के जन्म दिन और शहीदी दिवस कौमी त्यौहार मनाने की सरकार से अपील की। श्री जय प्रकाश जी ने भारत के सविधान की कानकारी थी।

लाला श्री भीमसैन प्रचान आर्थ सम्पन्न रायकोट ने आए सभी श्री राजकुमार जिन्दल सी ए जिला आर्य सभा लुधियाना से श्रीमति राजेश शर्मा प्रधान श्री विजय कुमार सरीन महामत्री श्री रणवीर भाटिया. श्री नरिन्द्र भल्ला श्री रमेश सूद, श्री मतवाल चन्द जी श्रीमति जनक रानी और स्वामी सुमना यति और सभी सदस्यो को फूल माला पहना कर अभिवादन

प्रधान, आर्थ समाज रायकोट

## SECTION 1 भटिएडा में पारिवारिक सत्संग

श्री संदीपकुसार सुपुत्र श्री असोक सर अग्रवाल (मैनेक्र) आर्थ गरुवं सीनियर सैकण्डरी स्कूल मटिण्डा के 27वे जन्म दिवस पर पारिवारिक सत्सगका आयोजन किया गया । यं० सुनील कुमार शास्त्री पुरोहित द्वारा

वञ्च करवाया व ठपदेश दिया गया। आए हुए सभी पारिवारिकवनो ने व अन्य लोगो ने फुलों की वर्ष करके आरीर्षाद दिया। श्री अशोक कमार भी ने 100 रूपये आर्य समाज को दान दिया ।

## आर्य समाज वेद्धैमन्दिर भार्गुव नगर के के स्वर्ण जयेसी तथा ऋषि बोधोत्सद

विश्व कल्याण गायत्री महा यज्ञ व राष्ट्रीय एकता महा सम्मेलन

## 8 फरवरी से 14 फरवरी 2009 ती

सर्जनंतन के अध्यक्ष-स्वामी इन्हवेश जी व मुख्या तिथि थी स्वामी अभिनवेश जी होने । कारान्तिक्य आर्थ प्रतिनिधि समा पणाद के प्रधान थी हम्हबस त्यान जी शर्मा करेगे। इस अवसर पर-स्वामी सुनेपामन जी । (राम्या), व्यामी स्वायानन, जर सारणात परिकर ए उन्हास सामत हमा भी यन के के ज पस्तिया विश्वास उपायान, भी आशानन्य आर्थ उत्पायान व थी अधिवारी कुनाए सर्मा महानेशी आर्थ प्रतिनिधि कसा पणाद, श्री स्वामोदन (वीस प्राराप), श्रीनिति सुवधीन वोपड, श्रीनति स्ववेस प्रधार (पणाद केससी), प्रिं अधिवारी स्वामा प्रधानी स्वाप पणाद स्वेस क्षी स्वापीन स्वाप कारोन्ता, अपाया अध्याना, पर धन्यान स्वाप कारोन्ता, श्री स्वापा कुनी साम (प्रमान क्षी स्वापान, पण प्रधान स्वेस अर्थ, श्री स्वापीन समा, श्री स्वापा कुनी साम

सभी आर्य बन्धुओ व बहनों से निवबेन है कि समय पर प्रधान कर उत्सव की ग्रोभा बढ़ाए व धर्न लाभ उसवे।

सरदारी लाल आर्य रल प्रथान मनोहर लाल कोचाव्यक्ष

राज कुमार *मत्री* 

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार कां आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त, कोलस्ट्रोल रहित विटामिन 'सी' से भरपूर

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का सेवन करें ।

公

*शास्त्रा कार्यालय :* , गली राजा केदारनाथ

चावड़ा बाजार दिल्ला-११०००६

है अस्तिनों कुमार जो सम्प्र एहमोकेट महामनी सम्प्रदक्ष हारा जब हिन्द प्रिटिंग प्रैस्टर्गिसकेट विद्यं क्वसन्तर से पुत्रित प्रोक्त रूपय नर्पाय कार्यात्त्व गुरुद्रता पत्रत चीक विकासका क्वरुत्वर से इसकी स्वाभिती आर्थ प्रतिभित्र सुन्य पत्रक के लिए प्रकारित हुआ ?

वर्ष 48 अका 49 3 का गुन सम्बद् 2055 तदनुसार 4 वार्षिक शस्क 0 रुपय आनीवन

## गहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का

ले श्री अभिवलेश कुमार सुभाष बागार मयाना (मेस्ट)

जान क लिए वद की शिक्षा का प्रकाश उनका आ माओ म अकित क्रिया है वद सभा मनुख्यों क िनए समान रूप से प्रभावकारी है वानक सिद्धान्तों के अनुसार ईश्वर प्रकृति तथा आत्मा ये तानो अनादि सनाये हैं इनम स ईहवर तथा आतम अमर तथा अपरिर्वतनशाल है कवल प्रकृति ही परिवर्तन शील है सुच्टि के प्रारम्भ मे अहकार तत्त्व की प्रत्यत्ति होने क उपसन्त आत्मा प्रकृति के बने हुए शरीरो से सबुका होत हैं जिसस प्रकृति के बन हुए शरार कार्य करना प्रारम्भ कर देत हैं यहीं स मनुष्य का यात्रा प्रारम्भ हा आता है जो अहकार समाप्त हाने के उपरन्त मा प्राप्ति पर समाप्त हाती > मनुष्य को अपन लक्ष्य प्राप्ति क लिए जीवन जाना होता है तथा जिसके लिए उसको कामनाय बनानी पण्ती है इन कामनाओ को नियम में बाधन के लिए हमें ज्ञान का सहारा लना पडता है तथा नान हा वद का दूसरा नाम है वेद क अनुसार गृहस्थाश्रम वास्तव म सबस बडा आह्रम है वदा इसके ानवमा का ठाक ताक पानन कर <sup>प</sup>म अरती पर हा स्थर्ग का अन्भव सकत हैं इसक लिए "म

परमाल्या ने मनुष्य को जीवन

अर प्यो व अन्य तथ्यो क बारे म जान तना आवश्यक 🌯

(१) आस्थम वेदन मनुष्यो का जीवन सो वर्षों का माना है जिसका चार आश्रमा म विभवत किया गया है प्रत्यक आजम पाचीस प्रच्वीस वर्ष का बनाया गया है

सर्वप्रथम प चीस वर्ष क्राराच्या मार 2 दितीय प चीस वर्ष गहस्थात्रम

3 तृतीय प चास वर्ष जानप्रस्था सम

4 चतुर्व प चास वर्ष यत्यासाग्रह

जिस (2) गृहस्थाश्रम प्रकार नदिया तथा बडे बडे नद तब तक भ्रमण करते है जब तक समद्र का प्राप्त नहीं हो जावे उसा प्रकार गृहस्थाश्रम शेष तीनो आश्रमो का निर्वाह करता है तथा गृहस्थात्रम के सहारे हा शेष तीनो आश्रमो स्थिर रहत है जिस प्रकार वायु के सहार सभी प्राणी जीवित रहत हैं वसा प्रकार गृहस्थात्रम शेष तीनो आश्रमो को दान तथा अन्तादि देकर अन्याश्रमा को स्थिर रखता है जिसके

कारण गृहस्थाश्रम ज्यच्ठाश्रम है (3) गृहस्थाश्रम मे प्रवेश का समय गृहस्थाश्रम म प्रवश करने के लिए सबस अधिक आवश्यक है मन्ष्य का

ब्रह्मचय तथा चेद ज्ञान आय क अनुसार कन्या का सोहलव वर्ष स चौबिसव वर्ष तक परुष की प चासचे वर्ष स अहतालिसव वर्ष तक विवाह का समय उत्तम है विधा" का आयु के अनुसार वद न तान भागो म विभक्त किया है

(1) निकृष्ट यदि कन्या का अन्यु सोलह धर्म की हो तथा पुरुष को आयु पाचीस वर्ष का नो और इस आयु में द ते का विवार होता है ता वह निकृष्ट विवाह का क्षेणी में आता है

(2) मध्यम चन कन्या का आयु अहारह चीस वर्ष की हा तथा पुरव की आयु तीस मैनीस वर्ष जानना प्रत्येक वस्त् को यथा योग्य

का हो या चाल'स वर्ष का हा उपयार करता तथ अर और इस आयु म दोनों का विवान होता है ता वह मध्यम विवाह का श्रेणा म आता है य" भा बाह्यण क गण 🖻 (3) तत्तम जब चौबीस (2) श्राप्तिय जान्या स

वर्ष का कन्या का विवाह अडतालिस वर्ष के पुरुष क साथ होता है तब वह उत्तम विवाह का श्रेणा मे आता है (4) नहस्थाश्रम मे प्रवेश

करने का अधिकार गृहस्मात्रम मे प्रवेश का अधिकार केवल उन्हीं को है जिन्होंने आचार्य कुल मे ब्रह्मधर्य पूर्वक रहकर चारो वानी ना अथवा एक वेद का पूण रूप स मनन कर लिया हा तथा निसका ब्रह्मधर्य खण्डित न हुआ हा

(5) गृहस्थाश्रम पर वर्णाभ्रम का प्रभाव गृहस्यात्रम में प्रवेश स पूर्व हमें बगाश्रम पर भा ध्यान देना आवश्यक हे वद मनुष्या को उनके गण कर्म तथा स्वभाव क अनुसार चार भागा मे विभक्त किया है भाहाण

क्षत्रिय 3 वैश्य 4 ग्रह (1) ब्राह्मण बादाण का पटना पटाना यह करना कगना दान लगा देना मुख्य रूप स ये यह कम है मन स किसी बुरे काम का इन्न भान करना समा अधर्म मे कभा प्रवृत्त न होना तथा अपनी नानन्द्रियो तथा कर्मेन्द्रिया का अन्यायरण सं रोक कर धम मे प्रलामा आदि भा बाह्यण क कम है पल से बाहर के अग सत्याचार से मन विद्या स जीवातमा तथा ज्ञान से बुद्धि को पवित्र करना अपने बाहर के मलों को नर कर शुद्ध रहना अपने भीतर के राग द्ववादि को ररकाना किसाकी निन्दान करना सखादखा हानि लाभ मान अपमान आदि में दृढ निश्चय करक रहना बढ़ को बढ़ चतन का चता मानना पथ्यी से लेक परमश्वर वक पदार्थों की विशेषता

मक्ति पर्व जन्म धम बद्या सःमग मातः पितः आप्य का सवा कर

प्रजाको क्षाकरता तिरस्कार तथा अध्य का ना करण हं संबंधितकार संस्थवना पान करता के तथा विद्या का बृद्ध आ सुपात्रा का सवा म धन आर्टि का व्यय करना यह करना तथा कान वद आदि शास्त्रों का पक्षना नथा पढ़ाना विषयो म न फसना तथा जितन्द्रिय रहकर शरार तथा आ मा म बलवान रहना संकडा सहस्वा म भा अकल युद्ध करन म भय होना सदा तेजस्वा तथा दानग रहित रहना धेयवान नाना गना और सम्बन्धि व्यवहार तथा पव शास्त्रों में चतुर नाना युद्ध म नटकर लक्षना कभी न भागना इस प्रकार लडना जिससे निश्चित रूप से चिजय हा पक्षपात रहित "कार सबक साथ यथायाग्य व्यवहार करना अपना को गई प्रतिज्ञा का पुरा करना यह सब एक क्षत्रिय क गुण \*

(3) वैज्ञय गाय आद पशुओं का पालन तथा रक्षा करना विद्या के वृद्धि करन करान क लिए धनादि का व्यय करना यह करना बंदादि शास्त्रों का पढना सब प्रकार क व्यापार करना एक सैकड पर पन्द्रह प्रातशत चा।पक स अधिक व्याज न लना तथा असल से दगना धन न लना तथा खता करन यह वेश्य क गुण है

(4) शहर किसाका निन्द नकरना किसीसईच्या करना था अभिमान न करना यह काय श को करन चाहिए इसक आगारक भ्राक्षाण भत्रिय तथा वश्या 🐨 म सहायता भा करनी चाहिए

**उक्त वर्णों** का परिभाषा का ठाक प्रकार समझकर अपन अपन वर्णों में स्त्रा तथा पुरुष का विवार करना चाहिए (क्रम्म)

## बन्धन से मृक्ति ले॰ भी आक्ष्य अभिलाची जी बालास्थाक्त ज्यालापुर हरिकार

इस ससार में हर जान हर

प्राणी बचा हुआ। अग्रेजी भाषा मे एक कडावरा है MAN IS BORN FREEBUTHEIS EVERY WHERS IN CHAINS 4754 स्वतंत्र पैदा होता है पर फिर भी वह ष्टर समय किसी न किसी जजीर मे वधा है कोई भोड़ की जजीर मे वधा है तो कोई लोभ की किसी को काम न जकाश है तो किया को क्रोध न । किसी को ईर्म्या द्वेष खाये जारात है तो किसी को आपकार दबाए जा रहा है।

ऋग्वेद का एक बड़ा सुन्दर सत्र है-

ओम उदत्तम बस्रण पाशमस्त्रदेखसम् वि मध्यम संधाय। अवा क्यमादित्य व्रते त्वानागस्ते ।

अदितमे स्याम स्वाहर।। इत वरुणस्यऽऽदित्यायाऽवितये च बंदे न मम।१

ऋग्–म १ स् २४ म १५ भावार्थ यह है कि प्रभु तु हमारे सबसे उत्पर के पाश बन्धन की तार ने नीचे के पश को हटा दे बीच के पाश को शिविल कर द यह सब बन्धन काम लोभ क्रोध माह और अहकार के हैं और हन जालो स मुक्त होकर हम तर अदिति अखण्डित नियम अखण्डित ानवमा म नाज रहित मोक्ष के लिए गण्याप होकर बाग्य अर्थात मोश के अधिकारी **बने इ**म ऊपर से न'च और नीचे से बाच में स पापी क जाल में फस पड़े हैं। आप कृषा करो कि यह जान कटकर जिल भिला हो जाये हम इन जाला म इसलिए बन्द हैं क्योंकि हम आप क अखण्ड नियमो का पालन नहाकर रहं आप कृपाकरो कि हम आपके बनाय अहिसा सत्य

अस्तय ब्रह्मचय अपारग्रह आदि महावना का पालन करे हम इन बन्धनो स कौन मक्त करवा सकता है कोन इन जालों से हम खुडा सकता है

कात्यायन ब्रोत १५ १ १० मे एक बहुत सुन्दर मत्र है जा कि मार्गदर्शक 🗢

ओं ये त जन बरुण य सहस्त्र यज्ञिया पाश जनता महान्त । त भिनों अद्य मा नान विष्णुविश्वे मुचन्तु भरत स्वका स्वाहा।। इद वंतनाय सवित्रे विष्णवे विश्वेश्यो देवे भ्यो सरुवस्य स्वकेभ्य इद न मग ।।

भावार्थ यह है कि हे प्रभो आप के ससार में सैकड़ी और हजारो नियम हैं जिनके पाश से मन्ष्य बद्धा हुआ है। हमारे गुरुजन ो शभ कर्मों के प्रेरण देने वाले है न्याय शास्त्र को जानने वाले शास्त्रवेता जो क्या ठीक है और क्या गलत है इस का निर्णय करते हैं। हमारे भित्र गण जो विपत्ति के समय हमें ढाढस बधाते हैं तपस्वी लोग जो तपस्या का जावन व्यक्तित करते हैं यह सब हमें कर्म के बन्धन से क्षडा कर भवसागर से

सिक्षपा रूप में कहा जाये कि चर प्रकार क व्यक्ति मनुष्य को इन बन्धन से छहा सकते हैं। उन चार प्रकार के नाम ऊपर लिख दिवे हैं थोड़ा उन के नाम पर उन के गुणो पर उनके अधिकर क्षेत्र पर वितन कर ले विवार कर ले।

१) सविता--पहली प्रकार के

पार करने में सहायता दे।

लोगों का नाम सविक्षा दिया गया है सविता का अर्थ है प्रेरक शथ कमें मे प्रेरणा देने वाले को सविद्या कहते हैं एक पछी पिकर मे बन्द है उस के पिजरे का दरवाजा जिस निन खाला रह जाये वह उड जायेगा। एक शेर को पिजरे मे बन्द करके रखा है जिस दिन दरबाजा खला रह गया उस दिन वह शेर भाग कर जगल में चला जायेगा एक कैदी कारागार म बन्द हे जिस दिन जेल का दरवाबा खला मिला वह वहा से भाग निकलग पर जाव शरी रूपी कारागार में बन्द है वह मक्ति पाना नहा चाहता। चलो मनव्य तो कह सकता है कि मुझे मनुष्य दह श्रभ कर्मों के परिणाम स्थरूप (भाना हैं मैं क्यो इसको छाड? चुहा बिल्ली कुताया नालाका की ठा कब अपनी दह का छाडना चाहता है कोई भाजीय जन्त पश पक्षी मरना नहा चाइता इसलिये प्रेरक का आवश्यकता है जो यह प्रेरणा न जीव शरीर रूपी पिजाने को छाड कर चाहर आकर मुक्ति को प्राप्त हो शरीर रूपी पिनहां छोडने का अर्थ आत्महत्या नहीं। वह नो एक पाप है और फिर एक शरीर

का त्यान कर के आत्या तो नया

चोलाले ही होगी। प्रेरक मन्छ

की का कर की घेटना टेगा कि कावागमन के शक्क से कटो शभ कर्म करी साकि इस स्वेथ की प्राप्ति हो सके।

प्रेरणा से बंदत से जटिल से वटिल काम भी सरल हो बाते हैं। बुभाव चन्द्र बोस ने भारतवासियो को प्रेरण दी कि दासता की जजीरों को काटो। नारा दिया दुम मुझे खन दो मैं तुम्हे आजादी दगा। एक भगत सिंह तो क्या अनेको भगव सिरू फासी के फदे पर अरू गये। हर एक के डोठो पर यही तराना था। मेरा रग दे असती चोला महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के लिये प्रेरित किया कि नहीं हम अष्टिसा से भारत को आबाद करायेगे। उन्होने आवाज दी कि विदेशी का बहिष्कार करो। सारे देश में विदेशी कपड़ की होली जलादी गयी। एक नारे ने सभी जेलो को भर दिया। गाधी और सभाव की प्रेरणा न भारतवासियो में एक ऐसा जोश भर दिया कि अग्रेब भारत को छोड कर जाने के लिये मजबूर हो गये

स्वामी दयानन्द के प्रेरणादायक अब्दों ने अमीचन्द्र की जीवन नौका को इस किनारे से तस किनारे पर ला कर खडा कर दिया। अमीचन्द एक अच्छा कवि और एक अच्छा भवनीक या। पर उसका जावन विलासमय भा। स्वामी जी के एक वाक्य कि अभी चन तुम हो तो हीरा पर कीचड में पड़े हो ने अमीचन्द को झ्लोड कर रख दिया।

अर्जुन युद्धक्षेत्र में मोह ग्रस्त हो कर युद्ध करने से इकार कर देता है योगीराज कृष्ण उसे प्रेरित करके मोह जजाल से निकालते हे उस उपदश को जो भगवान कृष्ण न अर्जुन को दिया गीता के नाम से स्मरण किया जाता है जो कि एक अमर ग्रथ माना गया है

सकिता के भिन्न भिन्न अर्थ हैं परमातम का एक नाम सविता भा है परमात्मा भी शुभ कर्म की प्रेरणा वेदामृत द्वारा देश है परमाल्या केवल प्रेरित करता है परना उसने जीव को कर्म करने की स्वरत्रत दे रखी है। कर्म का फल भगवान के डाथ में है। परमात्मा बेद के माध्यम से हमे क्या कुछ प्रेरणा नहीं दता।

ओ भी शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति पृथ्वी शान्ति राप शान्तिरोषञ्चय शान्तिवंशस्वतय शान्तिर्विष्टवे देखा शतन्ति सद्धा कैसे अपनाना है। (क्रमशा)

शानित सर्वे शानित शानित रेथ ज्यान्ति सामा ज्ञान्ति रेकि । वह मत्र सन्देश देख है परमात्मा

की ओर से प्रेरणा देश है कि इस बगत मे तान्ति हो अन्तरिश्च म रानित हो खौलोक में मानित हो औषधि वनस्पति इत्यादि सब मे शानित हो। इस से बढ़ी शानित की और प्रेरण: बया हो सकती है? वेद किसी जाति विशेष के लिये किसी सम्प्रदाय के लिये किसी विजेष पेश के लिये नहीं बल्कि ससार के लिये नहीं नहीं समस्य ब्रह्मण्ड के लिये हैं। शान्ति मारत के लिये नहीं। सान्ति हिन्दओं के लिये नहीं शान्ति की समस्त विश्व के लिये प्रार्थना की गई है। आज एकारो निषम हैं जिनके पाश में मनुष्य भवा हुआ है हमारे गुरुधन जो शुभ कमी की प्रेरण देने वाले है न्याय शास्त्र को जानने वाले शास्त्रवेता जो क्या ठीक है क्या गलत बताने वाल है आज विश्व ज्ञान्ति के लिये अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन हो रहे हैं वेद ने तो शानित की प्रेरण मानव को ससार के उत्पन होने पर ही देदी थी। अब मानव सोचे कि कौन सः मार्ग अपनाना है रपन्तिका यद्भका हिसाका

था अहिसाका। परमात्मा ने मनुष्य को प्रेरण

सगन्धव स वदध्य स वो यनासि जानताम् ।

देवा भाग यक्षा पर्वे सजानाना उपस्पते ।।

समानी व आ कृति समाना इदयानि व 🕕

समानपस्तु वो मनो यथा व सस्रष्ठासति ।। इकट्ठे मिल कर चलें एक

जैसे बोली कोलें मतभद न हा हमारे हृदयों में प्यार हो प्रेम से मिल कर जला बोलो सभी ज्ञानी बनी ।

पूर्वको की भानित तम कर्तांच्य के सामी बनो ।

अब सोधना इमने है कि प्यार से रहना है या झगड़े से एक जेसा बोली बोन्नना है या पाव भाव की सब को साथ ले कर चलें भाई का हत्या करनी है क्या पडोसी रे ईध्या करनी है? सुषय का मार्ग अपनाना है या कृपथ का? स्वार्शी बनना हे या परमार्थ करना है? अहसा पर दृह रहना है वा विसा पर उतारू होना है । प्रमातमा ने वो मार्ग दर्शन कर दिया । प्रेरणा भी कर दी अब

रह गई बात हम पर कि प्रेरणा को

प्रम्यादकीय 🗷



आर्य समाञ को स्थापित हुए 124 वर्ष कातीत हो चके है। अगामी वर्ष सन् 2000 में इसे पूरे 125 वर्ष हो जारोगे। आर्ट समाज की स्थापना चैत्र सुदि प्रतिपदः को सन् 1875 में महर्षि वटानन्द ने बम्बर्ड मे की थी। इस दिन हमारे सारे देश मे नद सववसः नया वर्ष मनाया जाता है। महाराज विक्रमादित्य से उसकी गणना आरम्भ हुई इसलिए इसे विक्रमी सवतु भी कहा आता है। इस बार 18 मार्च को वैत्र सुदि प्रतिपदा है और इस दिन से सवत्सर 2056 आरम्भ हो रहा है। महिष दवानन्द ने इस दिन की महता को देखते हुए आर्ट समाज की स्थापना के लिए इस दिन को वना। जिस समय महर्षि न इस समाज की स्थापना की थी उस समय आर्थ समाज का प्रचार व प्रसार करते वाले और वेदो का प्रचार करने वाले वह अकेले थे। उनसेमे सत्वार्थ प्रकाश सम्यक्तर विधि और ऋग्वेदादि भाष्य भनिका और दसरे कई गुन्धो की रक्ता की। इसके साथ ही उन्होंने वेवो 🔐 भाष्य करना आरम्भ का दिशा था। वह साहते थे कि में अपने जीवन काल में चारों वेदों का भाष्य करके जाऊ परन्त विद्याता को वह स्वीकार म था अभी उन्होंने राजवेंद्र का भाष्य करके ऋग्वेद का भाष्य आरम्भ ही किया था कच्छ ही मण्डलो का ऋग्वेद का भाष्ट किया था कि उन्हें कट विष दे दिया गया जिसके कारण वह टीपातली के दिन 1893 में अपने मफ़र शरीर को छोड़ कर सदा के लिए वले गए।

महार्थी को इस बात कर पता था कि जो होगा अकरण में अवकी कुछ बने की रै कर कमी भी उनकी जीवन कर अवन कर सकते हैं क्योविंग उन्हें कुछ दुष्ट प्रयूपि के होगा कई बार विश्व है कुछ अवका कार्य कार कार्य कर हिम्मा पान्त अवेतन वार उन्हें वार अवका कार्य कार कार्य कर हिम्मा पान्त अवेतन वार उन्हें विश्व के क्या कार्य कार्य

आर्थ समाज को स्वामित हुए 124 वर्ष करतीत हो गए है। इस बार रम 124वा स्थापना दिवस गता रहे हैं। इस दिन को गता है हुए आओ दिवसन करे कि आर्थ समाज से वपनों इन 124 वर्षों में क्या कुछ किक्सा अर्थ समाज हर किम में आर्थ कहा महर्ष के कारण में भारत हैं। प्रतास था उन्होंने स्थापना की किस कार्य समाजित्यों ने उसे अपने सूत्र में सीवा ए उसने एक वृक्ष कर रूप ग्रामण दिवसा हिंसके छ्यानस्था 16 अमस्त स्वा 144 कर हुए सारों की अपना है।

आर्ट समाज ने स्त्री सिक्षा के लिए मरान कार्ट डिप्टा क्योंकि इस कार में निवरों के सिक्षा देने कर कई वर्माटर्ट विशेष कर रहे थे अर्ट समाज ने करवा पाठशासार स्त्रोल कर नहीं डिक्स असन्य कर वी और उसके बाद कई स्कूल व करनेज स्त्रोल हिए। अन्न समाजन एंगे जैसी सरकार जो कभी स्त्री शिक्षा का विशेष करती वी वह भी कई स्कूल कारोज स्त्री सिक्षा के लिए समा रही है।

### बर वर्ष (नव पंचर) मंगलमय हो

18 मार्न की चैंड सुद्दि प्रतिपद्ध से नम वर्ष नम स्वाक्तर 2056 आस्था ही रहा हैं। इस अनसर पर स्वाब्ध के स्थानी प्राक्षण एकाव की और से आपं स्वाब्ध के स्थानी प्राक्षण के पाठक स्वरूपायां तथा स्वाब्ध की स्थानी प्राक्षण के प्रधानका के अधिकारिया कार्यक सुन्यां, क्रिमीयानी ग्राप्थ्यपन अध्यानको व समीज्ञायां कर्मुखा च म्हानी की हार्दिक वर्षाई देते हैं और अपलस्तिता से ग्राप्यान न्हरते हैं यह वक सब क हिए प्रीकृत्यन हों।

के. के. प्रसीचा वरिष्ट उपग्रधान

इंद्रवस लाल श्रमा *संभा प्रधान* 

अधियनी कुमार शर्मा <u>प्</u>रक्तपेकेट सभा महामूजी

अच्चूतीद्वार के लिए आर्ट समाज ने आन्दोलन चलाया और वह बड़ा सफल रहा अब लगभग यह लानत समाज में समाप्त पाठ हो गई है। सरकार ने भी इसे अचना निया है।

अर्थ समाज ने अनिमान करने दिश्य और सारे समार को एक नई दिशा दी। मानव जीवन के एतरेक कीर को आर्थ समाज ने प्रमाशित किया। अर्थ समाज कर करार्थ स्वर्ण अर्थरों में शिवने के पेक हैं। अर्थर समाज कर सस्या है जिससे मानव माज कर करनाण किया है। क्योरिक जाति पाति दुःजा दून माजर के वस्पायक की भावना से व आहरमारी से और प्रतिस्थान करां अर्थ समाज ने एक नई दिशा वी और अनेक्टना को दूर करके एकमा प्रकार की

10 मार्च को सभी आर्च समाजे आर्च समाज स्वापामा विदास समाजों हुए अर्च समाज के पिएनों 124 वर्ष के कार्य पर दृष्टिपात को व जमाज को बागर कि आर्च समाज के इन 124 वर्षों में राजा किया। आर्च समाज के जम्म की 125वीं उपत्यशे माना के की विधारी करते हुए सभी आर्च बहुए कार्च समाज के कार्य का लोगा औंचा करें। आरा रूप आर्च समाज का विश्वना कार्य कर रहे में विश्वनाची जार्ची कर रहे वादि रूप से हों कि इस समाज अर्च समाज में कुछ विश्वरात्वा आ गई तो रूप विश्वराद को कि आगमी इस एक वर्ष में रूप इस विश्वरात्वा को दूर कर के आर्च समाज में कुछ

--अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट सभा ग्रहामन्त्री

## दानवीर श्री राजेश्वर जी का निधन

कारित गाँद प्रात्मको सामानाता सुन्देशस्य स्वाती हत्या ते 446 काल स्वातीकार वास्तः सूर्व केरस्त

त्रा राजेश्वर जी कः ६३ वर्ष की आयु म 11 2 99 का निधन हो गया दिनाक 24.1 99 का उन्हे लियर क आग्रशन क लिए सर गमा राम अस्पताल में भर्ती कराया गया था श्री रावस्वर जाका जन्म 25

फरवरा 1916 का लाला भगवान दास जा और सीभाग्यशालिना श्रामता लाजवन्ती के घर पर हआ इनका पारवार जहलम (पकिस्तान) स 1928 में टिल्ला आ गया था रानस्वर जा बचपन से ही प्रश भक्ति और धामिक प्रवित क ध राभक्तर जा ने बचपन म अनक आर्थिक कठिनाइया का रूपना किया राजश्वर जो न टयुशन पढा कर 1936 म हिल्ला विश्वविद्यालय म हिन्दुकालज स बाएस सा का पराक्षा उत्तार्ण की और कालेज मे सर्वप्रथम आव

1938 में पक्लिक सर्विस कमाशन की पराक्षा देकर 🗅 करावर Ge or 1 of S pol cs and D sposal कावास्त्व प्र नोक्यो क्यने समे

मइ 944 म राजश्वर जी सठ रामकृष्य डालमिया जा की सर्विस म आ गय सठ हालमिया जी इनके काम स इतन प्रभावित हुए कि उद्यान रजश्वर वाको 13 कम्पनिया का निर्देशक नियक्त कर दिया राजेश्वर ना 1980 तक संठ नार्नामका जा क काम स जुड़े रहे।

प्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथा श्री रामचन्द्र दहलवी जा क भावण एव शास्त्राथ सन कर राजेस्वर जी बहुत प्रभावत हुए उसा मजबत नीव के आ प्राप्त पर राजेश्वर जी श्रशासत **पन्य जात ामटाना हिन्द समाज मे** समरसता लाना धरान्तरण को राकना एव पराक्तन (शुद्धि) क प्रचार व प्रसार म निरन्तर जुट रह रन्तान अन्तजाताय विवाही की पासकार रन के लिए आये समाज **ब्लाकला म अन्तर्जाताय विवाह** विभाग जोला है नहां आज प्रतिदिन 2 न्तर्गताय विवाह होत है

**नश्वर ना न अपन माता पिता** का स्मति का स्थाया ग्रहन के लिए सावशासक सभा म उनक नाम त्वाजवन्ता भगवान दास **सद्धि** स्थर ार्माध 1992 में कछ लाख रूपमे दकार स्थापित का है इसक ब्याज म आर एस एस ने भी सदि कार्य स मदि प्रचारका का मान धन दिया को अपना लिया इससे वे

जाता है। यत लगभग ३ वर्ष तक उन्होंने समा कार्यालय से अरोजी में पत्र व्यवहार हेव एक कमचारी अपने खर्चें से दिया हुआ था आर्थ समाजो के सापाडिक सत्सगी म ऋद्यालओं की घटती हुई

उपस्थिति से भी वे व्याकुल हो वारो ये उन्होंने आर्य समाजो मे रॉनक लाने के लिए दिल्ला प्रदेश म गुरुकुल कागडी क स्नातक एक योग प्रशिक्षक की निविधत को इहं है जिसका मान धन वह अपने टस्ट की और से दते थे 1970 म राजेश्वर भी के किशोरवय पुत्र सुशील कुमार की एक सहक दुर्घटना में मृत्य हो गई सुशाल की स्पृति राजस्वर ना ने आर्थ समाज साकथ एक्सटैशन 1 मे व्यायामशाला

स्वापित का बाद में आर्थ समाज द्वारा शिशु विद्यालय खोलने के कारण व्यायामशाला को कोटला ग्राम में स्थानान्तिरत कर दिया गया एव अपने प्रिय पत्र की याद म आय समाज साठच एक्सटेंसन 1

को अपनी लागत से एक विशाल कथ बनवा कर दिया। वे प्रकार कार्य को आर्य समाज की रीड मानत थे इसलिए आर्य समाज क प्रचारको एव उपदेशको को सहयोग तन मन धन से करने को तत्पर रहते थे। ठपदेशको के पुत्र पुत्रियों के विवाह अथवा चिकित्सा सन 1931 में आर्थ समाज के इत्यादि के लिए वे सदैव उदारता से आर्थिक सहायता करते धे

> राद्धिकत बन्धओं के पनर्वास विवाह अथवा रोजगर इत्यादि के लिए वे भरपूर प्रयास करते थे घर वापसी/परावर्तन (शक्ति) को अपने जावन का लक्ष्य मानते थे शक्ति आन्दालन को हिन्द नन आन्दोलन बनाने के लिए वे विश्व हिन्द परिवद से जड़े वे 1972 से 1983 तक इन्द्रप्रस्थ वि हि प क अध्यक्ष रहे वे 1971 से विक्य **हिन्द** परिषद को इस्टी चले आ रहे थे वे 1981 से दक्षिण दिल्ली के विभाग सथ चालक थे उनक सतत प्रयास से 1992 में वि हि प ने सुद्धि कार्य को एक आगम के

कप मे अपना लिया एव इस

प्रकल्प के वे अखिल भारतीय

अध्यक्ष बना लिये गये। सन् 1996

मोगा में महर्षि दयातन्द बोध दिवस उत्साहवर्धन के लिए 600 क आर्थ समाच प्रोगा के

तत्वाक्षणन मे आर्च गर्ल्ज सी सै स्कल ने अपने पागण से हि 15 2 99 सोमचार को जात 8 से 10 30 बजे तक महर्षि दयानन्द बोध दिवस बडे डी हर्षोल्लास एव समारोह पूर्व मनाया। विसमे प्रात ८ स ० बजे तक बहद यंत्र किया गया पत्रचात आर्य शिक्षण सस्याओं के छात्रो ने भजन गीत कविता एव भावनो द्वार महर्षि दयानन्द के जीवन एव कार्य को जन मानस के समक्ष बडे ही रोचक दंग से प्रस्तुत किया पुजनीय ब्रह्मचारा राम प्रकाश जी आर्य समाज धर्मपर हिमाधल प्रदेश इस संधा के अध्यक्ष के रूप मे अलकृत थे।

इस अवसर पर आर्थ शिक्षण सस्याओं के सदस्यगण एवं सभी प्रिसीपल तथा विद्यार्थींगण सम्मिलत हुए

विद्यालय प्रबन्धक समिति के प्रवान श्रीमठी इन्दुपुरी जी ने अमूल्य समय देने के लिए पूजनीय ॥ रामप्रकाम जी का सार्दिक स्वागत एव धन्यवाट किया साथ ही बोधोत्सद पर बच्ची द्वारा आयोजित कार्यक्रमो से प्रसन्न हाकर अत्यधिक प्रसन्न हुए उनकी आखो मे प्रसन्तता क अवस बहने लगे उत्तर वे कजने लगे कि स्वाधि

दयानन्द की विचारशारा की विक्रिय और आर एस ने अपना लिया है मेरे जीवन का एक बहत बहा लक्ष्य परा हो गया सन 1932 में 'चब ग्री राजेश्वर

जी बीएससी प्रथम वर्ष के विद्यार्थी थे उन्होंने एक मुस्लिम मोचा को शुद्ध कर हिन्दू बनाया बाद में माली हालत अच्छी होने पर शद्धि कार्य के लिए चार प्रचारक रख लिए उनके सहयोग स हजारो मुस्लिम व ईसाइयो को हिन्दू धर्म की मूलधारा मे सम्मलित किया उनका कहना या कि कोई भी व्यक्ति शक्ति कार्य कर सकता हे केवल इच्छाशक्तिकी आवश्यकता है उन्होने एक पुस्तक परावर्तन क्यो और कैस ? भी लिखी है जो शुद्धि कार्य करने वालों के लिए काफी ठपयोगी है उन्होंने 1991 में चन्द्रकाता राजेश्वर धर्मार्थं ट्रस्ट बनाया अपन मकान का एक हिस्सा बेच कर तथाय राकि टस्ट मे दे दा जिसका उपयोग ऋषि दयानन्द को विशारक्षारा के प्रसार प्रसार के लिए किया जायेगा।

प्रदान किए। प्रवाधक श्री बोधरात मजीठिया जी ने समागतजना का स्वागत एव धन्यवाद करते हुए

विद्यालय के पुन निर्मित भवन हतु सहयोग देने वाले समस्त दान दाराओं के पामों का अल्लेख करत हुए उनकी भूरि भूरि प्रशस्म एव हार्दिक धन्यवाद किया

आर्थ समाज के सरक्षक हा के के परा जी ने बच्चों के नीवन निर्माण के लिए सुन्दर विचार दकर उन्हे प्रेरित किया।

सभाष्यक्ष पुजनीय व राम प्रकाश जी ने छात्रों को ऋषि क बोध को लक्ष्य बनाकर निज जीवन उद्देश्य को सफल एव सार्थक बनान की प्रेरणादी क्राजी के कर कमलो द्वारा कार्यक्रम मे अक ग्रहण करने वाले सभी छात्रों को पुरस्कार

भी प्रदान किया गया प्रिसीपल श्रीमती नरेह अग्रवाल जी ने पुजनाय ब्राजी एवं विद्यालय प्रबन्धक समिति तथा आय 🕾 समस्त जनो का पूर्ण सहयाग दन पर हार्दिक धन्यधाद किया अन्त मे शान्ति पाठ के पश्चात सभा न प्रसाद प्रव जलपान ग्रहण किया

दि 12 2 99 को उनक अन्तिम यात्रा म जन समूह उमड पढा। शव यात्रा में विभिन्न सस्याओं द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित का गई उनक पार्थिय शरार का पूर्ण वैदिक 🛕 म दयानन्द बाट लोदा रोड निजाम्दीन म अग्नि को समित किया गया

हि 15 2 99 को आर्य समाज ग्रटर कैलाश म साय 5 बन श्रद्धावलि सभा का आयोजन (कय गया जिसमे वि हि प क उपाध्यक्ष आचार्य गिरिरान किसोर जी जा सत्वनारायण बसल नी आर्थ पुराहित त्री विद्या प्रसाद ामश्र श्रीमति शकुन्तला आर्या ना पूर्व महापौर ने अपने विचार रह्ये एव श्री हरवश लान काहला जा न कविता पाठ किया मच का सफल संचालन श्री स्वदश पान गुप्ता जा ने किया श्रासनस्वर जो अपन पीछ धर्म पत्ना एक पुत्र एक एक पत्री छोड गये हैं

उनका धर्म पत्नी श्रीमात चन्द्रकान्ता पुत्र श्री राम कुमार आय पुत्रवधु श्रीमति परम आर्या पुत्र लिता निज्ञावन एव दामाद शा कार निष्ठावन ने उनके मिशन का ग्राय बढान का सकल्प व्यक्त किया ह

## गुरुकुल, शिक्षा और प्रणाली

र्थ अर कोस कुमार सामग्री अञ्चल समृत विभाग केराजा करावेग गाउनाह

प्राचीन काल से ही भारत सम्पर्ण विश्व के लिए जान का अगाय स्रोत रहा है इसकी महान् परम्पराए हैं ढन्हीं पुरातन पुनीत परम्पराओं में से एक है गुरुकुल परम्परा। पुरुकुल एक ऐसा कुल जिसमे गुरु शिष्य एक साथ रहकर गहन तत्व का चिन्तन किया करते हैं सार ससार को अध्यातम व शान्ति का शास्त्रत उपदेश देने वाले उपनिषद् इन गुरुकुलो की ही देन ह जा उपनिषद् अपनी विपुल तात्विक सामग्री स उन गुरुकुलो का परिचय स्वय इंरडे हैं जहा ऋषिजन गुर अधवा आचार्य अपन शिष्या के प्रति अपने उत्तरदायिन्य का निर्वाह किया करत थे। उन ऋषिजनो के लिए शिक्षक व रध्यापक जसे नितन्त सकृषित अर्थ वान शब्दो का प्याग करना अपनी %याग्यता को ही प्रकट करना है

गुरु का सर्वसा गरण अर्थ है भारा यह गुस्सा या भारापन भागी रकाम तेजस्वी तरीर माता स नहीं अपितु कई अन्य कारणों से हुआ कसाथ और वह उसका एक समाथ ऋषि गुरु और आचार्य होना। स्वय मन्त्र व तत्व का प्रष्टा

होना ही ऋषिण है ऋषणे हैं आप प्राणं नजदूरपार सांशालक प्रमांन ऋषा बच्च (निलक्त 211 व 20) म अपन निर्माण्ड विश्व के अपन निर्माण्ड विश्व के अपन निर्माण्ड विश्व के अपन स्थान के अपने स्थान स्थान के अपने स्थान स्थान स्थान के अपने स्थान स

मानुमान पिपुमान अमार्थमान्य, पूरणा कर भागा हिमा कर पास्त्रमा, इस स्वर्धी स्वस्तर में कदार मुस्त इस स्वर्धी स्वस्तर में कदार मुस्त इस कर द्विपांस्त्र में अपने बद्धा इसा अर्जपूष करता है। इस मोर्ग का अनुभूष करता है। इस इस अर्जपुष्य करता है। इस अर्जपुष्य अर्जपुष्य करता कर्म में भी जीव के अर्जपुष्य करता कर्म में भी जीव के अवार्थ और निक्षा अप्राप्त में देती एक दूसरे से अदुत्युत हैं अवार्थ गुरुकुत शिक्षा प्रणाली का अध्यार्थ गुरुकुत शिक्षा प्रणाली का अध्यार्थ हैं जो अध्यार्थ हों हो स्त्री स्त्री हैं । अध्यार्थ हों हो स्त्री स्त्र अध्यार्थ करते अध्यार्थ करते अध्यार्थ करते हैं स्त्री स्त्र अध्यार्थ करते हैं स्त्री स्त्र अध्यार्थ करते अध्यार्थ करते अध्यार्थ करते अध्यार्थ करते अध्यार्थ करते अध्यार्थ करते हैं स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री में रख्ता हैं उसे स्त्री स्

#### आचार्च उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्त

(अवर्ष 115.3) जन्मना आयते शूत्र सस्काराद् द्विज उच्यते (वृ० उ अत्रिस 142)

द्विज का अर्थ है दूसरा जन्म मृत्यु के बिना जन्म सम्भव नही अत आचार्यके गर्भमे कल मे अते ही बाद्यचारी शिष्य के सामने अपने आचार्यों का जो रूप प्रकट होता है वह है मृत्यु रूप आचार्यों मृत्यु (अथर्व 11 5 14) आचार्य का अनुशासन ही मृत्यु रूप है यह अनुशासन ही उसक चन्म जन्मान्तर से सचित कुसस्कार रूपी बीज को अकुरित होने का अवसर मिलने नहीं देवा फलत जैस धरती म पद्या हुआ बीज उचित वातावरण खाद पानी के बिना थरती के गर्भ में ही जर्जरित हो जाता है ठीक वेसे ही भाषाचारा शिष्य क वे जन्म जन्मान्तर स सचित कुसस्कार रूपा बान भी आचार का अनुरासन रूपा भट्टी म पडकर दग्ध हा जात है ओर जला हुआ बीज कभा अकुरित नहीं हाता यहा आचार्य का मृत्यू रूप है इसी क द्वारा ब्रह्मचारा

शिष्य का अवार्य की कुण रूपा गर्भ गृहा स दूसरा जन्म होता है बेख संस्कारों से समितित जन इसा को वदार्दि शास्त्र द्विजल म प्रवत का जान देते हैं शिक्षा दने का विधि थया हो? इसका संकता भा आवार्य शब्द म ही मिसला है। आवार्य वहां है जो अपने आवार्ण से सिम्मा में जन्मतिस हो वाए आवार्य अपनी

शिष्यो पर जा शासन करना है

उसे शासन न कड़ कर

परचात् दूसरे सब्दो मे आ म शासन के पश्चात् जिसका आरम्भ होता है उसका नाम अनुशासन है। जिस आचार्य व राजा का अपने आप पर शासन नहीं जो स्वय नियमो की बागहोर से नहीं बधा वह अपने शिष्यो अथवा पत्रो पर क्या अनुशासन करेगा ? उसे शासन तो कहा जा सकता है परन्तु अनुसासन कदापि नहीं अनुशासन तो जा म शासित आधार्य से शिष्य मे वैश ही अवतरित होता है जैस दर्पण में प्रतिच्छाया उसमें दण्ड प्रयाग की आवश्यकता नहीं होती शासन दण्ड प्रयोग के बिना कभा हो नहीं सकता शासन बलाव् किया जाता है और अनुशासन सहज भाव स । शासन में शासक क प्रति प्राय विद्रोह तथा दुर्भाव के स्वर गुजत है और अनुशासन म सीहाद तथा सदभावना के स्वर शासन असान्ति भय और दु ख का विस्तार करना हे तथा अनुशासन शान्ति निर्भवता और आनन्द का अत शासन और अनशासन के इस गढ ग्हस्य को समझते हुए आचार्य अपने आचरण से हा शिष्यों मे जिक्षा का आधान किया करता है यही उसका आचार्यत्व है

अनुशासन कहा जाता है। अनु

एक उपसर्ग है जिसका अर्थ है

#### आचार्य कस्माद् ? अरचार्य आचार प्राह्मपति अधिनोति अधात् आचिनोति मुद्धिमीति वा

(निर 1.2.5) शिक्षार्थी शिक्षण केला है? जो गुरु और शास्त्र दोनो क प्रांत श्रद्धान्वत हो समर्पित हा तत्त्वज्ञान का उल्कट अधिलाण रखता हो तथा पूर्ण इता है क्यांकि श्रीस्ट्र भगवद् गांता 4.39) के अनुस्त्र ज्ञ ताने म स किसी एक का भा अभाव हो तो शिष्य तत्त्वज्ञान को उपलब्ध नहीं होता

श्रद्धावान् लभत ज्ञान तत्पर सम्बतन्दिय

फिर एसा शिष्ण भागने अर्थगुरूप गुरुता से बद क्षाकरण ज्योतिय दर्गत अपूर्वेद धुवेद अर्थ राहन समान राहरा अर्था राहन समान राहरा अर्था क्षाने के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त क्षाने के स्वाप्त के स्वाप्त

अपने यागदान से और भा उरा उठा सकेगा

रेसा जिलासु रिक्ष्य अपन रेसा जिलासु रिक्ष्य अपन अपन करेगा ? कह तिका हागा जिलसे पूर्ण मनुष्ण का निर्माण हा सक्त जा अध्याभ विज्ञान तथा भौतिक जान् से सम्बन्ध- स्वज्ञ जाला विज्ञाओं क पृढ रहस्यों का एक सम्ब अम्मसन् करा स्के रेसी विक्षा जिसस्य यानयत का पर्ण विकास हो जिलसे इस्लाल और परलोक्स मेंना सिद्ध हा

सारभूत शब्दों म मनुर्भव जनय ज्यान मा प्रान्त हिम्मा कर्य वैदिक्त विद्धाना को ज्ञा मुण्य प्र-रिया जाता हा उस संस्थान का नाम मुक्कुल हा एस दिशक के हारा इस स्दिक्त का सांभार किया जाता हो उसका नाम गुरकुन दिश्क है अपने कुनकरणा गर्भ म रख कर आधार्ष जाम शासन स अनुशासन पृत्रक हिम्मा का जा गिरिक्षण करता है इसा का जाम गुरक्कुत सिक्षा मारणाल है

वर्तमान युग म माक्षपन स अवतरित पुण्यातमा महवि दयानन्द सरस्वती न सम्पूर्ण मानव नाति क कल्याण के लिए इस्त पुनात पुरातन गुरुकुल शिक्षा प्रणाला को माकार करने का स्वप्न निया था । असका सारी याजना उन्हान अपन अमर ग्रन्थ सत्याथ प्रकाश म उद्भावित का है इसास्त्रण का पताब क पावन धरता पर जन्म लन वाल ावनम् योद्धाः भण्डिं क अनन्य अनुषाय' महत्त्वा मुशाराम स्थाना अद्धानन्द) न गगा क पन्तन तट प कागडा ग्राम पुण्य भाग हरिद्वार म गुरुकुत कारण्य क नाम स अपने आचायत्व म साकार करन का अपूर्व साहस हिन्द्रार है खर ื कि उनके पश्यल, गृस्कृ का सख्याय ता आभवात हुइ ह नकिन उपयुक्त स्थान तपानिष्ट आचार्यो तथा व्रतनिष्ठ श्रदावान जिज्ञासु शिष्या क अभाव म गुरुकुलो शिक्षा प्रभाला स्वय म पूर्ण होते हुए भी अपूर्ण सिद्ध हा रही है फिर भी मैं इतना कहन का साहस अवश्य करूगा कि इस स्वार्थ केन्द्रित तथा अर्थ मात्र प्रजन यम मे ये गरुकल मानवनिर्माण की प्रक्रिया में जो भा कार्य कर पा रह है उसे समय तथा धन क

सदययोग हा मानना चाहिए

## ष्टि एज एक चिनान

ले॰ महात्मा प्रेम प्रकास जी वानप्रक्षी धूरी

बेट सब सत्य विद्याओं की पस्तक होने से बेद 'भनो विज्ञान' भौतिक विज्ञान'' और "आध्यारिपक विज्ञान" का अचाह ठाठे मारता हुआ "समद्र" है जो ''ਸ਼ਰਾ' ਲਹ ਸੇ है। ''ਸਰਾ' का अर्थ होता है सलाह चिन्तन । गो आओ हम विचारे कि ''वष्टि यज्ञ'' के विषय में केंद्र हमें क्या-क्या सकेत देता है। जैसे "निकामे निकासे न पर्जन्यो वर्षत" यज् 22 22 । अर्थात् जब-जब हम कामना करे तब तब वर्षहो और यजु 36 10 मे भी कक्षा गया है "पूर्जन्यो अभि वर्षतु" पर्जन्यों से वर्षा हो. और "पर्जन्य" कैसे बने "यज्ञाद् भवति पर्जन्यो" गीता 3 14 । पर्जन्यो उन बाटली. मेघो का नाम है जो वर्षा से पथ्वी को हरा भरा और जगल में मेगल कर देते हैं। यह मेथ कैसे बनावे ''यड़''से। जैसे पृथ्वी पर जल प्राप्त करने के लिए कुएं खोदे जाते है "हो" से जल प्राप्त करने के लिए "ब्रौ" जो जल का विशाल समद्र है "ब्रौ: समुद्र सम सर:" यज 23.48। अर्घात आकाश जो समुद्र से भी बड़ा समुद्र है, यह अगवान का "जल भण्डार" (Water Box) है। "पर्जन्य" मेच पाईप लाईने

हैं और इस जल को नीचे लाने का भावन "यज" है। "वर्षत से चौ-" यज 1 25 । हमारे वैज्ञानिक ऋषियो की मान्यता है कि यज्ञीन में जो सारिचक पौष्टिक और सुगन्धित पदार्व डाले जाते हैं उस अनिन लगभग "हजारो गुणा" करके, परमाण रूप मे वाय के साथ चुमते रहते हैं और जब वर्ष होती है तो इन सात्त्रिक पौष्टिक और सुगन्धित परमाण वर्षा से जल ये मिश्रित हो बाते हैं फिर यहा सारिवक, पौष्टिक होता है, फिर " जैसा खाओ अन. वैसा होगा मन" वाली कहावत चरित्रार्थ हो जाती है। अत: हमारे त्रष्टिषे ''यह'' द्वारा द्वर्षे ''वर्षी'' को विशेष महत्व देते हैं. देते थे। यज्ञानि क साथ कचे स्वर से बेट मन्त्रों के गान से "वर्षांह बज 24.38" वर्ष को प्रेरित किया वा सकता है, क्योंकि शब्द स्वर एव छन्द का सीधा प्रभाव वातावरण पर पडता है। पर्जन्य बादल बनाने के लिए विशेष जड़ी बटियो विशेष प्रकार की समिधाओं तथा विशेष प्रकार के पदार्थों को यहाँग्न में आहुत करके पृथ्वी मञ्जल एव अन्तरिक्ष मण्डल में भेद कर, उस जल को जो भगवान का जल भण्डार हे. हिलाया जाता है और यहां विशाल यज होने से गर्मी बढ जाती है. जब बहुत गर्मी बढ जाती है, लोग कहते हैं अब वर्ष होगी। जिसे यजुर्वेद 1 25 में कहा गया है ''वर्षत ते सौ''।

और संगन्धित अन्न पैदा

नोट :-वर्तमान समय में, पीने वाले जल की बहुत ही कमी अनुभव की जा रही है, यदि ऐसी ही अवस्था रही तो 50 वर्ष मे जल संकट बहुत ही भयकर रूप धारण कर लेगा। लोग प्राष्ट्रिमान-2 कह उठेगे अतः अभी से वैज्ञानिको को चाहिए कि ऋषियो की "रिसर्च" से लाभ तता कर "यत्र" द्वारा "चौ:" रूपी, विशाल समुः से जल लेने की "योजना" को क्रियात्मिक रूप दे. जो मानवता की सच्ची सेवा होगी।

### बिरण्डा से टंकारा

आयं समाज बिठण्डा की कार्यकारिणी की बैठक दिनाक 21 11 98 में हुए निर्णय अनुस्तर आर्य समाज बाठिण्डा के प्रधान श्री प्रेम भाटिया जी सपलीक भन्त्री श्री बिहारी लाल जो मगना सपत्नीक आर्य माडल हाइ स्कूल के प्रधान श्री पी डी गोयल जो सफ्लीक एव श्रीमती विजय जिन्द्रल ऋषिबाधोत्सव के सम्बरोह पर श्री भहवि दयानन्द ट्रस्ट टकारा में सम्मिलित हुए।

ऋषि जन्म भूमि टंकारा में भव्य रूप से आयोजन किया गया यह सभारोह आर्थ समाज बढिण्डा के पदाधिकारी एव सदस्यों के अतिरिक्त भारतवर्ष के फिन 2 प्रातों से आये

आर्थजना ने श्रद्धापूर्वक मनाया। विशेषकर प्रवास से क्री सत्यानन्द जी मुजाल मालिक हीरो साईकिल वर्क्स लुधियाना अपने परिवार सहित सम्मिलित हुए। यजुर्वेद पारायण यह प्रात . सार्य दैनिक होता रहा इसमें ऋचाओं की ध्वनि बढ़ी सुन्दर थी। वातावरण ज्ञान्तमथ, वज्ञमय हो गया।

इस समारीह में पच्छरे विद्वानी सन्धासियों द्वारा समय-2 पर मधुर प्रवचन होते रहे। इन प्रथचनों को सूनने हेतु जनसमृष्ट उम्म्हल रहा। टकारा ट्रस्ट के ब्रह्मचारियों द्वार की गई सेवा, वक्तुता एवं वेश-भूष देखते हो बनती थी। टंकारा

## मनसा परिक्रमा मन्त्र :-प्रार्थना के राघ में

ले. रिप्लोमी स्थल प्रेम **का**ड़ जिल्हा निक्**ली**न डि. प्र. 17**30**22 ओं प्रत्ये दिवन्तिरविष्ठि रसितोरवितावित्वा इक्व मन्त्र का शेष धाग असिम मंत्र के सका॥

हे अन्ने स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्योति स्वरूप, परमेरकर आप हमारे पूर्व दिला के अधिपति हैं। आप हमारी हर प्रकार के बन्धनों से, केन्द्र क्लेशों से, अज्ञान अंधकार से, सूर्य की किरणों, मुर्व के प्रकास तथा आदित्व विद्वानों के द्वारा रक्षा करते है। विधान विगिन्द्रोऽधिभति स्तिरश्चित्राणी रक्षिता पितर इषव ॥

हे परम ऐस्वर्यशाली, ऐस्वर्य के दावा राजाधिराज इन्द्र प्रथ परभारतन आप हमारे दक्षिण दिला के अधिपति हैं। आप हमारी टेर्ड " स्वधाव वाले मनुष्यो तथा पञ्च, पक्षी कीट पतन आदि से पितर लोगो के द्वारा. तथा आदित्य विद्वानों के द्वारा रक्षा करते हैं।

ओ प्रतीची विम्वरूमोऽविपवि पृवाकू रविसाननिषव ॥ हे मर्वोत्तम, परम पवित्र, बल के भण्डार, वरणे बोग्य, वरण देव जगदीस्वर, आप हमारे पश्चिम दिशा को अधिपति हो, आप हमारी पदाकओं से सांप विच्छ आदि विषैसे बन्तओ से अन्न पत एवं ऑक्षिमों के द्वारा रक्षा करते हैं।

ओ उदीची दिक्क्सोमी अधिपति स्वणो रखिताऽशांनि रिचय ॥ हे सुक और ज्ञान्ति के दाना, अति प्रिय, अति मधुर, सौम प्रभू, सौम्ब स्वरूप भगवन आप हमारे उत्तर दिला के अधिपति है। आप हमारी स्वय उत्पन्न होने वाले कीट पराग मच्छर आदि से विद्युत के द्वारा रक्षा करते हैं।

माँ धुवा दिग्विष्णुरिबपति कल्पानग्रीकोरिबता वीरुध इस्य ॥ हे सर्वव्यापक, सर्वाधार, सर्वज्ञवितमान प्रथ आप हमारे नीचे की और के अधिपति हैं। आप हमारी विश्वैली कम से वक्षो और लताओं के द्वारा रक्षा करते हैं।

ओं फरक्षं दिग् बहस्पतिस्थिपतिः शिवजो स्थिता वर्गमिषदः॥ हे ज्ञान स्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वान्तरगामि, सब से महान्, गुरुओं के गुरु बृहस्पति देव आप हमारे कपर की ओर के अधिपति हैं स्वामी हैं। आप हमारी कस्ट आदि रोगों से एवं हर प्रकार के रोगों से

वर्ष के द्वारा रक्षा करते हैं॥ मनों का प्रोप भाग .--तेथ्वो नगोऽविचित थो नगो रक्षितम्यो नग प्रकाशनम् एनते अस्त । वोऽस्मान ब्रेस्टियस्य क्रिम्मस्त वो पान्वे दध्म ॥

हे परम ब्रह्म आप को नमस्कार हो, हे ससार के अधिपति आप को नमस्कार हो। हे परम रक्षक आप को नमस्कार हो, हे इयुओं के स्थामी आपको बारबार नयस्कार हो। प्रम जो हम से ईन्ना हेब करते हैं, अबवा जिन से हम ईम्पा हेब करते हैं, उसे आपके न्याय रूपी सामर्थ्य पर छोड देते हैं। हे न्यायकारी दयाल परमांपता परमेश्वर हम स्वयं ईष्मां देव को त्याग कर प्रामी मात्र से प्रेम करे. प्राणीमात्र की सहायता और रक्षा करें, प्राणी भात्र को मित्र की दृष्टि से देखे. यही हमारी याचना है, स्वीकार करे ॥

टस्ट के इस सम्बरोह में सफाई जनपान भोजन आदि की व्यवस्था प्रशसनीय थी। दिनाक 14.2 99 को प्रात: टकारा गाव में प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें ऋषि महिमा के भजन महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा गाये गये। इसके उपरान्त ध्वजारोहण आदरणीय श्री मुखाल जी (लुधियाना) के करकमलो द्वारा किया गथा। विसमें प्रथम आर्य समाज के पदाधिकारियों के अतिरिषव श्री मुजाल जी सपत्नीक का माल्यापंत्र द्वारा स्वागत किया यकाः ध्वजारोहणोपधना बद्धे स्तर पर भव्य शोभा शक्त गांव के विभिन्त गलियः/बाजारों र ऋषि जन्म स्वली से गुजरते हुए का स टकारा ट्रस्ट के प्रांगन में पहुंची।

इस महान कार्यक्रम के मन्त्री कही या संयोजक श्री रामनाथ की सक्रमल थे तन्त्रें हर समय हर जगह हमने उपस्थित पाया। उन्होंने पञाब से पचारे सभी आर्थजनो का इस समारोह में सम्मिलित होने पर तहेदिल से धन्यवाद किया। इस सारे कार्यक्रम की सफलता व विधिपर्यक सम्पन्न करवाने का श्रेय श्री रामनाथ जी सहगल को ही जाता है । भगवान उन्हें स्वास्थ्य एव दीर्बायु प्रदान करें। टकारा से वापिस आते समय इम जोबपुर में ठके वहा इमने महर्षि दबानंद स्मृति-भवन में यह स्वान देखा चढां उन्हें प जगन्त्रम हार चित्र दिसा गया था। इसमें एक वेतिकासिक कुछ। भी है।

प्रेम भाटिया प्रधान

## ऋषि जन्म भूमि टंकारा ट्रस्ट को मिलने का पूर्ण आख्वासन

हर्ष का विषय है कि सार्वदेशिक सार्थं प्रतिनिधि सध्य व डीएवी कालेज प्रवासकर्ती समिति आर्थं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एवं श्रा महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक टस्ट टक्शर के टस्टी त्री सत्यानन्द मुजाल जी के प्रयासों से टस्ट को महर्षि दयानन्द जन्म भूमि का अधिकार मिलने का पर्ण आश्वासन श्री कारजी भाई चकुभाई (जन्म गृक्ष का वह भाग जहा स्वामी जी का जन्म हथा वा के मालिक। ने श्री मजाल जी के अग्रग्रह पर जन्म गृह **रकारा टस्ट को नि शस्क दे दिया**  और टस्ट को कानुनी कार्यवाही बन्स्वाने डेव दस्ताबेज तैयार करवाने का आग्रह कर दिया है।

इस आश्वासन को देने के लिए श्री कार्ना भार्ष चकुमाई अपने परिवार के सदस्वों सहित क्रियं बोबोस्सब में सम्मिलित हुए और सार्वविनक रूप थं टस्ट को जन्म स्मान देने की घोषणा की। इस उपसंख्य में उनका श्री महर्षि व्यानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टेकारा हार्ए स्वामत किया गया।

आज समस्त आर्थ जगा को स्वाचित सेव सेवलिय सेवस्तालिय सेवस्तालिय सेवस्तालिय से आर्थ से अप्री सभी हम बात वे उपसीच में कि का अन्य गृह में अप्री सभी हम बात के अपना में हैं आर्थिय हम बात कर मान है है जायों सम्बाव के प्रमा ती स्वाचित सेवस्तालिय हम बात कर मान है है जायों सम्बाव के प्रमा ती स्वाचित सेवस्तालिय हमें स्वाचित सेवस्तालिय हमें स्वाचित सेवस्तालिय हमें स्वाच्या कर सेवस्तालिय हमें स्वच्या हमारी हमा

सभा आय बना की ओर से श्री सत्यानन्द मुजाल को हार्दिक सुक्कामार्थे एव द्वार्दिक सुभातीय देते हुए परमंपिता परमुत्य से प्रार्थन है कि उनकी दीओं सु हो तास्त्र नहीं अक्ष से इसी ताह उक्कण होने रहे।

## ट्रस्ट परिसर मे कमरे का निर्माण

कु सुरुचि गुप्ता जिनको काल ने अकस्मात् दिनाक 20 9 1987 को मृत्यु की गोद में सला दिया 14 वर्ष की अल्पाय मे ही अपने परिवार जनो को छोडकर वे इस भौतिक जीवन से विमुक्त हो गई। उन्हीं की स्मृति में उनके माता पिता श्रीमती प्रेमलता गुप्ता श्री गोविन्द राम गप्ता ने श्री मार्टिं दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकाग्र के परिसर में एक लाखा रुपये की धनराशि देकर एक कमरे का निर्माण अपनी बेटी कु सुरुणि गुप्ता की स्मृति में करवाया। उस कमरे का विधिवत उदघाटन उन्हीं

कमरे का विधिवत् उद्धाटन उन्हीं के कर कमली द्वारा दिनाक 14.2 1999 को किया गया। उद्धाटन से पूर्व पत्र कार्यक्रम रखा गया और कु सुरुषि गुप्ता की स्मृति में विसेष पत्रा को आहुतियों से स्मरण किया गया। 1.01.111/ सुपये का

#### सारिवक दान श्री सकर आर्य जोकि मध्य प्रदेश के दबाना गान के निनासी

हे पिछले कई क्यों से अपनी धर्मपत्नी शीनती सरस्वनी देवी के साथ टकारा ऋषि बोधोत्सव पर प्रधारत थे। पिछले वर्ष उनकी धर्मपत्नी का अकरमान स्वर्गवास हो गया और उनकी धर्मपत्नी श्रा ज्ञकर आयं को अपना मृत्य से पूर्व यह आग्रह कर गई बी कि उपरोक्त शक्ति टकारा टस्ट को दान रूप में अकश्य देवे और अपने परे जीवन निरन्तर ऋषि बोधोत्सव के पूर्व पर टकारा पधारे। उनके क्वन को पूर्ण करने के लिए श्री शक्तर आर्य अपने पुत्र एव मुख्यक्ष के साथ टकारा पक्षारे और श्री महर्षि दयानन स्भारक टस्ट टकारा को ह 1.01 111/ की धनसाकि दान के रूप में प्रदान की।

**–राम नाब सहगल** यन्त्री

## आर्य बाहर से नहीं आये : वे मारत के ही मूल निवासी हैं

विश्व प्रसिद्ध इतिहासविदो की राय

यह धारणा अब पूर्णतया गलत साबित हो पुकी है कि भारत मे आर्थ बाहर से आए। न तो प्राचीन साहित्य में ऐसा कोई उल्लेख मिलवा है और न ही ऐविहासिक साक्ष्य कि वे बाहर कहीं से आर और यहा के मूल निवासियों को दबा कर शासक बन बैठे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान और इतिहासविद हा डविड फ्राली ने यह बात कडी जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय मे एक व्याख्यान में उन्होंने आश्चय जताया कि प्रातत्व की दृष्टि स भी कोई प्रमाण नहा मिले हैं फिर भी बादी पद्माया जा सदा है कि भारत मे आर्थ अफग्गनिस्तान क रास्ते कई दलों में आए तथा उन्होंन यहा की प्राचीन और मल सम्यता संस्कृति को नष्ट किया

हा फ़ाली ने कड़ा कि

पुरावारिवक प्रमाणो के आधार पर आर्थों के आक्रमण कासिद्धना दुनिया भर में रह कर दिया गया हैं। भारत में पता नहीं क्यो पढाया जा रहा है सिधु घाटी और हडप्पा की सम्बता का समय 2700 स 1900 साल ईसा पूर्व समझा जाता है नई खोजे साबित करती हैं कि भारत मे सध्यता क विकास ईमा संक्रम से कम साठ हवार साल पहल हो चुका था। यहा एक विकसित सम्बता मौजद था हरूपा सध्यता का अवसान किसा आक्रमण के कारण नहीं प्रकृति प्रकापी से हुआ दन दिनो पर्यावरण म व्यापक बदलाव आए वैटिक साहित्य म जिस सरस्वना का उल्लख ।मलता है वह ईसा से 1900 साल पहले तक सुख चुकी था यह रिल्लाके पश्चिमाभगसे क्रान्छ करन तक बहरी थी इन्ही तिमी आबारी यहा

स सहार द्वार अस्तान से स्वाप्त से अप्राचन भारताम के स्वाप्त सक्त स्वर्भात कर दिया स्वर्भात कर दिया स्वर्भात कर दिया स्वर्भात कर दिया स्वर्भात से अम्बादमा का स्वर्धात कर स्वर्भात स्वर्या स्वर्भात स्वर्भात स्वर्भात स्वर्भात स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स

रक्षेण्यर के अनुसार भारत में आर्चों के बाहर के आगी के सिक्टाण का ब्लावा देने के मील किर तरेहर वहां हैं हैं इस सिक्टाण के अध्यस्य मार्च में भारत में अपने उपनिकेश की कायन जहां गृह में के प्राण्यों ने कहा कि आर्ची के बाहर म अपने चाहुंग्ये प्राण्या मुख्या बातों के साहर म बातों का सिक्टाणा गांवा हारिकामकारी न जहां मार्चा बातां के हिस्साणा गांवा का बातां के कि इसमी मचसे यादा बसातां जम कम्मिन्ट ख्लाम बसातं कर महम्मिन्ट

तन्होंने द इस्रो आर्यनम आप सातव प्रक्रियन्य का ब्रवाला देत हुए कहा कि भारत स चाहर कहा भी ऐसे कवाल नहीं मिल ह उत यहां के वेदिक आर्थों सं मन खात हो ऐस प्रमाण भी नहां मिलते कि वेदिक आय प्रागैतिहासिक काल मे दक्षिण एशिया या यरोप मे कहा बसत हो उपमहाद्वीप के भारत पाकिस्तान बगलादश और श्रीलका जैसे देशों में हा उनके होन क प्रमाण मिलते है का फ्राला न कहा कि वैटिक सभ्यता और आधृतिक सभ्यता मे गहर अतर्संबध दिखाई दता हे आर्थ यदि बाहर से अगए तो उन दशा की सभ्यता संस्कृति में भा उनक उपस्थिति झलकनी चाहिए था

लाल पूर्व पा गुण्य औ र एस अल राम कर्षी सात में आक्री में अक्रमण के सिद्धान का रनीत र गहे हैं उनका प्राण्यदान काता हुए रह विद्यास अपित सात हुए रह विद्यास अप्ता हुए अप्ता में प्रकार कि प्रीण-में प्रत्या कुछ वर्षों में अक्सी में प्रदान कुछ वर्षों में अक्सी में प्रकार हुए में कहना कठित है। त्यास रजेन्य म गैल्डल स्थल आत्म से में प्रमाण के अम्मार पर जा करा उर्दे में स्थान कठित है। त्यास रजेन्य में प्रमाण के अम्मार पर जा करा उर्दे मक्सार मुस्लिक से

भारत में इतिहासविद बाबा

उन्होंने कहा कि कल तक्ष आर्गों के अक्रमण पर अहे रहा बाले सिद्धानों के मन भी क्लत रह है उदाहरण के लिए इस सिद्धाना की प्रकल पक्षपर गिमला धापर भी कहने लगा है कि सिधु चाटी को सम्बत्ता आर्यों के आक्रमण स नहीं प्रकृषि प्रकारों से गण्ड हुई

#### बतिण्डा मे प लेल्बराम बलिदान दिवास

श्री परोडिश की ने बखका कि श्री धमकार प लखराम जाका बलिदान दिवस आर्च समाब बढिण्डा प लेखनाम भी ने फाल्गुन सुदी 3 सकत 1953 कि अनुसार 6 मार्थ क प्रागण में बढ़ी धूम धाम के साथ मनाथा गया यह कार्यक्रम प्रधान श्री 1897 को रात्रि के 2 वजे नत्वर प्रम भादिया जा क' अध्यक्षता व भन्द्री शरीर को वैदिक धर्म पर बलियान श्र बिहारी लाल जा मगना के सचालन कर दिया या पुरोहित जी ने सभी ने हुआ संजन्नचम हवन यह आय को प लेखराम जैसा बनने का ममान क मान्य पुराहित प सुनाल प्रेरण दा कि जिस तरह पण्डित कमार ना जारबा के आकायत्व मे वा धर्म के लिए जिए वैसे ही हम सम्मन हुआ यञ्ज प्राथनापरान्त श्रीमतः भा उस के लिए जीवन जिए न्हाना मगला न एक भन्न सुनाया प्रेम भाटिया प्रधान

## गान्धी नगर जालन्धर का उत्सव

आय समाज गान्धा नगर । जालन्धर का वार्षक उत्सव व आर्थ समाज स्थापना दिवस से 4 अप्रल 1999 तक मनाया जा रहा ह जिसमे कई उच्चक्'टि के विद्वान व नेता गण पंधार रहे हैं। जालन्धर का सभा आर्थ समाओ के अधिकारियों से प्राथन है कि अपना आय समाज के सभा सदस्या सहित इस इत्सव म पथार कर अपना सहयोग दे

## माडल टाऊन जालन्धर में वजुर्वेद पारायण यत्र

आपका यह सुविश किया जाता है कि हमार पिना स्वर्गीय प्रो से प्रकार जा भल्होत्रा की पहला पुण्य तिथि रविवार 14.3 99 को हं इसके उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण यह हमारे निवास 280 एल महिल टाकन जालन्थर मे रविवार 7399 का साथ 4 बजे से आरम्भ हो रहा ह जिसका पूर्णहरि रविवार 14.3.99 को साथ 6 बजे होगी कार्यक्रम प्रतिदिन साय 4 से 6 अंजे तक चलेगा विषय मलहोत्रा

## माता गार्गी ढेवी का बिधन

आर्थ समाच गोविन्टगढ जाल धर की प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्रीमती गार्गी देखी का 17.2 99 को देहावसान हो गया। इनका अन्तिम सोक दिवस आर्थ समाज गोबिन्ट गढ में मनाते हुए श्राप धर्मदेव जी आर्यश्रीप रमेश जा श्री नरेश जी मंत्री श्रीमती कृष्णा कोच्छड जी मन्त्राणि ने व सैकडो उपस्थित लोगो ने तन्हे अपनी भावभीना श्रद्धाजलि अपित की। श्रीमता गार्गी देवी जी आर्थ समाज के भिन्न भिन्न पदो पर रह कर कई वर्ष तक सेवा करती रही अब भी वह आर्थ समाज की सरक्षक थां। उनके पति स्व जगन्त्रच जी आर्य प्रादेशिक सभा के महोपदेशक रहे और कच्छ समय साई दास स्कुल में संस्कृत अध्यापक के रूप में भी कार्य करते रहे। पकिस्तान बनने से पूर्व श्री अथन्त्राथ जी

लाहीर मुसंसन कोवटा बलोचिस्तान व गुजरावाला मे रहे। भारत विभाजन के पश्चान वह जालन्वर में आ गए और मोहरूला गोबिन्दगढ मे रहने लग सन 1963 में उनका देहाबसान हो गया। इन दोनो का बच्चो पर भी बहुत प्रभाव पहा। उनक सुपुत्र विश्व प्रिय जी श्री सर्वेप्रिय वी सोम प्रिय जी तीनो ही वहत सुयाग्य है। सारा परिवार बहुत हानेक व श्रेष्ठ है। भारत गार्गी देवी भी अपने पीले भग परिवार क्षेद्र गर्द हैं। उनका अभाव उत्तर्व समान में सदा खटकता रहेगा। प्रम आर्थ प्रतिनिधि सधा प्रजास की ओर से उन्हें श्रद्धाजील भेन्ट करते हुए परमात्मा से उनका सदगति के लिए प्रार्थना करते -धर्मकेव आर्य

क्षार क्षार प्राचित

आवला, कंशर, चादा व पिस्तायुक्त कोलस्ट्रोल रहित

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का सेवन करे ।



गान्ता कार्यालयः

चावडी बाजार दिल्ली ११०००६

ता अञ्चल कुमार जी हामा एडकोकेट महामनी सम्मादक द्वारा कर हिन्द प्रिटिंग प्रैस/ऐति प्रिटंस बालन्यर से मुक्ति होकर आप मधादा कामात गुरुदत्त भवन चौक किरानपुरः कालकार से इसकी स्मामनी आब प्रतिनिधि सभा पंचाब के लिए प्रकारिक हुआ ।



विश्वमार्थः

292926



निर्निध सभा पंजाब का प्रमुख साफाहिक

वर्ष 48 अक 50 8 चैत्र सम्बत् 2055 तदनुसार 21 मार्च 1999 दयानन्दान्द 174 वार्षिक शुल्क 50 रुपय आजीवन 500 रुपय

## महर्षि की सार्वभौमिक उदात्त भावना

ले॰ भी म**ोगा** मुमार भागमी 1400 पटीबी क्राउन्ह वर्ड विस्ती-2

साधाने र्वेनिय किस भाग अपने देश थ्य हिट चारते ये उसी प्रकार उपके भन में विश्व करूबाण और प्रिष्त की भावना था। तन्त्री के बच्चों में।

बचापि मैं आर्यावर्त देश मे उत्पन हुआ और बसता ह स्वदेश वालों के साथ मनम्य की उमित के विषय में वर्तता ह वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सक संप्रतामों को भी कर्तन योग्य है।

वह बाहते थे कि जिस प्रकार पूर्व काल में भारत वासियों का देश विदेशों में आना जाना और ध्यवहार तथा सम्बन्ध होता था वैसा ही अब भी होना फाबिए।

प्रथम आयांतर्न देशीय लोग व्यापार राज्य कार्य और ध्रमण के लिए सब भूगोल मे घूमते वे एक समय व्यास जी अपने

पुत्र सुक्र और शिष्य सहित पाक्षल अर्था (जिसको इस समय अमेरिका कहते हैं उसमें निवास करते थे श्री कृष्ण तथा अर्जुन पाताल मे अशवतर अर्थात् जिसको अन्नि नौका कहते हैं उस पर बैठकर पाताल में जाकर महाराज मुद्धिष्टर के यदा में उदालक ऋषि को ले आये में धृतराष्ट्र का विचाह गान्धार जिसको कन्धार कहते है वहा की राजपुत्री से हुआ। भादी पाण्डुकी स्त्राईरान क राजा की कन्या थी अर्जुन का विवाह पाताल मे जिसको अमेरिका कहते है वहा के राजा की लडकी उलोपी से हुआ या।

महाराजा युद्धिन्दिर के राजस्य यत में चीन का धगदत्त अमेरिका का बहु बक्तन यूरोप देश का में क्रीना शेष्ट है।

विद्वालाम् ईताः प्रतासकः अवदि सब रावा च राजदर का में आये थे। महर्षि दवानन्द मनुष्य जाति को एक जाति मानते थे। इसलिए

उन्होने जाति और मनुष्य की परिभाग प्रस्तुत की जाति को कन्म से लेकर

मरण पर्यन्त बनी रहे। वो अनेक व्यक्तियों में एक रूप से प्राप्त हो। को ईश्वर कत अर्थात मनव्य गाव अस्य और वृक्षादि समूह है वे जाति शक्तवं से लिये जाते हैं। मनुष्य अर्थात् जो विश्वार के

बिना किसी काम को न करे उस का नाम मनुष्य है। मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर आत्मवर् अन्यों के सुक्क दुक्त हानि शाभ को समझे अन्यायकारी बलवान से न डरे और धर्मात्वा निर्वल से भी करता रहे परना अपने सर्व सामध्य से धर्मात्माओ की चाह वे महा अनाथ निर्मल और गुण रहित क्यों न हा सर्व सामध्यें से धर्मात्माओं की रक्षा काति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चकवर्ती सनाथ महाकलवान और गुजवान भी हो संवापि उनका नाश अवनति और अधिवाचरण सह किया करे अर्घात जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियों के बल की हानि और ज्यासकारियों क बल की उनित संध्या किया करे। इस काम में चाड़े उसको कितना ही दारुण दुखा प्राप्त हो चाडे प्राण भी चले जावे परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पुत्रक कभी न होवे।

मन्त्र्य को सबसे बद्याबीग्य स्वात्मवत् सुख दु ख हानि लाध

मनुष्प स्वय अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और भिष्यार्थ का परित्यान करके सदा आनन्द में रहे। मनुष्य का आत्मा सरकासस्य को जानने वाला है। नो पदार्थ बैसा है उसको

वैसा क्री फड़ना लिखना और मानना सत्य कहलाता है।

सर्वटा सत्य की विजय और असत्य की पराजय और सत्य से ही विद्वानों का मार्ग विस्तत होता है। इस दढ सकल्प से आलम्बन से लोग परोपकार करने में उदासीन डोकर कभी सत्पार्थ करने से नहीं इटते।

मत्रदश्य कान्तदर्शी महर्षि ने स्तरच उदार अभिप्राय को प्रकट किस्र

सर्वसत्य का प्रचार कर सबको ऐक्यमत से करा हेच छुडा परस्पर म दह प्रीति यक्त कराक सबसे सबको सदा लाभ पहचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वश्रवितमान परमात्मा की कृपा सहाय और आमबनो की सहानुभवि से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीम्र प्रवृत्त हो जावे जिससे सब लोग सब धर्मार्थ काम की सिद्धि करके सदा उन्नत होते रहे यह भेरा मख्य प्रयोजन है।

आप्त (विद्वान) जो यदार्थ ष्यका द्वेष रहित धर्मात्मा विद्वान सत्योपदोष्टा सब पर कुछ दृष्टिके वर्तमान होकर अविधान्धकार का नाम करके अज्ञाना लोगो क आत्माओं में विद्यारूप सुर्य का प्रकाश सद कर उसको आप्त कहत है दयालु दयानन्द की अभिलाचा थी

आजकल बहत से विद्वान सब मतो में है यह पश्चपात छोड सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात जो बाते सबने अनुकूल सबने साथ हैं उनका ग्रहण और जो एक इसरे के विरुद्ध करे हैं उनका त्याग कर वातावरण में सब सुखी होते

परस्या चीति से वर्ते बर्ताव तो जगत का पर्ण हित होवे क्योंकि विदान क विरोध से अविद्वानों म विरोध बढकर अनेक विध द ख की वृद्धि और सुखाकी द्वानि होता है

> यदि मन्त्रव समात्र दयानन्द का आत्मा की आवाज को मनकर आर भावनाओं को समझका जीवन म अपनाता तो मनुष्य देश विदेश क सीमा प्रतिबन्धों को छोडकर मानव मानव की रक्षा करने वाला हो जाता

पुमान् पुमान्स परियात् विश्वत वह तो विश्वको एक कुटुम्ब बनाना चाहत थ वे सार ससार को एक परिवार मानत थे वस्थिव कुटम्बक

समस्त विश्व को सब मनुष्ये का घर बनाना चाहते थे 'यत्र विश्व भवत्येकनीहम विश्व भूमि माता का गोद में जिन्होंने जन्म लिया है उसकी गोद हो सारी दनिया ह इस दनिया को घर की भारत हम सब मानने लग तो सम्पर्ण मानव उसकी रक्षा करने के लिए एक सुत्र में बन्ध कर कथला की भाषत वाले बन कार्बे

उनका ध्येय संसार का उपकार करना था वह मसार का उपकार करना समाज का मानव का मुख्य उद्दय मान्द्र झ चह चाहके थे कि सबका शारीरिक मानसिक और सामाजिक कारी हा

उस महर्षि महावैज्ञानक का जान विज्ञान तर्क प्रमाण सगर विचार सारण' पर चलकर ना नम संबंका कल्याण हा अकता ॰

महर्षि का मनोभावनाओं स मनुष्य एक बुट बनते उनम आत्मीयता हाती उनके विचार अरवहार एक जैसे होते। जात

## बन्धन से मुक्ति

ले॰ भी आ<del>वन्त्र अमिलाची जी वानाववामन ज्वालापुर इसिकार</del>

गतांक से आगे ईरवर प्रेरण देता है।

रन्नक्षरंभीत पुरस्तन्तृकपुनरह्। पानेम जरत: जतं जीवेस अरत: जतं

बुल्याम शरदः शर्त प्रवचन शरदः शतम आदीचाः स्थाम शरदः शतं भूयरूच स्तरदः शतात ।

कि इस सौ वर्ष जिये, सौ वर्ष देखें . सौ वर्ष सर्ने . किसी के अधीन न हों इत्यादि। अब हम पर निर्धर है कि इस प्रेरणा से क्षम सारिवक सीवन च्यतीत करके सौ वर्ष जीना चाहते हैं या सराव में अववा अन्य नशीले फ्टाबॉ का सेवन करके इस जीवन का पहले ही अर कर देना चाहते हैं। सविवा सूर्य को भी कहते हैं।

सूर्व भी प्रेरक है। यत के व्यतीत होने पर सूर्व की किरणें जब वस्तुओं पर पड़ती है तो हर पदार्थ के अन्दर एक प्रकार की जागृति या प्रेरणा उत्पन्न हो चाती है। सुर्व किसी चीज का उत्पादन नहीं करता। पदार्थों में जो शक्ति निष्ठित धी वही जाग ठठती है। नवा जीवन आ जाता है। अंग्रेजी का सक्द STIMULATOR आन्तरिक भावो को ठीक-ठीक व्यक्त करता है। सर्व की किरलें यदि गुलाव पर न पड़तीतो गुलाव न खिलकाः सूर्य की किरने गुलाब नहीं। सूर्य से गुलाब नहीं बना। न गुलाब बिगरू कर सर्व मे लीन होता है। परन्त गुलाब की आनारिक बीब रूप अविकसित शक्तियों को विकास करने में उच्चत करने में सर्थ प्रेरक है। विद्युत तरंग ELECTRIC CURRENT भी प्रेरक है। एक ही विद्युत कोन से पखे चल पहते हैं। आटे की चक्की है भिन्न-भिन्न यन्त्र हैं जो विश्वृत की प्रेरणा से चलते हैं। शभ कर्मों पर चलने के लिये जो व्यक्ति इसरे लोगों को प्रेरण करते हैं वे उन लोगो को बन्धनो से मुक्त कराने का एक

अविताका अर्थ मां भी है। मां प्रक करत असकी पेरक है। माला ही सन्तान का पवित्र आत्मा बना सकवी और माता उसी सन्तान को चीर और डाक भी। महात्मा गांधी को महात्मा बनाने में उस की माता की बहुत बसी प्रेरणा थी। महारमा गांधी छोटे वे अकेले रात्रि के समय पेशाव करने के लिये न जाते थे। कहते बे

पात्र बनते हैं ।

कि दर आता है। मांतून साध चलो । माता ने कहा बेटा दे अकेला नहीं। राम वेरे साथ हैं। इन शब्दों ने गांधी को प्रेरित किया और वह राम भक्त बन गये। इसलिये अपने राष्ट्र को, जन्म भूमि, अपनी भाषा को मातु माना कहते हैं। वेद की बेद माता कहा गया है।

औप स्तुता मका वस्ता बेट तता प्रचोतयन्ता प्रावसानी विज्ञानाम । आबः पाणं पर्जा यश् कीति प्रविषां ब्रह्मवर्णसम्। महां दत्वा वजत ब्रह्मलोकम्

अर्चात् हम वेद माता की स्तुति करें और उस की प्रेरण से सब को आबु प्राम प्रश्ना पशुकीर्ति आदि प्राप्त हों।

परन्त प्रेरित करने बाला व्यक्ति स्वयं बधन रहित होना चाहिये। यदि वह स्वयं बंधा होगा तो किसी बन्धन को खोल या तोठ न सकेगा वष्ठ असमर्थ रहेगा। पुरु द्रोणाचार्य ने कौरवों को

प्रेरित किया कि वह पांडवों को और नहीं हो खंब गांव दे दें। पर कौरव नहीं माने बर्योंकि वे उन्नंकार और राजसी लोभ के बन्धन में वंधे थे। भीष्य पितामह ने भी वैसी हो प्रेरणा दी। परन्तु कौरवाँ ने एक न मानी। परिणाम क्या हुआ। दर्योधन जादि सब के सब भाई मारे गये और सेना भी परावित हुई। इसी प्रकार रावण को उसके भाई परिवार भित्र संगे सम्बन्धी सब ने प्रेरित किया कि राम के साथ बुद्ध करना उचित नहीं पर उसने एक न मानी और वह प्रेरित नहीं हुआ। क्या कारण है? कारण वह कि वह प्रेरणा देने वाले लोग स्वयंबद्ध थे पर स्वयं मोह से बन्धे थे और सवज को छोड़ने की ठनने हिम्मत या शक्तिन भी। गुरु होणचार्य या भीवा फितामह दर्योधन की पापमय जीवन की कमाई के भागीदार वे। वह उसकी कमाई का अन्त खाते थे। उन का मनोबल टूट भुका था। वह सशका हो कर प्रेरणा न कर सकते से क्योंकि का अपने आप को गुरु न बान कर द्वयाँचन के दरबार का एक सदस्य मानते थे जो कि राजा के आधीन हो कर कार्य करता है।

इसलिये बन्धमुक्त होने के लिये मनुष्य किसी ऐसे अध्यापक

किसी देशे गुरु, किसी देसे आचार्य का किसी ऐसे एन प्रदर्शक स भित्र का अपन करे को स्वयं बन्धनों से नुक्त हो तब भी ठस की प्रेरणा से मनुष्य ककाों से छूटने के शिये स्वयं को प्रेरित कर सकता है।

सापाडिक आर्य भर्यादा बालन्धर

(२) विक्यू--वृक्षरे प्रकार के लोगों को विज्यु कहा कवा है। विष्ण का अर्थ है कमी में व्यापक। कर्मों के धर्माधर्म को जनने वाले न्यामधीतः। ऐसे व्यक्तिः को का बता सकें कि वर्ग बना है आधर्म क्या है ? जो न्काय की दृष्टि से मन्त्रण दें। मोत्रवज्ञ व्यक्ति कभी याय नहीं कर सकता। वृदराष्ट्र आंखों से अंधा वो चाडी फरन मोड ने उसकी जान रूपी आंख भी कीन ली। बुद्धि पे पर्दा पर्द गवा । न्याय नहीं कर सका कि पुत्रों का पश्च अनिचन है। नहीं कह सका कि न्याम पाठवों के पक्ष में है। पूर्वों को नहीं कह सका कि पांडवाँ को उनका अधिकार मिलना चाडिये। मीड रूपी बाल ने शतराष्ट को ऐसा फंसाया कि पांच गांव क्या समस्त राज्य भी गया और साथ-साथ, सभी के सभी पुत्र भी रलभूमि में मारे गये । भगवान कृष्ण दूत बन कर और पांडवाँ का संदेश लेकर कीरवों के पास गरे पर दर्शेधन न्याय व्यवस्था को न समझ पाया । परिनाम हुआ

भीषण युद्ध । केषल प्रेरित होने से काम नहीं बनता। प्रेरक को धर्म-अधर्म. सत्प-असत्प, न्याय एवं अन्वाय का भी जान होना आवश्यक है। देंकेई ने प्रेरणा करके महाराज दशस्य से भस्त के लिये राज्य और राम के लिये वनकास मांग तिया। दसस्य को कैसे प्रेरित किया कि आपने वचन दिया हुआ है कि ची मांगोगी दंगा। वास्ता दिया रभकल रीत सदा चली आई, प्राण जाने पर बचन न अर्जा बचन वस हो कर दशरथ मान गये। कैकेई की प्रेरणा ने पुत्र मोह को त्याग दिया पर कैकेई के प्रेरणा धर्म पर न्याय पर अथवा सत्य पर आधारित न थी। परिणाम क्या हुआ पवि भी को बैठी और पुत्र का प्यार भी। कैकेई की अनुचित प्रेरणा से अयोध्या का रामराच्य १४ वर्ष के लिये पिछन्द गया । राम को बन का कन्ट सहना पढ़ा, सीवा हरण और फिर एक धोबी के कहने पर राम द्वरा सीवा का त्वाग।

इसलिये पथ प्रदर्शक वर्डा सविता हो वहां विष्ण भी हो। ऐसा

प्रेरक जो सत्त्व, न्यान और धर्म जवस्थ में चलता हुआ गर्न दर्शन करे।

(३) विश्वे मस्त:-- वर्ष है बार मित्र जो दिलास्त देने के लिये कारते हैं मत रोधी। इसरों को कौन कह सकता है मध रोबो-केवल कड़ी व्यक्ति को स्थव नहीं रोता। रोना क्या है-परमत्ना का अध्यान। परभारमा ने किसने सुन्दर पहाड़, नदी, नाले, वनस्वति, फूल-फल बनाये हैं किवनी अनमोल वस्तुएं चनाई हैं जो कि दिल लगती हैं वो व्यक्ति इन को देख कर रोता है वह अध्यक्ष है। रोल कौन है नो फॅमवोर है। वस कोई किसी से कहता है कि मत रोवो तो वह मित्र रोने वाले व्यक्ति की सकायता के लिये वचनबद्ध हो जाता है और रोने वाले व्यक्ति को एक आशा की किरण दिखाई देती है। जब कोई व्यक्ति किसी का रोग नहीं देखना चाहता तो स्पष्ट है वह उस **व्यक्ति का कोई दु:ख देशाना नहीं** चाहता। या यूं कहा जानेगा कि ऐसा व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुखा की कामना करता है।

सदीव और बाली के जगड़े का निपटारा तब ही हुआ जब भगवान राम ने सुग्रीय के आंस् पोंसे । अमेरिका जब पाकिस्सान को धडाघड यद सामग्री दे रहा या तो रूस ने व्या कर भारत के साम मित्रता का हाच बढाया और भारत को समक्त किया। यन कोई व्यक्ति किसी के आंस पोक्स है तो अपनेपन का भाष पैदा होता है उसको केक्ल महसूस किया जा रकता है बताया नहीं जा सकता।

(४) स्वकां-स्वकां शस्त सु+अर्क अर्घाद् उपस्वी लोगों से है। चूप में खादे होने का सदीं मे वर्फ पर बैठने एक पांच पर खाडे होने का, न नहाने का या सदा बल में रहने इत्यादि का नाम तम नहीं। यह हो वठ है। शरीर गर्मी-सर्टी सहन करने में सक्षम हो इस बात को गरीर का तप अवस्य कहा बा सकता है। जिस व्यक्ति के धर्माचरण में गर्मी-सदी सख-द:ख राग-विसाग व्यथा गर्ही डालवे और वह इन सब को सहते हुए सत्व मार्ग पर अप्रसर होता बाता है वह तपस्वी है। तपस्वा मन से सरीर से ज्यां काणी से होती है।

(समहः)

सम्पातकोय...ह



25 मार्च को मर्थाचा पुरुष्णेतन राम का जम्म विवस लारे मारत वर्ष में की नर्की लारे सत्तार में मनाय जा रहा है। वह विन इमारे दोन में पर्व के रूप में नमाया जाता है। इसे रामनाची का पर्व कहते है। चैक गुद्धि प्रतिपद्धा ते हमारा गढ़ सत्तरार आरम्म इंता है और इस्तरे केंग्रेक काठ नित्र मंत्र केंग्रा स्थान देश पर्व आता है। इस बिन की राम का जम्म हुआ था। इमारे देश के लगामा सभी शहरों में इस विन बढ़ी—बढ़ी सोगा मार्यार विकाली जाती है और खुत है। इसेल्यास प्रकट विश्वा जाता है।

मर्थीया पुरुष्केतम राम भारत की सरकृति के एक महान रहम्म है। रामायण उनकी महानताओं को प्रकट करने कार एक महान प्रन्य है जिसको एक कर एता छस्ता है कि उस कार में भारत की शार्मिक सामाजिक और राजनैतिक वशा किरामी जात भी। रामाण्या की बहुत महान निषेत्रवार इस एक्ट के असर किसान है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन चरित्र बहुत ही प्रेरणाओं से भरपूर है। वह एक आर्य पुरुष है और वह संभी विशेषताए उनमे विद्यमान है जो एक आर्य में होनी चाहिए। वह एक आज्ञाकारी पत्र है। माता-पिता की प्रत्येक आज्ञा को उन्होंने शिरोधार्य माना है। नाईयों में बड़ा होने से व सबसे बुद्धिमान होने से महाराज दशरथ उनका राजातिलक करना चाहते है उन्हे अपने स्थान पर राजा बनाना चाहते है और इस बात की सार्वजनिक घोषणा भी कर देते है महारानी कैकेई जो महाराज दशरथ की प्रिय थी <del>इसने अधानक पूर्व दिए गए अपने वो वर राजा से माग लिए</del> एक में अपने बेटे परत को राजतिलक और राम को चौवह वर्ष का वनवास। महाराज दशरथ राम वनवास की बात सनकर परेशान हो गए और वह राम को यह न कह सके कि तम बन मे चले जाओ परन्तु जब राम को सारी स्थिति का माता कैकेई से पता चला तो उन्होंने पिता को नमस्तै करते हुए वन जाने की आजा मागी पिता ने मौन स्वीकृति दी परन्तु राम ने इसे ही शिरोधार्य किया और वह बन को चल दिए। जब वह चलने लगे तो उनकी धर्म पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी उनके साथ चल पर्छ। राम ने उन्हें बहुत रोकना चाहा पर वह नहीं रुके।

राम अपने तीनों भाईयों से बहुत प्यार करते थे और माई भी राम से बहुत प्यार करते थे। इसी प्यार के वशीभूत लक्ष्मण **उनके साथ वन में गया और जब घरत ननीहाल से आया** और उसे पता चला कि मेरी माता की कुबुद्धि हो जाने से और उसके द्वारा वो वर मार्ग जान से राम की 14 वर्ग का बावास हो गया है और पिता जी का राम के वियोग मे स्वर्गवास हो गया है तो आते टी वह वन में से राम को लेने को दौड पडे। वह अपने अयोध्या वासियो व अपनी माताओ व छच्चामिकारियाँ सहित बित्रकुट मे पहुचे जक्ष राम वन मे ठहरे हुए थे। उन्होंने राम को वापिस अयोध्या में चलने का आग्रह किया। राम ने स्पष्ट किया कि 14 वर्ष से पूर्व वह अयोध्या ने वापिस नहीं जायेंगे। इस पर भरत ने भी राज गारी पर बैठने से इन्कार कर दिया। इस पर निश्चय हुआ कि राम अपनी खडाक दे वे उन्हे राजगदी पर रख विया जाएगा। धरत राजगद्दी पर नहीं बैठेगा परन्त । 4 वर्ष तक राम की अनपस्थिति मे राज्य की रक्षा करेगा। यह था भाईयों का आवर्श। एक भाई का वृत्तरे भाई के लिए त्याग। आज हम कक्षा खड़े है यह जरा

विचार कर देखे क्या आज भी ऐसे भाई कही नजर आते हैं जिपमें इक्तों त्याम की भावना हो। आज तो एक-एक फुट भूमि के लिए एक माई दूसरे माई का वब तक कर देता है। आज राम को मानने वाले रामनवमी का पर्व मनाने वाले राम से क्या शिक्षा ले रहे हैं इस पर जरा विचार करे।

एान एक अववर्ष पीहे है वन में बोखे से पानक पीता का हरण करके से जाता है। एार एक राजकुमार है उनके पिता ने तीन विवाह किए है वह भी दूरणा विवाह कर समाने है एरम्यु वह नहीं करते और सीता को खोज करते हैं। एक यह पता वस्ता है कि राजक पति रावण सीता को उपान करने का निर्मा करता है कि राजक पति रावण सीता को प्राप्त करने के लिए क्ला पर कहाते कर रोते हैं। इसमें वह आयोध्या में सेन्य मगवार्त आपनी शांवित अपने वल पर ही यानर जाति के कुछ सीतिकों को साथ कैकर रावण से युद्ध करते हैं और अपने पाणों को हा सक्ता के प्राप्त के स्वत्वर ने अपने कर भी वह सीता को प्राप्त करते हैं यह है उनका एक पीत्यता था जिस सीता को प्राप्त करते हैं यह है उनका एक पीत्यता था जिस सी तिवती सारक को आपन कर से जिसकी

वह एक लाखें मिन है जिसकों की जनमें जपना मिन बना लिया जनकों मूच-पूरा साम दिया। जनमें सुप्रीन को अपना मिन नमाया में नाली को भार कर सुप्रीन को किन्यना औ राजपारी पर किंदा दिया। जनके नाल जनसे सुप्रीन को अपना मिन नमाया में एकण को मार कर उपकों तका का परवा नम दिया। यह अपने मिन के लिए कठिन से कठिन कार्य करने के किए सेवार है। दिवासों जो नमा में हिया प्रकां पूर्ण किया।

वह एक क्रेच राजनीयिक है। तीता हरण के परचता यदि वह बादते से रावण में करने के लिए वह वार्याध्या से नेमा कराने बादते से रावण कराने रे राव इसलिए नहीं दिवस करांकि यदि करांची राज्याओं को बुका पचता था। वह युद्ध की बहुत बड़ी रेपारी करांचा को बुका पचता था। वह युद्ध की बहुत बड़ी रेपारी करांचा राज्या वह वंचे पता चला कि राम केवार नार्या युद्ध की कोई सेपारी न की कर यदि रामझता राव कि राज अपने माने के सन वह वाधित गड़ी का लेका। परच्च तान अपने पूरी सेपारी के साथ सकता में पार्व और राज्या जैसे राज्या पूरी

राम एक श्रेष्ठ राजा थे। उनके राज्य में कोई दु खी नहीं बा वह छोटे बड़े सभी का सम्मान करते थे। अपने चारो माईयां को तो उन्होंने ग्रस्न रखा ही है इसके साथ ही उन्होंने अपनी सारी हजा को सुखी रखा।

इस प्रकार राम का जीवन एक आवर्श जीवन है जो ग्रेरणाओं से भरा एका है वह सीर्य व पराक्रम के एक पुज्ज है बढे-बढे बरमाली राक्षस भी उनके सामने नही ठहर सके उनका बृढता से मुकाबला करते हुए उन्होंन उन्हें समाया किया।

इस ध्यार 25 मार्च को एमनवर्गी का एवं मनते हुए हते एम के जीवन से विश्वा ग्रहण करनी वाविशः। अपने बच्चों को रात् के जीवन से प्रेरण सेने के लिए हमें प्रोत्सादित करना चाविशः। इसे पारिवारिक मर्जायाओं का प्रसन्न करने का निश्चय करना प्रसिद्धः। आठात्वारीं और दुन्यें का महत्त्वन करने व सेन्यें को कन्ना प्रजान का प्रयास करना चाहिशः। इस इस दिन केवल राज का पुम्पान की न करें बढ़िक चनके जीवन से प्रस्था लेने का इस

धर्मदेव आर्य

## मृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का मूलाधार

ले श्री अस्त्रिलोश कुमान् सुभाव सामान् मचाना (मेन्ट्र) गताक से आगे

- (६) गृहस्थाश्रम में योत्रो का कुलो में स्त्री तथा पुरुषों का विचाह प्रभाव — माता के कुल की छ नहीं होना काहिए।
- (६) सही तथा पुरुष का प्रांटातथा पिताक गोत्रकी न हो ाकन्यासे स्त्रीतथा परुष का विवाह किस कुल में हो -'ववाह हाना उचित है। जिस प्रकार जिस कुल में स्त्री से पुरुष तथा पाना भ पानी मिलने स विलक्षण गुण पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न रहते हैं नना हाता वैस एक गोत्र पित व माता उस कुल मे आनन्द लक्ष्मी और क कन म विद्याह हाने में धातओं में कीर्ति निवास करती है तथा जहा अदल बदल न होन स उन्नति नहीं विरोध कलह होता है वहा दुख हाता तथा जैस दथ में मिश्री व सीठ दरिद्रता और निन्दा निवास करती शदि गैषधियों के मिलाने से उत्तमता है विवाह को सखमय बनाने के नाना है उसा प्रकार अलग अलग लिय स्त्री तब्ध पुरुष दोनो को गात्रा स स्त्रा तथा पुरुष का विवाह विद्या विनय शील रूप आव

बल कुल शरीर का परिवाम आदि

बमा योग्य होना चाहिए। जिसके

(1) सब ओर से यहोपबीत

अन्य उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

ब्रह्मचर्य सेकन उत्तम शिक्षा तथा

विद्या से थुक्त सुन्दर करव धारण

किये पूर्व जवान होकर विवाह

हो बाल्यवस्था से रहित सब

प्रकार स उचम व्यवहारो से परिपूर्ण

कुमारवस्था का उलधन करने

वाला नवीन नवीन शिक्षा तथा

पूर्ण जवान होके स्त्री तथा पुरुष

शारारिक कत्या से विवाह करे

जिसका नाम सुन्दर हो इस

इबिनि के तुरूव जिसकी चाल हो

सूक्ष्म लोम वाली हो लम्बे लम्बे

केंश तथा दात युक्त हो जिसके

सब अग कोमल हो वैसी स्त्री के

जारीरिक कन्या से विवाह न

कते -पीले रग वाली पुरुष स

अधिक लम्बी चौडी तथा बलवान

रोगी लोभ रहित अधिक लोभ

वाली अधिक मोलने वाली तया

भर नेत्रो वाली कम्या से विवाह

कन्यासे विकाह न करे

अश्वनी भरणी रोडिणीदेई

रवतीवाई चित्तारी आदि नक्षत्र नाम

वाली तलसिया गेदा गुलाब चम्बा

आदि वृक्ष नाम वाली गगा यमुना

आदि नदी नाम वाली चाडाली

(12) किम नामी वाली

(11) किस तरह की

साथ विवाह करे।

नहीं करना चाहिए।

जिसक सरल सीधे अग हो

(10) किस तरह का

का विवाह होना उत्तम है।

(2) जो किसी ने दशीन

होना उत्तम है।

(७) स्त्री तथा पुरुष के विवाह में दूरी का प्रभाव कन्या का नाम दुविता इस कारण हो है कि कन्या का ाववाह दूर दश म होना हितकारा " जिसको निम्म उदाहरणों से समझा

ाना उत्तम हे

- जा सकता है। (1) जिस प्रकार एक देश का रांगा दूसर दश में वाबुतथा खान पान
- क बदलन से रोग रहित होता है। (2) निकट सम्बन्ध करने म सुख दु ख का आभास तथा विरोध हाना भा सम्भव हे जबकि दूर देश में
- विवाह करन पर सम्बन्ध बढता है।
  (3) दूसरे देशों के पदार्थों की
  प्राप्ति भा दूर देश में विवाह होने पर
  सहजता से होती है।
- (4) कन्या क पिता के कुस मं दरिद्रता भा हो सकती है। कन्या का विवाह ानकट होने पर कन्या जल्दी जल्दी आवेगी तक भी उसके मंदिर पिना का कन्या को कुष्ण न कुछ दन्त हागा
- े रिजयों का स्वधाव प्राय नाक्ष्य तथा मृदु होता है और कब स्त्रा नथा पुरुष म आपस का वैमनस्य होना ना स्त्रा पिता क कुल में बस्ता जामगी। नासक कारण वैमनस्य बढेगा। (८) स्त्री तथा पुरुष का
- विवाह किस कुत्य में न हों जा इन संक्रिया स हान महत्तुका से महत बदाम्य से ायमुख करार पर इक् बढ़ नाम बदासार दमा "मरना दवर कुच्च व पविश्व कुच्चुक हा ता उन कुनो में कन्या उ वर के साथ विवाह नहीं हाना एक्टिंग क्यांकि व सब दुर्गुण और गा। विवाह करना वान के कुत्य में प्रक्रिक्त करना वान के कुत्य में प्रक्रिक्त की वात के प्रतिष्ठ उक्स

आदि अन्या नाम वाला विश्वया क्रिमलाया व्यर्थली आदि पर्यंत नाम बाली मार्थलेखी औरणवारी अदि पुष्प नाम वाली और शीमकुमारी वर्णिदका काली आदि शीमकुमारी वर्णिदका काली आदि शीमका नाम बाली कन्या के साम विवाह न करना चाहिए। यसोट्य सुख्या आदि नाम वाली कन्या क साम विवाह

- (13) विकास किसके अर्थान देशिय काहिए , नारका प करकी के जाधित विद्याद करण है । की मात्रा विश्व कभी विकास करण विद्याद करण है । की प्रमानक के किम गर्डी केन वाहिए। स्थोकि एक दूरों का प्रमानक के किम करने विदेश बहुत कम होता है । व्या स्थान उपमानक हैं। व्याव होता है। विवाद में मुख्य प्रयोधन वर तथा कमा में मुख्य प्रयोधन वर तथा कमा के तथा। विश्व क्षा कही। क्षांकि अपसान होने में पूख्य क्षांब है।
- (14) विकाह के प्रकार निवाह आठ प्रकार के होते हैं। (1) बाह्यण — चर सवा कन्या दोने वचावत हहावर्ष से
- पूर्ण विद्वान धार्मिक तथा सुनील हो उनका परस्पर प्रसन्तता से विधाह होना झाझ कहाता है। (2) देख - विस्तृत यह करने मे ऋत्यिक कर्म करते हुए
- जमाता का अलकार युक्त कन्या को देन दैन विवाह कहलाता है। (3) आर्थ वर से कुछ लेके विवाह होना आर्थ विवाह कहलाता है।
- (क) प्राज्यसम्बद्ध जब वर प्रथा कन्या का किवाह धर्म की वृद्धि करने के लिए होता है तो ऐसे विवाह को प्राज्यसम्बद्धि कहते हैं।
- (5) आसूर -वर तथा कन्या को कुछ देके किये जाते हैं ऐसे विवाह को असुर विवाह कहते हैं।
- (6) यतन्त्रको अभिवान तथा असमय दोनों की इच्छापूर्वक वर तथा कन्या का परस्पर सयीग होना गान्सवं विश्वक कहलाता है।
- (7) राञ्चस —लढाई करके बलात्कार अर्थात छीन झपट व कपट से कन्या का विवाह होना राक्षस विवाह होता है।
- (८) सोई हुई तथा नशे में धुत पागल कन्या से बलात्कार सयोग करना पैशाचिक विवाह कहलाता है।

( 15 ) विवाह की गुरुकुल रीति - वस एक वर्ष व क भाव ब्रह्मचर्यात्रम और विद्या पुरा हान में होष रहे तक कत्याशा का प्रतिविम्ब कन्याओ का अध्यापिकाओं के पस तथा कुमारा के प्रतिबिम्ब कमारों के अञ्चापक के पास भेज देवें। जिस जिस का रूप मिल जाये उस उस के इतिहास अर्थात जन्म से लेके उस दिन तक उसकी (बन्ध चरित्र पुस्तक) अध्यापक लोग मगवा के देखें जब दोनों के गुल कर्म तथा स्वभाव सदृश्य हो तब जिस जिस के शाय बिस किस का विवाह होना बोग्य समझें उस इस पुरुष व कन्या का इतिहास कन्या व वर के हाब म देवे इसमे जो तुम्हारा अभिप्राय हा सो हमको विदित कर देना। जब **उन दोनो का निश्चय परस्पर विवाह** करने का डो जाये तब ठन दोना का समावर्तन एक ही समय मे होवे । को वह दोनो अध्वापक क सामने विचाह करना चाहें तो वहा नहीं तो कन्या के माता पिता क बर मे विवाह होना घोग्य है। अब वे समझे तो तब उन अध्यापका व कन्या के माता फिता आदि भड़

सनुष्टी होने पर दोनों को परस्पर विवाह करना उत्तम है। (16) विवाह की स्वयंबर रीति —आर्थावर्ष रहा में स्वयंवर की प्रथा चली आ रही है जा सबसे उत्तम रीति होती है

पुरुषों के सामने उन दोनों का

आपस मे बातचीत शास्त्रार्थ कराना

और जो भी गुप्त व्यवहार पुछे वह

भी सभा में लिखकर एक दूसरे के

हाम मे देकर प्रश्नोत्तर कर लवें

- (17) विवाह से पूर्व कर सक्ष कन्या का एकान्स में मिलला वर्जित — कन्या तथा वर का विवाह से पूर्व एकान्त में मल नहीं होगा चाहिए। चयाकि युवायस्था में स्वी तथा पुरुष का एकान्य वास दुषण कारण है।
- (16) कंज्या के विवाह का उन्नम समय किस दिन कत्म रक्त्यला डोकर सुद्ध हा तब वेदा और मण्डप रच के अनक सुगन्यति प्रत्य को होग करन माहिए तम विद्वन पुरुर्वों तथा दिशम का वध्य वीरव सरकार करना जाहिए

## शास्त्रार्थ का खला चैलंज अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर स्त्रियो को

अपमानित होने से बचाने का सकत्प

वात्यकाम आयं समीर (यमुमामणश) क्यन के लिए कोई वैटिक जास्त्रीय

यत ह मार्च १५ का अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं को और अधिक सम्मान एव अधिकार दन का सकारप स्थान 2 पर लिया गया। वैदिक संस्कृति में तो आदिकाल स ही स्त्रियों को म्येच्ट श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। गार्गी लापा मुद्रा मैत्रया न जाने कितनी विद्शी देविया हमारे नक्षत्र पर चमक रही हैं। राष्ट्र उत्थान में महिलाओं का स्थान किसी भी दृष्टि से न्यून नहीं हे यही कारण है कि स्त्रियों को ससद मे भी 33 प्रतिशत आरक्षण का व्यवस्थाओं पर गहन चितन हो शास्त्र है। परन्तु दुर्भाग्य है कि जिल

सकचित सकीर्ण अवैदिक विचारो न हमारी वैदिक संस्कृति को कलकित करन का कप्रयास किया बा आज भी कुछ तत्व उस दिशा में प्रयत्नशाल है। उन्होन इविहास से कुछ सीखा उहीं कि हम कितना भथकर परिणाम भुगत चुके हैं। ऐसा ही एक भूजित कुप्रयास गत दिनो हमारे नजदीक ही अमादलपुर यमनानगर के सर्व मन्दिर के कथा समारोह में देखने की मिला जिसका आयोजन बहाचारी अखिलानन्द वा ने किया था। हजारो का संख्या के साथ प्रमुख शकराचार्य भी वहा उपस्थित थे। विद्वानी मे वहा एक बटक शस्त्री जिन्हे वास्तव म भटक सास्त्री कहना ज्यादा न्यायोधित है। वह भी प्रवचन करता था। जिन्होने पाण्डाल से घोषणा कर दी कि स्त्रिया वेद मन्त्र नहीं काल सकती गायत्री मन्त्र कोलने का भी उन्हें अधिकार नहीं इतना ही नहीं उन्होंने चैलेज की शैली मे कहा स्वियो का ओ३म नहीं बोलना बाहिए। ओउम नम शिवाय नहीं स्तिया केवल नम शिवाय कह सकता है। आरती में भी ओइम् वय जगदाश को भी जब नगदीश कहे। उन्हान सात प्रथा को भी विचत और वेद सम्मद बता कर इस कुप्रथा की वकालत की और प्रेरित किया कि रिक्या इस सिंत प्रशा को सदा की भावना से देखें। उस अन्धकार वग का बात के औषित्व को सिद्ध

प्रमाण न होते हुए भी वन्होने **जिस निर्ल**ण्यता से सब कुच्छ कहा सामान्य श्रोता (सोता) वो सुनते रहं उनकी तो कोई प्रतिक्रिया न हुई परन्त विवेकशील स्वाध्यायी सामाजिक समानता के समर्थक वैदिक जनो को इस प्रवस्त से मानसिक पीडा हुई वह तो दिलमिला उने जिस नारि जाति को मानास्थान देते हैं उसका बोर अपमान। बात बढते फैलत आर्य समाज के लोगो व गादत्री परिवार के लॉगो तक पहची वो सब सँकडो की सबग में फण्डाल स्थल पर गावत्री मत्र बोलते हए पहुचे जिनका नेतृत्व महिलाए कर रही थीं जो उच्च स्वर से वेद मन्त्र गायत्री मन्त्र व ओ३म् बोलदी जारही थीं। पाण्डाल में पहुचे ही थे कि पश्चिम ने चारों ओर से वेत जाल कर जाने से रोक दिया। बार बार अनुरोध करने के बावजूद **ब्री भटक शास्त्री जी बाहर सडक** पर पधारे।वैदिक विद्वने ने (बहुत नाम है स्थानाभाव के कारण नहीं लिख रहा) श्री शास्त्री जी से अनेक प्रश्न किए परना एक प्रश्नका भी युक्ति पूर्ण समाधान वो नहीं कर पाए। गायत्री परिवार के महानुभावों के प्रशसनीय योगदान से पुन वेद के 2 मन विद्वानी ने प्रस्तुत किए कि इसमें स्थिमों को वेद मना पदने का अधिकार है आप कोई प्रमाण दे। जिसम निषेध हो। परना वो कोई प्रभाण न दे सके काफी विचार विनिषय हुआ परना कोई सन्तोष जनक समाधान प्रस्तुत न कर वह धीरे से पाण्डाल को लौट गए। तत्पश्चात अनेक बार प्रयास के बावजद को सार्वजनिक विचार विमर्श के लिए तैगार उड़ी ष्ट्रप्। तक से स्वियों में मानसिक पीका अपमान भावना एव विद्रोह पनप रहा है आखिर क्यो इस समारीह में नारी बादि की विरस्कृत किया गया।

आर्य समाज इस कुप्रयास की भरसक निन्दा करता है एव ब्रह्मकरी अखिलानन्द जी सर्न

## ऋषि ट्यानन्द को याद करो

ले प मन्यापाल विभर्य विस्तात ज्ञावनी अन्योपोजक र थ पोस्ट बरीम जिला क्लीससार (प्रक्रियाणा) आर्थ वीरो जगत गुरु ऋषि दयानन्द को याद करो। करो वेद प्रचार विश्व में समय न अब वर्बाद करो। नव सक्तसर आ गया जाग में नव सन्देश लिए। स्वामी विरुवानन्त के सन्ते क्रिका धर्म के लिए दिए। ऋषि वर दयानन्द ने सचमुच जीवन घर उपकार किए। वेदामत पिलाया जग को स्वय भयकर जहर पिए॥ वयानन्त्र के वीर सेनिको निर्भय हो सिष्ठ नाद करो। करो वेद प्रचार विश्व में समय न अब बर्धाद करो।। आज जगत में वेद विरोधी पाखण्डी है जोरो पर। मानवता तो विलख रही है घम रहे है दष्ट निडर। मासामारी और शराबी बढते जाते है पामर। यवन और ईसाई पापी मस्ती मे है रहे विचर ॥ कृष्ण बनो सो वक सदर्शन मन मे नही विशाद करो। करो बेट प्रचार विश्व में समय न अब बर्बाद करो। वाद रखो इस दनिया में जो भले काम कर जाता है। अबला दीन अनाथों को जो अपने गर्ल लगाता है। विघन और बाधाओं से जो कभी नहीं दहलाता है। धन्य उसी का तो जीवन है जग मे आवर पाता है। स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम वीरो मत प्रमाव करो। करो वेव प्रचार विश्व में समय न अब बर्बाट करो। थुवक-युवतिया बिगड गए है गन्दे गाने गाते है। गीता रामायण वेदों को कल्पित ग्रथ बताते हैं। स्वारम्थ-चरित्र दिया खो पगले निर्वल हो दुख पाते हैं। राम लक्ष्मण से प्राता अब कही नजर न आते है।। अर्जन भीम नकल सी पैदा फिर से तम औलाद करो। करो बेद प्रचार विश्व में समय न अब बर्बाद करो।। अगर मलाई चाहो तो तम नियम एक ये अपनाओ। कथनी करनी एक बनाओं दुनिया में इच्चत पाओ।। वेदो का स्वाध्याय करो विद्वान अनुठे बन जाओ। अपने प्यारे आर्यावर्त को भगडल पर चमकाओ॥ पाखण्डो के बधन तोड़ो जन-जन को आजाद करो।

करो वेद प्रचार विश्व में समय न अब बर्बाद करो।।

मन्दिर अमादलपुर यमुनानगर से प्रार्थना करता है कि वह अपने द्वारा आयोजित इस समारोह में हुए नारी जाति के घोर अपमान के लिए समस्त महिलाओं स सर्वजनिक क्षमा याचना करे। ताकि महिला दिवस जैसे आयोजनो का कुछ भहत्व बन सक यह केवल नाटक बन कर न रह जावे।

दितीय जैसा उन्होंने पर्व कार्यक्रम आयोजित कर स्त्री जाति का आर्थजनिक अपमान का ककत्य कराया है उस पाप के निकारणार्थ श्री शास्त्री जी (बटक) से आर्थ विद्वानो का खला सास्त्रार्थ करा सत्यासत्य का निजर्व करावें प्रमाण केवल 'वेद हो जिन्हे आर्थ समाज मनाना सार्थक होगा।

व स्वय श्री बटुक शास्त्रा जा न स्वीकार किया है हजारों का उपस्थिति में समारोह पूर्वक सस्य असत्य क निर्णय हतु शास्त्राथे हा किसी कट्ता या द्वब स हम ऐसा नहीं कर रह बेट प्रमण स जा सिद्ध निर्णय हो उस सब स्वाकार करे सवि प्रथा पर भा हम शास्त्रार्थ का खुला निमन्त्रण देते हैं। अगर सप्रमाण सिद्ध नहीं कर सकत ता श्रा शास्त्रा जी मच स तमाम महिनाओं से क्षमा माने।

मैं समझता हू स्थियों का हम अगर इस भेद भाग अपमान व पन सति जैसी बराई से बचा पाये तब ही अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस

## गगरेट में वैदिक संस्कृति सम्मेलन

सिलात कारीण कमा पेड़ मार्गेट (१९ ५) में के हुए क्रिकेश जब सावस्था ठंड कर सुवास १९ मार्गे १९ ५ में १९ ५ में १९ भी १९ में १९ में

दोपहर दो बबे तक वैदिक संस्कृति

सम्मेलन पुष्प स्वामी दीक्षानन्द जी

को जानकार में होगा। मुख्यारिकि ही ईस्पर चल जो भीमान सिका गर्मी, ही विकास जो चीमान सिका गर्मी, ही विकास जो चीमान पेकस केसरी होंगे। ही जानकीर सिंह जी महत्त्वर (मैंनी साहक चाले) ही महत्त्वर प्रमुक्त साह, चाला पुर वाले, ही मो मुस्ति चालस्थान, हा तम अकारत रावा अन्य कहें महत्त्वभाव सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे। नेरी सुधी आर्थ महत्त्वभावों

एक बहनी से प्रार्थना है 20 व 21 मार्च के विशेष कार्यक्रमों में अवस्य गगरेट पहुंचे घोजन व ठक्षरने की पूरी व्यवस्था होगी। —व्यकुर्युख जिसका

## बुढलाडा में ऋषिबोधोत्सव

आपं समाज बुढ्राजा में रयानर बोध राति (मडासेलवाडि) गया। इस पालन दिसस पर दिनांक ति 29 को प्राप्त इतन यह प्राप्ति एसं प्रकार का कार्यकृत हुन्। दिससे बीए पढ़ी आर्थ स्कूल के बच्छों व अध्याननार्वी यो बहुत हो तहा कार्यकार के प्रसारनार्वी यो बहुत हो तहा कार्यकार के प्रसारनार्वी यो कहुत हो तहा कार्यकार कार्यकार कार्यकार स्व

जीवन पर प्रकार आता व पकन गाये। डी ए दी आर्थ स्कूल बुद्धांका की अम्मिरिका प्रमुखल ते "कहर की तू मदी फांके, अपने अन्दर कर्षेन कार्यों "पकन गुणकर पनन गुप्प कर दिला। डी कृष्ण बी च प्रकटर साहब ने अग्ध समाम के निपामी पर प्रकार उसाव मार्थि जी नवा जीवन चरित्र सुनाय।

सुरीत कुनार मार्ग ने ऋषि जो के <u>-सुर्यात्त कुनार</u> सुधिदा**ना में आर्थ समाज स्थापना वि**दयस

सम्पूर्णानन्द सरस्वती स्वामी जिला आर्व सभा लिधवाना के समनानति जी, क नम्रता सोनी राखावधान में 21 मार्च 1999 रविवास को आर्व कालेज लिंधपाना मे आर्व गायक, प्रिं वी के मेहता तथा अन्य कई विद्वान पहुंच रहे हैं। समाज स्थापना दिवस मनाया जा लुधियाना जिला की सभी आर्य रहा है। यह कार्यक्रम दोपहर बाद समावों के अधिकारियों से प्रार्थना 2.30 से 5 वजे साय तक चलेगा है कि अपनी आर्यसमाज के जिसमे. आर्थ प्रतिनिधि समा पजाब के प्रधान श्री हरवस लाल जी शर्मा. अन्य सदस्यो अद्वित अधिक से यहामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी अधिक सत्वया में समय पर प्रधार कर कार्यक्रम को सफल बनाए। शर्भा भहापौर नगर निगम लिधियान के स उपेन्द्र सिंह ग्रेवाल स्वामी --विजय सरीय मन्त्री

लुधियाना में आर्य वीच दल शिविच आर्यसमान महर्षि दयानद बानार वर्ष से 30 वर्ष तक होनी चाहिए,

## पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाव महर्षि द्यानन्द बाकार सुविध्याना को सुबोग्य विद्वान पुरोहित की आवरयकता है। संगीठब को पहल दी बायेगी, दक्षिण योग्यता एव अनुभव के अनुसार दी काएगी। मन्त्रीप्रधान अर्थ दक्षान संस्थाक करे।

### भो परोपकारी महाब है सब

. ले. श्री विशोजी लाल प्रेम **स्वयः (वि.** प्र.) मिंच सारे सत्तार वे ऋषि अच्छा न कोई फैर होना न फर्कीर होया। न कोई साथ संस्था बनकर होना, न कोई धीर होया न कोई बीर होया। को दन कानन्य दी मूर्ति सम्, को धानवता वे अवरात है सम्। पुले बदकिया नु राव विकास वाले, सच्चे झान वे ओ क्षम्पार है सन। ओ सुन्दर सुरक्षेस गुणवान है सन, को बाल बढावारी बलवान है सन। वो निस्त्रेंच निर्मोडे निर्वेर है सन, वो परोपकारी महान है सन। अक्रम ये पुप ४मेरे ये विच ऋषि क्रम यी जोत जगा वीती। सारे जग नू प्रेम वा राह वस के, ऋषि प्रेम वी गना वहा विति। उत्त निवर नू किसी वा वर नहीं सी, खरी-खरी ओ सब नू समाख्या सी*।* औ राजण्ड दिया जंडा विसान्त्रमा सी, येग क्रान वा अमृत गैसान्त्रया सी। शक्त हर वा निर्मा करन ये लई, सत्यार्थ प्रकास को शिख गए ने। वेद सब्दी न समक्षण समक्राण वे लई वेद भाष्य दी शर्मका शिख गए ने। भित्त ने दुव विच थौस के प्रहर विक्ता, ऋषि उस नु श्री छाती सगा शिता। क्यमें कोलों रुपये ये करके, उस न बचने सर्व वर धना विस्ता। इटा परबरा गारिया का के भी. जाने वेब प्रधार ने छाड़िया नई। अपनी जान की काजी साथ करके जानि परीपकार न छाड़िया नई। सम्में प्रेम की गल न ब्यान शरक, जेकर श्रमी वा ऋष वकावण ए। करो प्रम ए वेदा वे क्रमने न, सारे अग वे विच फैलाऊमा ए।

## उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महीत्सव सम्पन्न

थग प्रवर्शक महर्षि दयानंन्द की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश की सुबन स्थली, पावन सत्याचं प्रकाश पवन, नवलका महल, उदयपुर में 26 फरवरी से 28 फरवरी 99 तक भव्य सत्यार्व प्रथमश महोत्सव का आबीचन धूमधाम के साथ सम्पन हुआ। इस पंचम महोत्सव में आर्य बगत के संतरित्रोभणि वयोगुद्ध सार्पदेशिक आर्य प्रतिनिधि समा के प्रधान पुण्यपाद स्थामी ओमानन्द जी . सरस्वती को बब श्रीमद् दयागन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष पूज्य स्वामी वस्वयोग सरस्वती समारोह की मखब अतिथि पूर्व केन्द्रीय उपमत्री हा गिरिजा च्यास एवं समारोह संयोजक के देखरान आर्य ने ज्ञाल, श्रीफल के साथ ३१ लाख रूपए का चैक भेंट किया तो

आर्थंजनो से खचाखाच भरा घण्य पंडाल वैदिक धर्म की वब के उद्योगों से गूंवायमान हो गया। पूज्य स्वामी जी ने यह राशि सत्त्वार्थ प्रकाश भवन, नथलखा महल के विकास हेतु प्रदान कर दी।

हस अकसर पर पृष्ण वाणी में ने अपने उद्योधन में सत्यार्थ प्रकाश की आगरंग्यकता व प्रमाशिक के पर में इस मानविषयोगी प्रमाशिक के पर में इस मानविषयोगी प्रमाश को खुंबाने का आग्रह किया, क्योंकि क्यों ऐसा ग्रम्भ है किसका के लिए लाभकार्य है। उन्होंने सत्यार्थ संदेश घर-पर पश्चाम होना आर्थ कार्यकर्णाओं का अग्रह के स्वार्थ के लिए लाभकार्य है। उन्होंने सत्यार्थ संदेश घर-पर पश्चाम होना कार्य कार्यकर्णाओं का

## पौड़ी गढ़वाल में श्रद्धांजलि सभा

7399 को आर्थ समाब सावली आदि पंपपुरी महबास के उपप्रधान रख श्री बानसिंह जी के स्मामन में श्री हेमराव प्रियत्त प्रभान आर्थ समाब सावली आदि पंचपुरी वी अन्वस्था में प्रारा: 11,00 बन्दे सं "म्बामन सावति स्मास्क प्रवन" ज्युरी रे एक श्रद्धांबील समा का आयोजन किया गया। सिससे बिरिन्न स्थानों से गलमान्य अवित उर्यक्षित्व वे।

स्वर्गीय श्री बानसिंह जी विगत

पर्यो से अग्ने सभा सामाने आर्थ पंपपुरी मुझान के उराधान पर से 1 अग्ने पर की गाँगि को मामाने पुर समान के प्रापेक कार्य में स्वत्तु पूर्विक कींग की में प्रकृत कार्याण कींग मामाने पुरू कार्याण कींग मामाने पुरू कार्याण कींग मामाने प्रकृत मामाने के अपन्यका के साथ दिलांक 22.29 को उराधान प्रिमंक पर निकार के गाँग हैं। उराधान कर्या करियाल आस्त्रा की

## नैसनल कालेज फार महर्ज नहचीबाल में पर्वावरण दिवस

2.3 99 को नैशनल कालेब फार यर्ल्य गढदीवाला (बिला होशियारपर) मे पर्याधरण दिवस बहुत उल्लास और उत्साह से मनामा नया। इस सूध अवसर पर शहर के गणमान्य बुद्धिमान लोग व ओकाका आर्य पुत्री पाठशाला सीनियर सैकेण्डरी स्कूल का स्टाफ और प्रिसीपल भी आये हुए थे।

आर्थ प्रविनिधि सभा पत्राम के महामन्त्री ही अस्विनी कुमार वी शर्मा किसी कारण नहीं पहुच सके इसलिए मत्त्वा अतिथि के कप में की मनोहर लाल जी अधिष्ठाता साहित्य विभाग ने सभा की उसेर से भाग लिया। कालेज और स्कूल की मैनेजिय करोटी के सदस्य और मैनेकर सी हसराव की सराफ चैन साहित्र का बोगिन्द्र सिष्ट ढढ बत्वेदार श्री इरिसिड की एम सी गढदीवाला सरदार सम्पर्ण सिंह जी Retd BDO आदि बहुत से सदस्य वहा आये हुए थे। प्रिसीयल श्री घर्मसिष्ठ भी सहोता हा जोगिन्द्र सिंह हर आदि ने सक्का फूल मालाओं से स्वागत किया। इस कालेब में लडिकरों को पढ़ाई के साथ सिलाई कबाई और कम्प्यूटर की शिक्षा भी दी जाती है। श्री मनोहर साल जी ने थहा कपडो की प्रदर्शनी का उदयटन किया। श्री का बढ़ ने प्रिसीपल धर्म रितः जी द्वारा पर्याचरण पर लिखी पुस्तक का विमोचन किया।

विसीपल धर्म कित जी ने कालेज की वार्षिक निर्पोट पेत की। वह कालेज लोगों के दल से चलता है इसको किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता नहीं मिलतो है। लोग बाहर के देशों से इसे पैसे धेवते रहते हैं यह सब प्रिसीपल बी की मेहनत और लगन है हिम्मत है जो कि इस कालेज को चला रहे हैं। 35 छात्रावे

भवीके प्राप कर रही हैं और बाहर की बहुत सी सस्थायें इसे वजीफे आदि दे रही हैं। कालेब की क्राज्यओं ने रगारग

कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसका लोगो पर बहरा प्रमाण पदा । इस पर डा बड साहिब और सरदार सम्पूर्ण शिष्ठ Retd BDO ने बहत प्रभावसाली विचार दिये। पानी को और हवा को हम कैसे सद्ध रखे इस पर श्री इरि सिंह भी प्रश्न सी ने बहुत सन्दर विचार दिवे।

रगारग प्रोग्राम के हर शो मे

अच्छे काम करने वाली समामो को पहले दूसरे तीसरे न पर आपने पर सम्मानित किया गया टाफी के साथ और भी सभी छात्राओं को जिलारेने इस कार्यक्रम में भाग लिया को सम्मानित किया गया। इसके साम ही प्रतिष्ठित महानुषायो को भी सम्भानित किया गया। अन्त मे श्री मनोहर लाल की ने सकको सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्थ समाज का शिक्षा क्षेत्र में महान योगदान है। स्त्री शिक्षा के लिए अवर्ष सम्माज ने ब्ह्रात कार्य किया है। इस कालेव का प्वाई में काफी नाम है इसीलिए सीनियर सेकण्डरी स्कल और नैशनल कालेब व्यर्थ प्रतिनिधि सभा पश्चाम की देख रेख मे चलाये का रहे हैं । प्रिसीपल धर्म रिक्त स्कारेता की का भी धन्यवाद किया जो Retal सरकारी प्रिसीपल हैं। इस स्कल और अपर्य समाज को उन्होंने जीवन दान दिया क्षमा है यह बगैर वेतन के काम करते हैं। अपने रिश्वेदारी से बाहर से पैसे

मगवा मगवा कर इस कालेब को चला रहे हैं। -मधोतन लाल आर्थ

## वैदिक सिद्धान्त शिविर सम्पन्न

अहब आर्थ समाज आर्थ गुरुकल सै 33 में महर्षि दयानन्द सिद्धाना रक्षिक संभा की और से 14 दिवसीय वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें आर्थ बगत के महान

त्यागी तपस्वी महात्याओं नेवाओं ने भ्रम लिया बिनमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा के प्रवान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्वामी किया और देश के कोने कोने जगदीस्थरानन्द सरस्वती स्वामी से आने हुए 80 सिविसर्थियो ने स्वरूपानन्द सरस्वती आर्थ केन्द्रीय वैदिक सिद्धानो का प्रशिक्षण प्राप समा दिल्ली के प्रधान का शिव कमार किया।

शास्त्री दर्शन विषय मे भारत सरकार से सम्मानित दिल्ली विश्वविद्यालय की श्रामती जानी प्रभा कमार और शा चीरपाल विद्यालकार आदि नेवाओं ने भाग लिया।

पाच कर्मठ कार्यकताओं ने वानप्रस्य लेकर अपने आपको आर्य समाव व राष्ट्र को समर्पित -आर्थ मुनि



#### ईमाई मिलनरियों को धर्म परिवर्तन से रोका जाए

आर्य समाच सैफ्टर ९ पचकला की असरग सभा अपनी बैठक दिनाक 1 2 99 तथा रविकारीम अधिवेशन की साधारण सभा दिनाक 7.2 99 सर्वसम्मित से भारत सरकार से माग करबी है कि भारत में ईसाई मिशनरियो हारा वर्ग परिवर्तन के कारण उत्पन थन आक्रोश और ईसाईयो द्वारा दगे महकाने की पुनराष्ट्रित को रोकने के लिए भारत सरकार निम्नलिखित पन पुरन्त उठाए।

अवस्थित के सविधान में धारा 46 तथा 51 ए (एफ) के अनसार भारत सरकार का यह सविधानिक कर्राज्य है कि सम्पूर्ण भारत मे जन बादियो अनुसचित चातिमो और घनवासियो की संस्कृति की रक्षा की जाए। ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म परिवर्तन द्वारा उनकी संस्कृति नष्ट की बा रही है। इसलिए ईसाई भिशनरियों की इस प्रकार की गतिविधियो पर पूर्व प्रविवध लगाया जाए।

2 इस हेर विदेशों से समाव सेवा स्वास्थ्य तथा शिक्षाप्रसार के नाम पर प्राप्त थन का दुरुपयोग इसाई संस्थाप धर्म परिवर्तन के लिए कर रही हैं औरदेशके उत्तर पूर्व में आतकवाद को प्रोत्साष्टित कर रही है । इनकी इस प्रकारकी गतिविधियो पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगावा आए ।

९ यह सभा तन सभी विशेषी राजनीतिक दलो की निन्दा तथा भर्त्सनः करवी है जो अरूप सख्यको के बोट के लेभ से ईसर्ड मिजनरियो का समर्थन कर रही हैं और हिन्दू सस्याओं के विरुद्ध विषैला दुवाचार कर रही हैं उनकी बानकारी के लिय महात्मा गान्धी के इंसाई मिशनरियों के बारे में लिखे गए विकार गीचे दिए बाते हैं --

"IF instead of confining themselves purely to humantaries work such as education. Medical

services to the poor and the like ey would use these activities for the purpose of prosely using I would certainty like them to with draw Every nation con aders its own faith to be good as that of any other Certain's the great fasth held by people of India are adequate for the people "(M K. Gaudhi" foregr Missionaries Yong India April23 1931 Page 83)

अर्थात - यदि यह ईसाई मिशनरी समाज सवा जैसे शिक्षा स्वासम्य इत्यादि द्वारा निर्वनो की सहायत करने के स्थान पर अपनी इन गतिविधियों द्वारा धर्म परिवर्तन करते हैं तो मैं निश्चित रूप से कहुगा कि वह चले वाए। प्रत्येक राष्ट्र के पास अपना धर्म होता है और वह उतना ही श्रेष्ट होता है विदाना किसी दूसरे का। निश्चित क्रम से भारत के लोगों का ऊचा धर्म तथा किल्बास भारत के लोगो के लिए पर्यापा है।

यह हिन्दू विरोधी राजनैतिक दन जो कि अपने को महात्मा गांधी का अनुयाया मानते हैं उक्त विचारो पर ध्यान दे और क्रिन्ट विरोध को त्याग दे।

पारित हुए प्रस्ताव की एक प्रिमित की जाए भारत के राष्ट्रपति प्रधानसभ्या गृह मन्त्री सूचना एव प्रसार मन्त्री राज्यपाल हरियाणा/प्रजास/हिमाचल प्रदेश मुख्य मन्त्री हरियाणा/पञाव/ विमाचल प्रदेश सभी राजनीतिक दलो के प्रधान Administration Chandageth Doputy Con-Panchkule, प्रधान केन्द्रीय आर्थ सभा चण्डीगढ आर्व प्रतिनिधि सभा प्रवाद/हरियाणा सार्वदेशिक सभा गई दिल्ली।

यश पाल आर्थ मत्री

न्योकस्थर अस्त की सुध्य कार्या **श**्च <u>अन्त गुल्या</u> का, गाम प्रत **कार्**स ये रुवर रूपन रुवा एक मिली साम ह शुरू विक्रमी साथ, कर्ड सरक की वांकी। तब आकारम प्रमाद करते भूगति विकास की व वेस रहे खुशराबः, लागी गृह-विसर्वः ह विण दिगन्त वसमान विजय के कार्र अर्जन प्राप्त सके पन सम्पदा स्वास्थ सीर्व वक्ष स्वीत रहे सीख्यकारी ग्रेय विक्रमी चव कार्बर

#### आर्य समाज नवाकोट का उत्सव

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भा ऋषि बोधो सव (महाशिवरात्रि पर्व) आर्य समाज नवाकोट अमृतसर म बडी श्रद्धा व धुमधाम से मनावा गया बच्चों ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर भजन गाये पंडित जगत वर्माजी के मनोहर भजन हुए व महोपदेशक पहित निरजन देव जा इतिहासकारी ने प्रभावशाली उपदेश दिया व ऋषि के बताए हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी इस सभा की अध्यक्षता त्री सुभाव वा भाटिया प्रधान आर्य समाज कवार

ब्रद्धानन्द ने की व समाज की भलाई के लिए 11000 रूपए आर्थ समाज ब्रह्मानन्द काजार का ओर से दान दिया अन्त मे अटट ऋषि लगर भी विकरण किया गया। इसमे शक्ति नगर आर्य समाज हरीपुरा आर्य समाज लक्ष्मणसर आर्य समाज मारुल टाउन आर्थ समाज व रामदास आर्य समाज का भी अभृतपूर्व सहयोग मिला

27 फरवरी शमिवार का दक्षमृन्द

पष्टिक स्कल दीपक सिनमा रोड लुधियाना में प्रात 11 क्वे एक कुहद यह का आयोजन किया गया यह आयोजन नींची दसकी क्लास के विद्यार्थियो ने मिलकर किया दसर्थी क्नास के उन सब विद्यार्थियों जिन्होंने अपना वार्षिक परीक्षा मे बैठना है वह त्रद्धापूर्वक यहमान बने

स्कल के प्रबन्धक श्री आसानन्द आर्थ भी ने विधिपूर्वक यञ्ज सम्मन करवामा इस अवसर पर आर्य सीनियर स्कूल के प्रशन्यक श्री ओम

दयानन्द पब्लिक स्कूल में यञ्ज

प्रकाश जी टण्डन एवम दयानन्द पब्लिक स्कूल का प्रबन्ध समिति के माननीय सदस्य श्री ओम प्रकाश जा गुप्ता एकम् श्रीमता विनोद गाधा जी ने बच्चों को स्मति चिन्ह प्रदान किए नींबी क्लास के बच्चो न दसवीं क्लास क बच्चो का अलविदाई पार्टी दी

दसवीं कथा के बच्चो न अपनी अध्यापिकाओ प्रवस प्रवन्ध समिति का आभार प्रकट किया एवम् अन सम को उपहार प्रदान किए ~सुनीता मलिक

#### आर्थ समाज कठुआ का चुनाव

आर्य समाज कद्भा (जम्मू और काश्मार) का बार्षिक चनाव दिनाक 21 2 99 को हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारा सर्व सम्मति से चन गए श्री भारत भूवण महावन सरक्षक श्री करम चन्द महाजन सरक्षक डा दुष्पना उब्बट संरक्षक द्धा कुलदीप कुमार मल्होत्रा प्रधान जा राम धन कार्यकारी प्रधान जी किसोरी लाल महाजने जा सरदारी लाल उपप्रधान औ सुरेन्द्र लाल बजाज महामन्त्री श्री ओम प्रकाश गुप्ता मन्त्री श्रा विज्ञन दास भारती प्रचार मन्त्री श्री सुभाव उब्बट कोबाध्यक्ष श्री सुमेश कुमार पुस्तकालयाध्यक्ष श्री मनोहर लाल स्टोरकीपर श्री मदन लाल रैना श्री दुर्गा दास श्री गायत्री प्रसाद सदस्य आतरण 🕳 ओम प्रकाश गुप्ता मन्त्री

आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त कोलस्ट्रोल रहित विटामिन 'सी' से भरपूर

**एत रसाय** हा ६३, गली राजा केदारनाथ,

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियो का सेवन करे ।



गान्ता कार्यालयः

श्री अशिकती कुमार जा शमा एडवोकेट महायन्त्री सम्बदक द्वारा अब हिन्द प्रिटिंग प्रैस/प्**रित्वेट प्रिटर्व जालन्वर से मुद्रित शोकर** आय मगादा काका गठदत भवन चौक किजनपरा जालभार से इसकी स्वामिनी आर्थ प्रतिनिधि सभा प्रवास के लिए प्रकाशित हुआ



वश्वमाय

292926

पं जाभ का प्रमुख

5 चेत्र सम्बत् 2056 तदनुसार 25 28 माच १९५ दयानन्दाब्द ७५ वार्षिक शुल्बः ० रूपय आजावन ५

## आर्थ समाज रूपी भटटी

ले॰ भी सोमबेप शास्त्री आर्य समाज सामाकृज मुन्दर

में एक आग देखताह जा साक्षभौमिक और अविनाशा प्रम का अग्नि है जाकि घुणाका भस्मसात कर रहा ह तथा समस्त वस्तओं का सद्ध कर रहा है अमरिका क मेदानो पर अफ्रीका क रगिस्तान पर एशिया न बडे बड पर्वतो और बराप क बड बह राज्या म इस श्रीद्ध करन वाला आंग्न का प्रकाश दख रहा है मैं नावन मे आनन्द युक्त उत्साह ानुभव करता ६ वेदिक धर्म का अपना पहला सर्वोत्तम अवस्था म पःचान क लिए यह अग्नि आर्य समाज रूपा भटटा म जल रही है न भारत के महान संपत महर्षि दयानन्द सरस्वता क इदय म उत्पन हुइ 🟲 हिन्दू मुसलमान ओर इंसाई ामशकर इस पवित्र आग्न का बुझान का तर ताड परन्तु यह प्रभुका ततार हुई अग्नि बढता हो पना तारण हे य सब्द थ स्मान्का वासा है। इन्हाजबसन निवस के ानकोन आयं समाज क प्रारम<del>्भिक</del> काल में इस संस्था और इसक सस्थापक महवि दयातन्द क बार

आय समाज वः विषय म दश विदश क रहन वाल मनव्य क्या साचत ॥ यह इन शब्दा स स्पप्ट होता है महर्षि दयानन्द के पश्यात प गुरूदस विद्यार्थी प धमदव नखराम आर्थ मुसाफिर स्वामा ब्रामान्य महात्मा हसराप आदि महानभावों के अथक प्रवास तथा इनके समकालान आयजना का षारित्रिक बीवन उपरशिखित **प्रकाशों** के अनुरूप ना य विससे सभी को आर्य समा क सदस्यों से किलेष अलाए था आन क्या स्थिति बन गई ह दशसे सथा

सानिकाध

परिचित हैं तथा प्रत्यक निष्ठाचान वर्ष ''ज" धनी हो सा निर्धन विद्वान ना या सामान्य ज्ञान रखन वाला गहरथा हो या सन्यासी नहा हा या कार्यकना सभी विनित्त है कि आय समाज की गरिमा को कस प्रकार सरक्षित रखा जाय

यदि आर्थ समाजा दोडता है

ना हिन्द जलता है आयं समाज्य चलता है ता हिन्द बैठता है आर्य समाजा बैठता है तो हिन्दू सा जाता है जब आर्थ समाजी सो जायगा हिन्द मरजाएगा इसलिए अर्थ सम जियो दौडते रती दोणत य उद्गार हिन्दू नता प पदन माइन जो मालबीय न व्यक्त किए थ आज आर्य समाज शार ानन समाज की यहा स्थिति **ना** रहा ह जिसका पर्चा मालवीय जी न का

श्राय समाज क सदस्यों की

तलाटर करन क लिए आर्थ समान स्थापना टिबस प्ररणा द **रहा के** आर्य समाज क अमर हमा माओ क बलिदान का स्मरण करक आया हु**इ** शिथिलता का दूर करन का प्रत्यक आय सक प ल व्यक्तिगत जावन आर्थ मर्यादा क लरूप हा वदिक धर्म पारिवारिक धर्म जन समाज एक्स राष्ट्र म पनप वान पाखण्ड और अन्धविश्वास क्षा नर करन का विन्वद वर्ग सका प ले सामाजिक विश्वमता राष्ट्र विरा म गतिविधिया सं संध्य करन र निष् समाचका नेतृत्व नम्ब उत्सान एवम्

क्षमता क' पारचय न्कर स्थामा ब्रद्धानन् एवम् लात्रा शाजपतराय क समान राष्ट्राथ नेतृत्व के द्वारा राजनताओं का मार्ग निर्देश करे यति मण्डल के महामा चानप्रस्था

## जीवब उत्तम कैसे बनारें

ले प्रा इन्त्रबेय सिक्त आर्य मनुष्य जीवन एक सुनहरा

अवसर है जिसम अपन आवन क परम उद्देश्य अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप परमपिता को प्राप्त कर सकते हैं वहां हम सत्प्रत्या प्रत्यक क्षण प्रदान कर रहा है परना हम उसकी अनस्ता करन का आदग पड़ गई हैं जिस सचिदानन्द स्वरूप प्रभु के साथ हम एकरूप हाना चाहत है वह हमस बहुत दर नहीं है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार उस प्रभुक स्वरूप को जानन का अर्थ है तदरूप हो जाना

बहाबिद बहाँच भवति बुद्धिमानी इसी बात में है कि इस महान उद्देश्य की सिद्धि क लिए हम सतत प्रयत्नशाल रहे बुद्धिमान मनुष्य जावन को ज्ञान्त सुखा निर्भय और सतष्ट बनान क लिए पुर उसाह और लगन स प्रयक्त करता है जावन म प्रतिदिन हम सुख दु ख सफलता आर विफलता शान्ति और परशाना का सामना करना पडता है परन्त वारता एसा म है कि हम इन सभा का काटबढ़ नाकर सामना कर व नम पराभत न कर पाय

साटा जावन और उन्न विचार हा न्यारा अथ होना चाहर न'वन सधव म नम मुस्करात हुए आग बढत रह क्या हम अपना म रूर मुस्कान क साथ सुमधुर गांत गान हुए स्वय आनदित रहत हुए ओर दसरा को भा आनंदित करने हुए आय नहां बढ सकते. यदि नावन म काई चनोता अपने हार्दिक नक्ष्य पर पशुचने में हमारे सामन आता हे ता उसे प्रभूका आज्ञा मा कर प्रमपूर्वक स्वाकार करने

सन्पासा आदि महानुभाव अपनी तपस्मा साधना मन्यस्त वृत्ति के अत्वरण से सभा मनुष्यों को अहदर्श जीवन जीने को प्रेरणा दे जिससे आयों के चारित्रिक बीवन को में हा हमारा भनाई है यह जिला प्रक यात्रा है जिसम अपन लक्ष्य एर पहुचन में कठिनाइया आना स्वाभाविक है उसम निरतर आग बढत हुए लक्ष्य पर पहुच कर ना हम विकास कर लग एसा दृढ विश्वास क्रमे रखना हे प्रतिदिन सुबह शाम नोवा ह

यो हा जिन्दगी तमाम नाता अत हम यह भा स्मरण रखन ग्राहिए व सुबह शाम दिन रात बराबर आत जात हुए "भारा आय का अपहरण कर रहे है कुछ दिन हुए मर एक ामत्र जिनक साथ म प्रतिदिन साम प्रात मुमन नाता या हमार बांग संबर गए उनका स्मति वरवस इस जावन क भणिकता का स्मरण दिना रण

जब हमें यस बात का सन्त विश्वास प्रशास हम अन्ततोगत्वा उस मृथु क जाल म फसन ना बाल ने ता नम अपन कलक्य और यस का यान म रखना आवश्यक हा नाएक उपन हम शाल्स्य और प्रमंद क छान्कर अपन लभ्य को ग्राप्त क और बढ़ाम तत्पन्तास नग जायग क्योंकि किया कठि न कह है जा कल करसी राज कर ना आज कर सो अब पल म प्रलय होगा बहरा करण कब यह सब वानकर मनुष्य को पाटिए कि कि जितन गंदा हा सक उपम श्रमकर कार्यों का कर कटा एसा न हो कि वह काल कवलित म नाए काल इस बात को प्रताक्षा नहीं करता कि इस व्यावत में अपन कर्त्तव्य कर्म पुरे किए है या नहा

देखकर सभी देशकासा जन अपन जीवन को भी उत्तम बनान क सकल्प ल सक तभी यह एक अमेरिकावासी के उदगार जो उसन आर्थ समाज क बार में व्यक्त । कय बे सार्थंक हो सकेग

## यत्र विषयक कुछ वैदिक सूक्तियां

ले. भी ठॉ॰ भवाची ल<del>वार चालकि</del> जोवपुर

ऋषि दयानन्द ने वैदिक सन्द यत्र को एक नई अर्थवता प्रदान की है। तनके पन्नों में वह सक्द अत्यन्त व्यापक अधौ में प्रयुक्त हुआ है। उनसे पहले यत का अर्थ केवल यहवेदी में कुछ पदाओं की आहरि डालना ही माना बादा है। यत और अग्निकोत्र पर्याय माने बाते थे। अग्नि नामक एक विशिष्ट देवता कल्पित किया गमा वधा 'स्वाहा' को उसकी पत्नी माना गवा है। ऋषि ने यब के शास्त्रर्थ को ग्रहण किया। पज् बातु से निष्पल इस रान्द मे देवपूजा संगतिकरण तथा दान का भाव निक्रित है। देक्पूजा भी दो प्रकार की मानी गई हैं। अपने से श्रेष्ठ विद्वानों तथा पुज्य पुरुषों का सत्कार तथा परमदेव परभारमा का गुणकीतंत्र वास्तविक दवपूजा है। उधर पृथ्वी आदि कड देवलओं का संधोषित उपयोग लेग तमा जल एव मानु को स्वच्छ रखना भी देव पूजा है। यह में हुत किए

गए सुगन्धिकर्धक, सेगनाशक तथा पुष्टिकारक पदार्थ सुक्ष्म होकर समस्त वायुमण्डल को स्वच्छ तथा पवित्र करते हैं। यह पर्श्ववरण शोध यड का प्रत्यक्ष लाभ है। यह के अवसर पर समाज के सभी वर्गों का परस्पर वैचारिक आदान प्रदान होता है यह संगतिकरण है। यह स्वय के लिए न किया जाकर लोकहित तथा परोपकार की भावना से किया जाता है इसलिए उसमे दान की प्रवृत्ति भी निहित है। वज्ज की समाप्ति के पश्चात् विद्वानी का सम्मान तथा जनहितकारी कामी के लिए धन देना आवश्यक माना गवा है। यही दान कहलाता है।

मध्यकाल में यज्ञ केवल कर्मकाण्ड का रूप लेकर ही जीवित रहा। ऋषि दयानद को ही इस स्रात का श्रेय दिया जाना जाहिए कि उन्होंने यज्ञ के वास्त्रियक अभिप्राय को समझ तथा स्वप्नन्यों में इसके व्यापक अर्थ किये।

यहा हम यह विश्वयक कतिएय महत्त्वपूर्ण वैदिक सूचितवों का विचार करते हैं। प्रथम सूचित है। यजस्य दोहो वितत: परुत्र ।

अर्थात् यह का श्रेष्ठ फल सर्वव फल काल है। बैसा कि इम कह चुके हैं यह कर्म स्वार्थ या अपने ही फिट के लिए नहीं किया जाता। यह परमार्थिक कर्म है। यह में वाले

गये पदार्थ चलकर केमल हमारे बर वा परिषेत को ही हुद्ध नहीं करते वे समग्र बातायण को मुलीन पुत्रा कर देते हैं। इस प्रकार पद धूम से उरण्या सुरीध समग्र प्रमुख कर हमा उरिध के कि मह अत: यह कहना उरिध हैं कि मह का श्रेष्ठ करना सर्वत्र फैसला हैं। इसके लाभ सभी को आप होते हैं।

महाते वे क्षेप्यतमं कर्य। एतरपण महारण का यह यावण प्राय: यह की मरीवा में उद्गत किया बाता है। यो गो मुख्य अपने दिव के शिष्य कामियत कार्य करता है किन्तु ये उसके स्वयं के हित के सिए होते हैं। प्राणी भाग के प्रकुष की वृद्धि के लिए किया बाग वाला यह ही अंच्याप् है। यह महुष्य भाग के सिए करणीय तथा आकरनीय हैं।

अपश्चिमो हतवर्षा भवति। मञ्ज कर्म अवस्य करना चाहिए। इस कार्य में कभी कोई अवकार।

नहीं होशा। यो लोग नित्व यञ्च करते हैं उनके मुख पर एक विशिष्ट प्रकार का वेज और दीप्ति रहती है। भनुष्य के मानसिक भाव उसकी खाकृति से परिलक्षित हो बाते हैं। जो व्यक्ति सदा संकीर्ण स्वार्ष में लिप्त रहता है, जिसके मन मे अन्यों की हिवकामना नहीं होवी उसके चेहरे पर कभी प्रफल्लत तथा चेत्रस्थिता दिखाई नहीं देगी। यह तो स्थानुभूत तब्य है कि जब हम कोई परोपकार का करन करते हैं वो उससे हममें आनन्द की लहर उत्पन होती है और यही आत्मिक आनन्द इसारे मुख पर वर्ष (तेज) के रूप में लक्षित डोਗ है। जो परोपकार रूपी यह नहीं करते वे निश्चय ही इस तेज, ओज और दीप्ति से रहित होंगे।

सुद्धा पूरा भाषिय प्रशिवाणः। देश का अवस्ति हैं ने प्रा करने याले पाडिकां), दुए दुढ कींए पर्राप्त बनो। निष्या दी करने लिए किये जाने वाले कर्ष इन्हें उठना गीरक प्रदान गाँव करते क्रिये उठना गीरक हैं लिए किया गर्ने यह करी कर्ष हों गीरकांभिया करते हैं। यह के प्रदार इन्हें यालिक परिवाण क्रिये एवं इन्हें यालिक परिवाण क्रिया सुद्धा कर में मालिक परिवाण क्रिये हों हो करते हैं। यह में गुद्धि करते हैं एवा मन पूर्ण करना को भी शांकि करते हैं। मन क्षे

प्रसिद्ध कवन है-अद्भिगोत्राचि सुम्पन्ति मनः सस्येन सुम्पति।

विद्यातयोध्यां भूतात्मा मुद्धिजनिन सध्यवि ॥

तरीर की शुद्धि वल से होवी है जबकि सत्यापरण, सत्य व्यवहार तथा सत्य वाचन से मन पवित्र होता है। इमारी आत्मा की सद्धता के लिए विका और वप आवश्यक है क्वकि जन के द्वार बढि को पवित्र किया जाता है। यह के द्वारा इम अपनी दुष्प्रवृत्तियों का गारा करते हैं। यह का मुक्क कार्य आरम्भ करने से पहले बाचक गय ईश्वर स्तृति प्रार्थनोपासना करते हैं। तत्पश्चात् स्वस्तिवाचन तवा शान्तिकरण के मंत्रों का पाठ करते हैं। इन मंत्रों में निहित दिव्य और पूत भावनाएं हमारी समस्त दुर्वासनाओं तथा दृषित प्रवृत्तियों का विनास करती हैं तथा हममें पवित्रता का भाव लाती हैं।

ईकाना स्वर्ग लोकं थन्ति। यह करने वाले स्वर्ग लोग

को प्राप्त करते हैं। क्राक्षण ग्रन्थों में इससे मिलती-जुलती एक अन्य वनित इस प्रकार मिलती है-

अग्निहोत्रं बुहुबात् स्वर्गकामः। जो स्वर्गकी इच्छारखते हैं उन्हें अग्निहोत्र करना चाहिए। स्वर्ग का अर्थ भौतिक तथा आरिपक सुखों को प्राप्त करना है। किसी स्वान विशेष का नाम स्वर्ग नहीं है। यदि स्थान विशेष को ही स्वर्ग माना जाये तो गृहस्य के आधार पर घर को ही स्वर्गमानना वाहिए,वहां मनुष्य को विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। ऋषि दयानन्द यत्नी के द्वारा भौतिक तथा पारलीकिक दोनों प्रकार के सुखों की प्राप्ति मानते हैं जबकि मध्य काल के पाक्षिको ने किसी अलीकिक तथा अदृष्ट को प्राप्त करना ही यह का फल माना था। इस अदस्य माम के तत्व को पाने के लिए जो यह किये जाते थे उनमें पन्न बालि जैसे दूषित कृत्य भी किये जाते थे। ऐसे ही पासकिक

कुकृत्यों का यह के नाम पर प्रचार देख कर आलोचकों को कहना पड़ा था। वृक्ष क्षित्वा पत्न इत्या कृत्या

हथिरंकर्दमम्। यद्मेषं गम्बते स्वर्ग तरकं केन

वृक्षों को काटकर हे झाक्किको हुम यूप क्लावे हो। उन यूपों से खंसकर पहुत्वों को मारते हो और स्वारी का बेदी को खुन ने अन्तरात रूप हों हो जो पूर्व स्वर्ण प्रेंस केद पूर्व कमों से मुख्य स्वर्ण मिस्ताह है तो कपार्य नफ्त केदी मिस्ता है ? यासका में पहु हिंदा दो त्यक क्यों हुकों को आठ कराने वाली है ! कपारे क्यां की अन्यान्य ही है। निरम्प की यह कराने काली है है। निरम्प की यह कराने काली कर्तवा आदिकाल, स्वार्ण अस्तान है पहिंच पार परिकास के प्राव्यों है पूर्व मिस्ता है, स्वर्ण प्रकास के प्राव्यों है पूर्व हों की प्रार्थ में

अत्रा युव कुणुते यो हविकान।

परमात्मा उसी को अपना सती। बनारा है थो यज में बोले जाने वाले मंत्रों में प्राय: इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि परमात्मा के विभिन्न नामो का उल्लेख करता है। परमात्मा का एक नाम इन्द्र है। मनुष्य परमात्या के आयन्त निकटस्य है। वेदों में अन्यत्र व्यापक विष्णु परमात्मा को इन्द्र रूपी जीव का बोडीदार अर्थात सता कहा है-इन्द्रस्य युज्यः सता। परमारमा का यह साथ, उसकी मैत्री इस कैसे प्राथ कर सकते हैं ? स्वार्य से परिपूर्ण जीवन को व्यतीत करने वालों को परमात्मा की मैत्री हासिल नहीं होती है । परमारभा को अफ्न सला तभी बना सकते हैं जब हम उसकी भाँदि लोकहित के कार्य करें। परमारम स्वय सम्दि यह का कर्ता है। सन्दि का निर्माण, पारल तथा संधार उसका अलौकिक तथा पावन कृत्य है। यह में जो हवि अर्पित की बाती है वह भी प्राणियो के हित तथा उनकी अभिवृद्धि के लिए ही दी जाती है। ऐसी प्रत्येक अहति को देते समय हमारे मुख से 'इदंन भम' का व्यक्य उच्चारित होता है। इसका भाव यह है कि हम अपने स्वार्थ के लिए यह आहति नहीं दे रहे हैं। अतः सिद्ध हुआ कि निरम हवि देने वाला हविकान बङ्गकर्त्तां परमात्मा का निकटस्थ विक्वसनीय मित्र बन जाता है।

अमरोर्क्यबमानस्य प्रवा मूपात्। यवमानः की प्रवा ग्लानि रहित क्षेत्रेचे या होती है।

हमारे मन में ग्लानि तथा विवाद का भाव कब आता है। यह भाव पानी जरून होता है अब हम केवल स्वार्च के लिए ही कोई काम करते हैं। अपने दिश के लिए स्वयं के तुझ क्यांचे की पृत्ति के लिए तो कुछे, क्लिटी अर्दि बानवर भी कर्म में प्रवृत्त होते हैं किन्यु समस्य (शैष पृष्ठ 4 भर)

1

म्पारकीय 🚜

## पुण्य भूमि हरिद्वार का उत्सव

गुक्कुल कागढी को स्वामी अद्धानन्द जी महाराज ने जिस स्वान पर हरिद्वार में सर्वप्रथम आरम्न किया था जो बिजनीर रोड पर कागडी ग्राम के समीप गगा की धार के उस पार स्थित है उस स्थान को यण्य भगि कहा जाता है । यहां स्वामी श्रद्धानन्त जी हारा बनवाया गया विद्यालय का भवन अब तक विद्यमान है। रोब भवन गगा की थारा में बह गए है। गौशाला का भवन फार्नेसी का भवन तथा वूसरे कई भवनो का कहीं नामों निशान नहीं है परन्तु विधालय भवन सुरक्षित है। वह तब सरक्षित है कि इस भवन की ओर गंगा की धारा को बहता हुआ वेख कर आर्थ प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इसकी रक्षा का वायित्व क्षपने ऊपर ले लिया था। सचा ने गंगा की भारा के बहाय को कम करने के लिए व विद्यालय नवन की ओर से मिटटी के कटाव को रोकने के लिए कई ठोकरे बनवाई इससे मिटटी का कटाव एक गया और इससे यह भवन तो जुरक्षित हो ही गया है इसके साथ ही पुण्य भूमि का कटाय भी एक गया तथा यह भूमि भी सुरक्षित हो गई। अब यह स्थान एक टाप सा बना हुआ है इसके वोनो ओर गगा की धाराए बारती है बीच में यह स्थान है। ग्रंदि आर्थ ग्रंतिनिधि सभा पंजाब पत्थरों की ठोकरे न बनवाती तो यह पुण्य मूमि व विद्यालय भवन कभी का गगा की थारा में बह गया होता।

इस सम्बन्ध के बाई कमरे शिर चुके थे छने तथा गए सभी कमरों ही टूट चुकी थी। यूने का एकरतर पीमार्थ को छोड़ चुका था विवादिक्या दराव्यों कह लोग छठा कर रहे गए थे यह एक व्यावकर मात्र पठ मार्थ था। वार्यों प्रतिशिक्ति सभा गण्याह के प्रधान भी हरण्या हम कार्य सभा की पुरस्था काराव्यों व्यारम्भ उपने में गण्या ये नहीं में पुरस्था का कार्य पूरा हुआ हैं नार्यों भी पुष्ठ कार्य देश है। इस गल्य को सुरखा के लिए वार्या धीतीमीर पाम पणाम ने यह एक व्यक्ति को वार्या के लिए वार्या धीतीमीर पाम पणाम ने यह एक व्यक्ति को वार्यों कमा पर एका हुआ है को महन और मूर्ग की देखा चाल

मान्य परिकार उत्पार ताल जो नार्य मा इस पूर्व में के विशेष ताया है स्वा इसारी दूसार के लिए जाने में इसा जा वार्य विवार के स्वा इसारी दूसार के लिए जाने में इसा जा वार्य विवार के स्वार जा ता के सार के साम कर किया जाता है है इसा अस्वार पर सह मुख्य सार्व ता है ते हमा के साम के साम के लोग के सह सार्व ता ता निकार के साम के लोग के सह सार्व ता ता निकार के साम के लोग के सह सार्व ता ता निकार के साम के लोग के सह सार्व ता ता निकार के साम के लोग के सह सार्व ता ता निकार के साम के लोग के सह सार्व ता ता निकार के साम की साम के साम की साम के साम की साम के साम

आवान का नात हुन वन वा स्वसंत्रां के अवस्थ एए एक उन ना का कारण पूर्ण भूमें ने किया जा रहत है है ने कारण में प्रवाद से बहुत सारे सहानुक्षण पत बनी की सारी यहा पहुंचने साहित्य दिशा शिवार दहरने की व्यवस्था पत वर्ग की साहित्य गुंक्युक्त साहित्य दिशा शिवारण में होंगे। मेरी पायाब की सभी आर्थ सम्मान के अविकाशियों से प्रार्थना है कि पुण्या भूमि के उत्साव से अवस्थ पहुंचे। पुण्या भूमि की रक्षा सुरक्षा व पत्तर्की जन्मिक का साहित्य आर्थ अगिमिक समा प्रयाद में अपने कपर स्थिता इस हो है क्योंकि इसके सम्बादक स्थापी अहानियां महाराज पज़ाब के रहने वाले थे और इस नवन के निर्माण में पज़ाब के लोगों ने अपना महान योगवान विचा है आज भी इस नवन में लगे पुराने ग्रामपर्टी को चेव कर पता चलता है कि कितना आर्थिक सहयोग पज़ाब के लोगों ने इस मधन के बनने में दिया है।

हम स्थान पर बांगे विश्वाली की व्यवस्था नहीं है कारको ग्राम का अब विश्वाली पुत्र कुछी है गांग की बांग कि कारकी ग्राम के पास से बढ़ती है छटका बहाय कहा के हैं और छटका ग्राम भी बहुत वींग्र को नाम है इस कारच ग्रुम पूर्ति राक विश्वाली पुत्रकों के लिए क्या साम की कि कि की कि कि कार कि कि कि प्रकार इस सम्पाद का हक करके कहा विश्वाली की पुत्रमाई जाता है कि कियों प्रकार इस सम्पाद का हक करके कहा विश्वाली की पुत्रमाई जाता है कि कियों सम्बाद इस सम्पाद का हक करके कहा विश्वाली की पुत्रमाई जाता हिना समय इस स्थान पर विश्वाली पुत्रमा वाग्रण करता रूपना ग्रह स्थान बहुत सम्बाद व स्थानी का आपना।

आर्थ प्रितिमिक्ष सम्म प्रयास अपने कार्यस्त कर पाएन कर रही है? रस्तु अस्य की बार्ड पेर्ट सार्वपूर्ण के इस्ते स्थान ने कार्य यह रखा है यहां पर सार्वि रयान्य का पुरुकुत खोलने का राजा पूजा राजी अखागान्य की ने रहा पुरुकुत को राजान्य हुई की साथ स्थान रखी की प्रयास का पुरुकुत की राजान्य हुई की रस्तान वर्षी कीराम पडा रहा परंतु अब बसे किर साधान किया का एको है इसे चन्न करना के स्थान ने हरावा राजा में तर्म के आर्थ प्रतिनिधि साम प्रयास का ही कर्याम साथे है यह प्रयोक आर्थ माजांत्र कार्या को एन साथ कर के लिए आर्थ माजिमिक्ष सम्म प्रयास को अस्यन प्रार्थन है।

मैं फिर पजाब के सबी आर्य-माई बहनों से प्रार्थना करूना कि वह पुण्य भूमि हरिद्वार के अस्तव में अवस्थ पहुचे और इस उत्सव को सफल बनावे।

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट

१९६ ए**०प।क**ट संभा महामन्त्री

## आर्य मर्यादा का शुल्क भैजे

मैंने पहले भी लिखा था पूर्व फिर लिख रहा हूँ जिन गांत्रक महानुषारों में 1999 का बरणा पुरंक वर्षणी कर नहीं पर वह बीध वहीं. टीध बैंक इंग्लट या नहीं आवेंट ग्रांता आई गीतियिंद तथा पजाब के नाम साथ कार्यालय में मेज दें रासा कार्यालय से इसके लिए पत्र भी लिखे जा रहे हैं। नीटिकटा इसी में हैं कि ग्राहक महानुषाद रहम किया लिखे की अपना मुख्य केंट्रो मुख्य बार्विक 50 रुपये हैं जो आधानी से चेंद्र में आप आजीवन एकता है। यदि आप 500 रुपए मेज दें तो आप आजीवन एक्यर वन वार्यों में इससे मार-बार हुक्क भेजने का अपनी एस्पाल की वार्यों पर स्वाप्तालें में विश्वा सरकाओं को तो अधीवन मुंकल 500 रुपये अस्तरमा केंद्र से साथिए पहले को तो की

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट समा महामन्त्री



## बन्धन से म

ले भी आकब अमिलाची जी वानप्रकार

गताक से आगे नपम्बर नाग मनुष्य का रन बन्धना स सुबल मकत करा सकत है वाग दयानन्द क अपन हा सा नगा भान उन्हें विष दिया ता रजमानान अपन न हत्यारे का पम नकर जनना कर निया कि पुलिस क्रमा नाह तम न कर क्यांकि स्वामां चान अपना सिद्धात प्रनाया कि म रम्यार क नामां का जेला म सन्द **अनुसार के लिए गरा बरिक समय** चाना प्रशासकत बद्धाबान था लिय आया ूम्बास जा 🛭 पूरा गया कि स्वास अप वा अवस्य मा ज ओ स्वास चर स्वामा च<sup>र</sup>ीभी स्वा**मा** 

अथ ह वरण बरना चवन करन वर वधुकाऔर वधुषर का वरण करता है पर यह समन्ध या नाते अस्थाइ है पत्नी गई तो पति खा पति गया तो पत्नी को दु ख बच्चे से साईफिल किन गया ताद खाइसिलचे ऐसे साथाका बरण किया आये जा कभा न छिने और वह वरजीय कोन ह परम पिता परमामा अस्य को कभी भा कार किसी 🖩 छान नहा सकता इसलिय उसकानाम वरण ह वर और वध के यदि एक जस गुज हाग तो परम्पर स्नेह बन्ह रहता है इसलिय

शासर विखासर उनका साथ र "स्टेंट मध्य म चलगे और **ন কামাৰাদ ৰাকুভ** गणामात्र के नियं क्रिया वह कभा भुभाषा बढा वा सकता महात्मा बद्ध स्थामा जनराचाय गुर नानक

त्व रत्यदि जितन भा महापुरच हुए ज्य समा न अपन तप के आ गर

पर मानव आति कः न्न बन्धन से मुक्त नाने का सह बताई ह और मानव रा दानव बनन म बचाने का प्रयत्न क्या यह और बात ह राक्ष्सा भाजतमा ऑ उक शक्तिशाला हाने के रारण मनध्य के बन्धना का और क्या रणा हा यह समय हा तपस्थिया। क्र रालय कि अपना तपस्या का स्वय नक सामित न रखत हथ मानव क्ल्याप क लिय काय करे ताकि अ । कार के काल बादल छट जाये आर बमकदार साफ सुन्दर निमल आ काश एक बार फिर दिखाई देने लगे परन्त इसमे बहुत संध्य करना पडगा एक रावण का मारने के लिय

कितन यान करने पड थ उच्च एव मनान् आत्मा भगवान राम की आज शवण अनुकाह पर हर संख्याक परमात साधार सामायां मस रात के बाद दिन और दिन के बाद रू "सा प्रकार मिलनता के पश्चात परिवर्ग आना अनिवाय

रात भर का है मेहमान अधेरा किस के रोक स्थेपा सवेश रात जिल्ली भी संगीन होंगी सकर उतनी ही रगीन होगी गम न कर गर है बादल बनेश किस के रेके बकेगा स्वेत

इस मत्र में इस्वर की वरण के नाम से संबाधित क्या गया ह वेद मत्राम यह एक विज्ञव गुण ह कि नक्तर से यदि काइ माग का गा है भा \*श्वर का उस गुप्र सम्बन्धित नाम संधार किया गया इंबरण का "स्वराय गुणो को अपन अन्दर लाना हाना "स्वर तब हा हम से प्यार करण दश्यर सम्बन्धनो से मक्त ह "मान्य इश्वर का वरण तब हा हा सकता ह जब हम भी बन्धनो स प्टकास प्राप्त करे तथा हम इश्वर के सनह उसकी कथा के पात्र का सकते ह

वरुण का दूसरा अर्थ हं सुन्दर मनुष्य का झुकाव सुन्दर वस्तु का आर शाम्र हाता ह जाब म परमधिता का भना प्रकृति सन्दर वन फुल झरन पर्वत समुद्र झरपादि दखत ह ता स्वय विचार आता ह कि इतन सन्दर ससार का बनाने वाला कारीगर स्वय कितना सन्दर हागा और फिर जब उस सुन्दर प्रभ स मिलने का तडप पैदा होता हे ता स्वय इन बन्धनों को छोड़ने का दिल चाहता ह इसलिये ईश्वर का सत्य किय सुन्दरम् कहा गया ह वह पिता सत्य स्वक्य हे कल्याण कारक ह ओर सन्दर हे

वरुण का तीसर अंधे इ

अनुहासन मे रहने एला परमामा के जब इस गुज का स्मरण करते हैं ता हमे स्वय भी अनुशासन मे रहना हागा और जब तब व्यक्ति अनुसामन में नहां उहता किसी प्रकार से बन्धना स मुक्त नहां हो सकता "सलिये परमामा का बहन जान कर "स मंत्र द्वारा प्राथमा की गढ हं कि वरण परमपिता परमाना आपक सुष्टि के जा नियम है और जा बन्धन ह उनसे इमे उन लागा के माध्यम से जा सप्रेरणा देने वाले ह सय असल्य धर्म अधम न्याथ अन्याय का बान रखते ह छटकारा दिलाये इमारे मित्र वे लाग इ जो इमे सदा उत्साहित करते रह और रापस्का लाग हमारा इस विषय

पर मार्ग दर्शन करते रहे

### आर्रा मर्वाद्य के स्ममील का विसरण

(फार्म 4-निवम 8 देखें)

प्रकातन स्थान गुरुपत भवन चौक कितनपुरा जानन्य

प्रकाशन अवधि साधाडिक **आर्थ प्रतिनिधि सभा पवाब** गुरुदन भवन प्रकासक व महक

चौक किसनपुरा जालन्धर सम्पदक अस्विनी कमार शर्मा एडवाकट

भारतीय नागरिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्राच गुरुदण भवन चौक

किशनपुरा जालन्धर अपूर्व प्रतिनिधि सभा प्रवास इस पत्र का स्वासंत्व

स्वामिनी है अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है में अस्विना कुमार शर्मा एतद् द्वारा भोषित करता हु मेरा अधिकतम

जानकारा क अनुसार ऊपर दिया विवरण ठीक है --अधिवनी कुमार पार्मा एउटोकेट

धर्म पत्नी का निधन आर्थ प्रतिनिधि सभा प्रवास क

पत्नी को सम्बोधित करत ou प महोपदशक प राम नाथ जी सिद्धान्त विज्ञास्य मोरिण्या

छ दिन से लायता हा न जान कहा हो तुम

बदला वह कौन सा ह । असम निहासो तम

्रशीय समाचाची सिर्धि भ पिक्रल काफा समय स बामार चल आ को है वह भा आणिक जबित क आ ग्रस पर शासिक बीमारिया का परवा" न करत हुए

कार्य कर रह 🦮 हम आर्थ प्रतिनिधि सभा पजाब का और स परम पिता परमा मा स प्राथना करते हे कि वह दिवगतात्मा को सदगति प्रदान करे और त्रा प ग्राप्त नाम जा का नाम उनक परिवास को इस वियोग को सहन करन का रावित प्रतान कर

धर्मतेल आर्थ संह सम्पादव

पृष्ट 2 का शेप प्राणियों में स्वय की श्रश्व मानने

वाला खुद का अक्षरपुल मख्यलुकात कहने वाला मनुष्य जब दूसरों के हित का का काम करता ह तो तसक चहर पर **एक विशि**ष्ट आभा तथा तेज आ जाता है उसके मन मे ग्लानि दुखाया पश्चाताप का कार्य भाव नहीं रहता यह कम करने वास्तो की सन्तान भा अपने याजिक माता पिता के गौरवपूज जोकहित के लिए किए गये यत कार्य का देख कर आत्म सम्मान से पारिपूर्ण डावा इं तथा उसमे काइ ग्लानि का भाव नहीं आता

की धर्म पत्नी श्रीमती \*रकसा दवा

का 9 माच 999 का 80 वर्षका

आय मे निधन हा गया है पिछले

कई वर्ष से वह बीमार चली आ

रहा था गत दिना स वह चारपाई

पर एक हा करवट पण रहता थी

दसरा करवट भा नहा बदल सकता

या उनमे सहनशालक इतना था

कि इतना कष्ट होत हुए भा कभी

उन्होन नाय तीवानहाका वह

सार कह का सहता रहीं उनका

सहनशीनता को दख कर सभा

हेरान होत थ वह रुग्ण अवस्था

म भा परमा मा का नाम लता रहा

उनक चल जान स श्री रामनाथ जी

सि वि अव अपन आप को

अकेला सा महसस कर रह हैं

उन्होन अपने पत्र मे अपना धर्म

देवा अन्यान्यस्मिन् बुहोराश्वेर देवता एक दूसरे में इवन करवे हुए विचरण करते ह

यज्ञ करने वालो का दव सज्ज हाता है उन्ह देव कर कर पुकारा

जाता ह य दवगण एक दूसर का हित करने में सदा प्रवृत्त रहेत ह देवगण परस्पर द्वेष तथा इच्या क भावों सं मुजा हाकर जन पारलोकिक तका पारमाधिक रिल म प्रवास होत इ.तामलावेयन हाकताह यन का भावना का सवत्र प्रसार करना एक दवा कृत्य ह उपयुक्त व्यवच से यह स्पष्ट हाता ह कि कवल एक इव्य वृत साकल्य पुराणात अर्गन से किया जाना कम हा यज नहा ह अपितु सभी प्रकार क पारमाधिन अन्य प्राणिया के हित क लिए किए साने चाल कम यत्र मञ्जू हु प्या

अभिप्राय से पाता में ब्रान याग उपासना आदि का भी यह कहा गया इ साथ हा प्राणायाम चप मारिवक आगार नसं कृत्या का भा यह का सजा दा गड़ है

#### रूपि आर्दा समाग मोहस्ता गोविम्दयद् आसम्पर का उत्सव

स्त्री आर्व समान मोहल्ला गोबिन्दगढ आलन्सर का वार्षिक उत्सव पहला मार्च 99 से 7 मार्च 99 तक बडा धूमधाम से मनाया गया। आचार्य अखिलेश्यर जी के क्रास्त्व मे सामवेद पारायण वह पहली मार्च 99 स प्रारम्भ धुआ। 1 मार्च 99 क मुख्य यजमान श्री वीरेन्द्र गोधन एव उनकी वर्मपत्नी श्रीमती किरण गोयल द्वारा यज प्रारम्भ किया गमा। श्री वारेन्द्र गोवल की पुष्प माता जो शामती रूपरानी आर्था (प्रधान स्त्रा आर्थ समाज अका होशियारपुर) भी साथ पधारा और यजमान बनी। श्री वीरेन्द्र ने प्रतिदिन पात पत्ना अस्तित यत्र म प्रधार कर यत को शांभा बढाई। पात यत भज्न प्रवचन 630 स 830 तक प्रतिदिन हाता ग्हा। सायकाल यञ्च 4 स 6 बज तक जिसमे सामकाल

आचार्य अखिलास्वर जी का प्रवचन गाता पर हाता रहा। प्रात पहला मार्च स 7 सा ३ तक ६ २० से ४ बजे तक साधना मा आंखलेश्वर जा करवात **रह साधक साधको न समय पर** पधार कर साधना का लाभ उठाया वट पाठ करतारपर के ब्रह्मवारियो न किया। प्रतिदिन भवन श्रा जगत धमा भजनापदेशक आर्य प्रतिनिधि संधा पत्राच) क दानो समय हात रहं। पु स्वामा सुमना यति सन्धासिन (लिधियाना) ने पधार कर यज्ञ का शाभा बढाई। शनिवार 6 मार्च 99 का माहला सम्मेलन 2.30 ज स < 30 बज तक मनाया गया। महिला सम्भावन का अध्यक्षता श्रीमती स्वर्ण आ यह (मिलाप) न की। इस सम्मलन में लिधवाना से श्रीमवि कमला ना आर्या व स्त्रा आर्य समाज रात काजार स्त्री आय समाज साबुन जानार स्त्रा आर्थ समाप माहल टाऊन की बहुनो न समय पर पधार बर हमारा उत्साह बढाया एवं उत्सव मा प्राभा बढाई

मा स्वर्ण यह (मिलाप) के मथ पर प्रधारने पर उनका स्थागत आशाबाद सहित स्थामा सुमना यति ना न किया मा सुमनायति जो का आशाबाद सभी न प्राप्त किया।

उसक पश्चात् श्रामित कमला जा 7 वज यह प्रारम्भ अवयं (लिधवाना) ब्रामता चनक वा 9 वज डाली गर्व।

लिखाना श्रीमती रागेत अर्मा प्रधान जिला आर्य सभा लिखवाना शामती स्ट्रमबी गौतम (क्वा सहर श्रीमति सरला भारताच प्रोफैसर एस ठा कालेज जालन्धर श्रीमति सत्यभामा जा एव बहन कृष्णा जी करतार पुर श्रीमति सुशीला भगत एव श्रीमति कमल कान्ता आनन्द माहल टाकन जालन्यर श्रीमिठि सन्तोष चवन प्रधान स्त्रा आर्थ समाव मोहरूला गाबिन्दगढ जालन्धर श्रीमित लाबवन्ती अग्रवाल सरक्षिका श्रीमित आनन्द परी एवं अन्य बहनो ने फूल मालाओं से ब्रीमति यज्ञ का स्वागत किया विसमे कुमारी सन्तोष सरी नी कमला आर्था पक्का काम भी सम्मिलित भी। माडल टाकन नुवियाना की बहना न भा स्वागत किया।

महिला सम्मेलन का उद्घाटन

भावण मा स्वामी समनायति जा ने किया। श्रीमति कमला आर्या (लधियाना) श्रीमती सरला भारद्वाज जी राधेश्याम मन्दिर की सन्धासिन मा दमयन्त्री जा ने अपने अपने विचार बढे ही अवह डगसे रखामा आचार्य अखिलश्वर जाने गीता पर प्रवचन दिया। मच का संचालन श्रामित सुक्मा नागपाल (कोवाध्यक्ष) स्त्री आर्य समान माहरूना गोखिन्दगढ ने बड ही संचार रूप से किया। भजन श्रा जगत वर्मा जी एव श्रीमती आनन्द पराके हुए । भजनो में इतना रस था कि सभी झम उठे जालन्धर की लगभग सभी स्त्री आर्य समाजी ने माग लिया पढाल वाचासाच भरा हुआ था। अन्त म श्रामति स्वर्ण यश जी ने अध्यक्षाय भाषण म कहा कि हमें वट प्रचार क कार्य का और अधिक बढाना चाहिए। येद का प्रधार धर घर अवस्य होना चाहिए। धन्यवाद एव शान्ति पाठ के पश्चात् महिना सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सबका प्रशाद बाटा गया एव जलपान

करवाया गया। रविवार ७ मार्च को प्रातन्काल ७ करू यह प्रारम्भ हुआ पूर्णाहुवि 6 इवन कुण्डो पर चारो और चवमानो ने बैठकर यह किया। सभी ने गल में पीत वस्त्र हाले **हुए ये समय ब**हा ही सहावना व सन्दर लग रहा था। सभी ने बडे ही शान्त वातावरण से इवन थड किया। पुर्गाहति के पश्चात् भा आधार्य अखिलेखर जी यज्ञ के बाद्या एवं स्वामी समनायति जी न सभी बजमानों को आसीवांद दिया फ़लो की वर्षाकी गई सभी को आशीर्वाद के फल दिए। परे दस वजे ध्वजारोहल श्री वॅरिन्ड गोयल जी ने सपरिवार किया। सक से प्रथम आचार्य अखिलेश्चर जी एव पू सुमनायति जो ने आशीर्वाद दिया। इसके परचात सरक्षक श्री राम प्रताप जी प्रधान श्रा मुन्तीलाल जी कामाध्यक्ष श्री भाष्मदेव धवन एव श्री नरेश जा मन्त्री सभा इन आर्व समाज माहल्ला गोबिन्दगढ के अधिकारियों ने चीरेन्द्र गोयल जी का प्रष्य मालाओं स स्वागत किया प हरबस लाल जी शर्मा प्रधान (आर्थ प्रतिनिधि सभा पवाब) ने भी समय पर पधार कर गोयल जी का स्वागत किया और कहा कि इसी प्रकार नौजवानों मे उत्साह होना चाहिए श्री चर्चभंज जी मिचल मन्त्री गरुकल विरजानन्द स्मारक उन्होंने करतारपुर श्रा सम कोजली प्रधान संस्थ नारायण सन्दिर ने भी श्री वीरेन्द्र गोयल जी का स्वागत पश्च मालाओ स किया। बहनो में श्रीमति स्नेह अग्रवाल श्रीमति कमला आयां श्रीमति सन्तोष धवन श्रीमति राज मोडनी सोधी श्रीवित संशाला भगत त्रीमति सत्य भामा तथा अन्य बहनो ने भी पुष्प मालाओ द्वारा स्वागत श्री चीरन्द्र गायल जा का किया ध्वजगीत करतार पर के छात्रों ने गाया अथभाव बहुत लगाए गए

अगल कार्यक्रम म लगमग 11 बजे सब से प्रथम प्रथम प हरबस लाल जी शर्मा क मंच पर पधारने पर स्वागत किया गया भजन श्रा बगत चमा तथा श्री वारन्द्र कुलदाप

उसक पश्चात् सभी का प्रातराश

एव प्रशाद बाटा गया।

वश्च इवन कुण्ड प्रदाल में साथी के हुए। मा उपमा जा न लगाए ग' कदा पहाराता में था। क्षी अवर्ध सम्बन्ध की 5100 रुपण हिन्दा कुणा करें प्रता और प्रता किए और अपन विचार करना प्रवामां ने बिकार पात्र किया। के सामन रखी अपन मा अधान प क्षा ने गल में पीत जब आते हुए जा आभा में आप कर का हुए से समय बड़ा ही सुकतना न आभारी हैं जो कि उन्होंन अपन सुस्टर लगा रहा मा सभी के अनुस्य असन में से हम समय ही साना जावाब्या ने हम्मा बड़ जी हमारा तमाइस बढ़ाना और किया। पूर्णांहिन के परचार, मा हमारी आर्थना पर पहुचन कर

> मा समनायति जी प धर्मन्य आर्थ सभा कार्यालयध्यक्ष वा म चतुर्भुज मिसस्त की आचार्य नरश का प्रोफेसर दोआबा कालज वालन्धर श्रीमति सरला भारहान बी जो कि फगवाडा न चलकर आई सब ५ अपने सुन्दर विचार जनता के सामन रखा मा सालियसम्ब प्रसानम् आ ने भा अपन विचार दिए। बच्चा क भवन एव गुरुकुल करवारपुर क बाजो न भजन गाए। अस्त मे मा आचार्य अस्त्रिलेश्वर जा ने गाता पर प्रवासन दिया। बध्यो को पारितोषिक दिया गया दो बहना को सम्मानित किया गया श्रीमति प्रवेश जी एवं श्रीमति समन जा (मास्टर तारा सिंह नगर) आर्य समाज माहल टाकन अहरा होशियारपुर रेलक कालोना बस्ता गजा भागव नगर गाधा नगर फगवाडास श्री ग्रावर जी एव दबानन्द मठ डन मोहल्ला आदि के लगभग सभी आय समानो क अधिकारियों न प्रधार कर अपन सदस्यो सहित जहा उत्सव का शोभा बढाई बहनो का उसाह भा बढाया । श्रामति रेणु मिनल श्रामाट स्बदश मित्तल श्रामति निशा एव मास्टर तारा सिंह नगर का बहना ने परासमाह बढ़ उड़ कर भण **लिया और सभी कार्य म** सहयाग दिया स्त्रा आयं समान थन सभ अधिकारा बारना व सदस्याओं न बड़ा श्रद्धा व लग्न स काम किय अस्त म 2 4 पर धन्यवादे व ज्ञान्त पाठ के पश्चात ऋष नगर क कार्यक्रम शुरू हुआ ऋष लगर सायकाल 4 बज तक वलता रहा श्री वारेन्द्र गोयल एव श्रामात करण गांचल न परा साथ दिया उत्सव प्रत्यक प्रकार स सक्त रहा

उपस्थित बहुत हा आस्त्रा रहा कच्या काछण सन्ता मन्त्रों की व्याख्या एवं विद्वानों के

भाषण भी होते रहे। सनातन धर्म

प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रसिद्ध

कया बाचक ने अपने भागण में

कहा कि आज मैं देख रहा है कि

वज में मेरी बक्षनें भी बराबर बैठी

हैं और वेद मन्त्र पढ़ रही हैं। यह

सब महाऋषि दवानन्द एवं आर्य

समान की कृपा है। इतने बढ़े

यह में आने पर मुझे च्चुत खुशी

हुई। हमारे बुजुर्ग ही आज्ञानन्द

आर्य लुधियाना में कई स्थानों पर

यज्ञ करवाते हैं और हम सक्को

यह व वेद प्रचार के लिए प्रस्तव

करते रहते हैं में उनका आधार

महाराज मुजपकरनगर वालों ने

अपने एक घण्टे के भावण में यह

के लाभ एवम् ऋषि-दवानन्द की

विचार वारा पर ओजस्वी भावन

दिया जिसे जनता ने बहुव पसन्द

किया। एक बने यत्र की पुर्नाहति

डाली गई जिसमें सँकडों स्वी.

पुरुषों ने नारियल सामग्री इत्यादि

डाल कर माग लिया। इस अवसर

पर आर्थ प्रतिनिधि संभा पंजाब

के कार्यालय अध्यक्ष पं वर्मदेव

नी आर्य, प्रसिद्ध उद्योगपित श्री

सत्यानन्द मुक्जाल, श्री मदन लाला

चोपडा प्रधान मन्दिर कमेटी एव

कई संस्थाओं आर्य समाबों के

अधिकारियों ने भाग लेकर समारोह

की शोधा बढाई उसके परचात

हजारों लोगों ने भण्डारे मे भोजन

किया इस समारोह को सफल

बनाने में गुलमोहर होटल के

मालिक श्री सुनील कुमार थापर

तमा उनका परिवार, जंगदेव लाल

भण्डारी बेद प्रकाश गुप्ता, श्री

राजेन्द्र बेरी, श्री बुज मोहन अरोडा

एव अनिल निकायन ने अत्यंव

सहयोग प्रदान किया।

पुच्य स्वामी बन्नमुनि बी

प्रकट करता हूं।

#### हरपाल नगर लवियाना में 21कां वेट पारायण महायेत्र शासक

प्रति वर्ष की मांति इस वर्ष भी इरपाल नगर वैलफेयर सोसायटी लुधियाना की ओर से गुलमोहर होटल के विशाल प्रांगन में 14.3.99 को प्रात: १ वजे से 1 वजे व्यट टोपहर तक एक विकाल वेद परायण यज्ञ का आयोजन किया गया।

3 कण्डों के गिर्द 12 मजमान सपरिवार बैठे हुए थे। ठनमे अधिक चोडे वे वे जिनका शुभ विवाह इसी वर्ष हुआ। या। यह के ब्रह्मा पं. बाल कृष्ण बी शास्त्री परोष्ठित आर्य समाज बवाहर नगर वे उनका साथ प योगराज जी सास्त्री पुरोहित आर्थ समाज हमीबगज दे रहे वे।

सबसे पहले सभा के प्रधान श्री धनराज बापर, मन्त्री त्री जगदेव लाल भण्डारी, कोबाध्यक्ष वेद प्रकाश गुप्ता, आर्य समाब साहनेवाल के प्रधान श्री वजीर चन्द्र सर्मी, श्री राजेन्द्र बेरी, श्री बुजमोहन अरोडा. श्री निहायन ने पुष्प मालाएं पहना कर विद्वानों को सम्मानित किया।

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुरेन्द्र कुमार जी सन्दीय नगर कर्लों ने ण्योति प्रचन्ड की और इस कार्य के लिए 2100/- एवं यह के लिए एक टीन देसी भी का दिया।

यञ्ज के प्रबन्धक श्री आशा नन्द जी आर्थ ने समारोष्ठ का उदमाटन करते हुए कहा कि आज से 21 वर्ष पर्व हमने वार्षिक यज आरम्भ किया था। दो तीन वर्वतो हमे काफी परिश्रम करना पढा। परन्ध अब तो यह समारीह सारे नगर का समारोह बन गया। जनता बढे चाय से इसकी प्रतीक्षा करती है और ब्रद्धा एवं उत्साह दिखाती है।

यज के ब्रह्मा पः वाल कृष्ण शास्त्री ने यज्ञमानो को मझोपवीत डलवाए एव यह की कारवाई आरम्भ हुई। शास्त्री जी मन्त्रो का सरल अर्थही जनताको बतारहे देप योगराज जी शास्त्री बडे सुरीले ढंग में बेट पात कर रहे थे बीच में वेट

आसामम्ब आर्य यज्ञ प्रबन्धक

#### लौभिया में वार्षिकोत्सव सम्पन्न बिहार राज्य के चम्पारण जिला भी सदानन्द शास्त्री वैरगनिया. श्री

13. 14 एवं 15 मार्च 1999 की जी के प्रोग्राम होते रहे। यह उत्सव सम्पन हुआ।

मूर्धन्य विद्वान श्री स्वामी अग्निवर उठाया। नालदा, श्री मुनी इन्द्र कवि सारण,

स्थित लौरिया नगर में स्थानीय आर्थ राम चन्द्र कान्तिकारी नेपाल. पै समाज का उत्सव-60वे वार्विकोत्सव रामकृष्ण लखनक तथा स्थानीय के रूप मे मनाया गया। 11, 12, प्रशासक ध्रव जी एवं पारस नाथ

डवारों की संख्या में लोगों ने इस अवसर पर आर्थ जगत के उपस्थित होकर कार्यक्रम से लाम

क्रमपाद्धेन अगर्क वध्या संपरिवार बच्चभान सने।

## ग्रुक्त कांगडी विश्वविद्यालय, हरिहार, 246484 प्रवेश सूचना 1898-2008

निम्न पाठपक्कमों में प्रयेश हेत् आयेदन यत्र व्हर्गतित हैं :--मास्टर व्यक्त सक्तन्स (रसाबन, भीतिकी, गणित, महक्कोक्समलीबी,

पर्याचरण विज्ञान, द्विवर्णीय, आतकोत्तर पातृशक्तम) आहेराणे :- एम.एस.सी.- (सणी विषय)

बी एस.सी. (त्रिवर्षीय) द्वितीय श्रेणी तका सम्बन्धित विवय/वर्ग में 50 प्रति अंक (अ बा./अ ब.बा./गु का बि बि. के स्नातकों के लिए 45 प्रविशत)

सीटों की संख्या :--एम.एस.सी :-(सभी विषय) कात्र वर्ग 20 (+10 प्रायोजिव/मप्र, भारतीय)

काश वर्ग 20 (+ 10 प्रायोजिक/काप्र फारतीय) अवदेवन कैसे करें :--

प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन पत्र तथा अन्य बानकारी निम्न पतों पर रु. 100/- (प्रामोबित/अप अध्यविमों के लिए रु 250/-) नकद-भुगतान द्वारा ३० अप्रैल, १९ वक प्राप्त की जा सकती है। ठाक छरा रिक्स्टार के नाम रु 130/- का बैंक बापट (प्रामोक्ति/का, भारतीय अभ्यर्थियों के लिए 280/-रुपए) प्रवेश फीक्षा के लिए आवेदन पत्र तवा अन्य बानकारी निम्न पतों पर ही 20 अप्रैस तक नेवकर प्राप्त की जा सकती है। अन्तिम वर्ष की अर्डता परीक्षा दे रहे अध्यर्थी भी प्रवेश परिशा में बैठ सकते हैं।

एन एस सी कात्र वर्ग : जिसीपल, विज्ञान महाविद्यालय, ग वर्ध वि वि वरिद्वार। एम एस-सी अभावर्ग : प्रभारी कन्या गठकल महाविद्यालय, ठडकी रोड, ज्वालापर, हरिद्धार।

आवेदन पत्र बमा फरने की अन्तिम विकि-30 अप्रैल, 99 है।

वसेल वरीका तिकि ---धम.पस-सी (भौतिको एवं पर्यावरन विक्रान) : 5-6-99 (8,00

बन्नों में 10,00 बन्नों प्रतः)

एम एस-सी. (गणित एव माहक्रोक्सवोलीवी) : 5-6-99 (11,00 बजे से 100 बजे तक)

एम एस-सी (रसायन शास्त्र) : 5-6-99 (2.00 वर्षे से 4.00 वर्षे साम) परीक्षा केन्द्र :~-

। विश्वविद्यालय भवन, गुरुकुल कांगढ़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-(कात्र वर्ग-एम.एस-सी सभी विषय)

2 कत्या गुरुकुल महाविद्यालय, रूडकी रोड, ज्वासापुर, इरिहार-(क्रता वर्ग-एम एस-सी सभी विषय)

3. दिल्ली -(कात व कात वर्ग एम.एस-सी) नोट :--अभ्यर्थियों की संख्या वांक्रिश-स्तर से कम होने पर दिल्ली केन्द्र

इरिद्वार अथवा देहरादून स्थानान्तरित किया वा सकता है। (डा.एस एन सिंड) कुलसैचिव

लवियाना आर्य समाज स्थापना दिवस मनावा गया

बाबार (दाल बाजार) लुधियाना में आर्थ समान स्नापना दिवस एवं गना। समारोह के मुख्यवक्ता हा नवविक्रमी संम्वद् २०५६ दिनाक 18,3.99 को बढ़े समारोठ के साथ मनाया गया। प्रात: विशेष यत्र किया गया जिसके ब्रह्मा पं सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ये यज्ञ की अग्नि आर्थ समान के कोगाध्यक्ष ही देव पाल भी आर्थ ने प्रश्वात्सित की साथ में श्री अलोक जी गोगिया, श्री विनोद जी डींगरा, श्री डा. देक्निड वी सुद का परिवार श्री सुरेन्द्र भी

आर्थ समाज महर्षि इयानन्द नवमानो की संख्या बहुत होने के क रण एक हवन कुण्ड और लगाया बाल कम्म जी शास्त्री एम.ए पी पच की ने अपने सम्बोधन में कहा हम सब को महर्षि के कार्यों को आने बद्धाना चाहिए। महर्षि ने जो **उपकार किये उन्होंने संक्षिण स** वर्णन किया अद्येश महात्मा समन्त्रपि जी का सारे कार्यों को सफल करने में इमें पूरा आशीर्वाद प्राप्त रहता है सान्ति पाँठ के परचात सक्को वजरोप विवस्त किया गया। -मतवाल चन्द्र आर्य प्रधान

## आर्य बन्ध विचार करें

आओ हम सब मिलकर विश्वर करें इसने सब ने फोक्सति सनाई है। हमें क्या बीब हुआ है क्रिक्तीत चिरकाल से मनाई फा रही है। महर्षि दयानद के काल से भी बहुव पहले से बहुत से लॉग इसे मनाते आ रहे हैं, परंतु महर्षि को छोड़ फर और किसी को इससे कोई बोब नहीं हुआ। केवल 14 वर्ष के मुलशंकर में जन चड़ों को शिष पर चड़े बोग को खाते देखा और उस पर मल-मूत्र त्याग करते हुए देखा तो उनका विवेक वागा। एक राजकमार परी चवानी में साही ठाठ-बाट के साथ बाता हुआ रास्ते मे एक बुद्धे को देखता है. एक अर्थी को दखता है वह विकार सागर में बूब जाता है दसका विवेक जाग जाता है वह महात्मा बुद्ध वन जाता है। बहुत से लोग बूढ़े लोगों को देखते हैं। बाती हुई अर्थी को देखते हैं परन्तु काव क्क और किसी को बोच नहीं इजा।

महर्षि दयनन्द के बीचन काल में कोबरात्रि नहीं मनाई कारी बी। महर्षि की मृत्यु के बाद ही दीफवली पर्व ऋषि निर्वाण दिवस और क्रियात्रि

वर्ष को ऋषि बोधराति के कर

में मनापर जाने लगा। इसे तबा से अन वक लगभग 116 वर्ष हो गए हैं इमें इस पर्व को मनाते हुए, परन्तु आज तक इम सब में से किसी को कोई बोब नहीं हुआ आखिर क्यों ? फिसी का वेक नहीं जाना आखिर क्वों ? हमें कब बोब होगा ? किस प्रकार होगा? इस मा विचय करें। हर विशेष रूप से टंकार) में बोध पर्व और अवमेर में ऋषि निर्वाण दिवस मनावे आ रहे ैं। यह दोनो स्थान अब तीर्थ स्थान बने हर हैं परन्तु हम इन पनों को मनाते हुए कोई प्रेरणा नहीं ले रहे। आज इस महर्षि के सिद्धानों को कोड रहे हैं। उनके आदलों को छोड रहे हैं। आज इम महर्षि से दूर हटवे या रहे हैं। उनकी यक्तओं को लोड रहे हैं। आपर में लड़ रहे हैं आखिर क्यों ?

आओ विचार करें कि यह बोधराति इम सब के लिए कव बोधगात्र वनेगी। -यमप्रविक व्यक्तारवी १५-सुधवराती भोक्त्सा, मुजयनतगर (वचर प्रदेश)

#### फिरोजपुर शहर में सामवेद पारायण यझ महर्षि दवानन्द की के भी प्रचलका प्रकट की जो निकट

बीवनकाल में उनकी हार्दिक इच्छा रही कि प्रत्येक आर्थ कन्तु के पर में चारों वेदों का विविवत पठन पठन हो। उनकी भावना से प्रेरित होकर श्री मोडन लाल बी के गृह में महर्षि बोधोत्सव के अवसर पर सामवेद पाराथण यञ्च करवाया गया जिसमे आचार्य विश्वमित्र मेघावी कुलपति ब्रह्म के रूप में विराजमान हुए और यञ्च विधिवत सम्पूर्ण करवाया। श्री मोडन लाल जी ने बाकी के तीन बेटों का विधिवत यह करवाने की

धविष्य में होने की आशा है। इस मीके पर "अवर्ग समाव रानी का वालाव" में महर्षि

दवानन्द सरस्वती वी के जन्म दिवस को और बोधोत्सव को बढ़े उत्साह से मनावा गया। बच्चो ने महर्षि के जीवन पर हृदय रपर्शी भवन बोल कर आये हुए आर्थ प्रेमियों को भावविभीर कर दिया। बिससे कार्य ग्रेमियों ने अन्हें उचित रूप से पुरस्कृत किया। सन्तोष कमार "मन्त्री"

## गण्डा सिंह वाला में शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज गण्डासिंह वाला अमृतसर में दिनांक 7.3 99 रविवार को ऋषिबोधोत्सव बड़ी त्रद्धापूर्वक मनावा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री इन्द्रपाल अर्थ प्रधान आर्थ समाब लक्ष्मणसर ने की। उन्होंने इस श्रथ अवसर पर बोलते तुए कहा कि स्वामी दबानन्द जी बुगपुरुष थे। उन्होंने उस समय देश में फैली करीविकों. अन्धविरवासों, मोपलीलाओं का बन्दन कर वैदिक मान्यक्राओं की स्थापना की । श्री चगदीत लास प्रधान. श्री नरदेव की समित्र, श्री राजकश थी, वेद प्रकाश भी ने भी अपने

**उद्गार रखे। श्री रावकुमार बी** उपप्रधान गंडा सिंह वाला ने आये हुए गणमान्य व्यक्तियों का . भिनन्दन किया व सभी समाओं से आने द्वार महानुमार्थी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का तुभारम्भ यत्र से किया गया व कार्यक्रम के प्रत्यात ऋषि लंगर बांटा गया। स्वी अतर्थ समाय गंदा सिंह करण भी तरफ वे तारध वर्ग, नाम इर्च देवी, सकत पराहन व सरक देवी की सम्मान

राजकमार जनप्रधार .

किया गया।

## टंकारा यात्रा

हे शिक्स्पत्रि जाई है शिक्स्पत्र ठाई है। चानो मेरी बहनों-चानो मेरी पाई **चरने उस करती को फिर से सर निवारों। चरने फिर से शिव से करें** प्रार्थनामें। कह दे फिर से इम सबको प्यास दवानन्द। को बा निर्वालों का सहारा दवानन्द। यह फिर देश का काके रहार कर है। संबर में पारी किस्ती को पर कर है। पताका औरुम की हर कगड़ कार्य लहरतं। हे शिक्सारि आई टेनें बसें भर के जाने लगीं फिर : बसी में भी गंबे वेद मंत्रों के स्वर : कभी मिल के खता-कभी मिल के भागा। कभी प्रमते सनने को मिल तो स्वर: कहीं घेद चर्चा-कहीं हवन सन् ॥। ऋषि ध्वान में मन्न वे सब नही-नदः। गमा दिन यो फिर खरियों की यह आई । हे शिक्स्प्री आई क्की देन मन को सकन था जा था। प्लेटफर्म पर ओडम का प्रता लाग गा का उस स्वाप्ता से मन को अधि आनगर आया। बैठे कस मे ऋषिकर का नारा लखाना। भाग स्वापत आक्षम में देखकर इस। लगा आन पहचे हैं ऋषि के वर मे हम। ष्टं ओर मन में बब वर्डी सहन्तर्थ । हे सिफराति शर्ड उपस्या सहाचारियों की यहा देखी। अस्त्रम में कहीं भी कोई कमी न भी। मार्की गर्म पानी के दक कर रहे थे। दक्तपन्द के प्यत्ने सेवा कर रहे थे। रक्षेत्रं पर में भी अदमद बा इन्त्रसम्ब देशा। वहीं चान-नश्रद्ध-वर्शी दस मिल रहा सा। नित्व नमे प्रकवारों का मन्द्रस्य ऋषि का। हर कोने-कोने मे वा नवास ऋषि का। लगे ऐसे में स्वर्ग में चल के अर्ज । हे मिसरात्रि अर्ज प्रात. कंषे-कचे गुने मत्रों के स्वर। देखी वह चेदी और प्वारे ऋषि का चर। कर कोट मा कर कर कोट मा मन्दिर ! का चौची किसने कभी हैते से मन्यानात । वह मोले से मानव गांव की दुकानें। शंगे सब बगह अवने काने पहच्चने। शीम्ब यात्रा में क्या हम सब चल रहे थे। चनह-बनड पानी लिए वह खडे थे। मह अद्भुत मिलन की बढ़ी दी दिखाई । हे शिकादि आई बड़ बच्चों के प्रोग्राम बचन बिह्नमें के। मन मोहक भवन सुनने को मिल रहे थे। वस्य पीले और पगढिन्दं पीली पहने। चेंडरे सबके सर्व की भाँति जिल रहे थे। कोई आया दिल्ली से-पंचाय से कोई। खरी-खरी से सब गले फिल रहे थे। ऋषि मेले में खाब लगी वीं दकारें। इर तरह की प्रश्नके कलैफार मिल रहे थे। लगे बैसे बीवन में सोगात पाई है । हे शिवरात्रि आई फिर आई किया बेला लगे लोग चरने। जटी भीड फिर लगे साने विराने।

एक-एक कमरे होने लगे खाली। कैसे बार्गे राजकोट सहगल जी से सलाह ली। धन्य है भर्क रामनाथ प्रत्यकाम करने वाले । किसी का भी कहना कभी न बार दाले । बिसी को दी गाडी और विसी को टैम्पे। इस-इस के कर रहे विदा हर किसी को। दयानन्द का सच्चा सिपाही लाग रहा था। दथानन्द का काम पूछ कर रहा था। फिर चलने की समसी बारी भी आई । हे जिल्लाहि आई फिर बैठ टैम्पू मे चल पढ़े इम भी। बढ़ी ही बढ़ सुन्दर किए की घड़ी थी।

तमन्त्रथ भई जी ने की फूलों बर्च । सचगुच उन्होंने से मन मोह लिया हम सबका । कल पड़े तो तस्ते की काय भी निवली। यह और काली करते की कार। वह ओलो की टप-टप, वह पानी का निरना। वह आधी की ठरह इकाओ का चलना। प्रतेषिय भी ने बस वर्षा में गीत नाया। लगे जैसे बस्ती ये स्वर्ग दतर आया। कर कैसे वर्णन में खे उस बड़ी का। कभी न भूलने वाला वह दश्य ही ख। टंकाय की बाता भवा रंग लाई । हे तिबवति आई

रिस्त्रं पन्त-क्या सोगा में इस यात्र की। मिले मोर्ड प अब्द न तकत करून की। विले चांद सरम करोडों सिक्के। किने सचित सभी इस धरती गतन की। फिर भी उस प्राधिकर को बसती को छोजा, को बाबे वर्जन न प्रक्रित किसी की। चुनां राज्याकार्द, कराम कात म काई। सबिद राज की की नहीं काम आई। हे रिक्वरि अर्थ.....

> रांच लक आर्थ समाच, दिलासद गार्थन, दिल्ली-11009**5**

## रूपि आर्य समाज स्वामी दयानब्द बाजार सुधियामा की मतिविधियां

स्त्री आर्थ समाज की ओर से पारवारिक यह का सिलसिला पिछले वर्ष से सिविल लाइन ग्रान पार्क मे चल रहा है रविवार 21 वाराख का यह म्ना नद लाल परुची परिवार म 22 न म प्रात 9 से 10 30 वक हुआ। यह श्रा धर्म पाल का खान्ना क सरक्षण मे चलता है।स्वा आवे समाज का प्रधाना श्रामित इन्द्रा जा समां व मन्त्री श्रीमती भनक रानी आर्था यत्र करवारी हैं।

पारिवारिक सत्सग बाजवा नगर म ज़ी महेन्द्र पात्र विज क बर भी बढ़ो बद्धा सं सम्पन हुआ श्रीमति सुक्मा जा के घर उनक विवाह की वर्षगाळ. बन् ग्रेम से यत्र सत्सग स्थी 🐠 समाज ने बड़ां निफास किया। ऐसे सत्सगो का सिलसिला चलता रहता ह श्री श्रवण जी ने बेटा की शादा के उपलक्ष्य में यत्र किया गर्था। यह यह सस्त्रग स्टांग क जरिए चलता है। सभी वढ चढ कर

बीमार अवक्यकता वहा आह लोगा की यथाशवित सहावता करता रहता है। अभी अभी प गगापसाद क लडके के **एक्साडे**न्ट पर म**दद क**ि एक बीमार को दवाई के लिए मदद की प तमेश (प्रज्ञाचभू) का कान का शादा पर भी सहायता

न कछ मदद कर दी जाए . महात्मा मीरा यति उसे को भी उनका आय भर का तपस्या सेवा उपकार साहित्य सेवा को याद करक बढ़नो न भावभीनी श्रद्धावलि भेंट की। जनकरानी आर्या व समनावति जी ने कहा अप्तर्य जगत के लिए यह जो कमी आई है उसे परा नहीं किया या सकता हम उनक मार्ग पर चलन की प्रेरणा लेनी चाडिए

का यल यही रहा है कि कुछ

पलवल नगर को तीनो आर्च अर्था सम्बद्ध अर्थ समाज अर्थान तमाओं न मिल्लार आर्थ समावा क वैदिक सिद्धान्ता के प्रचार च प्रसार हत् आर्य कन्द्रीय सभा फ्लक्ल

का गठन करक सर्व सम्मति से अधिकारियों का चयन किया जो इस प्रकार है प्रधान न्नी धनपत राम जी

श्री सजीव जा क्ता एवं पत्रकार जय प्रकाश आ

## लधियाना में ऋषि बोधोत्सव

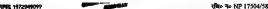
14 2 99 रविवार प्रात 8.30 क्वे से 10.30 क्वे एक व्हर्व समाव हबीब गव लिधवाना में बढ़ समारोड़ में मनावा गवा। यह में बढ़ा समाज के सदस्य भारी सख्या में ठपस्थित हुए बड़ा आर बी प्राईमरी स्कूल का स्टाफ एव छात्र ब्रह्मपूर्वक ज्ञामिल धुर्। यह के परचार आर्य समाज क पुरोहित श्री योगराज जी शास्त्री ने अपने सुरीले भवनो एव ओवस्वी भावन में कहा कि आब के दिन एक छोटी सी बटना को देखकर बालक मूलशकर के मन में सच्चे शिव को पाने के लिए अभिलाम जागी और कई मुस्किले बेल कर सच्चे बान को गप्त करके उस जान को फैलाने के लिए इन्होंने आई समाज की स्थापना की अन्त समय तक उस बेद जान को फैलाने ये उन्होंने भरपर यत्न किया। आज के दिन हमें उनके मिशन को फैसाने के लिए प्रण करना चाडिए।

# भाग लेवे हैं। सब बढ़ने परा सहयोग जनकरानी आर्था मन्त्री आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त, कोलस्ट्रोल रहित विटामिन 'सी' से भरपूर अमत रसोयंडा

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेंसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का सेवन करे ।



गासा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ





वर्ष 40 क्षक 1 22 चैत्र सम्बद्ध 2056 वदगुसार 1/4 क्प्रील 1999 दयानन्दान्द 175 वार्षिक शुरूक 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

## पंच महा यजी का महत्त्व

(भी उच्चम कुमान् शाक्ती वैदासम्ब मठ सण्डम् (द्वि० प्र०)

चम तिय अर्थ सञ्चनो में आप लोगों को बला देना वाहता ह कि भारत के जगद्शुत देव दखनन्द सरस्वती ने अनक् मद मतानारों को देखा सम्प्रदायों को देखा और अनुकर किया कि इनसे मनुष्य और प्राणी मात दुसी है और इनसे मनुष्य का कल्पाण नहीं हो रहा है। अर्थात् सभी मनुष्य और प्राची मात्र दुसी हैं। का के नृत्म पर पशु पक्षी आदि सीवों की हत्सपे की जा रही हैं। उस उन्होंने चेचनुकून मनुस्यूति का प्रमाण देशे हुए पच महा यह करने चंतुष्य भाग के लिए क्लाए हैं। यह बढ़ न कि भनुष्य के लिए उपयोगी हैं बल्कि प्राची मात्र के लिए उपयोगी हैं।

ऋषि बहा देश यह भूत यह थ समीह

चित्र यह न यह भक्त शरीका न द्वायका ब्रह्म यह देन यह असिन यह पितृ वह मनिकेश्वदेन यह

, भूक्कान्छा-प्रस्त सूर्य उदय से पूर्व सीच स्थान आदि से सुद्ध पवित्र डोकर एकान्य स्थान में आसन लगान एक प्रानायान द्वारा प्रानो को वस मे लाना एवं ईक्वर का स्तुति प्रार्वना उपासका व गुण गांग से अपने मन व विश्व को स्थिर व एकान्न बनाना इसी प्रकार प्रतिदिन प्रात साम दोनो सामय ईरबर भक्ति में सीन हाकर चारतिक आगन्द उठाना तथा वेद आदि सरप अक्षत्रों के स्वाध्याय से जान बचाना थे सन्वया आदि नित्य कर्न करना यह ब्रह्म वह कहरा है। अर्थाय यह मानव चौला जो मनुष्य को दिवा है रहे प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि प्राप्त काल ठठ कर उस परमेक्पर का धन्यवाद भरे यह भी ब्रह्म वह कहताता है।

काँकता-प्रकृ मुर्बुत चारिए न रहिए पढ सोव शौध कर्म स्थान से बच वन निर्मल होय । ऋषिकृत ग्रन्थ और वेद का करना नित् स्थाध्याव आस्मिक दन्तरि के लिए वह उत्तम है उपाय। राध दिवस सन्धि सम्ब कर सम्बा मन लाव। **ईस्**बर थवन प्रशास से सन निर्मल हो बाद। बच्च बच्च इसको कहें पहिला यह नहानः अर्पण ईस्कर को करे कर्म उसी का मा**न्** ।

देखना -अब काने कहते हैं देव यह सूर्व उदब होने पर सुनाश्वित स्थास्थ्य वर्धकः रोगनाशकः पीष्टिक सत्यती एव श्रद्ध पूर्व से जो बेद मन्त्रो द्वारा प्रयान यज किया जाता है इसको देश यज कहते हैं। यह सर्वजेष्ट कर्म है इस केन्छ फर्न से संस्थर का समस्त प्राणी लाभ ठठाना है। क्वोंकि जब मुद्ध कुछ को अञ्चलिक अगिन प्रव्यवस्थित करके दी वाली हैं एवं रोगनासक व कीटानुषसक स्वास्थ्य वर्षक सुगन्वित तथा प्रीध्टक स्वमती को आग में डाला चाता है तो आर्थन देवता इसे जाँदा सक्य बनाकर चाप देवता की सहायक से सर्वत्र फैसक्स है। फूर्व देवता इवन के इन सुद्ध व जारी सुदन तत्वों को व चल देवता विक्रिय कूल परमानुकों को अपनी आकर्षण रा से ब्यदल पत्रात है तथा पृथ्वी पर करसार है। अर्थाद् अर्थक वढ देवत क्षंपने विभार गुप्प की सार्थक करता हुआ प्राची मात्र का कश्याप करके अपने कर्ममा को निकास है। इस हमन द्वारा शुद्ध करा की कर्म से शुद्ध पन्तपतिका श्रीवरियम रात्रण होती हैं और इसके स्तार के समस्य आयी शाम बढ़ते हैं। यह वृद्ध देश वेद का सिट्ट न है कि जिसे प्रानेक विद्वान सुद्धि अगुक्ता क्षता है ।

कविता- हवन यह द्वितीय कहा देव यह यह महर हससे सारे देवता करो प्रसम्भ भुआग । चल मानु सम सुद्ध हो रोग न लागे कोन स्वास्थ्य रहे इससे बना इसका यह फल होता: प्राणी नात का ही सदा इस वज से कल्याण इस्ते कारण अति श्रेष्ठ यह उत्तम कर्म महान् ।।

पितृ यह-पितृ सब्द पा रखणे चातु से सिद्ध होता है इस यह क अन्तर्गत जीवित मता पिता आचार्य आदि पुच्च बडे बूढो की भाजन प्रय श्रद्धा पूर्वक सेका आदि से उनी क्या करना और समय समय पर उनका आवश्यकताओं की पर्टि करते रहता और उनको प्रसन रखना वह पर यह

कविता- तृतीय यह पितृ कहा श्रद्धा कुका श्रद्ध। जिसके करने से सदा मिटते हैं अपराध ! बोबित गुर मासा पिछा सभी पितर कहलावें इनको सेवा धर्म है तबे तो पाप लग जावे मारा पिता गुरुदेव धर्म शास्त्र अनुसार अन्त वस्त्र से कीविए सदा ठनका सतकार। अपने से पड़ले सदा ठनको मोग लगा। हैं यह सकते देवता भूल कभी मत जा। आयु विदश यह बल के हैं यह दावार इर लेखे इन चार को जो करदे जिसार।

और मनु महाराख ने मनुस्मृति के अन्दर बत्तव्य है मनु भी कहते हैं अधिकादन श्रीलस्य नित्य मुद्धोपसेविन त्वारि सस्य वर्धनो आयु विद्या करो कलम्

अर्थात, बढे बढ़ों माता पिता का आचार्य का सत्कार करना नगरत करना सम्मान करना यह कार्य को भी मृतुष्प वो कोई भी करता है। उसक पास में भीर भीने बढ़ जाती हैं। आयु विषय यह और बल।

अतिथि यज्ञ-न विधि अतिथि विसमी आने की कोई तारीज निश्चित न हो उसे अतिथि कहते हैं। वेद के विद्वार पश्चित सन्पासी वानप्रस्थी सर महास्था को भोषन आदि चस्तुओं से तृत्व करना और उनकी सच्चे मन से सेवा करण यह भी बड़ कहारत है। भी विद्वान धर्म्यत्य बोगी सन्त महारफ आदि जो महाप्रक नैष्टिक आदि कोई भी आदमी देश सम्बन्ध व जाति के लिए कार्य कर रहा हो उनकी सेवा करना यह भी अतिथि यह के अन्तर्गत अला है।

कविता-चतर्य यत्र अतिथि है महिमा या को अपर धन्य भाग दस गृहस्य के वो करे अतिथि सतकार बिन्ड रिजि निश्चित किए जाए अतिथि कहलाए क्षणे ध्वाणे वेदकिद सस्य कार्य कहलाए । प्रेम भवित से फीबिए धर्म समझ सल्कार सबसे पहिले दीचिए उसे भीग आहार उनसे पहिले खाय वो महर अनर्व हो चार लोक और परलोक के सब सुख ले गवान थन विका सुद्धि महे पुत्र पीत्र सुख धान

होचे लोक पत्लोक सुता वह आदर प्रशंतन् मार्थेक बहा-भारति दमानन्द ने प्राथक यह बालिवैस्तादेव वंड कराता है। इसके अनगांत गान कुछ किस्सी क्षेत्रा करेंद्र आदि प्रमु पश्चिमों को भूत को तुरिय करण यह मिलिक के या वह कहता है। किस में पृत्र में कोई भी पहुं पत्नी दशक हो। तो उसके पर करते को कारिए कि आपन अपेश मते कि तो में तह में प्रमुख की वो नोवा है। उसके अपन करते में कुछ हो स्वरूप मीना में स्वर्ध प्रमुख को नोवा है। उसके अपन करते में कुछ हो स्वरूप मीना में में तह मिलिक्ट देव यह के अरगांत असा है।

## समस्त पाणिर्दी

नो निकास की हैन हो। है।

गीक प्रेस गोरबापर से प्रकारित महानारा के जाकर पर सुच्टि की उर्लांच को यह का आरमर्थ होता है जान थी हमारी पुरस्कों से इन अगृत क्यों से निवस की गक। अस्य जिल्ला का का है इसमें भी यह अपर्यंत करे पती उद्धासरी हैं।

सद पुन ने दक्ष प्रव्यपति ने अपनी तेरह कन<del>्यओं</del> का निवाह ूहुआ। करवप ऋषि से किया। उन कन्याओं का नगरत प्रकार है। अदिवि दिवि दनु, काली दनानु सिविकां क्रोधा प्राथा विस्था विशत कविला मनि कह ।

1 अदिवि के बारह पुत्र हुए जिन में एक किया भगवाक्यों । 2 दिति का एक पुत्र हिरण्य

करवप द्वारत वह विष्णु का भाई षर एवं राज्यस था।

3 विविद्य का पुत्र राष्ट्र हुन्स जिसे राधस एवं प्रह भी कहते हैं। 4 विनताका पुत्र पुरूष पत्नी और अरूप आदि छ पुत्र हुए।

 तमा की पाच कन्धाए पूर्व । काको स्थेनी भासी बुदराष्ट्री शकि। काकी से उस्लू स्वेनी से बास संपति वटानु पैदा हुए। भारती से कुचे एव गिष शृष्ठकृष्ट्री से इस शुक्ति से तौवे उत्पन्न हुए।

6 क्रीमा से नी कन्याए उत्पन हुई। मृगी मृगमदा हरी भक्रमना मातमी सार्दुली रनेक सुरभी सरसा। मुन्ती से मुग मृगमदा से रीक भद्रमना से हाकी इसी से घोडे एव बन्दर शार्दली से सिड बाब एवं मेडे घरती है हाथी उत्पन्न हुए।

7 सरभी से चार कन्याए पैदा हुई। रोडिची गन्धर्यी विमला अनिला रोडिणी से गाव बैल गन्धर्वी से घोडे अनित्त से खबर कल सुपारी। ऋरियल आदि वृश्व उत्पन्न हुए। अभिला की पुत्री सुकि से तीरे पैदा हुए।।

8 सरसा से सत्थ पत्नी और नागी और सांधें के जन्म पूजा। प्रश्नास ऋषि से राष्ट्रम कन्दर

किन्मर ब्रीट क्या उत्पन हुए। 10 पुरुष्ट अपनि से सिष्ट व्यास मेहिने तथा पथ पैदा हर।

11 की से से यह कराई क्षाण मार्थि पूर्व सर्वन प्रथा 12 मही से देश शतार्थ करत भुत्र पैदा हुए जाना से देव मन्नर्न एवं अञ्चल के हुई। क्रीका हे में ब्रह्मप नम्परंजनी अपहरू पैक इसे ।

13 पूर्व की प्रति केंद्री 📽 उस से अस्थिपी कुमार का फन

समीका से पूर्व सुव्हि निका का बताना अति आबस्यक है। सम्दिका वह निवन है कि मनुषर से मनुष्य उत्पन होते हैं। सनु पश्ची जलकरों से पत्नु यश्ची जलकर पैदा होते हैं । मुख्तो और बनस्पतियों से युक्त और वनस्पतिया पैदा डोडी हैं। बेदन से कह और

बढ से चेटन पैदा नहीं हो सकते। ईस्वर ने बिन निवमानुसार सृष्टि को रचना की है जह निवम अटल हैं। इन नियमी को बड़े से बड़ा योगी ऋषि मुनि सत महात्मा कोई भी महीं दल सकक्ष न बदल सकता है ।।

समीपा । अदिवि के पुत्र विच्यु को भवनान प्रस्वर माना जाता है। परन्तु विष्णु में ईरफर के कोई याण नहीं हैं। ईश्वर निर्वकार सरीर रहित सर्व व्यापक है विक्यु सकार संग्रेरधारी है और एक स्थान पर अर्थात विष्णु क्षम में अपनी परिंग लक्ष्मी के साथ निष्णस करते हैं। ईश्वर एक श्रम में प्रलय का सकते हैं ईस्बर को किसी दुष्ट के नास करने के लिए बन्म नहीं शेश पहला विच्यु को किसी दुष्ट को मारने के लिए जन्म लेख पहुता है। वास्तव में विष्णु ईस्वर का नाम है जाम के सिम्ब निम्मु का अलग कोई अस्तित्य नहीं है। ईस्वर का कोई माला पिता परिंग भक्षं आदि नहीं है। विष्णुकी माता अदिति पिता करपप ऋषि परिप लम्बी और भर्त दिवि का

पत्र विराम्य कार्यप श्रा । 2 दिवि का पुत्र हिरम्ब करमन

का प्रते तथस काते वे प्रवस बी मान्य ही होते हैं परन्तु हुन्छ और क्षुद्र होते के कारन शर्ने राष्ट्रोश संप्रते हैं।

pre und fir Aller. 40 At 440 E हर्ग के बारें और हैं कि है पूर्ण के बार्व करन पूजा है प्रवी समामाध्य के दिर जन कृतो हुए थए, कृति और कृता के मीच में का बात है एवं चंद सूर्व की किरके को पूजी पर वाने से केंद्र लेक है अच्छी क्रिक में क्रम तर्ने पर पत्नी है जह प्रकार सूर्व प्रकृष देशों हैं। उन्हें प रक्स है न बहा है सक्क मी कथा ही संस्त्य है शह की बोई क्या-

नहीं है। 4 मिनता से गस्ट पत्नी का पैदा होना सच्छि निका के विकट अर्थभव करपना है।

 तमा से पाण कन्यार पैछ वर्ष काकी स्वेनी पासी प्रतपदी सकि। इन कन्माओं से उरल्, बारा सम्बन्धि एव वटानु पर्वाकरे निण प्रसामीर तीती का उत्पंत्र होगा सुन्दि विकास के निरुद्ध विकास के विश्वति सक्रि के विषद्ध असम्भव है।

6 क्रोब से में मन्मर पैय हुई। मृत्री मृत्यस्य हरी भारता मातमी ऋदूंशी रचेता सुरधी सरसा। इन कन्याओं से पूर्ग रीक्ष गयी मोडे बन्दर सिंह बाथ गेंडे हाकी अवदि पशुओं का पैदा होना विज्ञान के विरुद्ध स्थिट निका के विरुद्ध कुद्धि के विषरीय असल असम्मनं मन प्रसन्त करपन है। 7 सुरबी से चर कन्कर पैक

वर्षः रोहिकी यन्त्रकी विश्वसा अनिला। इन कन्याओं से मार बैश भोदे तीते एवं सम्बर करा सुपारी भारियल आदि भुष्ट पैदा प्रयः। स्थियों से पता पत्नी और वर्कों का पैद्य होन्ह सर्वक असमय है। ऐसी बड़ी साहि विवस के विषयीय हैं।

 मुक्त से कर पक्षे और नमें, खेमें का कम सर्वक असमा क्षीट निर्मन के निरम्ह है। नामें समें से सुरक्षा को कर मही शंगक था।

९ इसरण ऋषि ये प्रेमंब किन्न पंत्र और सार्धि की पैंद होना विभिन्न पान है आभि भौग - निकास देश स्वीद्। +

Hall is the real in much La

10 THE RES. LEW No or will in mi vilu side die 2 i ज्यात केलाँद का कारण क्षेत्रक प्राप्त सर्वि केलें किया,ओस 2 कार् year to selle title on her सार्थ एक वर्ष के पूर्व के बह प्रोप व्यक्त प्रतान है। सुद्धि तसी या गा वर्गन शृंदि हिन्छ क्षा पुद्धि और गई के कि पर पहुन्द रुवांचे हैं और स्टॉन अर्थभव हैं ।

13 कह के नर्ज से लेग नाग वासकि व्यक्त आदि वार्थी का उरपन्न श्रीमा सर्वमा असम्पद है। परुष्टें की अपेश्व किया जाने ने अभिना दस्ती हैं। स्ट्रिप बिस स्वी के वर्ष से साथ अब उत्पन्न हो उस का क्या हाल होता। रही के. गर्थ से बच्चें वह पैदा होना सन्टि निश्चम के विरुद्ध विद्वान के विश्वीत गण्यस्य है।

12 मुनि प्राथ कपिला से देव मन्धर्य पारद मुनि साधा तथा व अप्यास्य पैदा हुई कविला से गौए पेव हाँ कुष और प्रथ पाण साली वी कि उपके पर्थ में मनुष्य वो पैदा इए । रूपला के गर्भ से को गीए पैटा हुई इस से तो वह बहुत दुखी हुई होगी। मनुष्य से गैए का पैदा होता असथव है। 13 सर्व की निल घोडी घोडी के पुत्र अस्मिनी कुमार पैद्य हुए। सूर्य जलती हुई गैस्ते का पुत्र है क्य सूर्य के जल से मोदी भरन नहीं हुई ? वह सूर्व चेतन घोडी का पति कैसे हो समाता है ? और चेटी से समुख अख्यिमें कुमार कैसे पैक हो सकते हैं? यह समिट नियम के विकास असभव हो है ही किन्तु इस से पढ़ा असस्य क्ष्योक्त को की नहीं सकता। में तिय पैचनिक नहीं वे स्त्री निकार के दन ने आप को इन असम्भग करते पर विश्वकार प काम पारिए। शासको १२ स नियम के निरुद्ध विज्ञान के

ने विकास के के विकास -साम को प्रकृष कांग्य चर्चाए और अपने प्रन्ती से इन वादी की

क्यारकीय 💉

## आज भी धर्मान्तरण होता है

काछ से पाव हम एक सी वा वो सी वर्ष वा उससे पीछे की अपने बेश की तरफालीन सामाजिक परिस्थितियाँ पर विचार किरते हैं तो हमे पता बलता है कि देश की गुलामी के समय भारत वासियों की क्या स्थिति थी। मुस्लमानों ने लग-मग 700 वर्ष हमारे वेश पर राज्य किया और इसका कारण श्रा हमारे देश के छोटे-छोटे राज्यों मे भापस की फूट। कई राजाओं ने अपने पर्वासी राजा से दुश्मनी निकालने के लिए इमलावर नुगलों का साथ विवा और हिन्तु राज्यों पर चनका कृष्या करवाया । बाद में मुगलों ने उस राजा को भी जिसने <del>उनके ताब विदा का वह कह कर उसे भी समाप्त कर विदा कि जो</del> क्षपनो का नहीं हो सका वह हमारा कैसे बन सकता है। ऐसे एक बाद यूसरे और यूसरे के बाद तीसरे राज्य पर मुगलों ने अधिकार जमा लिया और इस प्रकार सारा वेश उनके अधीन हो भया। इस काल मे लाखाँ हिन्तु स्त्री पुरुषों को गजनी के बाजारों तथा वूसरे मुस्लिम वेशों में एक-एक यो-दो छपने में बेचा गया। छन्हें गुलाम बनाया गया करल किया गया और भारत में तलकार के जोर से बर्मान्तरण करके हजारो हिन्तुमाँ को नुस्लमान बनाया गया। तलकार की जोर पर औरगजेब ने सबसे अधिक धर्मान्तरण किया।

इसी प्रकार ईसाइयों ने अग्रेजों के भारत में आने से पूर्व से अपना भारतीयों को ईसाई बमाने का कार्य आरम्म कर विया था परन्तु अंग्रेजों के काल में जब हमारा वेश उनके अबीन हो गया तो भारतीयों को ईसाई बनाने का काम बहुत तेज हो गया। गुस्लमानो ने तलवार के जोर पर धर्मान्तरण किया और ईसाईयों ने घन वैकर अन्न वेकर ववार देकर नौकरिया देकर सेवा के बहाने से लोगों को फुसला कर करा बगका कर लोभ लालच वेकर बर्मान्तरण का कार्य आरम्भ रखा फो बाज तक चल रहा है। देश की गुलानी के अवसर पर मुस्लामनों व ईसाईबाँ द्वारा बर्मान्तरण का कार्य जोरों से बसता रहा । इसी के परिभाग स्वरूप भारत ने ईसाइयों व मुस्लमानों की सच्छा गिरनार बढती रही। आजांची के बाद यह कार्य लंक जाना चाहिए का परन्तु नहीं रुका नुस्तमानों के द्वारा धर्मान्तरण का कार्य इस काल मे कम हुआ परन्तु ईसाइयो ने बेटा की काजाची के बाव अपने कार्य को और अबिक तेज कर विवा। मिजोरन ने ईसाइयों की वर्तमान सरका के बारे ने सभी को पता है। उद्योक्ता और बिहार के वरस्थ गावों ने निर्धन लोगों को तालब वेकर आज भी ईसाई बनाया जा रहा है। करोडों रूपया ईसाई पावरी इसके लिए खर्च रहे है। पैसे के बल बूते पर और संवा के नाम पर नागालैण्ड मिजोरम अकमाबल मेघालये सिविकम त्रिपुरा मणिपुर आदि प्रान्तों ने नव्ये प्रतिशत हिन्दु ईसाई बनाए पा रहे है। इस कार्ड में नवर टेरेसा का सब से बढ़ा हाथ रहा है।

वि मानेट के सम्पावक में मिला है कि मवर टेरेमा मेश के नाम पर व्यापार करती है। रोगियों का इंत्याप करने की बजाए उनकी साशो पर प्रार्थना करती है । सेवा के नाम पर हिन्दुओं को इसाई बनाने का कार्य करती है। इससे स्पष्ट होता है कि हिन्तुओं को ईसाई बनाने के लिए गवर टेऐसा ने भी कोई कसर नहीं छोडी। प्रत्येक ईसाई निसमरी रात दिन हिन्दओं को इसाई बनाने में लगा हवा है। इसके विशेष में कुछ प्रतिक्रिया भी हुई जो होनी स्वनाविक है। आखिर कर तक तिन्तु सोग आसे बन्च करके यह ईसावयों का तमासा वेसते रहते। अब तो ईत्ताक्यों ने अपने प्रकार का उन ही बवल दिया है वह कई प्रकार के बास्त्वर रच कर झूठ-मूठ के चमरकार विका कर सोगों को प्रमानित करने का प्रवास करते हैं। कई भोले चाले लोगों को बहका कर जुसला कर कई प्रकार के सब्बनान विचा कर लोगों को प्रशासित करते हैं और उन्हें ईसर्ज़ बन्मने का प्रवास करते 🗗 इसके ताथ ही ईत्ताइयाँ द्वारा जो सिका सस्थाए क्लाई जा रही है। जनमें भी ईसाई सम्प्रवास का प्रधार बसे अमोलो बन से किया जा रहा 🜓 राजकोट के आई भी मितन वर्ल्य हाई स्कूल में सच्यापिकाओं ने किन्तु क्लाओं को बाईबल में रख कर एक परचा (पार्थ) विवा और क्से भरने के लिए कहा गया। इस परचे (धार्ग) में लिखा गया का कि

यीगु मेरा मुक्ति वाता है। इस नाते में कबूल करती हु और विस्वास करती हू कि प्रभु यीजु की भेरे पापों के कारण वध स्तम्म पर मृत्यू हुई और मुझे न्यासी सिद्ध करने के लिए वे तीसरे विन सजीवन हुए। इस लिए मैं उनको अपना व्यक्तिगत तारण हार स्वीकार करती है। इसके नीचे प्रत्येक लडकी को हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया। इस कार्य को बर कर बापिस करने के लिए कहा गया परन्त जब लसकियों के अभिभावकों को इस बात का पता चला तो उन्होंन विद्यालय में जा कर इस का कड़ा विरोध किया। इस विरोध को भी कई अखबारों ने गस्त दग से प्रचारित किया। जो कार्य इसाइ करते **जा रहे है उनकी करत्**रो अ**खवा**रो वाले नही छाप रहे परन्त विश्व हिन्तु परिषय और यूसरी हिन्तु धर्म समर्थक सस्थाओं के सम्बन्ध कई अनर्गल बाते छापी जा रही है। ऐसा करके यह लोग देश सेवा नहीं कर रहे बल्के वेस को हानि पहुचा रहे है। ईसाई म्यानरियो की यतिविधिया हमारे वेश में बढती जा रही है। यदि इसी प्रकार हनका यह बर्मान्तरण का कार्य चलता रहा तो वह दिन दर नहीं पत्र कि कड प्रदेशों ने ईस्तक्यों का बोल-बाला हो जाएगा। भारत ने बोटों का राज्य है इस आधार पर वड़ी व्यक्ति एम एक ए या एम पी बनग जिसको ईसाइयों का बोट मिलेगा और वोट देकर ईसाई उसी व्यक्ति को कार्ग लाएंगे जो चनकी बाते मानेगा। हो सकता है ईसाई मत वाल कावित को भी वह एस एक ए व एस भी इनाए । ऐसी रिवाति से चस प्रवेश में वही होगा जो ईसाई मिसनरी काहेगे ।

र्डसार्ड मिसनरी अपने साहित्य के द्वारा व प्रधार साथानो के द्वारा इसाई भत का प्रचार बड़े जोगों से कर रहे है। आज तो टेलीविजन पर भी वाईबल की कहानियों के नाम से ईसाई बर्ग का प्रचार किया जा रहा है। कल ही जब मैंने जी जी टु पाईनल का बटम दबाया तो वेका कि चित्र के माध्यम से बाईबल में लिकित सन्दि जलाति वेकाई जा रही भी। भावम का खुवा द्वारा पैवा करना उसकी पसली से औरत का बनाना चोनों का बौद्धि दुख के फल खाना और खुवा द्वारा उन्हें धरती पर नेजना आदि विकाया जा रहा था। आज तो टेलिविजन को भी ईसाई अपने मत के प्रचार के लिए प्रयोग कर रहे है। साधारण बुद्धि के रुप्ते पुरुष इनके झारों ने जल्दी था जाते है और ईसाई लोग इस कमजोरी का लाभ चठा रहे है। साधारण लोगों की बुद्धि यह निर्णय नहीं कर सकती कि ठीक क्या है और गलत क्या है ? जितन ईसाई मत का प्रचार स्वतन्त्र बारत में क्षे रक्षा है उतना पराधीन भारत में भी नहीं हुआ। जब खग्नेजों का अपना राज्य था तो उस समय जो ईसर्ज़ नहीं कर सके वह आज स्वतन्त्र बाश्त में बने बनाले से कर रहे है। यदि कोई हिन्दु संस्था या हिन्दु इसका विशेध करता है तो इमारे राजनैतिक लोग उसे साम्बदायिक सस्था या साम्प्रावयिक व्यक्ति कह वेते हैं और सारा वोष कसी के सिर पर गढ विया जाता है। जो अपने देश की संस्कृति की रक्षा के लिए कार्य करता है और अपने वेश की रक्षा करना चाहता है ।

यह बोटी की राजनीति काज हमारे वेश के लिए घतक सिद्ध होती विकार्य ने रही है क्वॉकि सोटो के लिए पा मितिक लोग प्रत्येक व्यक्ति को चुन करने का प्रयास कर रहे है प्रत्येक तमस्याय को प्रोत्तावन ने रहे है उनकी प्रत्येक बात को ननने के लिए रीयार हो रहे है बाहे वह कक्त को नेता के लिए प्रत्यक डी सिद्ध क्यों न हो ।

गाउठ र की में दिखानों प्राप्त सावते तियुक्ती जा कंपोल्यल विकास पात ती का करने था कि राप्त को की कि का कि कि मान की कि का कि

> धनविष आर्थ सम्बद्धाः

## १५४१ में पाढरी जेवियर ने साठ हजार हिंदुओ को ईसाई बनाया

रे जनबीहर प्रवास बैनिक, बैनिक शामा, मान्युरारा, इन्सीट्राफु२००१

भारत में इंसाइं पादरियों का पदार्पक १४९८ से प्रारंभ होता है। इनका ठवेरूप भारत में ईसाइयत फैलाना था इसलिये प्रारम्म में गरीब जनत से संबंध स्थापित कर धीर-धीर हिन्दुओं को ईसई बनाते रहे। जब अंग्रेजों ने भारत में अपना शासन स्वापित कर लिया उसके परवास तीव गति से हिन्दुओं की इंसाई बनाना प्रारभ कर दिया। जो क्रिन्द इंस्का नहीं बनते थे दन पर हमले किये जाते वे उनके मदिरों की तोड दिवा बाता था। अग्रेज सरकार का उपयोग किया जला वा और बरोडों रुपये ईसाई राष्ट्रों से भारत में असे थे। भारत के किसी एक प्रात में ही नहीं सपूर्ण भारत में ईसाइयों का धर्म परिवर्तन का कार्य सतत् चलता रहा।

१५४१ में फ्रेंसिस जेवियर भारत काया। इस दिन को भारत में रोमन केथोलिक मिशन का जन्म दिवस कहा गया। इसने भारत में केवल साढे चार वर्ष ही कार्य किया-ठसने इतने अल्पकाल में ६०,००० हिन्दुओं को स्तमृहिक रूप से ईसाई बनावा। ये हिन्दू समुद्र किनारे के मन्तुआरे थे। जेवियर साठ इकार हिन्दुओं को ईसाई बनाने से संयुष्ट नहीं हुआ उसने पुरांगाल के राजा की लिखा कि किन्दओं को ईसाई बनाने के लिये राज्य की पूरी सन्त का प्रयोग किया जावे। इस सुद्धाव को राज्य ने मान भर आदेश जारी कर दिया कि गोवा औ॥ पूर्तगाल की बस्तियों में हिन्दुओं की समस्त मृतियों की तलाश की जावें और उनको नष्ट कर दिया जाने और जो कोई मूर्ति बनाने का प्रयत्न करे उसको कठोर दण्ड दिया जावे तथा जो किसी साद्यम को क्रिपावे उसको अपराची ठष्टराथा जावे (पुच्ठ ५४ डिम्टो ऑफ मिसन्स) राज ने यह भी आदेश दिया कि ईसाइयों को विशेष सुविधार्वे दी नार्वे जिससे हिन्दू इंग्लई बनने का मन बनाए ।

एक पार्टी सक्ट ही नोबिली मदुरा शहर में आया उसने गेरूप् बस्थ पहनकर साधु का वेश भारण कर बाह्मजों की बस्ती में रहना प्रारंभ किया उसने ब्राह्मणों से कहा कि मैं रोम से आया हू और श्राध्यण वाति का हू ओर मेरे पूर्वज भारत से रोम गये थे। इसने तमिल, तेलगू और संस्कृत भाषा सीख लां थी इस व्यक्ति ने एक लाख हिन्दुओं को ईसाई बनावा।

१६९० में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने अक्रांत समस्त पादरियों को आदेश किया कि वे भारत की पाचओं को मीलें जिससे भारत के कर्मचारियों बें ईसाइयत का प्रचार भरती भौति हो सके। इस प्रकार ईसाइयत फैलाने का कार्य होता रहा। १७१३ नवाका में विलियम केरी की कलकशा में निवृष्ति हुई। कलकछा के पास श्री रामपुर में यह बस गया। इसको कॉलेब में सरकारी मौकरियों के उम्मीदवारों को प्रहाने का कार्य सौंपा गया। डॉ॰ डफ ने अंग्रेची शिक्षा के ब्राग सरकारी गौकरियां देने का लाहाच देकर हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य किया और आगामी पचास वर्षों में समस्त भारत में झई स्कूल और कॉलेज स्वापित कर दिये।

१८५७ के परचात् इंग्लैंग्ड के प्रचानमंत्री लार्क पानस्टन ने कहा कि केवल इमारा कर्चव्य ही नहीं किन्त इन्दर हित है कि इम समस्त भारत में ईसाईबत का प्रस्ता करें। लाई डेलीफैक्स को उस समय सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के पद पर थे, उसने अपनी ओर से यह जोड़ दिया कि प्रत्येक नया ईसाई देश की एकता की करों में एक नवा बोद है और सामान्य के लिए एक गई शक्ति का स्रोत है । १८७६ में मुबई निवासी लाई रेने प्रिंस ठाउँच चेल्स से भारतीय ईसाइयों के शिष्ट मंडल (जो हिन्दुओं से इंसाई बनावे गये है) की मिलवाया। तव लाई ने कहा कि सैनिकों, न्यान्यक्षेत्रों, गवर्गरों से अधिक इंसाई बचाने का कार्य इन नागरिकों ने किया है, तब प्रिंस ऑफ वेल्स ने लाई रेकी बहुत प्रश्नमा की। सर चार्ल्स इलियट नै पादरियों की प्रशंसा करते हुवे कहा कि जिसके आधार पर अग्रेजी शासन भारत पर राज्य कर रहा है ये पादरी लोग गैर सरकारी डीकर भी डमारे लुपे अग हैं। इस प्रकार वहां वहां अंग्रेजी शासन या वहा वहां निरतर आतंक, लालध से हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य चलता रहा। देशी रिवासतों के राष्ट्राओं ने ईसई पादरियों को प्रारंभ में अपने राज्यों में बसने नहीं दिया। लेकिन अंग्रेजों के दवाय के कारण देशी रिवासरों में भी

ईसाइयों का कार्य प्रारंभ हो गया। स्वतःक्षा के परकात बहुत तेव गति से पादरियों ने हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य प्रारंभ कर

मध्य भारत थ भव्यप्रदेश शरकार को गिरतर शिकानत मिल रही थी कि ईसाई मिलक्रीयां वनवासी भारतों को आतंक व लोभ देकर बढ़ी संख्या में ईसाई बना एहं हैं। तब सरकार ने ईसई निजनरी गरिविधि जांच समिति चनाई ।

संख्या ३१८/७१६ की काम १४ अप्रैल १९५६ के द्वारा ईसाई मिलगरी गतिविधि सांच समिति नियुक्त की गई। विसके अध्यक्ष डॉ॰ मवानी र्शकर जी नियोगी तथा सदस्य पनामासिंह जी गुरा मूतपूर्व अध्यक्ष विधान सभा मध्यप्रदेश, श्री एस के जर्ज. रतनलाल की मालचीय खंखद. धानुष्रक्षपसिंह जो सांसद और श्री वाँ पी पाठक नजी मध्यप्रदेश सरकार थे। इस जान समिति से पूर्व मञ्जूषारत के समय भी एक समिति चनाई गई थी जिसके अध्यक्ष श्री रेने जी ये। दोनों बाच समितियों ने संपूर्ण मध्यप्रदेश व मध्यभारत का प्रमण कर जानकारी प्राप्त की और प्रमाण एकत्र किये कि ईसाई मिलनिरया आरांक व लोभ के आधार पर हिन्दुओं को ईसाई बना

ज्ञाम्का जिले के सीमा डावर, भील की कन्या वधु का विज्ञाह हरिसिंह के साथ हुआ था। एक वर्ष बाद कन्या का पिता इंसाई पादरी नरोना के बहकावे में आकर हरिसिंह और वसू को ईसाई बनाना चाहतः वा। अदालत में जाने पर नमनाभीत ने फैसला दिया कि १७ वर्ष की चवालिंग लढ़की को जबरदस्ती गैर कानूनी तरीके से गिरिवायर में रोक रक्त है जिसे धारा ५५२ के अंतर्गत इरिक्तिंक को सींपने की आजा दी और विशेष रूप से लिखा कि पादरी नरीना की प्रवृक्तियों पर निगरानी त्वानी आयस्यक है।

रहे हैं कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं।

क्यपुर में एक हिन्दू युवक और इंसाई मनती अपनी स्वेच्छा से विवाह करना चाहते थे लेकिन ईसाई भावरी लकास हिन्दू युवक को ईसाई बनने वुशक्तार पुरु के लिये विवस का रहा वाकिन्तु दोनों युक्क-युक्की इस बात के लिए तैयार नहीं थे। इस पर फादर बुलकास ने इस बुक्क को सात दिन एक गिरिकामर में बद रखा और उसकी चोटी काट दी। इस प्रकरण को नवस्तरमध्य में ले जाया गया। न्यायाधीस श्री के के कायडू ने फादर बुलकांस को २००/- रूपका चुर्माना किया और पांच पादरियों को २५-१५ इसने का दम्ब किया।

२८ अगस्त १९५८ में हच्चरीका जिले के दोलोग्राम में स्वत ईसाई प्रधारकों को गिरफ्तार किया और देक्ति किया । क्रोटा मानपुर के बनगांव के पादरी ने ३०० हिन्दुओं को इंसई बच्चाः इस चदरी को न्यायासय ने ७५ इनमें दल्क जिला। होबद के परेश निरिक्षका में ३०० कर दी गई।

मध्यप्रदेश सरकार के प्रस्तान हिन्दुओं को इंसाई बचने की तैयारी की गई थी लेकिन अन्य हिन्दकों को पता चल गया इन्होंने ईसाई बनने वाले हिन्दुओं को रोका। इस पर इंस्वइयों ने प्रगदा किया। कुछ लोग जावल हो गमे इस प्रकार हिन्दुओं को इसाई होने से बच्चथा। मेरठ जिले के गांव वाधू में ईसाई पादरियों ने विन्दुओं को ईसाई बना निमा। पता चलने पर आर्थ सम्बन्ध के कार्यकर्ताओं ने उनको पुन: हिन्दू बना लिया इस पर से ईसाई पादरियाँ ने न्यामालय में प्रकरण प्रस्तुत कर दिया। न्यासभीत ने मुकारमा स्थारिय करते हुए लिखा कि पादरी लुई पीटर स्वयं हिन्दुओं को इंसाई बनाता है और कोई ईसाई हिन्दू बनना बाहता है हो पीटर को बरा लगता है और विशेष टिप्पण की कि पादरियों की यह अराष्ट्रीय प्रकृतिया राष्ट्र के लिये नातक हैं।

> १८-४-१९५८ को विशनु मुंडे तमा रामदास साहु ने वाईवासा जिला सिंहभूमि (कोटा नागपुर) एस डी ओ के समक्ष इंस्क्रई मिलनरी ई एच नैस के विरुद्ध प्रकाल प्रस्तत कर निम्न आरोप लगाये-

 फादर नैश और अन्य ईस्तां मिजनरी बन गांव में हिन्दुओं के धर्म को गाली देते हैं और उनको

नीचा दिवाते हैं। 2 वे अपने विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को हिन्द धर्म के विरुद्ध भड़काते रहते हैं।

3 हिन्दुओं को कहते हैं कि तम ईसाई बन बाओंने वो हम तम्हारे को खाने के लिये अन्तव देंगे। इस प्रकार लोभ देकर ईसाई बनाते हैं। पुस की ओं ने उन लोगों को गवाही के लिये बुलकाया तो ईसाई प्रचारकों ने उस गाव चाईबासा के लोगों को उत्तया धमकाया विससे वे लोग एस की जो के यहाँ गवाही देने नहीं आये। तम एस की ओ ने स्वयं इस गांव में जाकर बवान मिथे तब पता लगा कि पादरी लोग इस ग्राम वासियों को धमकारी रहे हैं। एस की ओ ने अपने फैसले में लिखा है कि शिक्ष देने तथा अनाव चांटने की उसस में अपुषित उपार्थे प्राप्त भोले-भाले हिन्दुओं को ईसाई बनाते हैं।

साइमन कमीशन की सिफारिश पर १९३१ की अन गजना में मूल हिन्दुओं से बनकासियों को अलग सर दिया नया और १९३५ में कानूनी क्य देकर पाकिस्तान के बंग पर एक अलग जास्क्रम्ड भी मंग प्रस्का (BPR:)

### आर्थो! मऊ माता की रक्षा करो

(ले॰ भी प॰ कम लात किर्नः विस्तालको बा॰ प्री व्यक्ति

चि ए**ग्लेकमा (स्वि**ग्यण्य)

हमारा प्यारा देश आयवर्ण (भारत) ससार में देव भूमि के माम से अरगः बाता 🍧 फिसी समय आर्थी का सकल वरूव में सार्वभीम चक्रवर्ती श्रुष्य था। सस्तर के नर नारी परम पिता परमारमा से आर्थ वर्ष हे बन्ध देने की विनशी किया करते थे । महाभारत काल नद ससार में हमास राज्य रहा । इसका ही वो परिणाम था क महाभारत के युद्ध में अपर्वी का आदेश मान कर विदेशियों का युद्ध म सम्मिलिव होना । वास्तव में आयों के सभान गुजवान विद्वान धनकन बलवान त्यांगी और तपस्त्री दूसरी कोई भी जारि नहीं थी। इसका भूल कारण था हमारा सात्विक आहार। हमारा स्तन पान पहरामा उत्तम था हम सक्ष गळको का गुणकारी दश्र पीते थ। इसीलिए हमारे विचार उच्च से तथा हमारा व्यवहार देवो जैसा था । सारा जगत प्रमारा हर प्रकार सम्मान करता था। हम हर प्रकार सुखी थे यहा कोई भी व्यक्ति निर्धन नहीं व्य। यह प्यारा भारत वर्ष सोने की चिडिया कहलाता था। इस दल मे दूब दक्षाकी नदिया वहती र्थी। करोडो की सक्या में चेड बकरिया थीं। सबसे बढ़ी बात जो ब्यान देने योग्य है वह यह है कि इस देश में एक भी मैंस नहीं थी। गळओ का दुष जतीव गुणकारी

नाश करने वाला होता है। बिगर तिल्ली क्षयरोग पीलिया मिर्गी दौरा चाप इदय रोग आदि जान लेषा बीमारिया गऊओ का दूध पीने वालो को कभी होती ही नहीं। यठो का दूध मधुर निरोगवा प्रदान डोवा है। गळ दूध का पीने से बुद्धि कुरातप्र बनती है। विचारों से भव्यता अस्ती है। भेंस का दूध कसैला इंब्लॉल् सुस्ती प्रदान करने वाला होता है। भैसो का दूध पी पी करके हमारी विवा भी मैसो जैसी ही वन गई है। हम स्वार्थी प्रमादी इंध्याल बन गए हैं इसी लिए इम परस्पर एक दूसरे के खून के प्यासे वने हुए हैं। बात बात पर लंडना जगडना मकरमेक्षत्री केईमानी करना हमारा आग व्यवहा न गया है। किसी कवि ने किराना सुन्दर कहा है जैसा क्षार अन्त चैसा होचे मन और जैसा पीवे पानी चैसे होने माणी। अर्घात् सान पान का प्रचाय क्रमारे जीवन मर कवस्य पडता है।

मा के दूध के समान होता है। गळओ

का गोबर मूत्र भी हवारो रोगो का

गळको का सम्मान इमारे देश में सदासे रहा है सका मक ब्राह्मण के हत्यारों को मृत्यु दड दिया जाता था। रजुकुल नरेश दिलीय ने नन्दना गळ की प्राप रक्षा करने में अपनी बान दे दी थी। महाराज दशरथ वैदिक मर्यादा प्रक्वोत्तम श्री राम चन्द्र सच्चे गळ भक्त वे जिनके शासन काल में गऊ बाह्मण की इत्या कभी नहीं हुई बास्मीकि जी ने रामायण में में राजा दकान और श्रीराम चन्द्र वा क राज्य का सुन्दर वर्णन किया \*। विसे पढ़ कर हृदय गद गद हो जाता है। जगते गुरु महर्षि दयानन्द

सरस्वती ने महाभारत काल को पतन का काल बताया है किन्त महाभारत काल मे भी गढ हत्या डोने का महाभारत ग्रम में कडी भी वर्णन नहीं मिलता। महाभारत काल में नन्द आजन्द महा नन्द की पदवी गठओ का स्वामी होन पर दी जाती थी। युगनायक यदुनन्दन योगस्यव श्री कुष्म चन्द्र महाराज चेदो के प्रकाप्ड विद्वान थे । उनका एक गुणवाचक नाम गोपाल भी बा। जिसका अर्थ है गकओ की सेवा करने वाला

वास्तव मे योगीराज त्री कृष्ण चन्द्र महाराजा ने जीवन भर गऊओ का पालण पोषण किया था। इसीलिए वे प्रकाट विद्वान महान ईश्वर भक्त देश भवत महाबली धर्मातमा पुरुष वे । महाभारत और गीता पढने पर उनका महान त्यांगी वपस्थी होने का प्रमाण मिलती है। भीव्यपिता मह बी ने जी कृष्ण चन्द्र के सद्गुणों की युक्त कठ से महिमा गाँदे हैं। इनके समान महान् पुरुष उस समय ससार मे कोई दसरा नहीं था। महर्षि दयानद महाराज ने उन्हें सत्यार्थ प्रकाश में आप्त पुरुष बताया है। प्रत्येक व्यक्ति को सत्वार्थ সকাল দছনা বাঙিৰ।

महाबली विक्रमादित्य चन्द्र गुप्त मौर्य आचार्य चाणक्य महाराबा अज्ञोक चन्द्र आदि वीर राजा सभी गठः भवत धर्मातमा थे। दिल्ली के महाराजा पृथ्वी राज चौहान महान गळ पंका महा पराक्रमी थे। वे मौहम्मद शाह **बुद्**दीन गौरी से गळको को रक्षा करने के कारण ही परास्त हो गए ये किन्तु अपने प्राण सकट में डाल करके उन्होंने गठको की प्राच रक्त की थी।

गऊ के महत्व को तो विदेशियों ने भी माना है। प्रथम मगल समाट पाबर ने स्वय गक रक्षा का कानून अनाया था तथा मरते समय अपने पुत्र हुमायु को पत बुला कर समझते हुए कहा बा- मेरे प्यारे बेटा हुमानु मेरी एक बार काब स्थान से सुन ले। भारत वासी गळ भवत धर्मात्वा हैं। ये गठ को माता मानते हैं। अगर तू यहा सुख से रहना चाहता है तो गळ रक्षा का कानून बनाना अन्यया बाद में पक्षताएगा । बताते हैं धुमायु ने जीवन भर गऊ रक्षा के नियम की पालना की नी। अन्तिम मुगल सम्राट मौहम्मद शह जफर ने भी गळ रक्षा का कानून बनाया या तथा गक सेवा का उदाहरण संसार के सामने प्रस्तत किया था। महस्तनी लक्ष्मी वर्क नाना साहब तारबाटोपे राव तुलाराम नाहर सिक् कीर कुवर सिंह आदि भारतीय वीर संभी गळ भवत वे। इन वीर देश भक्तो के संत्राधार स्वामी दक्तनन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में गळ आदि उपकारी पशुको की हत्था को महापाप वतलाया है। जिन्होंने सब से प्रथम गऊ करूण निधि नामक पुस्तक लिखी थी वचा रिवासी (हरयाणा) के राव बुधिष्ठिर से कह कर रेव डी मे

दादा भाई नोरा जी वाल गगाधर तिलक पण्डित मदन मोहन मालवीय प० मोवी लाल नेहरू स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपत राथ आदि देश मक्त नेता सच्चे गऊ भक्त ये। आबादी से पहले मुसलमानो का एक भजन महली थी जो मेरठ मुजयकर नगर अलीगढ दिल्ली पंजाब मे प्रचार करते हुए गळ इत्पारे अग्रेजों को भारत से शीध भगाने का बाते कहा वस्ती भी।

गक शाला की स्थापना कर्णा थी

भहान क्रान्तिकारी भक्त सिंह के दादा सरदार किशन सिंह का पुरा परिवार गऊ भक्त देश भक्त था। राम प्रसाद विस्मिल चन्द शेखर आबाद राजगुरू भवत सिंह सुखादेव रोशन लहरी आशमाक उल्ला मदन लाल थीगढा कथम सिंह आदि क्रान्तिकारी महान देश चवत गळ भक्त थे ।

पंडित मोवी लाल नेहरू से एक बर एक अग्रेश अधिकार ने पू**छ या-क्या आप** गठ मास का लेवे हो? ज्यन् वन सून रू पहित्र मोग

उसे बरी ताह एउट

बा-ओ पापी । मेरी बात ध्वान से सून ले । मैंने गऊ का नास तो कमी नहीं साथा और कभी भी नही खाळगा। अगर कोई मुझे गक हत्यारे कसाई का मास शाकर देगा तो पट्ट खा लगा। पश्चित मोती लाल नेहरू की यह गर्जना सुन कर अग्रेप अधिकारी की बोलती बद हो गई ऐसे नेता वे पंडित मोती लाल नेहरू

पंडित बाल गगा धर तिलक **अज़ादी से पहले घोषणा किया करत** ये कि स्वतंत्रता मिलत ही कपम की एक नोक से गऊ इत्या का कलक मिटा दिया आएगा।

राष्ट्र पिता महात्मा गाधी सं एक बार वायसराय ने पूछा था आप भारत के आजाद होने पर सबसे पहला क्यां कानन बनायोगे? महात्या भाषी ने इस समय जो उत्तर दिया या ब्यान देने योग्य है गाधी जी न कहा था- हम भारत माता के स्वतन्त्र होने पर सबसे पहला कानून गऊ रक्षा का बनाएंगे तथा दूसरा कानून इम नशाक्त्यी का बनाएंग खोद की कर है कि गांधी जी के चेल करतेकी फिल भी गरू क्या और नहाबन्दी के कानून नहां बना पाए आवादी के ५१ वय पश्चात भी

गऊ हत्या का कलक हमारे सब क मस्तक पर लगा हुआ है। सरदार भाई पटेल अगर भारत के प्रधान मत्री बन आवे वो गऊ हत्या का पाप भी बन्द हो आता । बदाहर लाल नेहरू का भारत का प्रधानमंत्री बनना देश के लिए चाटे का भौदा साबिश हुआ। जवाहर लाल नेहरू कहा करन में मैं सभ्यता से ईसाई ह सस्कृति से मुसलपान हु और बदकिरमता स हिन्दू हू ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री श्रा मोसर जी देसाई दोनो गरू भक्त धर्मात्मा थे किन्तु स्वाधीं बईमान लोगो न उन्हें कभा नहीं टिकन दिया। श्रीमति इन्द्रिस गाधी राजाव गामी विक्थनाथ प्रवाप सिष्ठ चन्द्र शेखर महास्वाची कुसी के भूख निकले। नर सिष्ठ राज भी एसा हा निकला इस लिए गक रक्षा का कलक भारत माता के मस्तक स अब एक नहीं उमरा।

इस वस्त का अटल वहार वाजपेयी नग्न के प्रधानमंत्रा > ज विपक्षम बठकर कभी गऊर ग र्श कात कहा करते थे उनक शा काल मे भी गऊ इत्या निन्तर हा रहा है। प्रशिदन लग्खो गऊए मारु जा रहा है काई भी राजनैतिक दल गळ रक्षा का कानून बनाने की जब

(जोव पुष्ठ ७ पर)

#### किला आर्व समा सुविवाना शरा आर्व समाम स्वापना दिवस

विश्व कार्य सम्म सुरियाणे द्वारा नव विक्रामी संबाद २०५६ के सुमारप्य राख जार्य साथा स्वारा स्

शर्मा जी बने।

यह के उपरान्त मंच का संचालन डॉ॰ विजय गरीन ने किया। मर्स प्रथम कुमारी नम्रक सोनी ने सभुर धवन सुनाकर आर्थ जनता को आनन्दित त्य । सम्बरोह के अञ्च्या पं० प्ररबंस लाल जी हार्मा, प्रधान आर्च प्रतिनिधि समा पंचाय, मुख्य अतिथि श्री अस्विमी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामंत्री आर्थ प्रतिनिधि समा प्रचान एवं सरदार अपिन्द्र सिंह जी ग्रेवाल, महापौर मगर लुधियाना का जिला आर्थ सभा के तमा भिन्न-भिन्न आर्थ सम्बर्जे, स्त्री आर्य समाजों के अधिकारियों एव प्रतिष्ठित नगर जासियों ह्वारा फूल मालाएं खलकर हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

स्वयां अर्थना सिंह की जेवला. मार्याणे रे अर्थन स्ववत् कि उन्धर स्वत्य कि अर्थ स्वत्य का सिंहा उन्धर स्वत्य के अर्थ स्वत्य का सिंहा उन्धर स्वत्य वेश्वर के ती क्या क्ष्म स्वत्य वेश्वर के ती क्या क्ष्म स्वत्य वेश्वर के ती क्या के तिर स्वत्य के ति स्वत्य के तिर स्वत्य के ति स्वत्य के त

डॉ॰ अवतार सिंह वी लगर (नामधारी) ने अपने वक्तव्य में कहा कि परमात्म्य का मुख्य श्रम औश्रम है। बहा, विष्मु व महेश उसके गुर्मी के आबार पर श्रम हैं। इन्होंने आगे कड़ा कि जैसे स्वामी दयानन्द भी ने गृह विरवानन्द जी से कहा या कि मैं कौन हूं इसे ही दो मैं जानने आपके पास आया हूं। ऐसे हो प्रत्येक मनुष्य को अपने अप को पहले जानना है और फिर आगे बढ़ना है। आर्थ कालेज (महिला विधान) की प्रभारी, श्रीमृति सरीजा जर्मा जी ने सम्बरोद में बोलते हुए भहा कि आब हमें सोचन है कि इमें क्या कारण था और इसने क्या किया। अगर इस ने महर्षि दयानद के क्षति आधार प्रषट करना है से हमें **%**न्दी का आदर करना चाहिए और अंत्रीची के स्थान पर हिन्दी व पंचावी का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने कांगे कहा कि हमें नहीं का सम्मान करते हुए उसे समाव में उचित स्थान देना चाहिए। नहीं का मी कर्मांच्य है कि वह अपने प्रचानों को अच्छे संस्कार दे।

जी सत्यानन्द जी मुन्याल मालिक हीते सहीकत्व न कहा कि गुरु को भगवान नहीं समझना काष्ट्रिं। लेकिन यह सत्य है कि कोई मार्ग दर्शक अवस्य होना चाडिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक **जार्य समावी को प्रकारक होना** वाहिए। आव हमें प्रम लेग चाहिए कि इम जार्य समाच का कार्व और चिक करेंगे तक स्वामी दक्षनन्द जी की उस्ता का पालन करेंगे। इमें बुवकों को आगे जाने के लिए उत्साहित करना चाहिए। इसके बाद ठार्व फालेब (महिला विभाग) की कात्राओं ने सामृहिक पवन गाया : विसे सुनकर पं॰ इरबंस लास ची शर्मा ने और ही नरेन सिंह बी भरता ने सभी छात्राओं तथा उनके गुरुवनों को एक-एक सी रूपच परितोषिक दिया। विका समा की जोर से श्री रजबीर **वी** माटिया, कोचाञ्यक्ष ने उन्हें स्मृति चिन्ह मेंट

पूज्य पाद स्थामी सम्पूर्णागर

जी ने अपने उपदेश में कहा कि

किए।

अकेले स्वामी दवागन्द ची ने समाब सुधार के इतने कार्य किये वितने सारी सरकार अभी तक नहीं कर पार्ड । उन्होंने कहा कि स्वामी भी ने वेद ज्ञान को मूल आधार माना। धवा उनके किन्मों ने उनकी बांधों को त्मसार किया? स्थामी द्यानन्द जी ने सत्वार्थ प्रकाश में लिखा **है** कि विदेशी शासन चाहे माता पिता की तरह सुख देना फला हो तब भी विदेशी शासन स्वदेशी सासन से कभी अच्छा नहीं हो सकता। यह सक्ये देश भवत वे और सम्बन सुकारक वे। यह त्यामी वे व कर्मकोगी वे। स्वामी की ने सबसे वडा साम यह किया कि इमें आर्य समाम के आध्यम से अपनी संस्कृति से और धर्म से जोड़ दिया । स्वा दस्तनद की ने अवर्ष सँमान की स्यापना साम्बन के लिए नहीं बरिक मध्यन के लिए की । पूज्य स्वामी सम्पर्धानस् जी ने अपने कहा कि हमें अपने बच्चों को अपने गौरवमय असीत के बारे बसलान्ड चाहिए स्त्रिक दन पर अच्छे संस्कार पर्डे और वे भी वैदिक सूर्य के प्रकास को संसार में फैशाने में सहवक हों।

पं॰ हार्यस सक्त वी सर्ग, प्रधान आर्थ प्रतिनिधि सभा पंचान ने अपने पायम ने कहा कि हमें अपने पायम ने कहा कि हमें अपने नानुक्रमों भी नृत कर निस्स पुरस्कृतिक किस्स के साथ-सम्ब हमें

कार जार्ब अपन्य का कार्य कारत कारत आपना कारत कार्य जात सुविध्यक्त की कार्य कार्य जात सुविध्यक्त की अर्थन की और कार्य का

श्रीभृति शनेत हमाँ की की एका अन्य सदस्तों की सरहण की और कहा कि उनके प्रकान बनने से बिह्ह अर्ज सन्त और सक्तिम धुई है।

समा और सम्राम्य हुई है। अन्य में विश्वल आई सम्प्रा की प्रमान की मार्ग की प्रमान की मार्ग की प्रमान की स्मान की प्रमान की सम्मान की प्रमान की स्मान की सम्मान की सम्मान की सम्मान की सम्मान की सम्मान की सम्मान की स्मान की सम्मान की समान की सम्मान की सम्मान की सम्मान की समान की समान

इस समारोह में लेशियाना रायकोट, समराला और साहनेवाल की आर्थ सम्पर्कों, स्वी आर्थ समावों के अधिकारी तक सदस्य बद्ध-बद कर सम्मतित हुए। कार्ग क्रम को सन्तल बन्दने में जी अवन कुनार जार्च, श्री रमेश सूद, श्री कारण प्रकास जरेका, श्री रोसन लाल आर्थ, श्री हर्व सद, श्री सवीच्या प्रकाश ची, श्री मतवाल चन्द्र, त्रिं० वी. के. मेहता. श्री देवपास आर्च, श्री भीमसेन, श्री असर माथ वांगरा, श्री क्वीर चन्द्र, भी प्रेम सिंह, श्रीमति जनक रानी अर्था, ग्रीमिंग गैश बेरी, श्री जबय कुमार बजा, श्री अजब सूद का और वार्य कालेब एवं वार्य कालेब (महिला विभाग) के स्टाफ का विशेष सबयोग राग।

### अधुनिक-गुरुकुल सिक्षा प्रणाली का प्रारुप?

भारतीय संस्कृति का पूर्ण के देवें पूर्णात विकास प्रस्ताती यह है और स्वाहत्त विकास प्रस्ताती है कि स्वाहत के स्वाहत कर स्वाहत के स्वाहत

माप्रम है, माप्तग है, माप्तग है। प्रमण और परिवर्शियों में अपूक्त प्रथम की प्रमण्ड का परम प्रथम है। वेदी पत्रों करी माप्तग्री प्रथम है। वेदी पत्रों कर प्रथम माप्तग्री माप्तग्री करायों कर प्रमुग का कर्या था, देशे ही पत्री माप्तग्री करायों कर प्रमुग प्रथम करायों करायों करायों करायों प्रभावी पत्रभी पार्टिश करायों प्रभावी पत्रभी पत्रभी है। व्यक्ति प्रयोधी प्रभावी पत्रभी पत्रभी व्यक्ति प्रयोधी प्रधावी प्रभाव प्रभाव करायों ही संस्थिति चीत्र, री अप्ति आधीच करायों के स्थावना पत्रभी क्षार्थिक करायों पत्रभीव प्रधावना पुत्र में क्षार्थ

रहेण ज्याजना जेग प्रकार पर धुं शुर्के ।
ज्याजना कर परि अपिने से स्वाचित कर परि अपिने अपिन

विकास सरीय-महामंत्री

गुल्कुल विश्व में ब्रह्मकरी कहां कार्य का संभारत पास्त्र प्राप्त हुत, हुत, कार्य का संकल ज्यावान कारत दिग-व्या है। विश्व के राज्य- स्वव व्यक्ति वीक्त और स्वाप्त से अपने कीरल में सुवन्धिन पर सेखा है, फिर उसी सुवाध्या से सम्बन्ध को सुवन्धित कर देशा है और राष्ट्र की डोभ्य कहा देशा है, अस्टर क्या गई है "किस्स कर्मन सोकरी है" किस

अधुनिक विकारणार्थी को संकार कार्य के दिनों पराजवस्थ्य को प्राप्त है कि पुरस्कृती का नवीनिकरण हो, दार्थ को विका, कम्प्यूटर की विकार एवं अपने वार्युक्त विकारणों का यो प्रक्रिक्त निकार को रेवेंद्र पर कराने हो, कंप्रेयन गुरस्कृत विकार कर वहां प्रकार प्रकार और प्रकार को पार्ट्य पूर्व अपने प्रकार और प्रकार को पार्ट्य

#### र्श स्टापम बरिष्या में अवर्ग स्थापको स्थापका विकर

on the of aid this क्यांच्या रच अने क्यांच स्थापन पंचालत विकास गर्ध प्रातिकाला के भाग आर्ग समाध्य महिल्या के गरावि रचनन्द्र सार्वादः नवन में श्री पी न्दी गोधन प्रवर्ग अर्थ मावस हाई स्कल मही अध्यक्षता च उपमधी औ महेन्त्रपाल की अधेका के अंचालय में महत्त्व गया। यह प्रकार स्थान पर पुन्द जोन प्रकात भी नामास्थ स्थे जा**धार्य पुत्रीश कुगार की सार्श्यों** के स्रकारत में पूजा। इतन वहीपरान्त ग्रीमति पच्च मगला धर्म क्ली विकरी स्थल की मंगला बाजी ने भवन पुरावा। इस परवाद वार्च मादल वर्ष स्थाल के कच्चों ने एक नवन हे दशमन हम सर्वों को अस्तुत किया। क्ष्मो के धनन प्रस्तति पर प्रसान होकर आज की बाध के अवस्था की पी की गोपल की प्रेम पाटिया ला**० कलन-व**राव आस्त्रास य क्षी अलॉक की जावास ने नकद परिशोषिक से उनका उत्पक्त प्रमाण। ला कलकत राग आधाल एव दोनीं रिसान सरकाओं के प्राप्तर्थ श्रीपि शान्ति विन्दल व श्री हुकुम चन्द गोवल वे गुवसका एक आर्थ समय स्थापना दिवस पर अपने विकार रखाते हुए कहा कि महर्षि दशनद भी के प्रति सम्बी श्रद्धाण्यक्ति भर्ती होगी कि इम उनके बतावे दस निवमों की अपने जीवन में सब्बे मन से अपनाए। पुरोहित आर्थ समाग ने अपने प्रयुक्त में चार चार मजन शैली द्या अर्थ स्थान की महिला का सन्देश दिया। पण्य वापासको जी ने प्रधान शार्य समाज बठिण्या

दिवस वर्गे और बैच्चे अक्टो प्रस परं क्रमदेश दिया। उपनिषयं कार्य का अनो विकास अकारता से समये को समय विकास था थी र्गमा कामकाम सान्त इव सुगन्य मक सा को गया था। सभाव्यक्ष भी मे कहा कि आई समाग्र द्वारा **पह पर्व बढी मेहनत १७ छ**न्न से मनामा मात है परमचित्र परमात्मा जार्थ समाच के कर्मट कार्यकर्ताओं को बल दे ताकि वे इससे भी च्यादा च्यातस्तर पर कार्य क्रम करें। यह कार्य क्रम प्रतम बढ़ा हुआ कि समबाभाद के कारण प्रचार कार्य समाय श्री प्रेम **पाटिया जी ने रायमध्री सार्य समाय** से प्रार्थना कि उनकी एव आर्य समाय की ओर से सभी व्यर्ग डेमिकों का इस कार्यक्रम में प्रकारने भर चे सक दिल से धन्यवाद करें। इस सारे कार्यक्रमः में ची० नावू राज की गर्न परिका उपरकान कोकश्वध श्री स्ट्रवीत जी गफा एव प्रो॰ को भी मगला उपप्रधान इसके अतिरिका आर्थ तमाथ भी तीनों क्रिश्चन सरवाओं व्यर्थ यहर्थ सीनियर रीकण्डरी स्कल आर्थ गरहल स्कल एव पुरुकुल शिल्पविद्यालय की अञ्चापकार्य ने भी बढ चढकर डिस्प्र लिख। अन्त्र में कार्य क्रम की संभाषित पर शानिवण्ड जन योग करते हुए प्रस्तुद बाटा गया। प्रेम भाटिया





- अक्षापर्य के रूप से देव मृत्यु को चीठ तीरे हैं-वेद । अक्सपर्व की प्रतिपद्ध में बीर्च (स्विद्ध) था लाम होता है न्नवञ्चलि मुमि ।
- 3 महाकर्व से शक्ति बुद्धि रेगस्थित सम्बद्ध स्वास्थ्य पन और राष्ट्री प्राप्त होते हैं-नहर्षि वसानन्द सरस्वती ।
- ब्रह्मकर्ग वारण में जीवन है और नष्ट करने ये मृत्यु शहरव ।
- ऽ एक मन भोषन से एक बृद वीर्व काता है स्वामी ओमानन्द ।
- 6 ब्रह्मचर्य ही स्टबना है और दुर्बलक पाप स्थामी विवेकानन्द । 7 प्रनित्यों के विक्यों में सक नहीं है-स्वामी रामतीर्थ ।
- नवयुवको ( क्ल और बुद्धि के किना अधिकार नहीं मिल सकते और उसके लिए ब्ह्यचर्य ही एक सर्वोत्तम सहस्र है लोकमान्य विसक ।
- व क्यानर्थ को जब हम कोते हैं तब निवाल होती है अपवित्रत आती है जब इम सरक्षण करते हैं तब उत्साह और विचार बढता है । ब्रह्मचर्य (प्रबन्नय सम्तिवीर्य) मनुष्य को बुद्धि वीरक्ष पवित्रता और अन्य फरतो से भी फलित करता है महात्मा बोरो 10 सदाचार पालन में डी सखा है सकराव
- 11 इनमान भीष्य और भीम जैसे स्वप्रवारियों के चरित्र मेरी जनित को बढ़ाने में विवली का काम करते हैं प्रो॰ समगर्ति ।
- 12 बन हमें प्रत्येक स्वान पर बुकने का अधिकार नहीं तो ब्रह्मकर्न वैसी अवेब समित का दुरुपयोग कैसे कर सकते है डा॰ बाल
- 13 सहायर्ग पालन में सर्वाधिक रुपयोगी हैं सारिवक विचार आहार योगाम्बास और खाली न रहना ।

कुलवीप विकाधारकर आर्थ सी सै स्कूल भूरी

(पुष्ठ 5 का सेष) ठक नहीं करता। सब कसी बचाओ के मौज उडाओं खनाली मगाओ चनता को पागल बनाओ । अभियान में जटे इए हैं। बो लोग राभ राज्य रतने के नारे रोजाना लग्हमा करते बे दे रावच राष्ट्र ले आए करवेसी और भो भारतीय सभ्यतः सस्कृति की रक्षा का राग अलाय करते थे त्रवाको क्यात्री राम के मारे हर समय लगाया करते थे वे जनसंखी (भारतीय बनता पार्टी) वाले भी योग्यसिक नहीं हुए अब कीन करेगा। गक रखा ?

राम कृष्ण दशनन्द गाथी के भारत में गठ हत्या प्रतिदिन कर स्थान पर को रही है और इनके वस्त्र चुप वैठे हुए हैं इससे बका आश्चर्य और दुख की बात क्या होगी ? गढा हत्या का जधन्य चप इस देश को ही नहीं ससार की लें सूबेगा । मान रखो।

अवर्षे । केवल अस तमसे हा विकासी वहर्मिक गऊ भवर अनता को कुछ अप्रसाद है इसलिए गठ रक्षा के लिए सक्रान्ति करने के लिए तुम अब कुमर कस कर तैयार हो नाओं। कवि के सकते में

आर्थ कुमारो । सर्मुभक्षरो वैदिक धर्म निभाको दुम । महानात की दावानल से वह ससार बचाओ चम ।। बतायाद अवस्था चार ने भग में केरा साला है। पुण्यानम् क्रम्याति को सुद्धानों ने साला है ।। आर्थ वर्ष महान इमारा विस्ता ही नित भारा है । क्रकृ गुण्डे जोसे से अब बैंखओं का बात है ।! अक्रिको को प्रथम करती का गठम भारी वार्ती हैं। राम कृष्ण के पास में विश्वाद करन मधारी है। समय नहीं है कोने का अब हे पीरो । अब दो जाने तुम । करो परस्पर नेख पृट पापिन को अब हो लागो हुए ।। गढ इत्को कुटों का हुनिया से चाम विटाओ तुम। मासाकरी जराविकों के जीरो। डीस उडाओ हुए।।

#### ''वयामन्द पवितक स्कृतः आर्थ रामाज' स्थापमा विषक्ष''

18 3 99 स्थियार प्रस्तु 10.30 बचे से 12.30 बाद दोपहर तक दयानन्द पश्चिक स्कल लियाना के विशाल आगन में आर्थ समस्य स्मापन दिवस बडे समारोत से मश्रया गया। जिसमे स्कृत का स्टाफ समा और नगर के प्रतिष्क्रित व्यक्तियो ने भाग लिया । यज्ञ आर्थ. समान सिवित सर्छन्त्र की प्रधाना श्रामित सरला लून्या ने कराया। यञ्चनानो को असीर्वांद के परच्छत् प्रबन्ध समिति की सदस्या श्रीमति विनोद गान्धी तक श्री रमेश जी सुद ने अपने मजनी द्वारा आर्थ समाज के कार्य का वर्णन किया।

श्रीभदि यशक्ती जी भल्ला रिटायर्ड प्रिसिपल ने अपने भाषण म कहा कि आर्थ समस्य की कथा से प्रम देशियों का यह करने एवम वेद पाने का गविकार मिल है। आर्थ समाय की स्वापन ते फाले हमें पढ़ने का अधिकार नहीं था। हम देविया पर विशेष रूप से आर्थ समाज का ऋष है। स्वस्त के प्रवन्धक आश्वानन्द आर्थ ने कहा कि आर्थ सम्बन्ध की स्थापना से पहले इम्हरी हिन्दू भारत को अत्वन्त दुर्देख था। देवियो को बेद पढ़ने का अधिकार नहीं वा देश मे अञ्चन अविश्व व बर्खन परी हुई बी। आर्थ समाज ने बुराईयो

को दूर करने का पूरा प्रयस्न किया। आन्द देश में की जागृहि दिख्याई दे रही है उसमें आर्थ समाज का बहुत बोगकान है। इम सब को आर्थ शक्ता को पूर पूर सहयोग प्रदान करना

Post on N.D.P S.D.

आर्थ्य संगाम सेद मीना द नपरं नक्ता चल ह उससे ठेउँ सर्वे को 📲 प्रचान की हरशत स्त्रस्ट जी क भ उपप्रचान **की भागंचन्द** भी मार

ने पहुच कर जनक का मार्ग दर्शन केया । व्यवारोहण यक प्रश्वस लाश वी समी ने किया। इस अवसर पर ही विशवसाव शास्त्री जी वेद प्रश्नास की टकारा

वाले श्री मगव चुन्ची लाल की दम एल ए जी मूटाराय की ढा॰ इस चन्द्र की तथा दूसरे कई महानुक्ता अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस उत्सव में आर्थ समाव चेद दर मार्गव नगर काती दानिसमन्ध कस्ती बाधाखोल कस्ती गुजा आर्थे नगर कबीर नगर गांधी नगर १ गुरुकुल करवारपुर मॉडल डाठन सन्त नगर माधी नगर न 2 गबा तथा दूसरी कई आर्थ समानों के आर्थ भोई व बहुने वहा पहुची थी। कार्थ क्रम की समाचित पर दोपहर दो बने सारे गढा कार मे सोधा

क्षा : चरवे में ऋषें स्थानी पर पानी व्यानक गण क्या सामे की घरतुए र्श्व । यहा नगर के सभी ले ने श्रीमा बात्रा का स्थान ज्यान पर पानव किना । इसने गमा नमा वासियों का बद्धत सहयोग रहा है।

कोभा कता की समाधि पर **पृथ्य ऋषि** लगर हुआ विसमें कार हुए सभी भवानुपाको ने प्र व भीव

इस उत्सव ने प्रधारे सभी महानुभाषो का धन्त्रकाद किया गया । इस तत्सव की सफलवा का श्रेष प्रधान श्री सम्म राम रुफायान श्री जब गोफल भी मेला राम म्त्री परित बनारसीद्यस उप मत्री श्री जनक राज कोवाध्यक्ष श्री रदन त्ताल वेद प्रकार मंत्री सत राम तमा साधुराम व अन्य सभी सदस्यो व आर्थ महानुभाषो को चाता है । काल अस्य

सनीता परिषक आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त, कोलस्ट्रोल रहित विटामिन 'सी' से भरपूर

अता स्रशायन

जान स्वास्थ्य के दिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेंसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का सेवन करें।



मास्ता कार्यालयः

ती अधिका पुन्तर को सर्वा प्रकाशित महानको सम्बद्धा प्राप्त कर दिन्द त्रितिन हैस-दिलिय सिंहर्ड व्यवस्था के ब्रोहर देन्द्रिय कार्य नार्वह वार्यह पुनव्य पन्न भीक विद्यानपुरः भारतगर से इसकी स्थानिन आर्ग प्रद्वितिन सभा ग्रेकन के लिए प्रवितित हुएंग ।



वर्ष 49 औक 2. 29 चैत्र सम्बद् 2056 ततनुसार 8/11 अप्रैल 1999 दमानन्दान्द 175 वार्षिक शुरूक 50 रुपये आवीवन 500 रुपये

प्रमाण तो और भी हैं परन्त महिलाओं को मात्रपाठ करने व उपवेश करने का अधिकार है

इम्बनीत केंद्र, पुसुची सत्त्वी भण्डी मार्च, वनुवानवार्-१९६००।

सूर्यकुण्ड, अमादलपुर वि वमुनानगर के एक कार्यक्रम में 8.2 99 को कराजरी के भी बटक शास्त्री ने जी माचव आजम. तिकराचार्व की उपस्थिति में कहा-

अ) महिलाओं को यह अधिकार नहीं है कि वे श्रीताओं को उपदेश करें।

आ) नायत्री मन्त्र के पाठ करने का भी इन्हें अधिकार नहीं है।

🔝 ओश्रम बोलना ही नहीं चाडिए। हैं) वो कोई मेरे कथन को गलत सिद्ध करना चाहता है, उसे मैं मंच पर सस्त्रार्थ के लिए आमन्त्रित करता 🕻 ।

नामें परिकार व आर्थ समान के कुछ सदस्य व विद्वार 11 2 99 को जब कुछ महिलाओं को आगे रक्षकर सभास्थल पर नए तो न केबल वहां हमें पण्डाल की ओर बाने से रोका नया अपितु प्रबन्धकों य कार्यकर्त्ताओं ने भक्ते मारकर बाहर क्ष्मेल दिखा। यहाँ उपस्थित पुलिस ने बाबरलैस सन्देश द्वारा अधिक पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों को बुलाने के लिए कहा। ऐसा किया ही फिया गया और देखते ही देखते 2~3 बीपों में पुलिस के उच्चायिका व और कर्मचारी भी का गए। हमने उच्चाधिकारियों से निवेदन किया कि इस मच में महिला व जाना विशेषी भारों का प्रचार किया का रहा है थ शास्त्रार्थं के लिए ललकारा गया वा। इम राज्यार्थ करने के लिए आप आए हैं परन्तु ललकारने वाला इनका विद्वान अपनी चोचणानुसार हमें मंच पर नहीं चुला रहा । ठच्चाधिकारियों नै उपरोक्त श्री ब्हुक शस्त्री को बाहर आने को कहा। तब रुगें बाहर आना पढ़ा व पंडाल के बाहर स्टब्स पर बिना किसी निर्माणक के सैंकडों दर्शकों की उपस्थित व पुलिस के अधिकारियों के संरक्षण में लड् रास्त्राचं आरम्म हका। तीन बार मैंने प्रश्न किया कि आप हमे अब मंच पर क्यों नहीं लेकर चलते ? इसका कोई उत्तर नहीं दिया गया, विवश होकर वहीं शास्त्रार्थ करना पढा। मैंने निम्नलिसित दो बेट मन्त्र तीन बार सुना कर पूछा कि इनके आवार पर स्विपों को मंत्रपाठ करने व जनेक

धारण करने का अधिकार है :-१. यथेषां याचम् करपाणीन् श**बदानिजनेच्यः ।( यजुर्वेद** 26/2) अर्थात् में (ईरवर) यह वेदलन

मनुष्य मात्र के कल्पाण के लिए दे रहा ई। सिद्ध है कि वेदजन सभी के लिए है किसी भी प्रकार के वर्ण, लिंग व देश-काल के भेदभाव के बिना। फिर रिजयां वेदमन्त्रों का

पाठ क्यों नहीं कर सकर्ती ? इस का उत्तर बदुक शास्त्री ने क नहीं दिखा। अत- एक और बेदमन्त्र का प्रमाण दिवा गया :--

2. भीमा कावा बाह्मणस्य क्यमीता। (夏010/109/4)

अर्थत वेदपाठी वेदाय्येता की पत्नी यहोपवीत भारण करके हान बल वाली बनती है। इससे स्पष्ट है कि स्त्री भी बजोपधीत बारण कर सकती है। यहोपनीत विका ग्रहण करने का प्रतीक है। विना वेद पाठ के स्थी किसावती कैसे बनेगी ? वेद पहने का उसे पर्य अधिकार है। इस प्रमाण कर भी कोई उकर

नहीं दिना नवा स असंगत बातें ही कडी नहीं। इस बार-बार प्रसान दोहराते रहे व ये अपनी प्रकर-दक्षर की असंगत बंदों कहते रहे। अन्त में वे और उनके संगी-साबी हो-इस्ला करते हुए पण्डल की ओर चले नए।

इस लेखा में अब इस दो प्रमाण रामायण के प्रस्तुत करते हैं :--3. सा श्रीमवसना प्रच्टा नित्यं

बंदिपंसक्ता । अन्ति बुद्दोति स्म तदा

भनावत्कत्तमञ्जला ॥

यह बाल्मीकि रामायण, क्षयोध्या काण्ड. बीसवें सर्ग के 15वें श्लोक का प्रमाण है। इसके अनुसार नित्य त्रत-परायम माता भौशल्या अपने पति के किना महल में रामचन्द्र के राज्याभिषेक की घोषण के बाद रेशमी वस्त्र भारण किए हुए मन्त्रोच्चारण-पूर्वक अग्निहोत्र कर रही थीं। हमारा पूछना है कि यदि मता कौतल्या अग्निकोत्र कर सकती वीं, यज्ञानुष्ठान कर सकती वीं तो इमारी आब की माताएं क्यों नहीं

4. सन्धाकालमना- इचरमा इतमेच्यति जानकी।

कर सकतीं ?

नहीं चेमांजिकपानां राजनार्थे वरवर्णिनी ॥

का भी रामायण का ही प्रमाण है। चब इनुमान सीता जी की खोज में संबा में गए तो इधर-उधर भटकने व असफल रहने के बाद अशोक वाटिका में एक पेड़ पर चडकर स्वयं को क्रिप्त लिया व सोचने लगे-मैं सीता को वहां देख सर्कृगा। प्रात:-सार्च दोनों समय सध्या करने वाली नबोद्या तस्त्र सुन्दर वर्ण वाली सीता वाटिका में (स्थित नदी के) स्वच्छ बत में स्नानादि व संध्य करने अवस्य आएगी इस स्वान पर। इम पूछते हैं कि वब सीता सन्ध्या कर सकती थी तो आब की सीताओं से मन्त्रपाठ करने का अधिकार छीनने वाले ये शंकराणार्यं व इनके सयी-साधी सीता बी व राम के अनुवाबी कैसे कहला सकते हैं ?

इन प्रमाणों के आकार पर मनुष्य मात्र को मंत्र बोलने का अधिकार है। संसार में पहले भी बहुत-सी किटुवी देविको हुई हैं जिनमें गार्गी, अदिति, लोफामुच, अत्रेवी, मैत्रेवी आदि के गाम हैं

भाईयो और बहनो। अब हम नीचे वेद गीता के कुछ प्रमाण अपने कथन पष्टि में प्रस्तत कर रहे हैं :-

1. ओक्ष्म करो स्मर (যনু 40/15) हे प्राणी। ओइम् का स्मरण कर।

2. ओक्ष्म् इति एकाक्षरम् जक्य (गीता 8/13) को मनुष्य ओआ ऐसे एक अध्य ब्रह्म का उच्चारण

करता है।) उपरोक्त स्पन्ट प्रमाणों के बाद भी श्री बटक शास्त्री की मत्र और ओश्म् का तच्चारण करने का अधिकार महिलाओं को नहीं देते। अगर इन के कचन को सत्य मान

लिया जाये हो :- ससार के बहुत बढ़े वर्ग को मंत्र पाठ से वॉचित रहना परेगा।

 महिला उपदेशिकाओं को उपदेश करने से रोकना होगा। अन्य स्प्रमान्य महिलाओं को

अनपड रखना होगा। ध्रमारी भाषी पीति को लिखित व मुर्ख होगी।

क्या हमारा समाज साध्वी ऋतम्भरा, निर्मला देवी डा सुनीति देवी, उमा भारती, मेघा देवी, डा सावित्री देवी, साध्वी कमलेश भारती, सुन्नी कुसूम लता, अक्नण सिन्हा व सुमापिणी देवी आदि के उपदेशों से

चित्र होना चत्हेना ? क्या ऐसी देवियां इन भ्रामक प्रचारको की तानासाही को चुपचाप सहन करॅग वा इमारी तरह इनको शास्त्रार्थ के शिए ललकारेंगी ? समय व इतिहास इन प्रश्नों के उत्तर की प्रतीक्ष करेगा। इन शंकराचार्यों के विरुद्ध विद्विमंगे को स्वय योर्ज संभातना होगा। डम सभी बद्धिओवी वर्ग एव

सर्वसम्बर्ध को आह्यान करते हैं कि प्रेसे प्रसित व स्वार्थी उपदेशको का प्राप्का फोड करें व वहिम्कार करें। इस ऐसे विचारों वाले फिसी भी उपटेसकों को सास्त्रवं के लिए सुली जुनौती देते 🕏 । वे पूर्व निश्चित स्वान, समय पर शास्त्रार्थ के लिए जाएं ताकि सत्व-असत्य का निर्णय सर्वजनिक हो सके।

### विश्व की ग्रेष्ठ बनाना है से इसाई

ले॰ भी विमाल वधावन एक्सेक्ट, बिस्मी

अवर्षि प्रचानन्द वा ने तीन राज्यो एक विज्ञाल लक्ष्य हमारे सामने । कण्यन्ते विश्वम् शार्विर्देशं ह्यदे हुम महर्षि द्यानम्ह जी को बनवर्षा की सच्चा हितेशी समझवै के क्रिक्ट से समझ

चाहिए। विश्य के नगरिको को श्रेष्ठ बनाने का आल्यान किप्त का उद्ध महान ऋषि ने। अपने उस आक्वान के क्रियान्वयन हेत आर्थ समाञ्च नाम का बनावन बनावन विराज्यत में बारे **का मत**ान कार्यक्रम रिया। श्रेष्ठ व्यक्ति बनाने की इस प्रक्रिया में आर्थ समाज ने जितने भी सधार वादी वा मानववावादी कार्यक्रम आयोजित किये उनमे कहीं किसी स्वान पर भी यह नियम नहीं जोडा गवा कि भलाई उसी की की बावेगी वो आर्य समाव का सदस्य बनेगा या किसी विशेष प्रक्रिया के तहत यह भोषित करेगा कि वह दवानन्द को मानता है। उसमे ईमान लाता है या वज्र आदि अन्य किसी प्रक्रिया का वपतिस्मा लेगा। आर्थ समाज ने कितनी भी मानवताबादी ग्रेवावे विक्रम को आर्पित की हैं वनके बदले में आर्थ समाजियों ने कमी किसी वस्तु या सहायता की कामना नहीं की।

दसरी तरफ किसी भी गत मतान्तर वा भवडब का नाम आते ही एक ऐसी प्रक्रिया या मोधणा की तस्वीर मस्तिका मे उभरती है जिससे गजरने के बाद ही व्यक्ति स्वय को दश मत या मजहब से बोह सकता है। इस जोड़ के लिए वे मत और मजहब भी उत्सकता से ऐसे मध्यिकारो करी प्रशीका कराते हैं।

आवकल वर्ष बड़ी वर्षा है है। चर्च का नाम आते ही एक यस प्रज्न किसी भी भारतीय राष्ट्रवादी के प्रक्रियाद से उठना स्थापाणिक है कि जिस किरोप स्थान या प्राना के चर्चकी बात ठो रही है वहा पर एक या दो दशक पूर्व हिन्दुओ की सख्या क्या थी इंसाईयो की सख्या बया ही और आज यह सख्य की खेल कहा तक पहुंचा है दसरा विशेष पहलू वर्ष के साम जुड़ा हुआ यह भी है कि चर्च का धर्म प्रचार पिछाडे था अनपक गरीब

नागरिको के मध्य ही क्यो हैं 7 उत्तर स्प्रह है-वर्ष के अुवैद्यानि किस्से अशोषमा पहे लिखे शीगी पु को पुरस्त की गते। दुई का के प्रलोभन भी गरीको में हर्गिकारगर Reg abb 81

and the same over water to कि विदेशों से करोड़ों अरबों रुपये प्राप्त करने वाला चर्च भारत की सरकारो द्वारा उपलब्ध करावे करे काने अनदान को भी ब्लाव बडी मात्रा में इंडप रहा है। इन सब तथ्यों के भावभूष कुछ मनगढना या जबरदस्ती पैदा की गई अव्यवस्थाओं को उत्पार करके कर दिलाने का प्रधास किया जा रहा है कि भारत ने ईसाइयो की वान खबरे में है। वस कि वासाविकता कष्ण और है।

विगत माह फिर एक सम्बचार सर्शियों में आया कि उद्योश्ता में कुछ र्रमाजयों के घर बला दिये गए। इससे पूर्व एक विदेशी मिसनरी

की हत्या के कारण भी एकान ताजा किया गया था। केन्द्र संस्कार ने सर्वोच्य न्याकलय के न्याक्यूर्ति शीटी पी वधवाची के नियन्त्रण मे एक आयोग भी गठित किया है। इस आयोग की रिपोर्ट ने यदि हत्या के कारणे की भी जनवीन की तो स्पन्ट हो वावेगी कि विज्ञानिरथों के विरुद्ध स्थानीय अनवा में आक्रोश क्यो पैदा होवा है और किस प्रकार डिसा भी नौबत आ बाती है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार इस मृतक के विरुद्ध पहले से ही स्थानीय जनता के हारा पुरिस में शिकावते दर्व वीं। पुलिस जब कार्यक्रही नहीं करवी तो जनता को स्त्रव पहल करनी पक्षती है इसी को सीधी कार्यवाही करा जाता है। इस विदेशी मिशनरी की इत्या से पूर्व के बच्चो पर उद्दीसा के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री पटनायक ने भी अपना वक्तव्य

मोनिया गांधी की अध्यक्षक ने चल रही काग्रेस नामक श्चिसियानी बिल्ली ने पटनायक बाब को ही नोच डाला और नमा मुख्यमंत्री गिरधर बाबू को नियुक्त किया। मुख्यमंत्री कोई भी हो

दिया या।

्राह्म के प्रविद्ध व कर्मंद्र कार्यकर्ता थी। ऋषिपाल सिंह भी किट की वर्ग पत्नी श्रीमधी कौतत्त्व ऋषि का 29.3.59 को रावि में देहावसीय हो गया। 30.3.99 को प्रमध्य अन्त्रेष्टि सरकार, पूर्व विक रहि। में योपतर के अबे सम्बन्ध हुआ।

बीमकी कौरतका आपि एक सबूध ही वार्षिक महिला की आर्थ राज के कार्नों में वह पूर्व क्रिय रीती मीं। स्त्री आर्थ समाम प्रकार कर par की यह अधिकारी रहीं। उन्होंने अपना चीपन अध्यापन कार्य हैं समाय केंद्र के कई कार्यें में ज्योर विकास पर वार्य समाय के की में अपने चीत ची*ठ* ऋषियाल सिंह भी की पर्न सहयोग दिया करती थी। उनके पक्षे बाने से जो स्थान खाली हुआ है उसकी पूर्ति असम्भव है। उनके चले चने से बहा परिवार को दु ख है वहा हम सब को भी है। उनका अन्तिम शीक दिक्स 3 4 99 को मनाया गया और 🖹 संस्थानिका मेंट की गई। इस सार्च प्रतिक्रिय राजा चैताव व आर्थ ह खाणारिक की ओर से उन्हें अनवी सक्क्षेत्रकि मेंट पहले हुए परन विका बेरकारण से प्रार्वण करते हैं कि वह उस दिवगकरण को सदगठि प्रथम करें और ची॰ ऋषिपाल मिस्र की को तक उनके परिकर को उनके वियोग को सहन करन की तकित प्रदान करें।

इस्पंत लाल सर्पा अध्यान क्यार शर्मा समा प्रवान सभा महाभन्त्री

### **इरोजवर सहर में रामनवमी पर विशेष शोभा या**त्रा

व्यर्थ सम्बन्ध रानी का वालाम । राति कले व्यर्थ प्रेमिनो की समि फिरोक्पुर रुक्टर में कार्य सम्बन स्थापना दिवस विवि 18.3 99 से राम नवारी सिमि 25 मार्च 1999 एक प्रकिदिन विशेष व≅ की व्यवस्था की गई विसमे कई वज्रमानो और आर्थ कन्धओ ने क्य चक्र कर भग लिया और परे 8 दिन स्ता की व्यवस्था को सुरतेभिय किया।

आर्थ समाय स्थापना दिवस के मौके पर आर्थ समाय को 21 वर्ष बाद बीजॉधर करके विशेष अप से सकता और सकत नया। वैसे को इस अवसर पर इस समान के रखरस्ताव के लिए बहुत से अपर्व प्रेमियो ने दान दिश्व परन्त 500 रुपए और उससे अधिक की

प्रशासनिक वध्यों से मुख् फेरना किसी भी समझदार राजनेता को राक नहीं अपनेगा।

यही कारण है कि यर क्लाने वाले बटनाक्रम पर प्रतिक्रिया व्यवत करते हुए इस वर्तमान मुख्यमंत्री को भी यह स्वीकार करना पढ़ा कि जिन ईसाइयों के भर जलाये गये वे उन्होंने स्थय पहले हिन्द परिवारों पर हमला किया था। त्रिशृत और फ़ास की लढाई हिंसात्मक रूप में अधिक

इस प्रकार है। श्री ओव मनि वी -1111 00 श्री की अवर गोयल-1100 00 ओम प्रकास वयन-1100 00

की एक प्रल सर्वा-1100 00 श्री सन्तोष कुमार-1000 00 श्रीमती सन्तोप कमारी-500 त्री विषय कुमार गलोत्रा-500 भी संधाप प्रनद- 500 स्त्री आर्थ सम्बन-३१०० रुपये

राम नक्षमी के श्रम शक्सर पर सनातन धर्म बुक्क सम्र फिरोबपुर जबर के सबबोग से आर्थ समाव की ठरफ से शोधा वात्रा में इवन थड़ राज्य आस्मारियक पत्रन करते हुए सारे शहर को सुगन्धित तक पवित्र बातावरण दिया गया।

सनीय कुमार बोड़ा (मनी)

दिन नहीं चलेगी ऐसा इमार विश्वास है क्योंकि हर स्थान पर फाली गलवी कास के द्वारा डी होदी है। त्रिशुल का प्रमोग तो स्थात्मक शैली में फिया जाता है। बरि कास का वास्तविक लक्ष्म mPa की स्थापना करना है सो उन्हें वासाविक तथ्यों के दुष्टिगत कालायतोष्ट्रन करन चाहिए और क्षबरदस्ती बर्मान्तरम की गीतियो पर रोकबान लग्ननी चाहिए।

सम्बद्धांच 💉

### आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन

पिछले पाच सालों से आर्थ प्रतिनिधि सभा यजाब (राजि०) गुरुवत्तनवन चौक किशनपुरा जासन्धर का कार्य बावरणीय परित हरबस लाल जी शर्मा सभा प्रधान जी के नेवत्व ने बड़े सचारू रूप में चल रहा है। इस पांच वर्ष के कार्यकाल में पंजाब सभा के क्षविकारियों एव अन्तरम सदस्यों के चुनाब विधिवत रूप से सविधान के अनुसार सर्वसम्मति से हुये और पंजाब सभा का पिछला चुनाव 27 अप्रैल 1997 को आर्थ कालेज लिंध्याना में हुआ था और यह चनाव तीन वर्ष के शिये हुआ था जिस में श्री पंडित हरबस लाल जी शर्मा प्रधान चने गये थे और इसी प्रकार सभा महामंत्री एवं सभा वरिष्ठ उप प्रधान का भी चनाव हुआ था और बाकी के पदाधिकारियो व अन्तरंग सदस्यों को इन चुने हये तीनो अधिकारियों ने साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार के आधार पर मनोनीत किया था और बस प्रकार से समा का काम ठीक दया से चान रहा है। पिछले कछ समय से पंजाब में कई लोगों के मन में थोड़ा सा ध्रम पैदा हो गया था जिस को मै दर करना चाहता ह ताकि आर्य समाजी भाई व बहिने किसी प्रकार की धानित का शिकार न हाँ। इसलिये मैं बसाना चाहता ह कि माननीय पडित हरबस लाल जी शर्मा सभा प्रधान के नेतत्व में हम सभी मिल कर एक जट होकर काम कर रहे है और इसी प्रकार से कार्य करते रहेगे। हंगारे समा प्रधान जी वडे सुलझे हये व्यक्ति है और बड़े दानी सज्जन है । कई बार लोग उन को ऐसी बाते टैलीफोन पर बताते रहते है जिन का कोई आधार नहीं होता और कई धार ऐसे पत्र भी लिखते रहते हैं जो बिल्कल डाठे और वेबर्नियाद होते हैं। जिससे सभा प्रधान जी को कई बार अनावस्यक कठिनाई का सामना करना पडता है और बात बीच मे कछ नहीं होती। इसलिये नेरी सभी से प्रार्थना है कि समा प्रधान जी को कोई भी व्यक्ति ऐसे टैलीकोन या पश्च न लिखे जिससे जन को अनावश्यक परेशानी हो। पिछने पाच वर्षों मे आर्य समाख का बहत काम हुआ है । प्रजाब प्रान्त में और दसरे प्रान्तों में आर्य समाजों ने बारत से वार्षिक उत्सव किये जिस में समा अधिकारियों ने बढ चढ कर भाग लिया । पिछले दिनो आर्य समाज भागेव नगर जालन्धर का उत्सव हुआ। इस समाज के कायकर्ताओं ने सभा की सहावता से बहुत बढ़ा उत्सव मनाया जिससे आर्थ समाज का बहुत प्रचार हुआ। इसके लिये मैं आर्य समाज भागंच नगर जालन्चर के अधिकारियाँ को बहत **बहत बधाई** देता है। इसी प्रकार से 21 मार्च 1999 को जिला आर्थ समा लुवियाना ने एक बहुत बढा सम्मेलन आर्थ समाज के स्थापना दिवस पर किया जिसमे लुवियाना जिला के आर्थ भाई व बहिनों ने बढ चढ कर थाय क्रीया और यह सम्मेलन जिला संबंद के प्रतासिकारियों ने श्रीभति राखेल गर्मा प्रधान विकार संबंद के नेतरक में और माननीय पंडित हरबस लाल जी हार्ग की बाधकार में किया और इस सम्मेलन को कामग्राब करने के लिये आवरणीय सत्वानन्य जी मुझाल ने बहुत सहायता की है । मै जिला आर्य सभा लुधियाना के अधिकारियों को भी मुकारकबाद वैद्या हू । इसी प्रकार पंजाब में और नी बहुत सी आर्थ समाजों ने अपने अपने कार्विक क्तय किये जो बढे सफल रहे। उनको **क्ष** मैं स**न्न** की और से श्चर बहुत बधाई देश हू। 12~4-99 को कुछ चूमि गुरुकुल कागढी हरिद्वार ने उत्सव हो रहा है और यह उत्सव की सन्ध प्रवान श्री हरवस लाल जी रार्ग की अध्यक्षता में होगा। श्री हरवस लाभ भी सर्च ने निक्यों वर्ष इस प्रस्तव पर बात बना लंगर सम्बन्ध का विश्व में जाठ-नी हवार कावितयों ने क्षेत्रन किया का और वंदित भी ने पहला कर्ता एवर बंदर की किया का और तरह कर की की

पश्चित हरबस (क्षल जी शर्मा की ओर से हरिवार में पण्य मिंग के उत्सव पर एक बढा इस्ट लगर लगाया जायेगा। इसलिये जो जो महानुभाव वहा पर जाना चाहें वह अवश्य जाये। लेकिन सभा को इस की पर्व सचना दे दे ताकि उनके रहने और मोजन उत्वादि की व्यवस्था की जा सके। मैं एक बात आर्य जनता का बताना वाहता ह कि भी प्रतित हरहस लाल जी हार्य के साथ मेरे फिस्ले 25 वर्षों से सम्बन्ध है और शरू से टी मै जनको अपने पिता समान समझता हू और वह भी मुझे अपने पुत्र के समान समझते है और इसी कारण हमारे में कभी भी कोई मतभेद नहीं होता इसी प्रकार आवरणीय डा**० के** के पसरीचा जी श्री सरदारी लाल जी ग्रिसीपल अश्विनी कमार जी शर्मा श्री कर्म बद जी माली आदि से भी मेरे पिछले 25 वर्षों से बहुत गहरे सम्बन्ध है और हम सभी एक दूसरे के बहत नजदीक हैं इसलिये हमारे में मतभेद पैदा होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। कई बार कई लोगो को लगता है कि शायद इन में मतभेव पैदा हो जाये इसलिये वह इन सभी महानमावो को तरह तरह की झठी बाते आ कर बताते रहते है लेकिन मैं ऐसे लोगों को बताना चाहता हूं कि यह सभी महानुभाव मेरे अपने हैं इसलिये हमारे में कभी कोई मतभेद पैदा नहीं हो सकता। मुझे इन सभी का आशीर्वाद प्राप्त है और सब से बड़ी बात यह है कि मेरे बुजुर्ग सभाप्रधान श्री हरबस लाल जी का मुझे पूर्ण आशीर्वाव प्राप्त । इसलिये मै सभी आर्य समाज के भाई व बहिनो से पार्थना करना चाहता ह कि आप प्रत्येक आर्य समाज ने जहा जहा भी थोड़े बहुत मतुमेद है जन्हे दर करने का प्रयत्न करे और सभी संगठित होकर आर्थ समाज के प्रचार व प्रसार के लिये काम करे और आर्थ समस्य में से किसी भी व्यक्ति को सदस्यता से निकाला न जाये और जिन व्यक्तियों को किसी कारणवहा आर्य समाजों की सबस्यता से स्थानीय आर्य समाप्ता ने निकाला है उनको तरन्त वापिस ले लिया जाये ताकि सभी मिल जुल कर प्रेम पूर्वक यार्य समाज का काम कर सके। पिछले दिनों चौधरी ऋषिपाल सिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया। मैं बाहर गया हुआ था। जब मै वापिप आया तो मुझे पता चला। मुझे यह दुखद समाचार सुन कर बढ़ा गहरा वख पहचा । चौबरी ऋषिपाल सिंह जी भी हमारे माई है। इस वस की घड़ी में हम सब जन के साथ है। मै जन से भी निवेदन करूगा कि आप भी श्री पंडित हरबस लाल जी शर्मा के नेतरत में आर्य समाज का काम करें। मेरी आय भी अब 57 वर्ष की हो गई है और पता नहीं श्रव आगे की आने वाली आय मे किस तरह होता है। इसलिये हमें एक दूसरे से लंडना नहीं चाहिये । समाज का काम करना चाहिये। इसलिये और भी जितने व्यक्ति मन मटाव के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा प्रजाब से किसी कारण वर्ग खसग हो गये हैं जनको भी मैं निवेदन करना चाहता **।** कि वह आर्य प्रतिनिधि समा पंजाब के प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा के नेतरव में मामिल होकर काम करे। एक बात में आर्य जनता को बताना चाहता ह कि सारे भारत वर्ष मे केवल कार्य प्रतिनिधि समा पणाब (रजि०) गुरुवत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्बर ही है जो नियमानुसार समिवत हो कर विवियत रूप से और सुवारू रूप से आर्य समाज के प्रकार व प्रसार का कार्य कर रही है और इस सभा का सगठन बहत नजबत है और इस सच्च की ओर कोई थी व्यक्ति शास बटा कर नहीं वेस सकता। इसलिये मेरी सभी आर्य बन्धओं से प्रार्थना है कि वह संगठन को गणबत करे और इकटठे मिल कर आर्थ समाज का काम करे।

अरियनी कुमार रामां एक्टोकेट सम्बन्धानी

#### अंग्रेजी से भारतीयता र हो स्वतरा

भी शतकरूप विद्व महासमित अविद्या प्रास्तीय भारत कार्याण कार्या

देश की अस्मिता के लिए उसकी भाषा बढा महत्वपूर्ण होती हे उसका परम्परा एव सस्कृति की वाहिका अपनी भाषा ही होती है। अपनी धाला के पति गौरव की भावना का दर्शन भारत स लुख होता जारहा है भारत जैस देश मे नहा साक्षरता आज भी एक स्पन र जहा सरकारा आक हो क अनुसार दश का आधादी क कल 2 प्रतिज्ञत लाग ही अग्रेजा जानत एव समझत है वहा अरोजी को

सपक भाषा की वकालत करने वाले कहा का सच्चाई तजागर कर रहे ह यह चितन का विषय है अपन राष्ट्रहित आर स्थाभिमान को गिरवी रखकर ये लोग जा अपना मातधाना का उपमान करत हैं क्या ये कभी रश का भला कर सकते हैं<sup>9</sup> मा लाग अपनी मातु भाषा छोड देत हैं व दशहोत्री हैं और जनता के साम विश्वासचात करत हैं हिन्दी का पत्रन अत्रीय राजनीति के कारण ही ठलका हुआ है अन्यया हिन्दी केवल देश में ही नहीं विदेशों में भी सम्पर्क सत्र का दापित्व पुरा करती है फिजा मारिजस मलेजिया जोर्डन ईराक सिगापर जैसे अनेक देशों में भा दैनिक आवश्यकताओं की पूर्वि म सहायक हिन्दा हा है वूरोप के विद्राना में स्वतंत्र चितन की डोड

ह भारताय विद्वानो म अनुकरण का अन्धा प्रतियोगिता का समावेश उनमे भाषायी स्वाभिमान है जबकि भारताय विदानों में भाषाई दासता (अग्रमा की गुलामी) स्नाई

#### हुई ह नेश की एकमा वे बाधक

श्राजाक प्रति नाकरशाण का व्यवहार देखकर ऐसा लगता है कि मेकाले जात गया आर हम आज भी गलाम हे सवाल अग्रापा का क्याध का नहीं है सवाल ता अग्रजियत क प्रति मोह का है। अपन ही भाईयों पर अग्रेजी के सहारे इकुमर करने वाले अग्रजा में ही सोधने वाले काल अग्रेजो को पेटा करने चाली मैकाल की शिक्षा नाति भारत पर इस लिए योपी गई थी कि वे अग्रेको के मानस पुत्र भारत का संस्कृति को नष्ट करेंगे

अप्रेजी देश में एकता नहीं स्तरी देश का विभावन करती है। हिन्दी का विरोध मात्र सकवित दृष्टि और राजनैतिक कारणे से हो रहा है बदि सभी भारतवासी सकसे पहले देश का जित सोचे देश की उन्नति सर्वोपरि माने और राष्ट्रीय प्रकार में जवित का दर्जन करे उसी में सन्निहित कल्याण को देखे तो यह भाग विवाद स्वबमेव समाप्त हो जसेगा।

#### जोबन का हथिया भारतीय भाषाओं से समीपता

का द्रष्टिकोण अपना कर ही हिन्दी को स्थापित किया जा सकता है। अटटारड सौ सत्तावन के गहर का विरोध करने वाले मुटठी भर अग्रेजी परस्त बाब लोग अग्रज भी नौकरताठी के प्रतिनिधि बनकर हिन्दी का विरोध कर रहे हैं। कोई भी देश एक विदेशी भाषा के आधार पर उन्नति नहीं कर सकता एक विदेशी भाषा आम बनता की **पाषा नहीं बन सकती। अग्रेजी** ने देश को दो बगों मे विभावित किया है। एक वर्ग शोमक है औ अग्रेजी के माध्यम से दसरे भारतीय ध्यमधानी जोनित वर्ग का जोनक कर रहा है यह देश की प्रगति के लिए मातक है।

इंग्लैंड के समीप होते हुए भी अपनी भाषा आयरित अपनाए हुए है और दूसरी ओर इजराइल है जो अपनी मातृशामा हिन् को अपनी राष्ट्रभाषा मोषित कर व्यवहार में लाने की डिम्मत रखता है हो क्या भारत प्रतना कायर है जो आजादी के ५२ वर्षों के बाद भी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्द को

एक ओर आयालैंड है जो

व्यवहार में लाना तो दर देश की सभा उच्च नौकरियो की प्रदियोगी प्रीक्षाओं में अचेडी को अनिवार्य बनाए हुए है। राष्ट्रीय अस्मिता का इनन

जो पब्लिक स्कूल कभी भारत मे अपनी भाषा एव संस्कृति को उन्नर बनाने के लिए तुरू किए गये थे वही स्कूल आब देश में अग्रेकियर के गढ बनकर राष्ट्रीय हैं। आकरों के इतिहास ने यह क्यांकित कर दिया है कि कोई भी मौलिक रोषकर्ता (प्रतिपासली) इन अग्रेबियत के गढ पब्लिक स्कूलों से देश को नहीं प्रापा हुना। प्रतिभा की दीड़ में अवरोधक

इन पब्लिक स्कूलो ने एक पेसे अधिकात्व वर्ग को जन्म दिवा है जिनकी भाषा कारजी है। अधेजी के हा कल पर वह वर्ग सरलता से कुर्सी पावा है। इसीलिए जैसे भी हो अप्रेची को बनाए रखने के लिए वह वर्ग इमेशा कोशिल मे लगा रहवा है। प्रतिभा मूल्याकन की खुली दौड मे इस वर्गका स्वय पर विश्वास नहीं है। इसी कारण प्रतिमा मुल्याकन मे खुली दौढ़ का यह वर्ग हमेशा से विरोध करता आ रहा है।

#### देश का निर्माण भारतीय भाषाओं से प्री

अग्रेजी के प्रभूत्व का शिकार अकेले हिन्दी ही नहीं है सभी भारतीय भाषाये अवेवी की दासी बनकर रह गई हैं। हर प्रदेश मे अरोबी भाषी अभिजात्व वर्ग ने उच्च सरकारी पदो पर कन्ना बना रखा है। इनकी भूमिका अग्रेजो की तरह फूट ढालो और राज करो की साम्राज्यवादी भूमिका से अलग नहीं है। ससार में कोई भी देश ग्रेस नहीं है जिसने अपनी मातधाना की भूलाकर किसी विदेशी भाषा के माञ्चम से प्रगति की हो स्वतत्र भारत के नागरिक भाषा के नाम पर रचे गये अग्रेखों के बढवा की पहचान कर ही अस्मिता की रक्षा कर पायेंगे। भारत का स्वाभिमान भाषाई मृत्यु शैय्या पर अतिम सासे गिन रहा है जिसे व्यवहार का अमृद पिलाकर अमर करने के लिए देश की यवा शक्ति को स्वाभिमानी पूर्वको से प्रेरण लेकर कर्मको की बगबोर अपने शकों में लेने की अरचना आवश्यकता है। सन्द्रीय प्रवास प्रथ मीरव की कावान मिन्दी ने ही स्वसंत्रता के आन्दोलन को परिगवि सक पहुचाया था अपूर्णिक भारत का निर्माण अग्रेजी से नहीं भारतीय भाषाओं के पाञ्चम से ही संभव हो सकता है सगठन को समर्थ की जबित दे

अखिल फारतीय भाषा सरक्षण सन्दर्भ ने इस मर्म को समझा है इसीलिए देश की सर्वोच्च नौकरिये प्रवियोगी परीक्षाओं में भारतीय भागओं को लाग कराने एव अग्रेची की अनिवार्वता सेमाप्त कराने के लिए ससद के दोनो द्वारा सर्वसम्मवि से पारिव ससदीय सकल्प (18 अनवरी 1968 को लाग कराने के लिए पिछले त्स वर्षों से सब लोक सेवा आयोग भवन के मुख्य द्वार पर धरना देकर समर्थ कर रहा है समर्थ के इस चौर में कई अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षाओं से अग्रजी की अभिर्वायता समापा कराने मे तो सफलक प्राप्त हुई है किन्तु सर्वोच्च नौकरिबो पर अपना प्रमुख बनाए रखने वाले अभिजात्व वर्गने आयोग की परीकाओं से अयेत्री का वर्षस्य समाप्त करने की दिशा में कोई तोस कार्यवाही नहीं की है जो कि भारताय भाषा भाषियो के लिए दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है इसीलिए हम सभी भारतवासिया का आस्वान करत हैं कि भारतीय भाषाओं की अस्मिता की रक्षा क **लिए आप जागे आए और संग**डन को इस समर्थ में शामिल होकर अप्रधुनिक भारत का निर्माण करन से सहस्राण वन



## ऋषि दयानन्द के सराहनीय कार्य

#### ऋषि करात्रण की कीम सी बात आपको क्योकान नहीं ?

इम आर्व समाजी सन्त्रतनी, सनातन

भवित एक ईश्वर की करो । सन्ध्या

हवन, बड, गायत्री मत्र, महामत्र

का जाप करो यह ईस्वर की भवित

व जान है । सारो वेटों में इसका

समाज केवल एक ईश्वर की

भवित व वपासना करता है। कछ

लोगो को निराकार, एक ईस्वर

की भक्ति अच्छी नहीं लगती.

इसलिये वह निन्दा करते हैं। पूजा

करो तो एक ईश्वर की करो और

किसी की पुत्रा ईश्वर पुत्रा नहीं

है। ऋषि दयानन्द ने कहा मान

दो. सम्मान दो. इच्चव दो । देश

के महापुरुषों के उपदेशों पर

वलो । अवः बद्धिजीवियो ! सत्य

को सत्य कहो। देश धर्म, समाच

बात पात, ऊच-नीच का भेद

मिटाया। मनुष्य को मानव का

दर्जादिया । खुन का रंग सक्का

एक है। धटकन सक्के दिलो की

एक है। मनुष्य मात्र का ईश्वर

एक है। सब एक डोकर रही ।

ने मास खाने को पाप कहा है।

मास खाने वाला रहमदिल नहीं

होता। कादर अदमी कमशेर का

मास नहीं खाळा अपित कमजोर

भारतकासियों की मादभाग हिन्ही

है मातुभाक मां है, देश पिता है

बैसे माज-पिता अनेक बच्चों को

एक साम पालते हैं इसी तरह

भाषा छोटे से लेकर बड़े तक

अनपद से लेकर पढ़े वक देश के

हर वर्ग को ओक्सी है। देश की

वय मेरा कहते हो वो देश पर मर

पिटने, कु**र्वान होने, बरिवदान** होने,

सहीद होने को तैयार रहना है ।

की मदद व रक्षा करता है।

13 भाषा देश

12 मांस : ऋषि दयानन्द

एकताको बढावादिया।

11 भेरभाव : कुल कृत,

को आगे बद्धाओ।

10 आर्थ समाज : आर्थ

9 द्वपासना : उपासना व

धर्मी हैं।

गणगान है।

- ग्रेंक्सर : आर्थ समात्र एक का. सम्दि के कारम्थ से पहला ईश्यर की स्तृति, प्रार्थना और उपासना ग्रंथ है। वेद सनावन है। आर्य करता है। ईस्वर सच्चिदानन्द क्षम समाजी वसी एक ईस्वर को मानता सुष्टिकर्ता है, एक ईरक्त को सारा है जिसने वेदवाणी उतापा की। संसार मानवा है। कोई मद, मबहन ईस्कर सत्य है, सनातन है इसलिए एक प्रेंक्टर का विरोध नहीं करता। मनव्य मात्र की एकता का प्रतीक एक इंस्कर को भागना ही है।
- 2 वेद: वेद ईश्वर की वाणी है। वेद इंस्कर का पहला वर्गग्रंथ है। किसी एक गत वा सम्प्रदाय के लिए नहीं बना मनुष्य मात्र के लिए ज्ञान का भण्डार है।
- 3 शिक्षा : शिक्षा के निर्मित्त स्कूल, कालेब, गुरुकुल खुलवाये रिवयां शिक्षित हो, उनमे भी शिक्षा का प्रचार किया। ज्ञान विज्ञान को फैलावा। मनुष्य मात्र ज्ञानवान बने ताकि देश. वाति. समाज, परिवार का ठडार कर सके।
- 4 विश्ववा : विषयको की सतायता करके समाज परिवार के दु-खों का निवारण किया। आज आर्व समान की सारा देश सराहना करता है। विथवा स्त्री के द:स्त्रो पर मरहम लगाई। विश्ववा आक्षम बनवाये ।
- s अनाव बच्चे : वे-ंघर. बेसहारा अनाथ बच्चो को सहारा दिया जिनको कोई न पुरुष्ठे उन बच्चो के लिए अनावालय खुलवाये।
- 6 मिला: महिलाओं को शिक्षित किया। पुरुष का आधा अंग बताकर समाज मे मान दिलाया। मात्रशरीत का नाम दिया। बाल विवाह, सती प्रचा का विरोध किया। आज महिला शिक्षित होकर कचे कवे पदो पर उत्तरदायित्व सभाक्ष रही है। मख्यमंत्री व देश की प्रधानमंत्री तक बनी :
- 7 वृद्ध: वृद्ध, वृद्धो वहो की इण्जत और मान बढ़ाया और कहा, **इं**रवर की बनाई जीवित मूर्वियो की ठफसना करो। जीवन पर दया करो। वो सुख-दुख अनुभव करती है। वृक्षों का मरने के बाद श्राद्ध करना व्यर्ग है। जीवरों की पूजा सेवा करने से बढ़ कर कोई पुरूप नहीं।
- 8 सन्तरानका : आर्थ समाज वेदों को मानता है। वेद ईश्वर की माणी है। येदों को मानने माला वैदिक वर्गी है। वेट ईस्पर के जान

#### भारत में नी लाग्य क्वं बगाने का लक्ष्य

ईस्क्रयों की योजन का पत चलता है इंसाइयों के लिए चारी मिश्तन मैंडेट (आजपत्र) से 1 मिलन मैंडेट एव्ड 447 'हमारा लक्ष्य भारत के प्रत्येक गांव (भारत में पाच लाख गाव हैं) में और शहरो की प्रत्येक कालोनी (बस्ती मोहल्ले) मे कल मिला कर नी लाख चर्च निर्माण करके उन श्रेत्रो में ईसा को मानने वाले समदायो का

निर्माण करने का है। भिज्ञन मैंडेट में डी मिलनरियों द्वारा किए जा रहे कार्यों का खलासा इस प्रकार है-

प 471 नागपर का फैहरे-शन आफ एवेन्जलिकल चर्च अपने 2,60,000 रुपये के नार्षिक क्वट के द्वारा प्रति वर्ष 700 लोगों को ईसाई मत की दीक्षा

प॰ 470 चेलाई की केण्डस मिशनरी प्रेअर बैंड प्रतिवर्ष के अपने 145 करोड रुपये के बजट के द्वारा 3400 लोगो को ईसाई बनावा है।

पु॰ 475 नई दिल्ली की इण्डियन एवेन्जालिकन टीम अपने 40 लाख रूपये के वार्षिक बजट के द्वारा प्रतिवर्ष 2000 लोगों को ईसाई बनाती है । ऋषि दयानन्द ने कहा भाषा और

देश मा बाप है। 14 माख - गाव हमारी माता है। क्योंकि गाय से मिलने वाली हर चीज हमारे लिए लाभकारी

है। गाय का दूध पूर्ण अवहार है, गोबर से ईधन मिलता है. यत्र से औषधिया बनाई जाती हैं। यहा तक कि मरणोपरान्त भी गाय की हर चीन काम आती है ।

15 शक्ति : मेरा धर्म ईश्वरीय ज्ञान है सारे ससार को मानने का अधिकार है । अपना वेद ज्ञान सारे ससार को सनाओ. आर्थ चनाओ। पाकिस्तान नहीं क्तवा अगर शब्दि की होती । जितने मुसल्भान, औरगवेब ने बनाये उन सक्को वापिस अगर लिया होया उनको सुद्ध कर दिवा हरेता. तो न पाकिस्तान बनता प भारत भारत कटती। आज भी देश

पु॰ 477 मणिपुर का राज-थानी इम्प्यल का कको करिश्चयन चर्च 20 लाखा रूपये के अपने वार्षिक कवट के द्वारा प्रतिवर्ष 100 लोगो को ईसाई बनाता है और ककी चर्च ने आगामी दस वर्षों मे 100 वर्ष बनाने का लक्ष्य निश्चित किया है।

पु॰ 476 अमलापुरम के मन्ना फुल गास्पेल मिनिस्टीज अपने एक करोड रुपये के क्षषिक बजट के द्वारा प्रतिवर्ष ३००० लोगों को ईसाई बनाती है। विगत पाच वर्ष में उसने 15 हजार लोगी को ईसाई बनाया है।

कोटा (राजस्थान) की एम्मेन्य-अल बाइबिल इन्स्टीट्यूट अपने 70 लास रुपये के वार्षिक बजट से प्रतिवर्ष 4 हजार लोगो को ईसाई बनाती है।

आखिर ये मिलनरिया भारत का इंसाई राज्य क्यो बनाना चाहती है? इसका उत्तर मिलता है मिशन मैडेट के इस बाक्य से कि '' आने वाले सन 2000 तक भारत में बहत बड़ी सख्या मे प्रभु ईसा के अनुवायी बनेगे और भारत में सामाजिक व राजनीतिक जीवन मे अपना प्रभाव स्थापित अदेगे :'' भारत के राजनैतिक नेता जो इंसाईयो को प्रीत्साहन दे रहे है बह इस रिपॉट पर विचार करे ।

में हिन्दुओं की आबाद घटाने की चेथ्य कर रहे हैं। लाखो करोडा रुपया दसरे देशों से आ रहा है। देश के नौजवानों, देश के धनवानों होशियार हा आओ फिर दोबारा पाकिस्तान बनने की गलती न होने पाये ।

16 ऋषि दयानन्द · ऋषि द्यानन्द ने कहा, मेरी मति न बनाना मेंद्री पंजा ना करना । मैं ईश्वर का भक्त हु। मेरी मुक्ति ससार क कल्याण में है। ऋषि दयानन्द ने अपने लिए कोई मन्दिर, समाधि धर्मगदी नहीं बनकायी, दौलत खजाने इकद्रे नहीं किए । ऋषि दयानन्द ने वो कुच्छ कहा बुद्धि से समझो ज्ञान विज्ञान से परखो । जो सत्य हो उसको मानो । अंध विश्वास से बचो। ज्यादा समजना हो यो आय समाब में आओ। आफ्का स्वागत

ओम प्रकाश खुन्ता आव.

## वार्षिक चुनाव

आर्थ समाव पीपाड का नव खण्डेलवाल। प्रवार मंत्री : श्री निर्वाचन श्री देवराज जी घोका की अध्यक्षता में सम्भन हुआ जिसमे निम्न व्यक्ति सर्वसम्मित से चने गये।

प्रधान : श्री बकाइर लाल विष्या। उप प्रचान : श्री पटमसिक आर्य। मत्री : श्री चम्पा लाल आर्य। उपमत्री : श्री राधेश्याम वैष्णवः। कोशाध्यक्ष - जो शिवरत्न आर्थः प्रस्तकाच्यक्ष : श्री अमरश्रन्द शकः। लेखानिरीक्षक: श्री वजवल्लभ

गत वर्ष से आर्य समाद चम्बा

भंबरलाल । कार्यकारियी के सहस्य

ा सर्वश्री देवेन्द्र टांक, 2. शंकर लास आर्थ, 3 बगदीश आर्य, 4 मंगीलाल आर्य, 5 भेराराम मेचवाल, 6 प्यारे लाल आर्य, ७ अमरचन्द आर्य, ८. मदन लाल वैष्णव, १. विश्वव कुमार आर्थ 10 घनश्याम सोनी 11 राम किशोर सोनी।

-चम्मा लाल आर्य मन्त्री

मे अध्यवन हेत् योग्य छात्रों का

आक्रान किया जाता है प्रवेश

कभा उतीर्ण भ्रॉ अपने साथ अपना

पूर्व रीक्षणिक प्रमाण पत्र, चरित्र

प्रमाण पत्र एवं परिचय पत्र साथ

लावे। पठानकोट से बस हारा

चम्बा पहुचे। विशेष जानकारी हेतु

दरभाष 01899 23313 या पत्राचार

से सम्पर्क करे।

प्रवेशार्थी आठवीं या दसवीं

### र्मार्ड संस्थाओं का पद्यन

में संब लोक सेबा आयोग के हार पर विश्व का समये लम्बा करण देकर बैठे हैं और अ॰ था॰ प्रविमोगी वर्ध के जार जरू नार जार जारा । परीक्षाओं मे देशी भाषाओं को मान्तम स्वीकार करने संग्री उनकी प्रमुख मांग के समर्थन में व्यापक सब्द दक्कथ पैदा हो रहा है, तक से ईसाई मिशनरियो द्वारा संचालित शिक्षा सस्वाओं की गींद उड़ गई है। भारत में भारतीय भाषाओं का अभिषेक वनों देश निकाले बैसा प्रतीत हो रहा है इसलिए उन्होंने हिन्दी के बिरुद्ध युद्ध हा आस्त्रम किया है।

इस अराष्ट्रीय और देशमा मनोवृधि का रहस्कोद्बाटन ईसाई विद्यालयों और अस्पदालों के कामकाब से सम्बद्ध सुप्रीम स्प्रेसस्परी ऑफ क्रिश्चियन्स के एक गोपनीय पत्र से हुआ है। इस संस्था का कार्यालय एर्मकुलम (केरल) मे है। उथत एव सस्या के अध्यक्ष डेविस बामस ने देशभर के ईसाई स्कूलों के अन्यत्मकों (किन्हें वे 'फादर', 'मदर' सचालकों (जिन्हें वे 'फादर', 'मदर' कहते हैं) को लिखा है । यह पत्र डन सेकुलरों की भी आखें खोलने वाला है वो ईसाई स्कूलो और अस्यक्तलों के 'ठच्च स्तर' तथा 'सेवा भाव' की प्रशंसा करते नहीं क्य क्योंकि इससे ईसई निज़नरियों की कृटिलक, सेवा और शिक्ष के मुखीट भारत की संस्कृति पर इनले, अपनी सस्थाओं के मांच्यम से अभारतीय बना दिए गए उच्च अधिकारियो द्वारा सरकार पर प्रभुत्व जमाने तथा बहुराष्ट्रीय कम्प्यीनवाँ से मिलीभगत

प्रिय कार्यः/मध कुछ समय से वह देखा का रहा है कि कुछ हिन्दी समर्थक संगठन सरकारी सेक्जों में उच्चतम स्थान अर्थित करने की दृष्टि से प्रवेश परीक्षाओं/प्रतिबोगियांको मे अग्रेबी वारी रखने का कहाई से विरोध कर रहे हैं। उनका मुख्य नारा नह है कि अंग्रेषी को आई० ए० एस०, आई० पी॰ एस॰, आई॰ एफ॰ एस॰, आई॰ ए० आर० एस०, इन्बीनियरिन, एम० बी० बी० एस०, आदि से पूर्णस्य स्तरण कर उसकी जनह हिन्दी को

श पर्दोफाश होता है। यह पत्र स्वय

में अपनी कहानी खुद करना है, बिस पर अधिक टिप्पणी की आवश्यकता

नहीं यहा उस मूल पत्र का अविकल

हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है-

क्षान कर उन्हार नाह हुए । जा अनिवार्थ बना देना पाहिए। यह बहुए गम्मीर स्विटि है और रस्थित स्कूरों के अस्टित्ब के लिए क्षत्रत बन मई है।

ऐसा प्रचीत होता है कि ने संग अपने प्रमुखों में सफल हो ना तथा एकरे पन्तिक स्थूलों और मिरानये संस्थाओं के दिवों हमा हम के लिए क्षणक सिद्ध होंगे। अवर्रः आर्ट दी॰ इस्त संभातिस

वीनवरित परीकाओं से जीवे विभावनीत प्रमाण करने के कर प्रतिकार स्कूतों की बहुत की पत्रक पूर्विक स्कूतों की बहुत की पत्रक पूर्विक हैं। प्रतिकारकरं, को फर्ट कार्क सर्वात होते में कार्य प्रश्न शिक्स कार को थे, भी जन्मी संस्था पत्रक

मात्र ६६ प्रक्रिसत्त रह गई है। परि चर्तमान स्मिति को और नारी रहने दिना गना को प्रस्त सरकार न सि प्रजेश परीकाओं से अग्रेकी की वर्षत ताल कर देगी बरिक का दिन भी दर नहीं होगा, शब का युः पी० एस० सी०/ एस० एस० पी० और ऐसी ही अन्य किसा सस्याओं द्वारा संचालित प अग्रेकी माध्यम देने पर ही प्रक्रिक लग्त देगी।

इसका हमारे छात्रों पर गम्बीर असर प्रोप्त क्योंकि ने बिना अंग्रेकी माध्यम के इस प्रकार की प्रवेश/ प्रतिकामी पर्वश्वाओं में प्रतिस्पद्ध करने योग्य नहीं रहेंगे। इससे कान्वेट शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव पढेगा दका अतत इमारे पक्लिक/कान्बेट स्कूल बद हो जाएगे । इसके बाद इसरे बच्चे भा सरकार में उच्चतम स्थान प्राप्त करने योग्य नहीं रह व्यक्ति । जबकि शर्तमान स्विति में को अधिकारी इन उच्चरम स्मानो पर हैं, ये हमारे अपने छात्र हैं और केमल उनके कारण, ही जो हमारे आज्ञाकारी अनुयायी हैं, यू० पी० एस० सी० (संब लोक से आयोग) की परीक्षाओं में अग्रेजी माध्यम् जारी है। बद्यपि संसद इन परीकाओं में फिन्दी को अधिव्यक्ति के अभिवार्य माध्यम के रूप में बोपने का प्रवास कर रही है।

वर्षि इमारे कान्वेंट शिक्षित तुषायी, जो आई० ए० एस०, आई० एस०, आई० एफ० एस० आदि 🛊 और अब सरकार में उच्च स्थिति पर है, वहा धविष्य में नहीं हुए तो इमारी समस्त सामाजिक व्यवस्था और कार्यक्रमो का जंत हो ए**व और न केवल सरका**री सहायत विसीय स्वीकृतियां, भूमि और ऋण की सुविवाए आदि जो अब उपलब्ध हैं, बन्द हो नायगी, बलक हम भविष्य बार्यस्थेन संगठनॉ/कम्मनिनो का

सहयोग और अवशीबाद भी नडी प्राप्त कर सर्केंगे। ससद में अंग्रेकी इटाने के लिए बार-बार ठठने बाले प्रश्न और हमारी अग्रेशी माध्यम लॉबी पर लगतार दबाब इन्हरे लक्ष्य और उद्देश को कमचोर कर रहे हैं। इसलिए का नवार कर रह है। इसाराध्य स्वत्रकारी पूक्त सेक-विकास के बाद अब हमारे सामने एकमेश बाहे उस्था बच्छा है कि हम स्थम को तूरेंग हो हम प्याचों के विकद्ध टैपार कर और इसके शिय हमें अपने समी में चेराण कराणी होगी कि वे तिन्दी माध्यम की प्रलंश करने वाले राज्ये के बिरुद्ध अपनी आव्यान उठाए । इसके हि

स्तर्भवा सं चुढ़ तर पर करणाह स्रत्भे को अन्यस्थ्यक है, चरण इनें सम्भातने में बहुद देर हो स्क्वेगी: इस संबंध में आपसे प्रार्थण है कि जाप इनें अपने कार्से द्वार स्वित्त तस्य जान हान अपन कात होते बावत रास्त्र प्राप्त कारने के लिए परिचन के करने के कोर में अपनी सम्मति पेनें। कृष्ण यह भी हनें बताई कि इनारे कार्ते हत शुरू होने कारत संग्यं चौषीकारी दर्श पर क्रावारित ही क् अन्य स्पर्न में कारके पुरस करत की प्रत

त्वासे युद्ध स्टर्गण का

### वैदिक उपरेशक विधालय वस्ता में एका वारम्भ

आरम्ब है।

मे वैदिक उपदेशक विद्यालय चलाया वा रहा है। इस विद्यालय का पाठ्यक्रम पूर्वतया आर्च (गुरुकुलीथ) है। वेद, वेदाङ्क, दर्शन आदि सम्पूर्ण वैदिक वाहमय पठन पाठन का मनोरम एव उपयक्त स्थल है। इस विद्यालय का लक्ष्य परोहित, प्रचारक, भजनोपटेशक एव आर्य समाज के

लिए ठोस विद्वान बनाना है। इस विद्यालय की व्यवस्था

पर्णतया नि:शल्क है इस विद्यालय धर्मदेव आध आधार्य

### नवम—श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार-1998

आर्थ समाज सान्ताकृत्व द्वारा सचालित नवम श्री मेघवी भाई आर्थ साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविध्टिया आमन्त्रित की आधी हैं। यह परस्कार मस्कत निवासी श्री मेघबी भर्छ नैनसी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कनकसिंह मेचनी भाई के आर्थिक सहयोग से प्रारम्भ किया गया था। परस्कार समारोह प्रतिवर्ष जुलाई माछ के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है

ठद्देश्य :- आर्य साहित्य के लेखको को पोलगहित करने के ठदेश्य से इस पुरस्कार की प्रारम्भ किया गया है। जिन लेखको ने आर्थ समाज की सेवा अधिकवम साहित्य लिखकर की है. उन्हें इस परस्कार से सम्मानित किया वाएगा।

**पुरस्कार --पुरस्कार** प्रापा लेखक को रुपमे 15,001/~ की राशि रक्षत् द्वापन्ने व शाल से सम्मानित किस्य जासेगा।

निकार :-- १. जिस मार्थ विद्यान ने बीवन पवंना वैदिक साहित्य के धार आर्थ बागक की अधिकतम सेवाकी हो।

2 जिनके प्रकाशित प्रन्यों का सम्बन्ध आर्थ समाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धाना अथवा आर्थ महापरुषों के जीवन आदि से है. वे ही पुरस्कार की सीमा में माने जार्वेंगे।

3 ग्रन्थ लेखक को अपनी स्परत रचनाओं की दो-दो प्रविया आर्य समात्र सान्ताकुन्त्र (प.) मुम्बई को भेजनी होँगी। एक चार ग्रन्थ प्राप्त होने के परचात पुन: अगले वर्ष भेजने की आवश्यकता वर्षी होसी ।

4 लेखक का चयन एक समिति करेगी जिसका मनोनयन आर्थ समात्र सान्ताक्कृष करेगा। व्यर्थ समान सान्ताकुन की अन्तरेग समा का निर्णय अन्तिम निर्णय माना अपूर्गाः

5 इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्रन्थों की दो-दो प्रविश्रं संयोक्क वार्य साहित्य पुसकार आर्य समाज सानाक्रज पुर्म्य 54 को दि, 30 मर्ब 1999 वक भेकी की कथ कों।

देव रत आर्थ ( संबोधक )

#### आर्व समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार तुषियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस

कार्व समान स्वामी त्रद्धानन्द प्रकाश डाला और वन साधारण बाबार (साबून काकार) लुपियाना मे को उनके द्वारा दर्लाए गए मार्ग 21.3 99 को दोफर कद 2 से 6.30 पर चलने की प्रेरणा की श्री क्ये एक आर्थ समाय के प्रधान हा आसान-द वी आर्थ ने सपने पाषण रमेश जी गुफा की अध्यक्षता में आर्थ में कहा कि यदि हम अपना जीवन समाक स्वापना दिवस करे ही सफलवा पूर्वक व्यवीत करना चाहते हैं तो इसके लिए महर्षि इचेंल्लास के साथ मनावा गया। वैद मत्रोध्वारण के साम इस समारोड का दवागन्द की शिक्षाओं पर चस्त्रना सुभारम्य हुआ प योगराज की सारवी अति अनिवार्य है। नकोदर से आए ने इक्श करवाना व स्वामी जी के प्रसिद्ध आर्थ समाची विद्यम की बीवन से संबंधित मधन प्रस्तत किए.। इस राव की आर्थ ने सभी श्रोताओं आर्व समाब साथन व्यवार के मंत्री को जार्वकरने की प्रेरण की। श्री भीभ सरीन व **भीका वर्मा को** महामन्त्री श्री ओम् प्रकार टप्ट्रव प्रकारन का यह सक्रण करने का ने आर्य समाज के इतिहास पर सीभाग्य प्रत्या हुआ। आर्थ प्रतिनिधि प्रकाश डालवे हुए कहा कि जो सभा के उप प्रधान श्री सरदारी लाल लोग अपने अतीत से प्रेरण लेकर थी आर्थ रत्न इस समारोह के <u>म</u>ुख्य भविष्य के लिए अग्रसर होते हैं अतिथि थे। विभिन्न संस्थाओं एव वे विश्व इतिहास मे अपनी अभिट समाजो के अधिकारियों व सदस्वी बाप लगते हैं। हमें आर्य समाज ने पुष्प मालाओ हारा उनका इहर्दिक के समृद्ध व उज्जवल इतिहास से स्वागत किया। आर्थ समाज के प्रेरणा प्रहण करनी चाहिए। मुख्य परिश्रमी व संयोग्य प्रवान का रमेश अविषि श्री सरदारी लाल जो आर्थ गुचा जी ने मोमैन्टों द्वारा अवर्ष समाज रत्न ने कहा कि स्वर्षि स्वास दाल बाबार के वरिष्ठ नेक्कों सर्वश्री पहले भारतीय बाल ब्रह्मचारी ये शबेन्द्र जी टीव्यन भी सत कमार विन्होने केवल भारतीय समाव वी आर्थ प्रक्रिगिय समा के उद्धाधन एंव भारत देश के लिए वेसा प्रण एक व्यर्थ समान इमीचगण के प्रधान लिया और अस्वीवन राष्ट्र एव समाब करुपाणार्व प्रवलातील रहे शक्क परिश्रमी कार्य विकारधारी के प्रवत समर्वक श्री आतानन्द की आर्य और इसी प्रयत्न में उन्होंने अपना तथा श्रीमती विनोद गाथी आर्य जीवन वरिनदान कर दिया। आर समाब फील्डगब के प्रवाप श्री वापन आवश्यकता है कि उनकी राम भी एव श्रीमरी लीलावरी कपुर शिक्षाओं पर चलने का प्रवल **!**मार थी. स्कूख के ओनखे.राज सनी किया वाए। आर्व सीनियर सैकेण्डरी स्कूल अत में आर्थ समाज के

(लुवियाना) के पूर्व प्रवानाच्चर्य व महामन्त्रा श्री ओम् प्रकाश वी कार्य समाज के नहामत्री ओम् प्रकार टच्डन ने आर्य अग्राय महर्षि इच्छन आर्थ समाथ के वरिष्ठ दयानन्द बाबार आर्थ समान रुपप्रधान तथा भारतीय जनता पार्टी फील्ड गर अवर्थ समाज इजीव लियाना के प्रवान श्री इस्वस लाल गब आर्थ समाब अग्र नगर आर्थ सेंठी उप प्रधान श्री जगरनाय जी समाज फोकल प्यावट एव विभिन्न शर्माची शाम लाल बी व श्री लिधवाना की आर्थ समाजो से भौरीशकर जी किच्चा श्री नवदीप आए अधिकारीगण एव सदस्यमणी की पहरूप कोकम्पध व श्री डीक्कल का समसीह में प्रधान के रिप बी मोदिशल ने मुख्य अतिथि को बन्यवाद कि<u>का</u> और विभिन्न सस्याओ आप सीन्य संकेष्ठरी स्कूल वंबानन पुलिक स्कूल शाले भेट कर सम्मानित किया। महर्षि दवानन्द का विकारवारा के लीड ब्तम्भ आर्थ प्रतिनिधि सभा प्रधास कार वी स्कूल किन्छविकारियो के उपप्रधान श्री सरदारी लाल बी प्रधानाचाची व पूर्ण सहयोग कि लिए उनका धन्यवाद विकाश द्वार्यकत् स्पृति पाठ हुम्म और स्कूला डेप्स् उक्तने के लिए प्रार्थना की व्यक्तिका आर्थ राज ने आर्थ समाथ के प्रकार विद्वान का बाल कृष्ण जी औ हरवस शाल सेठी व श्री कमल किसोर को काले भेट कर सम्मानित किया। हा बाल कृष्ण भी शास्त्री े अपने अवि उत्तम प्रवच या। कार्यक्रम प्रभावकाली भाषक हाल महर्षि भहत सक्त रहा। देवाकद और उनके चीवन दर्शन पर -बोम प्रकाश दश्यन महासनी आर्य समान अनबासा का उत्सव सम्पन्न

आर्व समाज अवनाला (जिला अमृतसर) का वार्षिक उत्सव बहै समारोह से 21.3 99 से 28.3 99 तक मनास्य गवा। इ.१ असंसर पर 28.3 99 को नव निर्मित यज्ञ शाला का उद्घाटन किया गया। इस यज्ञराला को बनाने में मारा प्रकाशवती भी स्वी अवर्थ समाज

के सदस्य व पुरुष आर्थ समाव के सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। 28.3 99 को इस समारोह मे आर्थ केन्द्रीय सभा अमृतसर आव समाज शक्ति नगर अमुस्पर आर्थ

समाज लक्ष्मणसर आर्य समाव श्रद्धानन्द बाजार अगुतसर जार्थ समान पाढल टाउन अनुतसर के सभी अधिकारियों व सहस्तों ने भाग लिया। आर्थ प्रतिनिधि सभा पदाव के महोपदेशक श्री विजय कुमार वी सास्त्री व भी सतीश संभाव मण्डली के उपदेश व भवन हुए।

अमृतसर से पथारे केन्द्रीय सभा के प्रवान श्री दर्शन लाल जी श्री दिनेश की सुपुत्र श्री सत्यपाल पश्चिक के भजन श्री नरदेव राज वी तथा दूसरे कई महानुभावो ने अपने विचार प्रकट किए।

> अमृतसर की सभा आर्थ समानो ने आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया और उत्पन्न की सफलवा के लिए भी पर्ण सहयोग दिया। दयानन्द थाम अमृतसर से पथारी माता जगदीश रानी का भी पूर्व सहयोग रहा।

> इस अवसर पर अतर्व समाज क्रकनारम की तरफ से अमतसर से पचारे महानभावी तथा कई स्थानीय महात्रभावो को सम्मानित किया गया । कार्यक्रम प्रर प्रकार से सफल रहा। अन्त मे बृहद ऋषि लगर हुआ। सम पविक भिक्ष

#### संग्रह्मा में ग्रामनवमी पर्व

आर्थ समाव पन्दिर सगरूर मे भवीटा परबोत्तम श्री रामचन्द्र श्री का बन्म दिवस (रामनवर्मी) दिनाक 25.3 99 दिन बीरवार प्राप्त 800 वसे से प्राप्त 1000 वसे तक बढे ही उत्साह एव भूमधान से मनावा यया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम यह किया गया जिसमें मुख्य वहमान श्रीमवि माधुरी शर्मा भूक्याध्यापिका लावपत राय आर्थ कन्या विद्यालय सगरून थी। यह के ब्रह्मा श्री प दयानन्द कमार जी आर्व परोडित

आर्थ समाज सगरूर वे :

वड के परचार महाराय श्री महेश कुमार जी प्रचार मन्त्री आर्य समाप सगस्य शीमदी, राजराना वी अध्यापिका श्रीमती सीवा गर्ग की अध्यापिका सार्य कन्या विद्यालय सनस्य श्रीमती कमलेश रानी जी मञ्जली स्वी अपूर्व समाज संगरून एवं आर एल मोडला जी के रामनवर्गी पर बढे ही सन्दर

प्रमावशाली भवन हए। प्राच्यत शीसान मास्टर धर्मशीर की द्वारा मर्वादा परुषोत्तम श्री राम चन्द्र की के कीवन पर बदा हा सन्दर जानवर्षक प्रवचन हुआ रामझरणार्थ

#### भोगा में रामकवमी

25.3 99 दिन बहस्यतिवार प्रात र्र से 9 बजे तक रामनवनी पर्य बडे डी डर्पोस्लास से मनाया गया। सर्वप्रचम दवन यह किन्द्र गया इसके परचार सत्सग भवन मे नर्यादा पुरुवातम श्री राम चन्द्र वी क<u>े जीव</u>न पर पुरोषित की ने एक अवि-गीत गाकर सुनाथा एकम समायण की परिवारिक गावाओं से प्रेरणा लेकर प्रत्येक व्यक्ति परिवार और समाव को व्यावहारिक रूप से इसे अपनाने पर बोर दिया। श्री प्रियतम देव सी

एकम का विकास कुमार जी ने

आर्थ समाव मोगा मे दिनाका राभायक की मुख्य घटनाओं पर अलोकपाव करते हुए तत्कालीन रावनैतिक सामाजिक दन्दी का समाधान करने के लिए राम श्चनवास का फारण स्ताया। स्वामी सच्चिदानन्द वी ने जा रामचन्द्र बी के जीवन वर्णन के साध वैक्क्सिमायण के अन्य पात्रों क सामन्य में भी अपने गड़न चिन्तन प्रस्तुत किया नान्तिपठ के परकात समा

> ने जलपान ग्रहण किया। सस्य प्रकाश उपाल (मन्त्रा)

### गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

अपने बच्चों को सुरस्कार सम्पन की सफलता का प्रमाण पत्र बनाने क इच्छूक अभिभावको को (जिसमें कम तिथि भी अकित हो) लागा जावस्यक है। सुचित किया चता है कि श्री गुरु विरक्षनन्द गुरकुल करछरपुर (बिला विद्याचिनीद (समक्ष ४ण्टर) विद्यालकार (बी ए) ककाओ में जालन्धर) पवाब का मधा सत्र एक जून से प्रारम्भ हो रहा है। छटी सहसर्वी प्रवेश चारुने वाले सम्बन्धित स्था तथा आठवीं कहा मे प्रवेश लेने के प्रमाण पत्रो सहित बलाई के प्रकम सप्तह में पहुचे। लिए इच्चुक विद्यार्थियो की प्रवेश पराक्षा साथ चीदड तथा इक्कीस जन

इस गुरुकुल में आवास शिक्ष एवं भोजन की सुविधा नि शुल्क उपलब्ध है। अधिरिका ज्या कार का होगा। यदि अपेक्षित छात्र संख्या सात या चौदह जून की परीका में पूरी को वहन करना पढला है। ष्टा गई तो इक्कौस जून की परीका नहीं हाणी। प्रवेशार्थियों को पूर्व परीका

### लुपियाना में शहीदी दिवस

आवे समान महर्षि दवानन्द माजार (दाल बाजार) लुधियाना में 23.3 99 को सहीदेखन भगत सिष्ठ वा राज गुरु जो सुखदेव जी का सहीदी दिवस र्षसमाज ने मनाया। इस अक पर श्रीप सुरेन्द्र कुमार की शास्त्री त्री रणबीर का भाटिया मतकाल कन्द आर्थ का कारम प्रकास वा आर्थ वी आर्यसमाज बहुन जनक एना की अप्ता औ एकेन्द्र की ठाउँ श्री कुलचीप सब जी आर्च ने इन महान क्रान्तिकारी देश भक्तो की जीवनीयो

पर प्रकास खला। इन सहीदो की कुर्वामी के कारण ही देश स्वतन्त्र हुआ यह हाहीद आर्य समान की देन थे। इन सडीदों के प्रेरण कोत महर्षि दखनन्द बी महाराज थे। आज देश को सदावारी

चरित्रमान नेताओं की आवश्यकता है। सभी सण्यतो ने बहुत ब्रद्धापूर्वक इत शहीदों को प्रदानि अपित की। मतकाल चन्द् आर्थं (प्रधान)

#### आर्य समात्र गया गंगल में वेद सप्ताह यत वर्षों की भारत इस वर्ष भी रबापना दिवस का विजेष कार्यक्रम

स्थानीय आर्थ समाव तथा नगरा ने वेद प्रचार रायाह 18 मार्च 1999 (बहस्पविदार) आर्थे समाज के 124वें स्वापना दिवस से 25 मार्च 1999. (बुक्स्परिवार) राम नवमी 'वड भवन और वेद प्रवासनो का तक बडी वूमधाम से समारोइ पूर्वक मनास्यु गया इस वेद सप्ताइ के तुम् अवसर पर जामन्त्रिय आर्थ विद्वानों में अवर्थ बगरा के प्रसिद्ध की पूर्वाङ्गति भवनों और वेद विश्वान प विश्वय कुमार सास्त्री की युक् आर्थ भवनोपदेशक प सतीर/ सम्बन भवन महली आर्थ प्रतिनिधि समा प्रमाथ बालन्थर से प्रधार कर उत्सव को सम चाद लगा दिये हवन यह आर्व समाथ नेया पगल के पुरोहित प सुशील कुमार आर्थ जी के ब्रह्मत्व में सम्पन हुआ। कार्यक्रम प्रति प्रातः आर्य समाज में 600 से 7.50 वने तक रविकार 🗷 मार्च प्राय 7.30 से 9.30 सने वक सम्ब अर्थना इयन यह भवन

एव येद उपदेशों का कार्यक्रम रहा। कुडस्पविषार 18 मार्च को नव सवल्सर एव आर्थ समाज के 124वें

स्या 18 मार्च से 24 मार्च उपक सामकाल 600 से 800 बंबे एक अलग अलग परिवारों में दैनिक कार्यक्रम रक्षा। 25 सार्च (मुक्स्मविवार) रामनवमा बाले दिन प्रात 800 से 1145 वजे एक यह प्रथवनो का कार्गक्रम द्वारा जिसमे भाग लिया प सुशील कुमार आर्थ वी प सतीश कुमार/सुभाव **जी प** कृष्णकात आर्व पुरोहित अर्व समाज नगल श्री आसंकरन दास सरदाना बी प विकय कुमार शास्त्री बी। दवानन्द पन्तिक स्थल के बच्चो एव अध्यक्तिपुरने तक अन्य विद्यानी ने उत्सुकरायुर्वक उत्सव को सम्यन किया अन्य में आर्थ समाज का ओर से बाहर से आये हुए किहानो को सम्मानित किया और ऋषि लगर का प्रसाद करा गया और सब का

क्वाद किया गवा। **बुमान कर तासूंबा** (भनी)

आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त कोलस्ट्रोल रहित

उत्तम स्वास्थ्य के शिर गुरुकुल कांगड़ी कार्मेसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का सेवन करे ।



गासा कार्यालयः . गली राजा केदारनाथ,

ही अधिको कुमर की हमाँ पुरुषोक्षेट महामधी सम्पादक क्रम कर हिन्द हिटिंग प्रैसप्टेलिनेट हिटके चालकर से मुद्रित सेकर आर्थ मकस्य गरुरत थवन चौक किसनपुर, कलम्बर से इसकी स्वामिनी कार्य प्रतिनिध सम्ब चक्क के लिए प्रकारित हुन्य ।



वर्ष 49 अक 3, 5 वैशाख सम्बद् 2056 तदनुसार 15/18 अप्रैल 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आवीवन 500 रुपये

## त्याग एवं सेवा की प्रतिमृर्ति-महात्मा हंसराज

🛘 ठा० स्वर्कर परै वेक्स्पेकार बी-२६६, कारक्यारी विकार, विस्पी-४४

देश के प्रधानमंत्री यहामतिमान् चाणक्य एक रात्रि में अपनी कृटिया में बैठे दीपक के प्रकाश में राजकीय कार्यों से सम्बन्धित कागना देखा रहे थे। एक व्यक्ति उनसे मिलने आया। ज्यों ही आगन्तक ने प्रणामाननार बैठ कर अपनी कत कहनी प्रारम्भ की. आचार्य चापक्य ने तस टीपक को नुझा कर दूसरा दीपक जला लिया। आगन्तक ने इसका कारण पुछा तो भइत्यत्री ने जो उत्तर दिया. वह आज भी हमारा मार्ग प्रशस्त करने वाला है। आवार्य बोले : 'अब वक मैं राजकीय

कार्यं कर रहा था, इसलिए राजकीय दीपक जल रहा था। अब व्यक्तिगत वार्तांसाप होगा. इसलिए उसे बन्द कर के निजी दीपक जलाया गया है।' क्या कादर्श था इस देश के प्रधानमंत्री का। कार्र, आब के राजनेता इसे अपने जीवन मे उतार पाते ।

अर्थ शक्ति।--मेरे भारत महान के वर्रामान शासक क्षेत्र महान व्यक्ति है। उनको इस प्रकार की छोटी-छोटी बातो पर ध्यान देने की फुर्सव ही कहा है। हां, स्वामी दयानन्द के एक शिष्य ने इसे अपने जीवन में उतारा । उनकर नाम वा महास्था इंसराव । सना

असीत को हमने देखा तो स्थाही की दो दवातें होती थीं। नहीं, किन्तू उससे सम्बन्धित एक कार्यालय का कार्य एक दवात कहानी सुनते हैं कि इस विराट् की स्वाही से किया जाता था, तो निजी कार्य के लिए दसरी दबात प्रयोग में लायी जाती थी। महास्पा जी ने अपना परा जीवन नि:सरफ पहले स्कल को, तथा बाद में डी॰ ए॰ वी॰ कालेज को अपिंत कर दिवा। त्याग का यह अनुठा उदाहरण या। इसी का परिणाम था कि प्रिंसीपल के पद पर लम्बे समय तक रह कर भी महात्मा बी न तो अपने लिए कोई कोठी ही बना सके, न ही २ गण भूमि वसके लिए खरीद सके।

बरायज्ञ-महात्मा हं मराव

महायज समझ कर ही दोनों समय सन्ध्या करने में नियमित रहे। इसके साथ ही प्रतिदिन स्वाध्याय करना भी उनका बत था। यही कारण था कि उनका जीवन संयमित, संतलित एव ईश्वर परायण वा। ऐसा ईस्वर भवत ही अपने पत्र बलराज को सरकार द्वारा मुकदमें में फंसा देने पर लिख सकता है : 'यदि तुम दोषी हो, तो दुम्हें दण्ड भुगतना चाहिए। यदि निर्दोष हो. तो शासन तम्हें वों ही छाड़ दे। श्रमा मांगने का प्रश्न ही नहीं ठठता।' आज हमें महारमा जी की निर्यम-परायणता तचा ईस्वर भवित से शिक्षा लेनी वाहिए।

आपके इस श्रुचि जीवन से है कि इनके प्रस स्मिकों के लिए उस समय के विस्त्रात सन

अत्यन्त दक्षता पूर्वक कालेज के प्रधानाचार्य का पद सभाला तथा इसके बाद उन्होंने इस पद को छोड दिवा। यद्वपि उस समय उनकी आयु ५० वर्ष से भी कम थी। आज तो लोग ६०-६५ वर्ष तक भी भदों पर विपके रहते हैं। न केवल इतना ही, अपित् आय पर्यन्त ही उनकी इच्छा इन पर्दों को छोडने की नहीं होती।

कुर्वन् एवेड कर्माणि-कालेज से सेवामक्त हो कर महारमा इसराज न तो निष्क्रिय बैठे. तथा न ही कहीं अन्यत सेवा करके धनोर्जन का यत्न किया. जैसा कि आजकल इस करते हैं। उन्होंने इस पद से मबत हो कर शेव सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा के लिए ही अर्पित कर दिया। जिस समाज में इस प्रकार के त्यागी, तपस्वी. नि:स्पृह व्यक्ति होते हैं, वही ममान उन्तति करता है । यही है वास्तव में आश्रम मर्चादा कि ५० वर्ष तक गृह कार्य, नौकरी आदि करके रोष जीवन को समाज एवं राष्ट्र की सेवा में लग्त दे। आव समाज में इन मर्यादाओं का लोप होता जा रहा है।

शरीर से भी ममस्य महीं--महातमा हंसराज ने दवानन्द कालेज को जीवन दान केवल भौखिक रूप में नहीं दिया था. अपित वह दान दे कर अपने सरीर पर से अपना मोड गमत्व, किया वा सकता है।

स्वामी सर्वदानन्द जी इतने अधिकार भी तटा लिया था। यही प्रभावित थे कि वे महात्मा हंसराज कारण है कि कार्योधिवय के कारण से मिलने उनके घर चले जाते. रोगी होने पर जब उन्हे स्वास्थ्य थे, जबकि अन्य व्यक्तियों के लाभ हेतु पहाड़ पर जाने का पास वे केवल मिलने के लिए, परामर्श दिया गया, तो वे बोले: नहीं जाते थे। निर्लोभ भाव से 'यह जीवन मेरा नहीं है। इसे मैं महात्मा जी ने २५ वर्षों तक कालेज को सौंप चुका हु। समर्पण का कैसा अनवा उदाहरण है । आज तो अनेक जीवनदाता इस प्रकार की संस्थाओं एवं राष्ट्र से सभी प्रकार की उन सुविधाओ का उपभोग करते देखे जाते हैं. बो उन्हें जीवन दान के बिना टपलब्ध न हो सकती थी।'

कथनी करनी एक-महत्त्वा जी की कथनी तथा करनी मे एक रूपता थी। आज मनुष्य के जीवन में इसकी महती आवश्यकता है । अपनी कालेज सेवा के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी महात्मा जी स्मरण किये जाते रहेंगे । मलकानों को पुन: हिन्दू बनाने में उन्होंने विशेष कार्य किया। इसी प्रकार कागड़ा, क्वेटा तथा निहार के भकम्प पीडितों की सेवा. राजस्थान तथा गढवाल के अकाल पीडितों की सेवा मे भी आपका अविस्मरणीय योगदान था। महात्मा इंसराज बहु आयामी व्यक्ति थे। आर्थ समाज का कार्यक्षेत्र अति विस्तृत है । सुद्धि, सेवा, शिक्षा, प्रचार आदि ऐसे क्षेत्र हैं. जिन्हें साथ साथ ले कर चलने से ही आर्थ समाज का स्थायी प्रभाव जनता में हो सकता है। ईसाई सेवा एवं शिक्षा के माध्यम से ही तो हमारे भाइयो को ईसाई बना रहे हैं। यदि हम म० इसराज जी जैसे सेवादती बन सकें, तो इनका मुकाबला

### विवेकानन्द और ईसाई मिश्रगरियाँ

बासवा जताब्दा क इस अन्तिम नो म एक बार ।फर भारत म न्मल 'मशनिरियो क उर्मानारण और इसस उपज सकट समस्याओ एव .म क' मनभन स्वतंत्रल को लका पक गण्याय बहस को स्थिति बना 🕶 भारत को स्वतंत्रता स पूर्व स्वामा त्यानन्त खबकानन्द महा मा गांधा तथा अनक राष्ट्रीय नताओं न उधान्तरण पर नम्बर बास्स च नाया **ग शार इसाई पादरियो एव** गमशनरिया ने इसमें भाग लिया दा किन्तु उपान्तरण का आवंग और दुराग्रह निरन्तर बढता रहा और स्वतत्रता क इन पत्रस वर्षे य यद्यपि कुछ नताओं और दशप्रमियी उमानरण स रूपल समस्याआ

का और सरकार को जान हिलाया

'नाकन पहला बार प्रशनमञ्ज अटल 'क्नाम त्राजयकान इस पर ए**क** गच्टाय वहस का आह्वान किया "सका सवत्र स्थागत "ाना चाहिए था भकिन आश्चर्य है कि यह प्रस्ताव क उ नताओं ओर दलों की अप्रिय लगा और उन्होन इसका खुनकर विराध कया भारत जैस प्रजामात्रिक दश म किसा राष्ट्राय समस्या का समा गत राष्ट्राव बहस म हा निकाला जा सकता है लेकिन कमनार लाग मन्त्र बहस स बचत 🛎 स्वामा विवकानन्द न भा यहा अनुभव किया था जब व अमरिका माहन्द्र समका व्याख्या कर रह ब और इसार ामशनग तथा पादग नागा स सवाद करनी चाहत थ उन्हान 12 'ननकरा' 895 का अमरीका स निख अपन पत्र मे ानखा था मिशनस नाम माना प्रक्रमा जानत \* श्रष्ठस करनी नहीं विवकानन्द साहिय खण्ड ३ पृ प्रत्यायक अभगकाम रू "सार्थ (म**ञ्**नारय) न "नव" साथ क प्राप्त भर व्यवक्षा किया गानिया आर अपग्रद्धी का प्रयाग किया तथा अनक प्रकार के आराप नगाएं भारत म श्री वाजपया क प्रस्ताव पर उनका पाटा पर अनेक आराप नगाएं ना ग्रां = नकिन बहस स बाज का नानि उनका

स्वामा विवेकानन्त सम्भवत प्रजान भारताय थ । नजान अमरीका 14) **युरा**पाय ? य नाकर हिन्द क्ष अध्यात्मका गाउभारिकता

भूकानसः प्रश्वाना

ाउर कमाल किसोर मोथनका सहिष्ण्ता इंड्वरपरकता अच्छता आदि का स्थापना के साथ ईसा मसाह इसाइ धर्म पादरियो एव ाभशनारका पर खलकर विचार रखा कि पथ्वी क सभा वर्ष समान है प्रयक्त धर्म म इश्वर है (विवकानन्द साहित्य खण्ड 3 प 2389) इसलिए सभी धर्म पवित्र हैं यदि विभिन्न धर्म पथ न हो ता कोड धर्म जीवित नहीं रह सकता (विवकानन्द साहित्य खबर 10 पु 273) वे प्रश्न करत हैं कि पृथ्वा के महान धार्मिक बाद्य कृत्य म केथन एक हा बाद्य वृन्द क्या हा? इसलिए वे विश्व म सम्पूण मानव जाति के एक डी धार्मिक विचार हा जान क दिवास्वप्न कहते हैं (विवकानन्द साहित्य खण्ड 0 पु 252) और इस आधार पर ये कहत है कि कवन कोई एक मार्ग ही मुक्ति का माग नहां हो सकता संसार क विभिन्न धर्म पथ और धार्मिक सिद्धान्त एक ही ईश्वर में विलीन होते हे (विवेकानन्द साहित्य क्राण्ट 1 य 276) यहां कारण ह कि प्रत्येक देश और पथ म पवित्रतम स्त्री पुरुष मिलत है अल व कहते हैं कि ईश्वर की गाड कहा अल्लाह कहा जिहोवा कहा थाप्रम या आपा कहा वह एक है जो निम्नतम नन्तू से लेकर उच्चतम मनुष्य तक सब जावों का प्राणवान बनाता है

आर न तार्किक विवाद म वे अर्म का स्पष्ट करते हुए कहते ह कि धम का अर्थ हं ब्रह्मस्वरूपता का जान नेना उसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर लना और तदरूप हो जान (विवेकानन्द साहिय खण्ट ३ पृ248 व धम को ग्रन्थो एवं मता तक परिमित्त नहां करत ( विक्कानन्द साहित्य खण्ड **3 पृ 323 क्यों कि वे पात हैं** कि का धार्मिक ग्रन्थों के कारण विचाद आर रक्तपात होता रहा हे वे कहत हैं कि इंसाई बाइबिल का सत्य मानते हैं और मसलमान करान का और ऐसी स्थिति म गुरुष क्या " इसका विवाद चना

विवकानन्द साहित्य खण्ड 4 पु

233)

रहात है। अस्त ग्रन्थ धर्म प्रमाण नहीं बन सकते (।थथेकान-न साहित्व खण्ड २ पू २७१) और इसनिए हमें स्वाकार करना चाहिए कि इन ग्रन्थास पर कोई ऐसा तत्व है जो अधिक सार्वभौगिक है जो ससार में प्रचलित नीति सहिताओं स भी अधिक उल्लाह और वा विभिन्न राष्ट्रों के अन्त स्फरण क बलावण का गिणम करन य समर्थ है (विवकानन्द साहित्य खण्ड 2 पु 279) सार्वभीपिक तत्व

विवेकागन्द इस सावभौभिक

तत्व का खोज करते हैं और पारे है कि हिन्दू धर्म में एसी सार्वभोभिकता विद्यमान इंबे मद्रास मे एक भाषण मे कहत हैं हमारा धर्म (हिन्द धर्म) सावभौमि है यह इतना उदार इतना प्रशस्त ह कि य सब प्रकार क आदर्शों को आदर पूर्वक ग्रहण कर सकता ह चदान्त धर्म ही अपनी विकाल भुवाओं की फेलाकर सबको इदय स जगा लेगा (विवेकान-इ साहित्य खण्ड 5 पु 146) हिन्दू क्षम मे ही हमारा जाताचमान है हमारा जाताय जावन प्रवास हे (विधेकानन्द साहित्य खण्ड ५ प ६३) और अन्य पथा तथा धार्मिक विश्वासी क प्रति सहिष्णु (विवकानन्द साहिय खण्ड 4 पु 232 ाववेकन्द सन् 1896 म लदन मे एक क्क्तव्य दंत हुए कहत है कि ाहन्दू धर्म विधमियों का कभा कच्ट नहां भहुचाता यह एक एसी दश ह नहां सब धम शान्ति ओर सद्भावाना क साथ रह सकत ह मुसलमन अपन साथ इत्या ओर विवेकानन्द धर्म की सत्ता न वध लाए पर उनक अहन स पहण शान्ति का शासन या इश्वर का तामताम दखावे हैं न पन्नो म संशा का अस्वाकार करने पाल जन भा पहन किए पए और व आज भा है भारत वास्तविक शक्ति नप्रता का उदाहरण उपस्थित करता हे (विवकानन्द साहित्स खण्ड ४ पू 232) इस सहिष्णुता का कारण वे अनेक बार स्पष्ट करते ॥ भारत का धर्म एक व्यक्ति एक ग्रन्थ एक मत पर आधारित नहा है वह मलभूत सिद्धांत को लगा है इसलिए व राम कृष्ण बुदु इसा मूहश्मद आदि सभा को इस्वर और महान अवतार मानवे हैं (विवेकानन्द साहित्व खण्ड ७ पु 193) हिन्दू धर्मका यह विशिष्टता हा उसे सार्वभीम बनाती है

विवेकानस्य अपनी सर्व यात्राओं के समय अनेक का परा मसाह का इंस्पर महाने नक तथा सन्दशकाङ्क हान का स्वाकार करत हैं व सन् 190८ म अमराका म ईश्रदत ईसा पर लस्ब भाषण गत है और इसा पर गिखा प्रतक का अनुवाद भी करत ह अब पासु निकातर के बाद जासर क्राह्मस्ट हा जात हे ता व इस दिव्य स्फुरण कहते है आर उन्ह र्दश्या का कोट मे खताह (विवकानन्द साहित्य खण्ड 2 पु 274 तकी खण्ड 7 पु 193) लेकिन व कृष्ण बुद्ध और मुहस्मा आदि को भा इसी को!? य ग्लात है और साथ हा प्रत्यक मनुष्य क भाक्योंकि उनकादर मत है।क यदि वे इंस्कर पुत्र ह आर उतनार हेतो हम भावती ह औं "सर्तिय हमं सकल्प लना चाहिए कि म पैगम्बर भगवान का सन्दशकाहक ईश्वर पुत्र हा नहा स्थय ईश्वर स्वरूप बनुगा विवकानन्द साहित्य অর্ডের 7 মু 93 তলক विश्वास है कि जो दिव्य स्करण तथा दिव्य जान इसा तथा माहम्मन का हुआ था वह विश्व क किसा भा व्यक्तिका हो सकताह इसलिए विवकानन्द इसा स प्रव ईसा के बाद तथा भावण में जन्म नेन वाले ईरवराय अवतारा का सना स्वांकार करत ह व इस **इश्वराय पूजा ओर सम्मान का** सीमाबर नहा करना पाइत और प्रत्यक महापुरुष का जनत इश्वर की विभिन्न अभिव्याक्त कहत ह (विवेकानन्द साहिय खण्य 7

**9 230)** विवेकानन्द ईसा पसाहक महान उपदशा एव शिक्षाओं का बर शास्त्र क साथ नर्वाकरते इ. व बार बार ईसा के इन उपन्शों का नद्धत करते हैं प्रस्तृत रहा स्थग राज्य अन्यत समाप ह अन्त करण पवित्र ४ व उन्य 🛎 गराबों को सब कुछ तता और मेरा अनसरण कराँ वे इसा क इन उपदशों म निहित प्रेम 'बाग सदाचार आदि को शिक्षा का अमर एव पवित्र तथा ईश्वराय सन्तर मानत है उन्हें प्रणाम करत " (विवकानन्द साहत्य अण्ड 191 तथा खण्ड 8 पु 3 34 एव 152) परन्तू व अभराका मे भाषण दत हैं (अंत्रिका मामाजन्य में सा

सामारकीय क

### महान तपरवी महात्मा हंसराज

नप का जावन म बहुत बड़ा महत्व है। बहुत स लोग अपने जीवन म नयस्या का धारण करत ह ओर उस तपस्या के द्वारा कच्छ लोग परमपिता थामा मा का पाना चाहत ह इसक लिए वह कही जल में खंडे हाका वपस्या करत ह कही एक टाग क भार खड होकर तप करते है ता कही अपन च्या भार अगिन जला कर तप करत है परना वह फिर भा एसा प्रयम्बाओं से परमा मा का नहीं प्राप्त कर सकत और कई लोग धन सम्मति एव एक्क्य का पाना चाहत है और इसके लिए अपना नींद भी हराम कर नत ह परन्त ।फर भा कृष्छ प्राप्त नहीं हाता. परन्तु कुछ लाग एसे भा होत आ अपन त्याग और तप म कवल अपना हा उद्धार न करक दश जाति व रूपाव का कल्याण कर जात ह उनम से हा एक थे महात्मा हसराज जी २ नवम्बर १८८३ का महिष दयानन्द सरस्वती के देहावसान क पश्चात जब माहोर म एक शोक सभा हुई ता उसमे निश्चम किया गया कि महवि का रमृति म उनकी भावना भी क अनुकृत एक शिक्षा सस्था की स्थापना की जाय आर यही उन्हें मा जो शद्धांजिल होगी। यह निश्चम ८ नवम्बर १८८३ का जनसभा म हुआ और देशान द एग्ला वदिक स्कूल खोलन का निश्चव हुआ और बाद म इस आरम्भ कर दिया गया। 31 जनवरी 1886 का व्यधियत रूप स दयानन्द एग्ला वटिक कालज की स्थापना हो गई। इस पकार क स्कूल व कालज का चलान क निए किसी त्यापी तपस्वी और कमर पळ लिख नोजवान की आवश्यकता थी इसके लिए महामा इ.सराज जा जिन्हान उस समय प्रथम श्रुणां म रह कर एम ए. पास किया था आर जा किसा रचा गरकारा शकरा का बड़ा आसाना से प्राप्त कर मकत थ उन्हान यह यावणा कर टा कि व इस सम्था को अपना सारा वावन दत ह ओर वह निश्तरूक जावन भर इसम अध्यापन का काम करग

 होता। डी ए वी सस्वाओं व आय ममाज का अन्य क्रिक्षा सस्याओं न नोजवाना में देश प्रेम की भावना व दस भवित की भावना पेदा की।

इन सस्थाओं में सब से बड़ा काथ यह किया है कि उस समय बसार इस्पर दल म जा गजनीतिक धामिक व सामाग्यक परिस्थितिया वल रहा भी उनका बहुत प्रभावत किया। डी ए वा मस्थाओ म पढ मोजवान प्रत्येक दिशा में काथ करन लग अहा राजनातिक काथ कर नोजवान कर रहे थे वहा धार्मिक व मामाजिक काय भा कड नोजवान न अपन हाथों में ले लिय थे जिसक कारण अग्रज का यह मनसका पुरा नहीं हा सका कि सार भारत का शीख्र अंति जान्न शिक्षा के माध्यम सं इसाइ बना दिया जाय । क्यांकि इन संस्थाओं न हिन्द्रत्व का जारतार प्रचार किया आर सरकारा शिशा संस्थाओं में पढ़न के कारण से पट लिखे नोजवानो का ना रूख इसाइयत का ओर बट रहा था उस सथ क्रिक्षा सस्थाओं न राक दिया समाज सका के कार्यों क मध्यप य ज इसार मिज़नरी अपना कप्रचार कर क लोगो का इसाइ थना रह थ उन्ह राकन क लिए वहा आय समाज क कायकताओं न भा मिल कर समाज संधार का काम आरम्भ कर दिया अकाल पीचित भकाय पीडित व दूसरा देवी आपतियों क आन पर आय ममात्र क कार्यकन आग बढ़ केर काम करने लग उपस पूर्व इसाइ अकाल पांडित इत्यादि लोगा को अपन संबाधाव से प्रभावित कर क उनस अनचित लाभ उट रह थे इसके साथ हा जात पात व इआछत का एक पान सा हमार दस में फला हुआ था उस भा इन संस्थाओं में पढ़न वाल व्यक्तिया उ तांड दिया क्यांकि इन संस्थाओं म सभा आतिया का विद्यार्थी पटन लग और सबको समान शिक्षा दा जान लगा

प्रात्मिक्त काल न हमता हो ए थी सरमाजा प्रतिका भा विद्यार प्रात्माण्य के प्रात्माण्य के प्रात्माण्य के प्रात्माण कर प्रत्यास्थ्य कर उपकार कर प्रत्यास्थ्य कर उपकार कर प्रत्यास्थ्य कर उपकार प्रत्यास्थ्य कर उपकार कर प्रत्यास्थ्य कर प्रात्माण कर प्रत्यास्थ्य कर प्रात्माण कर प्रत्यास्थ्य कर अपना कर प्रत्यास्थ्य कर प्रत्यस्थ्य कर प्रत्यस्थास्य कर प्रत्यस्थ्य कर प्रत्यस्था कर प्रत्यस्था कर प्रत्यस्थ्य कर प्रत्यस्था कर प्रत्यस्था

19 अप्रल 1564 के बचवाडा (हाशक्षारपुर) में महा मा जा का नम हुआ वा प्रतिथव हम 19 अप्रल को महा मा जा का जन्म दिवस मनात ह आज 1) भग्नल का मधा डी ए वा मस्थाओं में आर आयं समाचा

आज 1) 'पोराल का राप डॉ एवं रा संस्थाओं में आर आज समाज हुए स्वाह्मा 'स्वार के का नवा दिवश प्रेलिक का पारित नाम हुए हुए यह पर तथा जावा बर राक 1886 स समाज 1912 तक समाज हुए वह पर तथा जावा बर राक 1886 स समाज 1912 तक समाज स्वाह्मा का अर एक केंद्रा था कहा प्राच्यापक स अव्याद्या कर कात रात आ स्वाह्मा का अर एक केंद्रा था कहा प्राच्यापक स अव्याद्या तक कात रात आ 1942 स मंत्रार 1947 कर माणा हुए का स्वाह्मा का स्वाह्मा तथा कात रात आ 1948 स मंत्रार 1957 तक माणा हुमारा साववार्त्रा का स्वाह्मा राज्या औरकारिया का विचार कात वाविष्य । अब प्राच्यापक स स्वाह्मा पार्ट पर विचार किला जावार सामा व्याद्या की दृष्टिय स बहुत्रा पार्ट स्वार्ट पर हुं । यह साव हुं तिका स्वार्ट का सिक्का स्वार्ट का स्वाह्मा पार्ट स्व पर हुं । यह साव हुं तिका स्वाह्मा आ का सिक्का स्वाह्मा का विकास स्वाह्मा का स्वाह्मा पार्ट स्व पर हुं । यह साव हुं तिका स्वाह्मा आ स्वाह्मा का स्वाह्मा प्राव्ह्मा का स्वाह्मा पार्ट स्व पर हुं । यह साव हुं तिका स्वाह्मा आ स्वाह्मा का स्वाह्मा स्वाह्मा प्राव्ह्मा का स्वाह्मा प्राप्ता का स्वाह्मा प्राप्ता का स्वाह्मा स्वाह्मा प्राप्ता का स्वाह्मा स्वाह्मा प्राप्ता का स्वाह्मा स्वाह्मा स्वाह्मा स्वाह्मा स्वाह्मा स्वाह्मा प्राप्ता का स्वाह्मा स्वा

अब हमार विधा सरकारों और सरकारी विभा महमारा न पर-अरूर सार्थ देश अंक एक सुक्र इस्ते कर हाता के अब अवस्थारका है कि हमारा अभ्यापक प्राथमक कर वा वित्रीयक स्वानुभाव पर-प्रमान स्थानी कर सकता मुक्ति सरकार के सार्था कर करता. पर सार्थ्य कर के सार्था मुख्य स्थान के सार्था कर सार्था कर स्थान पर सार्था मुख्य सम्पद्ध भाग एक्च के सार्था कर सार्था कर सार्था के का कोवन से कुछ का विश्व प्राथम कर एक्स कर कर हता. विश्यक ह विश्वका एक्स महारा में अपने चौकत का उटराइन का अस्तर। विस्ताय कि इस का सार्था कर अपने परिकार के एस पर है है।

धर्म देव आर्थ सह सम्पाटक

### स और पावरियों के स्थ निकले हैं जो हीसाची के सार्व है स्टेसी

कर शिक्ष है कि पश्चिमप्रशास भागातिए है कारी एकप्यान पायरी जान कोंगते का लिए पार हुए है। बहा १म जनके क्षेत्रक क्रम लोग्ड कहा हुई यो सारोचे बहुत सीर-महीर में प्रवारित किया. सामने आबा सो ये कमड़ी खोड मे दशक नका

### श्रुद्ध में**०** 1

राजकोट में बाइबले जलायी गई दश क कुछ समावारपत्रो मे यह समाचार प्रकाशित हुआ या कि गजरात क राजकोट जिले में

पुलाई 1998 में बचरग दल के कार्वकताओं ने मिशन के एक विद्यालय म बाईंबल का प्रतिया जलाया

#### सच यह निकला

गजकोट के आई पी मिशन गर्ल्स हाई स्कूल मे अध्यापकाओ न हिन्द छात्राओं को बाहबिल में रख कर परचा दिया और उस भरन काल एकहा इस परचे में लिखा गमा था कि यीशु मरा मुक्तिदाता हं इस नात में कबूल करती हू ओर म विश्वास करता हू कि प्रभु बाज का मर पापो के कारण वश्वस्तम्भ पर मृत्यु हुई और मुझ न्यासा सि द करन क लिए व तासर दिन संजायन हुए इसलिए मैं उनको अपना व्यक्तिगत तारणहार स्वाकार करना हू जब छाजाओ क अधिधावको को यह बात पता

नगा ता उन्होन विद्यालय जाकर न्सका कहा ।वरोध किया फिर **वरव 1हन्द् परिषद् से सम्पक** ाळवा परिषद के विरोध का उक्त प्रकार स प्रचारत किया गया

#### झठ न० 2 द्याबआ में ननों से बलात्कार

समाचार छपा कि ज्ञानुआ म नना स बलात्कार हुआ आर जलात्कार करन बाल बंबरंग दल

क कायकत्ता ध सच यह निकला

क्रह कानवासाथ इन जनजाताय नाग' म अध्यकाश इसाई ये। वहा <sup>1878</sup> क्रिन्द परिषद और बजरग त्त्र का काइ अस्तित्व नहां है। इसक कछ तिन बाद डिन्दुस्तान राष्ट्रस म सार्खया म छपा आबुआ 17पाटक इन झजार याना हरियाणी क ज़जार म इसाई नना साथ वर्ठा - व चा झा**बुआ** में हुआ था

तनो पर आक्रमण करन वाल

बाद में वित्तनस ए०० पालिटिकल आस्थवर क पत्रकाग

का दल अब झज्जर पहचा हो ननो स बातचीत में उन्हें बताया कि उनके साथ बनात्कार या दर्व्यवहार नहीं हुआ असली महा यह वा कि वे नने सिलाई कढाई का जो केन्द्र चलाती थी उसमें सामान बेचने के मामले पर झगडा हुआ था।

#### झुट न० ३ उद्धीसा में आस्टेलियाई मिशन्ती और उसके दो बेटो को जिन्हा

वलाबा

24 जनवरी को देशभर के समाधारपत्रों में बढ़े बढ़ शीर्वको म वह समाचार प्रकाशित दुआ कि अवन्देशियाई मिजनरी और उसके दो बेटो को उड़ीसा के मनोहर पुर गाव मे जिन्दा जला दिया गया। ये हत्याए बजरंग दल के कार्यकर्ताओ न की जिनका नेतृत्व दारा सिड कर रहा था।

एशियन एव ने स्टींस की परना ग्लेडिस का बयान सुर्खियो मे आरम कि मेरे पति और पत्रो का हत्या में राष्ट्रीय स्थयसेवक सम का साथ है

#### सच यह निकला

एशियन एज मे उबत रपट प्रकाशित हाने के अगले दिन सभी समाचारपत्रों में स्टींस की पत्नी ग्लंडिस का बयान छप। मैं किसी का दोवी नहां ठहराती। जाच से यता जला कि हत्यारों का बजरग दल स कोई लेना देना नहीं या हत्या के आरोपी छड़ लोगो म स . पाच के सम्पर्क किसी न किसी रूप म काग्रेस स रहे हैं। मुख्य आरोपी दारा सिंह भी स्थानीय विधायक और राज्य सरकार म मंत्री जयदेव जैना क काफा निकट रहा है

> ञ्चुठ च० 4 बारीपदा में नन से बलात्कार ८ फरवरी को राष्ट्रीय सहारा

क्रांतित किल्ली अधेजी के सभी समाचारपत्रों ने मुखपन्ड पर भापा उनासा म मयूरभज जिले के व्यरीपदा मे ३० वर्षीय एक नन क साथ अज्ञात बदमारते ने कार में बलात्कार किया य बदमाश महिलाओं का

वेस भारण फिर हुए थे। फार के बरीयदा करने से बाहर निकलने पर नन को पता चला कि कार में महिलाओं के वेश में पुरुष हैं ही यह सोर मचाती इससे पहले ही बदमाशो न उसका मह दबोच दिया। वैसिगा के पास चालक ने जब कार रोकी तो नन किसी तरह उनके चगल से बच निकली

## संख यह निकला

13 फरवरी के इंडियन एक्सप्रेस और हिन्दुस्तान टाइम्स के अदर के पुष्ठ पर कोने में छोटा सा समाचार इपा नन वाज नाट रेप्ड । इसी समाचार के अनसार श्री राम चन्द्र मेडिकल कालेज करक के फोरेसिक मेहिसीन एपड टोक्सीकोलाजी विभाग क एसोसिएट प्रोफेसर का एन के मोहन्ती द्वारा वैचार चिकित्सा रपट मै कहा गया कि भन के साथ कोई बलात्कार नहीं हुआ ता।

#### झुट प० 5 उजीसा मे के ईसाइयो की हत्या 8 फरवरी के इंडियन

एक्सप्रेस में मुख्य पुष्ट पर अप टु क्रिश्थियस किल्ड वन इल्प्पोर्ड इन उडीसा । उसी दिन के दैनिक जागरण सहित सभी अखनारों के मुखपुष्ठ पर यह समाचार सुर्जियो में छपा कि उड़ीसा के कथामल मे अजात हमलावरों ने गग कटी के जालो मे अपने तीन किशोर साधियों के साथ नकहा काटने <sup>3</sup> वा एक ईसाई किशोरा के साथ बलात्कार का प्रयास किया गथा और बाट में उसकी तथा उसक साथ आर किशोरों में से एक की चीर चीर कर हत्या करदी। सच यह निकला

10 फरवरी को राष्ट्रीय सहारा न एक फालम का छाटा सा

आर्व समाज स्थापना दिवस व रामनवमी पर्व

आर्व समाच जायनगर मे 18,3 99 को नव सक्तरर तथा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया तथा दिनाक 25399 तदनसार चैत्र शुक्ला नवमी गुरुवार को आर्थ पर्व रामनवमी भनाय गवाः जिसमे प अरुण शास्त्री जी ने प्रासमिक प्रवचन करते हुए आर्य समाव की स्थापना के

समाचस करण ईवर्ड पुक्की व क्षंच्ये की हत्या करने वाला ईसाई ही निकला । उक्त ईसाई यवती और बच्चे का हत्यारा कोई और नहीं असका अपना ही रिक्लेटार था और यह ईसई या।

#### ञ्चर न० 6 तसर प्रदेश के बाव में अमरीकी समाण सेवी दम्पति के साथ दर्व्यवहार

3 पश्चरी को ट्राइम्स आफ इक्रिया के प्रथम पच्छ पर उन्ह समाचार प्रमुखता से छपा जिसमे कता गया कि इलाहाबाद में बजरग दल और हिन्द जागरण मध्य क कार्यक्षत्रांओं की धमकियों के बाद अमरीकी समाज सेवी सिल्वेस्टर टाम्पत्ति ने **बैपा**टस्ट सेमिनरी म सरक ली। उन्हें चमकी दी गई था कि वे अपनास्कल आर चिकित्सालय बन्द कर दें

#### सच यह निकला

उक्त समाचार टलकर सिल्बेस्टर दम्मति दग रह गये और दन्होने इसका पुरना खडन किया को अगले ही दिन 4 फरवरा का टाइच्स आफ इंडवा के पृथ्द 8 पर दो कालम में छपा। जान सिल्वेस्टर ने बताया वा कि न ता वह कोई मिशनरी हैं ओर न हा उन्होने इलाहाबाद के वैपटिस्ट सेकिनी से जरण ली है उतना ही नहीं इलाहाबाद मे तो एसा कोई लेमिनरी है हा नहीं। हा० सिल्वेस्टर और वनको परना हेलेन सिल्बेस्टर ने बताया कि व कमा प्रकोशिणटिक प्रेस के समाददाता स मिले श्रीनहीं।

प्रेक्क-श्री द्वारामपोद्धर( र्यंची ) (पास्त्र जन्म के अक 28 फरवरी 1999 से साधार)

सम्बन्ध मे व मर्याटा परुषोत्तम

राम चन्द्र जी के जीवन के सम्बन्ध मे अपने विचार बनता के सामने रहो । इस अवसर पर ही प्रेम बी

भार्ष राणा ने भवन प्रस्तत किए। बन्या विद्यालय की अध्वापिकाओं ने भी इन वस्र्यक्रमों में भाग रिनया धर्मकीर सान्म (मन्त्रा)

#### 134वे चन्म दिवस पर

### महात्मा इंसराज के अन्तिम वचन

**ाठवासार्थ धर्मचीम् विचालकान् थार्य याचास्था श्रम ज्यानापुर इतिहार्** 

सन् ९३८ क कु म म महालमा गां हरिद्धार तय थ उनक स्ताथ आप प्रादाशक प्रतिनि समा क काई उपदेशक और पश्चनांक भा गये व थ सक्ष मोड अन्द्रम भा गये व थ सक्ष मोड अन्द्रम भा गडा लाना धनीराम भरता न कुप्तर्थ पारावण यह करतांचा च कुप्तर म महामारी सन्

९८ क कुम्भ म पहले तो रोडी बाजार में भीषण आग लगी उसके बाद हुने का महामारा फेला

से अधिक व्यक्ति मर गय लोगा ने महाराज्य जी स असक्त किया कि वह दुरना लाड़ीर वाले जान परतु महारामा जा का अपने म अधिक ज अम में उह उपरहालको भजनीको और यात्रियो का चिन्ता या नव कह से सक्त म उन्होंन दुरताह का का नव जान म अहोन दुरताह का का ला जान म अहोन दुरताह का का ला जान म अहोन दुरताह का का ला जान म आहोन दुरताह का का ला जान म आहोन दुरताह का का ला जान म आहोन दुरताह का जान का है

सामूला बीमारा समझ कर महारमा जा न अविसार की ओर विश्वक ध्यान न दिया घरन्तु अविसार मामूली रोग नहीं है यह कंप्टदामक वो हो ही सकता है प्राणधातक भी ह सकता है महत्त्वा जी निरन्तर दुर्बंदी होते गुले

ख्टूबर म पेट का तेग फिर ब्लू गया २५ अस्टूबर का प्रात प्रमण सं लौटने के बाद उन्ह एकाएक उदरबुल हुआ साथ ही ज्वर भी हो गय इ लह रामाजनक हो गई डा विश्वनाथ न हला इंक्टूबर किया महामा ज क पुत्र बलाज जा लाहीर में "सी

उन्ह तार द्वारा सूचना नि गई मह म की बीमारी की क्कार सारे आर्च करत में पहुच गई नागा की किया की सीमा न रही एक ओर वो अच्छे से अच्छ विकित्सकों ने अपनी सेकाए प्रस्तुत की दसरी और उनके स्वास्थ्य के लिए बगह चगह प्राथनाथ का नान लगा पुत्र बलराज और याधराज पुत्रियों और पुत्र वयुओं न सवा में कांई करण रखा ३ नवस्य क महारामा चां क बढ़ जमाता दीवान रा म्कूच्या जी में ईदर परपस्त वंत्रामा द्वार आ गये लाला देवाबन्द लाला साबदास पडित महन्यम्द

विभाग द्वार आ गये लाला दवाचन्द लाला साइदास पंडित महत्त्रकन्द आदि आर्य नेता भी आ गय महात्भा वा ने स

वास कहा अच्छा निभ गई अच्छा गुजर रहा है कुछ वो कर्त्तव्य पूर्ण हुआ ही है अभा और पूर्ण बोगा पहित

महरचन्द न हौसला बढाते हुए कहा नहां अब ता अन्तिम बीमारी है महात्मा जी को भविष्य दिखाई

पठ रहा था

प्रकारमा खुशहालखन्द जी से

बातांलाप महातमा खुशालखन्द
नी आव समाज के उसव के प्रसम

मे जोषपुर गय थ ३ अक्टूबर

हो जहा स नीट कर मगामा जी

से मिले महातमा हसाल जा ने

का जहां स नाट कर माना ज सं मिले महालग इस्तराज जा ने बातचीत म कहा गिसात जोधपुर मे आर्य समाच का प्रचार ज्यारा जार से होना चाहिए स्वामा न्यानन्दं इम रियासत को बहुत कवा ल जाग चाहत थे हैरदाबाद दक्षिण के बार

में भी वार्तानाण हुआ महारना बुराहानक्द भी ने बहारा कि यह अप्रर्थ सराज के प्रकार पर रियासक की आद स प्रतिक्षण है और अपर्य सराज की और संस्थापक का पोवना बनाई जा रहा है म इस्साप जी ने कहा पर राज्य एक बहुत कहा प्रतिनिधि सम्मेशन अपर्य को कर ऐना चाहिए विसास सब पक्षों और दलों के लोग हो उस कहा हिम्म चार्ता का प्रस्ता का सहामुश्की प्राप्त का प्रस्ता का भ सहामुश्की प्राप्त करनी चाहिए

महोत्मा जा का स्वास्थ्य फिर गिरन नगा बख्ती टेकचन्द राव बढ दुर दुर्गदास ड क्टर महाराजकृष्ण शाला मेहरकन्द महाजन आदि हितैयी लोग बहुत चिनित्त डा उठे जीनो पुत्रिया सीमित एलदेषी सीमित चना और सीमित धम्मदेषी पी सुद्व गई

रोग कभी भटता प्रतीत होता फिर इकार्यक अकारण ही बढ़ने लगता कुछ पूळा लो. तीन नवम्बर को म. खुराहालचन्द वी महात्मा

जाक पास बैटे धं मंहसराज जीन कहां अर्थसां के बाे में कुछ पृछ्या

म स्त्रुत्तहालधन्द जान कहा आर्य समाज का और नम सब कर इच्छा है कि आप हा आर्थ समा की नोका क खबनहार कन रह महामा जा बोन न्यां अस्क्री है नेकिन मार्थ अस्क्री

इच्छा पूर्ण होनी है इच्छा ना कवल परमात्मा का वर्षा हार्गा अभ अपक व

आवश्यकता म खुकालंबन्द बीनेकहः म न्यस्यव वा बोल हागा

लिकन जब समय श्रा भारत के वा आवश्यकता नहीं त्या जाता देता को इन्छा पूर्ण हाता इसलिए कुछ पुरु ला उन्च व्यक्तिया के प्रतिदान

से हा यह काम हा सकता म इसरान ज' कड़" आय "माजिये शा। क लिए कोई बात बतान्य

बुर या अच्छ कम हा अशाणि ओर शान्त्र का कारण यन सकत है या फिर प्राथना करन स जान्ति मिलता है म हसराज जान कहा

नव बर क म सुराहरणवर ज' जब प्रार करूर महामा 'चा कर 'लबने गयं रा पता क्ला कि रात में डक जब महास्मा जा न उन्हें चार किया से मास्टर सस्साराम जी पस हा बैठ थ एक और महिला भी या महा मा जी न कहा। मास्टर जी आप न्हा बाहर खल जाड़य 'क गयं

तो पूछा व्या कमर म कोई और है हाती हुभा क कर कमा जाब वह मंहन्या भा चला गई एकान्स चर्चा अब व दोना

अकेल रह मय तब महात्म भा करा साल का कार्य रासा नहां है

म खुरुका नचन्द्र जी का रिल भर आवा सभलत हुए उन्हान कहा हमरा ग्दल चार है कि आप रोग पर विजय प्राप्त करे महारमा जा के चेहर पर उन्न था

बोल कामना अच्छा हे नर्शकन किर भाकुछ बात कहता ह

मुझे प्रसन्तत है कि प्रादेशिक सभा का काम तुमने सभारत लिय है वेद प्रवार का ध्यान रखन या तुम मौजूद हो भविच्य म भर बाहे योगाध्यस्स छोडना भी पढे तो भी वेद प्रवार क' ध्यान रखना

मुझे बह भी प्रसन्तव है कि कालेज का काम अब अच्छा वल रह है मेहरबन्द जा और गोवर्धनलाल जी अच्छे काम करने

जल में मुझ गड़ ने साल कि विमक्तर कल्लाप में ख जायगा परन मुझ कछ

एक तो यह कि कानआ कमेटा में आय समाजा व्यक्ति कम हो रहे हैं हमें इस आर ध्यान रखना चाहिए

राग रास्स्यं समार क रावा विश्वा श्रेक का कर प्रकारक वा समास कर रावा अप्राणा कि विश्वा वा वाना उन्हें कर कानन और समान का

सवा करः

भिग्न स्कृत म आवश्यक
कमर वन नाम साधु अश्रम
गारावापु और माहन आश्रम
गारावापु और माहन आश्रम
गारावापु और माहन आश्रम
वद प्रचार का आर अधक ध्यन नन आवश्यक है में स्मान स्वार होती आवश्यक है में सा स्वार विकेत अनुसार डां डां काई फास्तवु या आर्थ समाज का कान मन्यत करता नन डां समाज का कान मन्यत करता नन प्रमुख्य मा काई हानित नंडां मुख्य मा काई हानित नंडां म

परमान शक्ति त्या रूपण जो बात करण उसका प्रथमणिक पुराकरण भाषक इंचन्ता का

न्याप का इ चिता का महान्या जा मुस्कराय गर पु रह में खुशहालचल ना ने पूरा कुछ और

बस्स और क्या तुम्ह कुछ पूछना नो तो पूछ ला आप किस्सी का नाम बताइय बिस से अपका नान समझ्

मा का ना सहुत की ता के अस्ता नन तानि । सारा पर आरो साझा न ता । । कोष्ट मन पद

न्यस्कीसंबार सत्र पाठ क्ष मासः प्रवन नएं सनामः ना कना ना सम्।वश्यान का त्र इक्कास वार

य खुरा न इस्यास बार मत्र का पाग किया नवस्या ग्राह्म बन्द अस्तिम प्रकाश का ग्राम खुराह लवन्द ना क असावा बहा महामा जा का पृ

परिकार पुत्र भुत्रस्या पात पातथा बहुए त दोहिन्य महारात कृष्ण च विश्वनाथ ला पुत्रकार बख्दा स्वन्यन्य आदि उपस्थित च मनाम भ सिर और माथ पर स तोनिय न्या कृष्णका अक्ष और उसक ब्याद श्रम्भ

क्ष्य हो गया इस प्रकार एक गंग्यशाग जीवन का अन्त हुआ

### भारतीय भाषाएं कब तक अंग्रेजी की गलाम बनी रहेंगी

⊐भरम् प्रतरप सुधल क्यो पीटेगए पुरुद ? किसने पीट और पिटवाया प्रव्यन्द्र को ? किसने धमका

दा ओर ।दलाइ राजकरण को कि

यदि उसने तम्बू नहीं हटाया ता

न्सका हाल पुष्पन्द्र **वैसा हा** कर

दिया जाएगा ? क्या मागा था पुष्पेन्द्र

ने ? किसलिए सात आठ साल से

सतत धरना दिए बैठे हैं भारतीय

भावा सरक्षण सगठन के युवक ?

न राष्ट्रपति जा ने इस जाना समझा

ओर न केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शकरतव

थकराण न पुष्पन्द्र को पाटा गया

इसलिए कि वह हिन्दा सहित

समस्त भारताय भाषाओं को अग्रेजी

का गुलामी से आजाद कराने की

माग कर रहा था सजकरण को

चमकी दा गई और धमकी दी जा

रही हे इसलिए कि वह चाहत यह

हैं कि हम भारत के लाग अपनी

भाषा बोले अपनी भाषा मे अपना

कामकाज करे भारतीय प्रश्न का

सहज प्रस्फुटन हा यही तो राष्ट्रपति

वापाक हरहे में उस दिन यहा

बार तस दिन गुरुमत्री जी न भा

तो कही थी इसी आज्ञय का

सकरूप भारतीय ससद मे भी एक

नहा क्षा बार पारित किया ह यहा

सकल्प लोकसभा ग्राम सभा ओर

जनसभा में भी प्रत्येक चौदह

। सतम्बर का किया जाता है यह

भारत की आजादा का मुख्य मुद्दा

था देश का आजादी का लडाई

अग्रजा न नहा हिन्दी सहित भारत

का समस्य गन्दीय भाषाओं न लडी

थी भारताय सविधान मे भी अराजी

का अनन्तकाल तक चलने की कोई

कार और व्यवस्था नहीं है सभा

राजनातिक दलों के नेता दश क

तमाम बुद्धिबावा और आम आदमी

भा चाहता है कि हम अपनी भाषा

बाल अपना भाषा मे कामकाप

कर ताकि दश के विकास में सभा

की जाना समझा सहभागिता हो

सक बाट की भाषा हिन्दी और

मारताय भाषाम है तो राज की

माम अग्रेज क्यो है और क्यो

रहे ? समाब की भाषा कुछ और

शासन की भाषा कुछ और क्यो

हैं बबा रहे ? यह भारत के सम्बदा

'हन्त कवल भाषा हा नहा न्श का बान्न के महत्वपूर्ण मा सम भा ने हिन्दा भाषा का असर उदस्य नेक का एकता का मन्त्रन रखना इंकबन हिन्दा हो रश का एक राष्ट्र के **रूप म बना**ए ग्छ सकता हं गांधा जी क स्वदशां श्रीभयान म हिन्दा को राष्ट्रभाषा इ' रूप य अपनान का काम प्रमुख मृत्र वा राज्यति शकार दयन्त भुमा 28 अक्तूबर 1995 विज्ञान भवन उटल्ला

पिउन एक हजार साल स ा<sup>न</sup>ा हमार दश का सम्पक्त भाषा रहा ४ अभार खुसरो गुरु नानक दव कबार रहीम गुरु गोबिन्द यान और महामा गांधा आदि मनापुरुषा न सन्दा का विरासत मजबूत करन म बागदान दिया कन्ट सरकार हिन्दा क प्रसार क ानए काई कसर नहीं छाडेगा गृहमत्रा सकरतव चव्हाण 28 29 अवत्वर १९९८ विज्ञान भवन अभा समाग्रर पूरा पदा नहीं

था कि उसा के साथ साथ एक आर समाचार शार्षक उपा दिखाई म्याक प्रवाद का हामत ताक<sup>3</sup> क्यानही टाक्त हं या बा पष्पन्द्र का हान्तत ? ठवरी समाधार कहत हाक हिन्दा भाषा सत्याग्रहा प्रध्येन्द्र प्राहान को हालत न्यक नहा है विज्ञान भवन म गण्पति क सामने पाने गए इस थक्क का उपचार हाक्टर राम मनान्य लाहिया अस्पतान म हो रत हं हाक्टम न आतरिक चौटा क कारण उसका हालत को गंभार वताया ह

आयाग क बाहर हिन्दा भाग भागतीय भाषाआ) क निए धरना टरह अखिल भारतीय भाषा सरभण सगठन क महासंचिव गणकरण सिंह को भा धमकी दा गड ह एक वार्ड अपन तस्य हरा न श्रन्यया उसका भा पुष्पन्द्र जैसा गा किया जाएगा और तम्**ब्**ठकाण रूपकादया जाएगा। 21 कुन्न को घटना और 30 अकुबर 1995 को प्रकाहित समाधार

इसक अतिरिक्त लोक सवा

भारतीय भाषाओं को न्सकिनार करके अग्रजा के सरक्षण और बबाबा बचो दिश्र जाता है ? लोक सेवा आयोग की पराक्षाओं म अग्रजी भाषा की अनिवार्यता क्यो है? क्वाफ इसे दश का दा प्रतिशत आसाटाभानहीं बानता अग्रेजी की आवश्यकता को अनिवार्य बनाने और मानने का कारण क्या है

आठ साल हो गए धरना दत्ते

गिरुगिराते फिनते करत लाकसभा क सभा कक्ष म कृद कर पुन्येन्द्र को अपना हड्डा पसली वृहवावे पतिस की भार खात जेल जात तम्बुटसाहकाते सदी गर्मा धर्मा में ठिदुस्त राष्ट्रा और भागत भूख का पचात बामारा स लडते अभाषप्रस्त असहाय जिन्दगा जीते देश क तथाकथित नताओ बह लोगो विद्यानो सम्पादका पत्रकारो ओर समाज विज्ञानियों का परिक्रमा करत ? क्या मिला इन युवको का ? वे न अपनी राजी रोटा के लिए समर्व और सावना कर रह है ओर न ही किसी राजनीतिक स्वार्थ का पूर्ति क लिए य न एरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है न कोई पद पान के लए इनका एक मात्र उद्देश्य है देशवासियों को सस्बारित ओर परिकात करना उनका उनकी दनदारियों से अवगत

क्या यह अफाध के 7 वदि हा ता फिर मानना होगा कि वह भा अपराध ही था और है जो उस दिन विज्ञान भवन म देश के प्रथम पुरुष महामहिम राष्ट्रपति जी और ग्रहमंत्रा जा में कहा और यदि उनका कथन या बयान अपराध नहीं हो ते भारतीय भाषा मे सरक्षण सगदन के पदाधिकारियो और युवको क वह अनुष्ठान और उनकी माग अपराध बयो है जोकि उनकी सकती पसली तोड टागई? एक ही समान कार्य के नए किसी का अभिनन्दन और अभिवादन और किसी को दण्ड क्यों? यदि यह सच है कि हिन्दी से राष्ट्र की प्रकता है और यदि कवल हिन्दा हा भागत को एक राष्ट्र के रूप मे बनाए सक्त सक्ती है को विन्दी अभा त- अग्रेमी का दस्सा क्यो है ? तो फिर हिन्दा और हमारी राष्ट्रीय भाषाओं को लोफ सेवा परम्परा के विश्वद है इसके कारण अध्योग क क्लिकोर में विश्वारियों

शदहानता बढती है तो भा की परह अपमान्ति क्या किय जाता है ? यदि हिन्दा भाषा का गाथा जा ने देश का वरासत भाग धा हो उनके वारिसो का अग्रना क बाहपूरा म सुखानभूति क्या बोती है

मैं यह जानता हु कि मेर इन प्रश्नो का उत्तर मुख्य और दश क कभी नहीं दिया आएगा अपने नश म मुद्द और मन का बाच का अन्तर दिन प्रतिदिन बढता ना रहा है अवसरवादिता हमार। दूसरा स्वभाव बन गइ है गमा गए गमादास जमना गए जमनादास का प्रवि प्रवल हो ठठा हमार दश क नण जो बोलत ह उसे मानत नहीं करत नहीं आर बा करते हैं उसका उनका बोल स काइ वा नमल हाता नहीं किन्दाकामन हाताहिन्दा का प्रशस्त अग्राचाका मार हा त अध्रेजी का गुणानुबाद प्रायक स्तर पर पास्त्रव्य हर क्षेत्र म स्टन कपर पाखण का राजनाति आर गावनात का पाखाट समानार्थी हा गए ह यह पाखान क्रिया हुआ नहां न जगजादित हे त्याका हर खास और माम आदम। इसस परिचित भी है और इसका शिकार भा

हमार देश के नताओं का दश को तोहना होता है तादक का एकतः की बात शुरू कर दत ह कि जब दश टूट ता उसक टूटन का चाप या आरोप उन पर नहां किसी और पर नग या लगाया बाए बात सामाजिय सरसता आ न्याय का करते हे और पातवाद का जहर फैलाकर समान का पर घर पर्त तोडन का काई अवार नहीं चुकते सैद्धान्तिक स्तर प सार्वजनिक जीवन का शासना पर प्रतिपादन और राजनीति क अपराधांकरण भ्रप्टचार एव कालेथन की भूगमका का ।वराः। कारत हैं किन्तु व्यवकारिक स्तर पर काला पन एकत्र करत ह भ्रष्टाचारा को और उप्टाचार का बढाचा दत हैं अपराधकशिया क पालन पोषण करत है "श कां आतरिक और बाह्य सरक्षा का लेकर किना प्रकट करते ह किन्द उस अवग लगान का कोई अवसर ना चकर्तः लोकसभा म बगालदश पुसपैतियो और उनक कारण स्रामावर्धी राज्या मे वेहिसाथ बढत अकटी के असदसन के कारण (श्रम पुष्ट 7 पर

#### (प्रप्त 6 का शेष)

उत्पन्न हो सके स्वक्तरे पर विन्ता को किसने बाटा था और वै ही व्यवत करते हैं तो बनसमा मे पुसपैठियो की बकालठ करते हैं पाकिस्तान द्वारा प्रेरिश आतकवार काउमीर ही नहीं देश के अनेक भागो म अराजकता और अलगवबाद की आग जला रहा है भारत सरकार सेकलरी नेता और बद्धिशीवी सभा जानते हैं कि इन अविकर्ण को पश्चिस्तान मे प्रशिक्षण दिया आत है यह संबक्तो पता है कि ये कहा रहते हैं इनका पालन पोषण कौन करता है और इन्ह अपने घरों से विपासर सौन रखता है उकन्त उस ओर ध्यान नहीं दिया जाता तो कवल इसलिए बनाया तो क्या ? कि यह उनके पाखर का अग है

यहा उनकी सत्ता राजनाति का मूलाधार इ. वे देश की भूमि गवा सकते ह गधा दते हैं लेकिन कोट नहा पथा सकत ? गरीका इटाआ का सर्वेदनशील वक्तव्य बीमारो मिटाओ का करूना और बरोनगारा स बढी व्यथा का वहा काइ अर्थनहीं है इनको बनाम रखने से ही इनका स्वार्थ सिद्ध हाता हे गगबी भूख बीमारी ओर वरोजगारी का बांज बोकर वोट का फसल काटना राजनीतिक नताओं कामूल चरित्र है ये सच पर स साम्प्रदायिक ताकतो से लहन ऑर उन्हें मिटा देने के लिए एक बटता का आधान करत हैं और मब क पीछ हिन्दू मुस्लिम ईसाई क बीच अगडा कराने का रणनीति बनाने हैं किसे सच माने दशकासी?

नताओं द्वारा बोल और कहा गए शब्दों को कि अपन अनुभव को ? दश के इन तथाकथित नेताआ पर विश्वास करत करते देशवासियो का अब अपने उत्पर हा अविश्वास हान लगा ह देश की भाग का लेकर

राष्ट्रपति जी चितिन और गृहमत्री भी दुखा हैं तो क्या? ससदे द्वारा पारित सकल्प का ग्रहपति जा स्वाकात प्रदान क्यो नहां करत ? उसका क्रियान्वयन करने में ग्रहमत्री का पेरेशानी और बाधा क्या है ? ना कार्य १५ अरंपरा १९४७ और उसक साद 26 जनवरी 1965 को हा जान चारिए था यह 26 जनवरी 1995 तक क्यों नहां श्रुआ या किया गयः ? देश की भाषा को राजनीतिक रम किसने और क्यो

अब भी देशमाता पर भाषा और मकाब का रावनीतिक खबर चला रहे हैं फिर भी महामहिम राष्ट्रपति भी को साधवाद कि उस दिन उन्होन अपना भाषन बद करक भारताय भाषा सरक्षण सगठन के यवको को अपनी बात रहने टा उन्होंने उनकी बात सनी वा इससे सरकारा अपला परजान हुआ हो वयो ? देशवासी अपनी बात अपने प्रथम पुरुष से नहीं कहे करेगे तो किससे कहे करेगे ? राष्ट्रपति जी को शालीनता को सरकारी अमले म अपने वहसीपन का शिकार

दिल्ली के इंडिया गेट क पास शाहजहा भार्ग पर स्थित सब लोक सेवा आयोग के कार्यालय क सामन की पटरी पर धरने पर बैठे बालको क ही नहीं देश क दूसर लोगो के साथ भी समय समय पर और बार बार इस प्रकार का व्यवहार और छल प्रपच किया जात रहता है न्या के नामी गिरामी अधिकात बुद्धिजीवी नेता पत्रकार कानाकार युवक और वृद्ध इन युवको के धरनास्थल पर जाकर अपन फोटो खिचवा चुके हैं समर्थन दे चुके हैं सकल्प ले चुके हैं लेख और सम्पादकीय लिखे का चुके हैं कई बार महाभियान की धमकी दे चुके हैं लेकिन सक्दों के आगे कोई नहीं बढ़ा इसस आगे कोई फदम नहीं बढता तठता तो क्यो ?

सत्याग्रह है पूर्णवया राजनाति निरपेक्ष सारा सत्याग्रह ? क्या इनका बात करने के लिए तभी बुलाया जाएगा जब ये यवक निराश होकर गुस्स म अपना हाथ कपर दठा लगे जब इनके हाथ में स्मरण पत्र नहा आग्नयस्य होगे ? भारत राष्ट्र की गरिमा और एकचा अभूणता बनाए रखने की शातिपूर्ण साधना मे रत इन युवको को हिसा के माग पर धकेलने का कार्य क्यो क्यो का रहा है कि चदि तुम्हे अपनी बात को सुनान है तो वाणा से नहीं बम से काम लो ? क्या अब तर्क का समय समाप्त हुआ और ताकत का समय आरम्भ हो गया है ?

क्या इसलिए कि यह सचमुच

देशवासी चिन्ता चिता पर बैठे हुए हैं। चिताओं और सकटों की दिया सिकायों का सीच फिसने कभी नहीं है। प्रत्येक संबंध एक बनाया ? भाषा के नाम पर देश नया सकट लेकर आता है और

#### भटिण्डा में इसन यज

आर्थ गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कल भटिण्या के प्रागण मे नथा दाश्वाला प्रारम्भ करने से पूर्व एक महायज्ञ का आयोजन किया गया हवन यह मान्य आम् प्रकाश जी चानप्रस्थी जा एव आबाव सुनीश कुमार जी शास्त्रापुरोहित के अन्तरम में बुआ, यह कार्यक्रम ला कुलबन्तराय जी अग्रवाल का अध्यक्षता म हुआ इत्तन यह के यञ्चन ना कुलवनस्य जा अग्रवाल प्रजान श्री अज्ञाक अध्याल मनेजर क्षा अभिन कमार भी क्षा प्रेम भादिया का सपलीक एव जामता कान्ति जिन्दल प्रिसापल आर्य गल्ज सानियर सकेण्डरा स्कल भने

यज्ञापराना श्रीमता सान्ति जिन्दल जा ने व जामती कौशस्या ने मध्र भक्त सनाये भवनोपरान्त श्रा हकमबन्द जा गायल श्रा वजारचन्द 'যা রামতা ফান্বি ফান্বি রি-শ্ল রা माइन लाल जा गग चौ० बाबु राम जा न बोलत हुए बच्चों कं भविष्य उज्यल होने की कामनाकी श्रा चेत्र भारिका जा तपप्रधान कार्य परिनक्षि राभा पञ्चम ने क्या कि स्टाप्ट व अस्त्री ब सह के पात्र हैं जिन्होंने मेरी प्रार्थना

का जन्म दता है चारो ओर स अब क्या हाना क्या होगा का अगवाज सनाइ दती है हर बात की तान अब इस सवाल पर हा टटन लगा है कि क्या होगा इस देश का ? यह स्थिति चिताजनक भा हे आर आशान्त्रित करन वाला भी विकाजनक इसलिए कि यदि श्रीघ्र कोई समाधान या रास्ता दिखाई न दिया ता देशवासा निराश का शिकार शकर कोई गलत और अराजक मार्ग अपना सकत ह आर आजा का कारण इसलिए है कि का बानने नहांद रहा है 'न "मब सभा चिन्ताए समान हो जाता अपने कह का भा करन नहां ना बिन्त पर कन्द्रित हो जाता है तो करना चाहदा है त उसका हन्या परि नन होता ह है तथा प ज्यान का दवता अवतरित इत्त हे लोकमानम की कोला स तभी लोकनायक का जस हुआ करता है। ऐसी डी परिस्थितियों में इस देश की कभी कारलाये थे। जोकमन की व्यक्ता होता आया है।

सधारने का अ जार बनती आई है

पर यह हचन यज करवाया अनंतर असोक जी अग्रवाल ने किथा का बढाने एवं मेहनत से काथ करने का सकल्प दोहराया इस कार्यक्रम म श्रा अञ्चात मित्तल श्री निवाल चन्द जा ग्रहवाकेट वा आंपा भगला तथा आर्य समाज के मान्य सदस्य समिमालित हुए आदरजीय ला क्लबन्तराम च अप्रवाल ने महर्षि द्वारा किए गए कार्यों की उच्च करत हुए रवा शिभा दिलताद्वार के बार म विस्तार स बताया उन्होन कहा नम ऋषि द्वारा दिसाये पथ पर चले प्रजन ना एव प्राचाया जा ने सम्मालत हुए सभा सदस्या विशेषकर श्रा प्रम भाटिया वा श्रामता सन्ताव वा सुपत्ना अशाक आ स्टाफ एव बच्चा का नादिक धन्यवाद किया शान्तिपाठ स प्रव वानप्रस्थी 'पा ने सभा का आशाबाद देत हुए कायक्रम का नय बलवार कायक्रम सम्पन्न होने पर ना कुलयन्तराय जो व त्रा अज्ञाक ना अञ्चलल का आर से नाये गय लड़का

का प्रसाद वितरित किया गया अशोक कुमार अग्रवाल मगतर आया गल्प सा स जल बठिण्या

बहते पाखर पुष्पन्द्री को दा प्रत्यक शाम एक गभीर समस्या का रहा यातनओं अर राजकरणो कादाजारहा धमाकयों का यह सकत है कि अब किसी ऐस लाकनायक का उल्लंबन डान का है जा बस अब बहर हो चका की घायणा करक इस विगन का बनाएगा शत कंबल यह है कि ४२ निष्काम न होकर निकास कर्म कर राज हर परिवर्तन का निमित्त बन । नयरप ाहा बयाकि वह व्यावत का ानयतापन ही तो है नो हम सब सभी का मन किसा एक और यदि कोई पुष्पेन उस पसिलवा वडवा दक्ष है यरि हम घटत है कि दश म कार्य सथक बदलाव हो ता यह प्रश्न अब कवर किसी एक का नहां सच्या हान चाहिए कि कब तक ताहा जाता रहना न्याय का हड़िया आर कव आ राम गौतम बुद्ध चानक्य तक सकते रहेगे हम इस मुकदर्शक क्रकराचार्य दयानन्द विवेकानन्द की तरह ? यह समयत प्रश्न हा विलक और याधी मिले थे और समाधान का कारण और कारक जय प्रकाश नारायण लोकनाथक होगा कारक हो सकता है कारक

ही व्यवस्था का बदलने और (आर्थ जनत 3 दिसम्बर 1995 से साधार है

### आर्य समाज बठिएडा में रामनवमी पर्व

आर्थ समाज बढिण्डा के महर्षि टयानन्द्र सरसग भवन मे राम नवमी का पर्वभी प्रमु भाटिया जी प्रधान नाव समाज का अध्यक्षता मे o शेक्ल्याय के साथ मनाया गया। स्वप्रथम हवनबञ्ज पूज्य ओम प्रकाश ज वानप्रस्था जी क अक्षात्व में हुआ डवन यजोपरान्त श्रामका बीना रानी ন মুখ থকিৱ ক থজন ৰত ছী দখৰ कण्ठंस प्रस्तुत किंग् और सभा ने उनक पीच्छ भजन का दोहरायी का उवन यज्ञ के ब्रुष्टा वानप्रस्थी ना न श्री राम नवमी पर्व के बारे मे

विस्तार पुत्रक विचार दिये। सकाया गया। आ० स० स्वामी दयानन्द बाजार, लुधियाना का उत्सव

आव समाज महर्षि दथानन्द बाजार दान बाजार लुखियाना के वार्षिकोत्सव 1 जून से 6 जून 1999 के अवसर पर आय वारदल का प्रसिक्षण शिवर लगाया जाएगा इस क्षिवर में भाग लेने वाले मनिका की आयु 14 वर्ष से कपर ही आर किसा आर्य समाज का प्रमाण पत्र साथ लाग हागा और अपना नाम मह १५ तक आये समाज महिष दयानन्द बाखार के पता पर भेजना होगा। आने वाले शिक्षार्धी को अपने साब

इस कार्यक्रम मे वजीरचन्द्र वी ला कुलवन्त राथ अग्रवाल श्री पीडी गोयल श्री असोक जी अग्रवाल चौ० माथू सम जी गर्ग श्री इन्द्रजीठ जी श्री निहाल चन्द जी व गौरी शकर जी आदि महानुभाव उपस्थित से मच सचालून औ बिहारी लाल जी

मगला न किया। प्रधान आर्थ समाव श्री प्रेम भाटिया जी ने इस पर्व के कार्यक्रम मे सम्मिलित होने पर समी उपस्थित जनो का हार्दिक धन्यवाद किया इस पूर्व पर आर्व समाज के भवन को विजली की लंडिया लगाकर

मीसम्बनुसार विस्तर और कन्ध्र के बराबर लाठी कापी पैन्सल काका नीकार सफैद बुनियान साथ लानी हागी बर्तन समाज से मिल जाएंगे

इस शिविर में शिक्षा लेने वाले युवक को पचास रुपये (50 प्रवेश मुल्क देना होगा। भाजन की व्यवस्था आर्य समाज का आर से होगी इस शिवर में 50 युक्क रखने हैं इस लिए वो नाम पहले आएग उनको पहले

-मतकात जन्द

### ग्रक्त आर्य माइल स्कल का परीका परिणाम

गुरुकुल शिल्प विद्यालय बठिण्डा में स्थित गुरुकुल आर्य माडल स्कूल के विद्यार्थियों का वार्षिक परीक्षा परिणाम कोवित करने हे १ एक भव्य समागम का आयोजन किया गया। इससे पूर्वकी यह समागम प्रारम्भ हो प्रात १ वर्षे गुरुकुल यहराला में ४४न यह पूज्य ओमप्रकाश जी चानप्रस्थी जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न धुव्यः। श्री बिहारी लाल जी मगला मंत्री आर्य समाज सफ्लीक इस यह के मुख्य यजमान रहे। इवन यह में गुरुकुल क्षेत्र के अडोसी पडोसी स्कूल के विद्यार्थियो एव उनके माता पिता तथा आर्थ समाज के सदस्य सम्मलित हुए। इस समागम की मुख्यातिचि श्रीमती ऊवा गोयल सुफ्ली बी पी ही गोयल प्रधान आर्य माडल स्कूल एव ही असोक बी अग्रवाल मैनेजर आर्व गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल अध्यक्ष बने। श्रीमती शान्ति जिन्दल प्रिसीपल आर्थ गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कल ने विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित

किए। उन्होंने बच्चो एव उनके मारा पिता को क्याई दी कि वह विषयर्थी जो कि परीक्षा के समय गैर काबिर रहे के अतिरिक्त स्कूल की सभी कथाओं का परिणाम राव प्रविशत है उन्होंने स्कूल का अध्यापिकाओं का धन्यबाद किया एव उनसे पराभर्श किया कि वे स्कूल का दाखिला मेहनत से करे और विद्यार्थियों की संख्या बढाये। आंथ के इस समाज के अध्यक्ष श्री असोक की अग्रवाल ने पास हुए बच्चों को बध्दर्स दी एव उन्होंने प्रथम द्वितीय तृतीय आने वाले सभी ककाओं के विद्यार्थियों को पारिवोषिक दिए। अधिकत्तर पारिवोषिक पूज्य वानप्रस्थी जी के कर कमलो द्वारा दिवे गवे। इस स्कूल के बच्चे अधिकतर गरीब परिवारों के हैं इसलिए श्री अलोक बी अग्रवाल श्रीमती शान्ति जिन्दल श्रीमती कवा गोयल एव श्री प्रेम धाटिया की ने बच्चों के लिए आवश्यकवानसार नकद राशि प्रदान की।

प्रेम भाटिका मैनेका

फामसा हारद्वार गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त कोलस्ट्रोल रहित विटामिन 'सी' से भरपूर

रसा जावेगाः

अप्रम स्थास्थ्य के लिए हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का

सेवन करे।



गास्त्रा कार्यालयः ाषश्ची बाजार दिस्ली-११०००६



वर्ष 49 अक 4 12 वैशास सम्बद्ध 2056 वदनसार 22/25 अप्रैल 1999 दपानन्दाब्द 175 वार्षिक शल्क 50 रुपये आशीवन 500 रुपये

#### मानत हुए 100 वर्ष जीने का प्रशासमा का निर्देश

ा के **दे के का पे कर फार किया का बात कर पर्द का अक्र** रवृत्वेद मन्द्र 40/2

# ओपम् कुर्वनेका कार्याण क्षेत्रका सम्बर

एव स्थानी भाष्य बेसोऽस्ति ग कर्म लिम्बर्स गरे ॥ मानव बुद्धिपूर्वक ज्ञानपूर्वक

और वेदानुकूल कर्म करते हुए 100 वर्ष चीने की इच्छा करे। पे मानव परमात्मा ने तुम्हारे बारे पेसा ही निश्चम किया है। यह जीवन का सब से वहा गुण है कि वह अपने कार्य म सदा बुटा रहे। आलस्य प्रमाद को कभी भी आमन्त्रित न करें। जो मनुष्य संख्य परिश्रम करते हुए वक नहीं जाता समझ लो कि उसके परिश्रम मे कहीं न कहीं से बुटि है। ऐसा मानव न धन न प्रशस्त और न ही सम्बर की वाह वाह प्राप्त कर सकता है । निउल्ला आदमी पुण्य नहां कमा संकठा। उसका मन बुराई की ओर लगा रहेगा। कहा (Eval door lodge n

he batana Work shop) पाप करने वाले सैवान के कारकाने में निवास करते हैं। प्रमात्मा तसी का मित्र है आ वेद्यकुल कर्षे में अपना भाग प्राप्त करते हैं। पुण्य कर्न करना वरमात्या की सच्ची इंबारन है और वह प्रशुपनित इंस्सर की है उसका शरीर इ सकता। यदि सरीर भी हमारा निरोगल को प्राप्त होता है और दयावान प्रभू की दया के हम एव बनते हैं। कितने लाभ हैं परिश्रम करने के। परिश्रमी बनो और फिर दसरों को भी बन्हओं ऐसा परम पावन प्रम का प्यार कर सदेश है।

रहते ये और बन्होंने अपना सर्वस्त कर्बान कर दिखा मानव मात्र के कल्यांग के लिए। उनकी एक चमकरी धूर्व

मसाल हमारे सामने है और उनका आदेश है कि ससार के प्राणियों और अप्राणियों के हित के लिए जो कुच्छ भी तुम कुर्बान कर सकते हा करो। केवल परिश्रमी मनुष्य ही जो वेदानुकूल कर्म करते है परमात्मा के दर्शन के भागीदार अनते हैं। कर्म से की चुराने वाले मनुष्य परभारत के घरोसे नितन्ते हैंने राते हैं यह उनकी विचारधारा वेट विकट है। राम मरोसे बैते के पढा खाट पर सोय अनहोनी होनी नहीं होनी हो सो होए। परमात्मा ऐसे मनुष्य की कभी यहायता नहीं करता। यह परमात्म का हुकम है कि ऐ मेरे अमर पत्रो और पत्रिया काम करो काम करा और काम से जी मत चराओ।

गीसा में तीन प्रकार के कर्म क्सए हैं।

1 स्वार्थमक्द कर्म। 2 स्वार्थरहित कर्म । ३ अतिनीच कर्म Solf str Actions, Solfice Ac

za Condemonable Appona स्वार्थसक्त कर्म मानव के क बन का कारण बनते है। स्वार्थरहित कर्म मानव को मोध का मार्ग दिखाते हैं और अति नीच कर्म मानव को भन्धकार से लिप्त योगियों में धक्का देते हैं। इसलिए सदा निष्काम धाव से ही कमें करने वाडिए और प्रत्यापकार की भारतना कथी मन में न अब्दे जब हम जम कर्म करे। परमात्या ने रहे के धीता आदेश किया है कि मानव का महर्षि देवानन्द जी सरस्वती दिन कम से कम 100 वर्ष की आध एत यह के करपाण के सिए सोचते | तक प्रीता चारिए।

मनुष्य में सब से बढा चिन्तकाभ मत्य का हर है परन्त क्रब चेदान्कुल बीवन विदाना आरम्भ कर दे और ब्रह्मचर्य का पूर्ण कप से पालन करे तो वह मीत का चनौदी दे सकता है। अचर्ववेद में कहा है

ब्रह्मचर्षेण तपसा देवा मृत्युमोपानन्तः। ब्रह्मचर्व के प्रताप से देवताओ ने मृत्यु पर क्षित्रय प्राप्त की। वेद इस दलील की पुष्ट करता है कि मानव की आयु 100 वर्ष से ऊपर भी हा सकती है। जो लोग इस विचार घारा को मस्तक में लिए बैठे हैं कि आयु न लम्बी हो सकती है और न ही छोटी हा सकती है बह लोग वेद बिरुद्ध दुनिया मे रहते हैं। मानव हमेशा स्मरण रखे कि जिन सिद्धान्तो और साधना का परमात्मा ने वेद मे आदेश दिया है यदि उनको मन वचन और कर्भ से अपनामा जाए तो मानव भो वर्ष से ऊपर जीवन का उपयोग कर सकता है। यह वेद का निर्देश है कि मनुष्य अकाल मृत्यु को प्राप्त न हो। जो मनुष्य बेद में दिए गए साधनों को नहीं अपनाता है

उनका कसमय मरना सम्भव है। हम इस सम्रार मे आए हैं केवल खाने पाने के लिक-नहीं अस्ति उतना ही खाए जिससे जीवन वात्रा में विष्या न पढ़े और जीवन काल में बढ़े बढ़े श्रेष्ट कमीं की ब्रही लगा है। अब्रेप्ट कर्म करने का कैंधी स्वप्न भी न ले। नित्यप्रांत हम पेसे कर्न करे कि जिससे हमरे परिवार को समाज को आत्मा को सन्तरिष्ट मिले और हमारा राष्ट्र उन्नत हो। वेद कभी भी आदेश नहीं करता कि इम दु ख भरा और धन रहित जीवन व्यतीत को । वेष्ट तो यह उपटेल करता है कि मानक व 100 हामी से कमा और 1000 हाबो से बखेर। धन जीवन जलाने के लिए बढ़ा आक्तवक है पर सर्त

यह है कि हमारे धन कमाने के साधन प्रशसनीय हा कसाधना से धन को एकत्र न करे।

> पीता में भी श्रेष्ट कर्म करने का ही आदेश है। फल की प्रचार का बिल्कुल त्याग दा। स्वय ऐस कर्म करा और दूसरों से भा कराजा तब हमारे कमें निष्काम हामे जाल गमाचर तिलक जा ने जा गीता रहस्य पुस्तक लिखी हे उन्हाने उम में कपर लिखे शब्दों पर बहुत बल दिवा है। इससे आप कर्म का निष्कापता का अच्छी तराह समझ गए हागे।

कुछ लोगा ने कर्मों के त्यग को (Abandousmen ut A on का सन्यास से मिला रखा है परना जस्मत इस बात को सम्बन्ध की यह है कि हम कमों का त्याग न करे परन्तु कर्मों के फल का त्याग करे। गीता तो हमे पुकार पुकार कर कह रही है

कर्मण्येवधिकारस्ते मा पालेव क्याचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूमाँ ते सङ्घो इस्त्वकर्मीण।। गीता २ भर तेरा कर्म करने मे ही अधिकार हो फल में कभी नहीं तु कर्मफल की वासना वाला भी मत हा। तेरी कर्म न करने में भी प्रीति न हावे वीन निरुपप्रति कर्मों पर भगवान

कुम्म जी ने बहुत क्ल दिया है जो वेंद्र के आधार पर हैं। बज तान तप कर्जन बच्च कार्यपेव सर।

वज्रो दान तपश्मैव पावनानि ग्निषियाम्॥ १८/५

यज दान और तप रूप कर्म त्यागने योग्य नहीं है यह करना कत्तेच्य है। यत्र दान ओर तप बुद्धिमान पुरुष को पवित्र करने वाले हैं।

फिर भगवान कृष्ण जी ने और

एलन्यपि चु कर्माणि सङ्ग त्वकत्वा प्रत्यानि च । कर्णवदगीति में पार्थ निक्रिका वदम्सम्म ॥ १८ %॥

(शेव प्रष्ठ 2 पर)

## योग से मधुनेड दूर

🗆 शीमति जो सक्तम मुख्य रूप. हर (क्रार), कैर विस्ताहर, वर्ड जीमती मध्येत से प्रसित लोगों की व्यक्त व्यक्ति । साचे या गृह सम्बद्ध

संख्या चींसवी सदी में विज्ञान की ठनावि के साम निरम्पर वह रही है। इसका कारण साधारण रूप से मत्त्रम् नहीं है। मीटा स्त्राने से मधमेड डोने का भय लोगों के दिलों ने अधिक घर कर रहा है। इसलिए इस भय के कारण लोग मीठा खाना कम कर रहे हैं। कारण-इमारे शरीर मे

अप्रमासय तथा छोटी अन्त के बीच अग्नासय नामक का हारमोन साबित करता है। रक्त में शरीर की अवस्थकता के लिए एक निश्चत मात्रा में ग्लुकोज को शरीर संस्थान हर समय रखला है। वैसे ही यह मात्रा बढती है इसुलिन निकलती है बढ़ी हुई मात्रा ग्लाहकोजन की मासपेकियों में जमा रहती है जैसे ही ग्लकोच की मात्रा शरीर क्रियाओं में खर्च होने से रक्त में पहुचती है। यकृत की ग्लाहकोकन दूसरे हारमोन के सावित होने पर ग्लुकोव में बदल बाती है। किसी भी कारण से यदि इसुलिय समित होनी बन्द हो गई हो मध्मेह का रोग आरम्भ हो जायेग्र क्योंकि भोजन में लिया कार्बोडाईडेट एक्ने के बाद ग्लुकोच में बदल वायेगा कोटी आर असको चसकर रक्त में मिला देगी। ग्लूकोज की रक्त में मात्रा बढ जायेगी। इसुलिन के सावित न होने पर बढी ग्लुकोज की मात्र शरीर के स्वत के साम चवकर लगते हुए वृक्क में पहुचेगी वहा अवशिष्ट पदार्थों के साथ छन आयेगी और पेशाव द्वारा शरीर से बाहर निकल जायेगी। इस को हम मध्येह का रोग कहते हैं।

इस्लिन साबित न होने के कारण विज्ञान के युग ने हमारी सुविधाओं को बहाया है । बीवन कार्यों में हम शरीर का काम कम और महीनो का अधिक उपनीग करते हैं भोजन करते समय तरीर अध्ययकताकाकम विकाले स्काद का अधिक ध्यान रखते हैं। शरीर से काम कम और शरीर के लिए तब गरिष्ठ भोजन अधिक होने के परिणाम से पेट वह कारा है पत्तन तलाने वसा जमा होता शुरू हो जाती है। अग्नासय की कियाशीलता धीर धीर कम होकर बन्द हो कारी है। इसुरिल निकरानी बन्द हो बाने से मसमेह का रौन आ थेरता है।

वरिवास-मधुनेह से पीडित आदमी चाहे स्टार्च (गेह चायल

जगूर आदि मीठी चीचें खाए बल्दी वा देर से ग्लूकोब में करल बाती है। रमत में मिलकर मुख्यू प्रारा क्रनकर सरीर से बाहर आती हैं। ऐसे व्यक्ति के शरीर में जने रक्त में कुछ न होने के फारन बैसे म्लूकोच की मात्रा सरीर काणों में खर्च स्वत मे कम होनी भूख बोर से लगदी है कुछ साले को न मिलने पर चक्कर जा सकता है।

दूसरा कारण ई-चिन्ता मानसिक किन्ता का शरीर के अगौं तथा क्रियाओं पर चुरा प्रमाच पश्चक है। अधिक विन्ता के कारण वो मस्तिक सरीर की क्रियाओं को नियानत करता है तबा दूर फूट की नुरम्नव करवा है अपने काम विन्ता में व्यस्त रहने के कारन कर नहीं पाता। इसका दुष्परिणाम सरीर के किसी अन पर क्रिका पर पहला है। ममुमेड के रोगी पर किया का प्रभाव अन्त्रसम् ग्रन्थि पर पद सकत है। इसके दप्परिचाम से इसलिन निकलनी बन्द हो सकती है और मधुमेद का रोग हो सकता है।

सामधानियां तथा छपाय-यदि

पेट का गया है ये कुछ बोगसन तथा च्यायाम क्रियाए आरम्भ करती चाडिय को पेट पर प्रभाव तथा दवाब डाल । ऐसे व्यक्ति को प्राद साम एक समय तेन गति से जितना सम्भव हो टहलना चाहिए नदि चलने में कठिनाई हो तो लेटकर दानों को शरीर के 60 अस पर डठाफर बैसे साइकल चलाते समय टागों की गति होती हैं चलाना थाडिए। अर्द्धमरस्यनिन्दय अस्तर मरीच्यासन से पेट पर दवाब पहता है। मकुर असन से भी इसी प्रकार का प्रभाव डोटा है इसलिए भथनेड के रोगी के लिए अच्छे हैं इसके साथ उप्टासन परिचमोत्तानसन सर्पांचन शलभासन मुनरासन चक्रासन आदि कासन किनमे पेट मुख्ता है या खिनाव अक्षा है करने जे सामान

लागकारी सिद्ध हो सकते हैं। प्रात साथ 10 15 लम्बे गहरे रवास लेना विसमें साद अन्दर आवे समय पेट फूलवा है वन्य नाहर निकलते समय शिकुदता है यह लाधकारी है। इक दो मिनट अग्निसार क्रिया करना संस्था है। कपाल भौति गाठी सुद्धि करना

ची उपयोगी सिद्ध हो स्थास है। चरि विन्ता के कारण से अन्तराय प्रन्यि काम करण कर कर दे से उसमें **भाग करना उपनोगी रहता है।** 

## मविरा पीना षोर पाप

DAL & PRINT BAC. Pers, weller fallen

सूका कर पर में क्यांतर 🕹 सुकरों कार कर गरिक्स पीचा बोक् पाप, गामो बात इमारी / स्थाको सराज्य भी करतो हैं, भाग कुछ। है चानी / अवार सरस्य मनुष्य की कसरी हैं, करती हैं इक्ती // बारें मार्थे का बात किया है, महिन्छ नामा निवासी / रुवा पापिन को सर्वो, बचाओं, वर्षों मिराने की दानी । बुर, बड़ी पीओ, थी काओ, क्यों कीए, बाक्यारी। मकिस पीमा धोन पाप है, मानो बात हमानी।। क्या पाणिन मसिक्त को जिसके, उत्पन्ने गारी सम्बन्धा पत्र करके इतिकास केल औ, यह मा नकरे पाया। शुण्यकोर्षे कर, विज्ञानों कर, उसले किया सकता*।* िलसम्बे मक्किशः मारो समार्थः, उन्सका वेदा मिद्रान्यः।। इस मंबिश में मन्द किए, शुक्तम से बेबावारी। मेक्सिए पीना थोस पाप है. मानों नात हमानी / याका ये विकासत जनार में, सार, विवा के क्यामी। श्री कम्प, बरस्याम, भवत थे, जनसंख्यान के बाली / धान्यकी प्रमुख्य वीस् प्रतिक्तित हे, क्लाधानी । गिनकर सन्दर्भ भाग करेवारे हे, पापी, कालकावी।/ मित्र बिए, बाब्य मस्मित् ने जो वे गोक्षा मानी, मस्मित्र पीमा बोस पाप है, मानो बात हमासी ।। मुख्यार कामुळे, शुप्तपूर्णी के, जब में ठाठ विद्यारे। महा प्रमाणनी, बलकाली, प्रथा पर अउने वहरे।। हुनिया में थी थाक, कीर थे, बेसमता मात्याते/ वीशों की बेकर के लॉसियां, मामाओं ने पाने ।। महिला में वर्षांत किये हें, महाराशि उपकाशी, नविशा पीना बोन् पाप है नानो बात हेनामी 🏗 अब धासुर के युक्क-युवतियों, भक्तसु पीमा छोड़ो। जो गम्प, गोशाहरसे हैं, उनसे नाथ गोड़ी।/ जीवन सर्वत क्याओं ज्यानों ? प्रमु से माना जोड़ी। धन्तिकीय अक्, मुण्डों के, के बीगों भूका मेडो ।। **ब्या**स विभय क्य जातो, वेसे के प्रचारी*।* मक्तिम पीना घोर पाप है, मानो बात हमारी ।।

#### (पृष्ठ 1 का शेष)

तप रूप कर्म और भी सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्म असमिव को और फलो को त्याग कर करने चाडिय ऐसा मेरा गिरुष्य किया हका क्लम मध है।

कपर शिक्षी धुई (Descourses) वार्खनाय से यह सिद्ध हो गया कि भागव की जानु करती काती रहसी है। यदि तरीर स्वस्य वै और चिर इस को नेदानुकृत इसकी रक्षा (Magatemance) नहीं की कार्वी भोचन सारिक्त नहीं है अध्ययन का पालन नहीं जहामुद्धवें में उठना नहीं है यह दान और दंध भरता नहीं है से फिर वह मानव सरीर भार देर एक नहीं पत समस्य फिर अकारा मृत्यु व्यवस्थानमाची

हे मर्जयक यह दान और है तो हम 100 वर्ष से अधिक भी बीचन का उपमोग कर सकते हैं यह सब कुछ हमारे हाथ में है (Our Future is in our own Hends) परमारणा ने यो महारे कर्णी

का कल देश है बैसे कर्म वैसा फल । वह मानव को स्मरण रहे कि को ड्री नने काम का फ्रास्म करे प्रेसरें स्तुधि प्रार्थना और उपसन्त के अन्द्र मन्त्रों का उच्चारण अवस्य करे। यहा तक कि परिवार का कोई उदस्य मी दो चार दिनो के लिए घर से बाद जाने तो जाने से पहले परिवार के सब सदस्य क्रमर क्या ३ मनों का उच्छारण जकर करें। इससे भाइर वाने वाले को और परिकार के सब सबस को सुक्त सान्ति प्राप्त होगी देसा है। चरि इसस्य बीवन बेटानुक्त

Market Land

### गुरुकुल कांगड़ी पुण्य भूमि का उत्सव सम्पन्न

मार्च प्रवितिषि सभा गमान (सीन) प्राप्त स्थापित पुरुकुश कायडी प्राचीन परिशर काराड़ी प्राप्त हरिद्वार में स्थित है जिसको स्थानी बद्धानन्द की म्काराज ने स्थापित किया ना। स्थापी की का तपन ना कि मुस्कुल तिका पद्धति पुरू की क्यों और इस के लिये उनको ऐसी यनक की तरात भी जो तकर से पूर हो और गण नदी के किन्तरे पर हो। अब में स्थानी जो के सम्मर्क में चीमदी समन दिव जो आपे जो स्थानी की से हेरित होकर के कहने लगे कि मैं गुरुकुल की स्थापना के लिये आप को अपनी क्षमीय देने के लिने तैकार हूं। चौकरी अपन सिंह जी ने स्थानी ब्रह्मानन्द को को क्ष्मारी 1400 कीमें धूमि गुरुकुल की स्थापक के लिएे दे दी। इसके परकार स्कर्म जी में मुस्कुल का सुधारम्था किया और सर्वप्रमम नहा पर कुछ श्रीचढिया शाल कर अ ब्रह्मचारियों के साथ पुरुकुल सारम्थ कर विश्व और वीरे-वीरे पढ़ एका 900 तक वह गई। स्थानी भी ने अपने चीवन कारा में गुरुकुत कानवी विश्वविद्याराण की स्थापना की और ग्या पर स्थापनियों को गुरुकुरा तिका पढ़ति पर आचारित क्रिका ही र्याः इस पुरुकुल को पूष्प महत्त्व कर्या की पी देखने के लिने नवें। 1904 में नम नदी में पीचम कक आ न्यं। किसके कारण नुसकृता प्राचीन परिसर से हथा कर के श्वारसपुर के पास हरिहार में स्थाननस्था कर दिया गया। तथ से लेकर गुज़ज़ूरत आयीन परिसर बीदाव नका था। गया क्यों यह पानी आयीन परिसर को बढ़ा कर के ले का शहर का ! काम सर भवन हो पानी में का नक और को बका ना उस सी प्रस्ता कृषे बनवा थी। चनाप्रथम भी प्रस्ता साथ भी सर्ग भी वीरेन सी भीर में कुछ साथियों के साथ भाग से 10 सत्त पहले था। नर परे हो हैका कि को वर्षों हुई हमारा है उस की वस्ता खुत करता है और वेबीन को नेता महिका क्षेत्र के का रहा है। समाध्यम भी इरकेब स्थाह भी प्रभी भी जैन्दर से भी गीरेन्द्र भी ने आर्च प्रतिभिन्न प्रभा प्रथम भी ओर से मार्च पर समाते के बाब चनवाने और निका पर लगणा 12 ला**क रुपंत्र को**ई की मीर से क्षार्य किया गया। समा प्रधान भी इरक्स **रवंत की प्रभी** में स्थानी और से लाको रुपना सार्य कर के हमारत की कुरामा कांच्या और अब नव इमारत महत कुनर वो गई है। बार्च अविनिधि सम्ब प्रोतन मुस्कृत कांच्या प्राचीन परिसर एवं कानवी प्राम में स्मित समस्त भूमि की स्थामिनी है। मार्च प्रविधिष्ठ सभा स्थाप इस्त प्रविधिष्ठ १६-स्वीत को पुरुकुल कागरी प्राचीन परिवर में स्थामी बदागंद की महाराज की गार में एक असय जिन्ह क्या है निवा में समा प्रधान औं अध्यक रक्तर भी सम्बं हर वर्ष हवातें कान वार्ष कर के कुरू ऋषे शहर की नक्तम बाते हैं।

12 मील 1999 को इस सब्दे 10 को गुम्कुल कामडी पुष्प धूरि का शक्त भार्च अधिपित सन्त प्रकार की और से समाप्रकार की इरकत ताल की सन्त की अञ्चलक में केद चरिए में हुल इस्त किसमें सैंकड़ों

नर चारियो ने पान लिखा। इस उत्सव में यानगीय प्रो. होर सिक निजीटर आदरणीय तुर्व देव जी कुल्ताविपति माननीय डायटर धर्मपाल जी कुलपित भी वेदावत सर्मा ढावटर भारत पूचन विद्यालकार डावटर क्यदेव विकासकार प्रो वेद प्रकास आस्त्री बडिन इन्द जी व्यासापर व्यक्तम विकास माना आयों वी प्रधानकार्य करूब गुरुकत विकास शक्त कावटर के के पसरीचा परिन्त उप प्रचान आर्च प्रतिनिधि सभा क्काब च उनकी धर्म पानी डाक्टर प्रेम पसरीका जी काक्टर सिक्टानन्द ची सारवी कोचाथक सार्वदेशिक सभा श्रीमति राजेस सर्मा प्रधान जिला आर्च सभा लिवपाना श्री आसानन्द थी आर्च श्री ओम प्रकास पासी विजय सरीन भी मतवाल चद वी प्रधान आर्थ समाव दाल वाकार लियाना आदि ने धाग लिया। लियाना से लगभग 60 भाई और बहिनें श्रीपति रावेश कर्मी के नेतत्व में लिववाना से एक बस लेकर गये वे। इसी वरह विवस से भी प्रेम भाटिया जी उप प्रधान आर्थ प्रतिनिधि सन्धा पत्थान के नेतरण में नवत से आर्थ नविने व भाई निरुद्धा से गये। प्रवास से और भी कई लोग बड़ा गये थे। इस ठासव में प्रो जेर सिड भी. बीसर्च देव की और बाक्टर वर्मफल जी ने कड़ा कि डमे मिल कल कर काम करना चाडिये और गुरूकल की उन्नति के लिये काम करना चाडिये। समा प्रधान श्री ४१क्स लाल हार्ग जी ने कहा कि मैंने गुरुकल की उन्तरि के लिने बहुत काम किना है। आर्व प्रतिनिधि सथा प्रवास की ओर से मुल्कुल प्राचीन परिसर में बहुत करती ही सभा द्वारा काम हुए किना भागेण और मगले वर्ष नहरा वटा उत्सव किना वारेण। श्री सभा प्रवास की ने सभी अवर्ष भाई व कड़िनों को इकट्ठे मिल कर काम करने की प्रेरका दी और आर्च समाज का प्रचार एवं प्रसार करने के लिये महस्वन किया। क्षापटर के के पसरीया जी ने भी अपने बहुत ही अच्छे विकार रखे और आर्च प्रतिनिध सभा एकाव की थोजना के सम्बन्ध मे विसार से बाज्य । आर्थ गाउल हाई स्कूल बठिडा की बण्यियों ने बहुत ही मीठा और सुन्दर भकर सुनावा। ही विस्त्व प्रेमी वी वो दिल्ली से आवे वे ठकोने **भारत** ही सुन्दर कविता ऐस की। लुधियाना की नहिन राजेस सर्मा ने **भारत** ही सुन्दर भजन सुसम्म और वेदो पर प्रकास ठाला और कहा इस सभी को मिल जुल कर काम करना चाहिये। आर्थ प्रतिनिधि सभा इरिक्कम के भवनोप्टेक्षक क्षरा भवन इसता किया गया। इसी प्रसार बढिन एन्ट वी वो वानप्रस्थ आग्रम प्यासापर से आई थी उन्होंने अपना नहुत ही प्रभावित सदेश दिना और नक्तमा कि भनुष्य सारी उस इस संसार के भीग विलास में समय क्यांट करता रहता है । मनव्य को अपना समय वर्षाद वहीं करना चाहिये। उस को अच्छे काम करने चाडिमें और परमात्मा के नाम को स्मरण करना चाडिमे जिससे मनुष्य सस्तर के इस भवस्तागर से चर हो सके। बहिन इन्द्र की बहुत ही विद्यान हैं और उन से सभी उपस्थित बहिने और भाई बहुत ही प्रभावित हुये। मैंने प्रतिनिधि संपानों के अधिकारियों से विनग्र प्रार्थना की कि लढाई इनके बद करी और सभी इकट्ठे मिल कर काम करो। वो नेता लोग अवपंत में लक्षते हैं उनको मिल बैठ कर समस्वाओं का समाधान निकासका फाड़िये। मैंने कहा कि सभा के तथाकवित विभावन से तुम्मुल कामधी को म्हूत तुम्सल हुआ है । इसलिये हमे इस का हल बुक्य मारिये। नवींकि जिलाकान से समस्माप वर्धी हैं। अब मे श्री संप्रायमण हरकस लाल की सर्मा ने सभी आए हुने भाई व बहिनो का मनवाद किया। इस के परवात भी आत्म प्रकास अरोडा तथिकान ने अपि पाठ करावा जिससे उत्सव की कार्बवाडी समाप्त हुई। उत्सव के परकात सभी उपस्थित भाई व बढ़िनों ने ऋषि लगर में प्रीति भोज किया को सभा प्रकान श्री हरकस साल की सभी द्वारा लगाका गया था। इस प्रकार गुरुकुल कागबी प्राचीन परिसर पृथ्य पृत्रि का उल्लब बडे जानदार हम से अर्थ प्रतिनिधि सभा पक्षम द्वारा मनामा गथा। वो भाई व बहिने लुविवान से विदेश से और प्रकाब के इसरे भागों से वका पर गये वे और बिन प्रविनिधि सम्प्रओं के अधिकारियों ने दिल्ली व हरियाना से नव कर इस करसब ये भाग निका और किन माननीव सन्वासिबो ने इस उत्सव में क्षम लिचा उन सब का मैं आर्च प्रतिनिधि संभा पंचाब की ओर से व अपनी ओर से म्हुत महुत धनकाद करता हूं।

अस्थिती कुमार शर्मा ( एडमोफेट ) सभा महामणी

# विवेकानन्द और ईसाई मिश्रनरियाँ

□ डर. कम्सन क्रिक्टेंस् गोसक (गतांक से आगे)

कि दनके असक्य अनवाधियों ने इन उपदेशों का पालन नहीं किया और फिर भी ईसा उनके 'बर्म के महानगुरु हैं ' (विषेकानन्द साहित्व खण्ड-9, पू 152)। वे 29 अक्टबर, 1896 को लदन में दिए गए भाषण में इसी बात को बबावे हुए कक्षते हैं, 'ईसा के उस शैलोपदेश का स्मरण करो। वो व्यक्ति इस उपदेश को कार्यरूप में परिचल करेगा वह उसी क्षण देवला हो जाएगा। सुनते हैं पृथ्वी पर इतने करोड ईसाई हैं तो क्या तुम कहना चाहते हो. ये सभी ईसाई हैं ? इसका वास्तविक अर्थ है कि ये किसी-न-किसी समय इन उपदेशों के अनुसार कार्य करने की चेच्टा कर सकते हैं। दो करोड लोगों में एक भी सच्च इसाई है या नहीं, इसमें सन्देह है' (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-2 पू 167)। विवेकानन्द अमरीका और इंग्लैंग्ड में ईसाइयों के बीच कई थार इस प्रश्न और सन्देह को ठठाते है. लेकिन कोई मद्धि-सम्मत उत्तर सामने नहीं आता।

बौद्ध बर्ष प्रबास मिसलपी धर्म स्थितंत्रश्राद का मात्र है कि इंसाई मात्र किन्दु मार्ग से प्राप्तुरीण हुआ है (धिवंत्रशाप्त साहित्य खण्ड-8, पू 29) काम इसकी गीत "कुड मार्ग में है (धिवंत्रशाद साहित्य खण्ड-10 पू 283) ईसा को स्थाप पुरवसी बुद्ध की हिस्सओं में देखी जा सकती है। बौद्ध भाई दुनिया का प्रधान मिसत्य के मार्ग आ ती टक्स मार्ग मिसत्य के मार्ग आ ती टक्स में लोगों को दीशित किया में लोगों को दीशित किया

एक कैथोलिक पादरी ने -न मान्य को देखा और एक पुस्तक शिखों तो उसे मदश्युत कर दिया गया। इस्लाम और ईसाई धर्म मिम्ननरी धर्म के परन्तु दोनों ने ही "प्या का प्रयोग किया (विषेकानन्द

साहित्व खण्ड-1, पू. 278) तथा 'दकानदारी धर्म' (विवेकानन्द साहित्व खण्ड-3, पु 238-239) कहते हैं। उनके अनुसार तलबार में इंसाई थर्म का प्रसार हुआ, पूरे ईसाई इतिहास में एक उदाहरण भी इसके विपरीत नहीं है। 'तुम लोग इस्लाम से क्या अच्छा कर सकते हो ' 7 (विवेकानन्द साहित्य सम्बन्ध-1, पू 278) वे ईसाई समाज को व्यापार प्रधान पाते हैं और बहते हैं कि जिनका धर्म ज्यापार है. वे धर्म में भी व्यापारिक स्थाओं, धूर्चताओं और संकीर्णताओं को से आते हैं। (विवेदानन्द सहित्य सम्ब-3, प् 387)। ये प्रमान देते हैं कि अमरीका

में ईसाई पादरी नव्ये हजार कार्षिक

वेतन तक पाते हैं और इस तरह करोडों रुपए खर्च करते हैं। इसके साथ वे सदैव ईश्वर से कुछ-न-कुछ मानते रहते हैं। परिचम में पालांकी अधिक हैं। चर्च काना एक फैसन है। ये पूछते हैं बदि ईस्वर तुम्हारे पास होता तो इतने अपराय क्यों होते। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-3 पू 238)? विवेकानन्द ईसाइयों के बपतस्मित संस्कार की भी परीक्षा करते हैं। वे कहते हैं कि 'बपतिस्मा' का ठार्ब है-आध्वातिमक जीवन में सीचा प्रवेश, प्रश्वरीय प्रकार तक पहचन (विवेकानन साहित्य खण्ड-3, पु 197) कुछ भिज्ञनरी विवेकानन्द को 'बॅपरिस्मा' देना खहते ये तो उन्होंने उनसे कहा कि यदि दे सकते हो तो मुझे आत्मा

का बपतिस्मा दो। यदि नहीं, तो तुम

ईसाई नहीं हो।

विवेक्पनन्द ईसडमों के मलारिस्ट नाम अनुष्ठान को भी 'असभ्य जातियों की एक अति प्राचीन प्रधा का अवशेष' मानते हैं और कहते हैं कि इस प्रथा के कारण ईसाई मत र्डस का ययार्थ शिक्षा से दूर हो गया और तसमें दसरों के कपर अत्याचार तथा रक्तचार्य करने का निष्ठर भाव का गया। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-८, पृ 85-86)। विवेकानन्द ईसाई मत की तुलना हिन्दू धर्म से करके देखते हैं और दोनों के अन्तर को बार-बार रेखांकित करते हैं। उन्होंने अमरीका, इंग्लैप्ड, भारत वहा भी धर्म की चर्चा की और ईसाई मत आदि मठ-पंचों को समझने का प्रयत्न किया, यहा हिन्दू धर्म से उनके दस्टिकोण को सनकने में सहायत मिलती है। उनके विचार में हिन्दू धर्म और इंसाई मत में कुछ मूलपूत अन्तर निम्नलिखित हैं :--

1 हिन्दू धर्म किसी व्यक्ति पर अभित भाँ है, व्यक्ति ईख के अधाव में ईखाई यह और मोहम्मद के अध्यव में इस्लाम खड़ा नहीं रह संक्षता। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-4, प्र 278)।

2 डिन्दू सारव ऐतिकासिक न डोने के कारण सम्प हैं और ईसाई मत ऐतिकासिक है तथा अनुष्य प्रणीत है (विवेकानन्द सर्वहत्म खण्ड-5, प 225)।

3 हिन्दू इंसा के 'सैलोफ्टेस' पर श्रद्धा रजका है, किन्दू प्राथ: इंसाई 'हिन्दू पवित्र अस्प्रस्तों' के बारे में कुछ नहीं जानो (विवेक्तनन्द्र साहित्य जप्ड-1-9, 284)।

4 हिन्दू धर्म में उद्धारपाद का कोई स्वान नहीं है, जबकि इंसाइयों में इसका विशेष महत्व हैं। (विषेकानन्द साहित्य खण्ड-10, पृ 272)।

5 इंस्कृश्या ने जपने भाइयों का गला काटकर समृद्धि प्राप्त की, किन्तु हिन्दु इस कीमत पर अपनी उन्नति नहीं चाहेगा। (विवेकानन्द साहित्य खण्डा-10, पु 236)।

6 ईसाई 'बुरापरसर के बर्ग परिवर्तन' के लिए हजारों डालर देता है, परतु हिन्दू ऐसा नहीं कर सकता। हिन्दू पूर्णत: निःस्वार्थ होकर आञ्चारियक सहायता करता है (विषेकान्द साहित्य खण्ड-10, पू

7 ईखहर्यों में ईस्त मसीह के रक्त ह्या मोख अख्या मेगने के मिश्रियान से स्वय को सुरक्षित रखने की प्रवृति हिन्दू धर्म में कभी मान्य नहीं हो सकी। विवेकान्य ने कहा कि वे ऐसा मोख, ऐसा दक्तर कभी स्वीकार नहीं कर सकते जो दूसरे के रक्त से मिश्रस्त हो, पाएँ नसक हो करों न गरेंगे। (योवकानन्य हो करों न गरेंगे। (योवकानन्य

साहित्य खण्ड-1, पू 275)।

8 हिन्यू पर्य सहिष्णु है। यहा
तक कि घरता में पहले हिन्युओं ने
निम्मनरी का स्वागत किया था,
जबकि अंग्रेज उसे रोकना वाहते
थे। हरके विपरोत हंसकं विकास विद्यालित है।
हरके विपरोत हंसकं विकास विद्यालित है।
विवास विकास साहित्य खण्ड-1, पू
281 वसा खण्ड-10, पू
254)।

9 ईसाई बिक्रण हाथ फेरकर ईसा की सच्चित को सप्रेषित करने का दाला करते हैं, रक्तानी विवेकतनन्द के अनुसार यह सच्चित प्रत्येक मनुष्य के पास हो सकती है (विवेकतनन्द साहित्य खल्ड-3, पू 196)।

स्वामी विषेकानन्द 'धर्म परिवर्तन' की धारणा को ही

'अपमानवनक' कहते हुए उसे अस्वीकार करते हैं (विवेकातन्द स्बद्धित्व खम्ब-१०, पू. २४३) । इसी फारन वे अनरीका आदि देशों मे चर-भार कहते हैं कि वे स्थिता नहीं हैं और न धर्म-चरिवर्गन ननका लक्ष्य है। वे भारत आने बाले ईसाई मिसनियों से भी यही कहते हैं कि वे मत प्रकार के लिए, ईस्वर का अन देने के लिए न आए. क्योंकि उनका मत ऐसा है जो भगवान को सभी बीधों के प्रति प्रेमलील. विचारतील, सीम्ब और मधर मानत है। (विवेकानन्द सहित्य सण्ड-1. प 271 सम्बासम्बद-३ प 240)। में चारते थे. यदि ईसाई मिसापरी आरो हैं तो वे स्थय को क्रिका तक सीमित रखें (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पु 282 तथा खण्ड-10 पु. 231)। हिन्दुओं को वितने धर्म भी आवश्यकता है, वह उनके पास है। विवेकापन्द मानते हैं कि वे निम्न वर्गों की स्थिति प्रस्ता बन जाने से नहीं सुधरी है। विवेकानन्द 6 मई, 1895 को जमरीका से पारत मे अपने मित्रों और शिष्यों को एक पत्र में लिखते हैं, 'बदि तुम तीस करोड लोग मिरुनरी लोगों की चमकियों में आ गए, तो तुम सब कायर हो और कुछ भी कहने के अधिकारी नहीं हो।' (विधेकानन्य

साहित्य खण्ड-4, पु 282)

निकार्यतः स्वामी विवेकानन्द के धर्म दर्जन में एक ही धर्म. पंच या पस्तक सत्य नहीं है। धर्मों की विभिन्तता ही प्रकृति का सत्य है नयोंकि जैवम्य जीवन का प्रतीक है। अत. ईसाइयत या इस्लाम जो एक अपने ही पथ किसी न किसी महान सार्वभौभिक सत्य के ही अंज हैं। इनका 'बहत्व' इमें ईश्वर के एकत्व' की ओर ले जाता है। यदि एक धर्माना सम्प्रदाय पथ्ती पर सा बाए. तो मनच्यों की दक्त क्या होगी े हिन्दू धर्म सहिष्णु है, इस कारण वह बुद्ध, ईसा, भुहम्मद सभी को स्वीकार करता है। अतः जो मत हिन्दू समाव को अपने जाल मे फंसाना चाहते हैं, वे कभी सफल नहीं क्षोगे। हिन्दू धर्म मे पूर्ण स्वाधीनता है और यह बता दूसरे मत के प्रकारकों को समझनी चाहिए। ये ईसाई मिलगरी ईसा के जीवन के विपरीत चल रहे हैं। ये डालर की सकित से हिन्दुओं का धर्म क्दल रहे हैं। इसलिए विवेकानन्द इन मिशनरियों के प्रतिकार के लिए हिन्दु समान को खड़ा करते हैं।

(पांच जन्म से साभार) ग्रेक्क : इस्साम पोड्दार (राणी)

### आर्य समाज तसवाहा की मतिविधियां और वेब-प्रचार

18-3-99 को आर्यसमाज मन्दिर तलकाडा में आर्थ समाज स्वापना दिवस मन्त्रव्य गवा पहले यञ्ज किया गया। यञ्ज के उपरान्त स्त्री आर्थ समाज और नन्हें मुन्ने बच्चों ने बहुत अच्छे भवन सुनाये। इसके उपरान्त आर्य समाज की स्वापना ऋषि जी ने क्यों की आर्थ समाज ने पिछले समय में संसार में **आगृति पैदा करने के लिये क्या-**क्या कार्य किये इस पर विचार टिये गये। बाद में प्रीठि भोज किया गया जो लोग और सदस्य घरों से लेकर आवे थे।

25-3-99 को रामनवी का **उत्सव भी बहुत भुमधाम से किया** गया इस अवसर पर श्री पं॰ विकास कुमार जी सास्त्री मधोपदेसक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री सतीश मभाव राष्ट्री भजन मण्डली भी आर्य समाज मन्दिर में प्रधारी हुई बी। यज्ञ उपरान्त श्री रामचन्द्र जी के र्जावन पर श्री अमर नाम वी और श्री मनोहर लाल जी ने भी बहुत अच्छा प्रकास डाला। सभा की भवन मण्डली द्वारा बहत अच्छे **पचन सुनाये गये जिन्को सदस्यों** ने बत्तर पसन्द किया। इसके रापान्त श्री विसय कुमार जी ने बहुत प्रभावसाली, विद्वतपूर्व बहुत अच्छे विचार और प्रवचन आर्थ समाज और श्री राम चन्द्र वी की मर्यादा पर वैदिक धर्म के स्वरूप पर दिया। बाद में सब ने मिल कर प्रीति भीज किया। 4-4-98 रविवार के सत्संग का आयोजन तलवाढा से 5 किलोमीटर दूर गांव कराडी में श्री ओम प्रकास जी पर्चायत अफसर के घर पर किया गया। यज 10 बजे जुरू हुआ। हमारे वहाँ पहुँचने से पहले ही लोगों में यज के प्रति इतनी श्रद्धा थी कि सारा गांव वहां पहुंच चुका था। उनके रिस्तेदार समे सम्बन्धी सब पहुँचे हुऐ थे। पं॰ परमानन्द जी ने यज्ञ करवाया। स्त्री आर्य समाज के सदस्यों ने और बच्चों ने नवदीष कुमार जी ने बहुत अच्छे भजन गाँपे। गाँव के लोगों ने भी बहुत अच्छे भजन सुनाये। श्री मनोहर लाल जी आर्य और श्री अमर नाथ जी आर्य ने यज पर और वैदिक ज्ञान की हमें क्यों अवश्यकता है ? पर बहुत सुन्दर विचार दिये। तलवाड़ा से श्री रमेश चन्द्र जी भाटिया प्रधान, किशोरी लाल जी, जटुनाथ जी, जगमोहन कंवर जी, हरिश चन्द्र जी, सुरेन्द्र जी, नवदीय जी, डा॰ वैजनाय जी आर्व और स्त्री समाज की बहत

सी सदस्य कर्मला बी, कृष्णा जी ज्ञन्ति ची, मधु जी आदि बहुत से सदस्य और अधिकारी वहाँ गये हुये हो। वहां पंजाब से सारे इलाके के अफसर और प्रतिष्ठित व्यक्ति पहुंचे हुवे थे। मानों मेला लगा हो। सभी ने जार्य समाज के कार्यक्रम की और यह के इंग की बहुत तरीफ की और संग्रहा। बाद में घर

वालों की ओर से भण्डारा किया गया। सब ने मिल कर भीजन किया जो सांग 5 बच्चे तक चलता रहा। इस प्रचार का गावों में बहत प्रभाव

10-4-99 को आर्य समाज मन्दिर में महात्मा इंसराज पब्लिक स्कूल को विधिवत्त तुरू किया गया। पहले बज्र किया गया यज्ञ मे स्कल के प्रिंसीपल श्री सुरेश कुमार जी पत्नी सहित यजमान बने और थब के ऊपर सभी अध्यापकों को यजमान बनाया गया। आर्य समान मन्दिर का हाल छात्रों से और उनके अभिभावकों से खनाखन भरा हुआ का। आर्य भमाज तलवाडा के सदस्य और अधिकारीगण, स्त्री आर्थ समाज

वलबाडा के सदस्य और

अधिकारीगण चुट्टी ले कर प्रोग्राम

में सभी आये। आर्थ समाज मन्दिर में अच्छी रागक लगी हुई थी। यज उपरान्त श्री अमर नाथ जी और श्री मनोहर लाल जी ने स्कूल के पिछले इतिहास पर भी विचार दिये और कहा कि यह श्री वीरेन्द्र जी की याद है हमारे पास, क्योंकि उन्होंने अपने पवित्र करकमलों द्वारा इसका उद्घाटन किया था। इसकी रक्षा करना हम सब का कर्तव्य है और स्वामी दयानन्द जी की शिक्षा नीति क्या है ? कैसी वह शिक्षा चाहते थे, इस पर विचार दिये। बाद में पं० जी ने वेद मंत्रों से प्रिसीपल की आशीर्वाद देकर स्कूल के कार्यालय का उद्दशस्त्र करवाया। अन्त में

दोपहर को प० निरजन देव वी इतिहास केसरी महोपदेशक अगo प्रo निष्धि सभा पंजास भी आर्य समाज घटिए में एधरे दन्होंने स्त्री सत्सग में और 11-4-99 को सबत्र आर्थ समाज के सत्संग मे और रात्री को भी 9 से 10 बसे तक बहुत सुन्दर और सरल हंग से बेट मंत्रों की व्याख्या कर मानव

आये हुये सभी सज्जनों को आर्य

समाज द्वार चाय-पान करवाया गया ।

जीवन पर प्रकास डाला।

#### मानधी नगर जालन्धर का उत्सव

जार्थ समाज बेद मन्दिर गान्ही नगर नं•ा का वार्षिक ठतस्य व आर्य समाज स्वापना दिवस 1 अप्रेल 99 से 4 अप्रैल 99 तक वीरवार से रविवार तक बढी श्रद्धापूर्वक व उत्साह से मनाया गया। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी आर्थ समाज के सभी अधिकारी वर्ग श्री बाबू बूटा राम जी प्रधान की अगवाही में दिन रात काम करने में लगे रहे।

22 मार्च से 31 मार्च 99 तक प्रभाव फेरियों का कार्बक्रम सुबंह 5 बच्चे से 7 बजे तक लगातार जारी रहा। काफी संख्या में स्त्री, पुरुष व बच्चे इस प्रभात फेरी में साथ चलते रहे। यह प्रमात फेरी कबीर नगर गान्धी नगर न०२ तथा एक में निकाल गई। लोगों ने काफी उत्साह दिखाय यहा तक कि चाम व जलपान से इस प्रभात फेरी का स्वागत किया व धन से सहायता भी की।

श्री वाक् कूटा राम जी श्री चूनी लाल जी, श्री जनकराण जी, श्री गिरधारी लाल जी, श्री राम लाल जी, श्री भोला जी दुकानदार इन सभी ने श्राय च अलपान से स्वागत किया। 1 अप्रैल 99 से 3 अप्रैल 99 तक लगातार प्रात. 7 से 8 बने तक हवन यह व रात को 8 से 10 बजे तक पवित्र घेट कथा श्रद्धेय पहित विजय कुमार जी ऋस्त्री महोपदेस आर्थ प्रतिनिध सभा पंजाब द्वारा होती रक्षी साथ में सुमाव व सतीज्ञ जी भजनोपदेशक आर्थ प्रतिमिधि सभा रवाम के भवन लोगों को सनने की

मिले। और पश्चित राज कुमार जी व

श्री राजेश जी ने महर्षि दयानन्द के

भवनों का गुणगान किया। 4-4-99 अर्थात् रविवार को मुख्य उत्सव प्रात: 9 बजे सुरु हुआ जिसमें यज्ञ के ब्रह्म में पहित श्री विजय कुमार जी, शास्त्री व परित राजकुमार आर्थ समाज के पुरोहित। चार हवन कुण्डों पर 16 बजमान बैठे जिनके नाम हैं। श्री बाबू राम **जी, ब्रो तिलकराज जी, ब्रो ईशर** यास जी, श्री सतीश जी, श्री साई दास जो, श्री इवेली राम जो, श्री गरेन्द्र कुमार, श्री अरविन्द, श्री वीरवन्द, श्री असोक कुमार जी, श्री गंगाराम जी श्रीमति स्रजीत कौर जी,

श्री पंडित विजय कुमार वी ज्ञास्त्री द्वारा सभी यवमाना को यज्ञोपवीत पहनाया गया, तरपश्चात एक एक मत्र की सुवार रूप से व्याख्यां की गई। यह की सामग्री जुदाने में श्री सांईदास जी व राजेश जी का विक्रेष योगदान रहा। यह के पश्चात् पंडितः श्री विजय कृतार जी शास्त्री द्वारा सभी यवमानों को फुलों से व फलों से आसीर्वाद दिया गैया त्रत्यस्वत् सभी बैठी सगत में देसी भी का इंशवा बांटा गया।

अनिल गुप्त जगदीस काला ।

क्रप्रस्कत ठीक 10-30 मने आर्थ बनोहर लाल आर्थ मंत्री महा सम्मेलन शुरू हुआ, जिसकी

अध्यक्षता श्री बाब सरदारी लाल जी आर्थ रत्न वप प्रधान आर्थ प्रतिनिधि सभा पञाब ने की। सबसे पहिले पंडित राव कुमार जी, महिन पुण्य, सत्या व पढित हरबंस लाल को समा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा श्री सुरजीत व पहित अमर नाथ, (गळा) प मनोहर लाल जी, भागीय नगर की देखियो बस्ती वावाखेल की भवन मन्डली सभी ने ऋषि की महिमा का गुजगान किया। इसमें मुख्य बका में, श्री प० धर्म देश जी आर्थ कार्यालय अध्यक्ष आर्थ प्रतिनिधि सभा प्रजाब 3 श्री अवतार जो हैनरी MLA 4 श्री चूनी लाल जो भगत M IA 5 श्री विजय जी शस्त्री महोपदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व 6 सतीश व श्री सभाव भवन मध्याली ने सभी ने ऋषि दखनन्द को आर्थ सम्बन को स्थापना बया करणी पद्मी प्रस विषय पर अपने अपने विचार जनता को क्वाए।

से निम्नलिखित महानुभावों को सम्मानित किया गया-श्री हरबस लाल की समां प्रधान अतर्थ प्रतिनिधि सभा पवाब, श्री अवतार जी हैनरी MIA अती चूनी लाल जी भगत MLA व सेवा भारती के प्रधान, श्री द्धरका नाथ जी गुप्ता य महामझे श्री मनोहर लाल थी शर्मा इन सभी को दोखाला व द्यपन्ने देकर सम्म्हनित विन्या गया, तथा साथ ही छोटे-छोटे आठ बच्चों को व इनकी अगवाही करने वाले श्री राजेक की महिष दयानन्द वी का स्मृति चिन्ह (Trophs) देकर सम्मानित किया गया। 2-30 वर्ष ध्ववारोहण श्री हरबस लाल जी शर्मा प्रधान आर्थ प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा किया गया सबय ही इनके द्वारा 5100/- की दान राशि आयं समाज को दान के रूप में दी गई। ही अवतार जी हैनरी MIA ने भी आयं समाज को 2100/- की राशि पध आ स भार्गव नगर की तरफ से आर्य समाज को 1100/- रपए की राशि दी गई. और भी बहुत सी आय समाबो ने दान दिया।

तत्परचात आर्य समाध्य की ओर

तत्परचात श्री बाबु सरदारी लाल जी आर्थ रत्प ने अपना अध्यक्षीय भाषाण दिया तथा बाद में ऋषि लगर हरू हुआ जो पाच बजे समाप्त हुआ। तरपश्चात श्री बाबू बूटा राम जो प्रधान ने आई हुई सगत का अपार सहयोग देने पर सारे नगर व्यक्तियों का धन्याबाद किया, जिन्होंने इस पवित्र आर्य समाज वेद मन्दिर में आकर इस उत्सव को ज्ञान नो बढ़ाबा सान्तिपाठ के साथ सम्मेलन को समाप्ति की गई। सभी बाहिर से आए लोगों ने इस उत्सव को सराहा। यह उत्सव सभी पर अपनी अभिट छाप सदा-सदा के लिए क्षेष्ठ गया।

राजेश कुमार प्रचार मंत्री आय

#### विकार्थियों के लिए उपयोगी बाते



#### 🗆 मी केरेना कुण्यार स्थापी, और अस् खैलाएक खेला, अवका

वार्षिक परीक्का में आपके किराने नन्त्रर ठाने की सम्मानना है इस अनुसान अभी से आप लगा सकते हैं। नीचे प्रस्न रूप में दस सार्थ उन्न उ कतम अक दिए गए हैं। जिस कार्य का बितना अस आप निफते हैं उसके लिए उसी अनुपत में नन्बर लगाए, फिर को इनका कोड बनेगा आपके

- प्रतिकत औसत गम्भर आगे की सम्मायना उसके अपस प्रास ही होगी। प्रश्न कर्या आप-अभिन्द्रसम् अंक ३० पढाई को प्राथमिकता देते हैं पढ़ले पढाई फिर कुछ और के नियम पर चलते हैं? चढ़ा भी हो सके कुछ सीवाने की ताक में रहते
- हैं? समय का पूरा सदुपयोग कारते हैं? 2 बाद करते समय आर्थ बन्द करके पढ़े हुए विक्य पर मनन करते हैं तक्त जो भुश्किल को उसे तिसको काते हैं? बाद कर क्षेत्र के कद भौबीस कर्य के अन्दर उसे दोइश लोते हैं?
- 3 पक्षाई का सूच अम्पास करते हैं परीक्षा के लिए लाशानित करते हैं ? 10 4 जोजन सीमित करते हैं इसमें नकरे नहीं करते को मिल बस्ता है उसी में सन्तोष करते 🗗 मीदा चटपटे खाने से कवराते 🥫 ?
- 5 स्वास्थ्य ठीक स्वाते हैं प्रातः उठने पर खबनी महसूस करते हैं? 5 6 और्प प्रसावन स्टेमल नहीं करते? आवानक्षय से अधिक दिखाना
- करने का प्रकल नहीं करते ?
- 🤈 देशीवियन बहुत कम देखते 🖁 🤉
- 8 अपना सस्मान तथा किरानों सुन्यपरिचत रखते हैं ? 5 9 प्रतिदिन जारमनिर्देशन करते हैं तथा प्रधाई की समीका सनन समन
- पर करवे रहवे हैं। 10 सबसे प्रीति पूर्वक यक्तानेत्व करीते हैं कावी में मिठास रकते हैं क्या
- वडों का अबदर करते हैं । उपरोक्त अक केवल एक ही बार कर लेख कांची चर्ची है समय

समय पर इस तरीके से अपना अकन करके प्रवरन के आप अपने शक कहा सकते हैं। अकन सबी होने के लिए कम से कन चीन गढ़ के चुड़े नम्बर्धे का औरता लेगा वरूरी है।

सबसे बद्धा दुरुपन-निधार्थियों की पक्षई में दान अक्राने काल उन सबसे दुरुग पेटुपन है। अबसर वनको तबीवव इसलिए चताद शासी है कि किसी समय एक रसगुल्ले जा रसमकाई के गिडगिडाने से जगह न होने पर भी परिषट है दिया गया था। भीवन कर लेने के बाद कई बार ऐसा लगाता है कि अधिक ता लिया कुछ कम सामा महिए था। अब तो वे अन्दर माधर जम गए और पढ़ाई का सस्त्र बंद! पर अन क्या हो सकता है अब छो ओक्षली में सिर दे ही दिवा है न अब मूसली से क्या डरफ माई कुछ करना है के पहले करिए, पीछे प्रकारने से क्या लाग।

असल में दोष उठना विश्वविद्यों का नहीं है कितन उनके मन का है। वे मन तो है ही ऐसा सनी को खुब तन किया करता है। परानू ऐसा नहीं है कि इसे तमीक न सिखाई का सके। इसे कर्यू में करने का भी एक तरीका है। इसके लिए अपन्यर इस धोवन तम से और सान उदार, सनसक्त निस वाएगी। नोचन के बाद कभी ऐसा न कहना पढ़े कि बस और नहीं खाना शता वरिक यह कहें कि लगी इतना ही और व्या संकटा हू क्या साकता

आवा जीवती भीवन क्रम-भीवन को चर हिस्सों में बाट लें। इसमें से ठावा मोजन कर लेने पर स्कें। वदि प्रोवन की तीरा उच्छा बनी हुई हो तथ एक चौचाई मोजन और कर लें। क्या एक चौचाई मोजन क्या काए तब इसमें से अधिक से अधिक हिस्सा पशु पश्चिमों के लिए निकाल कर अलग रता दें तथा बाकी का भोजन इस प्रकार करें कि ध्रीजन सम्बन्ध करने पर भी इसका स्वाद बना रहे। प्रात तारित के सकेत आने में देर लगती है। वहीं हम भोता का जते हैं। अर पेट के भरने से कुछ पहले तथा नोबी इच्छा के रहते शोबन त्वाग दें। बने भोबन को प्रमु प्रविनों में बाट दें-ने आप को दुव्तए देंगे। बोडी तकरबंध से होगी। इसे सहें वही स्प है। इसी से का लक्ष्य सिद्ध होगा। इसीलिए चरकसहिता में भी कहा है-

ात्राव्य कार्या शास्त्र पायक्तका न ता व्या हा विविध कृष्टी स्वापनेदस्काशांशमाहास्माऽऽहारपुण्युक्वान । तवावा—कृष्टक्षशांसांस गुलानामाहारकिकाराणानेकं श्रवाणनेक हुन्वतिपात्रसंज्ञात्।।

कर्बात भोषन करने खता अपने पेट (आयहरू) के तीन तान करे। एक पान रोटी सारि तोस प्रकृति के लिए, दूसरा पान पूच रख पानी सारि इन्य प्रवर्षी के लिए सीर रोक्सर कमा रिका रखें विस्तत उस पान में वात पित चपा का सचार ही सके।

विकारियों को चाहिए कि वे जान्तिक मीठे चटपटे और अधालेवार व्यवनों को क्रीकमर ठक्तम प्रकार के स्तरिक्य सबी तथा गर्म नीवन का चवन

नामा का अवन्य उत्तर प्रकार के स्तासका द्वाव तथा गुने गीमा का क्या स्था मेरे तथा भीमा कारते से पहले मुझे हरें के हार मन का उत्तरहरू करें जोड़न् अन्तरहोऽन्तरम मेरे हेड्डपरीकाल शुक्तिका । मा कामतरें सारित कर्ष मेरे बेड्डि हीसरी क्यांच्या । (पन्दु-11/63) जम भीमा मास्मा करें। बेट मेरे के हास सेते हुए स्थानकार्थ में में क्यांच्या कोटे कोटे मास सेते हुए बडे ख्यांच्या से माम करें इसके दिए एस समय

वें तथा पोषण करते समय मन में ने धान लाए हे प्रमु वह अल्ल मेरे लिए स्वास्थ्यवर्धक एव पुष्टिकर हो इससे मेरा सर्टीर रोग रहित एव बलकान वने। सभी प्राप्तिमों को पोषक जल्ल की प्राप्ति

हो इसलिए मेरे किए विका है कि मैं इस पोषण को सवम से करू कभी नी अपने हिस्से से अधिक ए **बा**ऊँ । मोकन पर निवन्त्रन नेस पहला तप हो। ये अन्य मुझी ग्रुप्त करने बस्ता हो। कम से कम श्रेषन में ही मैं सन्यूष्ट रहकर ससार की उन्नरिः में सहाकक बन सकू। यह ही उपरोक्त मत का माथ है।

प्राचीप पाल से ही स्थातियों को कुमार्ग से बचाने के लिए अनेकानेक प्रमान सिने चा रहे हैं। इस कार्य में आणी महर्षि दक्षणय सरस्वती सत्यर्गप्रकाश के वीसरे समुरकाश में रिस्कार्ट हैं निकार्यियों को चाहिए को विकार परने के किना हैं से उन्हें कोड़ हैं।

वैसे कुसए जर्बात् दुष्ट निवरी कर्ने का क्षण पुरस्कारण पूर्व ब्रह्मवर्ष न डोगा जीत मोचन अति काररण पढने पढाने परीका देने में जासरस क्ष कपट करना सर्वोपरि निका का साथ न सनक्रमा अर्थात् विद्या से करा जन्म करने प्राचारिक का जान के दिन हैं क्यान जाना का का नहीं इंदिर पंतासन आरोप राज्य वाया वंग की मुद्दि ग मानान हैनार का अवन छोड़ अन्य मानावीर कर गुर्वि के एडींग पूर्वण में व्यर्थ करना छोगा आरो पंता अदिया अवनार्थ और सिवार्ट्य के सम्बाहीं में मानावार छेना स्तर्शन म करना निरुग्ध पुराण मूनक प्रमानादि की कमारि से गुलिस का माना सोचे से बनादि में प्रवृत्ति होकर विध्व में प्रीति न रखना बन्द्र इक्ट-उक्ट बन्द पुनते रहना को इन निरूप स्थापारों में फल बड़ो हैं ने प्रधानने और निर्धा

पूरा एक या का नाम्या कारावार में कार के हैं ने प्रााचन-वार स्था के राज में मीता शीकर रोगी और यूनी में मित्री में निर्माण प्राच्या की स्थापियों के ताराव नावते हुए जावार्य प्रवच्छा के स्थाप स्थापता का कारावार्य को तारावार की लेकिन कारावार कार्यक्रिय कार्यका मीत्रीकर या। राज्यार कार्यकारियों का प्राच्यां के प्राच्यां के प्राच्या के या प्रवच्या कार्यकारियों कार्यकारियों कुली प्राच्यां के स्थापित कार्यकारिया कार्यकार कार (महामारव विदुर प्रचानर कान्यान ५५)

ध्यतस्य अधियान पत्तः करना मूळता चपत्तता व्यर्थ इयर उधर धी कन्यद करों करना चढता अभिधान और लोग सालक ने प्राप्त निवार्षिकों के लिए निक्र के निरोपी दोष हैं। इनींकि क्लिको सुख पैथ अरएँ की इच्छा है उसकी पिका कहा और पिस्का पित्र जिसा अपने करी की हांका है उसकी पिका कहा और पिस्का पित्र जिसा अपने करी में लगे है उसकी पिका कमानी हुआ पैत्र कार्रित हांकार हुआकी किया को कोड़े और पिकारी पिका हुआ में अस्टर सराग रहे। वहीं से परमार्ग राग जिसा का पहना कहान करी मही है किया।

ना वाजा वाजा वाजा है क्याना कारकारों ने भी जाने निकार इस प्रकार व्यक्त किने हैं— कारकारोंने क्या स्तेश , स्वाह नृंतारकीतुके। अधिनाद्यत्तिमें क, विकासी द्वान्य पर्यवेशु।।

प्रत्येक विद्यार्थी को रुचित है कि यह प्रध्यक्तिक हन अठ हुर्नुवर्धि कर परिचान घर दे-1 काम 2 क्रोब 3 लोच 4 काद 5 मुक्त 6 प्रीकृत 7 अधिनेक त्या 8 अधिनेक जबंद अधिक परिका। अक्रकेषात व्यक्तिकालाम् क्राचिकालाम् क्राचिकालाम् अक्रकेषात व्यक्तिकालाम् क्राचिकाला पंचानकालाम् अल्पादावी ब्रह्मचार्थी विद्यार्थी पंचानक्षणम् ।

कीए के समान पेच्टा करने काता अर्थात् स्कृतिका बनुते के समान क्षत बाता (प्रकाशित) कृषे के समात किए बाता कम मीबन करने त्सा क्या प्रश्नवरी इन प्राय सक्ष्मों भारत निवार्षी होता है।

मनु महाराज ने विका प्रकृष में क्षिप्टाचार की बड़ी महिमा चलाई है~

प्रियम । त्याव प्रश्न । प्रयासिक व पर्या प्रश्निक । अभिकारपरिकारप विश्व प्रश्निक । स्व <sup>क</sup> तस्य वर्द्धने अस्पुर्वकायतीयत्त्व (। यनु)। विषये का सम्बन्ध करने वार्ती की शस्तु विश्व यत और नत्त व्यक्त है। वोट--। क्षाम-सब्बृक्ष को तार्वक्ष्म की राज्य व्यक्त हो। लडभाँ की ठरफ व्यान देख

2. व्यक्ति-नेत्रमी इसी शक्क एवं ठट्टा ।

### हमारी राष्ट्रभाषा हि

इमारे देश को स्थतना हुए 50 करते हैं। वो स्कूल विक्रना अधिक इम अपने देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी को लाग नहीं कर सके अविक इमारे समिधान में हमारी राष्ट्रमाथा हिन्दी ही है। अग्रेज से चले गर्ने अग्रेनियत कोड गए। राजनैतिक तौर पर बन स्वतन्त्र हैं लेकिन मनसिक और पर गलाम । स्ववन्त्रवा हे पडले हो हमारे देश में अमेची पदाने वाले इतने पब्लिक स्कूल नहीं थे जितने आज हैं। तब तो हम अग्रेजो को टोबी मानते वे कि वे हमारी सभ्यता और सस्कवि का विकास नहीं होने देवे अब तो वे चले गए हैं लेकिन अब भी हम उनकी भाषा और संस्कृति से केवल चिपके इए ही नहीं है बरिष्क उसे अपनी धाचा और सस्कृति से बहिया मानते हैं। हम बच्चों को पैदा होते ही आईन (Eyes) नीया (Nose) सिखाना स्क

कर देते हैं। अब हमारे देश मे पब्लिक स्कूलों की भरमार हो गई है। स्कूलों के नाम भी आहेबों के दिए हुए हैं बैढ़े कि सेंट पाल म्कल सेंटमेरी सेट पाल लैडी परतमा आदि। क्या हमें अपने देश के अन्त भी अच्छे नहीं लगते ? भारतीय सभ्वता और सस्कृति

की पक्षधर संस्थायं भी इसी कलार मे आ गई है और घटा घट अग्रेवी मध्यम के स्कल खोल रही हैं जैसे दयानन्द पश्लिक स्कूल एस डी पब्लिक स्कूल गुरु नानक पंक्रिक स्कल आदि और समाचर पत्रों में विज्ञापन निकाले जाते हैं कि उन्हें चारा प्रवाह अग्रेकी बोलने वाले अध्यापको की आवस्पकता है। जब सरों में अवेखी नहीं सोली वाती तो उसका प्रवाह कैसे बनेगा। दक्षिण भारत से अरोजी बोलने वाले श्राच्यापक मगताए खाउं हैं को बच्चों को अपनी भाषा बोसने से मना करते हैं। यह तो ऐसे हुआ जैसे इस युसाब के पूल में किसी और चूल की सुगन्य डालने की कोशिल कर रहे हैं। माता पिठा भी पैसे सकुतों में बच्चों को दावितत करवारो है ये स्कूल भी मनमाने

रंग से अभिपायकों से फीसें बसल

वर्ष हो चुके हैं लेभिन भागी तक अंग्रेजी बातावरण देश उसकी प्रतिस दरागी अधिक होगी। वे विकास केन्द्र एक तरह के व्यापारिक केन्द्र बने हुए हैं। बच्चे के चरित्र की उन्हें कोई चिन्ता नहीं। ये सब कथ केवल अग्रेवी के माम पर होता है। अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति इस तरह की हीन मावना शाबद ही किसी देश में टेखने को मिले। हमें रेलों बसो चीयहो दकानों दफ्तरो और बैंको के नाम अग्रेजी में लिखे हुए मिलते हैं। ग्रेमे लगता है कि चैमे हम भारत मे नहीं इंग्लैंड में रह रहे हो। चब कभी विदेशी पर्यटक रका आत हैं तो बन्हे पूछना भवता है कि "आपके देश की मान्स कॉन सी है ? 12 प्रतिस्तव लोग 98 प्रविसत लोगों पर हावी हो रहे हैं और हिन्दी को लागू नहीं होना देगा चारते :

> इसमें टेज के नेता चारे वे राजनैतिक शार्मिक या स्वमाधिक हो दोहरे माफ्टण्ड अपनाते हैं। हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाते मनाते हैं लेकिन अपने बच्ची की *अ*ग्रेबी स्कली में पढाते हैं। स्वदेशी का पारा लगाते हैं और विदेशी अपनाते 🕏 ।

> क्रिन्दी ग्रेमी और स्वय सेवी सस्थाप दाहरे मापदण्ड छोड कर आगे आए और डिन्दी के प्रचार में जुट जाए। विस्व के 316 से अभिक देशों के विक्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन और अध्यापक की व्यवस्था है। हिन्दी अब एक देश की नहीं बर्ल्क ससार की तीसरी सब से बढ़ी भाषा है। इम अपने टैनिक चीवन में निम्नमिसित करें अपना कर जिल्ही के प्रचार में वोगदान दे सकते हैं -

1 इस्ताबर हिन्दी में करें।2 का सम्बद्धार पिस्टी में की अ समाचर पत्र हिन्दी का पर्वे । 4 निमन्त्रमपत्र और बंधाई पत्र हिन्दी में क्रपकार्ष। 5 मान पट हिन्दी में रिखनार्थ ।

शोधा राजधार, 43 ए पूरी गेट वे सार निकट मध्यीर चौक संगरुर (पनाव)

### संगठन चालीसा

री॰ में इन्हें कुनार साई, क्वी अर्ज कराव चेंडकर, विकास (स.प्र.) 1 अपने को ऐसे न प्रताको अब्बें। सम खेड उनकी बुलाओ आर्थी ह

अदर से उन्हें क्रस लाओ आयों। स्दे दिल **दिल** से मिलाम्हे आर्चे ह असम्बद्धा नहीं है वो समिव न होगी।

रनेड जेन चर्डि है से चरित्र न डोची ह

4 क्येब तीय में ही बदि लगे रहे तो। ऐसे मोनी पाय से वित्रविद्य न होती ह 5 एक आर्थ केवल एक और लाहरे।

सभा स्टा कव नीच भरा नाउने व 6 कारियों में रिनारी होती है आपकी।

बीस को प्रचास पहले बनाइने व 7 कार्य हो तो फिर ऊप नीच फैसे ?

अवर्ष अस्य पैटा कार्से भीच केसे ? 8 चाद करो लेखराम रामपाल को अपने लड् से इसे सींचा कैसे ?

९ पद के दीवाने बनिए न आयाँ। दम्भ में भू अप्रय तनियो न आयाँ ह

10 पद से बड़ा तो कर्तव्य होता है। अवपस मे वैर ठानियो न अवनों a

१६ भूज किसमें नहीं वो छन्द नहीं है। सरीप न हो यो नकरद नहीं है।

12 सब के लिए पदा का झर है ब्रुला। विक्री के लिए क्यों ने घर नहीं है। 13 रूप नीय करेंगे हो खोते जाओंगे। दम्भ के नहीं में शहर सीदे बाजींगे 🏽

14 समझन किन चीन होते काओंगे। बिसट के हो या तीन होते साठतेंगे ह 15 प्रथमन भवन ही काफी नहीं है।

सात केट. चटन की काफी **मर्टी है** ॥ 16 'सम्पा और हवन ही कानरे नहीं है। भूमि और भवन ही काफा नहीं है ॥

17 तेत शास दिन से <del>विकास</del>ो सामिसो । पीत संगठन के भी भा तो साकियों ह १८ भेद भाव करोगे हो लट बाओगे।

कियाँ को किर से बुता सो सावियो । 19 क्रो फिर से गले लगा लो सामियो । ऐसी साथ पायमा वाप लो सावित्यो ।

a) एक उपनिवास से १८ काले । बर्टित निवारों को भग तो समिने ।

> 1999 का वार्षिक चुनाव सबैग्रन्गति से निम्नानुसार सम्पन्न हुआ। s सर**धक औ खैरायती** राम

ब्री नौरग रूप। 2 प्रमान की रवि कुमार। 3 बपत्रभान भी स्वदेश

21 अवन के कार भी काओ आतें। समित सगरम की दिवाओं आवों ॥

22 सभी को सराव ने कराव किया है। भाग नशायदी के चनाओ आयों ह 23 बन जनस्य करण बस्पी है।

वैदिक आवरण करना जरूरी है। 24 मुं ही बैठने से बात बनती नहीं।

कां सकां वयत्न करन करने है। 25 गति नहीं हो तो ये पबन सना है।

फल को नहीं हो ये प्रमन सन्द्र है । 26 समामा हो वो समाम करनी पाँ है।

मक्त औं है से यह मना एक है। 27 व्यर्थ क्वारा शब बद कीजिए। मिता में ज्यापर अस बन्द स्तीतिए।

28 कव गीम भेदभाव मूल माहमे। कट क्यकार शक बद कीशिए। 29 इत्र्य जोड कहता हू मान बाहबे

अपने अवनुषों को बान बाहवे। 30 आपस में सींशकती वद कीजिए। यद् हे**त् रस्साकसी बन्द कीजिए**॥

st मेर करे सारा विजय अपने करिए समाठित होके यह कार्य करिए। 32 राष्ट्र में बाबाय तो बहुत आएगी।

भाषाओं से अप न तनिक दरिए। 33 दवनद के दीवनों से गर हो वया ? ग्रहान्द के धीवानी को गए हो क्या ?

34 सक रूप चोर और श्रेष का चरन बीब नदांतरी के को गय हो एवा 7 35 आपको है बेटो बले स्वमी की करान।

हमन को समझा न फकत रसम ह 36 उनमें पने हैं सो वैशा कार्य की किए दुढ हो के ने समय ले लें सब हम।

प्रकृत को ए उन्हें अन लो अपनी। उन्हें फिर अपना बना हो आयों ।

अ गाँठ केल केल के बाल तो आगें। वर्ड की कड़ सीने से सन्द सो आर्चे ।

30 अभिगान करने से पास होता है स्वतं का भी कहा हुन होता है। क्ष में के प्रश्नी को प्रश्ना से के प्रश्निता एक्स को सबिद के निवास होना है।

### आर्व समाज ग्री बंगानगर का वर्षिक चनाव

आर्वसमान श्री पण्डमगर्मवर्ष राज श्रीमती राजरानी सहगल। व मत्री , गौरमोहन 15 संयुक्तमत्री श्री मधेन्द्र खन्ता। 6 वद प्रचार **अधिप्रा**ता श्री सरेन्द्र कुमार । 7 पुरतकाष्यक्षः जी इर्पवर्धन शास्त्रा 8 को**गध्यक्ष श्री** सरेन्द्र आर्य

#### लिधगाजा मे महाशय राजपाल बलिबाब विवस

आर्थ समाय मार्थि दयगद वाका (दाल बाजार) लुधिबाना मे महालय राजपाल जी का बलियान दिवस मन्त्रया गव्य । प्रातः आर्थ सम्बन के प्रधान श्री मतवालचन्द आर्य का अध्यक्षता में विश्लेष समारोह किया गया प्रचम विशेष यत्र किया गया ठसके पश्चात समारोह आरम्भ <u>ह</u>जा अपने सम्बोधन में श्री मसवाल चन्द जा ने महामय राजपाल के जीवन के सम्बन्ध में विकार रखे उनके कीवन का विशेष घटनाओं का उल्लेख किया मभारोह के भुख्य वक्ता श्री सुरेन्द्र कुमार सास्त्रा भी ने कहा कि महासब राजपाल ने अपने प्राणो का मलियान कर दिया पर भेद नहीं खोला। उन्होंने

की की विसमें शेखक का चाम नहीं वा उन्होंने लेखक को क्वन दिया वा कि आपका गाम नहीं बतायेंगे वहा तक मुकदमा भी चशा पर वहा भी उन्होंने लेखक का नाम नहीं लिया और कहा यही मेरा कर्तव्य है श्री शास्त्री जी ने कहा कि आब इम सब आयों को महाक्रय राजपाल के जीवन से प्रेरमा लेगी चाहिए कि आज हम बिना प्रयोजन बिना पूछे एक दूसरे की बात को कहते फिरते हैं उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने कर्तव्य का पालन करते हुए आर्य समान का प्रचार करना चाहिए. करित पाठ के साथ समारोह सम्मन्त

-आला प्रकाश मन्त्री

#### मण्डी डबवाली में वेद पचार आर्थ समान भएडी इन्लामी

हुक्ह ।

में 30 अप्रैल से 2 मई 1999 तक बृहद यज्ञ व आध्यात्म प्रवचनो का आयाजन किया गया है इस अवसर पर महर्षि दयानन्द योगाश्रम दिल्ली के आचार्य श्री अर्जन देव जी के तपटेज व बिजनीर के प राजेजार्य

एक पुस्तक स्पीला स्कूल प्रकासित

# भवनोपदेशक के भवन हुआ

गत दिना भी बेद प्रचार का आयोजन किया था जो बहा सफल रहा है आज़ा है कि इस आयोजन मे भी सभी महानभावों का सहयोग

### शामकार परीक्षा परिणाम

स्कूल धूरी का याचनी कथा का वरीका परिजान शत प्रतिसत्त रहा विकान्त कदव 408/450 (90.66%) अक लेकर स्ताक में प्रथम जाया है। जिसमें कुल 51 बच्चो ने परीका

यस चौषरी आर्थ माढल हाई थी। 80% से क्यर 14 बच्चे 70% से 90% तक 28 बच्चे और 60%

से 70% तक 9 बच्चे आवे हैं। मेवाकी परिश्रमी छात्रों और योग्य अनुभवी स्टाफ बधाई के पात्र हैं। कृष्णा आर्था प्रिसीयल

#### वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

अखिल पारतीय दवानन्द सेवात्रम सम द्वारा हर वर्ष की भाठि इस वर्ष भी आर्थ समाज के छन्ने निश्म के आधार पर वनवासी क्रान्ति शिविष 15 मई से 30 मई

युक्क युवरियों का वैचारिक 1999 तक आर्थ समाव रानी का बाग दिल्ली ३४ में श्रीमती प्रेमलता खना **शास्त्री जी अध्यक्षता** मे लपाया व्ययम् ।

शिविरार्थियो हेतु पासनीय

१ शिविराची की योग्यता नवीं कमा के कपर। 2 इल्का बिस्तर एव जेल

साञ्चन इत्सदि साथ लावे ।

3 शिविर में दिनचर्या एव अन्य नियमों का पालन करना अनिवार्थ बोगा।

4 नियमों का जलन न करने पर शिविर से वारिस भेज दिया

5 शिविराची अपने आने की पूर्व सूचना लिखित रूप में भेजें। 6 शिक्सियों को वापसी का मार्ग व्यय दिया जाएगः

शिविर संयोजक 1 % बीववर्षन आर्य 2 श्री कपिल देव आर्य 3 श्रीमती इंस्वरसनी जी मेहता आर्थ समाज का छठा निवम

ससीर का उपकार करना आर्थ समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आस्पिक और सामाजिक उन्नति करना।

मिल्लेगर । डा अलोक आर्थ आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त कोलस्ट्रोल रहित

जाम स्थास्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का सेवन करे ।



शास्त्राः कार्यालयः

गवडी बाजार दिल्ली-११०००६



**वर्षे 🐠 अक 5, 19 वैसास्य सम्बद् 2056 बदनुसार 29/2 गर्ह 1999 दवानन्दाब्द 175 सर्विक सुरूक 50 रुपये आजीवन 500 रुपये** 

## मानव का ध्वेच मोक्ष प्राप्ति

्र एक बोड प्रकार देवार वाले 746 बार्लर करह व्यासमह क्यों न चली आचा। सस्य हो नाम कराभावीत वाराती

**येचीन जिल्लास प्रकृ**ष् । जब कीस अनुसरव विदेश श्वनश्रवेष्टित प आर्थपने ।। कठोपनिषद् ४/२

बाला-अधिवेकी पुरुष, अप-और, पराच. - पता, पीरा - विकेशी पुरुष, कामाप् - विकर्षे के प्रव - फिय, अनुपयि -के घलों हैं, अनुसर्व - गोब को, विराह्म निर्मात, विदित्व - चनकर, गर्लाः - गरा के. हर - यहा, चस - चल को, अक्षेत्र - अधिन पदार्थे में पूछ, यन्ति - प्राप्त होते हैं, न प्रार्थकरो ~ नहीं चलते।

कटोपनिषद् का यह श्लोक इमारे जीवन के मूल तत्वे की राफ उन्हर च्या नेक्सिंग करत है। इन्सान रिक्क है परन्तु इस का अनन्द कैसे प्रत्य किया क संकदा है, इस का कुछ इसे पत नहीं। इन्हान चारता है मीख परन्तु कर्म तरक की तरक से जाने करते फरता है। स्टिमों से निवर्ग के मीके चराने की प्रमृति में हन्सान को मृत्यु के नक्दीक ता समा निका है। देखा भी पार्टि कि हम इन विक्रों की न बहुत्ते हूं। वरिक मानवे हुए भी इस स्वतक्षेत्र घर मलती किये चले का रहे हैं और क्ष पा तुर्व व्हा कि इस स्वय की गाली को मानने की तैयार नहीं: एक सराव के आदी को **कैशन के** उत्पर लगे होमल के में संदर्भ कार्टेक "सरम पीना संबंध के लिए हानिकारक है" वह नहीं मारीया, यसे धी क्षेत्र के प्राप्त में कार में कार में

भारी है कि इस भवानक बहर से बान चली ही बाती है। वेली के चस को कपडा होता है किस से वेल को 🐗 साफ करता है उस क्रवर्ड में तेल तका मैल पर्याप्त मात्रा में चली बाती है तथा उस कपड़े में इशनी विकास हो जारी है कि चनी उस पर तसर नहीं सकता । इसी प्रकार विकर्षों की मेरा इसान ने अपने अपदर बना कर ली है और इतनी मैल बमा तर सी है कि अब इम्बान को विक्तों में की मन्त्र जाने सम प्राप्त है विसकी कड़ैला संसह में बुरे कामों की बाद भी अर्थ दिवाई देखी है। इस मैलु को समाप्त फले का एक ही ग्रंतिका है कि हम विस विस काम को करें उसे सहर्ष स्वीकार करें अर्थाद मान ले कि इस ने ये वे कार्य किया है। उनाल रखना बोही बेहोसी में डीं न मान लोका बरिका परे डोकोडकारा में मानना । अवसरे कारमी मान तो लेख है कि सह से नव कार्य गलत हो गया है परन्ध्र बोडे समय के प्रत्यात फिर भल बात है और फिर ग्रेव की बरह उसी काम को करत पता जाता है ऐसा व्यक्ति को भी कम करेगा व्या बेहोसी में किया कर्म होगा। यो वेंडीसी में कर्म करता है,उसे विपनिषय की भाषा में अविवेकी पुरुष कहा गया है। पसु न इन्सान में कुछ दो अन्तर शोगा चाहिए । वह स्टिश निवम्मना है कि विकार में क्रिसीन को सम में सर्वेशन नवल है चन्द्र उत्सान वाकी भी बार्सी से

है। वैसा कि हम सभी जानते है कि पत्त भोग मोनि में हैं परन्त प्रम्सान को सिर्फ भोग वोनि मे नहीं। इन्सान को परभारमा ने बढि दी है। इम्सान पूरी सक्षमता के लिए सुख सुविधाओं के अम्बार लगा सकता है जैसा कि वर्तमान दुध का इन्सान कर रहा है क्योंकि बद्धि का काम तो सोचन्द्र है जाहे गलत हो या ठीक । गलत और तीक के बीच का अचर तो इन्सन यो समा थी विद्यात है। सम्पति सब्द बढ़त प्यारा है । सम्पत्ति का वर्ष है सम-पश्चि अर्थाव सम का अर्थ है अच्छी प्रकार तथा परि का अर्थं है गति। अस जिस सम्पत्ति की अच्छी गति नहीं होगी अर्थात उहरान ही उहराथ होगा **उस सम्मत्ति से तो विप**तिया ही इकड़ी की जा सकती हैं। सम्पत्ति का उत्तराय तय आता है जब हम मापने को वैकार नहीं होते कि हम सम्मवि इकडी कर के यसती पर गलती करते चले जा रहे हैं। न मानने की प्रमुखि से अहकार पैदा सेठा है। सक्त इस का भीता भागता उदाहरण है। राजण मानने को वैबार ही नहीं या कि उस ने सीता हरण कर के चौर अपराय किया है। बल्बि रावण तो सीता को भार भर वही कहता भाग वका कि मैं तुझे अपनी पटरानी ननकार। एकन के गरु शक्कावार्य ने अपने अन्तिम प्रयास में रावण को हमी सल्ला दी वी कि "कम तुम सीसाको लौटादो ताकि अनक्ष्मक यद समाय हो जए" परन्तु राजन ने इस सलाह को भी मानने से इन्बार कर विथा। किसी बुग में भी सवल बैसा व्यक्ति मीनने को वैकार नहीं होगा क्यों

निकृष्टतम स्थिति में चला जाता

कि मानने से अहकार को चोट पहचरी है जब अपने अहम को चोट पहचती है तो बहुत पीड़। होती है असहनीय पाढा होती है। इस का इलाज है यह कोई लाईलाख बिमारी नहीं जिसे समापा साथ सोच सकता है। स्वय के - न किया जा सके बस आप को एक कदम भर ही तो उत्पना है कि अरूप जिस भी काम को करे मान ले।

काम को सिर्फ समय की कसौटी पर डी कसा का सकता है ज्यों ज्यों समय गुजरता जाता है त्यों त्थों कर्म का परिचाम सामने आपने लगता है हा यह जरूर है कि कुछ कार्यों का परिणाम तुरन्त ही मिल जाता है परन्तू ज्यादातर कार्यों का परिणाम लेट ही मिलता है और साम कर अच्छे कार्यो का नवीबा हो लेट ही निकलता है। इस लेट परिचाम मिलन का कक्ट से आप सब के मन में शरह बरह के बकल आने लगते हैं जिस से इस सोच को बल मिलता है कि अच्छे काम करने का फारत ही ब्ला जिसका परिणाम पतानहीं कव मिले ? नहीं नहीं इस सोच को समाप्त करना होना। हम अपने मन में ठान ले कि परिचार करते लेट मिले या न भी मिले परन्त करने हैं हम को सिर्फ अब्बे ही कार्य । इस निए अव समय आ गया है कि हम अपने द्यरा किये कामी की माने। जिस दिन हम ये मान गये उसी दिन हमारी विषय के पीछे दौड़ने की दौढ़ समापा हो जाएगी और जिस दिन हमारी विषया क पाछ चलन की प्रवृत्ति समाप्त हो गई उसी दिन से मृत्यु के बन्धनों को अच्छी प्रकार समझ पार्थेंगे । मृत्य को समझने का मदलब है हमन भाश जो प्रस्त करने कर सम्बन्ध क विकार

वैदिक विज्ञान कर्य-

### अवतारवाद की समीक्षा

O भी इन्त्रमीत के पुस्ति काली कांग्री मार्च कहुत काल 1880)

धर्मसस्कृति पृष्ठ पर यश खन्ना नीर द्वारा सिखित एक लेख अवतार वना लेते हैं प्रथ ? शामक मे छवा है। पढकर आ**रचर्ग** हुआ वर मेखक महादय ने अपने नमा म मध्यवित्यालय की ह पनितक के अतिरिक्त कोई भी प्रमाण प्रथ के अवतार लेने का प्रस्तत नडा किन्छ। न डी इस बात का स्पण किया मचा है कि अवसार रूट का वारपर्व क्या है तका किस-कथित अवतार ने कव कैसे व किस अधिमानी असर की हानि की थी ? प्रभ का स्वक्य क्या है वह कथित अवतार लिए बिना प्रभ दण्य का सहार क्यों नहीं करता

सम्पर्ण संस्कर यह मानता है

दैनिक ट्रिब्यून व्यव्हीगश के

२० दिसम्बर ९८ के अक में

कि वेद संसार की प्राचीनतम विका है ग्रन्थ है। सम्पूर्ण हिन्द समान यह गानता है कि वेद ईस्वरीय इत्त है इस आवार पर इकार निवेदन है कि क्ज़ुबेंद के जाशीसवें अध्याव के आउचे मत्र स पर्यापान्कक्षमञ्जूषम् के अनुसार ईरकर सर्वन्यपक है सर्वन्य सुद्ध व परित्र है अकाय अर्थात काबारतित सरीर के विशा है। वेद इंश्वरीय जान होने से सर्वना सत्य ज्ञान है क्यांकि ईस्का कभी असरव बात नहीं बताता चेद पहले भी बे अब भी है तन्त्र पविष्य में भी रहेंगे सारपर्व कर है कि ईस्कर भू" वर्तमान व भविष्मत् में सीनों कालो में ऋगर रहित ही रहेगा इसी मंत्री के अनुरूप आदि संकरानार्थ ने भी ईस्कर के सामास्त्व अर्थात् अथवार लेने पर वैद्यन्त के 2233 सूत्र नैकस्मिन सम्प्रवात की व्यक्तद्र करते हुए असहमति प्रकट की है। वे लिखते हैं एक ही बस्त में एक ही समय में दो विशेषी गण सदी नमीं की भाव नहीं रह सकते। भाव व्या है कि साकारत

सकते। अपने इसी विकासकाह व सारी रक्षादे हुए वे वह **वो रिपार्श** हैं कि सरीर संवित साधार होने पर संसारी पुरुष के समान भोगारि के प्रसम से इंस्कर होने पर उसमें भी अनीश्वरत्व हो साएगा। आदि -संस्कृत भाषा का पुल्लिग सन्द है तकरचार्व के आधुनिक क्रिया इन स्पष्ट विकारों के होते हुए अविका अञ्चल व स्वार्थका अवस्थातार का

समर्थन करते हैं। यह मुख्योह है। आधुनिक विश्वारकों में बोमी गरविन्द महर्षि दक्षनन्द सास्वती साथ वासवानी स्वामी ब्रह्मनन्द इस्वरचन्द्र विकासाग्र महात्मा न्मारिक फुले स्वामी विश्वानन्द हाँ० है होनेबार केशक्यन सेन्द्रतथा अन्य अनेक के नाम उरलेखनीय हैं। विन्होंने अक्तरपार को वेशें अपनिषदों छ दर्शनों व शक्त्यीकि रामायक के आधार पर अवस्थिक असरव वृत्रिव्यानस्थोकारविश्व है।

इंग्रोपनिषद् का प्रथम स नवर्षेट के पालीसमें अध्यान का भी प्रयम मत का है ईसा बाग हट सर्व नद कि च जनस्य बगदः देन त्वकोन धुरुबीचा ना तथ करन विषद्धान ।। अर्थ-इस संस्ता के कर

कण में ईरकर का कर है। सर्वत्र विश्वमान सत्ता ही ईषर हो सकती है। यो सर्वत्र व्यक्त नहीं होना यह सर्वत नहीं हो सकता। यो सर्वत्र नहीं होना यह न्यास्कारी व सप्टिक्त भी नहीं हो सकतः। से आकासच्य सर्वत्र व्यक्षक जनन्य और संख्या दन्ता दन्तावि से स्विध है वह छोटे से बीवें नर्पात्रय व तरीर में बबॉकर जा सक्त है? मारा बाता का है थे। एक स्थान पर विद्यमान है । जो अश्वत अद्भव है उसके चीत्र के टर्मन करने चैंका ही

क्षेत्रिकोरे पुरुष को देखा गाउना । योक्स कर सकत है का प्रमु एक **वेज से हैं वेजिंशन जरूरती समार**्सामा दुख व्यक्ति का सहार बहते थी एक संयु डिब्ब्डे में केद करना वह प्रमु का घोरतम अपनाव है अनन्त बाँर सीमित बारमा है। अन्तरित को साथि बनामा है। निर्विधार का विकारकार बेनागा है ।

अवका स्था का वर्ष है अवतान गेर्व अन्य उत्तरम् । यह हम पूक्तों हैं कि ईस्कर क्या से किसी पिछ के वीर्थ किसी सर्वाच्यापक है. बार भार आबदाब. माता के वर्णातव में आबदा व आह बाबु सरीरों के मीतर व सरीर कें में बन्न लेकर पच्चीस दीस वर्षों भारत भी पानी से ही विकासन है। तक अपने करीर में अवस्थ क के कवित अवतार धारण करने के **प्रतिक्षित हो**कर पिर पानी को मार्ल सिए यह कहाँ से उत्तरता है? वह। में हर्ट अर्टक या टबेटना करक से उठा अन्य है क्या वहा फिर पानी दुग्ट को मारने की आदेशा नहीं रहता ? एक स्थाप से एसरे जात अधिक समय लगत है। तक सम्भव है को एक स्थान पर सबता कितने ही पाय कर लेखा है व है वह दूसी स्थान पर आने बाने उसके पानें से अन्य जनक प्रसित पर पहले स्थान पर भागें रह पत्ता । दर्जी व बेरेकन शकरीर करी करी **दलवी**दास Res t-

बिर पन को सी बिर करना बिन कर कर्ने कर विकि चंदा ।। रान बिन स्वर्श भाग बिन देखा। र्ग्ह प्राय मिर कर अलेका ।। अक्रान खीत सकत रस भोगी। निया साथी पत्ता पत्ती मोनी। विवि अस भारत अलोकिक

कार्याः महित्र पान पान पर्धि गाणी ॥ ा गण राम हैकर में नहीं को करोर में सीमित करना अर्चाद दका अरचता है व हगका त्रसमानस्था में व स्वर्ग तेमा के दिश में नहां है

के लिए सरीद क्यों चल्च करेना ? किसी पत्नी क दशका का सहार करना प्रचे के बिवर बहार सरल है। था प्रथ तथ शारी होत व श्रावन के सरोर में पहले से ही जिसकात this is were to get under such कोर्र सम्बन्ध पुर्वतन्त्र कराई कराई पृत्यु कर सकता है। साम्बरण स्टिके स्थान पर आना बाना को उसका ही। तक पानी दृष्ट व दरहरू और ने हैं। जबी को अधिक समय अस रुरवरिक्षणाहः में स्थव स्वीत्वारः प्रपन्तर्ग करने व पुरुवत्वाओं को अधिक समय संद प्रकारों के परिचान योगने के अवनार देना प्रम की जसमें का करिय तक काने की कवित जीवना के सर्वना विषयित है।

उमरा लेखक ने प्रभूको इनिक्कीत अयोक्त अक्त आदि विशेषणें से वी अविदेश किया है। इम इसका पूर्णतः समर्थन करते हैं क्वींच ने एक व विशेषन नेप्राप्तत स्ता दुससीयास ने विस्त वेद - म चुनिक्युश्त हैं परन्तु लेखक नव का अपने अन्य में पत्र-का मुख्यान भी साथ विश्व मंद हैं कि प्रमु किया है उसमें एक भी नन्त्र ऐसा अवदार अर्थातु प्रदेश भी धारण करते नहीं है विससे सिद्ध किन्त ना हैं से लेक्क जानी पहले लिखी शके कि जैनक साधार भी होता है। चात को समय ही साधान कर देते उसे अकार भी लेना पडता है। हैं। के बर्डर करण करेगा का प्रश त्यक्रीक्रम की को स पॅपेक्स इन्द्रिकरीत नहीं रहेगा। सरीरकरी उपरोक्त लेंबा में उद्भुत की गई हैं सक्ता बच की भी प्राप्त होना। तम वे केट विरुद्ध व पुण्यातीन हैं। अर्थ यह अक्ट नहीं रहेगा। अनीपर अमान्य है। सरीर पारण किय किया - अध्यक्त को कादि हैं आक्रार को व ससार का एक परमानु भी विसके | ही जब प्रमु अपने सभी कार्य कर | कहते हैं। भी हरिएमी से अनुभव न किना नहीं है उसका अवस्तर लेगा। यह है जो उससे समेर भारत करने। हो सके परना क्रमित असतार एक बाह्य के पूर्व का विशवह कर का रूप औत्तिक \$2 अग-के अधीरवारी प्रभू की साकार जनत अवन्तरे केलेक्ट अवोक्त वर्ष अवस्था इन्द्रिया में ही प्रमुख है। सर्वञ्चायकः सर्वनिकासः विश्वातः पूर्वकार्यः आर्थातः चनातः को न्योतः, प्रसुत्तः,विराधः प्रमु एकः हा और निरामास के निरोधी गुण हैं। सर्वस्तव **धर्म करोधी ज**ा को एक आहु जिन्ह गरिन भारत केन् बाग 'समझ्क <u>जारा ग्र</u>मक सहसा नागका

माम्बरकोप...

### बी बेद प्रकास जी सरीन नहीं रहे

कार्य सम्मान के प्रशिक्ष के कार्या कार्यकार्य भी भी भी था तहें के तो तक्का स्थान के तार्थ न नहीं के तमीन मान समय में ना के कार्य का सिमार है। यह तमें ने अवसं प्रतिमिक्त सम्मान प्रशास के की कार्यकार्य के प्रशास के दिन के ति की तमि के तम के

क्षा में ए एक्सा की संदीन उस आपने सामान के उत्पाप पर न मार्गाहित । ए अवस्था करते के निकासी उन्हें पूत्रमा किए आपने भी प्रमान और प्रमान में स्वीहर कई विकास उत्पासकों और आपने मार्गान के उत्पानों पर स्व कर सामा करते थे। प्रमुक्त सम्प्राद्ध विकास के स्वाप्तान के उत्पान पर स्व अवस्था सामें की अपने आपने हों। यहाँ और आप सम्मान प्रमानि को स्व करते थे। प्रमान भी काल में कुपने परिवार को भा सामा करते थे और अपने की प्रमान की स्वाप्तान के स्वाप्तान की स्व अपने आपने सामा के स्वाप्तान की स्वाप्तान की स्व सामा करते थे और उत्पान सिंक्स नीत्र के । अपने सामा में विकास राज्यों में अपने स्व उत्पान सिंक्स नीत्र के। अब समा में विकास राज्यों में अपने से उसका स्व उत्पान सिंक्स नीत्र के। अब समा में विकास राज्यों में अपने से उसका

ता ने देर प्रकार की स्तरिक का सारा परिवार जार्च विचारों से जीव ग्रेग हैं। उनके पुष्टा उनके पर दिनां में एक पता है। विकीय करा से उनके पुष्टा इस्तरिक सरीन का जंभने समय का सुने का कि दर हैं। उनके पुष्टा इस्तरिक प्रकार स्तरिक पा अपने समय का सार्व के करा दे हैं। उनके दूसर पुष्टा भी जार्च समय के कार्य कालों के उत्तरक हो था गर्दे के हैं। यह जब की दें प्रकार का सरीन के प्रीया कर ही फिल्म हैं कि उनके प्रमाणिक सम्मानिक के प्रकार का सरीन के प्रयोग कर ही फिल्म हैं कि उनके प्रमाणिक सम्मानिक हैं। इस प्रकार के स्तरिक के प्रकार के स्तरिक विकार का स्तरिक सम्मानिक हैं। इस प्रमाणिक स्तरिक हैं के पार्थ आपने प्रसाद कर रोग हैं। है जो कार से स्तरिक सार्व है उनके से पहली है प्रकार की सरीन है जो कि स्तरिक है उनके से पहली की है प्रकार की स्तरिक है जो का स्तरिक है जा स्तरिक है उनके से पहली की है प्रकार की स्तरिक है जो का स्तरिक है जा स्तरिक है उनके से पहली की है प्रकार की स्तरिक है जो कि स्तरिक है जा स्तरिक ही सार्व है जा स्तरिक है जा स्तरिक है जा स्तरिक है जा स्तरिक ही सार्व है जा स्तरिक है

त्री सरान भी का भड़ से बहुत ध्वर था वह जहां भा घड़ होता बा वहा अवस्य काम करते थे। आगे बैठ कर गड़ गठ किया करते थे। वहीं बड़े बढ़े चड़ अवस्य करता होते थे न्या बहर में हाने चाले पारिवासित सरसागों में यह अवस्य जाया करते थे। एक सरग्रह पूर्व तक वह घड़ व सरसागों में यह अवस्य जाया करते थे। एक सरग्रह पूर्व तक वह घड़ व सरसागों में यह अवस्य जाया करते थे। एक सरग्रह पूर्व तक वह घड़ व सरसागों में यह स्वार्त हों भी पत्र का विकास सुक्री तह की

िक भी व्यक्ति को औ स्टॉन या का मुन्यु का समावार रिस्ता उसी ने नहां कि एक नेक हमान वारत गया आ करान भी के वार्त वार्ने के अर्थ समाव में वो स्मान कामा हज ने हैं उसका पूर्व होना असमाव है। नहां दीक है कि उनके सुपुत्र भा आर्थ समाज में अवका कार्ने कर रहे हैं रूप्तु किर भी उनका सकत से पान किसा के दिए समाज नहीं हैं वेसी उनमें अर्थ समाब के प्रति सान था सावद ही किसी व्यक्ति में जीता

हुम आवं प्रतिनिधि सभा पनाथ का ओर से आवं निका परिवर पनाथ को ओर से व पनाथ का सभा विश्वा सम्बन्धी व आवं समाजों का और से उन्हें अपना सह्यावित के पत्त से डी और पार्थ सिका परायत्वा से प्रार्थमा करते हैं कि प्रभु उस पवित्र आत्मा को सद्गति प्रयान करें। उनके सार्र परिवार को तथा हुम सथ को उनके विशोग को सहन करने की जीवा पार्थ को

हरबस लाल शर्ध सभा प्रधान अध्यानी कुमार सम्मी एडवोकेट मध्य महास्त्री

## देश में मध्यावधि चुनाव

किस का जनका सा पर पात्र हुन का रहा दिन ब्रिप्ट १९ १९ थ ने अपनी कर निर्माण के प्राथमिक प्रतिक्रितीय के प्राथम कर साथ कर को स्वार मुक्तिकारी के प्राथम कर स्वार के प्राथमिक प्राथमिक प्रतिक्रिताय के प्राथम कर स्वार के प्राथमिक प्रतिक्र के प्राथमिक प्राथमिक प्रतिक्र के प्राथमिक प्रतिक्र के प्राथमिक प्रतिक्र के प्रतिक्ष के प्रतिक्र के प्रतिक्ष के प्रतिक्र के प्रतिक्ष के प्रतिक्र के प्रतिक्ष क

वह अपने अभि की भाग त एक ता वह अपने अपने के मा ताजा त्याप वास्त्र क्षिण है। ह्याचित्र प्रमण्ड प्रकाशिक पाने को सम्प्रदालकार स करा दक तुरु तिक ज्योंका के लिये प्रशोक प्रकाश कात के लिए क्षण करता चाहिए, व्यक्त वह किता भा आदि से सम्बोधिक हा जा किशी में सुर्युपार ये सम्बोधिक हो पाने के किता भा पार स्वकाशिक परियों का लियों के गुमाईक मूर्ती करण व्यक्ति और सम्प्रयाग काद का बाल के माल कर लोगों को अपने से हमाल मूर्ता कार्कि

ज्या का जात भेशा कर रोगों को अंतरा में तरावा नातु कांद्रीय अब नित्र नात्री के इस में बाद्यांक जाते हैं कर दोक है कि इस पुत्रव में जाता को जाता के कि उपने का व्यक्ति का अविकास के स्त्रित के इस है रागित नहीं अपन्यांकों जा है जो में देश के कि उम मोर्कों में मार्कों कर के स्त्रात मान्यों आहे के वित्र कहा नित्रकार के अस्त्री मार्कों कर के स्त्रात के स्त्रात का अस्त्रकार के स्त्रीत का अस्त्र मार्कों के स्त्रीत के स्त्रीत में तो को प्राच्या के अस्त्रकार के स्त्रीत का अस्त्र मार्कों के स्त्रीत हों जो स्त्रात के स्त्रात के स्त्रीत के स्त्रीत

### र्डश्वर से मिलने के लिए कोशिश

किसी कवि ने कितने सुन्दर सन्दी मे कहा है

भाग फिला के निराम से समको आता है।

मका तो तब ई मो गिरतो को धाम ले साकी ।। और जिन्होंने दूसरों के दू ख में दन्छी होना सीखा वे लोग महान

हो गये। स्वामी दयानन्द ने देखा

कि दलित और पिछडी जाति के

लाग समाज से अलग चलग होका

रह गये हैं। लोग उन्हें अस्त के

नाम से पुकारने लगे हैं और वैसा

ही व्यवहार करने लगे हैं यदि

ठनको कोई स् लेता तो वह अपने आप को अपवित्र समझता और फिर श्रद्ध करने के साधन सोचता। मन्दिरा में इन मोगों का जाना बन्द या। स्वामी जी ने इस पीका की महस्रम् किया। तनकी पीडा को अपनी पीडा जाना वेद और मनुस्मृति के प्रमाण देकर बताया कि यह लोग समाज के उतने ही माननीय भाग हैं जितने के बाह्यण धतिय और वैस्व। यह अवस्था जन्म से नहीं कर्म से है। जो व्यक्ति पढ़ाता है दान देता है दान लेख है शिक्षक है संस्कार करवाता है वह ब्राह्मण है चाहे किसी भी कुल मे पैदा हुआ हो। जो व्यक्ति देश की सेवा करख है फौन में है सेना का अग है देश की रक्षा करता है वह क्षत्रिय है चाहे किसी भी घराने मे पैदा हुआ हो जो व्यक्ति व्यापार करता है खेती करज है वह वैश्य है चाहे किसी भी कल मे उसका जन्म हुआ है और जो व्यक्ति सेवा करता है पढ़ न सका हो वह शह है आहे किसी बराने का हो । ब्राक्षण का पुत्र सुद्र हो सकता है शहर का पुत्र चाद्मण दलित वर्गके लोगो का अपने भाइयों (अन्य व्यति के लोगा) के बराबर खाडा कर दिया स्तामी जी ने विश्ववा विवाह बाल विवाद आदि कुरीतियों के दुश्च का माना और आधान ठटाई। कितको को जिस्सान दिये जाने पर तन बेचारियों पर अन्याय और अल्याचार हो रक्षा वा उसकी टीस को महसूस किया और फसस्वरूप आज आगी को बाद दर्शित स्थान मिल चुका है जिसकी कि वह

इकदार है। केथल मानव जाति के दुन्तों को ही स्वामी भी ने नहीं बाटा बरिक यदि कोई पशु पी द खड़ी होता हो भी स्वामी की करे दुख दौक्ष या। एक कर एक

बैलगाडी काला बैसमाडी ले वा राग था कि गारी कीच्छ में बस गई। बैल पूरा बोर लगा रहा का कि गाडी निकल आवे पर सब प्रयत्न निकल । गारीकला बैल को कोरे पे कोडे मार रहा था। पर बेचारा बैल परा बोर भी लगा रहा वा और मार भी रका रहा बा। सबोगवार स्वामी जी पास से गुजरे। बैल की अवस्था रेख कर मन पर आगा। आगे बडकर बैल को गाडी से

जत गये और गाडी को खींचकर बाहर निकाल दिया। म्बास गुरू को मानने वाले लोग भी पूरी तरह सेका में जुटे रहते हैं परन्तु जो सेवाधाव इंसाई धर्म को मानने वालो का होता है। उतना किसी मे नहीं। मदर टेरेसा इतनी

खोल दिवा स्वय बैल के स्थान पर

दीर्घाय होने के परकार भी इतनी सेवा कर रही थी कि वह अपने आप मे एक उदाहरन वी और मेखा के साथ माथ अपने वर्ष का प्रचार भी कर रही थी। परन्त खेद है कि आर्य समाज में सेवरपाव की बहुत कमी आ गई। दसरे के दु खा को जान कर उसे दूर करने का प्रवल ही सेवा है।

(५) प्राण लेगा सरल 🕏 पर प्राण देशा ब्यूत कठिन है। आव विश्वभर मे वहा भ्रष्टाचार का बोलबाल है वहां पर विसा भी जोरो पर है। रावनीति की सत्त को हक्षियाने के लिए क्या कुछ इधकण्डे नहीं किये जाते। सरकार को बदनाम करने के लिए विरोधी दल गाहिया उलटवा देते हैं। पुली को बमो द्वारा टक्कडे टकडे करवा दिवा जाता है। बावारों में बम रसा दिये जाते हैं। हवायें की गिनल में लोग एक पलक के शपकवे ही अपनी सान गया बैठते हैं और फिर वही बिरोधी दल सोकरमा करके मगरमच्चा के आस् बहाकर सरकार को गालिया निकालते हैं कि सरकार कानून की अवस्था

लगे में माकामिल है । पूल वारे हैं का सीय कि इाव से मई सका तो वाचिम आ चर्चनी पर किसी मा की तवारी मेर किए से न क्सेमी किसी का उचका सहान फिर से न बस सकेगा। कव्यों को पिक दबारा न मिल सकेगा। बहन का भाई गया किसी का जैसाई नवा किसी के सपनो का महल उवड गच से किसी को रोटी के श्वरते पढ गये । उन द्वरिन्दो से कोई वह पूछे कि एक मिनट मे

हवारो व्यक्तियों के प्राम छे ले लिए क्या किसी मुक्क के प्राण लौटा भी सकते हो बदि तुम में प्राम लौटाने की श्वमता नहीं शक्ति नहीं को प्रान लीने का क्याँ क्या अधिकार है। एखाब वहें कठिय दौर से गुजरा है। उत्तराखण्ड के नाम पर क्या कुछ नहीं हो रहा। कभी आसाम है तो कभी कोई प्रातः। परन्तु यह भारत तक ही सीमित नहीं यही हाल पाकिस्तान मे है यही अफगानिस्तान मे। यही एशिया में यही योरो-४ में यही कस में यही अमेरिका में। हिंसा उग्रवाद आब विश्व की समस्माए बन चुकी हैं पर मानव मस्त है अपने नमे नास को नासने मे। परिकाम स्थकप आज विस्व भर में अकान्ति है। हर मन अक्तान्त है। इसीलिए स्वतंत्राप का बढना घटना दिल का दौरा मानसिक वनाव और अवसाद आदि बीमारिया वह रही हैं।

थी। लोग मासाप्टारी बने। बानकरो को मार कर शिकार करते ये और फिर उन्हें खाते थे। वे लोग कभी वह सोचरे ही न थे कि जिस जीव की हत्या कर रहे हैं उस जीव मे जान है। जब उस की जान लेते हैं तो उस को भी उतना ही कच्ट पहुचता होगा भितना हमें पहुचता है और जब व्यक्ति सारिकक भोजन नहीं खाता तो रबोगण और वमोगण का बढना स्वामाविक है। ऐसे मनुष्यों के शिए डिसा एक स्वभाव

यह सब कुछ कैसे प्रारम्भ

हुआ। उहले हिसा छोटे स्तर पर

का जाती है और वह बीच एक क्या के रूप में उपर कर अस सामने का चन्द्रा है। प्रस्तिकिय अब विदेश वाले रक्करी सोच में बुब गये हैं कि इस समस्या का क्या समाचन है। ब्राप्त वे लोग कात है आकर किसी सान्ति मिशन के सदस्य बनते हैं कथी किसी भारतीय सम्प्रदाय में प्रवेश पाते हैं। मान विदेश में शास्त्रहारी भीवन को उसम मोजन के रूप में मान्यता टी का मही है।

केवल परमात्मा प्राणाधार है

वह भी है अर्बात् ससार को पैदा करने बाला है। प्राण सेना और प्राण देन्द्र उसी के हाको में है। प्राथ लेना वो बहुव सरल है पर प्राप्त देने मे हम सहायक तो कर सकते हैं पर है यह बहुत कठिन काम सहक पर एक व्यक्ति सदी से ठितुर रहा है । उसके पास धनराशि नहीं कि एक कम्बल खरीद ले। जिस दिन कटाके की सर्दी पटी उस का प्राणान्त निश्चित है । उसे एक कम्बल देकर हम उसे अवस्य प्राण दे सकते हैं । हस्पवाल में एक बीमार व्यक्ति मर रहा है केवल इसलिए कि उसके पास दवाई के लिए पैसे नहीं। इम उसके लिए दवाई उपलब्ध करका कर उसे निश्चित रूप से प्राण देने उसके क्रण बचाने के पत्र बन सकते हैं किसी भी व्यक्ति के दुख को ब्यटना उस व्यक्ति को एक नया वीवन देना है। कभी किसी बढ़े व्यक्ति को को सड़क गर करना बाहरहाहो पर सरक पर प्र रहे टैफिक के कारण पार करने मे असमर्थ हो तो हाथ पकड़ कर सबक पार करा दो फिर देखो तुम्हारे मन को कितनी शान्ति मिलती है पर है वह काम कठिन क्यों कि किसको आवकल समय है ऐसे

पर यदि ऊचा ठठना है वो सरल काम छोड कठिन काम ही करने पर्हेंगे। ईश्वर प्राप्ति का यह पहला सोधान है। कोशिश करो और इस सौपन पर वह बाओ

कामो केलिए ।

उदीयमान आर्य प्रतिभाओं के लिए स्वर्ण अवसर मात् मन्दिर के फन्या गुरुकुरत

वरीयदा निर्धन समर्पित समाच ग्रेविकों दक्षितों आपद ग्रस्तो की वैदिक लोच केन्द्र उपरेशिका अध्यापिका प्र**तिश्वन** विभाग में स्वस्य उत्साही कुत्तात्र सुद्धि पुत्रियो दबानन्द चक्त वेद निष्ठ आर्य को आवस्पकता है। स्थान सीमित देवियों के लिए का वृत्तियां आर्थ प्रवेश चयन से सम्पर्क करें। अध्यक्ष मात्रु मन्दिर की 45/129 वर्ष पद्मति से बोम्बता अर्जन पर्यक उज्ञालका अध्यक्त की सुन्धारण

बस्ती रामपुर बारानसी (व प्र )

### कल्याण के मार्ग पर पत्ने स्वरित स्थान को सर्व कर मसविव

त्यास्त् प्रश्वासम् वस्य सूचा चन्त्र मसावित् ा प्रो० कम प्रकार की आर्थ अध्यक्ष क्रिक्ट

सस्पेग्री की बढ़ी भरी गड़िया है। इससे मनुष्य की बुद्धि की बढ़वा दूर होती है। सस्तेगादि मनुष्य की सर्थ बोसना सिस्काती है। हमारे पापों की दूर करती है। मन को प्रसन्न करती है। शस्त्रेग्री हर प्रकार से मनुष्य का भरता करती है। संस्कृत का कवि करता है:—

का काव कहता ह:-जाड्ने रिम्बो इसी सिंचति वाचि सरकम् भागेन्गरी विज्ञति प्रचमन्त्रकरोति

चेतः प्रसादयति दिश्व तगेति वीर्तिम् सरसंगति कथव कि न करोति

सेंसार में मनुष्य को माता पिछा गिल सकते हैं। पुत्र और भाई मिल सकते हैं। सुख्याई पत्नी सिल सकते हैं। सुख्याई पत्नी सिल सकती है, राख मिल सकता है। हाथी भोड़े राखा मनोवाखित सस्तुर्य ऐपल सकती हैं। संसार में सब प्रकार के सुख मिल सकते हैं किन्तु सन्वयानों की संगति दुख्यि। है। संत सन्वय पास करते हैं—

तात मिले पुणि मात मिले सुत भात मिले जुवती सुकदायी । राज मिले गण बांजि मिले रत्व साज मिले मनवांकित भाई । लोक मिले पुरलोक मिले जियिलोक मिले बांकुंठ्यु काई । सुन्दर और मिले सब हुं सुख सन्त समानम युर्लभ

सल्समित के बिना मनुष्य को विवेक नहीं होता। सल्समित सब आनन्द मंगल का मूल है। सब फलों को सिद्धियों को देने वाली है। तलसी कहते हैं:-

भाई ॥

पुरस्ता नवस व :-स्तरंगति भूदर्गगल भूला। सोई पाल सिधि सब स्वयन पूरुव।

यदि मनुष्य अच्छी संगति में लग बाता है तो उसका कल्याक हो जाता है, उसका लोक परलोक मुक्त बात है। वदि दुक्तें के देगे में पड़ बाता है वो उसका पतन हो जाता है। संस्कृत का कवि कहता है– बहि सरसंग निरशे अविष्यसि अविष्यसि श्री

अश्र दुर्जनसंसर्वे पतिष्वसि

पराच्याता परतु संगति किनकी करनी वाहिए? आज जगड-जगड सन्तें के डेरे लगे हैं, स्वान-स्थान पर संतें के मेले लगे हैं। इरिद्धार ऋषि जाता स्थानों पर किरने ही आजम, विकले ही केन्द्र वाही करे

क्यान स्टिंड क्यानेज (क्यानार) पूर हैं। शीर्यों और मेलों में सीतें के मारी भीड़ मिलती हैं। कब की समा भी भी मोनानबद तरीने से साह के का में लक्का बनकर नगरों में जा में लक्का बनकर नगरों में जा में हैं। उनके प्राथत संबाद के लिए, उनके स्वानत के लिए, साबाद के लिए, उनके स्वानत के लिए, साबाद के लिए, पनके स्वानत के लिए, साबाद के लिए, पनके स्वानत के लिए, साबाद के लिए, पनके स्वानत के लिए, साबाद के लिए, पिस उनके लिए, साबाद के लिए, पान साम के लिए, साबाद के लिए, साम साम के लिए, साबाद के साम साम के लिए,

शिया असाम में साम से सामे के लिए लाखों रूपमा खांचे दिया जात है और फिर लाखों कुपमा उनको भेंट किया खांचा है थी. थी. दुरदर्शन के मार्टी हारा उनके धारणों का प्रसारण होत है। पिर उनके धारणों के जीडियों कैसेट बनाकर की कोडियों के स्था अस्तु मार्टी के स्थान हैं। से स्था में सामे स्थान की है किये स्था असु मार्टी है। क्योंकि प्रदेशक पूर्वत प्रमुख्य ही। क्योंकि प्रदेशक पूर्वत प्रमुख्य ही। क्योंकि प्रदेशक पूर्वत प्रमुख्य ही।

और चन्द्रन सब जगह नहीं होते-हाले-हाले म भाणिक्य मीक्सिक म मजे गजे । सामवी हि म सर्वह-चन्द्रमं न को को ।।

आज सन्तें को गदिएयां अधिक हैं नगढ़-जगढ़ मठ हैं और अखाढ़े हैं किन्तु संतमात्र कम है। जिसके पास माना, धन-सम्पत्ति अधिक है। वही बड़ा मन्त है। अतः हमें संत असत की पहचान कस्ति होगी। इस बारे में बेद कहता है कि हमें ऐसे लोगों को संगति कस्ती बाहिए जो दानी हो। अर्थिसक हो

तथा जानी हो । पुनर्वदताऽज्ञात ज्वनता संगमेगाह

(क्क 5/51/5) सत्संगति की पहली तर्ते यह है कि इस दिन्यों का संग करें ऐसे लोगों का संग करें वो कुछ दे सकते हीं शंक्षक करने वाले न हों। दान कई फ़कार के होते हैं-धन दान, विश्वादान आदि उनमें विकादम, क्रम्दान, ब्रह्मदान सम्बेस्ट सम्मा गांध है.

नाम गया ६-सर्वेषामधिकामानां व्रह्मदानं विक्रियाते।

अमृति निरन्तर थन देती है। सूर्व फन्त्रना प्रकार देते हैं वृद्ध फल देते हैं। नदियां जल देती हैं, गाएं दूध देती है। संस्कृत का कवि कहता है—

परोपकाराच बहुन्ति गहाः योगकाराव कर्तान वृक्षाः। परोपकाराच वृहुन्ति गार्थः योगकाराजीमवं शरिरम् ॥

प्रतेषकाराचीमर्थ शरीरम् ।। स्वबं वेद कहता है कि सी इन्हों से कमाओ और इचार हाचों

से द्वान करो-शतहरसे सम्माहर कहारहरसे संकिर दान देते समय किसी प्रकार का धमण्ड या मैं की भावना न हो।

का धमण्ड या मैं की भावना न हो। कवि रहीम के सब्द मैं-देने वाला कोई और है देता जो

दिन रैन । लोग भ्रम मुक्त पर करें तातें नीचे मैन ।।

स्वसंगति की दूसरी कर्त यह है कि हम आईइस्प (अग्नता) गोगों का संग करें। गहास्ता कुद थे आईहत का सन्देव दिया। महावीर रवामी ने अईहता का उपपेल दिया। ईसा ने अईहता का उपपेल दिया। इसा ने अईहता का उपपेल दिया। संगठ के ही अन्य पार्ट प्रस्ता हीं। के ही अन्य पार्ट प्रस्ता हीं। होवा की आगिन में जल रहा है। क्यांच्या करा कुद क्यांच्या होता हो। संस्ता में विधिम्म जर्मी में हिया का

हुई को लगान प जप्त (का) है ज्यादिय जातिय का सुद बना हुआ है, संसार में विश्विमन रुपों में हिंदा का जीव बाति है है। इसके आधिस्त्र किल है । इसके आधिस्त्र किल है । उन्हां चीवों की हिंदा मनुष्म प्रतिदित्त कर रहा है। उन्हां हिंसा और हिंसक लोगों को व्यान्त होगा। ऐसे लोगों को व्यान्त होगा। ऐसे लोगों को मन में अहिंदा और मीची को भावना हो। इसी हिएए आहिंदा। को प्रत्म धर्म कहा गांव को प्रत्म

अर्द्धिशा परफो धर्म : देव के अनुसार सर्तमाति की ग्रीसरी कर्त यह है कि एम उन लोगों की संगति करें जो विहान जानी हों (ज्याना) जन की कस्पों, धर्म प्रजों में बढ़ी भागी महिमा है। जबार, जिंडा और सरकान पैश करण ग्रें पशुओं में भी मिलता है, जन के कारण ही मनुष्य की विशेषता है। जान के बिला मनुष्य पह के

आहुर्रानग्रा अस में सुने च सामान्य मेरताम् प्रमुधिनंदणाम्। ज्ञानं हि तेसामीयको विजेता ज्ञानं होताः प्रमुधिःसमानः।

गीता (4/34) में कका है कि जान के समान संसद में और कोई भी वस्तु पवित्र नहीं है-न हैं जानेन सन्दुलं कवित्र किई विकास है-

इत के बिना मनुष्य सारी आयु पटकता सहता है। पार्मिक आस्पनरों क्या मिन्ना भाषा नार्सों में उल्लाह

: रहता है। ऐसे ही अज्ञानी लोगों के बारे में कशीर दास ने सावधान : किसा था-

बहुत मिले मोहिनेनी धर्मी, प्रात कर अस्त्वाना । अत्रतम क्रोहि प्रकार कुने, तिनका बोबा ज्ञाना। पीयल पाअर पुजनको गे तिल-जात भूताना । माल विदेर टोपी पहिले क्राप तिलक अनुमाना। सच्छी प्रवा गात भूते आतम स्वास्त न जाना।

ऐसे अझनी लागा का सम मनुष्य को नहीं करना-चाहिए वो झान का दम्भ भरते हों। दिखाना करते हों परन्तु स्वयं माना से अभिभृत हों। ऐसे लोगों का संग करने से बाद में पळताना पडता है। कबीर कहते हैं

घर-घर मंत्र जो देत फिरत है, माया के अभिमाना । गुरुवासहित शिष्य सब बूड़े असकाल प्रक्रियाना।

अवस्थार सम्प्रकार । अस्त इस ऐसे लोगों का योग करना चाहिए जो सारत में आगी करना चाहिए जो सारत में आगी हैं। अस्ता भारतम में आगी हैं। अस्ता भारतम के आगी में अह र में अह के सारत में आगी हैं। अस्ता भारतम के सार में माने की एक सार करने हाँ। गीरी (185) में बका है कि जो गीरी (185) में बका है कि जो नी हैं। हैं कि सारता है के सारत में माने हैं में सारत हैं, योग के मान लोगों के मान एन एन हैं के सारता है के सारता है हैं। सुद्ध दुख्य आग अपना आगी दूस दुख्य का अपना आगी दूस दुख्य हैं। सुद्ध दुख्य आग अपना आगी दूस दुख्य हैं। सुद्ध दुख्य आग अपना आगी दूस दुख्य हैं। सुप्ता है वें सारता है के सारता है के सारता है आगी है और से अपना भी बात है आगी है की सारता है के सारता है सारता है से सारता है

निर्मानमोद्धाः जितसंगरोचा अस्मात्मनिरम विनिष्ठतकस्माः

(गीसा 15/5) ऐसे ही जानी लोगों के लिए कबीर ने कहा था कि अस्प रानी स्तेत कोई होता है जो काम, क्षोध लोभ से रहित हो तथा जो तीन गुर्जों से परे हो! कतीर करने हैं

तरा जग एक आध है कोई काम क्रोध असर लोध विश्ववित्तं हरिपद चीलें होते ! गजस तामध्य स्वतिय तीन्यू ये सब देरी माया चीचे पद को वे घर चीलें, रीगाँड पत्ता च्यापा। अस्ताहीं निधा आस्त्र कोंडे को माग अधियाग। लोहा कंचगरायि करि येखे ते मृति भगवाग। विश्वता अक

से बक्स ।।
आर्थात जानी संत कोई विस्ता
ही होता है, जो काम, क्रोभ, तोभ
से रहित है, बढ़ी हरिष्ट । हैन्यर
के अर्थाय करता है। वह नक्ष तम्म क्रिक्त के स्वति हरिष्ट । हरिष्ट क्रम अर्थाय करता है। वह नक्ष त्वस्य अर्थिद वीनों गुणें से परे हैं। ब्रिक्स निम्दा स्कृति मान-अपमान को लेह दिख है। क्सिन क्रमन-अर्थ को त्वस्य दिया है जो सोह और

(शेष पुष्ट 6 पर)

### सरक्षित भविष्य का आधार-प्रतिभा अक्वेषण

ा ऑ॰ पुष्पा क्षमी की सकालिका नाम् मन्त्रित कन्ना मुल्कुल वानापन

नहीं आर्थेंगे। इसी से अनेक प्रविधाप

नष्ट हो नर्ब हैं हो रही हैं। इस

श्रार्य समाज का वर्तमान न्हा म म्बार्थी धन लग्लूप बनका का गत कर सभी निष्ठावान आवें द खा चिन्तित व सन्तप्त हैं । अपने मन्ताष के लिए भले ही हम ऊपर म र कामित हात्वते है तथा कर्च रच स्वरा मे अपना सफलताओ का उद्घाष भी करते हैं पर अन्त पं हम सून्यता व अधाव का अनुभव करते हुए अवसन्न है । इसका कारण है कि भावी पीढा हमार हाथ से बाहर हो रही है। आर्य समाज ने नृतन प्रतिभाआ के अन्वेषण परिरक्षण एव प्रात्साहन का ओर ध्यान हा नहीं दिया। फलत आज आर्य समाज का घर भावी पाढी (यवा शक्ति) से रिक्त हारहा है। इस समय जा युवा शक्ति अविकसित रूप में कही दृष्टिगाचर हा भी रही है उससे काम नहा चलने वाला ।

यह इससे अनजाना पाप/ अपराध/भूल हुई है। इसका परिमा र्जन अभी सभव है कि इस नतन परिभाजा की खोज करे उन्हें आगे ब्दर्भ के साधन दे ग्राम ग्राम नगर नगर घर घर मे पुकार करे कि भाय समाज रूपी घर का उदीयमान प्रतिभाजा में भरता है। भन सग्रह क मध्य माथ हम नृतन प्रतिभाओ ा मार कर। उनका स्नेह व लग्न र जाना करे आर्थ जन इधर क प्रोता कुछ ही बर्वी मे मान विश्व का अग्रणी बन नए उत्साह नेज आज व

· × अज्ञतन्ता 'तश्चर्मायम कै का आर लाव गाँत से बढ

प्राप्त्रस में आर्थ जन बने बनाए 'स न' " का आर आकष्ट हाने अध्ययन चके हैं नव निर्माण का आर उनकी रूपि नहीं है। कमा क मार्ग का अवराध हटा कर सहरा दकर उसे आगे बड़ा न्ना आयों की प्रवृत्ति नहीं रही है। काई सकट में उलझन में फसा है **प्रधान सब उस से दर दर ही** \*ग उसका विनात तटस्थ भाव स उते रहेगे घर सहयाग का आगे

आलस्य प्रधान धातक मनोवति को त्याग कर अब पुरुषार्थ भाव को ग्रहण करना हागा। पैनी दृष्टि से देखना डागा जहा कड़ी भी प्रतिभाशाली युवा अववा उद्दीयमान प्रतिभा दिखाई दे उस का चयन कर और संसाधन देकर उसे प्रजस्त करे आज कितने चाटुकार निकम्मे विद्यार्थी पूर्ण सुविधाःआ का उपभोगः कर रहे हैं। और विद्याभ्ययन मे परिश्रम न करके नकल व घुस देकर उत्तीर्थ हा जाते हैं क्या कची ऊची उपाधिया प्राप्त कर विभिन्न हचकडो से नौकरिया भी प्राप्त कर लेते है परन्तु प्रतिभा साली बच्चे व यवा साधना के अधाब में मटकते डी रह जारे हैं। मन मसोस कर रह जाते हैं। इन उदीयमान प्रतिभाजा मे न जाने कितने दखनन्द श्रद्धानन्द गुरुदत्त विकार्यी स्वीन्द्र नाथ टैगोर मनीबी योगी क्रिपे हैं जो संसाधना के अभाव में अधिकसित ही रह जात हैं। जो कोई एकाथ अपनी अदम्य सकल्प जवित से आगे बढ वाता है तो उसे या तो पीछे ही धकेलने का प्रयास किया जाता है या उसी पर सन्तोष करके उसके बक्रीमान में लगे रह जाते हैं इससे नूतन प्रतिभाओं की लम्बी परम्पर नहीं चल पारही है। समाज का जीवन नदी के प्रवाह की भन्ति निरन्तर गतिसील होता है। नदी का जल बह जाता है दूसरा जल आवा रहता है जिससे वह सदा परिपूर्ण रहती है ठीक वही स्थित समाज की है। नई प्रतिभाओं के न आने से समाज रुपी नदी सखा जाती है वर्तमान मे आब समाज की ऐसी ही अधाव मन स्थिति हुई जा रही है। आयों को अब सभलना है

उदीयमान प्रतिभाओं को आर्थ समाव से जोड़ना है। यही वास्तविक निधि है इसकी उपेक्षा अत्यन्त है। अस्तिकर होणी और हमे नष्ट ही कर देगी।

### પરમાજુ-શવિત સમ્પન્ન મ ा औं बहेत कुमार स्वासी के बावरूर

th pr. M., anner ween form, and with the tra-पोक्तरन अणुबिस्फोटों से भारत मान बढा है । अग्नि-अग्नि का सफल परीक्षण शक्ति प्रमाण बना है । क्ष्मियारों की दौढ़ नहीं यह प्रश्न सरक्षा का है । वादा बनना नहीं क्षेत्र का प्रश्न अस्मिता का है 🔢 नहीं समय के साथ स्वय को राष्ट्र बाल जो पाते । वुनिया की ठोकर खाते है और पीछे पछ्ताते हैं। लाठी जिसके हाथ उसी की नैस हुआ करती है । बली भुजाओं मे ही वीरो किजय हुआ करती है ।। सीमा पर जब राजु अडा हो भजन न गाए जाते । प्रबल प्रहारक क्षमता वाले क्षस्त्र चलाए जाते । घर में आग लगी होने पर कुए न खोदे जाते। हात्र आक्रमण से पहले हविद्यार सओप्रे जाते ।। अणु अस्त्रों वाले देशों से भारत विरा हुआ है । भारत फिर अण्-शक्ति बना तो क्या कुछ बुरा हुआ है आत्म सरका का भी हमको क्या अधिकार नहीं है ? हम भी स्वाभिमान से जीए क्यों स्वीकार नहीं है ? परमाण बस्त्रों का अपने अन्दर देए लगाकर । सी टी बी टी जाल घिनौने पर चाहते हस्ताक्षर । उनकी मक्कारी के है ये अगिन पोस्वरन उत्तर । वाल सरक्षा पर ही करते है विकास सब निर्भर ।। पाक चीन या अन्य देशों की श्राखों न फिर ललचार । युगोस्लाविया समझ न हम पर कोई झाखा उठाए । भारत के अस्तित्व अस्मिता पर फिर आच न काए । इसी लिए पोखरन अग्नि-अग्नि के विस्फोट कराए। स्वय यद करने की कोई अपनी चाह नहीं है थोपा युद्ध न लंडने का भी निज इतिहास नहीं है।

#### (एव्ट 5 का केव)

प्रतिबन्धों की धमकी से यह भारत नहीं झुकेगा ।

आत्म सुरक्षा साधन मे निर्भय निर्बाध बढेगा ।

स्वर्ण को बराबर समझता हा जो तुष्णा से रहित है। ऐसे लोग वास्त्रविक सत है। ये साधात मानो भगवान की मति हैं। ऐसे लागो का सग हमें करना चाहिए। सत्सगति के शिए कल्वाण मार्ग के लिए एक शर्त और है जिसका वेद मत्र के आएम में उल्लेख है और वह है हमे वस्त्वाण मार्ग पर स्वस्ति पथ पर निरन्तर चलना डोगा-स्वस्ति पन्धामनु भरेम सुर्वा चन्द्रमसी इव : सूर्य और चन्द्रमा की ठरड विस प्रकार सुर्व और चन्द्रमा निरन्तर अन्त्रधगति से अपने मार्ग पर चल रहे हैं और प्रकास श्रद अभि द्वार ताप क्षप शीवलता द्वारा सारे संस्कर का कल्यान कर रहे हैं उसी प्रकार हमें निरन्धर

स्वस्ति पथः कल्पाम मार्गका

अनुसरण करना होगा। यह नहीं कि कुछ दिन सत्सगनि। कल्याण के भाग पर चल पड़े और फिर छोड दिया। इस मार्ग पर लगातार सतत चलना होगा तभी जाकर सरसगति का लाभ हागा। सूर्य ओर चन्द्रमा से इम बहुत कुछ सीख सकते हैं । ये इमारे पथ प्रदर्शक हैं। तभी तो बेट में ही अन्य करा है कि इम मैं और आप सर्व और चन्द्रमा की तरह अपने वत पर चलेगे । व्रत का नियम का पालन करी से-

सूची जलपते इस चरिष्यानि हो वसपते बत चरिष्यामि। अत मे अवओ इम सूर्य चन्द्रमा की इस्ड निरन्तर स्वस्ति एव अध्याण मार्ग पर वले स्वस्थि पन्चाम् ( ऋ. 5//51/5)

### **चिल्ह आर्थ राम गुष्पिताना के बढ़ते करन**

अ**र्थ ऑस्ट्रिंग** क्या पंचाय की क है जिला आर्थ बना लवियान क्षार व कुरुकेर को कार क मों केरे कि प्रश्न का का उन्न सरकार शक्ति में सदस्य संस्थ । इसी के साथ प्रसिद्धार च हमार्थे केरे इर की चीडी के को रिकाने के लिए भी ों को से <del>कार्य नक। कुछ सो</del>य केश देशने भी गये। शुक्रकर 14 ह को प्राय समाना ४ करे यह त के लिए स्वाच हुई। पुरस्कृत कुरोर कुले स करोत दे एक क्रम पार पो स्वत्या क्रिम गय। प्रमुक्त ध्रान करकन नमा। वर्ष पर क्रमें यो रिया असाव और अवस् पी कार गणरण केती। यह या प्रधानत साथ कुन्स है। गीसाता में जाब गयता की पार्ट हैं। वाचे चारियों को पुत्रकुत

की ओर से स्वादित्य श्रीवान करणाव ग्रावा भीवान के उपकर प्राव्धीन के ज्ञान स्वादीत करणी पैसे कि श्रीवीहरू ग्रावासी ग्रावा प्रवेश स्वादी को देखा और उसके बाद सुरिवाय के दिए। उसका किया राजागा 130 को वीडि वाद सुरिवायन प्रमुखी। नामी जागी असान्यित और परांत्राचा का संभावाद कारी हुए अपने अरुने वादी से होटि ।

इस चात्र में सम्मितित होने और इसे सकत काने के लिए अर्च समाव र्ति दक्काद सकार के उपान औ मक्कल कर में अर्थ महामश्री श्री काल प्रकार की अरोदा व की सन्त कुथार भी अर्थ समाम परिष्ठ गय के गारनार्थ से इरोग कुद भी कोचानाथ ती रनेस की सूद वे ती हुई की सूद आर्थ आर्थ समाज जनाहर गगर की र य की रुखाधन औपरि किस्म त को व गत्री श्रीवरि युदेह गुफा थी अर्थ प्रकार राज्ये तहार क के बरिक सराम व सर्व प्रति सम प्रकार के फोसम्बद्ध भी सोम प्रकार भी पत्ती और ही सहोद पत्त मी का मिलेन सहयोग दहाः किता आ राम के वरिष्ठ उत्पादन ही गोल वि वी प्रत्ता और सोमानाव ही राज पाटिया की नै साथ कर से काने के रेतप् संपक्षित किया।

विका संवैध-महागरी

## पं. चम्पारण में गुरुकुल स्थापना

कारण में प्रीविधीय जाती । त्यांचा कर के प्रीविधीय कर कर में मान्या कर किया में प्रीविधीय कर कर के प्रीविधीय कर कर कर के प्रीविधीय कर के प्रीविधीय कर के प्रीविधीय कर के प्रीविधीय कर के प्रविधीय कर के प्रीविधीय कर के प्रविधीय के प्रविधीय कर के प्रविधीय के प्रविधाय कर के प्रविधीय के प्रविधीय कर के प्रविधीय के प्रविधीय कर के प्रविधीय कर के प्रविधीय के प्रविधा कर के प्यूष्ट के प्रविधीय के प्रविधा कर के प्रवीधी के प्रविधा कर के प्यूष्ट के प्रविधीय के प्रविधा कर के प्रविधीय के प्रविधा कर के प्रव

विकार को निर्मात से आज गाँग परिवर्त को है। उसने को बास्तरक पूर्व निर्मात की कामान्त्र पूर्व निर्मात की स्थान देखें से किन और प्रस्ता का कि स्थान में अन्य में बात किया और प्रस्ता

**वर्ष रक्ता प्रस्कृ**(स्वतक शु

#### भरिण्डा में महातमा हंसराज दिवस

डी ए वी सस्थाके संस्थापकः महान शिक्षाविद् महात्मा इसराज वा का 134वा जना दिवस आर्थ समाज बठिण्डा मे पुरुप आम प्रकार वानप्रस्था की की अध्यक्षता में बडे इबॉल्सास के साथ मनाया मना। इक्नथञ्च अतर्थ सम्प्रज के मान्य पुरोहित प सुनील कुमार वी सास्ती के ब्रह्मत्व में एव ब्रीसकेन्द्र वी बिन्दल संपलीक के होता कप ये सम्पन्न हुआ। यवपान जी ने आर्थ समाब को 200 रुपये की नकद द्वति द्वन दी । इकन वज्ञोपरान्त आर्थ महरू हाई स्कूल के बच्चों ने एक गीत हमें इसराज के सैनिक प्रस्तुत किया। इसके बाद श्रीमित एस एल लाटका की को कि आब की सभा की मुख्या वक्ता एव विशिष्ट अतिथि थी उन्होंने महारमा इसराव के बीवन चरित्र के गृह पहलुओं को क्लाते हुए कहा कि महात्वा की वास्तव मे एक महास्था वे तथ स्थाम स्वाभिमान देश भनित आस्तिकता दुरदर्शिक गीक्सिक अनाबरश्वक विकासक अविकासक यह सब तुम उन में वे। उन्होंने आर्थ सम्बद को जागृत करते हुए कितने ही वीर वैकार किए। सोइन लाश पाठक भाई परमानन्द सरदार भगव सिह लाला लाजपरस्य वी आदि ने सन आर्ग समान के सच्चे सिपारी थे। बेद के प्रकार में उन्होंने अपना बीवन दिखा। इस समारोह में बिटण्डा स्थित आर्थ समाज से सम्बन्धिः सेनी सिक्षण संस्थाओं आर्थ गल्बं सीनिक्स से स्कूल आर्थ मावल हाई स्कूल गुरू कुश आर्थ माडल स्कूल की

अध्यापिकाआः एव बच्च न धा भाग लिया। स्कूला क बन्चा क भजन हुए बच्चा बी भन्ना म प्रसन्त हाकर ला कुनवन्तराथ अग्रवान श्रा अशोक अगवान एउ श्रीपाडा गायल जान भजन गाने वाले बच्चा का नकट गरि देकर फ्रोत्साहित किया नाना कुलवन्तराय जी अग्रवाल न कण कि स्त्रा शिक्षा दलिताद्वार गाँ कार्य महात्मा जा के हा है अत हमे भा बुरे कार्यों का गटकर उनके बताये हुए मार्ग पर चलन का प्रथम करना चाहिए। नाला बी ने 1100 देने का घाषणा का श्री पी को गावल जा प्रधान आय माडल हाई स्कूल इसा सस्या क प्राचार्य हुकुमचन्द्र जा एव चौ० बाबुराम जी गर्ग वरिष्ठ उपप्रधान आर्ष समाज बठिण्डा जी ने महात्वा भी के जीवन चरित्र के बार मे विचार रखे। आज के समागम क अध्यक्ष पूज्य वानप्रस्थी जा ने अपने सूक्ष्म विचार उनके स्रोतन बरे रख। मंच संचालन श्री प्रेम माटिया जा प्रधान आर्थ समाज ने बाहे ही सुचार हम से किया। उन्हान पूज्य ओम प्रकार की व्यन्तप्रस्था आर्गात एस एल साटका तका समागम म डपस्थित सभी ठरायं जना का धन्यवाद किया।

श्री इन्द्र बीत वह गुप्ता संबंधनब अर्थ समाव श्री गीरा कबर वी श्री साम्साल जा गुप्ता बी गुरली घर एव श्री रोसनी देवा वो का इस समागम में किले प्रबन्ध करने में संबंधीन रहा। अन्त में वस्त पन हुखा।

चेत्र धारिक



कन्तरीष्ट्रीय उपरेक्तक महा विकासन टकारा में प्रवेश हेतु इन्ह्यूक अध्यापी 30 जून तक अपनेदन कडे-

इ प्रथम पंत्यक्रम-मध्यम से सेकर आवार्ष पर्वम: संस्कृत स्थानम्य प्रथ संस्कृत संस्थित तक निकार के सम्बन्ध से लिये गर्ध प्रस् प्रतिपक्षती बात आवेदन करें।

2 हितीय पाट बळ म रेउपरेटेक प्रसिक्त) बेद दर्शन उपनिवद संस्कृत के अध्ययन के साथ साथ कर्म कागडी पण्डित एव उपरेक्षक बनने के इच्छुक 10वा क्ष्म उत्तरीर्ण छात्र जिनका समा सेका एव अध्यादन का प्रधार करने का क्षम है प्रवेक्ष के लिये आतंदन कर्म राज्या प्रकार का ग्रन्तुगक्रम म विकास मि करका है

प्राचार्व अस्तर्श्व होता श्री । स्वाध्यक्षात्रस्य होता श्री । स्वाध्यक्षात्रस्य स्वाध्यक्षात्रस्य स्वाध्यक्षात्रस्य स्वाध्यक्षात्रस्य स्वाध्यक्षात्रस्य स्वाध्यक्षात्रस्य स्व

राम पाथ सहगल भन्ना

## करना चाहो तो कुछ ऐसा करा

कान पहीं गर को सुको अस् किर मस्त रहो। गम शहरी की चीच है जन्मु गम दूबे से नहीं कही कूछ सको तो गुस्सा मूको गुस्सा प्रेम महावा है गुस्सा करने जाने से हर कोई महात कता है उसना हो तो बुरे कर्म से हरता सीखो मतकले उनको चैन कभी नहीं मिलला जिपके होते मन काले बोल सको तो हिन्दी बोलो उपपी भाष है सारा जग ही हिन्दी बोले हर हिन्दु की अधिलाण है सुकन हो झुको गुली पर गुली न एँट दिल्लास है पेट पर जब फला बढता है बह त्थो त्यो झुकता जाता है भाग हो तो प्रभु गुण गत्नो प्रभु गुणमान में व्यानन्द मना जीज न चसती औम् चाम से विवेक न होता सत्सग विना कारा सको तो पहले खेलो जिन धेले कुछ

को चाद करो चनक रागी आर्थ मंत्री स्त्री आर्थ सम्बद्ध गर्हणि एक्स्पन्द काचार (राष्ट्रर काच्छर)

प्रस् शिव सामा नेवी

श्री महर्षि दबानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा इन्टरनेट पर सुपुत्र श्री किनोद शर्या को कि अमरीका में बसे हुए हैं ने इस कार्य को पूर्ण किया है। अपूर्य बनाता को सुचित करते हुए हवें हो रहा है कि 'श्री महर्षि दक्षमन्द आज के आयुनिक युग में कम्प्यूटरीकरण से पूरा विश्व इतना छोटा हो गुन्ह है कि इर व्यक्ति इन्टरनेट और ई मेल से वानकार एवं सम्पर्क करता है। इसी आस्य से टकारा स्थित अन्तरांष्ट्रीय सरस्वती स्नारक दृस्ट टकारा उमदेशक महाविद्यालय के पूर्व आन्धर्य सत्वदेश विद्यालयार वी के Tanker Cont. पर उपलब्ध है ।

हैं समृद्धि तथ और मन होते जल सत्ती धन की होती अभिन्ध कृत जाही हर राज सकर नाय पिटाके वरण हुआते लेना हो दो जारीर्थाद को संग को कुछ कर नमन करें । यह जीवन हैं सुन्दर इससे प्यार करो । अन्त समय तक इस परमेहर

## वार्क्षिकोत्स्य स्थम् महासङ्

लाकपद नगर सीगीयत विका कल्याम की भावता तवा बाध्यारिषक अधिवैदिक न्यभिर्परिक अनन्द की प्राप्ति हेत् रिनाक 24 मा 1999 से 30 मह 1999 (सोनका से रक्किन) तक व्यक्तिसम्बद्धम् सामवेश परायण महायद्ध का अधोषण कर रहा है । इसं अब के सत्ता पद को आर्थ बगत के उच्च कोटि के बिद्धन आचार्व ओस् दत्त वी सर्मा (मैर्स्ट) सुशोधित करेंगे। इनके व्हाँग्रीका प्रथमत सुनी निष्ण की केदासकार

पक्ष की दिश्ली केंद्र आर्थ कीरों हरिकद शेवी वैदिकाम्बद प्रत्यीय आर्थ कीर दल हरियाना एक वषमत्री आर्थ प्रादेशिक प्रति वप सभा हारबाचा स्टेख सैकेंटरी के रूम में कार्यक्रम का सचासन करेगे। विकास 30 5 1999 को यह की पूर्णांडिर एकम् इसके प्रत्याद अपि तौगर वह सायोकन किमा प्राप्याः हरि क्या संक्री

#### संस्कार प्रशिक्षण जिल्हे

आत्म सुद्धि आसन वहासूरमा में नि शुल्क ध्यान चोन वैदिक दम्मति निर्माण संस्थात प्रतिवास शिविर दिनाक 20 जून रविवार को साब 4 कवे सिविर उद्बटन होगा। रविकार 27 जून की प्रात 10 क्वे समापन समारोह होगा। इस बुपायसर पर कालम मध्य बहुत कल्याम सदन उद्घटन (असमून निएतिश) कलको स्थ प्रवेश ग्रीपा।

फामसा हारद्वार आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त, कोलस्ट्रोल रहित विटामिन 'सी' से भरपूर

जित रसायन

र्गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का मेवन करें।



गासा कार्यालयः

ती जीवनों पुनार को सूर्व एक्कोन्ट महानको सन्त्रका हुन कर हैना स्थित द्वितिकों **हैंना बेड**ाना में **स्था**र क्रेस कर नवेश सर्वात पुरस्य भवन भीक किमन्तुत भारतम्य ये स्थाने स्थानिनी आर्ग प्रतिनीन् प्रमूनिकार् के लिए प्रतिनीतः प्रमा ।





वर्ष 49 अंक 6, 26 वैकाख सम्बद् 2056 तदनुसार 6/9 मई 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

## ी पार्थना और आरमन

कृत किथा, जान कक्लेन, जाल

शास्त्रकारों का मत है कि एक बार जासमन करें।" प्रत्येक चार्मिक कृत्य के आरम्भ ( संस्कारविधि )

में आचमन अवश्य करना चाहिए। धार्मिक कत्य किसी स्वीकत परम्परा का निर्वाह नहीं होता अपित वत को धारण करना होता है। और नित्य प्रति करने से वे व्रत या संकल्प उत्तरोश्वर दढ होते हैं तथा जीवन में उदाध्यारियक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसीलिए ऋषिकर दयानन्द ने भी सन्बद्ध के आरम्भ में आसमन का विधान किया है-"ओं शनो देवी. .'' इस मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन आचमन करें। वटि बल न हो तो न करें ''-पंचमहायज्ञ विधि :

ऋषि ने यहां आश्रमन के विधान के साथ विकल्प भी प्रस्तुत किया है ''यदि जल न हो तो न करें "। यह विकास अर्थिने इसलिए दिया है क्योंकि सन्द्र्या मुख्य है और आचमन आदि क्रियाएं गीण है, सहायक मात्र हैं। अत: बलादि के अभाव में कार्ति मुख्य सन्ध्या ही म छोड दी जाए. इसलिए ऐसा विधान किया है। इसी प्रकार अग्निकोत के

स्तरम्भ में भी आध्यान का विधान करते हुए ऋषियर कहते हैं।

''अपने-अपने जलपात्र से सब वनें जो कि हवन-यत्र अर्थात वातोपासना कर्त-अग्निहोत्र करने को बैठे हाँ, वे इन मन्त्रों से तीन-तीन अर्जनम

आचमन का प्रयोजन-मनव्य सांसारिक प्राणी है. कत है (ओं क्रतो स्मर-यक् 40 17) । सांसारिक काम थन्धीं में लगा रहता है, असत्य भाषपादि करता है, जिससे मनुष्य अमेष्य=यज्ञ के अयोग्य अर्थात अपवित्र हो जाता है।

"अमेष्य वै परुषो यदनतं वदति''-सरापव का० 1.1.11 अन्वमन का जल साधक को आन्तरिक शुद्धि प्रदान करता है।

(तेन पति: अन्तरत:-नतपथ बा॰ 1.3 1.1)। सका हो सकती है कि जल तो बाह्य शुद्धि करता है, आन्तरिक सुद्धि तो सत्यभावण से होती है।

''अद्भिगांत्राणि सूध्यन्ति मनः सत्येन शध्यवि''-मन्०५ १०७ शंका उचित है। स्मान का जल बाह्य शक्ति ही करता है।

परन्त आचमन का जल आन्तरिक शुद्धि प्रदान करता है। यन में अनुकूलता के लिए जल का आवमन आवस्यक है। क्ल मेध्य के लिए डितकर भी है, और पृक्षित्र भी तप्रमक वती जह प्रेच्य-परिश क्ल को इचेली में लेकर आचमन करता है तो उसके अन्त करण में यह भाव पैदा होता है कि मैं भी मेध्य-वज्ञीय हो कर, पवित्र होफर

''मेच्या चा अर्था मेच्या परका व्रतमुपाकनीति, पवित्रं वा आपः करें अर्मात एक-एक से एक- पवित्रको स्वमक्रवामीत, तस्महा अप उपस्पृशित ।''-शतपथ श्री०

1111 में मन नहीं लग्नता। जल पावक है. कण्ठ मार्ग से हृदय तक पहंचते ही सान्ति प्रदान करता है। यह आन्तरिक श्तन्ति या मन की अनुकूलता ही आन्तरिक शब्दि है। जो अपनमन का प्रथम प्रयोजन है। साधक जब व्रतोपासना में

प्रवत्त होता है तो एक प्रकार से वह स्वयं को संसार से तोड कर परमार्थ से जोड़ने का प्रयास करता है। अस्पमन इन दोनों अवस्थाओं में एक भेदक रेखा खींच्या है। पावक शीतल जल का काचान करते समय साधक अपने अन्त:करण में इस भावना को दब करता है कि मैं अब पवित्र होकर. सांसारिकवा से कपर उठकर परमार्थ जगत में प्रवेश करने लगा हं। सभी भामिक कर्सव्य भावना से जड़े होते हैं। आधमन करते समय पेसी भावना रहाने से उदाक्ता असी है तथा साधक की साधना सुगम होती है तथा आध्यात्मिक आनन्द की अनुभृति और अधिक होती है। यह अस्वमन का द्वितीय प्रयोजन है।

अन्त में आचमन का विधान करते की प्यासों को बुक्तने में समर्थ है।

हैं। (मनुस्मृति 2 53)

परमेश्वर की प्रार्थना-सन्दि मनमें क्रोबादि दुर्भाव उठरहे का प्रत्येक छोटा-वडा पदार्थ हों, मन अशाना हो तो व्रतोपासना परमात्मा के विराट कप का अंग है। उनमें जल व अस्पर भी है। यज्ञवेंद (32 1) में 'आप.' को प्रसारमा का वाचक प्रान्त तथा है-'सा आप: स प्रजापति:'। इस प्रकार 'आप:' एक साथ ही जल और ब्रह्म दोनों का वाचक है। आप: ज्योति: इस: अमत. सहा. भू:, भूव: स्व: तथा ओप्-ये शब्द परस्पर समान अर्थ के वाचक हैं-''ओं आपो ज्वोतिरसोऽमृत ब्रह्म भ्रः स्वरॉ स्वाहा" तै० आरण्यक 10/27 इनमें ब्रह्म का क्वक जहां 'आप:' पद है, वहीं रस भी है। तैतिरीयोपनिषद (४० वल्ली. अव-7) में कहा है-

''रसो वें सः। रस होवायं लक्काऽउनन्दी भवति''

अर्थात वह बहा निश्चय ही रस रूप है। इस रस को पाकर ही उपासक आनन्दी होता है।

निषण्ट (112) में 'रस' लक्द जल के लिए पढ़ा गया है। इस प्रकार आचमन में प्रयक्त जल जहां पूर्वोक्त प्रयोजनों का साधक है वहीं परमात्मा के उसकर आवमन का ततीय प्रयोजन सर्वव्यापकरण (आप्त व्यासी) का कण्ठस्थ कफ की निवृत्ति है। कफ बोतक होता हटना परम शान्ति मिवृत्ति होने पर ही प्राणायाम तथा परमानन्द को प्राप्त कराने आदि क्रियाएं सुविधा पूर्वक की वाला भी है। और ऐसा भाव ग्रहण **का सकती हैं। इसी के साथ पानक** करने पर ही परमेश्वर की प्रार्थना चल का आचमन स्वास्थ्य के लिए और आचमन दोनों परस्पर युक्ति भी हितकारी होता है। इसीलिए संगत सिद्ध होते हैं। उस पास उस महर्षि मन् भोजन के अरम्भ और परबाद की तपलकि भी मना प्रकार

## व्यक्ति की परधान

#### 🛘 ले. औ अवस्था गाविताओं भी आर्थ बानामंत्र गावित म्यारिएपुर्

किसी की वंश भूका से किसी की पहचान चिन्ह से। यदि एक व्यक्ति ने काला काट पहन रखा है काली दाई लगी है और ऊपर कारण गाउन है का झट से पक्षा चलेगा कि यह व्यक्ति एक वकील या न्वायाधील है। यदि किसी व्यक्ति ने सफेद काट पहना है तो पहचान अत बाएगी कि यह डाक्टर है । नर्से भी सफेद कपडे पहनती हैं परन्त ठनकी वेशभूषा हायरचे की वेशभूषा से भिन्न हैं और झट पता चल जायेगा कि वह व्यक्ति डाक्टर है या नर्सिंग स्टाफ का सदस्य । पुलिस कर्मचारियों की भी खाकी वर्दी है हाक कर्मचारियों की भी परन्त इनमें इतना अधिक भेद है कि बिना समय नष्ट किये बिना बुद्धि पर जोर डाले निर्मारित हो जाता है कि व्यक्ति परिस में है या हाक सेवा में। यदि खाकी रग कुछ और गहरा हो तो पता चलता है कि व्यक्ति फीब में है। और यह भी बान हुआ कि फीन की चल मेना के विभाग मे है क्योंकि वाय सेना की फ्रेंशक और है और बल सेनाकी और । यात्राके पञ्चात जब बात्री बाहर आता है वो उसे यह पूछने की कभी आवस्यकता नहीं होती कि उस का सामान कौन बाहर निकालेगा। लाल कपडे पहने व्यक्ति को स्वव कुली कह कर पुकार कर सामान बाहर निकलवा लेख है।

हर व्यवसाय या धर्ष के लोगो

की पहचान है किसी की भाषा से

केवल व्यवसाय वा धर्म के लोक ही अपनी विशेष वेश भूपा से पहचान नहीं बनाते बरिक स्कूलों के विद्यार्थी भी अपनी पहचान बनाने के लिए विशेष प्रकार के कपडे प्रतनते हैं। विद्यार्थी को केवल दे<del>खा</del>ने से पता जल जाता है कि वह स्कूल का बात है। इर स्कूल ने अप हग की यदी मनाई हुई है। किसी की सफेद वो किसी की नीली इत्यदि । इसी प्रकार राजसी पार्टिमी ने भी अपनी पहचान कपड़ों से बनाई हुई है। यदि खद्दर के कपडे हैं सर पर गांधी टोपी है तो समझ लें व्यक्ति काग्रेस पार्टी का है। यदि सिक्खा भाई समुदाय से सम्बन्धित व्यक्तित है तो वह प्राव काली पनडी या सफेद पनडी बाधेगे। यदि उसकी नीसी पगकी है तो समझ वा सकत है कि वह अकाली दल का सदस्य है । बदि

एक व्यक्ति सफेट कमीन आपी बार्कों करते एउने हैं और नीये क्राक्ति निकर हैं और जा मिले क्राक्ति निकर हैं और उप मिले का राष्ट्रीय स्वयं सेक्क सम का सरस्य होना मिलिक्त हैं। हर राजसी पात्री के राज्ये के स्वयं में अपनी महत्तान कारी राज्ये के लिए अपना कार्य काराय हुआ है थी कि उनके कार्यानार्यों में सहरता है।

भागिक व्यक्ति भी अपनी वेश भूषा से अपनी पश्चान बनाये रखते हैं। पीत वस्त्र वारी युवक झट से पहचाना जाएगा कि किसी गुरुकुल का अञ्चलित स्नातक है। इसी प्रकार प्रवास वर्ष से कपर वदि किसी ने पीत वस्त्र धारण किये हुए हैं तो वह वान प्रस्थी जाना जाता है। यदि उस ने गैरुए बस्ब पहले हैं तो उसे सन्यासी जान कर श्रद्धा से वसके प्रति गर्दन श्रुक बाती है। कुर्चा लॉग बाली भोती मार्च पर विसक झट से अनुमान हो जायेगा कि वह व्यक्ति बाह्मभ है। तुरेंदार टोपी से मीलाना ही पहचाने वायेंगे। यहदियों तुन्हों की अपनी देश भूचा है। गुरु नानक देव जी के अनुवायियों का पगडी बाधने का बग और निहर सिक्ख क्षी अपनी ही पड़कान है और गिरबाबर के भादरी की अपनी ।

केवल वेशभूषा के माध्यम से

ही नहीं अपितु और भी सामन हैं

यहचान के। भाषा भी एक साधन है पहचान का कि यह व्यक्ति हरियाणनी है पद्माबी है सिन्धी है लखनवी है इत्यादि। सरीर की बनावट भी पश्चान का एक अन्य साधन है। मध्यम ऊच्छा का गौरा सफेट व्यक्ति अग्रेज है और लम्बा व्यक्ति जो गोरे रए का है अमेरिकन 🛊 । चीन के लोगों की अपनी ही आकृति है दो जापन के लोगो की अपनी। कई बार वातावरण भी पहचान करा देते हैं। शहनाई बन जरी हो तहे निरिचत है कि कोई सादी विकाह का उत्सव है। वदि लोग चुप करके किसी पर से बाहर आ रहे हों जमीन पर दरी बिछी है रोने चीखने चिल्लाने की आवाने अब रही हो दो मान शी कोई व्यक्ति ससार झोड कर चला गया। वदि सोगों ने अपनी कमीन पर मा कोट पर गा कुठ पर काले बिल्ले लगाये हो दो समझा वा सकता है कि किसी निर्णय के प्रति सेय प्रकट किया जा रहा है।

कई क्रम विजेष एकम के चिन्ह पारकान कर ब्हास देते हैं। एक छात्र विद्यालय में मानी प्रथम स्थान प्राप्त करता है । उपकार रूप में उसे स्वर्ण पदक दिया बाता है सा एक व्यक्तित किसी सेना में का शरिवस में ब्होर्स भी स्लाधा योग्य कार्य करक है हो उसे कोई पदक प्रदान किया जाता है से ऐसा पदक स्वय में एक पहचान अन जाता है कि व्यक्ति के कार्य की अधिकारियों द्वारा सराउना की गर्व है । बलब प्रव गेटरी बलब के सदस्य एक विशेष चिन्ह को अपने वस्त्र पर लगाते हैं जिस से पहचान आ जाती है कि व्यक्ति किस संस्था का सदस्य है। सरकार अपने कर्मकरियों की पहचान पत्र बना कर देती है और अब तो जुनाव आयोग ने भी हर मतदाता के लिए पत्रचान पत्र की बनावा जाना अनिवार्य कर दिवा है।

सिष्ण रूप में यदि कहा जयहें करवों से किसी की प्रशान है किसी की करवों से किसी की प्रशान है किसी की विन्द्र से तो किसी की एहचान एते से किसी की स्पीर की ठब्दुनित ते तो किसी की खठनरण की दिखति से । पर मानव की रूप पहचल है? कैसे खठा हो कि पह जर्मित मानवता के निर्मारित स्तर पर पूरा उत्तरका है या नहीं।

"फरिस्ते में बेहावर है इन्सान बनाना । गगर हम में लगती है मैहनत ज्यारा। कैसे एका चंदे कि व्यक्तिय पूर्ण रुपेश आर्थ है या नहीं। आर्थ का अर्थ स्माय का सरस्य नहीं । आर्थ का अर्थ है केन्द्र पूर्ण । और अर्गार्थ का अर्थ है अस्त्र स्थान का व्यक्ति । स्वान अस्त्रिय : अर्गार्थ कार्य का स्थान अस्त्रीय । अर्गार्थ कार्य कार्य अस्त्रीय कार्य है। आर्थ की स्था प्रस्तान है।

इस कमा में केशन सन्दें का हर कर है। जंडेमी बाक में Principal का अर्थ मूलकर भी है

और निवम भी है । Interest का अर्थ है स्थान भी और हित भी है। कहने वाला यह सहस्र है कि मैं सूद या ब्याब इसलिए नहीं देता क्यों कि वह मेरे नियम के विरुद्ध है। और भूलक्य इसलिए नहीं सीटाता बर्धेकि इस का लीटाना मेरे हित मे नहीं है। अर्थात वह व्यक्ति कर्जा लेकर वापिस करना ही नहीं चाहला। इसी प्रकार एक व्यक्ति किसी से एक हजार रूपये उधार ले गवा। वाषिस करने को नहीं अस्त का कई बार मांग की नर्कफ बात वहा की वहीं तक ही रही । एक दिन कर्जा वसल करने के लिए वह व्यक्ति उस के घर गया हो कर्बंधर ने कहा कि चलो आप का कर्जा अभी चुकाल हू। दुम मेरे साथ जलो। दोनो साथ साब हो लिए। चलते चलते जगल आ गवा। एक स्मान पर उहर गये। कर्वदार ने बेब से रस्सी निकाली और पेड पर बाबने लगा। दूसरे ने पूछा भाई क्यां करते हो । उसने कहा तुम्हारा कर्जा कापिस नहीं किया जाता । शर्म बहुत आती है । गले मे रस्सी खाल कर आत्म हत्या करना जाहता ह । अब कर्वा व्यपिस सेने वाले ने सोचा कि यदि यह मर गया हो इस की मीत मेरे गले पक्षे जायेगी । पुलिस कहेगी कि क कर्व लीय न सका इसलिए साहकार ने गले में फवा डाल कर उसे जान से मार दिवा। करल का मुकदमा पल्ले पड वायेगा । उसने कहा पर्ड कोई बात नहीं एक महीने बाद देदेना दो के बाद या छ महीने के बाद दे देना। उसने कहा कि मैं तो इस योग्य हू ही नहीं कि कर्ज लौटा सक्। अतत यह समझौता हुआ कि चलो दुम आया दे दो और आधा तुम्हे छोड दिया। दाना जगल से वापिस अप्र गवे। अब जब पर के निकट पहचे वो कर्बदार ने फिर कहा कि भाई सुन सो मैंने तुम से एक इजार कर्ज सिया का। उस ने कहा हा और सूनो मैंने पाच सी सीटा दिया। उसने फिर कहा हा। और फिर बाबरी अब केवल पांच सी ही रह गये। साहुकार ने कहा हा भई हा तेरा हिसाब ठीक है। अब तो केयल पाव सी ही रह सबे हैं पर पाच सी कब लौटायेन्द्र । उस कर्बदार ने वक्त विचा। भाई वनो जिला करते हो। बेरे मैंने पहले फन सी लीटा दिवे उसी कता समय आने पर

बाकी पांच सी भी लीटा दुना। वर

है आज कल के लोगों की वृश्वि।

(ब्रेथ पूच्छ ७ पर)

सम्बद्धारिय ह



शह काक्य सत्य है कि संगठन में सबित है। इस वाक्य को हमारे देश के बिहानों ने, ऋषियों ने, मुनियों ने तका समाय के देश हित विन्तकों ने, अनेकों बार दोहराया है। विकटन में दु:ख है, क्लेस है, संगठन में सख हैं. प्यार है. को है. कोच्य पायनका है।

अर्ज सम्पन्न के विद्वानों ने अपने सम्पन्न को स्थापन से हैं रेस स्मित्यों को भीतन का पाठ पहुना है क्योंकि अर्जा समाव के का प्रधार करता है और क्यानेंव में एक पूरे सूत्रा का नाम ही संगठन सूत्रा है। इस्तीयन अर्जा स्वाच्य में स्वत्ये बहुत स्पेत्रान देखाने को दिस्तात था। अर्जा स्थापन प्रधार के स्वत्ये बहुत स्वत्ये प्रधार के स्वत्ये हैं। अर्ज स्वाच्य स्वत्य दें मानें बहाने बाले सभी स्वीचित्र के स्वत्ये के देखाने के स्वत्य क्षाव्य के समाव के स्वत्य के स्वत्य

ऋम्बेद के संगठन सुकत के दूसरे मन्त्र में कहा गया है :-संगच्छाव्यं सं बदाव्यं स वो मनासि जानताम्। देवा धार्गं यथापूर्वे सं कानानां उपसरो।

पर्याच्या संसार के सब लोगों को कहना है कि मिलकर चलो. मिलकर एक जैसी काणी बोलो, अपने पनों को मिला कर चलो। अर्थात परधानमा कारता है कि सभी लोगों को संगठित होकर पारिवारिक. सामाजिकः धार्मिक व राजनैतिक कार्य करने चाहिएं। परिवार में सब कार्य आपस में मिलजुल कर करें। एक दूसरे को सहयोग दें .एक दसरे को साथ लेकर चलें। समाज में भी समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलें। मिलजल कर सामाजिक कार्य करें। परमात्मा कहता है कि धार्मिक ष्कार्य भी सभी मिलजल कर करें, धर्म के नाम पर आपस में कोई विवाद न करें। धर्म के रहस्य को समझें धर्म क्या है इसे कार्ने। वेट में धर्म की को परिभावा दी है उसे समझें। धर्म आपस में लड़ना नहीं सिखाता धर्म तो आपस में इनसनों को चोडता है। जो धर्म पानवों को आपस में लडाता है वह धर्म नहीं है। परमात्मा कहता है राजनैतिक कार्य भी मिलअल कर करे। देश की, राष्ट्र की, उन्नति के लिए प्रत्येक मानव को कार्य करना चाडिए। प्रत्येक मानव को अपनी उनति से पडले राष्ट्र की उनति के निय विकार करना साहिए। पित अपनी ताती के सम्बन्ध विकार करे। व्यदि हमारा देश सरक्षित होगा. रक्षित होगा. उन्नत होगा तो हम स्वयं ही सरक्षित होंगे और उन्नत होंगे।

धार्मिक कर में तो इनसे देश की रिकारि बढ़ी दरनीय हो गई है। इसने बड़े इनसे देश में हैं कियारी गित्र जाए भी कोटन है। वर्ग के जन्म पर खुत है ते अवस्थार कर हो है। अभी मा, उपसूच्या अपने अपको वर्ग माने बैठे हैं। वर्ग के मान पर बढ़े-बढ़े अख्याबार हो रहे हैं। वर्ष पार्मिकार्म को वर्ग के रतकार का भी पठा गाई। जब मानि रतनाद सरकार्म ने कार्स के पनिवारों से मुख्य वा कि वर्ग के सरकार कारासी हो बढ़ी बढ़ा पड़ाब कार्स ने समार्थ के स्वाचन पूछे हक भी सभी मीन दह गये थे। बही स्थिति अवल के पर्याप्यों की हो। रही हैं जुक लोगों को पता ही नहीं कि पता मेरी र समर्थ नवा होता है। इससे देर भी खुत बढ़ी संख्य देशों है किसे वर्ग का जुक पता नहीं है। इससे देश को कई उपलेशिक पार्टियों को भी यह पता नहीं कि पत्र मेरी का है। तह कि तह जुक्त नों के पत्र कि बहु का जाने धर्म निर्वेशक का नाम तमा रही हैं। क्या करेगा इस देश का जिस देश के स्वापों की धर्म की प्रकाशनों जा है।

एवर्नीधिक रूप में तो इसका बहुत ही बुध हाल है। गत दिनों जो कुछ हुमा हमारे दें में है जानिक तो में ने विकार है तो देख कर कुछ हुमा हमारे दें में है जानिक तो नो में ने विकार है तो देख कर कि ता हमके दें में एक स्थान कर कि ता हमें हमारे दें में उपने हमारे दें में उपने हमारे देश में अभोजों अमें बात कर हमारे जाति की ता विकार में हमारे प्रति का मान हमारे जाति हमारे में लिए ही हम के प्रति का क्यांतिक का स्थानिक हमारे अपने हमारे के लिए ही इसके एवं विकार का अपने का हमारे हमें हमारे में ही उपने क्यांतिक हमारे अपने हमारे हमें हमारे हमा

आज हमारे देश की जाना में भी मंग्रवन नाती है। छोटे-छोटे क्वानिक हमों को अगल बोट देश करना स्पर्ध देश में ओनिकार पैना कर रही है। आज हमारे देश की जनता करें भागों में बच्चे हुई हैं और उपलीतिक तोग हमा विषयन का लाभ उठा रहें हैं। इमारे देश की जमान को एकता के हुम में जम्म जाविशः अपलेश मागरिक यह निक्चण को कि तह अगला बोट हिस्सी भी अगट प्रकाशित व्यक्ति को नहीं थें। यह अगला बोट हिस्सी भी अगट प्रकाशित का निक्का के स्वाच के स्वाच के स्वाच के स्वाच है। हमा के स्वाच है। अगि के शिए व संगान के शिए कार्य करेंग को स्वाच से आहि के शिए व संगान के शिए कार्य के साथ से आहिर निकल्या बाहिए वर्म देश वर्ष तकेंगा। इसारे शिए देश स्वीपित होंगा चाहिए कोई उपलीतिक चार्टी नहीं नहीं हमा वर्ष है। यहिंद स्वाच पत्री कि स्वीप एका उपलीतिक चार्टी को की स्वाच है। यहिंद स्वाच भी किसी एका उपलीतिक चार्टी को बहुमत नहीं निश्ता डी पहले कार्री स्विति है

श्सिलिए संगठन की सभी क्षेत्रों में आवश्यकता है क्योंकि संगठन में हो सक्तित है। हमते देल की सारी जनता को आपसी सभी मन-भेद भूत कर एक हो जन्त चाहिए और देश के हित में विचार करना बाहिए और सभी क्षेत्रों में संगठन पैदा करना चाहिए तभी देश को बच्चया जा सकेता।

> धर्मदेव आर्य सहसम्पादक

### सुववा

ऑल इण्डिया दशानन्द साल्वेतन निमान, जना रोड, हितियायपुर निर्मन, जनाथ तथा योग्य विद्यार्थियों से अववृत्ति हेतु प्रार्थना पत्र आयन्त्रित करता है। प्रार्थना पत्र 15 जून 1999 तक अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य अथवा स्थानीय आर्थ समाज के प्रधान द्वारा तस्यीक करणा कर हारद्याल प्रिष्ठ प्रधान, द्वारान के पात्य भेज या सकते हैं।

> धर्मदेव आर्थ सहसम्पादक

### महिलाओं की वर्तमान रिथति

ा भीनारी इलिस निम्म बरि-१/६ मांपालनम् वर्ड किल्ली-

लेकिन मनुष्य को रहना तो बाती पर ही है। जहाँ एक ओर मनुष्य की औसत जायु बढ़ी है और उसके स्वास्थ्य की सुरक्षा करने के लिए एक से एक औषध्या और यत्र मौजूद हैं, वहीं यह भी सत्य है कि सहरों में बेठहाता भीड़ है और लोगों में असहायता, अप्रासंगिकता, महत्त्वहीनता, उपयोक्त्याद, पीरसता एक भावजून्यता भी वर कर ले रही है। गावों में वन्हें की कटाई की वज्रह से जलस्तर घट रहा है और पञ्चओं के लिए चारे की भी कमी हे। अक्सर पानी और चारा लाने की विग्नेवारी महित्सओं की ही होती है और वे दूर दूर इसके लिए भटकती हैं। यह स्थिति गढवाल, ओर कमारू से लेकर हिमालय के अन्य इलाको में भी पाई जाती है।

असली सुख कुर्मभ परिकार नेकार परि-पत्नी और यो बच्चों तक संगिता हो गये हैं, विस्तानी असर हो कमें कोर संगोदित और संनाद की कमें कोर पुची है, दिसे स-पत्न में अपनाव्य कम्माद्र्य, टेसीम्बन को उपनिर्मात ने और गहुद यह दिया है। इस प्रकार की जीवन प्रद्यीत में देश भागे हैं। अर्थिक प्रपाद के दिया है। इस प्रकार की जीवन प्रद्यीत में देश भागे के अर्थिक प्रपाद के दिया है किन आराज सुक्त और तक में स्क्रिय नामाद्र से स्वार्थ के प्राचीत के स्वार्थ प्राचीत का स्वित्त संस्ता में दह कर जार है। यह सिस्तान कांद्रित होता अर्थ दहा है।

महिलाओं की रिवरित में भी काफी अन्तिनित्ते मौजूद है। एक आर सहर में उनसे उनमेद की चाली र कि वे अच्छी अच्छी मौकरितों र कार्यरत रहेंगी, दूसरी और यह १ अग्बा रखी जानी है, वे स्ट्रुशियां १ र पर में हर प्रकार की सुख

ा उपलब्ध करावेंगी, भले ही ६ क लिए उन्हें अपना पूरा समस् १, के लिए उन्हें अपना पूरा समस् १, के लिए उन्हें अपनस्यकता इस २११ की है कि बन्ध महिला परिवार वर अस्य में बसकर से योगशान देखी

बोसकों सदी में इसने बहुत अधिक हैं, तो पर के कामकाक में भी उसे को को है, परतु बहुत अधिक इसे सदस्यों से सदद मिलने व्यक्तिए। भी इस सदी में हुआ है। यह आभीण महिलाओं की करिपाइकों में अजिकशीका नहीं होगा है। अन तक थी ७५ प्रतिस्त चरत

अस तक था थ. प्रतासत प्रतास के पाँचों में निकास करता है। गाँच में सुली हका जादि का तो सुख है, एरता वहां सिकास की कोई सुविका गाँड हैं, अध्यक्तमान के सक्का जब्दे हैं। महिसाओं की प्रगति में समुख सम्बन्ध का विकास न होने के कारण उन्हां हैं। जाड़ सिकास कहां है के

क्षम में ये पत र प्रोत्तिकता स्वीत्तियां है।
पत्रिक्त में प्राथिकता स्वीत्तियां दिया प्रविद्या में
प्रीय मिला मिला में तिया पत्रिक्ता में
पत्रिक्त में प्राथिकता में तिया पत्रिक्ता में
पत्रीय में मूला में मुक्ता में मिला पत्रिक्ता में
पत्रीय प्राथिकता में निष्क में मिला पत्रिक्ता में
प्राथ्य दुख्य है। में मूला में प्राथिकता में मिला में
पत्रीय प्राथिकता में मिला में मिला में
प्राथिकता में मीला में मिला मिला मार्थिकता में
पिका में में मीला में में में मिला मार्थीकता में
प्राथिकता में मीला में मिला मुक्ता में
पिकाम में मीला में मिला मुक्ता में
प्राथिकता में मीला में
मार्थी में मिला में मिला में मिला में
में मिला में मिला में मिला में मिला में
में मिला में मिला में मिला में मिला में
में मिला में मिला में मिला में मिला में

ात्र रहुत के अस्पाद उन्मद ति त्रा प्रकार मार्ग के दिए स्वृत ही कर्म कारण है कि सुनीमध्यित में कारिकारों का प्रतिक्रत करीब १३ प्रतिकार है तिकार में २२ २ प्रतिक्रत प्रतिकार है तिकार में २२ २ प्रतिक्रत प्रतिकार प्रकारण में ३२ ८ प्रतिकार पर्व करावों में ३१ ८ प्रतिकार इसे क्षाव्य में २५ प्रतिकार के प्रकार प्रतिकार ३२ ९ अपवीद एक क्षित्रकार में उनकार प्रतिकार ३२ ९ अपवीद एक क्षित्रकार में उनकार महिलार स्वासण मही

रण्युक्त होती हैं किया इसके विश्वय उन्हें समय नहीं मिलाई भारत में लगामन १५ प्रतिकत परिवार गरिवार रेखा के गीमें जीवन पानन करते हैं और प्राम्मिण की निए १० प्रतिकत परिवारों में महिला कहा जिला होता होता है। अध्यक्ष परी काम भी करना है और उन्हें सिखा का राज्य भी जाती है और उन्हें सिखा का राज्य भी जाती मिला। जलएक महिलाई अधिकारों में मब्बूडी जावका सीच्या परिवार में मब्बूडी जावका सीच्या परिवार राज्य प्रदाण परिवार में मान इसके प्रतिकार राज्य प्रदाण का प्रतिकार में

ऋण मिलने की सुविका ऐसी महिलाओं को छाटे-जीटे उधार मिलना कहुत बंहरी है। यह बहुत वर्ष का विषय है कि १९८६ में ही भारत सरकार ने नहिला एनं काल क्रिकार विभाग को स्वारण की है और इस विधान ने नहिल्हा को विधान प्रस्तावारों पर काल देश प्रारम्म किला है । महिलाओं को राज्य कारपार्म्म काल संस्तावार के करा में देखते हुए उन्हें केवल करवाणकार कार्यक्रमां काल कालीहर न स्वार्थक कार्यक्रमां कालीहर न स्वार्थक विधान केवल कालीहर ने स्वार्थक विधान केवल कालीहर ने स्वार्थक स्वार्थक स्वार्थक स्वार्थक स्वार्थक

भागान के बनने के उचारत प्रश्नीय गारिता आयोग की स्वारण के मार्ग मिला आयोग की स्वारण के मार्ग मिला क्यार्थ प्राप्तकार के मार्ग में मिर्गन क्यार्थ प्राप्तकार के मार्ग में मिर्गन क्यार्थ प्राप्तकार के स्वर्ध में मिर्गन क्यार्थ प्राप्तकार के संस्था करना और स्वर्ध के अध्यक्तमार्थ हैं, के उन्हें पूर करने के लिए प्रसाद करना स्वर्ध की प्रमुख का मार्ग का मिला स्वर्ध के मार्ग का किस्सी भी व्यक्ति को मार्ग का किस्सी भी व्यक्ति का मार्ग का किस्सी मार्ग कर भी स्वर्ध के मार्ग के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के मार्ग कर अध्यक्ति स्वर्ध में स्वर्ध के स्वर्ध

इसके साथ ही भारत सरकार ने एक्ट्रीय महिला करेंग की श्री श्रावण्ड की, जीक निर्मेत्र महिलाओं को स्विच्छित सरसाओं के महिलाओं कुम मुक्ता कराजा जा सके। इस योजन्य का खुट श्रीक्क स्वनात हुआ है, क्वींक इसने बोच हुझ महिलाओं को इस बात की पूर्व स्वस्तेत्व प्राणी है कि ये अपनी काम गुद्धि के किए। क्या काम करें।

करता है कि या स्थानी आप मुझा के का स्थानी अपने क्षा कर स्थानी अपने क्षिण कर स्थानी कर स्थानी कर स्थानी के स्थानी कर स्थानी के स्थानी के स्थानी कर स्थानी के स्थानी कर स्थानी कर

स्वयु जारण जीरण हैं। प्राप्ती जीरण प्राप्त ने प्राप्त करिया है। प्राप्ती संस्कृतिक परिवार के प्राप्त में की रोकाले प्रिप्त ने क्या रोकाल की और सहदू महैरावर्ग मिलावें हैं, प्राप्त की स्वर्ण की स्वर्ण मात्र जी सहस्य हैं और सार्व जाकाल की स्वर्णाल हैं, सार्वण कुलावानें में हैं कर्मी करिया मात्र की मात्र की स्वर्ण की स्वर्ण में प्राप्त हैं। प्राप्त और प्रस्त का सार्व की स्वर्ण मात्र की के पोलाव की स्वर्ण की स्वर्ण मात्र के पोलाव की स्वर्ण मात्र कर से प्रमाण का सार्व की स्वर्ण कर से प्रमाण की सार्व की स्वर्ण कर से प्रमाण की सार्व की स्वर्ण कर से

किया के बेहर कार्यों हैं
व्यक्तियों के साम अन्या का
प्रेस है कि पहले से क्यू देशिक्ष की हिम्म कार्यों अपन्या के साम की हिम्म कार्यों अपन्या के साम कार्यों के साम की अपने कार्यों के अपने कार्यों के साम की अपने कार्यों कार्यों के साम की अपने कार्यों के अपने कार्यों के साम की अपने कार्यों कार्यों के साम की अपने कार्यों कार्यों

प्रसार नहीं पूर्व करना रे प्रसार की करना नहण नहीं है। पूर्वा की मानाव प्रसार नहण नहीं है। पूर्वा की मानाव प्रसार में हैं पूर्वा की मानाव प्रसार मानाव है। उसने की मानाव प्रसार मानाव है। उसने मानाव है। उसनेव है।

सकते हैं, स्रो क्या इन्हर सम्बल बगह-

जगह में छात्रावास चलाने के लिए

महर्षि दयानन्द के सपनो का आर्य समाज 3 ते॰ वी मान्य पैका, सा गान्य पार मन मन कर की नार

धारत में समञ्ज्यामय पर संस्थापित विधिन्त संस्थाओं में फिर चारे वे मानाविक. आर्थिक. राजनैतिक एवं धार्मिक ही क्यों न हों. आर्थ समाज एक श्रेष्ट्रतम संस्था है। ऐसा मैं ही नहीं कहता वरन अधिकांस प्रकार एवं विद्यान व्यक्ति **क**हते एवं मानते रहे हैं तथा आस थी पानते हैं। आर्थ समान के संस्थापक महर्षि दवानन्द सरस्वती एक अलौकिक व्यक्तित्व के महापुरुष थे। उन्होंने भारत एवं विश्व को जो दर्शन दिया उसमें मानव के सर्वांगीण विकास की अनुषति होती **है-अर्था**त संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। उनका ग्रन्य 'सत्वार्थ प्रकास' भी अपने आप में अनुता एवं अलौकिक है। उसको विवनी बार भी पढ़ा बाये उतनी ही बार उसे पटने की और जिज्ञासा बनी रहती है। स्वामी दयानन्द ने अपने विवेचन के आकार पर की सिद्धान्त संस्थापित या प्रतिपादित किये वे कोई साम्बन्ध नहीं है। वे मानव को आदर्श (श्रेष्ट) तथा समाज को एक कल्याणकारी राज्य वा समाज बनाने की दिशा में बड़े सार्थक एवं महत्वपूर्ण माने जाते हैं। स्वामी बी ने आर्य समाज को श्रेष्ठ पुरुषों की समाज के रूप में परिभाषित किया न कि धार्मिक संस्था या किसी सम्प्रदाय के रूप में, उनका कड़ना या-"मेरी कोई नवीन कल्पना या मत-मतान्तर चन्ताने का लेशमात्र भी अधिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है रसे मानना-मनवाना, जो **असत्व है टसे छोड़ना-खुड़बाना मुझे अमी**ह हैं।" अतः जीवन में सत्य प्रकाशित र्कारता ही उनका सक्य रहा। उन्होंने सदैव सत्य को सत्य और असत्य को असत्य ही कहा, सत्य ज्ञान के लिए उन्होंने सम्बद् 1903 में बर स्थागा, 1912 में गहमु**बटेस्व**र में एक शव चीर कर उसका परीक्षण किया, 1923 में हरिद्वार में 'पाखण्ड . स्वरिक्रनी पताका' फारवर्ता, विभिन्न विचारों के विद्वानों एवं धर्मावसम्बद्धें को सारवार्थ के लिए लसकारा और अन्त में कार्य ज्योति के महान उद्धारक, व्याकरण के सूर्व, अलीकिक महस्मानव पुरु विरक्षान्तर से सत्य क्रम वर्ष राज्य

आशीर्वाट प्राप्त किया बेहिनक एवं स्पष्ट बात कहने में स्वामी जी सदैव निर्मय रहते थे। 16 जनवरी 1916 को गुजरात में अपने भाषण में उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिशा था-'मेरी बात सत्य हो तो मानो,' चादकारिता करना छोड दो।' स्वामी जी ने अपने आपको कभी 'गाँड फार्दर' प्रतिविश्वित नहीं किया। उन्होंने बार-बार यही कहा-'जो मैं कह रहा हूं, वह सत्य है। किन्तु उसमें कभी असत्य लगे हो वह न मानो को सत्व हो किन्तु सत्व को प्रकाशित भी करो, ताकि सभी उसे जान सके एवं परख सके। गीत पर हाम रखकर कुछ कह देने से कुछ सत्य नहीं हो जाता क्योंकि वह अधिवस्ताओं के संकेत पर बोला गया सत्य होता है और प्रत्येक जानता है कि अदालत में दो पक्षीं में से एक सत्य होगा. दसरा असत्य महर्षि दयानन्द के ग्रन्य सत्यार्थ प्रकाश की यह स्थिति नहीं है-उसमें जो अंकित है वह अकाटम सत्य है और सत्य ही रहेगा। यह ग्रन्थ सूर्य की भांति सबको प्रकाशित करता ही रहेगा।

आर्य समाद किसी मनुष्य को

आन्तरिक एवं बाह्य रूप से शुद्ध

एवं निर्मल करने वाली एक औषधि है। इस रामबाज आवधी का सेवन करने वाला प्राणी जीवन में कभी निराम एवं इक्स नहीं होता। उसमें आरिपक, मानसिक एवं शारीरिक शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि वह जीवन के सभी दुख-दर्द से जुझने की ऊर्जा अपने में समाहित पंता है। एवं सदैव इंसते हुए उसका सामना करता है। पूर्व प्रधानमंत्री बौ॰ चरन सिंह ने एक बार कहा था-मेरे जीवन में जितनी जव्हाईषां हैं वे सब आर्थ समाब की बदौलत और बुराईयां राजनीति की बदौलत।' उनके द्वारा ऐसा कहा जाना कोई माधारण बात नहीं है। एक आर्थ समाजी सदैव सीची-संख्वी राष्ट्र पर चलकर अन्य व्यक्तियों में भी तस अर्ज को जागत करने का प्रवास करता है। जब कोई व्यक्ति आर्थ समाज में आता है की यह यहाँ स्वर्ग प्रकाशित होता है और उसके कुछ समय बाद वह टार्च बनकर अन्य को प्रकाशित करने लगता है। अभी किस के अर्थ मगर के संस्थान

भावि दयानन्द सरस्वती ने, जो इस तब्ब को जान गये वे ब्रद्धानन्द. नाराबन स्वामी, ला॰ लाजपत राय. राय प्रसाद विस्मिल सरीके बन गर्वे और जिन्होंने इस तच्य की और से मुंह मोह लिया वे उसी प्रकार भटक गये जैसे चौराहे पर कोई राहगीर सही मार्ग की अज्ञानता के अभाव में भटक जाता है और स्वर्ग जाने की अपेक्षा नरक में फांच जाता है। इसी कारण योगीशय अरविन्द ने महर्षि दवानन्द को महापुरुष रूपी पर्वंत की चोटियों में सबसे कंची चोटी ऑर देवतास्त्रक्ष्य जी भाई परमानन्द ने उन्होंने समाब की रोशनी देने वाली सबसे केची मीनार माना ।

पर आज ऐसी अनुठी संस्था में दिनोदिन पनपती बुराईयां क समान में उसकी घटती प्रविष्ठा एक चिन्ता का विषय है। आखिर वह किस भूकम्प के हिलाँरे हैं बो इसके आलीशान भवन को द्धामगा से हैं। वा आज इस रामबाच औषधी का प्रभाव क्यों समाप्त हो रहा है? आखिर कौन कारण हैं इसकी जढ में 1 बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्वापना होते ही सर्वत्र भारत में आर्थ समार्थ स्वापित होती चली गईं और पूरे विस्य में आर्थ समाजों का विशाल जाल बिक है। आम जन ने अपनी अमल्य सम्पत्तियां इस संस्था को दीं, मकान व भवन दिये, घन दिवा स्थान-स्थान पर लोगों ने अपने खून-पसीने से आर्थ समाज एव उसकी सस्याओं को स्थापित एवं पोषित किया, बन सेवार्थ ही ए वी कालज. गुरुकुल, कन्या पाठशालाये, पुस्तकालय एउं वाचनालयं, औषधालव, अन्त्रधान्य, विश्वा आश्रम, विशाल आश्रम, बारात घर आदि की स्थापना कर असाधरण कार्थकिये। जितनी विशाल राम्पतियां जान मार्ग समान के पास हैं, वह देखते ही बनदा है, अत: आज तो इसे विश्व की और **थी उपयोगी संस्था डोकर** वभरना षा और देश के शपकों को भी दिशा देनी थी। फिर क्ये यह उदन की और अद्रसर हो रही है। कारण अनेक हैं किन्तु इसकी वह में प्रगन्त वीन कारणो को चर्चा में यहा करना

प्रवाद कारण-एक समय था जब समाज में व्यक्ति तरीर रक्षा और उसे क्काने के लिए कपढ़े पहनते ये किन्तु अरुव यह फैसन के

लिए पड़ने जा रहे हैं-अर्थात मान्यता बदल गई है, इसी तरह एक थ्य श्रम समाज की सेवार्थ व्यक्ति आर्थ समाज के सदस्य बनना अपना गौरव समझते ये जबकि आज इस संस्था का पदाधिकारी बनना मात्र ही समाच सेवा बन पक्ष है। अर्थात यहां भी मान्यता में अन्तर आ गया है और इस सब की जह में आर्य समाब दसकी संस्थाओं की अवल सम्यक्तिया और उनकी आय है। जब संगे भाई सम्पत्ति के कारण आपसी दश्मन बन सकते हैं तो फिर आर्य समाजियों में तो खुन का रिश्ता भी नहीं है। यही कारण है उसके चनायो मे धक्का-मुक्को, मारपीट, कुर्सी फैंका-फेंकी या झगडा करना एक आम बात हो गई है।

दितीय कारण-समय समय पर आर्थ समाज के सदस्यो एव संस्थाओं के सदस्यों के आपसी होने वाले विवादों का हल न्याय सभा बनाकर पंच फैसलों से नहीं किया गया। यदि ऐसा किया जाता तो उनमें मेल-मिलाय होता रहता। झगडे हर परिवार, हर संस्था मे होते रहते हैं-यह कोई अस्वाधाविक नहीं। यहर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस आपसी झगडे रूपी फोड़े की कील निकाल देने के लिए जिन न्याय सभाओं की व्यवस्था नियम-उपनियमी मे करकायी थी, उसे प्रभावी बनाने की ओर कभी ध्यान न दिये जाने से ही आज आर्य समाजों में यह स्थिति बन गई है। इसके विपान आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने अपने स्त्रार्थवश इन झगढी की आपमी सलह रूपर्ख से निप्राने की अपेक्षा किसी विशेष वर्ग को सरक्षण देकर अपना प्रभत्व वहां भी बनाने की क्षत्रले राजनी प्रायम कर दी। ब्राएडे घरान की अपेक्षा उन्हें बढाने में हवा दी नई और माका पाते ही बन के लालब में अपना प्रशासक निव्वत कर उक्र समान या सस्धा को अपन आंतः ये ने की राज्यांति प्राप्तात के की अधिक प्राथम प्रवेदी मजन 'न ने उसके र्परमा एवं महत्त्वा करे ए। उन्ह द र दियः क्योंकि अर्थ समा ? क इत्तरहा की बळानो उनकी पिटाई, जेल जारे की कहानियां आदि अब समाचार पत्रों में साथे जाने लगी हैं।

(शेष प्रक्ष ५ ए

(पृष्ठ 5 का शेष)

इससे भी एक कदन आगे जह कर प्रदेशीय सफजों ने अपने फिर्मीवर्ग में क्रिक्टे सम्मेन के पिएन उन्हें सम्मान्त्री से पूबाक करना जारान्य कर पिया जार्थ जन को मेंहिन की नाक उन्हें रोकने कर कार्य प्रदेशीय प्राणिविक्ष सम्मान्त्रों ने करना प्रदास कर दिखा, प्रदासन दस्त्र एक आर्थ सम्मान्त्रों ने प्रकृति रसामन्त्र की सम्मान्त्र सम्मान्त्र प्रमान्त्र अपने सम्मान्त्र प्रकृत न्य स्वीविष्ठ की स्वर्ण के सम्मान्त्र स्वर्ण प्रस्तान्त्र प्रस्तान्त्र प्रस्तान्त्र स्वर्ण कार्यस्तान्त्र स्वर्ण कार्यस्तान्त्र स्वरूप कार्यस्तान्त्र स्वरूप कार्यस्तान्त्र स्वरूप के सम्मान्त्र स्वरूप कार्यस्त्र स्वरूप कर स्वरूप कार्यस्त्र स्वरूप कर स्वरूप कार्यस्त्र स्वरूप स्वरू

तुतीय कारण-आर्थ सभासदी को आपसी लक्ष्य के कारण सम्बद्ध में अपना बहुमत बनाने के लिए स्थार्थी तत्वों ने आर्थ समाज में अपने-अपने लोगों को भरना प्रारम्भ कर दिया जिनमें अधिकांश मूर्तिपूजक सदस्य बन गये। सम्हज हित की बजाये 'स्वक्रित' की उन्हें अधिक चिंदा वी। धीरे-धीरे जार्य समान एव उसकी संस्था की सम्पत्तियों को देख अनेक आतकवादी भी आर्थ समावों में प्रवेश पा गये। छनका ध्येम आर्थ सम्प्रण से कुछ लेना देना नहीं या। मात्र उसकी सम्पत्ति पर श्रम्का कर उन्हे लटना-ससोटना था। जब मूर्ति पूजके को सदस्य बनाया जा सकता वा तो अन्त को कैसे रोका का सकता था। आव 80 प्रतिशत सन्धतन वर्मिनों एव कातकवादियाँ का आर्थ समाज प्रव इसकी सम्पत्ति पर कन्या है। करत कि हम उनसे मूर्ति पूजा चुढ़ा पतो। यह हमने नहीं किया-विना सुद्धि आन्दोलन चलाये ठन्हें अपने आर्य समाब रूपी परिवार में सम्मिलित कर लिया। ऐसे ही कुछ लोग समय-समय पर बुसपैठ कर जिला उप सभामों, प्रादेशीय सभामों, सावदिशिक सभाजों तक में प्रवेश कर गये। परिणाम स्वरूप उसकी अनेक संस्काओं में काबिक हो ये उनकी नियम्प्रयलियों को उरपने पक्ष में संशोधित कर जुके हैं। उसा: आर्य समान रूपी इकाई से लेकर सर्वदेशिक स्तर तक की संस्थाओं तक में यह कैंसर की बीमारी प्रकेष कर गई है। (आठकवादी से मेरा अभिप्राय: ऐसे लोगों से है को वाँस व रुढ़े के बल पर समाज एवं संस्थावें बला रहे हैं।)

स्थान-सुमान-वा गर प्रकार स्थाप के निवार का जान है उसके स्थाप के निवार का जान है उसके स्थिप स्थापकर है कि आमी प्रकार के निया-प्राचीनमां में शिवर्तन कर स्था सुमितिका कर सिया कर्यों कि एक पर्य से कार सम्याद के स्थापन कर्यों निर्मा की मंत्री हो न पर पाने और स्थी साथ प्रकार पढ़ सिया क्या कर्य नाम्यों की मार्च प्रकार के सिया मुक्ता 15 वर्ष को आमी प्रकार के सिया मुक्ता 15 वर्ष को स्थापन क्या मार्च के स्थापन क्या की स्थापन क्यों के स्थापन क्या की स्थापन स्थापन क्यों के स्थापन क्यों की स्थापन स्थापन क्यों के स्थापन क्यों की स्थापन स्थापन क्यों के स्थापन क्यों की स्थापन स्थापन क्या मार्च क्या स्थापन क्या क्या स्थापन स्थापन क्या मार्च क्या स्थापन स्थापन क्या स्थापन

द्वितीय कारम से निजरनार्थ आवरपक है कि आर्थ समाब के सदस्यों के सभी मद्यपेद न्याय सभा के हार डी निवींत डॉ और उन्हें दक्त निवर्ष की मानग आवश हो । आर्थ समाज द्वारा दिये निर्णय के विरुद्ध अपील प्रादेशीय सभा में तथा उसके विर्णय के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्थ प्रतिनिधि सध्य में हो सके। न्याय समार्थे सभी विवादों को आभ सहमति के आधार पर निर्मीत करें ताकि सदस्यों में प्रेम एव स्नेड तया आपसी सीहार्द बना रहे, फिसी समाब, प्रादेशीय सभा या सार्वदेशिक सभा का अदालत में जाने पर पूर्वतमा प्रतिभागा हो। किसी समाव में उस समय एक किसी को प्रकासक नियुक्त करने का अधिकार ही न हो जब तक यह विश्वित न हो बाये कि कोई दूसरा वर्ग या संगठन आर्य समाज की सम्पत्ति पर काविब होने का प्रयास कर रहा है।

सवदेशिक सभा एवं प्रादेशीय सभा को आर्थ समाच के किसी भी

आर्म सभासद को हटाने या पदच्युत करने का अधिकार नहीं है क समासद ने उनकी सदस्यता के लिए कमी आवेदन ही नहीं किया, सदस्यता के लिए आवेदन पत्र निर्वारित है और यह किसी निश्चित कार्य सन्त्रज को प्रेक्ति होता है। सर्वोच्च उच्च वालय का स्पष्ट निर्णय है कि किसी व्यक्ति को अपनी सदस्पदा से वही संस्था या संगठन हटा सकता है के लिए उसने आवेदन किया हो। अतः सम्बन्धित व्यवं सम्बन मात्र ही उसे अपनी समाज के जमोग्य मोपित कर सकती है किन्तु एक सुनवामी का अवसार देने के माद कांग्रेस, भागपा आदि अनेश संगठन हैं जिनकी सदस्यक के लिए सपी जिला भारतीय संस्था को संबोधित कर प्रार्वना पत्र देते हैं अस: वे उसे पर्यमुत भी कर सकती हैं) सार्वदेशिक समा वा प्रादेशीय सभा अपनी नियमावली में भले ही ऐस्छ नियम वर्जे न पारित कर लें किन्तु वह अवैथ ही कहलायेगा। यह संस्थार्य बदि किसी आर्थ समस्यद को सदस्यक्ष के अवोग्य पाती हैं तो उन्हें उपत आर्य समाय को यह निर्देशित करन होगा कि वह अमुक व्यक्ति को समान की सदस्यता से पृथक या त्यान का त्रदर्भात का मुक्क था स्वणित करें। नाह दूसने जात है कि स्वन्दितिक का प्राप्तेतीय सभा किसी को फेक्स अपनी बैठक में भ्रम शेमे के सिए अमोन्स चेनित कर दे।

क्रीय, 26 सम्मरी 1935 से एर लार्य संपाच का सदस्य कोई भी ऐसा व्यक्ति पर सकत व यो आर्च समाव के 10 निवमों को मानका का का ठार्च समाव में विषिण धर्मक-शम्बर्धे का प्रवेक इसलिए होने लगा कि वे कार्य समाच से सहानुमूरी रखते ने तो सार्वदेशिक समा के का सब्दे हो गये। आर्थ समस्य के नियम रां॰ दो को छोड़ कन्य नियम सची साम्बन्य वे और नियम संख्यों में भी उसी की उपसना करनी योग्य है" कहा गया है जिसे बन्धन नहीं कहा का सकता का। जतः सर्वदेशिक सभा की एक उपसमिति की बैठक 26 मार्थ 1933 को आर्थ समाच मन्दिर च्चवड़ी बाबार दिल्ली में इस समस्या पर विचारार्थ हुई, और तीन बंटे के गहन विचार विमर्श के भाद आखिर यह तथ कर शिया गया कि किसी अर्थ सम्बन्ध में प्रविष्ट होने के लिए 10 निषमों के साव-साव उन सिद्धान्तों का मानना भी आवश्यक होगा जिन्हें महर्षि दखनन्द ने वेदों के 'आधार पर अपने ग्रन्थों में लिखा है। इस संशोधन के 1935 में स्वीकृत होने के परिजाम स्वरूप आर्य समाज के निवम-उपनिवम में संशोधन कर वह सम्मिलित कर शिष्य गया-''नैं प्रसन्ता पूर्वक आर्य समाज के ठदेश्ये (जैसा की नियमों में वर्णन किये गये हैं) तथा मनतव्यों एवं सिद्धन्तों को (जो बेद के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में लिखे गये हैं) मानता और उसके अनुकूल आकरण स्वीकार करता हूं। मेरा चन आर्थ समाच में लिख लेवें।" इसके स्थीकृत होते ही मूर्वे पूजा को एवं अन्य पर्माधलम्बियों के लिए आर्थ समान की सदस्यता का रास्ता सद्य के लिए बन्द हो वाता है। सार्वदेशिक सभा का यह एक ठाई निर्मय या। किसी मूर्सिप्तक के आर्थ समाच का सदस्य बनने पर प्रतिबन्ध नहीं है सदि यह मूर्ति पूजा को त्याग कर सदस्य बनता है। गदि आज इस नियम का कहाई से पालन कराय जाये तो जो आर्थ सम्परस्ट आर्थ सिद्धानों का आव पूर्णपनः पालन नहीं कर रहे, उन्हें अगले दिन से तमका पालन करने को विवास होता पहेगा। या उन्हें आर्थ समाजों की सदस्यव स्थाननी होगी, अर्थ संस्थाओं पर गैर आर्य समाभियों के कन्ने रोकने का भी एकमात्र कपान नहीं है। आर्थ सम्बन के सदस्य मले ही 'पांच च्यारे ' रह चार्थे किन्तु हो तो वे पक्छे आर्च सम्बन्धी विससी महर्षि एकानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित इस संस्था की गरिमा वर्ध रह सके। हम आर्थ समाज की सदस्य संख्या बद्धाने का प्रसास न करें उसमें नुष्यत्मक सुवार करें। विस दिन इम देश कठोर पन द्रुत सेने इस दिन आर्थ समान में निष्ठावान बन कर सोम वाने सर्वेगे।

सदस्य संख्या श्री निश्चित वर्षेगी।

अन्य एक अन्येत रिक्की और वर्ग है। कोई-कोई प्रादेशीय साम स्वयंत्रीयक बचा के अस्तित्व को ही नकार रही है। अनका करान्त है कि ठनको अपनी निकारकारते है और उसमें उन्होंने सार्वदीतक सभा के निकास को ६९ किनार विश्वा हुआ है। में यह क्यें भूत गर्ने हैं कि आर्य सम्बन्ध के निवार-उपनिवस सर्वदेशिक समा भनावी है और उसमें संकोधन थी कर सकती है। आर्य समाय के नियम-उपनियम में एक पेक्ति के र्राष्ट्रीयन से उन्हार अदं भूर हो सकता है जिस सार्वदेशिक सभा ने नियम पारित किया है या अन्य नियम बन्तये हैं। उनमें वे परिवर्तन भी कर सकती है मेरा सुक्षान है कि प्रत्येक प्रादेशी सभा को सार्वदेशिक के जरितल को स्वीकार करना चाहिए और अनुसासन एवं मर्यादा में रहना सीखन जाडिए। एक सच्चा व्हर्य ऐस्ट कभी कह नहीं सकता। ऐसा वडी कडेगा जिसकी रगो में अञ्चढ रक्त होना। वैसे पाप को पाप न मनने वाले कम ही होते हैं मेरा अपना भत यह भी है कि हम आर्थ समाज के संगठन में सन्मासियों को सर्वोच्य स्थान दें उनका सम्मान करना सीखों वे इमारी पूंची है। अपने मतानेद वा विवाद उन्हें स्तरपंच बनाकर निपटार्वे अदालत में या न्याय सभा में काने से पहले उनकी बाते मानें। सन्यासियों को भी निष्यक्ष एव तबस्य रहकर शहदर्श सन्वासी बनकर आर्थ समाय के संगठन को सशका बनान चाहिए एवं प्रचार को गति देनी चाहिए। सन्धातियों को सार्वदेशिक समा वा प्रादेशीय समा का पद उस समस्र तक स्वीकार भी नहीं करना चाहिए जब तक उनमें विकाद है उनका सर्वसम्बंधि बुनाय न हो। विवाद से दूर रहकर हो वे अपने सम्बान स्वं गरिमा को बन्हवे रख सकते हैं। तभी वे पूष्पगीय भी कड़लायेंगे। अब वह समय आ गया है जब हमारे देश के आर्य सन्यासिकों को आर्य समान के सम्मान की रक्षा के लिए और महर्षि दबानद के सपने को सकार करने के शिष् सभी समाजों के प्रमण पर स्वयं निकल पहुन्त चाहिए इस संकल्प के साम कि वे आर्थ समाय की खोड़ प्रतिष्ठ को पुनः स्थापित करके ही रहेंगे। यदि वे संकल्प कर लें तो आब दवानद के प्रतिविध्य बनकर आर्थ समाव की कामा पलट कर रुकते हैं। इन्हरे सन्यासी बहुत बढ़ी

श्रीक हैं। ईक्पर हमें अरुबुद्धि दे ताकि हम अरुपे अरुपंदे अरुपेद्ध अरुपेदे सहचोग रहां सर्वाच से अपनी विधेमीन सम्बद्धिका सम्म के चर्चना अरुपेद को पूर करने में भी समस्त हों और हम मक्पर किपूर्व महाई एकणन्द सरुपाई को अरुपंद से साधिव होंने हैं।

ओश्म् समानी व आकृतिः सम्बन्धः इत्यानि वः। सम्बन्धस्यु वो भन्ने कवा यः सम्बन्धति॥ अनवाणी में ११ नवस्थर के अक

में किसोरी सिंह जी का एक पत्र

संस्कृत और वेदाध्ययन की अभिनार्यदा

## संस्कृत और वेदाध्ययन एक दसरे के परक हैं

🗅 ले. और क्लास्त्रम पोक्सर, मंत्री सोटामानपुर आर्थ प्रतिनिधि सम्ब यागी शासन्त पत्र संची।

की सनक क्यो ? विषय पर प्रकाशित हुआ था। हार पत्र के प्रत्युक्तर में १६ नवम्बर को ठा० वेदम्बम के और २६ नवम्बर को यमुना प्रसाद सिंह मादन के पत्र में व्यक्त विकारों से मेरी पूर्ण सहमति है । संस्कृत और वेद के सम्बंध में किसोरी सिंह द्वारा व्यक्त विचार वाले बहुत से लोग होंगे पर किशोरी सिंह ने मदि सचमुच यह पत्र लिखा है तो आश्चर्य होना स्वाधाविक है, क्योंकि किशोरी सिंह जी जमशेदपुर की सोनारी आर्य समाज के शासा के प्रधान है। आर्थ समाज के संस्थापक स्थामी दयानन्द की सकसे बढ़ी देन जवाहर लाल नेहरू की दण्टि में यह है कि उन्होंने वेदों की ओर लौटो का भरा प्रदान किया था। आर्थ समाव कोई नया मत या सम्प्रदाय नहीं है बर्ल्क वेद में लिखी गयी चलें को स्वतः प्रमाप मानकर वेदों की प्रकारक सस्या है। अर्थ समाज के दस नियमों में से श्रीसरे निवम के अनुसार चेद सब सत्य विकाओं की पुस्तक है। वेद को प्रवना-प्रवन्त सुनन्त-सुन्तक सभी आयों का परम धर्म है। चुकि संस्कृत में लिखा हुआ है जत: सेस्कृत और चेदाव्ययन एक दूसरे के पूरक हैं। यदि सस्कृत और वेदाञ्चयन के सम्बंध में आर्थ समाज की मान्यता से किसोरी सिंह सक्तमत नहीं हैं तो न हों पर एक आर्थ सम्बंध के प्रचान होने पर उनसे यह अवस्य पूछा कामा चाहिए कि यदि उनके विचार ऐसे ही हैं तो किन स्वायों के बसीभूत होकर ऐसी संस्था से वे विपके हुए हैं? किशोरी सिंह के सदर विचार कले व्यक्ति को नैरिकता के गते स्वयं आर्य समाज से पुणक हो जरन चाहिए। यदि वे स्वे**च्छा से** त्वाग पत्र देकर पूर्वक न हों तो आर्थ सम्बन्ध सोनारी के सदस्यों से मेस व्याप्तत है कि आर्थ समाज के उप निवमों में दिये गये प्राथमानों के अंतर्गत उन पर अविश्वास प्रस्ताय लाकर ठन्हें प्रधान पद के साथ-साथ आर्थ समाज की सदस्यता से भी भुषत कर हैं, क्वोंकि वेद्यध्ययन के संबंध में ऐसे विकार

किसोरी सिंह वैसे लोगों को क्षस्य का बाक्कर हार्ट अटैक हो जानेगा कि न केवल धारत में बरिक विरुव में बहुत से देशों के विरुविध्यालयें में संस्कृत का अस्वान और अस्त्रापन का विशेष पूर्वत्र है।

रताने कला व्यक्ति को आर्थ सम्बन्ध

का सहायक सदस्य वनने के भी सर्वया

अयोग्य है।

क्योंकि मानव चारा का उरकृष्ट और प्राचीनतम बालुमध संस्कृत भाषा में ही उपसम्भ है। १६वीं सताब्दी में यूरोपियन विद्वानों ने संस्कृत अध्ययन कर इसके श्रेष्ठ साहित्य की जानकारी शेष विस्व को दी। फलतः संस्कृत की लोकप्रियश निस्प प्रति बक्षती का रही है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइंसटाइन के निभी पुस्तकालय में संस्कृत के कई प्रमुख प्रंथ विधासन थे। वे इनका स्वाध्याय करते थे। स्त्रय ठनके कथानुसार ठन्हें संस्कृत ग्रंबों के अध्ययन से वैज्ञानिक अनुसंखनों में मदद मिलती थी। कुछ निकार लोगों का कथन है कि जर में सस्कृत व्यवस्था है उतनी भारत में भी नहीं है। बर्मनी रेडियो टॉवेशे वेले विरूप का पहला रेडियो सरम्बन वा, विसमे १६६७ ई० में संस्कृत में 'संस्कृति' शीर्वक से प्रस्कृत करना प्रारम किया। आफाशवाणी ने १६७४ ई॰ में प्रतिदिन पांच मिनट का प्रसारण करना प्रशंभ किया। पाठला श्रीम नामक एक वर्मन प्राच्चविद् विद्वान ने वदों और भारतीय स्ट्रहित्य पर मौलिक कार्य किया, फलत: १९८८ ई० में वन्हें ३ लाख ६० हचार खलर क क्योटो पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस पुरस्कार को चापान का नोवेल

पुरस्कार माना जाता है।

संस्कृत अध्ययन की अवस्यकत और वेदों में विज्ञान विषय पर बहत कुक लिखा का सकता है। पर इस स्तम्भ में स्थानभाव के कारण अधिक लिखना सम्प्रति प्रासंगिक प्रतीत नहीं होता है। फिर भी करों बेदों में वर्तमान विज्ञान की एक भ्रालक देखें ऋग्वेद (१०/७२/४) के जनुसार पृथ्वी सूर्य से उत्पन होती है । ऋग्वेद (१/३४/२) में तीन कर एव तीन स्तम्भ वाले ऐसे विमान, का वर्षन है को तीन दिन, तीन एठ में फान की पात्र कर संगत है। ऋगेद (१/११६/१५) में जल्प विकित्स इस दूरी हुई रांग (पैर) समाने का वर्ण है तथा ऋग्वेद (१/११६/१६) में नेत्र की शरूप विकित्स का वर्णन है। जनवंत्रेद (१०/८/३१) के अनुसार 'अधि' चमक पदार्थ के कारन पत्रे हरे दिखते हैं, को अंग्रेजी सन्द कलेरोजिल का सुबक है। अवनीद (१४/१/) एवं बचुवेंद (२३/१०) में कहा गया है कि चंद्रम, सर्व से प्रथातित होता है। यबुर्वेद (१२/४१) के अनुसार सूर्व आकर्षक समित से लोगों। उन्हों को

वर्तमान रखता है। वसकि वसुबँद (६/६) के जनुसार पृथ्वी अपनी दो

गतियों के साथ सूर्व की परिक्रमा करती है। सामवेद पूर्वाधिका (६/५/ १३) में कहा गया है कि सूर्व के प्रकाश में सात रगों की किरणें है और सामवेद के ही पूर्वार्थका (१/ २/९: में सूर्व किरमें से अगि प्रदेश्य करने की बाद कही गयी है, वो सौर कर्जा के उपयोग की ओर संकेत करता है। भारद्वाच ऋषि कृत यंत्र

सर्वस्थम के बैमानिकी प्रकरण में

(पृन्ठ 2 का सेव)

यदि कर्वदार का कर्वदाता स्वर्गवास हो जाये तो, या तो कर्जदार कडेगा कि मैंने कर्जा लिया ही न बाः यायन्ड कडेगा कि मैंने तो उस के जीवन काल में लीटा दिया था। यदि उसके कर्जे का किसी अन्य व्यक्ति को ज्ञान न हो वो वह चुप्पी ही साथ लेगा और बस पैसा हज्म। कृतज्ञता की भावना तो दूर आजकल तो लोग कर्जा वापिसे ही नहीं करना बाहते। मानवता की आर्यत्व ही सब से बड़ी पहचान है कि व्यक्ति में कृतज्ञता की भावना हो और कर्जा उतारने में सदैव तत्पर रहे।

कई बार लोग बाजार जाते

समय रूपाल में गाँठ बांध लेते हैं और ऐसा इसलिए करते हैं कि उन्हें बाबार से कुछ लाना होता है। कहीं लाना भूत न जायें। रुमाल में गांठ बांधते हैं ताकि वह गांठ देख कर उन्हें याद आ जाये कि बाजार से अमुक बस्तु लागी थी। मानव को यह याद कराने के लिए कि वुझ पर कुछ कर्ने हैं, 🗺 उतारने हैं यद के पर वजोपवीत पहना दि**वा** जाता है। वह यज्ञोपबीत उसे सदा याद दिलाता है कि मानव तुझ पर भारी ऋण है। मां का, पिता का, आचार्य का जो कि तुमने उतारना है। यञ्जोपवीत में तीन भागे होते हैं। पहला भागा याद कराता है कि माता के ऋण का, दूसरा याद दिलाता है पिता के ऋष का, और तीसरा याद दिलाता है आधार्य के ऋज का । इसलिए यहोपवीत पहन कर ही बज पर बैठा बाता है और अब्रुटि दी बाती है। बढ़ स्वयं में एक परीपकार है। परम पिछ परमाल्मा के प्रक्रि कराजस की भावना है:--

ओम् बद्धोपर्वतं यस्य पवित्रम् प्रजापतेर्यसङ्खं पुरस्तान्। आयुष्यमप्रयं प्रति मृज्यं शुधं यक्नोपकतं चलमस्तु तेजः ।।

अर्थात्-वज्ञोपवीतः परम पंक्षित्र है नवींकि परम एवित्र वज रूप प्रभु के समीप पहुचने का साधन बहीन जीवन सर्वात् श्रेणतम कर्म का प्रतीक है। यह को प्रवापति ने सुष्टि के प्रसम्भ में मानव के साथ उत्पन्न किया । क पवित्र सुत्र निर्मल निकाप तक

विमान के ऊपर सौर वत्र लगाने का निर्देश है। (विमानस्योपरि सुर्यस्य ज्ञकरपाकर्पन पंचरम)।

उपर्यंका प्रमाणों की उपस्थित मे वेदों को सामान्य पुस्तक मानश किशोरी सिंह जैसे विद्वानों से ही सम्मव है। अंत में मैं यह कहना वाहंगा कि इन विक्यों पर पर्वाग्रह से मुक्त होकर विचार किया जान चाहिए

उन्नति की दिशा में निरन्तर अग्रसर होने वाले जीवन की ओर मानव को प्रेरित करके त्रिविध बल तथा ओज की खुद्धि में सहायक होता है। और फिर-

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोधनकुष्ममि । हे बालक । ये यत्र रूप भगवान

के सम्ट यञ्ज का स्मरण कराने के लिये में तुही यह तीन सूत्र वाला यङ्गोपवीत धारण कराता हू। यह तीन सुत्र प्रभु की वाणी बंद के प्रतीक हैं।

यह यजीपवीत खद्याचय अवस्था में पहनाया जाता है। जिस का विधिवत संस्कार होना चाहिए जिस को उपनयन संस्कार कहते हैं। इस की महत्ता के बारे में बताया बाये कि यह क्यों पहनाया जा रहा है। तीनों ऋणों के बारे में बताया जाये कि बालक तुझ पर मां का, पिता का, एवं आचार्य का ऋण है। माता ने तुझे जन्म दिया, पिता ने पाला, आचार्य कुन्ने शिक्षित कर रहा

मनुष्य ब्रह्मचर्य अवस्था में यह कर्जा लेता है। गृहस्य आश्रम में इस कर्जे का प्रयोग करता है। इस से लाभ ठठाता है। इस से अपनी जीवन नौका को चलाता है। यह बल तेज इत्यादि का पात्र बनता है। और फिर वानप्रस्थ में इस कर्जे को चकाता है। वापिस अदा करने के परचात सब परनोट या कर्ज की लिखतें फाड दी जाती है। उसी प्रकार वय पनुष्य वानप्रस्य से सन्पास में प्रवेश करता है अर्थात जब सद ऋगों से मुक्त हो जाता है तन यजीपकीत के ताने खेळ दिये वाते हैं। इसलिये सन्वासियां के कभी भी यजोपकीत नहीं होता। इस ज्जोपवीत का पहनना अनिवार्य है तकि यह हमें सदा यद दिलाता रहे कि ए मनव स्टेर सिर पर कर्वे हैं तुने उन्हें उतारना है । तुने आर्थ बनना है। तुने अपनी पहचान पर पूरा उत्तरना है। न मुख माता पिता और अपने आजानों के उपकारों को। यह ऋण पूरे के पूरे तो चुकाये नहीं जा सकते पर भुष्ठ होने की बेच्दा तो कर । पावना तो मन में रकः। वस वती वेरी पारवान है।

### आर्य समाज कोटकपुरा में वेद प्रचार सप्ताह व मारात्री महायहा सम्पन्न

आर्य समान बेद मदिर देवराज वी बुद्धिराना कोबाध्यक्ष काटकपुरा मे 19 4 99 से 25 4 99 अहार्य सम्बन्ध वेद मन्दिर कोटकपुरा तक वेद प्रचार सप्ताह एवम् गायत्री के चर पर हक्तवज्ञ भजन व महायत बढी घुमचाम व श्रद्धा से प्रवचन हुए जिसमें भारी संख्या मे सम्पल हआ

19 4 99 से 24 4 📟 तक रात्रि में 830 से 1030 तक भान्य भी परोसा गया। सभी ने अति सत्यपाल जी पश्चिक भवनीपदेशक श्री सन्दर लाल सास्त्री जी एवम महामा ग्रेम प्रकाश धूरा वालो ने प्रवचन किया मान्य सत्यपाल जी पथिक के भजन सनकर लोग मृग्ध हा जाते थे। दो दिन के बाद श्री सन्दर लाल जी शास्त्री भी आ गये थे तब महात्मा प्रेम प्रकाश जी व सन्दर लाल जी सारवा के प्रवचन सुन कर लोग भारी संख्या मे आने लग पडे। प्रात सवा 6 से 7 बजे तक महात्या प्रेम प्रकाश जी ध्यान शिविर भी लगाया करते थे। लोगो में भवनों व प्रवचन की सनने की इच्छा बनी रहती थी। 20.4 99 प्रात सादे 8 से माडे 10 बजे तक हा

नर नारी सम्मिलित हुए। अन्त मे सभी आए हुए नर नारी को मोजन स्वादिष्ट भोजन यहण करके हरः देवरान जी व उनकी धर्मपरनी श्रीमति कमला बढिराजा जो कि अस्यन्त ब्रह्मल व मिलनसार है का धन्यवाद किया। उनके लडके विशेष ने भी एक भनन बोला था जिसकी सभी ने अत्यन्त प्रशसा की 21 4 99 को श्री विजय कुमार जी बासल के घर भी प्रात साढ़े 8 से साढ़े दस बजे तक बढ़ी श्रद्धा से इसन बड़ व भवनीपटेश व प्रवचन किए गए वहा भी भारी सख्या मे लोग आए। अत्यन्त श्रद्धा से सभी ने श्री विजय सासल जी का चन्यवाद किया। 22 4 99 से पात १४० से 10 ४० बड़ो तक

गावत्री यत्र भवन प्रवचन होते रहे। 25 4 99 को प्रात 8 सने 8 दम्पति हवनकण्डों पर बैठे व यह के सहार भान्य सत्यपाल जी पश्चिक ने सवा 10 बने तक हवन यज्ञ गायत्री महायत्र की पूर्णांद्वति करवाई। विसमें सम्मिलत लोगा ने अति **ब्रद्धा** से बैठ कर यह किया व प्रक्चन सुना। फरीदकोट से आर्थ समास के प्रभान की मन्त्री की व अन्य अधिकारियों के साथ स्ती आर्य समाज फरीदकोट की प्रमाना व सदस्य भी आई थी। मोगा से श्री जगदीश जी अपनी बेटी व अन्य सदस्यों के साथ पंधारे थे। पंजनी व प्रवचनो को अति प्रसन्नता से लोगो ने सुना व प्रश्तसा की। देसी भी के इलवे का प्रसाद बाटा गया। हबन यज्ञ गायत्री महायज्ञ पूर्णाहुति में भाग लेने वाले बवमानों ने सपलीक यज्ञ के ब्रह्म श्री सत्यपाल जी पश्चिक श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी के आगे नत गस्तक होकर आशीर्वाद लिया व आर्थ समाज वेद मन्दिर

कोटकपरा की तरफ से कोणध्यक्ष डा देवराज जी हारा भेट भी प्राप्त की (पुस्तकों का सैट ऋषि दंशनन्द बी के चित्र वाला व महापठची ाना कैलेंडर) मच संचालन श्री म - न्याल मेंगी जी ने किया। अन्त में आर्थ समाज बेद मन्दिर कोटकपूर के सगठन भन्त्री श्रा लित जी बचाज ने आए ४५ सभी विद्वानों व लोगों का अदि श्रद्धा से धन्यवाद किया। उसके बाद देशी भी से बना ऋषि लगर बढ़ी ब्रद्धा से सभी ने प्रष्टण किया। लगर परेसने में प्रधान श्री रविराज दिक्या उपप्रधान श्री वीरेन्द्र सर्मा मैनेजर त्री रिकट्र कुमार किदाबा श्री शादी लाल व दसरे सदस्यों के साथ स्कूल की प्रिसीपल श्रीमति सत्या मकेकड जीव दूसरी सभी **अध्यापिकाओ** ने भाग लिया। सभी बन्धओं को एक एक कैलण्डर आर्थ समाज वेद मन्दिर की तरफ से भेट स्वरूप दिया गया।

महिना पाल में मी मनी

**फामसा हारद्वार** गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त कोलस्ट्रोल रहित

अपन स्वास्त्र के जिए हरिद्वार ( उत्तर प्रदेश ) की औषधियों का सेवन करें।



गानवा कार्यालय :

श्री अधिको कुमार वी सम्मं एकवेकेट प्रमाननी सम्मदक हात क्षत्र हिन्द प्रिटिंग प्रैश्नवेशिकेट प्रिटर्क कारूनर से मुद्रित होनर सार्व समीध कार्यर गठदश्च भवन चीवा किञ्चलंपरा चालन्यर से असकी स्थापिनी नार्च अदिनिधि सभा पत्तान के लिए प्रकासित हुआ ।



वर्ष 50 अंक 7, 27 वैज्ञाख संम्यम् 2056 तदनुसार 13/16 मई 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक जुल्क 50 रुपये आबीवन 500 रुपये

## पार्व समाज आने बहाना है :

ते**ः भी ठॉ॰ ग्रोप निवास्त्रकः विस्त** 

वर्तमान आर्व समाज के संगठनों. सफाओं, संस्थाओं और समाव मन्दिरों की, वो वधार्य स्थिति है। जिस स्टब्स के विवाद, समस्यार्थं तथा चुनावी ठलाइनें सामने असरही हैं। जिस तरह के लोग वेजी से अधिकारी धनकर करने कर रहे हैं। एक बार अधिकारी बनकर हटने का नाम नहीं लेते। उन्हें देख, सुन तथा वानकर, वैदिक विचारधारा में आस्था रखने और ऋषिभवर व्यक्ति आज दसी. चिन्तित एवं परेतान है। कछ लोग, निराश. इसांस तथा उपराम डोकर वटस्थ हो रहे हैं। उनकी महनसिकता यह बनती वा रही है कि अब आर्व समाज का सुधार, उत्पान तथा प्रभावी संगठन संभव नकर नहीं आस है। इसीलिए जलसे जलुस सर्त्यांगी एवं कार्यक्रमी में उपस्थित षटती व्य रही है। किसी संगठन का वास्तविक मुल्यांकन होता है-विचारधारा का किवना दूसरों पर प्रमाव पड़ा है ? किराने लोग हमारे साथ जुड़े हैं ? कितनों ने हमारे सिद्धान्तों को अपनाशा है ? कितनों ने संगठन की सहायता स्वीकार की है ? शार्मिक, सामाजिक, राबनैकिक बेत्र में हमारा कितना महत्व, सम्मान और मल्बांकन है। कितना संगठन को रेखाँकित किया जाता है। इस अपने घर में बैठकर कितना भी और मचा लें। हमने से किया ? हमने इतने स्कूल खोल दिये असली मूल्यांकन तो जनता संगठन शवित से करती है। संगठन की दृष्टि से आब आर्व सपाब अन्दर और **बाहर** दोनों दुष्टियों से सहस्राम रहा है ?

चारों ओर स्वार्थ, पदलिपसा, गहंकार तथा कब्जे की बदानेयत मलकरी हो रही है। जो आर्थ समाच ऋषि पथरीं, आर्थ समाच के

की जीवन्त चेतना और प्रेरण की शक्ति था। यह आब हमारे आकाभ. स्वार्थ तया कर्मों के कारण बंट व विखर रहा है। कोई संभालने वाला नकर नहीं आता। किसी ने समा किसी ने ट्रस्ट, किसी ने संस्थान, किसी ने अन्नम, किसी ने पुरुकल, किसी ने स्कल, किसी ने परिषद, किसी ने कुछ, तो किसी ने कुछ पकड लिया है। अपने कब्बे और व्यक्ति बैठा दिये हैं। सो बहा बैठ गया किलने का न्द्रम नहीं लेखा उससे पद लाभ, स्वार्च, भान, सख सुविषा आदि ले रहा है।इसी कारण झगडे, विवाद तथा समस्यार्थे उत्पन्न हो रही हैं। जब एक व्यक्ति किसी एक समा, संगठन, संस्था टस्ट आदि पर काषिक हो वाता है। फिर उससे जो लाम, सुविधा, अधिकार, मान, सम्मान आदि प्राप्त करता है। इन सब चीजों को देखकर दूसरी का मन ललवाता है। यहां से झगडे. विवाद और उलाभने आरम्भ होती हैं। जो पर, अधिकार, सुख सुविधा व सम्मान में बैठा है, वह कोहना नहीं चाहता है भाहर का व्यक्ति. उस पद से प्राप्त सामन सविभाओं को पाना चाहता है। यह सगहाँ और परेशानी का मूल कारण है। समुचे आर्य जगत की सभा, संगठनों, संस्थाओं, गुरुकुली, व्यत्रमी आदि में ये प्रवृति फैली हुई है। इसी कारण इम गुणात्मक, रचनात्मक एवं प्रमावात्मक दक्टि से पिछड सो हैं। जनता से कट रहे हैं। मेरा फिसी व्यक्ति, संस्थ, संगठन आदि पर दोक्सरेपच, गटकानी एवं पार्टीकावी की दर्फि से टीका टिप्पकी करने का रंजगात भी उद्देश्य नहीं है। मैं तो वो देखा, धुन व अनुपन कर रहा हं । उन्हीं सत्य कमी के आधार पर

भावनाशील अनुसविबाँ को अगाह, सचेत तथा निवेदन कर रहा है। **ढ**तो ! बागो ≀ संभलो । कछ मिल बैठकर विचार करो। हम कहाँ जा रहे हैं ? बंगा ऋषि ने इसीलिए जो वर्तमान में सर्वत्र हो रहा है उसी के लिए आर्थ समाज बनाया था। इसीलिए बहर पिया था। हम अतने वाली पीढ़ी और संसार को क्या विरास्त तमा वसीमत देंगे। बंधा हम कुछ ऐसा कर रहे हैं. जिसमें त्याग, बलिदान, सेवा, परोपकार आदि की प्रेरणा चागुत हो। दुःख और अस्वर्ष है कि कई समा संगठनों, संस्थाओं, ट्रस्टों, परिषदीं आदि पर सालों से लोग चिपके बैठे हैं ? कार्य नगम्य है। ऋरीर साथ नहीं देखा। फिर भी छोडने का नाम नहीं लेते। नैठिक पतन की भी पराकास्त्र है कि समें प्रचार, वेद प्रचार, दान और चन्दे के पैसे को खाते. हकारते. इडपरे और अपने कपर खर्च करते हुए लग्जा तथा आत्म ग्लानि नहीं आदी है। पाप बोध की सोच उत्पन नहीं होती है ऐसे लोगों के आचरण तथा करनी और कथनी के अन्तर को, जब दसरे लोग देखते हैं तो वे तटस्य व मृणाभाव मन में ले आते हैं। हमसे ज़ड़ने की बखाय कट जाते हैं।

वर्तमान आर्य समाज में एक त्रासदी यह भी हो रही है कि कोई किसी की न मानता है और न सुनता है। न अनुसासन है, न व्यवस्था है। नियम केवल बोलने और लिखने मात्र के लिए सरबित है। कोई पालना नहीं करता। अपनी-अपनी रूपली, अपनी-अपना राग की उमित चरितार्थ हो रही है। इसी कारण कर्मकाण्ड, सिद्धान्त तथा नियम व्यवस्था में एक मति व एक रूपल कड़ी नहीं है। जो भी **उठता है, अयना संगठन, संस्था,** ट्रस्ट, परिषंद आश्रम आदि बनाकर धन वल और जनवल को बढ़ाने

लगता है। सब अपने-अपने आश्रमों, संस्थाओं, ट्रस्टों आदि के रास्ते लोगो को दिखा रहे हैं। दयानन्द और अर्थ समाज के रास्ते की किसी को चिन्ता, बैचेनी व परेशानी नहीं हो रही है। इसीलिए बढ़ी तेजी से आर्ष समाज में भी महन्त, महाराज, सन्व मुरु ज्ञानी आदि बनने व फैलने लगे हैं। व्यापार दृष्टि तेजी पकड़ती जा रही है। ऋषि ने जिन बातों का विरोध किया वा, वे ही बार्वे तेजी से फैल रही है। आर्थ समान पन: पौराणिकता की चपेट में आ रहा 🕏। आर्व समाज ने भवन, स्कूल, बारात घर, गुरुकुल संस्थाएं आदि वे बना लिए। इन संस्थाओं को चलाने वाले ईमानदार, सच्चरित्र, क्टर सिद्धान्तवारी दवाभन्ती सेवामावी लोग न बना सका। वहा आर्य समाज पिछक् गया। इसीलिए गैर आर्थ चरित्र वाले लोग गिद्ध दृष्टि से इन पर कब्बे करने के लिए बेताब हो रहे हैं। यदि आर्य समाय को आपने न संभाता तो भविष्य निराशाजनक और अन्धकार में होगा। मैं निराश-हताश की बात नहीं कर रहा हूं। मैं तो सचेत और जागरूक होने के लिए कह रहा हूं। ऋषि ने जो सत्यज्ञान का दीया जलाया या। उसे बुझ्याने के वहयन्त्र हो रहे हैं। हमारी पहचान, स्वरूप और सिद्धानों को मिटाने के लिए लोग, हमारे ही लोगों को प्रसोधन देकर वोड़ रहे हैं। अलग कर रहे हैं। यदि ऋषि दयानन्द और आर्थ समाब के अस्तित्व, स्वरूप सिद्धान्त तथा परम्परा को बचाना है। रक्षा करनी है। आने वाले समय को प्रेरक धरोहर सौंपनी है, तो ईमानदारी, त्यागभाव तथा दुहता से मिल बैठकर सोचना होगा। आत्म निरीक्षण करना होगा। दोष और दुवंसाओं को हराना होगा। सिद्धान्तें से सम्बर्धीत किसी कीमत पर नहीं करना होगा।

(शैष पृष्ठ २ पर)

#### इक्षेण्ड देशीय एक कर्मकाण्ड एवंगि आर्ट-पं॰ हेवी प्रसाद मनवाम क्स

दान को धर्मका प्रथम सकस्य बताया है दो वर्ष एवं बना मैं वेट प्रचारार्थ हालैण्ड गया या तो मुझे 42 वर्षीय पं देखीप्रसाट धगवान दत्त से मिलने का अवसर मिला। 25 सितम्बर 1996 को हालैण्ड के नगर राटरहम में पं देवनाराया शमधन के यह पर एक पारिवारिक सत्संग किया गया बा। यहीं पर मेरी भेंट तकत पंदेवीप्रसाद से हुई। यज के प्रति उनमें असीम ब्रद्धा है. उसका प्रमाण मझे तब मिला जब मैंने उनके निवास की चौथी मंजिल पर यज्ञशाला देखी। वे नित्य पनि यस करते हैं और उनकी गृहणी श्रीमती विद्यावती भी अगिनहोत्र में जनका साथ देती हैं। टैनिक यत्र का यह सिलसिला उन्होंने 1984 में आरम्भ किया वा जो अनकात चल रहा है। इस बज कका के धर्म से काजल बनी दीवारें इस बात की साक्षी हैं कि इस घर के स्वामी की यत्र में कितनी निष्ठा है । समय-समय पर उन्होंने अन्यत्र वहे बहे वज्ञों का आयोजन किया। सटरहम के हिन्दुस्तान कल्चरल सेटर विश्वत रांगा मन्दिर के सभा कथ में उन्होंने अनेक बार बहद यजों का आयोजन किया है। मेरे उस नगर में रहने पर पं० देवी प्रसाद के संयोजन में ही त्रिदिवसीय धर्म प्रचार का कार्यक्रम रखा गया जिसमें पर्वाप्त सख्या में स्त्री पुरुष

मैंने हालैण्ड के जिन आर्थ फर्बों के धरों में सन्दर परतकालय देखें उनमें पं॰ देवी प्रसाद का जाम अन्यतम है। इसी प्रकार के बहद पस्तक संग्रह राटरहम के पै॰ देव नारायण शरभवन, एम्सटईम के ५० सन्दर प्रसाद रूपधन तथा राजधानी दि हेग (देनहास्त) में हिन्दू सांस्कृतिक केन्द्र के संचालक हा. के वहां भी है। ए० देवीप्रसाद ने अपने परतकालय में वेद. उपनिषद. रहंन, आर्थ विद्वानों के ग्रन्वादि का सन्दर संग्रह किया है। वे स्वाध्याय

तपस्थित थे।

🗆 ले: भी भरावी लाल की मानुविध क्षमा वानकाव कोरापुर उपनिषद में यज्ञ, अध्ययन और भें रुचि रखते हैं और बब भी उन्हें भारत बाने का अवसर मिलता है वे प्रन्य क्रम करना नहीं भूलते। र्प॰ देवी प्रसाद का जन्म सुरीनाम देश में 6 सिवम्बर 1954 को श्री रवीन्त्रनाम तथा होपदी देवी के यहां हुआ था। जब सरीनाम देश में राजनैतिक परिवर्तन आया तो 1975 में ये हालैण्ड चले आये। श्रीमती विद्यावती से इनका विवाह 1977 में हुआ। देखी प्रसाद दम्पति की तीन सन्तानें (2 पत्रियां गागीं तथा प्रजा रवं एक पत्र विद्यासागर) हैं। उन्होंने अपने बच्चों के सारे संस्कार वैदिक पद्धति से कराने हैं। 1983 में जब राटरहम की आर्व समान का मवन खरीदा गया तो उसमें रंगाई, पुलाई एवं वेद मंत्र लेखन आदि का कार्य पंo देवी प्रसाद ने बडी तत्परता से किया। इसी वर्ष अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी में भी इन्होंने सपत्नीक भाग लिया। सटरहम नगर को उक्त गंगा मन्दिर में साप्ताहिक सरकत पाठशाला चलती है। इसके संचालन में उनकी मुख्य भूमिका है। डालैण्ड जाने व्यले सभी भारतीय आर्थ विद्वानों के कार्यक्रम पं० भगवान दत्त द्वारा आयोजित किये जाते हैं। वे स्वगृह पर भी इन विद्वानों को आमंत्रित कर प्रचार की व्यवस्था करते हैं तथा हालैएस के अन्य नगरों में जब-जब प्रचार कार्यक्रम होते हैं तो ये अपनी कार में वहां जाते

> सामवेटी पं० विजयप्रकाश शास्त्री **सथा पं० नरदेव आर्व तीन पारतीय** आर्य युवक स्थामी रूप से रह रहे हैं और उत्तरी बरोप के इस लब देश में आर्थ धर्म तथा वैदिक संस्कृति का प्रचार करने में लगे हैं। पं॰ सामवेदी राज्यसम् में रहते हैं. विकास सामनी ने लेवरदीन नाम नगर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया है जब कि एं० भरदेव आयं राजधानी दिव्रंग में रह कर धर्म प्रचार में संलग्न हैं। इन तीनों को पं॰ देवी प्रसाद का पर्ण सहयोग प्राप्त है। पारत से हालैण्ड कालेणों में वैदिक विधारधारा और

हैं और उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

भाज हालैण्ड में पं॰ ओम प्रवस्त

की कड़ पर नवे आधार्व शरिदेव र्पं वर्णपत्त, हा० वर्षेन्द्र आसी. क्षेत्र संस्थात स्थेत तथ प्रन पीतिला के लेखक को पं- देवी प्रसाद का सानिष्य और समर्थन निरन्तर प्राप्त होता रहा। मेरी पुस्तक बजुर्वेदीय अध्यात्मक सतक के प्रकारत के लिए भी उन्होंने एक अस्त्री राजि प्रदान की थी।

पं॰ देवी प्रसाद हालैय्ड के विद्युत विधान के एक ठच्च पद पर कार्यरत हैं। अपने शासकीय एवं जीविका कार्यों से निवस होने के परवात वे अपना सारा समय

अपूर्व प्राप्तक की भी के हैं। प्राप्ति उन्होंने हारीण्ड का सर्वाधिक कर्मत परकार्यी, कागन एवं निश्तवान, अर्जा समाबी कहा बावे तो अरक्षित नहीं होगी। भारत की ही मांति हालण्ड के जार्व और खार्च प्रस्थारों परस्था के मतभेदों और वैमनस्थ से ग्रस्ति हैं। यदि तस टेन के समस्त आर्थ र्पं० देखी प्रसाद वैसे बागकक तथा सिद्धान्तनिष्ठ आर्य परुष का नेतल स्वीकार करें तो इस देश में वैदिक षर्म तथा आर्थ समाब का सर्वाधिक

भाषणबाजी बहुत हो चुकी। अब तो करके दिखाना होगा। खोई हुई विश्वसनीयता तथा स्तरा को पनः स्थापित करना होगा। तथी आर्य समाज अपने सत्यरूप में जीविश रहेगाः अपने सम्मान, गौरव, अकर्षण एवं प्रेरणा को प्राप्त होगा। निम्न सुझाव तुरन्त ईमानदारी से करणीय है।

- 1. आर्य समाच का चुनावी हांचा प्रजातन्त्रिक है। जो कि स्वार्थ, पदिलप्सा और लोभ के कारण चरमरा गया है। इट कर विखर रहा है। उसे कुरन्त कठोरता से समारना होगा। मजबूती से लागू करना होगा:
- 2 एक छपवित, एक पद. अधिक से अधिक तीन साल। जो कुछ करना और कर्चव्य दिखाना है। इसी समय में दिला ले। इसके बाद दसरे को अवसर दिया जाने। इसमें थाई, प्रतीजा, परिवार गट आदि को दर रखा बाये। वो तीन साल के बाद पद न छोड़े, उसे बेर्डमन करार दिया जावे। सामाजिक भर्त्सना की जाये। अनुशासनात्मक कठोर कार्यवाही की खाये। इससे आर्थ समाव में एक नई लहर
- 3. वेद प्रचार को सर्वोपिर प्रमक्तव दी काये। विद्यान, परोहित, उपदेशक, पजनोपदेशक आदि की वैवार करने को प्रमुख्य दी जाये। प्रत्येक प्रान्तीय सभा ठाइमी उपदेशक विद्यालय चलाये। विश्वमें उचित रहन-सहन के सामन हों।

उत्साह व कार्य होगा।

समस्त गुरुक्कों, स्कृती,

(पन्छ 1 का शेष) मिसनरी भावना को प्रमुखता दी जाये। वे ही स्थान है, जहां आर्थ विचारधारा के लोग बनाये जाते हैं। संस्कार दिये आते हैं। यदि गुरुकल और डीएवी स्कूल कालेब ईमानदारी से आर्थ समाजी विचार फैलावें तो बड़ा कार्य हो सकता है। हवारों युवक आर्य समाज को मिल सकते हैं।

प्रचार सम्भव है।

- 5 वितने भी आश्रम, संस्थावें. संगठन, टस्ट, संस्थान आदि हैं और जितने भी स्वर्थभ नेता महाराज. विद्वान सन्धासी आदि हैं। जिन्होंने अपने स्वतन्त्र संगठन बना रखे हैं उन्हें सर्वोच्च संगठन से बुढ़ने के लिए बाध्व किया जाये। आचार सीता का कतोरता से पालन हो
- ८ अर्थ समाज अपने विद्यानों सन्यासियों, अपदेशकों और कार्यकर्ताओं को सभाले। उनका मान, सम्मान, सविधा साधन आदि का प्रबन्ध करे। विद्वान भी अपनी चारित्रिक गरिमा और आदर्श का सदा ध्यान रखें। आज आर्य समाज में दोनों पर्कों से भूल हो रही है।

आब आर्थ समाज को जनत से जुड़ने की वरूरत है। वर्तमान नीवन जगत की समस्याओं के समाधान में सहयोगी बनना होगा। समाज मन्दिरों के कार्यक्रमों की प्रभावपर्व प्रेरक एवं आकर्षक बनाने होंगे। समाब मन्दिरों को विवाद व जगडों से अलग करना होता।

उब्द करों का ईमानदारी व कठोरवा से पालन किया बाथे तो निश्चम ही आर्थ समानी आने सम्पादकीय...हर



हमारे देश में पिछले कई वर्षों से राजनीतिक अस्विरता बनी हुई है क्वींकि हमारे देश में अनेकों राजनीतिक फार्टियां बन गई हैं। हमारे देश की जनता भिन्न-भिन्न पार्टियों के उप्पीदकारों को अपना वोट देकर मकान बना देती है। किसी भी तक तक्षनीतिक करी को इस कारण से बहुमत प्राप्त नहीं होता। गत चुनाव में भी ऐसा ही हुआ था जिसमें भाजपा को सब से अधिक सीटें मिली थी और भाजपा ने फिर छोटी-होरी कर राजनीतिक पार्टियों को अपने साथ मिला कर अपना बहरत सिद्ध किया था किससे भावपा की सरकार बन पाई थी। इससे पर्व भी को चनाव हमारे देश में हुए थे, उनमें भी भाजपा को सब से अधिक सीटें मिलीं थीं, परन्तु भाजपा अपना बहुमत सिद्ध न कर सकी थी और अटल बिहारी थाजपेयी को जिन्हें प्रधानमंत्री बनाया गया था. बहमत सिद्ध न होने पर त्यागपत्र देना पडा था। इसके पश्चात कांग्रेस के सहयोग से तीसरे मोर्चे ने अपना बहमत सिद्ध किया और श्री एव डी. देवेगौडा को भारत का प्रधानमंत्री बनाया था परन्त भी एवं हो। देवेगौडा की सरकार भी पूरी तरह से न चल सकी और कांग्रेस के हस्ताक्षेप से ही श्री एस ही देवेगौडा को प्रधानमंत्री पद से हटाया गया और उसके पश्चात श्री इन्द्र कमार जी गजराल को फिर कांग्रेस के सहयोग से प्रधानमंत्री बनाया गया परन्तु श्री इन्द्र कुमार गुजराल की सरकार भी थोडे समय तक चल कर काग्रेस के इस्ताक्षेप से गिर गई और फिर यह नये चनाव हए थे जिनमे फिर श्री अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री बनाया गवा था परना तीसरे मोचें और कांग्रेस ने मिल कर फिर वाजपेयी की सरकार को गिरा दिया और अब देश में मध्यावधि चनाव सिरुम्बर में होने निश्चित हो गये हैं। सरकार बनाने व गिराने का सिल-सिला कई वर्ष से चल रहा है जो हमारे देश में अस्थिरता पैदा कर रहा है।

 फिर अपना सीट देकर संपक्त बना देवी हैं। जनता के ऐसा करने से ही हमारे देश की राजनीतिक छवि धरिल होती जा रही है। यह देश ऋषियो मुनियों का, महात्माओं व तपस्चियों का देश है। यहां बडे-बडे धर्मात्मा राजा महाराजा और ऋषि मनि हुए हैं। कभी हमारा देश सरपता के उच्च मिखर पर पहुंचा हुआ था। यहाँ के सभी व्यक्ति अपने निर्णय सत्यता के आधार पर लिया करते थे परन्तु अब चारों तरफ झठ का ही बोलजाला है। राजनीति में तो झठे वायदों के सिवाये और कुछ नजर ही नहीं आता। प्रत्येक उम्मीदवार अपने चुने जाने में पूर्व जब जनता के बीच में जाता है तो बहुत बड़े-बड़े वायदे करता है। समाज को खजहाल बनाने की बात कहता हैं. जनता को तरह-तरह की सविधाये देने की बात करता है. परना ज्यो ही वह चन लिया जाता है फिर वह अपना कोई वायदा परा नहीं करता जो कल वह जनता में कह कर आता है उस प्रकार का वह एक भी कार्य नहीं करता । उस समय न उस को जनता की परवात होती है. न देश की परधात होती है उस का उद्देश्य येन-केन प्रकारेण धन संग्रह करना हो जाता है । आब हमारे राजनीतिक लोगों के पास इतना धन है कि जिस की रंगनती की जानी कठिन है। कई बहे-बहे राजनीतिक लोगों ने अपना धन धारत के बैंकों में नहीं विदेशों में जमा करवाया हुआ है। जो राजनीतिक नेता गत दिनों दिवगत हो गये हैं उनका भी अरखों खरखों रूपया बाहर के देशों मे जमा है। प्रत्येक राजनीतिक व्यक्ति रात दिन धन संग्रह करके विदेशी बैंको को भर रहा है। इमारे देश की जनता यह सब कुछ जानते हुए भी फिर भी उसे अपना वोट देकर सफल बना रही है। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है। इसका कारण है जनता का किसी एक राजनीतिक पार्टी से जुड जाना। जनता भी अनेकों भागों में बटी हुई है तभी ऐसा हो रहा है।

सितम्बर अबतुबर में हमारे देश में पुरु: लोकसभा के चुनाव हो रहे हैं और इन चनायों पर हमारे देश का कई करोड़ रूपया खर्च होने वाला है। इस रुपये से देश की उन्नति के लिए कोई कार्य किया जा सकता था। परन्त अब यह सभी रूपया केवल चनाव पर व्यय हो जाएगा और इतना खर्च हो जाने के पश्चात भी अभी हक यह नहीं कहा जा सकता कि जो सरकार आगे बनेगी, वह स्थिर होगी या नहीं। इसका कारण यही है कि हमारे देश की जनता के सोचने का हंग क्टला हुआ सा दिस्योचर होता है। पहले हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति देश की उन्नति के सम्बन्ध में पत्रले साचता वा और अपने बार में या अपनी पार्टी के बारे में बाद में सोचता था लेकिन अब किसी भी राजनीतिक नेता को कोई चिंता नहीं है. सब अपने तक व अपनी पार्टी तक सीमित हो गए हैं। सभी अपनी-अपनी विजारियों को भरने के लिए लगे हुए हैं। केवल चदेक व्यक्ति डोंगे जो इंमानदारी से अपना कार्य कर रहे हैं। इसलिए जनता को एक सुअवसर और मिला है कि वह अपने देस की रक्षा के लिए उसकी उनति के लिए व भारत की सरकार को चलाने के लिए अपना ठीक उम्मीदवार चन कर संसद भवन में भेजे। इस चनाव में प्रत्येक व्यक्ति की यह भ्यान रखना चाहिए कि वह अपना बोट किसी पार्टी विशेष को न देकर बल्कि व्यक्ति विशेष को दे। बयोंकि वदि जनता ने फिर अनेको पार्टियों को बोट देकर उन्हें सफल बना दिया तो हमारे देश की स्थिति वहीं होगी जो गत दिनों हुई है। कई राजनीतिक पार्टियों ने मिल कर सरकार को गिराया और करोड़ों रुपये का बोच्च नये चनाव का जनता पर बार। दिया। यस मिलसिला यहीं समाप्त नहीं होगा। यह आगे भी दशी प्रकार से चलता रहेगा. यदि जनता ने इस और ध्यान न दिया। इसमिए हमारे देस के प्रत्येक नागरिक को अपनी बोट की कीमत समझनी चाडिए और अपना बोट न तो बेकार बाने दें और न ही किसी गलत व्यक्ति को देवें। हमे इस चुनाव में किसी एक पार्टी को बहुमत दिलाना बाहिए ताकि उस राजनीतिक पार्टी की सरकार बन सके और वह परे पांच वर्ष तक चल सके। आर्थ सम्बन्ध का सम्बन्ध किसी एक राजनीतिक पार्टी के साथ नहीं है बल्कि सभी के साथ है इसलिए हम किसी रावनीतिक पार्टी का विरोध तो नहीं करेंगे परन्त यह करूर कहेंगे कि अच्छे व्यक्तियों को बोट दिवा जाये और एक ही राजनीतिक पार्टी के लोगों को अधिक से अधिक संख्या में चुन कर भेवा बाए बदि जनता ऐसा कर सकी तो यह हमारे देश का बहुत वडा सीधान्य होगा।

अश्यिमी कुमार शर्मा एउवोकेट सभा महामनी अंग्रेजें की कटनीति:

अर्थव्यवस्था का विनात।

पर्ति देखीं।

बिदेशी सासक अंग्रेजों ने गोवब

अंग्रेच गी मांसमक्षी थे।

पारतवासी किसी भी प्रकार सक्षक

एवं स्वावलंबी न होने पार्वे और

सद्य गुलाम ही रहें। अंग्रेओं की इस

कुटनीति से राष्ट्र की मुस्थवान संपत्ति

अभादि काल से लेकर मुस्लिम काल रक गायों को पश्चित्र वानकर

को करल करना जुरू कर दिया।

उसकी सुरक्षा होती रही। हमार्चु,

अक्षक्र, बहादुरलाह बैसे कट्टर

पुरिलग सम्राटी ने भी देश की

आर्थिक तार्थत और बनता के हिस्तें

को प्रारम्य करने में दो लक्ष्मों की

## मावो विश्वस्य मातरः (गाय विश्व की माता है)

🗆 ते॰ भी कप न्यूनि स्थानम् कपात्क द्वार ठंकास (भी सुन्द्र)

भारत कवि प्रचान देश है। यहां दरम्बाग गीवस्था नहीं होती थी। के 75 प्रतिसत लोगों के बीवन का भारत के मुस्लिम **बहुल राज्य** सम्मू-एक मात्र आधार कृषि है। देश की करमीर में गाव कारने पर 10 वर्ष की सन्ता है। जब कि हिन्दू बहुल आर्थिक प्रगति में गोधन का मुल्यवान योगदान है : इसलिए गहर राज्य में याथ काटने के लिए को राष्ट्रीय प्राणी घोषित करके लाबसन्स दिये व्यवे हैं। उसकी सुरक्षा होनी चाहिए। इसी वेशों में गाय का महत्व : कारण समग्र देश में एक करोड पदि यो यो विशित प्रवास्त्रं पवि

पुरुषम्। तं त्वा सीसेन विश्वामो नागरिकों के इस्ताक्षर करवा के माननीय राष्ट्रपति वी को आवेदन पंचा पोउसी समीराह ।। पत्र दिवा काएगा। (अमर्गवेद 1-16-4)

परमपवित्र ईंस्वरीय ज्ञान बेद-गी इत्वारे को सीसे की गोली से वेष्मे का आदेश कर रहा है। पूर्व गार्वे भेरपवा कर्रा,

1 हिन्दू मुस्लिम देंगे २ फ्लूबन चिरमीर चिकृपुत्रा सुप्रतीकम्। की बर्बादी के द्वारा भारतीय भारं गृह कृणव भवताची क्रको क्य ठक्कते सभासु॥

(अथरविद 4, 21.6) हे गानों । दुम कुना, दुवाले पतले व्यक्ति को इन्ट पुन्ट कर देवी हो और पुरुषों को सुन्दर रूपनान क्य देखे हो। दुम्हरी क्या- रम्भन भी <del>करपाणकारी है। संभाओं</del> में तुमहारा खूब गुजगान किया बाता है।

मारा रुप्राणां युद्धित वसूर्या (बारावित्वनामकास्य नापिः । प्रमु बोर्थ विकितेनु नगाय र वास्प्रधा**रिति वरिष्ट** ॥

(東 7, 101, 15)

इस मन का देवल 'गी' है। वह रह 36 वर्ष पर्वश अखण्ड बद्याचर्य का पासन करने वालों की माता है। वस+ 24 वर्ष पर्यन्त जखन्ड इस्वर्ग का पालन करने वालों की स्थसा है। अमृ<del>त अख</del>य मोध सुख का नाधि-केन्द्र है । मैं ऐसे विद्वासा सम्पन मनुष्यों को यह उपदेश करती हूं कि अनागाम् निष्पाप अदिति-अखण्डित सुर्खो की सान गाय का कथी भी वध

इस मन्त्र में कहे मात आदि सब्दों कर पान वह डै-सदाचारी तीन प्रकार के होते हैं। उनमें वसूओं के लिए गाम द्वारिया-समित को दुहनेवाली, रुद्र सम्बन्धरियों के लिए माता निर्माण करने वाली और आदित्वों के लिये स्वस्त-अज्ञान की दर फैंकने वाली है।

प्रवासतीः सुपवसे उत्तन्तीः सुद्धाः अपः सुप्रमाणे विक्तीः। मा वस्तेन इंशत मानकंस परि रका का संदेश :

वे कारम देतिर्यमक्त II (अवर्थ-7,75, 1)

इस मन का देवता 'अपना है। जो कि वैदिक क्षेत्र के अनुसार यब का मुख्य नाम है। इसका निर्वाचन करते हुए लिखा है-न इन्तरमा मवति अमात् गाय इतना अधिक उपकारी पशु है कि इसका वय करना महा संप है।

अर्थ : हे मनुष्यों । तुम्हारे परी में प्रकावती: उत्तम सन्तान वाली. सबबसे (बी) के क्षेत्रों में चरने बली और सद बलों की पीने वाली गौ हो और उनकी सुरक्षा ऐसी हो कि कोई चोर उन्हें चुरा न सके और फपी बाकु आदि याथ की अपने क्श में ने कर सके। क्द्र-

परमारमा की हेरि - वक्कामित वन्हारे करों ठरफ सदा विश्वमान रहे। पयः पतुर्ता रसमोवधीनाम्। कापति: समित में पंचारत है (अवर्ववेद-19,31,5)

अर्थ : हे सर्वोपत्दाक परमेरवर र इम सबको खेवन निर्व के लिए गांच का दूध और औषधियों का रस भोजन के लिए प्रदान करो। वर्ष पीत्क मक बाठ गर्क

पितेष पुत्रमधिरक्षताम् इमान्

(年度 35, 17) अर्थ :-हे (अम्बे) राजन । बैसे पिता अपने पुत्रों की रक्षा करता है वैसे आप गाँव के मधुर और रोगनासक दृष घरा आदि की

जवस्य कर इमारी रक्ष करें। दोग्ही धेनुवाँकाऽन.

समसाम्। (बबु. 22, 22) इस अन में राष्ट्रीय प्रार्थण है-इमारे देश में प्रकुर दूध देने वाली गौएं भार होने में समर्व तवा कृषि के योग्व बैल और खनों में सम्बन और सीमग्रमी चीढे पैदा हों। नवां सेचा त कर्तन्या, गुरूरने

पण्यातिपाधि । गर्वा सेवापरोपस्त. तस्य ≐क्कीऽविरात् ॥

अर्थात् पुण्यं प्राप्ति के इच्चूक गुहस्य का कर्तव्य है कि वह गी सेवा करे। वो गी सेवा करता है, उसके घर में लक्ष्मी की वृद्धि, वक्कशीप्र होती है। किसी भी पन्त-सम्बद्धन में सं मंस काम नहीं लिका है।

गाव की महिमा बताते हुए कुछ विधिन पंच-विकासमें के मं 1) **व्यक्ति (**सर्व यत में ग

व किसी को नव मारे। व मेरे समीप मनुष्ण होकर रह।

बंगलों के प्राणियों का वस करके उनका गाँस गत का। (प्रसा

एक बेल को मारना एक पनुष्य के करल के समान है। (ईसा इष्क(66-3)

मांस के लिए ईस्वर की बनाई सच्चि का संक्षार नहीं करना चाक्रिए।

(रोमन्स 16-20) भगवान इसा मसीह का जन्म एक गी साला में हुआ था। इससे इंसर्क लोगों को गान के प्रति आदर भवना रखनी चाहिए। सैन्टपॉस ने कहा व कि हमारे (हिन्द) महायाँ का मेरे भोजन से अगर दिल दखता है तो इस बीवन भर मांस नहीं

इंसक्रयों के धर्म प्रन्थ बाईबल में वृष्ध को देव माना है। ईसा मसीह ने स्मध्य कहा है कि, 'तुम किसी की इत्था मत करना। तुम मेरे साथ पवित्र कर कर रहो : जंगलों में प्राणियों का वय कर, उनका मांस पराण गत करना।'

स्वर्धी ।

2. पारसी मत में, नी रक्षा

इंस्कर मनुष्य बादि के अध्युक्त तथा गीजी का हित करने के लिए आवाशक बुद्धि सदाचार और दुवता प्रदान करें। ( कत्यस्त करन 4-7) पहुओं को न खाना और पहुओं

का शिकार न करना यह हमारा करबुरती नेक पर्न है। (फिसेटसी संत)

3 इस्लाम-मरिलम मत में गी रक्षा संदेश-

गाव का दूब और भी तुम्हारी शन्दरुस्ती के लिए बहुत करूरी है. उनका गोस्त नुक्सान देह है। (पेगम्बर साहब-नाशिवादहादी पुस्तक से)

श्रथ की कर्वांनी इस्लम पर्म कर निषम नहीं है। (फतबेहुमाधूनी **भाग 1-360**)

तम्बें अपने मन से वार्मिक पश्चपद को अलग कर देना चाहिए। प्रत्येक वर्ग के निवम के जनुसार उसके साथ न्याय करना और गी हत्या से परहेच रखना।

(थाथर का हमार्थ को पत्र, बाग दिवा ओसल १३० हिसरी) (शेन पृष्ठ ६ पर)

को लक्ष्य में स्क्रकर गीडाचा पर प्रतिबंध लगावा था। बादकाह बहांगीर ने गी हत्य करने वालों के लिए फांसी की सजा का कानन बनाना। मैस्स के बादकड़ हैदर अली ने गी हत्वारों के इस्य काटने का अहदेश दिया था। भुगल बादसाह बाबर ने गी हत्या बंद करने का आदेश दिवा था। सम्राट अकवर ने अपने विसाल राज्य मे गीडत्या बद कर दी थी। इसका प्रमाण 'आईने अक्रवरी ' गाम की पस्तक में है। न करो। इस आदेश को अकवर के वारिसद्धरों ने चाल रखा था। इसका प्रमाण औरंगवेज के ठाइले कालमगीरी वा सकात आलमगीरी में दे<del>ख</del>ने को भिलेगा। इसी समय इटली से भ्रमणार्थ आवे हुए प्रसिद्ध मुसाफिर बर्नियर ने इसके बारे में लिखा है। साहबहां ने अपने राज्य में गी इत्या

पर संपूर्ण प्रसिनंध लगाया वा। इसी

प्रकार प्रसिद्ध इक्हिसकार हंटर नै

शिक्क है कि मगल स्वसन के

# त्रम ज्याच्युत् (स्टिश

यज्ञेपवीत का पहला भागा हमें स्मरण क्वाता है कि हमारे सिर पर मां का ऋत है जो कि हमने चुकाना है। बजोपबीत के हर भागे को यदि खोला बाबे के हर धारी में दीन और छोटे छोटे थांगे हैं। अर्थात मां के. पिता के. या अरजर्य के भी तीन प्रकार के ऋण हैं। इसलिए पहले हमने यह जानना है कि वह कौन-कौन से ऋज हैं जिससे हम ने मुक्त होना है। मां सब्द का अर्थ संक्षित रूप में नहीं सोचना चाहिए। केवल करनी को ही मां नहीं कहते। बननी भी मां है पर इमें मां के विस्तृत रूप को बानना है। क्रिका करों चिंतन करों तो बद्धोपवीत अपने आप में एक ऐसा प्रतीक है जो कि मनुष्य की सोच को बदल कर रख देऔर व्यदि औपचारिकता के साथ कर पहला बाल है से केवल भाग है। बाद वो मल्पांकन करने की है। जेवना पैदा करने की है। जगाने की है। स्वयं को पहचानने की है। बरा माँ के स्वरूप पर चिन्तन किया आये कि मां क्या है ? क्या करती है ? क्स मांगती है क्या देती है, क्या लेती है ? सर्वप्रथम दो मां के गुजी पर विचारें बिस मां ने बन्म दिना। पहली मां-वननी

किसी भी स्वीको मांकव कर पकारें। न जाने कितनी ब्रद्धा स्वयं पदा हो जाएनी और उस मां के दिल में न जाने कितना स्नेष्ठ पैदा हो जाएगा। फिर बार मां अपना संब कुछ न्योक्सकर कर देगी उस मुंह बोले बेटे पर और मां अपने उस पत्र के लिए क्या नहीं विसने उसकी कोख से जन्म लिया हो। मां तो प्रतीक है-ममता की, तप की त्याग की, तपस्या की। कलक बिस गांचा को बिना किसी किवालय में बावे बिना किसी अध्यापक के सीवारत है उस पाचा को मात भाग करते हैं पित भाग नहीं बढ़ते. क्वोंकि वह माना वह अपनी मां व संख्या है। यह कहना कि मां एक आचार्य है जस भी गलत नहीं: वो आरक्षण मं की

पर नहीं। बच्चा जब किसी से लड कर आवा है तो मक्ता की गोट में क्रिय कर बैठ खता है। वहां पणं क्येण अपने आप को सुरक्षित मानत है। माता निर्माता भवति माता बच्चे का निर्माण करती है परन्त भात केवल बच्चे के करेर का भी निर्माण नहीं करती उसके बीवन का भी निर्माण करती है। एक कवि ने कितने सन्दर जब्दों में निका है-

देखा नहीं इस ने उसको मनर। पर इस की चरूरत क्या होगी। ऐ-मां-तेरी सरत से अलग। भगवान की सूरत क्या होगी। इस भगवान को सर्वव्यापक

मानते हैं पर अंग्रेस लोग परावान को सारवें आसमान पर विराधभान समझते हैं इसलिए एक अंग्रेज ने लिखा है।

God Couuld not be every where, so he created mother

अर्थात परमात्मा क्येंटिक सामार हो नहीं सकता या इसलिए उसने अपना विकल्प मां के रूप में बनावा। पहले बढ़ विचारा करें कि मां, जननी, माता किन गणों से औत-प्रोठ है और उसका हम पर क्या कर्जा है ? आओ पक्षेपवीत के पहले भागे की खेन करों में से पहली तर को बोल कर देखें। फली तर-सोम

मां का पहला गुन है वह सोम है। शीवल स्वमाय है। चाँद की भान्ति सुन्दरका, सीवलका, मृद्रता विकोरती है। चांद की तरह हर आंख को भारी है। चौदनी की पान्ति मीठी लगती है। बिस पर चांद की किरणें पढ़ती हैं उसके रंग कप में निखार आ बाता है। मां का जाशीबांद विस व्यक्ति को मिलता है उसका जीवन एक ऐसा कानमोल निर्मल बीवन कर बाता है कि वह सदा उन्नति और सफलता के मार्ग पर असमर होता है। चन्द्र में एक और वडा भारी गुण है कि उच्चता लेकर शीवलता देख है। मां भी कट्टल लेकर मसुरता देती है। यच्चों के जले करे सब्द सनती है पर तस्म में स्नेद देती है। हो तो बच्चों का चर्म की ओर

दीर्थाव के लिए प्राची होती है। अपना सर्वस्व लुटा कर भी संवान को बचाना चाहती है। चाहे संतान उस मां की एखार ही न करे। उस बच्चे के लिए भी अपना दिल निकाल कर रखने को तैवार जो बच्चा अपनी पत्नी के पीके लग कर मांको महरने तक को तैयार हो जाता है।

मां का ऋण चुकाना है तो हमें भी स्वमाव से सोम बनना प्रदेगाः हमें भी चांद सी शीवलता बिखेरनी चाहिए। केवल अपनी सन्तान के लिए ही नहीं अधित प्रत्येक प्राणी के लिए। सन्तान के प्रति शीवलवा रखना वो Investment है। पूंजी को कर्जे पर लगाने की बात है। परन्त अभी तो पिश्रला कर्जा उतारना है। मां के ऋण से तभी व्यक्ति उच्चण हो सकता है यदि मनुष्य नम्न बोलने, नम्र व्यवहार को अपना स्वभाव बना ले। जीवन का अंग रांग बन्ह ले। जो काम मीटा बोलने से एक दिन में हो सकता है वह बक्कता खेलने से जायद वर्षें में भी न हो । गोली का बाब भर बाद्ध है. बोली का पान नहीं परता। डोपदी के इन सब्दों ने कि अन्धे की औलाद अन्धी होती है अपना परिवाम दिसावा और महाधारत का बद्ध हमा। वसरी सार-भविष्य निर्माता

मां का दूसरा गुण है कि वह अपनी सन्छन के उज्जवल मविष्य की निर्माता है। जिस घर में पिता चरित्रहीन है पर माता चरित्रवरी है सन्तान फिर भी आदर्श बनेगी। पर यदि मासा चरित्रहीन है और पिसा चरित्रवान है तो सन्तान का चरित्र हीन होना लगभग निश्चित है। मां बदि पढ़ी लिखी है और पिख अनपढ है तो सन्तान को शिक्षा प्राप्त करने में स्वयं कर्रन पैदा हो न्नएगी। परन्त यदि मां की पढाई में रुखि नहीं केवल पिता की है तो सन्तान की पढळं में रूपि रखना कठिन भी बात हो जाती है। यदि मांधर्म में कथि रखती हो और पितान रक्तकाडो वी प्राय: बच्चे धर्म ग्रेमी बनते हैं और वदि मां की धर्म में रूपि नहीं केवल पिता की गोद में है जह किसी अन्य स्थान आसीबाँद ही देखें है सन्छन की शुकाय कम ही देखने में पापा गया

है। कारण क्या है ? कारण यह है कि मां के चरित्र का. व्यवसार का. बच्चों के जीवन पर बहुठ प्रमाव पडता है। बच्चे ज्यादा समय मां के पास रहते हैं और जो कक मां को करता देखते हैं वैसा ही करने का प्रवास करते हैं। वह कल संस्कार जन्म से लेकर आते हैं और कुछ संस्कार संगति से लेते हैं। पहले माल-पिता की संगति से फिर मित्र मंडली से। माता के पास अधिक समय बिताने से मां से बहुत कुछ जाने और अनवाने में भीखते हैं। इसलिए बच्चों के निर्माण में उनके प्रविच्य को **उण्जवल ब**नाने में मां को एक बहुत क्रियात्मक भूमिका निभानी पढ़ती है जो कि वह सदा निभाती है। मां पत्र को राजा बेटा कह कर बलाती है। बेटी को रानी बिटिया कहती है। तसके मन में यह भावना होती है कि तस का बेटा राजा बनै। उसकी बेटी रानी बने। वह अपने पत्र को ऊंचे से ऊंचे पद पर देखना चडती है। परन्त मां अपनी न्वायायस्था को कभी नहीं भलती। मांके इस पुत्र हों फिर भी यह **अभीवांट दसों के लिए है कि दस** के दस पुत्र ही राजा बनें। पुत्रों का चाहे वह चडम हो बाये कि मी एक पत्र से कम प्यार करती है दसरे से ज्यादा। पर मां की दन्टि में सब बराबर हैं। वह सब को एक जैसा प्यार देती है। महात्मा गांधी के जीवन निर्माण में तनकी मां का एक बहुत बढ़ा हाथ था। मां के इस ऋण को चुकाना है ते आप भी किसी एक व्यक्ति के उञ्चवल भविष्य के निर्माण की प्रतिद्धा करें। किसी किंग मां के बच्चे को अनावालय से ला कर इसको आप अपने घर में पालन पोषण कर सकें, सुशिक्षित कर सकें

तो बहुत अच्छी हात है। नहीं तो

उसके पविष्य के निर्माण के लिए

अविक्रिक सकायता तो दे भी सकते

हैं। किसी निर्धन मां का स्थप्न कि

उसके पुत्र का पविषय के निर्माण

के शिए केक्स आर्थिक सहायता

की ही व्यवस्थकता नहीं सारीरिक

पर्व मानसिक सहाबत भी दी जा

(क्रमतः)

सकती है।

## लिधियाना में उत्पव

आर्य समाप मार्थि दयागन्द बाजार ( दाल बाबार ) लक्षियना

का 79वां वार्षिक उत्सव तथा आर्थु वीर दल शिविर प्रथम जून मंगलबार से 6 जून, 1999 रविवार तक वार्षिक उत्सव के उपलब्ध में चतुर्वेद शतक महायञ्ज व आर्य बीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। जिसमें निम्ननिखित आर्य जगत के महान् संन्यसी विद्वान, संगीताचार्य प्रधार रहे हैं।

स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज, आचार्य रामानन्द जी महाराज शिमला (हि प्रदेश)।, पं सत्यपाल जी पथिक संगीताचार्य, आचार्य वेद प्रकाश जी शास्त्री त्रिक्ट अध्यक्ष, महात्मा सुमनायति जी महाराज, पं निरंजन देव जी इतिहास केसरी महोपदेशक आर्य प्रनि सभा पंजाब, श्री हरि सिंह जी मिश्वक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, पं हरबंस लाल जी शर्मा, प्रधान आर्य प्र नि समा पंजाब, श्री अरुवनी कमार जी शर्मा, महामंत्री आर्थ प्र नि सभा पंजाब आदि बबता पधार कर उत्सव में समय-समय पर अपने अमृतमय विचार देंगे। आप सब कार्यक्रम मे परिवार एव इन्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

#### (कार्यक्रम)

1 जुन, 1999 मंगलवार से 6 जुन, 1999 रविवार तक: प्रात: जागरण आर्थ बीर दल शिविर 4 से 5 बने वक स्नानादि तथा 5 से 6-30 बजे तक व्यायाम

यह, भजन, प्रवसन 6-30 से 8-30 बजे तक

अस्योजकः : पं सुरेन्द्र कुमार शस्त्री प्रावराश के पश्चात आर्थ वीर दल का प्रशिक्षण चलवा रहेगा। रात्रि : 8 से 10 बजे तक बंद कथा व भजन।

समापन समारोह -रविवार 6-6-99 को 11 कण्डीय द्या. इवन यज प्रात: 7-30 से 9 बने तक पूर्णाष्ट्रति। 9 से 9-15 बने तक ओ३म् पताका ध्वजारोहण 9-15 से 9-30 तक अल्पाहार । आर्य सम्मेलन 9-30 से 12 30 तक अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी, मुख्य अतिथि पं इरवंश लाल बी शर्मा श्री अञ्चनी कमार जी सर्मा। ऋषि लगर -- 12-30 आरम्भ।

> निवेदक :- मतवाल चन्द्र प्रधान फोन : 709428

#### श्रीमती सुवमा नागपाल के पति जयगोपाल का देशकसान स्त्री आर्थ समाज गोबिंदगढ

जालन्यर की कोषाध्यक्ष श्रीमती सुषमा नामपाल के पति श्री जयगोपाल जी का 4-5-99 को देहाबसान हो गया : उसका अन्तिम शोक दिवस दिनाक 16-5-99 रविवार की 2 से 3 बजे तक सत्वनारायण मदिर ( समीप एस डी गर्ल्ज कालेज) गोबिंदगढ जालन्धर

मे मनामा जायेगा। श्री जयगोपाल जी एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनका जीवन बड़े। सादा था। ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति के चले जाने का सभी को दख है।

स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर की सभी सदस्याओं व आर्यसमाज के सभी सहस्यों ने उन्हें अपनी श्रद्धाजिल भेट करते हुए परम पिता परमात्मा से उनकी सदगति के लिए प्रार्थना की और उनके वियोग को सहन करने तथा परिवार को शबित प्रदान करने की प्रार्थना की। हम सभी उन्हें आर्य मर्यादा साप्ताहिक की ओर से अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

#### वार्षिक चनाव

21-3-99 को आर्य समाव आनन्द नगर राजपुरा टाकनसिप का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ :-सरक्षक श्री मूलचद जी सनदेवा.

प्रधान श्री चन्द्र प्रकास जी वश्रवा, उपप्रधान श्री विश्वा रत्न जी आर्थ, उपप्रधान श्री राम देख जी, उपप्रधान त्री खूब कर की सेठी, मंत्री श्री बन्द किशोर आर्य, उपमंत्री श्री वरिन्द्र जी बतरा, प्रकार मंत्री श्री ज्ञान चन्द सी आर्थ, कोचाध्यक्ष श्री नन्द फिसोर जी

सचदेवा भक्षारी श्री वयदेव बतरा, लेखा निरीक्षक जी देव राज, तकाष्यम भी नीरण आर्य, सहायक शी अक्रियानी असर्व।

धर्मदेव आर्थ सह सम्पादक

#### अन्तरंग सदस्य

श्री लाजपत राथ चतरा, श्री बेंद प्रकाश कपूर, श्री सुन्दर दास, श्री अलोक कांबदा, श्री सुमान चानला, श्री रतन वधका, श्री सुरेश आर्य, श्री राजपाल करूब, श्री किन्य कार्य, श्री सतीत कावडा, जन्म किलोर मंत्री।

#### (पच 4 का लेक)

हिन्दु मुस्लिम की एक प्लेटफार्म पर लाने के लिने प्रेरक्ष से बड़कर कोई उपाय नहीं। में मुसलमान मित्रों से कहूंग कि कुरान शरीफ जो खदा का कलान है, उसमें कहीं भी गाँव के मांस खाने का हुक्प नहीं है। (मीलाना काविल साहब)

हमें सर्व प्रथम यह जान लेना चाहिए कि गौमांस भक्षण इस्ल धर्म का अंग नहीं है। यदि कोई मुसलमान गौर्मास न खाये तो इससे मुसलमानों की श्रेणी में नीचा नहीं हो जाता।(इ.स. मुहम्मद हाफिब सैयद)

गाय का द्य बदन की खुबसूरती और तन्दुरस्ती बढ़ाने का बड़ा बेरिया है। (हजरत मुहम्मद-बेगम हजरत आयशा से)

बिना सक तुम्हारे लिए चौपायों की सीखा है। उनके (गाय के) पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच में से दूध, जो पीने वोलों के लिए स्वाद वाला है, हम तुम्हें पिलाते हैं। (कुरान सरीफ)

हरांगज नहीं पहुंचरे अल्लाह के पास कुवांनियों के गोस्त और उनके खुन, अलबत पहुंचता है अल्लाह के पास, तुम्हारा वकना और परहेजगारी। (कुरान शरीफ -

सर-ए-इस) अच्छी तरह पाली हुई 10 गावें 16 वर्षों में ने सिर्फ 450 गायें और पैदा करती हैं, बहिक उनसे हजारों रुपये का दूध और खाद मी मिलता है। गाय दौलत की रानी है। (हजरत

मुहम्मद-मौलाना फारुखी द्वारा कलिव बरकव और सरकव से) गाय का दूध दवा है। इसके मनखन में जिफा (तन्दुरस्ती) है ओर गांस में बीमारी।(इमाम जाफर

भुसलमान को गैथा नहीं मारनी चाहिए। ऐसा करना हदीस के खिलाफ है। (मौलाना साहब वानवाना-हाली समद साहब)

गाय को बुजुर्गी इहतराम किया करो क्योंकि वह नमाम चौपायों की सरदार है। (तकसीर दर मन्स्र)

न तो कुरान और नहीं अरब की प्रथा ही गैया की कुबानी की इजारात देती है। (हकीम अनमल खान सेनानी)

हजरत इमाम आजम अब् हनिपत्रने मोहम्मद पैगंबर साहब के एकत्र किये क्वन को जिसे हरीस कहते हैं। क्र 474 अप में कहा है, वृद्धः . म्बा याने मीठ के सिकाय अल्लावाला ने कोई भी बीमारी धरती पर उतारी नहीं है जिसके साम दवा न उतारी हो। आप गाप का दूध क्षि उसमें भी सभी प्रकार के तत्व मिलते हैं।

1922 में भीतान अब्दल कारी मरहुम सिनेनी सहवी ने गीहत्या पर कब प्रतिकन्य लगाया वा, तक महात्मा गाँधी ने उनका प्रक्रित्य अदा किया या।

इस्लाम प्रवर्तक महम्मद साहब ने कदापि गाय के बलिदान की बात कही नहीं और वर्तमान में भी प्रस्तमानों के पथित्र स्थल महका में याय की इत्या नहीं होती।

सर सुलवान अहमदस्ताप स्लिम लीग के संस्थापक प्रधान मुस्तिम ताग क सरबापक प्रवान मैं एक बार दृढ्तापूर्वक कहा था, 'गी की कुबानी के मुकाबले में हिन्दु की मित्रता अधिक मृत्यवान है। मुसलमानी के मामले में जिद पहले दवें की मूर्खता है।

मुगल बादसाई बहादरहाह जपन : 1857 के स्वातंत्रता आन्दोलन में अखण्ड भारत का नेतृत्व करते हुए अन्तिम मृगल बादसाह बहादरसाह जफर ने गीहत्वारों को तोप से दहाने का फरमान जारी किया था। यह नियम बक्दर्शिंद के त्यौहार पर भी

अकबर के लडके ज्ञांगीर के विषय में फ्रेंच यात्री बर्गीयर लिखते हैं. 'अपने विस्तृत राज्य में जहांगीर ने गौवष बन्द कर दिया था। दीवाली के दिन ब्राह्मण शाही बगीचे मे गरब लाते ये और ईनाम पाते थे।"

लागु मा ।

मौलवी कुतुबदीन और बादशाह हैदरअली को कलियुगी विराट कहा वाता था। उसके पास अमृत महल वाति के 60 हजार बैल ये। टीप सुलतान स्वय गौशाला की देखाभाल क्रांत भा ।

इन निम्न निर्दिष्ट राज्यओं और बुजुर्गों ने गीहत्या पर प्रतिबन्ध गेया था।

म्गल बादशाह बहादरशाह के खास पीर मौलवी कुतुबद्दीन साहब ने आदेश जारी किया था कि हडीम में कहा गया है कि गौहत्या करने वालों को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए। इस आदेश (फतवे) के नीचे निर्दिष्ट बुजुर्गों के हस्तावर हैं।

महम्मद गाकीशाह आलम बादशाह, सैयद उत उल्लातखान फिदवी, पीर मौलवी कुतुबदीन, काजी मियां असगर हुसैन दस्तखत क्रम वल्द मुन्ती इलाहीखान दरोगा आतिशस्त्रन हजूरपुरनुर

बाबर, हुमायुं, अकबर वहांगीर, शहजहां, मुहम्मदशह व्यक्षम बैसे सासक उपरांत अन्द्रल गुल्फ इस्ने, मरदान सुबेदार, इराकवाली हकुमत, अफगानिस्तान के शासकों ने सबसे अधिक उलेगा अहले सुनात के आदेश (फतवा) अनुसार मानों के करल पर प्रतिबंध फरपाया था। (EHE:)

## क्यामी श्रद्धानन्द बलिवात भवत राष्ट्रीय समारक घोषित करें

स्वामी बळालच्य बलियान थवन को राष्ट्रीय स्मारक छोषित करने की मांग को लेकर आर्थ बुवक परिषद का राजधाट में धरना सन्पन्न सस्टीय स्मारक घोषित करने की मांग को संसय में सहाकंगा सांसद विश्वय गोवल

नई दिल्ली (रवि) : 11 अप्रैल. आर्थ (पूर्व महापौर) डी.ए वी के नेता श्री राजरतन भल्ला, आचार्य 1999 को केन्द्रीय जार्ग यक्क डा सिव कुमार शास्त्री, आचार्य परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य सुखदेव के नेतृत्व में तथा स्वामी वर्मा, श्री राबेन्द्र वर्मा, श्री इन्द्रसेन जगदीरक्रानन्द जी की अध्यक्षता में नया बाजार स्थित स्थामी श्रद्धानन्द मस्होत्रा, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री. बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्पारक श्रीमती चन्द्रकला राजपाल, श्रीमती षोषित करने की मांग को लेकर स्वर्णा गुप्ता, श्री अविनाश कपूर श्री दुर्गा प्रसाद कालहा, श्री के ही वर्गा, राजघाट में प्रात: 9 से सार्व 5 बवे राक विशाल घरना दिशा गया। चौ० खनाच सिंह, ख० ओम प्रकाश धरना को सम्बोधित करते उप मान, श्री सोमनाच कपर, श्री

चांदगी चौक सांसद श्री विजय गोयल ने कहा कि स्वामी ब्रह्मनन्द थी का बलिटान यह देश हमेशा राट रखेगा। मेरे संसदीय क्षेत्र चांदनी चौक के नया बाबार में स्वामी जी का बलिदान हुआ था। आज यह जगह उजाह है व विभिन्न दुकानें यन गर्यों हैं। प्रधानमंत्री से हम यह मांग पुरचोर रखेंगे कि वहां स्वामी बी को बलिदान हुआ वहां उनका स्मारक बनावा जावे। यह मामला मैं संसद में भी इताकंगा।

स्वामी विधानन्द की सरस्वती. स्वामी वरुणवेश जी ने आर्थ समह को सम्बोधित किया तथा आहान किया कि जब तक सरकार इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित नहीं करती क्व तक हम्हरा आन्दोलन जारी रहेगा। पूर्व सांसद आबार्य भगवानदेव,

पूर्व सीसद श्री रामचन्द्र विकल पूर्व विषायक श्री रोशनलाल आर्य. . सहस्वत मोद्रन मनीबी (राष्ट्रीय कवि), सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री बनारसी सिंह, श्रीमवी शकुन्वला

गुप्क व स. मनोहर साल सी संसक्ष

सपलीक रहे । इन्होंने आर्थ सम्बद

को दान भी दिया। इका बढ़ीक्टन्त

भी जुरू विरक्तामध्य स्थारक समिति इस्ट करतारपुर (माराज्यर) का नैवार्षिक पुनाव

मान्थवर ट्रस्टी महोदय । सादर आपको विदित हो कि श्री

गरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतारपुर की साधारण सभा की एक बैठक ''श्री गुरु विरवानन्द स्मारक भवन" करतारपुर में 6 बून 1999, रविवार की बाद दोपहर 3 बजे रखी गई है।

इस साधारण सभा में ट्रस्ट का **वैवार्षिक (1999-2002) के लिए** चुनाव तथा ट्रस्ट के 1998-99 के आय-व्यय की प्रस्तुति मुख्य विचारणीय विषय होंगे।

इस सभा में आपकी ठपस्थिति अति महत्त्वपूर्ण है । अतः आप यद्या समय पर अवश्य पंचारने की कृपा करें।

हिन्दू मच सोनीपत के तत्वावषाने में तपोमृति, कर्मनिष्ठ पूज्यपाद महात्मा जी महाराज की पुण्य स्मृति में गायत्री महायत्र एवम् आर्य वीराङ्गना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिथिर दिनोंक 12-4-1999 से 18-4-1999 (सोमवार से रविवार) तक सफलता पर्वक सम्पन हुआ। इस अवसर पर पुण्यपादं पंरम हस स्वामी जंगदीस्वरा नन्द जी (ब्रह्मा) ब्रह्मचरिणी सुमेशा जी (बीद्धिकाध्यक्ष) वेद मन्दिर महात्मा बेद भिश्व सेवाश्रम दिल्ली. प्रशिक्षक के रूप में कन्या गुरुक्ल महाविद्यालय हाथरस की ब्रह्मचारिणियाँ, स्वतन्त्रता सेनानी तपोनिष्ठ श्री आसानन्द अर्ह्य धवनो पदेशक, श्री पं सीता राग आर्य भजनो पदेशक, श्री अखिलेश्वर शर्मा (महाराष्ट्र), स्थानीय महानुमाव सर्व श्री अभरनाय आर्य

**विशेष-(क)** 3 जुलाई-1993 की सामारण संधा के निर्णय के अनुसार प्रत्येक ट्रस्टी को चुनाव मे पात्रता के लिए प्रतिवर्ष 100/- (एक सौ रुपये) द्रस्टीशिप नवीनीकरण शुल्क देना आवश्यक है। अत: यदि आपने अभी तक यह शुल्क जमा न करवाया हो तो कृप्या 6 जून 1999 प्रातः 12 बजे तक अपना ट्रस्टीशिप नवीमीकरण सुरूक अवश्य

जमा करावें। (खा) बैठक में सम्मिलित होते समय कपया इस पत्र को अपने साथ अवस्य लावें जिससे शल्फ मिलान करने में सविधा हो।

(ग) भोजन तथा आवास का प्रबन्ध टस्ट की और से गरुकल मे किया जाएगा। चतुर्भुज मित्तल मन्त्री

सोनीपत में आर्थ वीराङ्गना प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न बौद्धिकाष्यक्ष प्रान्तीय आर्य वीर दल हरियाणा, आशा नन्द बधवा, सर्व श्रीमती प्रतिभा शुक्ला, सुनीता अरोडा, राज रानी, विदर्श आर्य आदि का मानिध्य एवम आशीर्वाद प्राप्त हुआ ।

आर्य वीराज्ञनाओं को सन्ध्या बद्ध, योगासन, लाठी चलाने का प्राशिक्षण दिया गया तथा प्रमाण पत्र भी दिए गए।

इस महोत्सव के अन्तिम दिवस सुप्रसिद्ध योगपति श्री जयदेव जी हमीजा "प्रेमी" की अध्यक्षता मे मुल्तानी (सिराय की) कवि सम्मेलन श्रद्धेय श्री हरीश्चन्द्र जी नाज सोनीपती के मार्ग दर्शन मे आयोजित किया गया। जिसमे स्वानीय और पानीपत तथा दिल्ली के कवियों ने जनता को आनन्दित किया । ऋषि लगर का भा आयोजन

किया गया।

इरिचन्त्र स्नेडी "बीद्धिकाष्यस्

आर्य समाज बहिण्डा में पं0 गराव्या जन्म दिवस आर्थ समाज बठिण्डा के प्रांगण में पं॰ गहरत विद्यार्थी की का जन्म दिवस आदरणीय अशोक जी आरक्त मैनेका आर्य गर्ल्ब सीनिका सैकन्हरी स्कूल की अध्यक्षता में बढी श्रद्धः से मनावा गुका। इवन **बड़ एं॰ वर्गवीर जी सारवी (हिसार)** के ब्रह्मत्व में हुआ। हक्त वड़ के वक्यान प्रो॰ असोक कुमार बी

पंo धर्मवीर जी में अपने प्रवचन में गानव के बीवन पर महर्षि दबानन्द की काप करे विस्तार से चर्चा की उन्होंने कहा अपुष्प को अपने सिक्कन्त भर चलना चाहिए जिस प्रकार ऋषि दवानन्द, स्वामी ब्रह्मनम्ब पं॰ मुख्या विकारी ची ने अपने सिद्धान्तों पर किसी से समझीता नहीं किया। उन्होंने कहा कि मानव को उन्तरि की और

अप्रसर सामा चारीय।

सुन्दरलाल कालदर, श्री रामदिया,

श्री आनन्द चौहान आदि ने घरना

में समर्थन दिया तथा उपस्थित आर्थ

स्वतंत्रता सेनानी पं॰ आशानन्द

भवनोपदेशक, श्री अशोक शास्त्री

(म्बालियर) पं॰ स्वामवीर रामव, पं॰

दिनेश दत्त आदि के भजनों का सुन्दर

कार्यक्रम चलता रहा ।वैदिक चौपाई

मण्डली ग्राम होंग, वल्लमगढ का

शुन्दर चौपाई का**र्यक्र**म सभी ने पसद

किया तथा धरने में नई जान ढाल दी।

इसका श्रेय श्री डेतराम आर्थ, श्री ईस्वर

के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई

बी ने यह करवा कर किया। सार्थ

5 बने बड़े जोश और उत्साह के

साथ आर्यजन घर लॉटे तथा अपना

संकरप दोहराया कि बलिदान भवन

को हम राष्ट्रीय समारक घोषित

भवदीय

सुधारक

करके रहेंगे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ परिषद्

सिंह आर्य को जाता है।

इस अवसर पर सुबह से ही

बनता को सम्बोधित किया।

आर्थ समाज के मान्य परोहित पं॰ सुनील कुमार की शास्त्री ने पं॰ गुरुदत्त की के तपस्थी जीवन की अनेक घटनाएं सनाई। एं० गुरुदत्त भी विद्यार्थी ने अपने जीवन में ऋषि दयानन्द जी के रूपण अवस्था में दर्शन किए और गुक्दत्त की पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि पं॰ ची आर्थ समान के होकर ही रहे। इससे पूर्व पं० जी नारितक थे । ऋषि रवानन्द के छर्तनों से पं॰ बी की नारिकक्षा दूर हुई और कहूं छे **पारितकता पर आरितकता की** 

भगत सुन्दर दास, हरि चन्द स्नेही

विजय हुई। एं० जी का जीवन छोटा वा परन्तु कार्य बड़ा ही सराहनीय था। हम उनके बतावे मार्ग पर चलें।

श्री बिहारी लाल जी मगला मन्त्री आर्थ समाज ने मंच का संचासन सचार हंग से किया। आज की सभा के अध्यक्ष अग्रवाल जी ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित सभी आर्थ बने का भन्यकर किया। शान्तिपाठोपरान्त प्रसाद वितरण किया गया।

> के धरिक प्रधान

### विज्ञाल युवक चरित्र निमार्ण ज्ञिबिर अरुपुर में

गाता का आगन्द आय युक्क ठठावग । सिविर में युक्को के चरित्र निर्माण राष्ट्र निर्माण आर्थ संस्कृति व वैदिक शिविर में अनुशासन का पालन करना

र्तन और स्स्कृति व वैदिकः अनिकार है। दयानन्द पब्लिक स्कूल तुषियाना में यज्ञ

 पं• मुरुवत विद्याची का जन्म विवस

आर्थ संतया महर्ति दलाल्य स्थार पुण्णिका के पर गीरा आर्थ है कि ना आर्थ संस्था अपने प्राहुत्यों के यान दिवस कीते शारीते दिवस कई तरसह पूर्वक त्याव है इसे मुक्ता में प्रीवण गुरूर शिक्का का अप दिवस को 26 आदित को प्रवाद है यह तरसह पूर्वक और उद्धा से प्रवाद पार्चक प्रवाद अपने को सुक्त वर्षण आर्थ देशका सुक्का विचा गया। पार्च होता सुक्ता भी स्थान वर्षण आर्थ देशका सुक्का

पंडित गुरूपण विश्वार्थी के जन्म दिवस पर जिला कार्य संध्य की प्रकार श्रीमकी राजेश जी सार्थ ने मजन के माज्यान से गुरूपण जी की जीवनी पर रोक्षनी करती।

अपने परमान के प्रधान श्री मत्त्रपाल कर थी अर्ज ने मिस्टार से परित्र पुरुष्य भी की धीवारी पर प्रकार करण कि कोटी सो आयु में उन्होंने आर्थ समझ का इत्तर करने कर रिखा थी कि आज के समझ करना बहुत कठिन हैं ऐसा महायुक्त पिता होना बहुत कठिन हैं ऐसा महायुक्त पिता होना बहुत मुक्तिकरा है। भी रोक्तन शाल भी आर्य अर्थ समाज के मरिष्ट उपप्रधान ने भी पठ पुत्रक विकासी के गीठक जीवन पर पर्कों की और महर्षि देशदराज्य से किस प्रभक्त सेवा भी और पूंत्रक से सक्त प्रपाद सेवा

पानापा वर्ष विका मंदिर की वामानों ने एक खुत हो सुन्दर गीता, बाग गोति को सात मन में करता प्रीका सो पाना मां के हरता में सब का मां मोदि दिवा उनका मांक्र क्यांने के दिन्द करती सकता में क्यांना की दिन्दा मांगा की किया गांवा। की समय चुक्त की सुन्दर में के एक की कथा सहस्त ही सुन्दर रूपों में की कीश प्रविद्ध की की वीका गांवा। की समय चुक्त की सुन्दर स्त्रामी में की कांग्र सहस्त्र की की वीकाम कर की कथा सहस्त्र ही सुन्दर सम्बंधी में की कीश प्रविद्ध में की वीकाम पर कांग्र विकार रहे।

नक्षमच सुनक्यदि की ने अपृथ मय उपरेत दिया। श्री सुरेन्द्र कुम्बर ची स्टारंत ने इस कार्य के लिए बहुत कार्य मिन्छ।

अना में आए हुए सैंकडो की सक्छ में आर्थ चर्नों ने प्रीरियोज किया। आरम प्रकाश महामनी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार का आंवला, केशर, चांदी व पिस्तायुक्त, कोलस्ट्रोल रहित विटामिन 'सी' से भरपूर

अमृत रसायन

उतान स्थास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फामेंसी हरिद्वार (उत्तर प्रदेश) की औषधियों का सेवन करें।



*शास्त्रा कार्यालय :* ६३, गली राजा केदारनाथ, वावद्री बजार दिल्ली-११०००६

ती अरेचने कुमर में हम्में एक्सेकेट महामनी सम्बद्धक हात भव हिन्द हिरीन ईक्स्प्रेरिकेट हिंदन महत्त्वर से मुक्ति होकर वर्ण नर्पय कार्यस्थ शुक्रदा कार्य गाँक किक्स्पुद महत्त्वर से इसकी स्वाधिनी वर्ण गाँव हिंदि वर्ण गाँव के लिए प्रवाधिक हुन्य ।



वर्ष 50 अवह 38 4 मार्गरहीर्ष सम्बद्ध 2056 तद्बुसार 16 19 दिसम्बर 1999 दयानन्दार, 75 वार्षिक सुरूक 50 रुपय आशीवन 500 रुपय

23 विसम्बर को जिनका बलिदान विवस है

# केल्प्स <del>पुत्तुल कार्यक्रिके जीवत</del>

मुझीराम पूरे विश्व का श्रद्धास्पद् स्थामी ब्रह्मनन्द वन गया। ब्रिटिश सम्य 🛎 शूक्रपूर्व

महापुरुको के तपस्वी जीवन प्रकार। स्तम्भ वन कर विश्वव्यापी मविद्या और अथकार को दूर करते हैं मत्नवद्या को एक ज्योतिर्मन प<u>ण दिला</u> कर उनके जीवन को अपुष्टल करते हैं मुशीराम का क कारिके

स्वामी अञ्चानन्द के विषय मे गौरवपर्ण जन्हों में बहा था वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि नगवान ईसा की मूर्वि कराने के लिए सबीव माइल चाडे हो में इस भव्यमूर्वि (महत्त्या मुतीराम) की ओर इसाय करूपा गदि कोई मञ्चवालीन चित्रकार सैच्टवीटर के चित्र के लिए पनुना मानेफ के मैं उसे इस जीवित भव्यमूर्ति के दर्शन करने बॉरे जेरण देशा जिनके विषय में एक कहानी

प्रधानमधी रेज्ये मैक्सानस्ट ने

प्रसिद्ध है। अपस से सवर्ग बनने की कहानी । पारसमणि के स्पर्श से लोहा सोना बन बाता है। लेकिन सहस्रो मनुष्यों की आत्मार जन लगे इए लोडे के समान थीं जो स्वामी श्रद्धानन्द रूपी पारसमनि के सम्पर्क से सुवर्ण मे परिवर्षित हो गई। इनसे पूर्व 19वीं सत्त्रब्दी के भारसमिण महर्षि ददानन्द थे। किन्होने अनेक लोगो का उद्धार किया। उन्हीं में सबसे अप्रणी शिन्म वे स्वामी श्रद्धानन्द। अनेक दोवो दुर्जस्यो में करे हुए मुत्तीराम का बीवन स्वामी द्यानम्द के उपदेशामृत से बदल गया। वकी

सुधारक आर्व ्व<u>ाम्य</u> संस्कृति के उन्तरफ योगिशांव महर्षि इयानन्द बरेली पचारे ( मुशीरांम भी अपने पिता के साथ चरेलाँ में ही वे। उनके महने पर मुंक्षीस्य की भी सरसार में आए। बीरे बीरे स्वामी दवानन्द के प्रवचन का नुसीराम पर प्रशाब होने लगा और दो चार दिन के सत्सग से ही मुशीरान का कायाकल्प होने सना। धीर धीर व्यसनो की ओर से मशीराम ने मख को मोका और वर्धिक विकार में मन को समूने लगे। महर्षि कर सत्पार्थ प्रकाश के नियमित स्वाध्नाय से तो इनका अधकार भव जीवन प्रकास की ओर अग्रसर होने लगा और मतीराम जी समाज के सच्चे हिरीकी संबर्ध में वीर बोद्धा चोर निराका में दृढ विश्वास रखने वाले वन गए। अनेकानेक प्रचो के गढन अध्ययन से वह समान को रक्षीच्या से अलकृत करना चाहते थे। आर्थ बगत की प्रातृपाद की एक माला में पिरोक्टर उनमें सगच्छध्य स्वदध्य स वो मश्रस्टि बानवान के वैदिक कायतों को स्थापिय करने में पद्मातक मुत्तीराम को यह सब महर्षि इंशनन्द की भी देन थी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ऋषि दयानन्द को अपनी ब्रद्धाविल समर्पित करदे हुए कहा है ऋषिवर । तुम्हे भौतिक सरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके परन्तु तुम्हारी दिव्यमर्ति मेरे इदय पर ज्यो की त्वो अकित है। मेरे निर्धल इदय के अविरिक्त कौन मरणधर्मा मनव्य वान सफता है कि फितनी कर गिरते गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी रक्षा की है ? हमने कितनी गिरती हुई आत्माओं की कावा पलट दी? इसकी गणना कौन मनच्य कर सकता है बिना परमात्मा के विनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विकर रहे हो कौन कइ सकता है कि तुम्हारे उपदेशो में निकली अग्नि ने ससार मे प्रचलित किठने पापी को दग्ध कर दिवा है परन्तु मैं अपने विषय में बाह सकता हू कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से ठठा कर सच्चा जीवन वीने योग्य बनाबा। सथ ऋषि की कृपा का ही परिणाम थगवन्। में तुमहारा ऋणी ह् दस ऋण से मुख्य क्षीना चाहवा हूं। इसीलिए जिस परमपिता की असीम गीद में पुप परमात्म का अनुभव कर रहे हो उसी से प्रार्थण करता हू कि मुझे तुम्हारा सच्चा जिन्न बनने की जनिश प्रदान करे।

ऋषि के प्रभाव से उनके उद्देश्यों को पूर करने में स्वामी ब्रह्मसन्द की जुट गए। सत्वार्थ प्रकाश में स्थामी दयानन्द ने आर्थ शिक्षा पद्धवि का जैसा चित्र खींचा षा उसको साकार कप देशा था। वजुर्वेद के स्वत्रम्यान में उपस्चारे गिरीना सममे च नदीनाम । विया विद्रो अन्यप्त (26/15) इस मत्र को सरकार करना था। स्वाभी ब्रह्मागन्द में रुगस्य 1898 के प्रचारक में वह चोवना की वी क्ष एक गुरुकुल के लिए 30 सहस्र रूपए इकट्ट न कर लगे तब तक घर मे पैर नहारखेगे स्वामा जी ने 30 सहस्र के स्थान पर 40 सहस्र रुपए एकत्रित करन क बार ही अपने घर की ओर मख किया mil mum à mu बनको महामा पद का उपाधि से विभवित किया

कल कल निनाद करता गग के उस पार इस्द्रिए के सुरम्य बना में कागड़ी गांव के पास गुरुकल की स्थापना की गई गुरुकुल की स्थापना के लिए मुत्ती अमनसिंह तथा महात्मा मशीराम ने अपना सर्वस्य न्योष्टभवर कर दिया जन्नता मे भी भरपर सहायता की समय समय पर गुरुकुल की पवित्र धूमि को विस्व की प्रसिद्ध हस्तिया पवित्र करवी रही महात्मा गाथी को महामा पद से विभूषित इसी गुरुकुल ने कियामा गुरुकुल की लोकप्रियता के विवय में एक उदाहरण देना पर्यापा है अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और वकील मि मामल एव फैल्पा कहते वे कि यदि मेरा कोई लडका होता तो मैं इसे गुरुकुल मे ही धर्ती करता अथवा मैं ही यदि 8 वर्ष का आबु प्राप्त कर सकता तो गुरुकल मे मर्ती हो आता वही छोटासा गुरुकुल विस्वविद्यालय बन गवा

विस गुरुकुल की स्थापना आर्थ क्षापद्धतिको ध्यान मेशकाकर की गई थी महात्मा मशीराम न गले में झोली डाल कर 40 सहस्र रुपए एकतित किए वे अपने पत्रो को गुरुकुल के लिए समर्पित कर दिया वा। हमें विचार करना चाहिए कि स्थामी जी के सपनों का वह **पुरुकुल आ**च उसी आलोक पय पर चल रहा है अबबा नही ? हम सभी को वह प्रविद्य करनी चाहिए कि स्वामी जी के कीर्ति स्तम्भ इस गुरुकुल की रक्षा करे और इसका मुगन्ध को विश्व में दर दर तक फैलावें ( शेष पृष्ठ 5 पर) श्रद्धानन्त् बलिदानं दिवसं स्मृति--सत्यार्थ प्रकाश के भिद्य एक चरुण की रारपे लें भी वेपमासमय भारतसम, या कृति लि**वेसक** (से वि.) white proute the sales with our of other

भार्षि दयानन्द सरस्वती रचित सत्याथ प्रकाश आब सर्वत्र लागत मुल्य पर सुलभ है। ज्यासा कुँआ क्ष पस ही नहीं कची केंगा भी प्यासे के पास पहुचकर उसकी प्यास बकाता है जैसे प्रचार वाहनो स सत्यार्थ प्रकाश जनता के द्वार तक पहुचाया जाता है। पुस्तकालय स मिल जाता है। यदा कदा उपहार या पुरस्कार में भी लोगों की ठपलब्ध हो जाता है। पुस्तक विकेता भा इसकी यूग यून कर विक्री करते हैं। यही सत्यार्थ प्रकाश स्वा० ब्रह्मनन्द जो सन्यास पूर्व मुसीराम थ ।कतना रापस्या के बाद प्राप्त कर सके आज उसी की कहानी

आपको सनानी है।

मशीराम सख सुविधाओं की भौतिक चकाचाँध में फसकर नास्तिक हो गए और दुर्व्यसनी मे सालिप्त हो गए। वे 23 वर्ष के नवस्वक बरली में अपने पिता की प्रेरणा सं जब स्वामी दवानन्द का दिव्य दर्शन करते हैं तो 14 दिन उनके सत्सन में ही व्यक्तीत कर दते हैं उनस किए गए हका समाधान से इनकी नास्तिकता की जोर बाली तो पढ जाती है किन्त टर नहीं पाता है यहा भवयुवक अब 28 वर्ष के तरुण हो जाते हैं। विज्ञाहोच्याल एक पत्री के पिता होकर जालन्धर में मुख्तार क कार्य द्वारा पर्याप्त कमाइ भी करने लगवे है पुलिस सरक्षित बाल्यकाल रईस पुत्रों का विलासी सग अब वकालों का सुखोपभोग नाला मे क्षल जाता है नास्तिकता के **वर्त**न स नई नइ अग्र नी मदिसये गले के नाच अल्पन लगता है। इन्हीं दिनो मशाराम न बकालत का शिक्षा के लिए लाहोर जाने का निरुचय किया साथ के वकीलों ने इन्हें अग्रवा दग का विदाइ भोज दिया। रात्रि म मदिरा क खुब दौर चले। एकान्त पाकर किसी मदहोश मित्र न एक युवताको पकड लिया जिसकी चाल पकार सुनकर

तुहो उत्व भी उस परम रक्षक प्रथ की सत्ता पर विश्वास नहीं हुओ है? कुछ ही माह पूर्व देव दयानय तो दिवगत हो चुके वे किन्तु वर्षो पूर्व बरेली में उनके साधारकार से मिली किरणे आज भी मुतीराम के मानस में कोलाइल मचाने के लिए पर्यापा सक्षम थीं। बरेली मे शिथिल हुई नारितकता की होरी आब कट कर तार तार हो गई थी। इन्होंने मदिरा के घरे व केवल गिलास को प्रत्युत बोवल को भी दस रात्रि के अन्धेरे में दीवार पर फेक कर टुकडे टुकडे कर दिवा था। दूसरे दिन लाहौर पहुच कर वकालत की कक्षा में प्रवेश से लिया।

पहले ही पडने वाले रविवार उच्च पुलिस अधिकारी क पुत्र को ये लाहीर की आर्थ समाज के सत्सग में सम्मिलित हुए। इन्हें यहा ब्रह्मसमाव के सायकालीन सत्सन का पता भी लगा। अब ये नियमित कर से एक अवर्वसभाव में एव सायकाल ब्रह्मसमाच के सापाहिक अधिवेशनो में भाग लेने लगे। दो मस्लिम गायक जो प्रात आर्थ समाज मे प्रभु गीठ गारो से वहीं सामकाल को ब्रह्म गीत सुनाते थे। धवन माथन के उपरान्त आर्थ समान में जहा एक और पाँगणिक यवन इसाई मत साण्डन देशोन्नति करीति निवारण दलियोद्धार विभाग विकास का मण्डन एव दैनिक यह की प्रेरणाये सनने की मिलती भी वहीं दूसरी और इनको ब्रह्मसमाज के उपदेशक आचार्य की शान्त मूर्ति उनके इदय से सहज प्रवाही प्रेम रस मे रगे प्रभु प्रवित के प्रवचन बहुत अच्छे लगते थे। युवाकाल तक जीवन के 28 वर्ष जस्तिकता मे विवाने वासा तकण अब आस्तिकता के रंग मे ऐसा रगा कि और सब रग फीके पढ गए। इन्होने उस समय उपलब्ध ब्रह्म समाव की समस्त परतके क्रम कर लीं और 5 6 दिन तक उन्हीं की पहाई चलवी रही। महोराम जी आर्थ सम्प्रकी क्षेत्र या ब्रह्मसमाजी यही तय कर मुशाराम ने उसका रक्षा की। तत्क्षण पाना उनके लिए एक समस्या बन इनके मानस पटल पर स्वामा गई थी। ब्रह्म समाजी सम्हित्व को न्यानन्द की मनोहर मूर्ति उदय भवते हुए वे सरलवा से आगे वकते होकर इनस प्रहन करती है क्या जा रहे थे कि इक स्थल पर गाडी

अटक गई। सह सनाय के भट में क्रिकेट प्रोतकात की उत्पत्ति कीर कारी समा अपने का सिटीन इपकी अंग्रेस में नहीं करना हिनकी नवरतम् व्यक्तिकतः येग्रॅ सम्बन्धे के सिद्धानाभेष में क्लांस कर वास्तविकता के सिए मक्ल ठठी। अपनी शंकाओं को लेकर बच मुतीसम सकसमित के प्रमुख से मिले तो उन्होंने समाधान तो कुछ किया नहीं प्रत्युत अपने कारणी नेता बाबू केसव चन्द्र सेन व बाबू प्रताप चन्द्र मञ्जूभदार के प्रन्थों को पुडने का परामर्श दे दिया। इन सम पुस्तकों को तो मुसीसम पहले ही पढ़ चुके ने और इन्हीं को पड़कर शका तस्य हुए थे; फिन भला इनसे समायान कैसे सभव होता। मस्यिक को उलझन मे इन्हें फिर स्वामी हकानन्द का कह दश्य बाद आ जाता है बिसमे फदरी स्काट से पुनर्जन्म पर उनका बरेली में शास्तार्थ हुआ वा। इनको आर्य समाव के सस्मापक स्वामी दयानन्द सरस्यती प्रणीत सरपार्थ प्रकार्य नक्ते क सुअवसरक्षाय नहीं कुन्म नहीं सुनीराध

ने सीचा हो न हो महर्षि द्वानद ने

शत्सार्थ प्रकाश में आत्म प्रकरण

का वर्णन अवस्य किया होना। चे

स्मकी साज मे चल परे। रात्रि\_की उथेडकुन एव उलझन के बाद प्राप्त काल बिना कुछ खाए पिए प्रश्नासमान के स्थानीय प्रमुख काशीराम से मिलने के लिए निकले मुशीराम अपने डेरे पर वापस न अकर सीधे बच्छोवाली आर्थ समाज मन्दिर की ओर चल पडे। पुस्तकालय और उसका विक्रम विभाग कोई हर समय हो खुला नहीं रहका चपरासी ने कह दिया कि स्वरण केशवराम पुस्तकार्यक वी को अपने पर ब्री आपको पुस्तके मिल सकती हैं। मुसीसम ने उनके बर का पदा लिया और दो अप्टे वक्रमण के बाद उनके बर पर पहुच गणः केशव राथ भी घर पर नहीं थे। तसकर पर थे जहां वे तार मान का कार्य करते थे। ये तारघर का पता करके वहा भी पहुच गर्। तब तारकाषु मध्याहम शोजन के लिए बर का चुके थे। ये फिर उनके का लॉटे तो करबाबू केसबराम पुन तास्थर वा चुके में। पूकने पर कर हुआ कि तार वाबू की डब्टी केड घटे में समाप्त हो जाएगी सभी वे बर पर मिल सकेंने। मुंशीयम ने वह समय भी पुस्तकाष्ट्रक की की

प्रतीबा से गुली के जन्दर टक्स कर विद्या दिया। अन केशवरान भी से इनकी थेट हुई स उन्होत ज़ीये अपनी मान रख दी महाराध जी। मुझे सत्यार्थ जनात चाहिए। उन्होंने निष्य होकर का पीकर अस्मात्र मन्दिर कराने का सात कही। मुलीएम ने भूख प्यास मे बींत गए सम्पूर्ण दिन की कक्षाना उनको समाई हो केसवराम का मुख सहानुभूति से चमक उठा और रात्सन व मुहीरण को साथ लेकर आर्थ सम्बंद मन्दिर पहुच भग्न तथा उन्हें सत्यार्थ प्रकाश देकर अलोच प्राप्त किया। इस प्रकार मुशीराम को सन्मार्ग दशीं कोच विक गया। दिन भर सत्यार्थ प्रकाश के लिए वत उपवास का पूर्ति के बाद अब मुतीसम अपन आबास पर पहुचे तो रात्रिकालान भोजन परोसा जा रहा था। अब काननी परतको के अध्ययन के साथ साथ सत्यार्थ प्रकार का निवसित स्वाध्याय चलने लग एक रविवार की प्रमात वेला सत्यार्थं प्रकाश का अष्टम् केरिसास सामने है। मुत्तीराम सिर **प्रो हाम रख,** फर गम्मीर मुद्रा मे विकास मान हैं। तभी भाई सुन्दर द्वास उनके पास पहुच कर ब्रह्मसमाय के उनके हुकाय म अटकाव के प्रसंग में पूछ बैठत हैं। कहिए कुछ निश्चय हुआ ? पूर्व आस्वस्त मुशीराम ने उत्तर दिया पुनर्जन्म के सिद्धान्त न तय कर दिया है आज मैं सब्ब विश्वास से आर्थ समाव का समासद्भाग सकता हु। सुनकर भाई सुन्दरदास के मुख पर विशय चमक दौड़ नई जिसे देखावर मशीराम के इदय में हर्सातिरेका हो उठा। ये उनक साथ जब आय सभाव के सत्सन म पहुचे ता **उस समय चल रहे भवन के** ब्रोल उत्तर गण मेर मनदा ससा बाध तेस दर्शन पायो चरितार्थ को रहेथे। फिर क्या या सत्यार्थ प्रकाश का एक' एक अक्षर दीपक बन मुशीराम के जीवन को जगमग गया। स्वय स्वामी श्रद्धानन्द दीयक से दिनकर बन यए और गुरुकुण स्मापित कर महन्दीपको का जन्म देने लगे । वे पहले महात्मा मुसीराम

फिर स्वामी श्रद्धानन्द होकर विश्व

आर्य व्योग के उञ्जवल नक्षत्र

बल गए और दह धर्म पर बेलियान

ह्ये नम्।

सम्पारकीय....

दिसम्बर यस आते भी भर्में कई शबीदों की बाद आनी आरम्भ हो जाती है। जिनमें मुक्का रूप से अमर सहीद राम प्रसाद जी बिस्मिल का बनिदान 19 दिसम्बर को हुआ था और स्थामी ब्रह्मनन्द वी का बलिदान 23 दिसम्बर को हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द वी महाराज पंजन के रहने वाले थे और उन्होंने महर्षि दबानन्द सरस्वती के दर्शन किए थे। स्वामी जी का पहला नाम मुन्ही राम बा। इनका जन्म 22 फरवरी सन् 1857 में बालन्थर के पास तलवन ग्राम में भी लाला नानक चंद जी के यर हुआ था। इनके पिता श्री नानक चंद जी ईस्ट इंडिया कम्पनी के कृपा पात्र सहायक थे। इसलिए उन्हें पुलिस के उच्चाधिकार प्राप्त थे। जब कर उत्तर प्रदेश में सेवारत थे और जब वह बरेली में कोतवाल बे तो उस समय स्वामी दथानन्द भी के व्यासकानों का प्रबन्ध करने के लिए सरकार की तरफ से उन्हें आड़ा हुई थी। लाला नानक चद जी स्थामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों से बहुत प्रभावित हुए इसलिए उन्होंने अपने नास्तिक पुत्र मुली राम को कहा कि एक वेजस्वी बाल ब्रह्मचारी सन्पासी बरेली में पथारे हुए हैं। उनके व्याख्यान सुनने के लिए आप मेरे साम चलें तो मुंही राम ची ने पूछा कि क्या वह अंग्रेची जानते हैं। श्री नानक चद जी ने कहा कि नहीं वह संस्कृत के एक बढ़े सुलझे हुए किद्वान हैं तो मुन्ती राम जी ने कहा कि फिर यदि वह अग्रेजी नहीं जानते तो क्या उपदेश देते होंगे। परन्तु पिता जी के बार-बार कहने पर जब मुन्ती राम सभा स्थल पर गर्थे वहां स्थामी वी के व्याख्यान हो रहे थे। मुन्तीराम यह देख कर दंग रह गया कि वहां कई बडे-बडे अंग्रेज और तन्वाधिकारी स्वामी जी के व्याख्यान सनने के लिए उपस्थित थे। इन व्याख्यानों का भक्षी राम के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा। भाषण सुनने के पश्चात् मुन्ही राम जी ने स्वामी दवाकद जी के चरणो में उपस्थित होकर अपनी श्रकाओं का समाधान करना चाहा जिसे स्वामी जी ने स्वीकार कर लिया। मुझी राम जी ने ईश्वर की संचा पर स्वामी जी से कई प्रश्न किए और स्वामी जी ने बढ़े प्रेम से उनका उत्तर दिया। कुछ प्रश्न करने के पश्चाष् मुझी राम जी आवाक होकर बोले कि त्यामी जी आप ने मेरी जुबान तो बंद कर दी है परना मेरे इदय में अभी भी परमात्मा की संशा पर विश्वास नहीं हुआ। महर्षि बोले जब ईरवर की कृपा होगी तो उस पर तम्बास विस्वास हो कारगा। मन्त्री राग स्वामी भी से विदा लेकर घर चले आए परना उनके भन पर स्वामी जी के सन्दों का सदा प्रभाव रहा।

वहीं मुझी राम जी आगे चल कर महर्षि के अनन्य भक्त वनें और उन्होंने अपनी वकालत छोड़ कर अपना साग्र बीवन आर्थ समान्न की अर्पण कर दिया। प्रारम्भ में मुन्ही राम जी के जालन्वर और लाहौर दो कार्य क्षेत्र रहे परन्तु जब उन्होंने गुरुकुल खोलने का लाहौर में रहते हुए निक्षय किया वो उसके परचात 1902 में हरिद्यार की पण्य स्थली पर उन्होंने गुरुकुल कागडी की जगल में झोपड़ियां बना कर स्वापना कर दी और उसके परचात् अपना सारा जीवन गुरुकुल को अर्पन कर दिया। वह मन्सी राम से महात्मा मुन्ती राम कहे कमे लगे और कुछ समय के परच्चर कर सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के ऋम से सारे भारत वर्ष में प्रसिद्ध हो गए। सन्त्रस लेने के परकार वह गुरुकुल कांगडी को सुच्चल रूप से चला रहे में क्व गुरुकुल का कार्म अच्छी प्रकार से कल पढ़ा तो उन्होंने गुरुकुश का कार्य अन्य सक्रमोगियो को सौंप कर प्रकार कार्य आरम्भ कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने शुद्धि के कार्य को भी आरम्भ कर दिया। यह चाहते वे कि जो हिन्द मुसलगानों के ज्ञासनकाल में किसी दबाव में आकर व लौध लालध में आए। महर्षि दक्षमन्द सरस्वती की इन दो व्यक्तों को उन्होंने अच्छी प्रकार से अपनामा कि बच्चों के निर्माण के लिए गुरुकुल की स्थापन की जाए और जो हमारे भाई हम से विक्रुड़ कर विश्वमी का गए हैं उन्हें मापिस सामा जाए। इसके लिए वह रात दिन प्रचास करते रहे। ज्यॉ-न्यों उन्होंने शब्द के कार्य को रोज किया तो इससे कई मतस्यी मुसलमान उनके विरोमी, कन गए। स्थानी जी महाराज हिन्दू और

पुस्तकारों की एका के दून में भी कारण आते है इसीएन का उनक की को बात करने आपीति हों है में तो वह समझते हैं कि का कान उनका की किन्न है और अब वह भी पुन. हिन्दू कां में व्यक्ति का कां है कारों की एका में उन्होंने पुस्तकारों को हुए करके हिन्दू पूर्ण में प्रवेश करकारों मामस्वाद पुस्तकारों का वालों की का बहुत समाने किया करते हैं। इसी के परिकास स्वरूप दिश्लों की आप मन्तिद में कार्यों की की प्रविद्याल के हिन्दु अपीति किया गया भार अपीति की पहले और अनिमा हिन्दू के किए अपीति किया गया भार मानिवह की विकास की अपी किया हिन्दु की कियों ने दिश्लों की आप मन्तिवह की

स्वामी श्रद्धानन्द भी ने कुछ समय काग्रेस के साथ मिलकर भी कार्य किया। पत्राव में जलियावाला काठ के पश्चात एक खामोशी सी का गई भी और बहत भय पैदा हो गया था। किसी की हिम्मत नहीं प्रवती बी कि अग्रेज सरकार के चिरुद्ध कोई अपनी आवाज उठा सके। इस पर स्वामी श्रद्धागन्द भी ने अमृतसर में काग्रेस का एक अधिवेशन ब्रुलाने का जिम्मा अपने कपर लिया ओर उन्होंने अमतसर में यह अधिवेजन बलाया और उस के स्वागताध्यक्ष बने। काग्रेस के इतिहास मे सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना धावण हिन्दी में पड़ा बा। इसी प्रकार से 1010 में दिल्ली में भी जब अंतेम सरकार की ओर से कांग्रेस की समाए और जुलूस बद करने के आदेश हो गए थे तो उन समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक बहुत वहे जुलुस का नेतृत्व किया था। दिल्ली के चादनी चाँक में घटा घर की ओर आते हुए लोगों की भीड को जब अग्रेव सैनिकों ने रोका और अपनी संगीने तान लीं वह गोली चलाने 🗊 वाले थे कि स्वामी जी महाराज अपनी कुर्ते के बटन खोल कर सीना कन कर भीड़ को चीरते हुए निहल्पे ही अग्रेज सैनिको के सामने वा कर खडे हो गए और कहा कि पहले गोली गण पर चलाओ। किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह गोली चलाए। अग्रेज अफ़सर ने इस सारी स्थिति को जब देखा वो उसके इसारे से सैनिको ने अपनी सगीनें हुका लीं और जुलुस भारत माता के नारे लगाता हुआ आगे बंड गया। स्थामी जी महाराज बहुत बढ-वढ कर काग्रेस के साथ मिल कर कार्य कर रहे ने परन्तु काग्रेस की मुसलमान पोषक नीति को देख कर वह इससे दूर हट गए। उनकी यह भावना थी कि जितने भी मसलमान हिन्दुओं में से बने हैं उन्हें पुन: हिन्दू बना लिया जाए तथा हिन्दू मुसलमानों में एकवा स्वापित की जाए। जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है कि कई मुसलमान नेवाओं को यह स्वीकार नहीं था और वह समझते थे कि बदि स्वामी जी महाराज इसी प्रकार कार्य करते रहे तो बहुत से मसलमान हिन्द हो काएंगे इसलिए वह उनके कहर सब बन गए ओर उनको मारने की धमकियां दी जाने लगीं।

23 सिम्मा 1926 को ने कर सामी थी गहाया कुछ शिक्षण पर के में बाति शिक्स के दियों से कह कुछ राज्य परने आ रहे थे गरा हु। के माने कह कुछ राज्य परने आ रहे थे गरा हु। कह कुछ राज्य थे । इसी समय में अनुदान राजिर क्या का राज्य प्रसासका मुद्धि का ब्याना रोज्य उनके प्रमा शिक्स शिक्स के तरे हे प्रमा नो में के लिए उनके प्रमा का प्रमानी की में कहान ने उन्हें अप का में से के लिए तरे के प्रमा नो में के लिए उनके प्रमान के प्रमान के माने कि माने में ने कि प्रमान की माने के लिए तरे हैं अप का माने की माने की ना कहान कि हमें अने में उनके अनेक्श प्रमान की उनके स्वामी की का माने कि माने में माने उनके अनेक्श प्रमान की उनके स्वामी की का माने की माने किए तरे हमाने की माने कि म

इसलिए 23 दिसम्बर को स्वामी ब्रह्मानन थी का बलिदान दिवस है। हमें यह नहीं ब्रह्मा से मनन चाहिए और उन्हें अपनी ब्रह्मांवलिया मेंट करारी खड़िएं। क्योंकि महें हक्यान्त सरस्वी के प्रमाद किया काथ स्वामी ब्रह्मानन थी ब्रह्माय ने किया साथद ही किसी और ने किया हो। इसलिए इस स्थामी ब्री के बालिदान को कारी वहीं पूल सकेने।

-सरिवनी कुमार रामां, एक्वोकेट

समा महामन्त्री

### महान व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्वरानन्द

रकामा श्रद्धानन्द की प्रवासक

ले॰ भी उपनेश साल नी कार्य कार्य कार्य

एक महान छ्यक्तित्व के बनी थे। उनक जीवन को प्रधने से प्रता चलता है कि वह एक सर्वांगीण व्यविशत्व थाले व्यक्ति थे। वैसे तो उनक जीवन का मूल्याकन करना कोई साधारण बात नहीं है परन्त देश के बढ़ बढ़ नेकाओं ने उन्हें वा श्रद्धान्जलिया भेट की बी उन्हे पष्टकर अनुमान लगाया जा सकता था कि वह कितने महान थे। आर्य समाज क नेताओं न तो उनके शहीद होने पर उन्हें अपनी श्रद्धाजलि भेट की ही थी लेकिन दस विदेश के दसरे नेताओं ने भी ষ্ঠত কভ শিক্ষাথা। লকিন स्वामी श्रद्धानन्द जा महाराज केवल आय समाज के नेता ही नहीं थे वह एक राष्ट्राय नेता भी ये यही कारण था कि उनके बलिदान के बाद देश के बहुत से बड़े बहे नेताओं ने उनके सम्बन्ध में बहुत करह लिखा था जिनमें भारत क प्रथम प्रधानमन्त्रा प जकारर लाल नेहरू राष्ट्रपति हा राजेन्द्र प्रसाद का सरक्वार अक्रमट अन्सरी मारार बक्कभ भाई पटेल चक्कवर्ती राज गोपालाचार्य श्री मदन माहन मालवाब कविन्द्र रविन्द्र ठाकुर रम्ब मैकडानल्ड श्री सी एफ एण्डरेंस सरोजना नायह लाला हरदबाल पुरुषोत्तम दास टण्डन विनायक दामोदर सावरकर विनय कुमार सरकार चक्रवर्ती विश्वय राम्रवाचाय काक काललकर और इस प्रकार क बक्षत सारे नेवा लोग हैं जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपना सद्धावलि भेट करते क्रण अपन तदगार प्रकट किए हैं। किसा ने उन्हें मनुष्य जाति का महान पुनर्निर्माता बताया किसा न निभय चार सेनापरि बताया किसी न दलितो का उद्धारक बताया किसा न वारता ओर बलिदान की मृति बताया ।कसी ने निर्भयता का पुज बताया किसा न प्राणी मात्र का प्रेमा बताया किसा ने राष्ट निर्माता कसा ने चरित्र निर्माता कसा न सामाजिक और धार्मिक उद्धारकः बताया। **बह**त से नेताओ

ने स्वामी श्रद्धानन्द का के जीवन क्यारा बद्धानस्य जी स्काराज का श्रद्धाञ्चलि भेट करने वाले हमारे पना पव नताओं न उनक व्यक्तित्व प्र वहत बहा प्रकाश हाला। इमारे

कर क्यान किया है

रेल के नेकाओं ने तो अनके क्यो में बढ़त कुछ लिखा ही है लेकिन ब्रतानियां के मूतपूर्व यभी श्री रेम्बे मैकडानल्ड जो एक बार गुक्कुल को देखने के लिए भी आए में और स्वामी वी के फस ठहरे में बहा से वार्षिस लौटने पर डन्होंने स्वामी सी के विषय में अपने उद्गार प्रकट करत हुए लिखा थ

वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान ईसा की मृतिं बनाने के लिए कोई जीवित माठल चाहे तो मैं इस भव्य मूर्वि (स्वामी ब्रह्मनन्द) की और इशाय करूगा। बदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैंट पीटर के चित्र के लिए नमना मागेण तो मैं ठसे दस मर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करुगा। श्री रैम्बो मैकजानरू एक इंसाई मे इसलिए उन्हें उन व्यक्तियो की याद आई जिन्हें बढ़ ईसाई मत में सबसे कवा समझते वे इंसर्हियो में ईसा मसीह से बढ़ा कोई नहीं है और न ही हो सकता है इसलिए रैम्बे मैकशनस्य स्वामी स्टानन्ट जी महाराज को ईमा ग्रमीह के समान समझते थे और इसी प्रकार अपने एक महान पुरुष सेंट पीटर को भी उन्होंने उनसे तसना की। इस प्रकार स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज को चरित्र से यदि हम मुल्याकन करने लगे तो यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि कह क्या थे ? आज बहुत कम व्यक्ति मिलेगे जिन्होंने स्वामी ब्रद्धानन्द जी महाराज्य के दर्शन किए हो क्योंकि जाज स 69 साल पूर्व 23 दिसम्बर 1926 को यह हमारे से सदा के लिए विद्य हो गए थे। इस समय उनका साथा तो कोई विरला ही मिलेगा लेकिन गुरुक्त कागडी हरिह्यर के उनके कुछ शिष्य कुछ स्नातक ऐसे आब भी विद्यमान हैं जिन्होंने उनके चरणों में बैठकर विद्या ग्रहण की थी और वडी उनके जीवन का वास्तविक

में स्वामी ब्रद्धानन्द जी महाराज के प्रति अपनी ब्रद्धा के पुष्प मेंट करवे हुए यही कहना चाहता हू कि वह एक महान् व्यक्तित्व के धनी से और उन्होंने जो आदर्श कारम किया है उसका जलन करते हए ही हम उन्हें अपनी श्रद्धान्त्रलि भेट कर सकते हैं।

प्रत्याकन का सकते हैं।

19 विचानकर को जिलकर वरिष्यान है

### अमब ग्राहीह वाम प्रसाद विविमल



आर्य समाज ने देश जाति और अमान के लिए जो कार्य किया है जायद भी यज किसी और सस्या ने किया हो। आर्थ परवाने इसते इसते फासी के फन्दों को जून गए। समप्रसाद बिस्मिल भी उन पावानों में से एक हैं। यह एक कटर आर्थ समाची थे। फासी की काल कोठरी में बैठे उन्होंने को जपनी आत्म कथा जिसी है तसमे तनहोने स्पष्ट शिक्का है कि जब उनके पिता ने उनको कहा कि आर्थ समाज कोड दो वा पर कोड दो । इस पर उन्होंने घर को व्यकाल क्रोड दिया परन्त आर्थ सभाज को नहीं छोडा। सत्पार्य प्रकाश पढ़ने से वह आर्थ समानी बने वे और बीवन भर आर्य समाज के डोकर रहे। वह निर्भीक और निक्षर तथा साइसी नवयक थे मृत्यु उनके लिए एक सामारण सा स्रोल था। फासी की सजा होने के बावजद भी वह निहर डोकर अपनी आत्म कथा शिखवे रहे। उनको मृत्यु का कोई यम नहीं भा। वह मृत्युको मात्र चोला बदलना समझवे थे। यह बेल मे भी प्रसन्तित रहते थे।

वह यब प्रेमी वे प्रमाण के तीर पर आज भाउनका स्वन कण्ड नुसकुल झण्यर के सप्राहलय मे रखा हुआ है। फासी से पूर्व भी तन्त्रोने अपनी अस्तिम इच्छा में यह करने की अनुमवि मागी बी। वह वेदमन्त्रों का पाठ करते हुए फासी के तखते को चूम गए। उन्हें यदि कोई चिन्ता भी हो देश की आबादी की थी। न उन्हें परिवार की चिन्ता थी और न डी किसी और प्रकार की। देश की आजादी के लिए उन्होंने जो कार्य किया है वह स्वर्ण अक्षतो में अफित है। उनका बीधन

एक प्रकास स्टान्म है । नवनुषकों के लिए उन्होंने जो सन्देश दिया है वह पुस्तक कप में प्रकाशित किया जा चुका है। सचमच डी यह महान सन्देश है वह चाहते थे कि भारत का प्रत्येक युक्क उन्हीं की शरह ब्रह्मचर्य का पालन करके क्लवान बलिप्ट और देश पक्त बने।

उन्होंने किसी बेकसूर और निरपराध व्यक्ति पर कभी गोली नहीं चलाई। उनका निज्ञाना हो केवल अग्रेज वे। काकोरी उर्कती में भी दन्दीने लोगो को चिलका चिल्ला कर कहा था कि कोई भी व्यक्ति गाउँ ये तीचे न जाने प्रध कियी भी कपी को करू न कहेगे। इमने तो केवल हथियारो के लिए सरकारी खजाना लटना है। यह आतंकवाद फैलाना नहीं चाहते थे हा अग्रेज के कानो तक यह बात जरूर पहुचाना चाहते ये कि बह भारत छोड़ कर चले जाए और मारत को स्वतंत्र कर दे अन्यया उन्हे गोली का निशाना बना दिया जाएगा। उन्होंने जो कुछ किया देश की

आवादी के लिए किया। यह देश

भवित का पाठ उन्होंने आर्य समाज से पहा था। उनके अमर बलिदान के बाद देश आभाद हुआ परन्तु आज फिर देश की आजादी को खतरा पैटा हो गया है यह अहजाद' इन सहोदो की घरोहर है क्या आज का युवक इन शहीदी से प्रेरणा लेकर देश की आजादी की रक्षा के लिए आगे नहीं आएगा? आज कुछ स्वाबी लोग देश के फिर टुकाडे कर देना चाहते हैं । क्या देश भक्त युवक इसे चुप चाप सहन करते रहेगे जो कुछ आज काश्मार और दूसरे स्थानी पर हो रहा है पाकिस्तान ने अभी अभी कारगिल मे मुसपैठ करके जम्मू काश्मीर क एक हिस्से को भारत स अलग करन का प्रयास किया जो भारत की सेना ने विफल कर दिया। अनको सहीदो के बलिदानों से प्राप्त हुई इस आबादी की रक्षा फरना प्राचेक मौजवान का कर्तका है

आव आवश्यकता है फिर भारत को सरदार भगत सिक्त सैसे गामचार विस्मित जैसे चन्द्र शेखर अबबाद जैसे नौजवानों की यो इस प्राप्त हुई आबादी का रक्षा कर सकें और देश द्रोडियों को मध वीड उत्तर दे सके।

-धमंदेवार्यं, सह सम्पदन

## साक्षी है दिल्ली का घण्टाघर चौक

**डिं॰** पुच्या महाजब, जोलहोड, बुस्बा<del>व</del>पुर मानो प्रचण्ड हो भारकर सा सह सहम छठे यह स्वय देख कैसा अनुपन यह दिव्य स्तय

विल्ली का चौक घण्टाघर इर्व-गिर्व खडी बिल्डिगे जब होते हए भी जैसे सामाच क्रियालय हो सक्रम नयन रखने वाली वह वडता का साकार निलय आ रहा है जन प्रवाह बहरा कितना कर्मठ कितना कठोर उपडते सागर सा प्रत्यक्ष विश्व हो लरजते बावल सा वास्था का संस्कृति । पुकारता बोल स्थामी अद्धानन्य की जय । गोरका प्रहरी हो गया **हिन्द्** मुस्लिम सिख ईसाई e768 एक ही स्वर एक ही लक्ष्य मवित्त विदेशी शासन से बरक चर्च अत्पाचार के विरुद्ध एक आवाज एक पुकार यह शासन जोरो जुल्लम का तानी नगी छाती नही चलेगा नहीं चलेगा पारस के दिल ने लगार्च मुहार गुंजे धरती और सासमान। नगर सारा भयाकान्त थग यंग तक होगा शासन का आसन ओल चठा अपर अपय। अब क्या होगा ? वह देश धन्य अन का आकोश बजा निर्मम वह जाति बन्ध सह ज्यार महासागर का है विस्फोट महा पर्वत का है। साकी है विल्ली का चौक घण्टाघर

घवराया शासम का प्रहरी कम्पित उसकी कावा सिहरी भावी का भयानक रूप देख तीधी कर वी बन्दक उधर सब के दिल शक वक वक व सबके बाजू फडक उठे देखा निर्भीक सन्यासी ने मुख पर उपरा रक्तिम विवेक ले भार कह चठा नर शार्थल मृत्यु का ऐसा अभिनन्दन ? षा रूप रह गया स्तब्ध काल **नावी** भी काप चरी कुछ क्षण यह मनुज नहीं यह मृत्युञ्जय जिसमे ऐसे मानव अनन्य किर गुज उठा इक कलक सा जनता फिर से हुकार उठी चहु दिशि से गुजी एक ध्वनि बोल स्वामी श्रद्धानन्त की जब

## वसिदान

शासी है

दिल्ली का चौक घण्टावर

जन समुष्ठ का नेतृत्व

यह कीर यशस्त्री योगी सा

है महत काय और भव्य भाल

कर रहा कौन ?

*च्यपिता-स्थानी स्वरक्षपानम्ब सम्बवती. विल्ली* कर गए प्राणो का बलिदान स्कमा ब्रद्धानन्द सन्यासी। तर्जम दिसम्बद्ध आवा । श्रृ ने वार चलाया। भरती पर वर्ड लहु लुहान स्वामी श्र**द्धा**नन्द सन्धासी *॥*१ # सीने पर गोली खाई। निव तन की भेट चढाई ह दे गए जन हित अपनी जान स्वामी श्रद्धानन्द सन्वासी ४२ ॥ ज़िंद की रौति चल्का । भारत की शान बढाई ह कागी ऋषियों की सन्तान स्वामी श्रद्धानन्द सन्वासी ॥३॥ गुरुकुल खोल दिखाना। समवा का पाठ पढाना व चग से मिटा दिशा अञ्चल स्वामी श्रद्धानन्द सन्वासी ॥॥४॥

#### स्वाभी श्रद्धानन्त वीर बसिदान ले॰ भी साचपाल 'पविक' असतसङ

स्थामी श्रद्धानन्द बीर बलिदानी ओ तेरे तो जमाना सदके। बैठी दिला विश्व तेरी कुबानी ओ तेरे तो जमाना सदक॥ पिले जो बरेली विच ऋषि दयानन्द सी।

मिट गईंथा सका सब मृह होया बन्द सी। आई सोचा ते विचारों च रवानी। ओ तेरे तो जमाना सदके स्वामां श्रद्धानन्द जगला उजाडा विच गुरुकुल खोल के। शिशा गवाची होई लभ लड टटोल के।

आदी मोड के तु सध्यता परानी। ओ तेरे तो चपाना सदके स्थामी श्रद्धानन्द सच दीया राहवा उत्ते पैर त बधाया सी।

गोलिया दे अग्मे सीना तान के बखाया सी। मोटे अखर च लिखी ए कहानी। ओ तेरे ताँ जमाना सदके स्वामा श्रद्धानन्द

मजहबी दीवाना इक गोलिया चला गया। पविक शहीदा विच ना तेरा आ गया। वारी देश उत्तो सारी जिन्दगानी।

ओ तेरे तों जमाना सदके स्वामां श्रद्धानन्द

#### (पृष्ठ 1 का शेव)

हिन्दू धर्म को त्याग कर विधर्मी 23 दिसम्बर का प्रतिवर्ध हम हो गए भाईवों को फिर से शब्द उनका बलिटान टिक्स सनाकर आर करके हिन्दू बनाने के लिए महात्मा श्रद्धावलि देकर अपन कत्तव्य का जी जो शब्दि आन्दोलन चला रहे इतिश्रासमझातत हं हम सबका थे उस समय उनस रुप्ट होकर बैठकर यह भी विचार करना चाहिए उनको अनेक धमकी भरे पत्र भेजे कि स्वामी दयानन्द स्वामी ब्रह्मानन्द गए। अनेक लोगो ने महात्मा जी से की पवित्र वेटा पर खंड होकर क्या कहा कि आप अपनी जान जोखिम हम स्वय उनके आदर्शों के अनुरूप में डाल कर क्यों इस आन्दोलन म चल पारहे हैं? अगर नहां ता पडे हैं तब महात्मा जी ने कहा बसो 2 कहा कमा ह हमार चरित्र क्या हुआ जो धमकी भरे पत्र में हम स्वय आ मनिराक्षण करना चाहिए

आते हैं जब परमात्मा मेरे साथ है दनका वरद हस्त मरी पीट पर है वब उसका वेद जान मेर साथ है जब ईश्वर पर मेरा दुढ विश्वास है जब मेरा पश्च सत्य है तो मझ किसका भय ? मझे किसकी चिता? सारा ससार भी मेरे विरुद्ध हो जाए वो भी में वैदिक प्रकार से पीछे नहीं स्ट्रगा । ऐसे दृढ़ निश्चयी च हमारे स्वामा श्रद्धानन्द जी।

भाईयो अगर धम योगा स भाइस विषय पर विचार कर र और अपन आप को सुग्रान्तर आञ्चिष का बताप्हण्मगका अनसरण कर ले तथ 23 निसम्बर का स्वामा भा का बलिदान दिवर समाना तनका आरमा को सार ब्रद्धाजीन दना श्रीग

### कलैण्डर शीघ्र मगवाए

मध वर्ष 2000 के करीण्डल क्षप चुके है इस 🔭 😁 मदानुभावों ने करीएउच मनवाने दों भीप अति शीध मनवा लें मरूप 200/ कपये प्रति सैक्डा है।

**– अत्रिक्ती कुमार शर्मा एडवोकेट** (सभा महामण

### ब्रुधियांना में मायत्री महायद्वा

स्त्री आयं समाज महर्षि दथानन्द बाचार लुधियाना मे विश्व सान्ति गायश महायत्र प्रतिवर्ष की भान्ति समारोह पूर्वक किया गया।

23 नवनम्बर प्राण 5 20 अवर्षं समाज स प्रभाव फेटा पिकाशी गई जिसस बहुत से फोर्ड बक्तो ने धान दिसा आदि के जरकारों को गुकारी हुद गराने धानांग म होते हुए गीव गात हुए दस्तवन आर्थ का घर बक्तावा गात प्रहा जस्त्राम के बाद जनकारों बहुनों का धानांग स्वकार्य बहुनों का धानांग स्वकार्य कहाने से आर्थ समाज के सभी गांधीन का धानांगा रक्ता हुए

24 नवम्बर दोपहर 2 बजे यज श्रद्धापूर्वक शुरू हुआ स्वामी बगदीश्वरानन्द जा द्वारा समील कुमार सद प्रभा जी सुद से यहारिन प्रज्ववित कराई गई। प्रतिदिन 4 कडो पर 16 सबमान बडी श्रद्धा स आहतिया ठाएते रहे 108 आहति यायत्राका होती रही। स्वामी औ न गायत्री का महिमा का वर्णन करते हए कहा ओउर शब्द जैसा कोई दूसरा प्रभू का ना । नदी है न यह एक वचन न बहुवचन न पुलिय न स्त्रीलिय बहुत ही सुन्दरतास भू भूव स्व का अर्थ सव् विव् आनन्द विस्तार से समझाया और इमे अपना उच्चारण कैस शद्ध करना चाहिए यह बताया और कहा कि प्रथु को समर्पण का भावना रख कर यद करना भाक्तिए सभा न मुक्तकण्ठ से स्वामी जा क उपदश को सराहा। ब्रद्धेय सुमनायति जी के सरक्षण मे सब कार्य चला उन्होन भी मनुष्य जीवन का अमूल्यता पर बल दिया ऑर कहा प्रभु की ज्ञाया ही अपृत है हम उसा क नीच रहना चहिए।

 बहुत की सुन्दर चनन सुनाय उन्होंने कारा कि उन्होंने करानी के कसीरत का बद आए उनकी करीरत आक स्कूलों में मता का नाम भी रिक्शा माने लगा भारतों पर अपिने बहुत कुमा की उन्हें उन्हें से उन्हां स्थान माया है। तथा को चीन दिन लगावता करें। में भी सरसान का आयोजन किया गया स्थामी भी के अवर्यान की कृते हुए सबनों से परिसारों में बहुत कहा कही।

समापन समारोह महिला

सम्मेलन मे भारी सकक मे भाईयो व बहनो ने भाग लिया इस सम्मेलन को अध्यक्षा माननीय बहुन मासूरी **गोगमति अमृतसर से पदारी भी**। यत्र महिमा पर प्रकास ढालवे हए स्वामी जी ने बड़े सुन्दर बग से पूर्णाहृति डलवाई। यजमानो को फल राधा फूलो से आसीर्वाद दिका। श्री विजय अपनन्द जी नम्रताजी सोनी के मकन हुए। तत्पश्चात् आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कल की बिष्वयो को सम्मानित किया गया इन वरिष्यमा ने सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा से भारतवर्ष मे प्रथम तथा दितीय स्थान प्राप्त किया प्रसम सरिता प्रेम शक्ति दसरे स्थान पर रजनी बाला सत्यार्थ विसारद में दूसरे स्थान पर रहीं । इनकी प्राचार्या श्रीमती कान्या सुरी जी व रजनी को माननीय प्रधाना जी स्वामी समनाबंधि बी स्वामी जगदीस्वरानन्द जी तथा राजेश जी ने स्वी अवर्ष समाज की ओर से टाफिया प्रदान की । तालियों से माल फिर गुवा माधुरी वी ने इनकी बहुत प्रशसा की। जनकरानी आर्थाने कड़ा कि इनकी अध्यापिकाए भी सम्मान के योग्य हें हम उन्हें भी सम्यानित करना चाहेगे। सब को बधाई दी।

अन्त में समादरणीय अध्यक्ष में का बढा ही सारार्गित प्रकचन हुआ क्रिसमें उन्होंने माताओं को कर्षाओं में अन्तरण करणा तथा करणों के निर्माण पर चल दिया हम सुक्षेंने चग सुक्षेण कड़ते हुए मोहिराकों का बहुत ही सुक्स हम में उन्होंने क्या और कड़ा कि हमें मिर कर अगो बढ़ता है। अन्नर्थ स्ताब के प्रधान जी मध्यक्षत एवं य अगे दुरेल, जी सावश्री का पूछ स्तावों ग्रह्मा क्यों मात्रक्षत चंद्र य श्री सुरेल, जी सावश्री का पूछ

### आओ संगठन को अपनारों स्वीता-सारी स्वस्थान नी सरस्त्री, विर्त

आओ संगटन को अपनारं। इस अपेना करें दियों का येन झाम के झीप जानाये आओ सम्गटन को अपनाये।

वन वर्ग मुक्का कमाने भूते साकारे बोर कमूले मोते वोग्य अधिकारी क्रेस्ट वर कथाया मार्च बाता मेही । पाकारों में कहा कहा कहा आहित को भोग सम्बादी आजी बस्तका की अस्तवारी । स्वार्यिकी मीतिकारा आकर सकारी मार्च कथारे हही। गुरुवीती में हुट पड़े कुम्बी मार्च की त्यस्तवार स्ट्रीश बेर पुट की बार्ड पाक्स करनी करनी बहुता मुक्कार

आजों सामाज्य करे अपमायं 121 अधिमाल्य में चूच द्वार और स्वत्यक्की घरचार आही। विस्ताय के मरमार ही रही माधिमालया से रही अमाडाई। होगी है किम साम यहा आम लूट हत्याये आजों समाज्य की अस्मायं 1151

स्तुरसम् स्तुरस्य चीर् बहाडे करूरे है गडबढ घोटाला। विग विगम अब स्तुरस रही है जन में सर्ववास की ज्याला। यहा स्वक्रपाबन्द बाउजो कही किसे कैसे सेमझायें आजो समाज्य को अपकार्य 141

## महर्षि दयानन्द पुणे प्रवचन 125वां स्मति समारोह

महार्थि स्वानन्य सरस्वती की महार्थि स १८०५ में पूर्ण में महार्थि स १८०५ में पूर्ण में मध्यपूर्वि रानरे के निमञ्ज्ञण पर पश्चारे से रहा उनके ठेड महीने तक आव्यक्रम हुए व्यक्तवानों के स्वाचन पर 5 सितम्बर 1875 को स्वानी जी महाराख की क्षक्य होंगा यात्रा निकरली गई सी लिसने इक्बारों पुरेवासी सहपानी हुए से ।

इस ऐतिहासिक पुणे प्रवचन की स्मृति में पुणे की समस्त आर्य समाजे की और से भव्य स्मृति समायेह मनावा जा रहा है। इसके अर्र्गात दिकक 23 से 26 दिसम्बर 1999 तक विशेष सम्बर्गेह का

आयां ने सभी मार्चयों का कार्य में सहमोग देने वाली अहमों का अर्थ हुई सभी बहमों का हार्दिक उन्पाद किया। मानगीय प्रथाना हुआ जी तमां ने बन्नक जी का सब शाद हुए श्रादीवर्षों का शामार प्रसाद किया कथा धन्यवाद किया। प्रसाद किया कथा धन्यवाद किया। आयोजन किया जा खा है
किसमें पच्च होगा सात्रा एवं 3
दिन तक चलने वाले इस
सम्मर्धेंद्र के स्तान अलग सात्रो
में ग्रह की सार्मिक साव्यक्ति
सम्मर्थान को लेकर विशेष
सम्मर्थान को लेकर विशेष
सम्मर्थान को लेकर विशेष
सम्मर्थान को लेकर विशेष
सम्मर्थान का आयोजन किया
के इस कार्योजन के अर्था चला है इस कार्योजन के अर्था चला के महान् विद्यान उपलेखन पज्जों निमर्गित किया गाँव है। आर्थ कथ्यु अधिक से अधिक सक्का में प्रधार कर कार्यक्रम की सोगा

-क्रमा चन्द्र आर्थ

#### आर्व समाज के अश्वक सेवक श्री पण्य ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी

ले॰ भी प्रेम मळिया जी सभा उप प्रयास (बक्तिण्डा) लिए तैयारी आरम्भ हुइ विश्वमें खापके उपन संख्या के अथक सेनक

ब्री ओमाञ्चल खन्तस्यी नी का कम 10 मागसीय 1974 विक्रमी तदानुस्तर 1917 व में वम्बमन्दी बिला बठिएका (पण्डम) में हुआ उनके पिक्ष भी का पाम महाराथ रीनक सिव समा माता का कम श्रीमती सन्ती देवी था यह दस चुन की बात है जो

काम समाज का स्वन मुग कहलाक है । वर की आय में श्रीओमप्रका वा का मुण्डन सस्कार स्वामी स्वतनान्द्रकी द्वारा हुआ तवा ८ वर का आब में ही पहासब रौनक सिंह वाकी आकासे थे प्रतिदित आव सम्बन पन्दिर में फ़ाबू लगाने वाते वे यञ्चलाला मे आसन विकला पोचा लगाना तथा पश्चात् इकन सन्वया में सम्मिलित होना इनकी दिनचया का

मुख्य अग वा सन 1931 इ. में इन्होने कद मिहिल पास किया तथा आर्थ सम्बन के महान सन्वासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जा का सान्तिक्य प्राप्त किया उनका प्रेरमा से आप चीरदल व आप कुमार समाकास्थापनाका सन् 1938 39 में आथ सत्वाग्रह हैदराबाद के गया जो का में बद हो गया

पूज्य पितामी भी रोजक सिंह भी मी महाराय खुराहारा चद भी के साथे में सामिल डोकर बन्दी बने और गुलवर्गी जेल में रहे स्वामी स्वतंत्रानन्द सरस्वती भी के आदेतानुसार आप चेल से बाहर रहते हुए बन और धन का सहयोग करते यो: रामा मण्डी वो कि उस समय एक छोटी सी भग्दी थी सबका सडबीग लेकर आपने जब्दा से उर्वस्क

बन और थन सत्याग्रह के लिए भेज

प्रत्येक तमेका को एक-एक दुनरन पर ऋथर आपने हैदराबाद सत्वाग्रह के लिए सहावता बुदाइ आन महिलाए वर वर व्यक्त एक एक मुद्री आद इकट्टा करवी वीं सन् 1949 इ मे अतर्व समाव की और से स्वामी स्वक्षत्रागन्द आब इह स्कूल कुरू किया गया ओप प्रकाश वीटस स्कूल के कद वर्ग तक प्रवन्धक बने रहे और 1955 इ. में स्वामी स्वतन्त्रानन्द की का नियन होने पर आपने उनकी याद में आर्थ कालेब बनवाने की प्रतिज्ञा

की और 1956 में कालेफ चलु हो

सन् 1957 के बिन्दी सरकाग्रह वो पूरे प्रवास में बोर शोर से चल रहा या आपने कड चड कर भाग लिया तथा बन्दी बनकर पटियाला बेल भी गए। श्री ओमप्रकास सी जार ऋषि दयागन्द के पूज अनुवाबी और सच्चे इस्तर भवत वे आर्थ संहित्य का अर्थ नियमित रूप से स्वाच्याय करते थे सन् 1960 ई अवस्त मास में अपने पैतृक गाम तलवण्डी सान्रे (दमदमा साहिन) में शोपडी बनक्कर गाम से 2 मील दूर खेतो में आप एक मास तक रहे और वहा पर पातम्बल्धि योग प्रदीप (ब्री ओमानन्द जी का माध्य) एवा और गायत्री मन्त्र का अर्थ सहित

बोगी प्रवृति के व्यक्ति बे पुत्रवं श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी एक सच्चे और स्वाभिमानी व्यक्ति में मूं तो उनका पूर जीवन जार्च समाज के रग में रगा हुआ था परन्तु आप में कुछ विशेषकाए ऐसा भी मो प्राम देखने में नहीं आता आर्य समाज रामामण्डी के आप 20 वर्ष से कपर मन्त्री रहे और

चितन करते रहे चास्तव मे आप एक

पतिनिषि सदस्य खे उस समय आय समाज की मता गतिविधिया इस प्रकार रहा 1 आव समाज में जलसे की सुजना की मनादि आप स्वय करते थे

2 किसी आव पर्व पर प्रभात फेरी का प्रोग्राम आप एक दिन पहल सनको बताते और प्रात 4 नव सनको तरात से

3 मन्त्रा का पद रहते हुए आप सेक्क का काय था करते रहे

इन सभी कार्यों मे आपक पञ्च पिताओं महाराय रौनक सिंह जा को पुरुष ग्रेरणा होती थी जो आपके ग्रेरमा के मुख्य मोह वे आपका पित भक्ति प्रशसनीय और अनुकरजीय थो. पृष्ण पिताबी क निधन स का दिन पव वस आपका आयु 46 वन का या आपके पूज्य पिताजी ने आदेश दिया कि 60 बंगका आयुक्ते बाद 6 व बद मे आपने वर गृहस्था को छाडकर वानप्रस्थी जीवन ब्यतात करना है और मृत्यु पयन्त आव समान का प्रचार प्रसार करना है

आपने अपने स्व पिता का इस अन्तिभ इच्छा को पूरा करन क लिए उनका मृत्युका ५ वय पश्चात् सन् 1978 में अपने गृहस्थात्रम जिसमे आपक दो पुत्र व पुत्रिया है को पूज करके अपना पत्ना श्रामता परमञ्जर देवा का को साथ वागप्रस्थातम का ग्रहन किया और एक सम्पन घर बार को छोडकर गरुकुल बढिण्या मे वानप्रस्वासम का लोका लेकर रहन लगे और सब से आप आमप्रकास जा बानप्रस्था के रूप में विख्यात हुए

सन् 1978 इ. से लेकर अपनी मृत्यु पयन्त पूज्य क्षतप्रस्था जी लगभग 21 वय तक अधात् 17 नवम्बर सन् 1999 तक इसा गुरुकुल में रहे इस दौरान आपने इस क्षेत्र को अपन्त्र प्रकार केन्द्र बनाकर आब् सम्बद्ध का प्रचार प्रसार किया जिसमें बठिण्या शहर के अतिस्थित इबजली संगरिया इनुमान गढ कालाबाली परिलंबिगा मण्डी बढलाहा बरेटा वाखल तलबन्हा गोनियाना गिदंबबाहा के क्षेत्र शामिल हैं

समाज मे फैली बुठ्यमों को रोकने के लिए आप समाज के सस्थापक महत्रि दयानन्द सरस्वता द्वारा चलाए गए अभियान को आप अपनी अन्तिय रुवास तक लहते रहे

पञ्च ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी का जीवन एक आदश वावन रहा विससे प्रेरण लेकर अनेक लोगों ने अपने जावन को ब्रेच्ठ जीवन बना लिया और आज जब पुष्प जनप्रस्था जा हमारे बाच मे नहीं है उनका याद इम सब के दिलों में समाइ हुइ है

पुरुष कानप्रस्था भी को लेखन का भक्कत शौक था व सदेव अपनी कामरी में कुछ न कुछ लिखते रहते थे 21 वप के वातप्रस्थ बाका में आपने कड़ छोटी छोटा पुरसके मा लिखी जिनमें इस क्या थ वया हो गए शिकाप्रद रोक्क कवाए (दो भाग) विश्व विशवधारा जाय

समाज कलमुग नहीं कर युग आदि मुख्य हैं वास्तव ॥ मानव तो सभी हैं परना सच्चा मानव वा ही है जो मानवमात्र के लिए अपन जीवन अपित कर देता है और जावन को आदश बनाकर स्वय को अगरता का अधिकारी बना लेता है यह सब है कि पूज्य कानप्रस्था वा जाब हमारे बीच मे नहीं रहे परन्यु उनका बाद उनके सस्य प्रचनों के रूप में आब भा हमारे दिला में समाइ हुए हैं और हमें यह महसूस होता है कि जानग्रस्का को आज भा हमारे मध्य में हैं आज हम सभा अहर बना का कत्तव्य बनता है कि हम उनके बैसा त्यागमनी और उच्च जावन जावें जिससे कि ऋषि दयानद द्वारा देखे गए स्वप्नो का क्रम भा वानास्था जा का तस पूज करन में अन्तिम रचस तक बुटे रहे।

यही अमरी सच्चा ब्रद्धाजला होगा कि हम पूजा बानप्रस्थी जा जैसा त्यारपूर्ण और सच्चा जावन संबे



समीतज



(इस सभी प्रेस से निवकट पर्ने तथा सभी झानी को हुए अपने पर्वतों की स्थित कर्ताओं का प्रकार करें।



अभर हुवात्मा स्वामी श्रव्हानुन्य **विद्याहर किस** समारोहें



## जिला आर्य सभा लुधियाना

के तत्वावधान मे

रविवार, 26 दिसम्बर, 1999 को छात: 8.30 को से 1.30 को तक जार्च कालेज (गुरुव परिचर) सिविश लाईन्क, सुचियामा में मजाया था रहा है।

अध्यक्ष मान्यवर श्री पं हरबस लाल जी सम्बं प्रधान आर्य प्रतिनिधि समा प्रधान

मुख्य अतिथि श्री अश्वनी कुमार जी शर्मा एक्योकेट महामन्त्री जार्व प्रतिनिवि सभा पजाव

विशिष्ट अतिथि श्री सुनील जी तलकाड (सिटी केडल) आमन्त्रित विद्व न पुण्य स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती (करफाल) स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती (करफाल)

श्री विजय जानन्द जी (फिरोजपुर) कुमारी नम्नता सोनी एव आर्य कालेण की छन्ताए

## \*\*

11 कुण्डीय यज्ञ जात 9-30 से 18-30 बजे तक

पूर्णाहूति एव आजीर्वाद १०-३० से ११-०० बजे तक

ज्योति प्रज्जवित्व ११-०३ बजे द्वरा श्री सनील जी तलबाह

अञ्चन एक सरीत 11-10 से 19-00 हुने तक

प्रवत्तन 12-90 से 1-38 बजे तक

ज़बि लगर 1-3**5 वजे (योगहर बाद)** 

## आप सभी परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सम्मिलित डोकर वर्म लाभ वटायें तबा समारोड की शोधा बढावें।

निवेदक राजेश शर्मा (प्रधान) विजय सरीन (महामन्त्री) रणबीर भाटिया (कोषाध्यक्ष) सहयोगी समस्त आर्य समाजे, स्त्री आर्य समाजे एव शिक्षण सस्वाये जिला लुबियाना।

सौजन्य श्री एन एस भेल्ला, ग्रीन पार्क, लुधिवाना।

## जिला आर्य सभा नुधियाना



2277, की दुशनकात्मक की बुक्कुल कांचडी विक्वनियानन सरिवार (सलप्रक्रोक)



वर्ष 50 ओक 39, 11 फैंग सम्बद् 2056 रुट्सार 23/26 दिसम्बर 1999 देखनन्दाब्द 175 वार्षिक सुरूक 50 रुपये आवीवन 500 रुपये

## बद्धा एवं त्याग की मूर्ति खामी बद्धानन्द जी

भी कृपक्रीतृ भी शास्त्रिय, सम्मा क्यात्माम (स्तृतिसम्मा) महापुरनों का जीवन व सन्देश एक अध्यापन का ही पक्षाय था विक्य तक प्राणी मत्र के लिए

सारे विश्व तथा प्राणी मात्र के लिए कल्बाणकारी-हितकारी एव मार्ग दर्समीय की भावनाओं से ओत-प्रोध होता है। महापुरून किसी देश-धर्म-बावि-सम्प्रदाय से सम्बंधीर होते हैं। ऐसे ही महाशुक्त परम्पर में स्वाचीनता के कर्जधार, महर्षि दखनन्द के सक्ते अनुवायी, आत्म उन्नवि के पथ प्रदर्शक, सुद्धि सुदर्शन के चक्रधर, गंगा के ठट पर क्से गुरुकुल के पगीरब, द्वितोद्धारक, दौन-अन्नथ-पलक-धार-वीर-सन्वासी स्वामी ब्रद्धानन्द का स्थान अद्वितीय है। चकील मुन्ती राम (स्वामी ची का प्रथम ग्राम) जी की गानसिक तथा बीक्षिके चेदक का कागन ऐसा ही था जैसे किसी उंचे पर्वट की फोटी से एक नवीच्यारि का फूटना। नवीन चेराना के उस झरने से देश प्रेम, जन कल्बन की जल बारा फूट निकली शी। यह स्वर भीर-भीरे विकालिक से उत्तरवी गंया की भारा की मारि पर्वतीय प्रदेश से कल-कल करती इरिक्कर में आई से उसका फट फैलने लगा तथा गुरुकुल कांगकी विश्वविधालय के रूप में विधासित होकर विस्व में विस्त्रात हुआ। स्थानी ब्रह्मकट बी ने गुरुकुत बट घृश्व को अपने स्वयः से सीचा या। इस गुरुकुत की स्वापन के लिए उन्हें को कब्द आपियों तक कठिन्हमाँ का सामन करना पदा मेरी लेखनी में उतना मल नहीं को लिपियद कर सके। महर्षि दबानन्द बी क्रस प्रतिपादित शिका भिति को पूर्वकष देने के लिए क्षे वर्ग कार्य क्षेत्र में आपने सामने डट गए। एक वर्ग की अनुवाई ला. लाबका राम, लाला लाल बन्द एवं महारूप इंसराम की करते थे। मो त्था का मान्यन हिन्दी संस्कृत वेद बेद्यंग तबा प्रचलित शिक्षा पद्धति थाधुनिक सन-विद्यान, एवं अंग्रेजी रखना चाहते थे, तो दूसरा पहा हिन्दी-संस्कृत एवं थेद वेदोंग के अध्ययन

इनमें लाला रता राम एवं लाला मुन्ही एम अग्रजीय थे। महर्षि देव दवान-द की शिक्ष-प्रस्ति पर सुधारवादी स्मानिक की तीका महाना की की प्रवेप जान 1886 की की में प्रवेप स्वाप एंगो वैदिक कुल (डी.ए.फी) की स्थापना हो कि काला मुन्ती राम के होन्द्र मतानार गहरे ने जनतः 1896 में प्राचीन शिक्षा-प्रणाली को पुनर्वावित करने के तिए जान्दोलन आरम्ब कर दिया। उन द्वारा शिखे लेखों ''सन्तरों को आर्थ क्यों कर वन्त्र सकते हैं?" (ची ला. मुन्ती राम ने अपने पत्र संबर्ग प्रचारक में लिसे थे) से गुल्कल तिसा पद्धति को जन सम्बद्ध का ज्वापक समर्थन प्राप्त हुआ। इस पांति शिक्ष पद्धति का वह जान्दोलन वर-वर में पहुँच गया। इसका वह परिवास हुव्ह कि आर्थ प्रतिभिन्नि सभा पंचान के 26 नवन्दर 1896 में गुरुकुश स्वापना सम्बन्धी प्रस्तान पारिष्ठ कर दिया। इस योजना को मूर्त कप देने का कार्य ला. मुन्ती रामे को सौंपा गया। सर. मुक्ती राम की ने इस कार्य के लिए जीवत अभवति को हन्हा करने का संकल्प थी सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने लगभग 9 मह के १६ प्रथलों के परिणम स्वरूप वाप्रैल 1899 में 40,000/- रूपया एकतित कर लिया वा। गुरुकुल की स्थापना हेतु स्थान ला. मुन्ही राग पर्वतों की गोद में नदिओं के संगम तट पर बूंड रहे वे परन्तु उपयुक्त स्वान की स्त्रोव पूरी होने से पूर्व **उनके सहकोगियाँ तथा दूसरे आ**र् चर्चे के उत्सव एवं गुरुकुत की सीप्र स्वापन की भावना को देखते इए 19 मई सन् 1900 को गुकर्य करत की पेटिक पाठकाता में गुरकुश की विश्विष्य स्थापक कर दी गई। त्य स्वापित मुरकुल में शा. मुन्ती राम ने अपने दोनों पत्री व्रतिकास

और इन्द्र को प्रविष्ट करा के प्रवेश का प्रतम्भ किया। इसके अतिरिक्त कन्य प्रविधित बरागें के 20 कलकों ने भी प्रवेश शिया। परन्तु स्थामी जी के इदय में पर्वत के मध्य नदी के तट पर गुरुकुल खोलने की कामना समाप्त न हुई। कांगड़ी ग्राम के वर्मीदार मुन्ती जपन सिंह बी ने 1400 बीबा भूमि अपूर्व प्रतिनिधि समा पंजाब को दान देकर ला मुन्ती राम के इस समने को सक्तर किया। सन् 1902 को कांगड़ी जान के जगल को साफ करके नदी के ठीक मध्य में सास-फूस की झाँपहियां बना कर महर्षि दयानन्द भी द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल किया प्रणाली क्षय गुरुकुल क्यंगदी ग्राम में प्रारम्म कर दिया गया। गिरन्तर प्रगति व उन्तरि के पत्र पर अग्रसर परिसर में फूस की हुग्गिवों का स्थान हैंटों से बने कमरों ने ले लिया। पठन-पाठन के लिए एक बढ़े झल के असिरिका बाधचारियों के निवास के लिए भवन का प्रत्यक्षन किया गया। भंडार गृह-योजन का स्थान विकित्सालय अतिकि गृह-यह साला एव अञ्चापकों के निवास स्वानों का निर्माण कराया गया। यह गुरुकुल आप पुष्प भूमि के मान से प्रसिद्ध है। पंचान के सार्यवनों तथा दूसरे आर्थ लोग वो पुण्य मूमि देख कर आप् हैं। हैरान हैं कि आब से लगभग सौ वर्ष पूर्व अब कि उस स्मान पर पहुंचना कठिन ही नहीं वरिक असम्भव था शेर-डावी दसरे कंगली व्यनवर सरेआम वृत्रवे थे, जहां आज भी उस स्वान पर पहुंचने के लिए कोई मार्ग नहीं। नदी को पैदल पार करना पड़ता है। इमें विकले वर्ष पुष्प पृत्रि पर आयोजित अपना उत्सव इसलिए स्वगित करना पका कि मदी में भागों जा गया था। करपण कीविए ? उस स्थिति-को मातावरण खुंखार चानवरों के बीच स्थान, विना विकली-साफ पानी, मोचन सामग्री व आवश्यक

वस्तवर्धे के आधान के साथ स्वापी

जी ने गुरुकुल किस तरह चलाया होगा। इसीलिए हम उनको निर्मीक-चीर-साइसी-सयमनयी-युग प्रचर्तक सन्वासी-गुरुकुल शिक्षा पद्धति के अग्रणीय-भक्षयिं दयानन्द श्री के सब्बे अनुपायी के रूप में स्मरण करते ह। जिस सुग में स्वामी ऋक्षानन्द जो ने कार्य किया वह सुग लाला लाजपत यय, लोकमान्य तिलक, प मदन मोहन मालबीब और महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों का था उस युग में को निकर नेता से उनमें स्वामी जी अग्रपीय थे। जो नेता उत्साही थे उनमें स्वामी जी मुख्य थे जिन मकापुरुषों के जीवन पर अपनी **जीवन-चर्चा बनाई,** उनमें भी स्वामी वी अग्रमीय थे। स्वामी जी जीवन भर बीर मोद्धा की तरह रहे शहीद हो कर भारतीयों के सम्मुख एक कादर्श बीवन रख गए।

स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धा की मूर्ति थे। उन्होंने अपने युग में स्वराज्य आन्दोलन सुद्धि आन्दोलन अक्टोद्धार- वातपात का विषय, दलितोद्धार, नागै-सिख आर्य समाजिक सगठन-सुदृद्धता के लिए आजीवन संबर्ष किया। कोई क्षेत्र ऐसा नहीं विसमें स्थामी जी ने कमी छोड़ी हो. बरिक यह कहना गल्त न होगा कि विशास उन्होंने किया उतना किसी ने भी न किया होगा। आव स्थतन्त्रतः प्राप्ति के 52 वर्ष भाद भी स्वामी ब्रह्मचन्द्र जी का आर्थ जाति के नाम आध्वान उतना ही प्रासगिक है जिलना दस समय में था। आयों मिल जुल कर कार्य करो, संगठित हो पाओं। यह तो शास्त्रत सत्य है 🏲 'समे समितः कली युगे।' आपके गाठन में हरिक होगी तो जापकी सभी बात मानी भाएगी। स्वामी ब्रद्धानन्द जी ने कहा बा-आर्व पुरुषो। सोचो कि वो कौन से सिद्धान्त वे बिन्होंने एक लंगोट बंद साधु को वह शक्ति प्रदान की थी, बो इस समय महाराज्यओं मे भी दिखाई नहीं देखे। पता लगाओ कि अर्थ समाग स्वापित करके मे ऋषि का क्या प्रयोजन या।

(जोब पह 7 पर)

का सकता है।

मा सब कुछ आला से ही उलन

## याजवल्बय द्वारा मैत्रेयी को आरजजार

त्ये क्रॅंड कर्य, प्रकार सम्बन्ध की चेतुनेहरू महाविकाल, (**क्रि**स्टी)

ठपनिक्दों में आख्यानों एक सवादों के माध्यम से आत्पञ्जन दिया गमा है। बहुदारण्यकोपनिबद मे याजवस्वय तथा मैत्रेबी का सवाह है। जिसमें मैत्रेथी माजवरूपय से करती है कि मुझे भौतिक धन नहीं चाहिए मुझे वो आप ऐसा घन देओ कभी भी मच्टन होने काम्य हो। अगत्य जल के कव से गाइवल्क्य मैत्रेयी को सर्वोत्तम तबा सदा विद्यमान रहने थाला धन प्रदान ATT # 1

आत्मा ही दर्शनीय श्रवणीय

इन सभी साधनों के सम्पन्न होने पर ही आत्मा का साक्षातकार होता ३। इस प्रकार समझाते हुए याजवलक्य मैत्रयी को कारते हैं कि हं मैत्रेयी । पति इसलिए प्रिय नहीं होता क्योंकि वह पति है वह अपनी परना का भरण पोचण करता है उसे सन्तान देता है अपित वह अपनी आत्मा के कारण से डी प्रिय होता है क्योंकि उसका अहत्या उसे पति योग्य कर्म करने को प्ररित करता है। स्त्री इसीलिए प्रिया नहीं होती क्योंकि वह स्त्री है सन्दर है उसमे आकर्षण है अपितु वह आत्मा के कारण से ही प्रिय है क्योंकि उसकी आत्मा सजन भमाशाल सहनशील है। पुत्र इसलिए प्रिय नहीं हाते क्योंकि वे पुत्र हैं अपित वे आत्मा क कारण स ही प्रिय होते हैं वे माता पिता का आत्मा स उत्पन होते है कहा भागपार्व आध्यार्व जावते एत । पत्र अधात पम नरकात जायते पितर जो अपने पिता को नरक से बचाता है। पुत्र का आत्मा पुत्रोचित कर्म करन वाला है अत यह प्रिय है। धन इसलिए प्रिय 'ग्ही डाना क्योंकि वह धन है। वह आत्मा के कारण ही प्रिय होता है। वह दसरों को सहायतार्थ ही उत्पन हुआ है अतएव वह प्रिय है। दूसरो म अपना आत्मा का अनुभव करके हा व्यक्ति धन द्वारा उनकी सहायता करता है। बाद्यण इसलिए प्रिय नहीं ष्ठीतः क्योकि वह ब्राह्मण है। वह अस्या के कारण ही प्रिय है। कोई भा व्यक्ति चाडे वह बाह्मण ही

क्यों न ही केवल अपने ग्राह्मणत्व के कारण यह प्रिय नहीं होता। यह उसलिए पिच होता है क्योंकि वसका आत्या सम्बद्धे समान है। अरा आत्म्य के कारण कर किस होता है : बात्रिय इसलिए प्रिय नहीं होता क्योंकि वह अतिय है। अतिय होकर भी यदि वह क्षत्रियोचित कर्मन करे हो आप कैसे विक होगा। उन कमों को करने के लिए प्रेरित करने वाला आत्मा है। वह आतरा दारा बेरणा प्राप्त कराके ही

प्रिय बनता है। अप्रिय आत्मा के मननीय तथा ध्यान करने योग्य है। कारण ही प्रिय होता है। लोक इस लिए प्रिय नहीं होते क्वोकि वे लोक हैं। अपितु ये अपने ही कारण से प्रिन होते हैं वे समस्य ससार को धारण करने वाले हैं ज्योतियो को प्रदीप्त रखाने वाले हैं। उनके मृल मे एक सर्वभूतान्तरात्मा कार्य कर रहा है अत प्रिव हैं। देवता इस कारण पिय नहीं होते क्योंकि वे देवता ईँ अपितु वे अपने आत्मा के कारण से डी प्रिय डोवे हैं जो वन्हे दान देने के लिए उदमासित होने के लिए प्रेरित करता है। अव वे अरुत्मा के कारण ही प्रिय होते हैं। प्राणी प्राणी होने के कारण प्रिय नहीं होते अपितु वे आत्मा के कारण ही प्रिय होते हैं आलग ही ठन्हे एक दूसरे की रक्षार्थ प्रेरित करता है। सभी कुछ आत्मा के कारण से प्रिय है। किसी अन्य के कारण से नहीं क्योंकि आत्मा ही सर्वप्रेरक है सर्वप्रमुख है। हे मैत्रेयी। आत्मः ही दर्शनीय त्रवणीय मननीय दचा ध्यान किए जाने योग्य है। इस आत्मा के दर्शन अवन मनन तथा विज्ञान से ही सकका जान हो जाता है। वस्ततः याज्ञवरुषय मैत्रवी के इदय में उपर्युक्त सभी के लिए वैराग्य उत्पन्न करते हैं जिससे कि मैत्रेमी उन सकते त्याग दे और केवल आस्मा में ध्यान लगाए। क्योंकि यह वैराग्य ही अमृतत्व का साथन है। जब तक हम पति स्त्री पुत्र धन इल्लादि के बन्धन में पढ़े रहेंगे हमें मुक्ति नहीं मिलेगी। इस सब के बाधा रूप को देखते हैं और उसे सत्य पव प्रिय मानते रहते हैं यह प्रीति ग्हैणी

है। संबक्ति साथ कुछ और है। शाला में की सकत प्रीति में करा के मेरोबी। उप सभी को क्रोड़कर अक्रमा ही दर्शन करने योग्य है। पक्षले आकर्ष तथा अनगर के द्वारा शवक करने योग्य वापस्थात तकं सक्रिय स्थल करने योग्य है सदगन्तर निदिण्यसिवस्य सर्वात् निरुवन से भ्यान करने चीन्व है। इन्हीं साधनों से ससम्बन्ध होने का वह आत्या देखा जा सकता है अनुभव किया

ब्राइटन शतिय आदि वो कि कर्मका साधनमात्र हैं उन्हें मुख्य मान लेख ही अञ्चल है ठीक उसी प्रकार वैसे रस्ती को देखकर सर्प की अनुष्रित होना। उस अञ्चन को दूर करने के लिए याद्ववल्बन कहते हैं-हे मैत्रेयी । दर्शन शवण सनन तक जान श्रोने पर ही निश्चित कप से यह आत्म विषयक क्षन हो बाता है। आत्मा ही सब कुछ है। आत्मा का ज्ञान डोने पर सम क्रष्ट आर डो भारत है। आरमा किमी से प्रकड नहीं है और ऐसा भी नहीं है कि बाहरन श्रविय देवता प्राणी तथा लोक इत सक्का आत्मा पुषक प्रयक्त है। इन सबका आत्मा ४क वैसा ही है तथाये भी आत्मासे षिन्न नहीं हैं आत्मा ही हैं। आस्पा है तो ये भी हैं अन्यथा नहीं। इसके विपरीय बदि कोई किसी व्यक्ति वस्तु जाति आदि मे आत्था की नहीं मानका को उसके लिए यह व्यक्ति अववा आहि मानो नष्ट हो जाती है क्योंकि अलग ही से सबका सार है परमारमा ही सबका आस्पा है जो सबके भीतर विद्यमान है। बी कुछ भी इस ससार में विद्यमान है

होता है वया दसी में किलव हो बाता है। यह ठीक उसी प्रकार है बैसे मकडी ही स्वय बाला बुनरी है और अपने अन्दर ही समेट लेती है जैसे पच्ची पर ऑवधिक उत्पन्न होती हैं उसी प्रकार उस अकर जब अर्थात् परमात्मा से ही क सब कुछ उत्तरन होता है। परमात्मा भी जीवातम ऋष मे सब में विद्यमान है आहा रूप से देखने में सभी प्राणी पुचक पुचक प्रतीत होते हैं सभी में भेद प्रतीय होता है परन्तु आरमक्षान होने पर ही यह भेद पुक्कता दर हो आते हैं। आरमा ही सबके भीतर है आत्मा मे ही सबकुछ है इस प्रकार सब प्राणियों में एक आत्मरूप समत्व मान आने पर मनुष्य मुखा राग द्वेष से मुक्त हो जाता है। जिस प्रकार भिन्न भिन्न वर्ण की मणियो में सूत्र एक ही होता है उसा प्रकार भिन्न भिन्न प्राणियो मे एकमात्र अल्पा ही होता है जब एक ही आत्मा सभी जीवो मे एकरण रूप से विद्यमान है तब शोक और मोड़ कैसा 7 हम जा यह कहते हैं यह अच्छा है यह करा उसका भी प्रश्न ही नही

रहता क्योंकि एक ही खल्म एक

व्यक्ति के भीवर अच्छा और एक

व्यक्ति के भीतर बरा नहीं हा

सकता। इस स्थिति मे निन्दा

स्तृति कोध भय वे सभी विकार

दूर हो आते हैं। एकमात्र समभाव

ही रहता है। सभी भावों से मर्फिल

हो जाती है यहां मोश हे यहां

आत्पन्नान है।

अर्ध्य संक्ष्मवना सर्ताम समितिः, अन्तरसर को बारुति कर उपलब्ध आर्य सदभावना स्तराग समिति अमृतसर का कार्यक्रम व इसकी बढती हुई लोकप्रियता के कारण इसका विस्तर बढिवाना व अजनाता तक फैल गवा है। दूर दूर जाने के लिए मैंने अमृतसर कसिकों से एक कहन की अपील की भी जिसके फलस्वरूप व्यक्तर की प्रविध्ति हा क्षेत्रती वर्मिला लखनपाल ने बदारक प्रकट करके एमें इस कार्य हेत् मारुवि-800 (1990) मेंट की इसके लिए समिति से उन्होंने कोई भी धनराशि नहीं ली। यह पूर्वत पिक्क्षण दी है। आपकी क्षेटी नान सुवन गुप्त को अविवाहित वीं दिल्ली में प्राचार्य के पद पर कार्य कर रही वी उनका आकरिनक

निधन हो गया और आपने सुबम गुप्ता मेमोरियल फड से उनका स्मृति में इमें यह कार भेट की हैं इसके पूर्व इसी फड से आपन 'महर्षि दशनन्द नि सुरक महिला सिलाई प्रशिक्षण फेन्द्र हेतु 2 सिलाई मसीने भी भेट की हैं । या गाडी देकर उन्होंने बेट प्रचार क कार्यों हेर हमारा जो सहयोग किया वह अद्वितीय है। अन्यों का । इससे प्रेरण लेकर दान पुष्प के कार्यों को करते रहण चाहिए। म बीमती वर्मिला लखनपाल का उन द्यन के लिए बार कार अन्यकाद करती हूं।

—सम्बद्धी योगमति

स्त्रपादकीय 💉

31 दिसम्बर 1993 को साक्काल श्री वीरेज़ जी इमे झोड कर सदा के लिए चले गए थे। उनको इम्मरे बीच मे से गए पूरे 6 वर्ष बीत गए हैं परन्त वेसा लगता है कि जैसे यह घटना अभी अभी घटी हो। वीरेन्द्र जी एक समय एक बहुत बड़े क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। उन्होंने आजादी की मजा के लिए अयेजों से भी टकर ली बी। यह देश के लिए जेल भी गय थे। सरदार भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों से उनका सम्बन्ध था। उनके पिता महासय कष्म जी भी कलम के बनी बे और उन्हीं की तरह श्री वीरेन्द्र जी भी करूम के धनी थे। उनके सम्पादकीय लेख पढ़ने के मिए बात में लोग लालाबित रहते थे। वह देखते रहते थे कि जो समस्या देश के सामने उठी है उस के लिए श्री वीरेन्द्र जी क्या लिखते हैं उनका द्रश्टिकोण इस विषय में थ्या है ? क्योंकि कोई भी सगस्या यदि देश के सामने उठती भी या समाज के सामने उठती भी तो श्री वीरेन्द्र औं तसके समाधान के लिए अपनी कलम करूर तताते हैं। उनकी कलम का लोहा उनके विरोधी भी मानते थै। महाराणा प्रताप के नाम पर महाजय कष्ण जी ने अपनी अखबार का नाम प्रताप रखा था। जैसे महाराणा प्रसाप कभी किसी अल्पाचारी के व देश के जब के सामने नहीं असे इसी प्रकार से यह अखबार वीर प्रताप और इसके सम्पादक कभी भी किसी के सामने नहीं अके। महाशय कृष्ण जी ने प्रताप की आचान को क्लन्द रखा और कभी झुकने नहीं दिया। इसी प्रकार स्व श्री वरिन्ह जी ने अपने पिता जी की तरह ही बीर प्रताप व प्रताप के नाम को सदा ऊचा रखा उनकी यह अपनी विजेषता थी। चाहे उनका कोई अपना हो या बेगाना यदि कोई गलत कार्य करता था तो यह उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाते थे। श्री वीरेन्द्र की का यह महान विशेषता था कि यदि सरकार की ओर से कछ गलत हो रहा है तो वह उसके विरुद्ध भी अपनी आवाज उताते थे। उनको इस बात की कोई चिता नहीं की कि कोई उनसे नाराज हो जाएगा। इसलिए अक्सर सतापक्ष जनमें जनक नहता था। क्योंकि कह समय नमय पर जनकी गीलयों में पर्दा उठाते रहते थे। इसके कारण उन्हे कड़ बार हानि भा उठानी पही परना उन्होंने कभी भी इसकी कोई चिन्ता नहीं की। उन्होंने कभी भी अपने आपको व अपने अखबार को महत्व नहां दिया सदा देश को सम्मठा रखा। वह अपने देश से बहत प्यार करते थे। इसीलिए देश की आवादी के लिए उन्होंने कई बार जेल की बात्रए की और बारानाए सही

3) दिस्तवर को उनकी पुण्य तिर्ध है। इस दिन प्रतिक है वर पड़े तम करते हैं। क्वोकिं जह न पूलन वालत दिन है। इस कारी भी की विदित्र जी को पुल्त नहीं छोकों। उन नेका योग्य नेका कम सक्ता में मिलान करिन हैं। में उनकी पुण्य तिर्धि एत अपनी कोर से उच्छे किसियि क्या पनक को ओर से न वाली क्वास पहिल्य न पत्तक की समस्य को और से उन्हें बद्धाव्यक्ति मेट करता हूं। प्रत्यक्ता इसे छाट करसाने को और से उन्हें बद्धाव्यक्ति मेट करता हूं। प्रत्यक्ता इसे छाट करूपने को और से उन्हें बद्धाव्यक्ति मेट करता हूं। प्रत्यक्ता इसे छाट करूपने कर विकास प्रत्यक्ती की अपने का सिंक्षा व्यक्ता करें।

-सरिवणी कुमार वार्गा एक्टोकेट तथा महासन्त्री

बी परिन्न थी एक ऐसे व्यक्ति थे निन्दे हम कभी भी भूमा नहीं सकेगे। 31 दिसम्बर 1993 को सायकाल इदय गति रूक जान स अक्तरूत वह इसे छोड कर स्था के लिए वेल गर। इस दिन वह प्रत अपने पीर प्रताप के बार्यालय भी गयु दिन भर कार्य भा करते रह सरकाल सामानक प्रकार पर प्रतार

की मीटिंग की से मेरा प्रविचारिक सम्बन्ध था अप नामक का नार में कर एक इसरे से मिलते ही में पानु हसके आंगिरका भी उनका आंग परिवार से व पुत्र से महात लोग का आर्थ सामव को उसको का छोड़ कर करी बाहर नहीं काते में परनु हुई गिनने के लिए वह उन मारी पेना आ बात कार्य में मारी भी की बार उनका पाग जन नाम महात था उनका भी हमा आपस में बैठाने से तो यह अगियान अग प्रवास कर्य को हो मिला करते में आपस में बैठाने से तो यह अगियान अग महत उड़का भी और उन्होंने आर्थ मंत्रिगिश सभा प्रकाब की जनति में लिए स्वाह कर्य कि ग्रीट उन्होंने आर्थ मंत्रिगिश सभा प्रकाब को जनति में

की पीए की मुख्युत कारायों को भी कहु 3 अपना करना पहल था पूर्ण पूर्णि स्थापित स्थापित की कि मान स्थापित का गित्र मिलें माना था। यह पहरंदे में कि पुष्प पूर्णि को रक्षा को नार उनकी प्रधानाता ही हमने पूष्प पूर्णि को रक्षित किया है भीने बात जो कुछ भी किया है मिलेंदर मिला है कि में मिला भी मान कह गरिया एक्स भी किया है मिला है मिला है कि मिला में मान कह गरिया एक्स भी कि हम पूर्णि की रक्षा की जाए आज यह पूर्णि और भावन पूर्ण कह में सुस्कित हो।

भी बोरिय को के देशकासन के परकार मुख अब प्रतिनिधि स्व पत्रबार का प्रधान पुत्र करता करता 1994 से निराय में आप प्रतिनिधि स्वत्य पत्रबार को उनकी के निए कार करता का तह ह उपन प्रधान किया है कि भी बोरिय को ने के कार आरम्भ किए से उन्हें पूर्ण किए बार। इसलिए आब आप प्रतिनिध सभा पत्रबार सभी के में मुख्य करा से कार्य कर रही है। सभा के सभी अधिकारी य सरस्य इतम अमना पूर पुत्र सबसेग से रहे हैं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आग भी

की भीन भी का जभाव कर स्वा एक एक पाए गए। यह एक बात प्रस्तुत्व करते काले के बार के पर है। प्रस्तुत्व करते हैं। जमते के उन के बारे कर है। जमते हुआ करते हैं। जमते समयों के बार प्रस्तुत्व एक रहते हैं। जमते समयों के बार प्रस्तुत्व के प्यूत्व के प्रस्तुत्व के

की बीट की की उच्चा किसी और व्यक्ति सा नहां का ज सकती। उनने बहुत सी विश्लेकाए का दीनका वर्षन हरना का ज सकती। उनने बहुत सी विश्लेकाए का दीनका वर्षन हरना का सार्च करता द्वार है। वेस कई बात सकते में कि इस बात आप प्रधान कर एप पहुन में 3 के प्रधान कर दिवा की का अप का करता हुए में प्रधान बनना स्वीकात नहीं करना। परंचु उनकी गुण के एसका उनका हरना। स्पूर्वाद हैं में ने पात का प्रधान पर सार्च के आहर पर स्वीका है। मेरी पर क्रार्थिक स्वाव है कि उनका पर सार्वका की गरिया स्वीच होने में स्वाव है।

31 हिस्साब्य को की वीरित जो की पुण्य तिबित्य पर ने अपनो आर के अब्बें आर्थिती पर पार पारका को आई के और कर्म विश्वास पर पार्वाम पर तथा परे अव्यक्तिया तथी विश्वस प्रस्तकाते को और के जा कर्म के भी अविकारित के स्वरूपने के परे के व पत्रका को आई की अपने अवकों को और ते उनके इस्त्रवाली पर कारण हु और परार्थीता पराप्ताच की अर्थन कारण हु कि यह कर पार्थ आरण को अपने कर इस समय हो उनके पत्रिक प्रस्तावता सम्ब पुण्यी रह्ने और इसे उनक परिवार पराप्ताची की अर्थन हुए कि यह कर पार्थ आरण को आई के

-हरवस लाम रार्म समा प्रधान

## स्वामी सत्त्वपति जी परिवाजक का अभिनन्दन समारोह व वानप्रस्य सामक का शिलान्यास

इट, के के पसारीया साथा बक्षिय उपराधान पूज्य स्वामी सत्यपति जी में पहले का अध्यसर नहीं मिला।

परिवाजक का इस समय आर्थ समाब अध्य जल प्रान्त हो वाने पर इन्हें के क्षेत्र में अपना एक विशेष स्थान आत्मा-परमात्मा के बारे में जो शकाय हे। वह इस समय रोबड (सागपुर) जिला सामस्काठा (गुजरात) मे आर्थ घन विकास परिसा में वह एक टर्जन याग महाविद्यालय चला रहे हैं जिससे दर्शन शास्त्रों के जन के साथ साव याग साधना भी सिसाई जाती है। इस बार वहा 15 से 21 नशम्बर 1999 तक स्वामी सत्यपति जी के अभिनन्दन समारोह का तथा वान्त्रस्थ साधक आश्रम के शिलाऱ्यास का कार्यक्रम रखा हुआ था। इस अक्सर पर एक साधना शिविर का आयोजन भी किया गया था मुझे मा इसकर निमन्त्रण पत्र मिला था। मेरी धर्मपत्नी बामती पेम पसरीचा जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि इस बार हम इस साधना जिल्हित से अवस्य भाग ले। इससे पूर्व भी स्वामी जी के द्वारा लगाए गए कई शिविरो में हमने भाग लिखा था। इसलिए में अपनी चर्मपत्नी सहित 13 11 99 को जालन्थर से चल कर 15 11 99 को अहमदाबाद पहचा यहा से यह स्थान 70 किलोमीटर है। इससे आगे जाने के लिए सारा प्रबन्ध आश्रम का और से किया गया था। हम सायकाल तक आश्रम मे पहुच गए। स्वामी सत्यपति जा परिकाजक

छ दर्जन शास्त्रों के इस समय सब से उच्चकोटि के विदान हैं। मीमासा शास्त्र भी उन्होंने श्री विधिष्ठिर जी मीमासक से विधिपूर्वक पढा है। इसका भी उन्हें पराज्ञान है अन्य दर्शन जास्त्रों के विदान मिल जाते हैं परना माभासा शास्त्र के बहत कम विदान मिलते हैं। यो विधियत इसे पदा सके वा स्वामी सत्यपति बी तनमें से एक हैं।

स्थामा जा का जन्म रोहतक जिला के फासना (स्वरम) बान मे हुआ था। 1947 में इनका सारा परिवार मस्लिम मत को त्याग कर वैदिक धर्म में प्रवेश हुआ था। इनका बचपन गाव मे साधारण लोगो का तरह बीता। बाल्यावस्था मे इन्हे पढाई का कोई अवसर नहीं मिला। ईस्वरोपासना और वैशन्य का भावना इन में बच्चमन से था। 19 वर्ष की अवस्था में इन्होंने मोर्गे से पूछ पूछ कर अधर ज्ञन प्राप्त किया। इन्हें विधियत रूप से इस समय तक किसी भी पाठशासा होती थीं उनके बारे में जानने के निए इन्होंने सत्यर्थ प्रकार पदा। यहा से इनके मन में आर्थ समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए मनुदेव के नाम से गुरुकुल इल्बर मे प्रविष्ट हुए। का श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के सान्त्रध्य मे सत्थना करते हुए विधिवत रूप से संस्कृत का झन प्राप्त किया और दर्शनों का भी अध्ययन किया। इसके पश्चात् दयानन्द बेद विद्यालय गौतम नगर दिल्ली में भी अध्ययन किया। इन दोनों स्थानो पर इन्होंने सरकृत पाना व्यक्तण महाभाष्य दर्शन उपनिषद तवा वेदादि गर्धों का अध्ययन किया और व्याकरणायार्थ दर्शनायार्थ वेद वाचस्पति आदि की उपाणिया प्राप्त कीं। 7 अप्रैल 1970 को इन्होंने स्वामी ब्रह्ममृति ची से सन्पत्त की दीश्वा ग्रहण की और स्वामी सत्यपति **बी के नाम से प्रसिद्ध हुए और अब** रोजड आर्य वन विकास के परिसर में दर्जन योग मात्र विधालय चाना रहे हैं। इसके स्वश्न की 21 11 99 को यहा पर ही वानप्रस्य साधक आश्रम का शिलान्यास भी किया गर्या है। इस अवसर पर आयोजित समारोड में स्वामी सत्वपति श्री को आर्य बनता की और से 51 लाख रुपए की बैली इस आक्रम के निर्माण हेर प्रदान की गई है। 16 लाख रुपए के आक्वासन भी मिले हैं। इस समारोह में लगभग साढे तीन हजार महानभाव भिल भिल 17 प्रान्तो से वहा पहचे थे। भोजन तथा रहने की सभी के लिए बहुत अच्छी व्यवस्था की हुई थी। इतनी बढ़ी सक्का मे पथारे लोगो के लिए चगल मे इस आश्रम मे ठहरने की व्यवस्था करना भोजन तथा दब आदि की व्यवस्था

21 11 99 को समारोह का आरम्भ दर्शन योग महाविद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा गाए गए सस्कृत गीत से हुआ। बिसमे परमात्मा से बृद्धि की प्रार्थना की नई। इसके परचारा यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ

करना कोई आसान कार्य नहीं था। परना स्थानी जी ने वहा सारी व्यवस्था

की हुई थी।

हुन्त्र । स्वापत भागम शतमार्थ हानेश्वर वी ने दिखा। कोठारी स्थामी गाराचव चरण दास भूमागढ ने इस समारोह का दीप प्र**प्यव**स्तित कर के उद्यादन किया। लुधियाना से प्रधारे औ सत्यानन्द भी मञ्चल महित्क हीरो साईकिल ने स्वामी सरवपरि ची का अभिनदन पत्र पद्या । इस समारोह में प्रधारे सन्यत्तियाँ में प्रमुख रूप से पण्य स्वामी सर्वानन्दवी स्वामी मानन्द वी स्वामी वगदीस्वरानन्द **थी स्वामी सुमेशान्द जी राधा आचार्य** बलदेव की नैप्टिक आचार्य वेदब्रत मीमासक आकार्य देवका वी दिल्ली प्रो धर्मधीर असमेर का सोमदेव मम्बद्धं तका अन्य बद्धत से विद्यान सन्वासी वहा प्रधारे हुए थे।

साधन की दक्षि से इमारी बाज मंडी सफल रही। वहा 15 11 99 से 20 11 99 तक जो साधना शिविर चलता रहा उसमे दिनक्षयां करत अच्छी थी। प्रत चार बजे उठना शीच स्नानादि के परचात् 5 15 पर आसन प्रा**णा**याम करना 6 बने स्वामी सरवपित वी का कियात्रक सेग पर प्रवचन होना ७ बबे वज यञ्जोपरान्त प्रात-राज फिर दर्तनों की कवाये आरम्भ हो जाना। दोपहर साढे 12 वर्ज भोजन डेड बन्ने विश्वाम उसके परचात फिर अध्ययन रात्रि धोवन धोवन के कद ध्रमण के समय चुनते भूमते लाकड स्वीकर द्वारा श्लोकों का समक्ष गान जेड मन्त्रों का पाठ बहत रोषक लगता था। लोग परिषि में भूमते वाते थे और रत्तोकों तथा मन्त्रों का पाठ करते आते थे। दसके परबाद फिर प्रवचन होना साढे 9 में सम्मिलित होने का अवसर दिया

वंदे राति में सो बाल और प्रशासक चल बन्ने पित्र केठ काना। यह एक बहुत ही रोक्क प्रक्रिया व दिनवर्ग बी। इस शिक्त का मुख्य उद्देश्य ईंग्यर प्राप्ति के सावन बसाना था। विस्माने स्वामी सत्प्रपति भी ने अकरी प्रकार से इस विवयमें सभी को बताया। स्वामी की करूत ही त्यागी और उपस्वा महानुमाद हैं और बहुत उच्चकोटि के विद्वान हैं। इन्होंने सदावर्थ से सीध सम्बास आक्रम में प्रवेश किया है इस्रलिए भी इनकी महत्त्व है। योग साचना द्वारा और समाधी के दारा स्वामी भी ने प्रेंग्वर साभारकार का को सम्बद्धा प्राप्त फिया इत्या है जाओ सम्बन्ध में उन्होंने अपने अनुभव आए सभी महानुभावों को बता कर चकित कर दिया।

उनके शिष्प बहुत हैं परन्तु आ जानेस्थर की और श्री विशेक की श्रा सर्वोक्त जी की किद्रता तथा जीवन सैशी ने हमे बहुत प्रपतित किया और पेसा मन करता था कि हम इनके पास ही बैठे स्तबना करते रहे और तत्व बान पाप्त करे परना हमारे लिए ऐसा करना कठिन वा। फिर भी इस शिविर में भाग लेकर और इस समारोह में पहुच कर इसने बहुत कुछ प्राप्त किया है। हमारी यात्रा कहत ही लाभकारी रही। शिविर व समारोह की समाप्ति पर 22 11 99 को इस पूर्व निविधत मैडीकल कार्न्डिस मे कोची चले गए और उसके पश्चात वर्त प्रेतिहासिक स्थानो को देखने के पश्चात इम 5 दिसम्बर को जालन्धर पहच गए। मैं स्वामा सत्यपति जी का थन्यवादी हु कि वन्होंने हमें इस समारोह

### आर्य समाज अन्धेरी का वार्षिकोत्सव

आर्च समाज मन्दिर अधेरी (पश्चिम) 120 आराम नगर सात । बगल्य मुर्च्य 40061 के वार्षिक समारोह में आमन्त्रित करते हुए हमें प्रसन्तता हो रही है आप आर्य समाज के कार्यों में हमारे सदा सहायक है आपका सहयोग हमारे लिए अपल्य है।

अपने प्रधान से उत्सव की शोभा तो बढ़ेगी ही साथ ही नवई महानगर के इस ज्वस्त बीवन में से कुछ समय सामवेद पारायण नक्षायज्ञ तथा विद्वानो के प्रथमन ठपदेश एवं भक्ति समीव का आनन्द भी प्राप्त होगा अबच्यारिमक ठन्नति को इस महाबश्च में आना न भूले। कार्यक्रम 23 12 99 से 26 12 99 रविवार तक चलेगा। इस अवसर पर श्री स्वामी मेधानन्द वी श्री ऑकार नाय वी आधार्य अखिलेश्वर ीं की आकार्य त्री चागीश जी श्री प **डरवस लाल जी हर्म्स प्रधान** आ प्र सना पत्राबः आचार्या नन्दितः शास्त्री (वाराणसी) कैप्टन श्री देवरत्न श्रीमधी क्रान्ति आर्या श्री गरेश जी भवनोपदेशक तथा अन्य कई विद्वान पंचर रहे हैं।

−आनचन्द्र प्रधान

मैकाले की योजना की शिक्षा से शिक्षित कहलाने वाले इन ल्थकथित इतिहासको को यह पता है कि मैकाले ने यह शिक्षा योजना इसलिए भारत में प्रचलित कराई थी कि इससे तिकित होकर भारतीय केवल रक्त रग और नाम से भारताय रह बाए किन्दु आचार विकार से एकदम अभारतीय तथा अप्रेजी सभ्यता के पुजारी **क्**न जाए। यह जानकर भा उसी पद्धति को कार्यान्वित करने के लिए अग्रेजी द्वारा तैयार किए गए कल्पित मिच्या इतिहास को स्वाधीनता के प्रचास वर बीट जाने पर आज भी प्रमाण मानते रहना बुद्धिमानी नहीं कडी वा सकती। खोद की बात तो यह है कि विदेशियों और उनका अन्धानुकरण करने वाले भारतीय लेखकों के लेखों स इधर उधर ब्रटकर खाब करना तो एक ओर रहा यह लोग साधारण तकों से भा काम लेने की वैचार नहीं। उन तकों से भी जो इनके अपने विकारी मान्यताको और धारणाओं के विषय मे तत्पन होते हैं। हकों से तत्पन होने पर उन तर्कथका प्रश्नो के युक्तियुक्त तथा प्रमाणिक उत्तर बृहना ही अनुसन्धान कहलाता है को व्यक्ति इस प्रकार के अनुसन्धान के लिए तैयार न हा वह पारतविकता को कदापि नहर चन सकत और बिना वास्त्रविकार का

जाने प्रतिक्रासबेका होन का विचार

रखना निवान्त खोखला दम्भ मात्र है। ऐसे व्यक्तियो द्वारा प्रतिकास विषयक वक्तव्य देना अनाधिकार प्रवल तथा जाति को दिग्धान्त करने का प्राप है। उन दिनो जब इन वश्यकविव

इतिहासवेत्ताओं के वश्वव्य भारत

के प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो रहे थे तब अनेक स्थानो पर 'रामायण और महाभारत पेतिहासिक ग्रन्थ हैं अथवा नहीं इस विषय पर गोष्ठिया और सम्मेलन आयोजित किए गए। परना इन गोच्छियो और सम्मेलनो के आयोजको के मन मस्तिक पर भी मैकाले की योजना की शिक्षा का भी प्रभाव है परिणाम स्वरूप वही पीएच ही और इतिहास के कालेव के प्रथवता ही बलाए जाते रहे। वह बेचारे क्या कक्षते ? या शो का प्रश्न लेते प्राध्यापर ने द्वारा प्रतिपादित भारतीय इतिहास विषयक प्रान्तियो का और या अपने आयोजको की भावनाओं की ओर ध्वान देते तो यह कड़ देते कि 'अभी भारतीय इतिहास पर और खोज की आवश्यकता है। इस विषय मे और अधिक जानकारी किए बिना कुछ कहना उचित नहीं।' इस का अर्थ दुआ कि "खुश रहे शेख भी रौवान भी बेतार न हो।"

यह सामान्य बात है। जब किसी विषय की जानकारी न हो तब किसी भी पध और वह भी विशेषकर कार्यक्रम के अवयोजको को रूप्ट करना अभिप्रेट न हो तो इस प्रकार का निर्णय अथवा वक्तव्य देना उपयोगी रहता है। वैसं इस प्रकार के चक्तव्य से एक डी परिणाम निकलता है कि आयोजन निरर्यक और निकल रहा चाहे वह भन में विरोधी और कपटपूर्ण भावनः रखवे हुए आयोजको से करा न बनने के लिए ऐसा चक्तव्य दिवा गया हो अथवा अपनी अज्ञानवा और अयोग्यता की क्रिपाने के लिए।

इन आयोजनो मे भारतीय इतिहास की जानकारी रखने वालो को नहीं बुलाया गया। बुलाना तो एक ओर रहा-दन लोगों से सम्पर्क कर यह, जानने का प्रयान भी नहीं इन विधारों को व्यक्त करने वाले

किया गया कि इस विकय पर आप कोई जानकारी दे सकेने क्या? अथवा इस विषय मे आए कुछ कड़ने की उच्छा रखते हैं क्या ?

भारतीय इतिहास को योरोपीय लोगों ने विशेषकर ब्रिटेन निवासियो ने क्यो विकृत किया ? इस विवय के इतिहास विषयक सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्चा तथा 'भावा का इतिहास' वैदिक वाहमय का इतिहास और भारतवर्ग का बहद इतिहास आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थो के स्थ**यिता स्वगां**य श्री पण्डित भगवद्दत्त जी के विचार पाठकी की जानकारी के लिए इस यहा प्रस्तुत कर रहे हैं तथा इसके पश्चात् इतिहास किसे कहते हैं ? एतद्विषयक प्रामाणिक विवेधन प्रस्तत करेगे।

"राथ क्रिटने बेक्र मैक्समलर

मैकाशनला कीथ और रैक्सन आदि पारधात्य लेखको को यह महान भय था कि वदि एक बार भी आर्थ इतिहास सत्य स्वीकृत हो गया तो तौरेत जबूर और इंन्जील का मत जो वर्तमान यहूदी और ईसाईयो ने समझ रखा है-संसार से ठठ जाएगा। ससार वेदो की और भ्रकेगा भारतीय गौरव पराकान्छ। को प्राप्त होगा और ससार पारत का अभृतपूर्व मान करने लगेना। मनु आदि ऋषि सर्वोपरि माने जायेगे कियत आसूरी और पञ्चशिरव आदि साख्य प्रवक्ता हिरणार्थ आदि योगवक्ता स्कन्द इन्द्र विष्णु भारत चक्रवर्ती मानधाता हैहब अर्जन जामदान्य राम दाशरीय राम और पार्थ अर्जन आदि अति महारच महासेनापवि वर्तमान ऐतिहासिको के इदय मे उज्जवलता प्राप्त करेंगे। संसार का अद्वितीय पुरुष त्री कृष्ण जिसके पश्चात् उससे शताश दिव्य गुण रखने वाला एक भी पुरुष आज तक इस भूवल पर नहीं बन्मा− ससार का इदय सम्राट होगा अव इन जर्मन और अग्रेज आदि लेखको ने इतिहास पुराण ग्रन्थों का महा निरादर किया। वैदिक ग्रन्थों से ये सम्भाव रूप से परे नहीं हट सके पर उन्हें अधिकास मिथ्या कल्फार्ये कडकर उन्होंने परे फैंक दिया और इविहास आदि को उन्होंने वैदिक ग्रन्थों से विपरीत बता कर अपनी कपोल-कल्पना आस्म की।"

श्री पण्डित भगवद्दत कृत भारतवर्ष का सहद इतिहास

स्वनामधन्य श्री पण्डित भगवददत जी ने भारतीय इतिहास विषयक अपनी खोज प्रस्तुत करते हुए घोषणा की है कि 'ब्रोप के लेखको को ज्ञान हो बाना चाहिए कि उनकी कल्पनाये अब भारत मे मान्य नहीं होगी। उन्हें शिष्य बनकर भारतीय विद्वानो से पहना होगा और अपने उच्छुखल तथा कल्पित भाषा मतो को तर्कपुक्त बनाना होगा। उन्ह ईसाई पक्षपात छोडकर सस्य की असमा करनी होगी।

इतिहास किसे कहते हे ? इस विषय को पाठकगण नीच का पवितयों में पढ़े और तब निश्चय करे कि यह लोग कितने इतिहासवेचा हैं ? जो आजकल इतिहास के अधिकृत विद्वान् और प्रवक्ता होन का दम भरते हैं।

'इतिहास पुरावृत्त ऋविभि परिकीर्चयते। आधार्य शोनक कत बहदेवता ४ ।४६ । इतिहास अर्थात पुरवृत्त (पुराना वृत्तान्त) ऋषियो द्वारा (वर्णित) है।

'इतिहैंबमासोदिति य कथ मत स इतिहास आचार्य कृत निरुक्त भाष्यवृत्ति 2 110 । निरुषय पूर्वक ऐसा हुआ था ऐसा जो कहा जाता है वह इतिहास है।

'इविद्यास पुरावृत अमरकोष नामलिया नुशासनम् १ ७ 🖩 । इतिहास प्राचीन वज्ञान्त को कहत हैं।

'इति सब्द परमार्थोपदशेऽत्यमः। इतिहास्त ऽस्मिनितिहास (श्रा सर्वानन्द कृत टीका सर्वस्व)

परम्परा से जो कहा जा रहा है कि ऐसा हुआ था वह अव्यय है अर्थात् उसमे परिवर्तन याग्य कुछ भी नहीं है इसलिए वह इतिहास है। इद शुणु महाप्रज्ञ धर्मपुत्र

सक्रायम । इतिहास प्रावृत्त शरणाथ महाफलम् ॥

महाभारत अनुशासन पर्व इस स्लोक की द्वितीय पविन मे अविडास को परावत्त प्राचान वृद्यान्त कहा गया है।

पराण प्रविमेद एवेतिहास इत्येके।

स च द्विविद्या परक्रिया प्राकल्पाञ्चाम् ।

पर कि या पुराकल्प ष्टविहासाविद्विधा।

स्योदक नायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका ॥ (राजेश्वर कृत काव्य मीमासा पृष्ट ३)

(शेष पृष्ठ ७ पर)

#### सुस्तानपुर सोधी में मायभी यहा का आयोजन

स्त्री आर्य समाव के तत्थायधान मे प्रतिवर्ष को भाति इस वर्ष पी आर्व समाज सल्वालपर लोधी मे श्रद्धेय स्थामी महात्मा आनन्द पिश्व जी की पुण्य स्मृति जो 8 दिसम्बर को होती है में सप्त दिवसीय ग'यत्री थड़ का सुध अनुष्ठान किया गया प लालबिहारी जी त्रिपाठी पुरोहित के ब्रह्मस्य में सम्पूर्ण गामत्री यज्ञ व इसकी पूर्णांहुति तिथि 12 12 99 दिन रविवास को प्रांत 8 बजे से 11 वस तक दाली गई। आर्थ समाज की नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला (वदमन्दिर) मे भरे जनसमृह क बीच यह कार्य सम्पन्न कुआ धर्मप्रेमी श्रद्धाल आर्थ बन्धओ माताओ बहनो वृद्धी बच्चो सभी ने इस पवित्र धर्म फत्य था में दक्ष निष्ता भवित से बढ बढ कर हिस्सा लिया। उदारमना यजमानो ने पर्याप्त मात्रा में ब्रा मामग्री आदि मञ्ज का सम्पूर्ण सामान तथा यज्ञ जन प्रसाद वितरण हेतु दसी वत से बना इलवा व राजे कटला फ नाटि की विशेष व्यवस्था का जो सभी श्रद्धालओं "रादान मे आया ऋषि लगर हेत पर्यापत मात्रा मे आटा दाल व सब्जी अचारादि दान रूप में श्रीमता विजय रानी कमार की तरफ से भेट किया गमा नकद राशि भी इस पावन कृत्य नेतु प्रमुख यज्ञमानो व सदस्याओं ने स्त्रां समाज को प्रदान का पूर्णाहति वाले दिन बुहद् यजोपरान्त मधुर स्वरा मे श्री सागर चन्द ठकराल जा व सदस्या श्रीमवी विश्वरूप वावला जो ने अपन अपन भजन प्रस्तत किए श्रोनागण सुनकर झुम ठठ यञ्चोपरान्त पुष्प वर्ग द्वारा सभा यगमानी की शुभाशांबाद दिया गया तत्परचात् प्रधान जा श्रा आनन्द किशोर पसराचा का अध्यक्षल में महात्मा वा का ब्रह्मावलि भट करन वाली में प्रमुख हा द्वारका दास चावला बी ने जो महातमा जा को अति निकट रहे है उनके जीवन पर विस्तृत प्रकास डाला। अपने विचारो म वावला जी ने उन्हें एक सध्ये बेदानुमाया ऋषि भक्त व यञ्च का भक्त बताया उनके सद्गुणे की उजागर कर श्रोताओं को प्रभावित किया और अपनी ब्रह्मकलि भेट की। चकि महात्मा जी को आर्य समाज सुल्तानपुर लोबी से विशेष लगाव वा और उनकी अपार कपा

वहां के वज पेमी वक्तानों पा बी अपने जीवन काल में उन्होंने यहा यर कार्य बढ़े बढ़े यह य सरकार व पुत्रेष्टि यह भी करवाए जो पूर्व सफल रहे । संस्कारो में यह से पूर्व महात्मा की लोगों से बीक्षी सिगरेट शराब व मास अण्डे आदि व अन्य बुर्सायो को सुद्धवाने का पूर्व सकरूप करवाकर फिर यजमानों से व्या करवाते थे इस कारण सच्चे वेटानमायी ऋषि दयानन्द के भाग भवत मा आनन्द भिश्च जी महाराज से सुल्तानपुर लोबी के आर्य परिवार बहुत ही प्रभावित रहे हैं। बही धूम धाम से उनकी बाद में प्रति वर्ष उनकी पुण्यस्मृति (विचि) पर बद्धान्त्रलि रूप में वह गायत्री वह यहा रचाया जाता है। महातमा जी को श्रद्धावरितया प्रदान करने उपराना प्रधान जी व सस्या के अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में वक्रमाला बेदमन्दिर के निर्माण पर द्रुए खर्च का सम्पूर्ण विस्तृत व्यौरा (लेका जोका) श्री झरका दास चावला अध्यक्ष विलिख्य प्रकारण्टस कमेटी न प्रवक्त प्रस्तत किया। विस्तुत व्यौरा सुनकर सधी सदस्य व अन्य लोग प्रसन्न इए। अन्त मे श्री चावला जी ने अपनी तरफ से व प्रधान जी का तरफ से इस यह मे सभी आगन्तुक आर्य माहल हाई स्कूल का सारा स्टाफ व क्रिक्षक वर्ग का धन्यवाद किया। पुरुष समाज की ठरफ से श्री चावला जा ने स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती लटा पसरीचा व मन्त्राणी श्रीमति शान्ति दवी चावला जी का तथा स्त्री समाज की अन्य सभी सदस्याओं व जिनके सत्प्रवास से यह सारा कार्य सम्यन्न हुआ उन सभी माताओं बन्नो का हार्दिक धन्यवाद कर बधाई दी और प्रभ का धन्यबाद देकर सबका उत्साह वर्धन किया। हान्ति पाठोपराना ऋषि रूपर में सभी ने प्रीति भोज किया खब आनन्दित श्रोकर यज्ञाच प्रसाद लेकर अपने अपने चरों को प्रस्थान किया। बडाडी रोचक व उत्साहवर्धक कार्यक्रम रहा । ईस्वर सभी को पूर्व समित व बल प्रदान करे ताकि समारोड पूर्वक ऐसे कार्य खुब होये ताकि हम सब इसी जीका में धर्म अर्थ कान और मोश प्राप्त कर सके। वो मानव जीवन का पाप लक्ष्य है।

–सास बिहारी तिपाठी परोहित

(युच्छ ३ का शेष)

प्रतिकास की गरि दो प्रकार की है। वे दो प्रकार परिक्रमा और पुराकरूप है। प्रतिह्वा में एक नायक अथवा प्रथान व्यक्तित्व होता है तथा पुरस्करूप में अनेक प्रशास व्यक्तिय कोरो है।

प्राग्य तक धन चैकराव कत्वभिवादिव ।

यस्मिन् स इतिहास स्याध् परावद य एव हि॥

(शक्कनीकि सार 4 B 1102 1103 I प्राचीन कथन विसमे एक राजा का कत्य वर्णित है इतिहास ही

है बयोकि उसमें निश्चित प्राचीन वर्णन है। पुराणाम इतिवृत्तम् आखवानिका उदाहरणम् धर्मेशस्य

अर्थशास्त्र चेवि इतिहास । (आवार्य विच्नुगुप्त कौटिस्य कृत अर्थशास्त्र स 5) पुराण इतिवृत्त आसमापिका उदाहरण धर्मशास्त्र अर्थशास्त्र मे

क प्रतिकास हैं। अत्रापि उदाहरन्ति इद हतिहास

परातनम् । अक्राधारत आतीत पर्व

यहा भी उदाहरण देते हैं इस परातन इतिहास का (इस उद्धरण मे इतिहास और पुरातन शब्द के साथ साथ उदाहरनि अर्थात् उदाहरणदेवे हैं भी दृष्टव्यवमा विचारणीय है।)

वर्मार्थ काममोश्राणामुपदेश समनिलवम् । परावृत्त कथा मुक्तामेतिहास प्रचक्षते ।

(विष्णु पुराण की श्रीधर स्वामी कृत टीका 1 14) आर्वाद बहुधासमान देवर्षि चरिता श्रमम्।

इतिहासमिति प्रोक्त भविष्याद <u> भुतधर्मयुक्तः।</u>

बठिडा आर्य गर्ल्ज सी सै स्कल को एक और सफलता बठिण्डा में रेड क्रास की कैडेटस जैसा कि आप पिछन नर्सिंग डिवीचन की बिला स्तरीय सभाक्षर में भी पढ़ चुके हैं कि प्रतियोगिता में इस बार भी आर्य सी हमारे विद्यालय ने पढ़ाई के सै स्कल बठिण्डा की टीम ने दसरा अलामा Co-Curricular Acta संबद्ध स्थान प्राप्त किया तथा एक स्था में काफी कार्यों में भाग लेकर ममता रानी दसवीं सी ने वैक्ट Remarkable स्थान प्रान्त किए वैसे

केब्रेट का स्थान प्राप्त किया। शिक्ति अस्पताल विवेदा के डाक्टरों ने होम चर्सिंग और फार्ट एक की Theory ज Practical की परीक्षा ली। जात्राओं ने विटिका विला के डिप्टी कपिश्यर साहब के करकमलो से **शील्ड** प मोमैन्टोच प्राप्त करके अपने मारा-

वर्ग अर्थ काम और मोध के उपदेश से समन्वित तथा प्राचीन क्षमा से पन्त प्रतिहास कहा जाता है। आर्व देव और ऋषियों के चरित्र का आसय लिए हुए जो बहुत से आख्यान (वर्णन) है वह इविदास है ऐसा कथा गया है कि वह भविष्म को अद्भुत धर्म से बुका करने वाला है।

(अर्थुका टीकाउ ५ गए)

वार्विविद्या पुरावनी। पुरावनी वार्क इतिह इति निपत समुदाय । उपदेसपारम्यर्वे वर्तते इतिह डत्मेव ऐविद्यम्।

(हेम चन्द्र वैत्त अभिधानाचिवामणि)

पुरुषी बार्का ऐतिहा है। पुरानी वार्ता निरम्बयपूर्वक इस प्रकार या ऐसा वर्जन करती है। उपदेश परम्पता से यह चली असी है अत यह ही इस प्रकार की निश्चित वार्तामें होने स

प्रतिष्य है। एविद्या शब्देनेतिहासमराण गवारो ।

(भद्र भारकर 31वीं शरी विक्रम) प्रतिका सब्द से इतिहास पराण ग्रहण होता है। प्रिय पाठकगण जो व्यक्ति

इतिहास की इन परिभाषाओ व्याख्याओं और लक्षणों स अपरिचित हैं वह भारतीय इतिहास विषय के प्रमाणिक विद्वान नहीं कडला सकते तथा गेसे व्यक्तियो द्वारा भारतीय इतिहास के विषय मे कुछ कहना कोई महत्य नहीं रक्षता। भारतीय जिसने इतिहास विषयक उपर्युक्त विवेचना का पद्धा हो। अलगति विस्तरेण बृद्धिमद्वर शिरोमणिषु किमधिक लेखने ?

साध्य ही वी के एन क्रिक्टर जी के हाथों से ईनाम प्राप्त किए। इन सब छोटी बडी सफलताओं से प्रिसीपल स्टाफ व बच्चो का मन मपूर ब्रुक्ती से नाय पिता व स्कूल का नाग अन्य वक्तमा। उठा है।--तिश श्रेमीन मिन्दल

कि State Level पर विश्ता मानसा

में गीत प्रक्रियोगिया मे प्रक्रम

स्थान पाकर बच्चों ने गर्वनर

#### बाबदेश (बर्मा-स्वांमार) में वैदिक धर्म का प्रचार करबे वाले स्व. डा. औम प्रकाश

भारत का पढ़ौसी देश वर्मा क्राप्रेश) अब हो अपना नाम बदल कर म्यामार के रूप में पहचाना बाने लगा है, किन्तु किसी समय यह हमारे देश का ही एक प्रत्स था। भारत और कर्म का सम्पर्क बहुत पराना है। आर्थ समाज के अनेक प्रवासको ने ब्रह्मदेश बाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। स्थामी श्रद्धानन्द, हा चिरजीव भारताज, जैमिनी मेहता का ब्रहादेश भ्रमम तो पुराना हो गया, कुछ वर्ष पूर्व का सत्पप्रकाश ने भी वहा वाकर आर्थ समाज के सदेश का प्रचार किया था। इसी ब्रह्मदेश की राजधानी रगून (अश्व यह नगर यागों के नाम से बाना जाता है) हा ओम् प्रकाश की कर्मस्थली थी। उनका जन्म 7 अक्तूबर 1912 को माण्डले नगर के एक आर्य दम्मवि श्री अल्माराम तथा श्रीमती द्रोपदी देवी के यहा हुआ। प्रा<del>वीभक</del> तिक्षा ही ए वी स्कूल भाण्डले में हुई। रगन के सैट गेडियल हाई स्कल से आपने मैटिक की परीक्षा

टर. भगाची लाल भासतीय उवीर्ण की। वरापस्थात रंगन के मैडिकल कालेज से 1938 में एम बी की एस की परीक्षा पास की। हिन्दी प्रेम ने उन्हें क्रिन्दी साक्षित्य सम्मेलन की साहित्य रत्न परीका में बैठने की प्रेरण दी फलव: 1956 मे वे साहित्व रत्न को।

हा और प्रकास वहां एक श्रेष्ठ चिकित्सक के रूप में प्रसिद्ध हुए वहां सार्वजनिक बीवन में आपने आर्थ समाज तथा हिन्दी प्रचार को अपना मुख्य ध्येय बनावा। 1953 से 1983 तक की तीस वर्ष की अवधि में आफ्ने कैदिक धर्म तथा हिन्दी के कार्वको तीव गति दी। आपके पुरुवार्य तथा प्रेरणा से बर्मा भावा मे सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद भिक्षु हा किविमा ने किया जो 1959 में रगन से प्रकाशित हुआ। हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए आप रंगून से एक द्विमाची पत्र भी निकालते वे जिसमें बर्मा तथा हिन्दी में लेख छपते थे। बर्मा मे रहते समय आपने आर्थ सर्त्संग गुटका का सम्पादन किया जो उस देश में बहरा

लोकप्रिय द्वजा। पं नरदेव हिन्दी अनवाद आपने आर्य समाख पहले ही हा साहब भारत आ गए आदर्श एवं उपलम्बियां शीर्षक से और दिल्ली की पंचशील कालोनी किया। वर्मा में रहते हुए आपने आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य सेवाभावी संस्थाओं में क्रियात्मक भाग लिया। इनमें हिन्दी साहित्य तो उन्होंने अपने परिजनो के साथ श्रम्भेलन, टैगोर सोसर्वंटी, हिन्दू मेरे निवास पर आकर भेट की। तथा आर्ट सोसाईटी, रामकृष्ण (केलीफोर्निया) मे उनका निधन मि**रा**न, गांधी मैमोरियल टस्ट आदि हो गया।

के नाम उल्लेखनीय हैं। बर्मा मे वेदालकार की अंग्रेजी पुस्तक का राजनैतिक परिवर्तन हुए। उससे कुछ मै स्वायी रूप से रहने लगे। जब मै पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ का अध्यक्ष या सैन्ट्रल बोर्ड, इण्डियन म्युजिक 15 सितम्बर 1998 को अमेरिका

दयानन्द पृक्ष्लिक स्कूल लुधियान। में यज्ञ दबानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में गासिक यज्ञ का आयोजन 27-11-99 शनिवार को प्रात: 9 बजे से 11 बजे तक स्कल के आंगन में सम्पन्न हुआ। जिसे श्रीमती सरला लम्बा एव माता सावित्री देवी जी ने बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न कराया। बहुत से स्वत्र क्षत्राएं यज्ञमान बने यज्ञ के पश्चात कमारी हरप्रीत ने पर्यावरण और उसकी सरक्ष एवं कमारी सनीता ने "जब आवे सन्तोष धन तब धन,'' पर बहुत मधुरता से बोला, जिसे सब ने बहुत पसन्द किया। इस अवसर पर स्कुल के प्रधान श्री अयोध्या प्रकाश जी मल्होत्रा, प्रबन्धक श्री आशानन्द वी आर्य तथा श्री ओप प्रकाश जी गप्ता. श्री ओम प्रकान जी पासी. श्री अरूप कमार जी सद ने छात्र-छात्रओं को आशीर्वाद दिया।

~स्नीता मलिक

## (पृष्ठ 1 का शेव)

दयानन्द को जीवन यात्र के मार्ग पथ-प्रदर्शन के लिए उन चिन्हों की खोज करो और जिस समय उन्नति का शिखर बड़ा ऊचा और भयावना प्रतीत हो उस समय इस ज्योतिस्तम्भ की और टिकटकी लगा कर ऊपर चढते जाओ। फिर देखो कितनी सरलता से मार्ग समाप्त हो जाता है। अन्त मे में इतना ही लिख कर सम्बन्त करता ह कि स्वामी श्रद्धानन्द भारत माता के उन गिने-चुने सहीद पुत्रों में से वे जिनका समस्त व्यक्तित्व, बलिदान, त्याग और समाज सेवा की ज्वाला से ओत-प्रोत या और जिन्होंने अन्तत: स्वाधीनता एवं समाजोद्धार रूपी यत्र मे अपनी पवित्र आहति देकर भारतीय समाज के जीवन को एक नड ण्योति एव प्रेरणा प्रदान की। स्वामी श्रद्धानन्द जी बस्तुत: एक भविष्य-दष्टा-यग-प्रवर्तक थे और उनका जीवन न केवल आर्य सम्बज्ज के लिए अधित समस्त देश भक्त भारतीय जनता के लिए एक महान प्रेरका स्रोत रहेन्त्र। वह निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी, निस्वार्थ समाज सेवी भारतीय संस्कृति के पुगरुवान के लिए सक्रिय पा उठाने वाले कर्मवीर सन्वासी थे। ऐसे सन्यासी महास्था के उपदेशों तथा अध्दशों को बहदकप में प्रसार व प्रसारण करने की निवान्त आवश्यकता है जिससे समान को प्रेरण प्राप्त होगी। मुझे पूर्व आक है कि आर्थभन स्थानी की का बलियान दिवस मनाते समय उनके आदर्श और त्थानपूर्ण जीवन से कुछ न कुछ अवस्य शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन में चारन करेंगे । यह स्वामी जी के नशिक्षन दिवस पर वनके प्रवि सच्ची त्रद्धांबलि होगी।



### आर्य समाज वेद मन्दिर, भागंव नगर, जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्थ समान बेद मन्दिर भागीय नगर, सालान्बर की साधारण समा की बैठक 4 दिसम्बर 1999 को.बी सरदारी लाल वी कार्य रत्प की अच्छाता में सम्मन हुई। जिसमें नए पदाधिकारियों का धनान किथा गना। वो निजन प्रकार है ।

संस्थाकः :-वान् साधारी लाल जी आर्थ रतन। प्रतिष्ठित सदस्य :- मा॰ पर्न चन्द की, बाब काळी राम की, श्री लाल बन्द सी।

प्रधान :-श्री कमल किनोर जी।

बरिष्ठ उपप्रधान :-पं मनोहर लाल थी.

वप प्रवास :- श्री राम चन्द जी रत्न, श्री कर्म चन्द की, श्री मंत्रलवास बी, श्री चमन लाल जी, श्रीमती बीतें देवी।

मन्त्री:-श्री राज कुमार जी। सद्यापक मन्ती:-श्री लाभ चन्द वी।

उपमन्ती :-पं सन्त राम जी, श्री विश्वम्थर लाल थी, श्रीमती सभाव रानी ।

कोषास्त्रहा:-श्री सदेश कमार रत। ठए कोषाच्याहः – त्रीमती कान्ता देवी।

प्रचार गनी : - श्री सोमनाय थी, श्री ओशक कुमार थी, श्रीमदी सरवा देवी थी।

क्रकाश्यक्ष :-श्री जगदीश भगत भी। लेखा निरीक्षक :-श्री राव कुमार जी रत्न ।

गंगा राम मिडल स्कूल प्रवन्धकः :-पं मनोहर लाल थी। सिलाई स्कूल प्रबन्धक :-श्रीमती सत्पा देवी।

स्टोर कीपर :-श्रीमती प्रश्वक देवी।

ऋषि संगर कमेटी :-श्री जमीचन्द थी. श्री इन्सराय थी. श्री इरवन्स साल जी। (अन्तरंग सदस्य)

1. श्री प्रीतम क्रम बी, 2 श्री हन्स एव बी (पिछल बली) 3 श्री खरा चन्द जो गोज, 4 जी चन दास जी, 5 जी प सरदारी लाल जी, 6 जी ओम प्रकाश थी, 7 श्री पं चेद प्रकाश थी, 8 श्री क्रम चन्द थी, 9. श्रीमदी शीला देवी, 10 श्रीमती बीरां देवी, 11. श्रीमती चमुन्त देवी, 12 श्रीमती दर्शन देवी, 13 औ रवि प्रकार गोज, 14 औ पे दीवान चन्द वी, 15 शी सुरेन्द्र कुमार। आर्थ युवक परिवद

प्रधान .- श्री सोमन्त्रथ थी। मनी:- शीरवन कमार वी। कोवाध्यक्ष :-- श्री सुतील कुमार जी :

-कमल किसोर प्रवान

वीक्रकेष्टर भारती विकासकारकी सुरवाविक्तास्य, सुरवावपुर (द. छ.) किसने किया समर्थित सीचन. वर्ग तक रहा के हित में किया परिवन शक्क सर्वया, विसने जीवन *पर पराविद्यन* । अपराधेय जसी स्वानी में विद्या धर्म के हित बसियान। क्य क्य 'सद्धानन्य' महान ह जीवन विश्वका क्वल गया था. चुनकर 'वसनन्थ' छपवेश। अपने सरकारी से विसाने. विका करा को एक संबंध। रचग्रस्य की वसियंची पर, विक क्या का करना राज है क्षर-क्षर 'स्टानन्व' नारन ह पुनायुत के थे विशेष में, पुनने किया सात् संबर्ग । परिता को भी गले पलाक तम का भग किया शक्रां। प्रेम तमा कर्राम्य श्रवमा, का पान बीत में तना विरात । पय-पर 'बटा अमि की किस पद्धति तुनने, दुण्युस्त में की स्वापित। रंपोर थे अन्तर्गन में, धर्म तथा राह्न का विरा। एकतांत्र्य दुद्ध के प्रांतम ने तुन, शे काए वे नवा विद्यान। जय-जब 'बद्धानन्व' गहान ह विष्य वुन्हारे सुबि प्रीपन से. हम भी गरि हाँ अब होरित। प्याप-राष्ट्र के, सकियानों के, भाग करें इनको धद्देशित। निरिचा हम इतिहास क्वल थे,

जरा-जरा श्राद्धांबन्त महान

सभी आर्यजनो को वह वानकार प्रसन्नता होगी कि सत्वार्थ सदेश को भूमण्डल मे प्रसारित करने के उद्देश्य को लेकर,श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपर के तत्वावधान में प्रतिवर्ष अध्योजित की जाने वाली निक्रम परियोगिता इस वर्ष भी आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिबोगियों की संख्या प्रतिवर्ष बढ रही है। पिछहें, वर्षों में कुछ स्वाध्यायतील आर्थवर्नी का कड़नाथा कि वे सचित डी नहीं हो पाए, अवएवं इस बार सचन काफी पहले प्रकाशित की वा रही है, कृष्या अधिकाषिक सक्य में भाग लें।

विषय :-" आग्रम व्यवस्था में डी समाच का समग्र सका निहित्त है "

(स्त्यार्थं प्रकाश पंचम समुल्लास के अप्रधार पर) परस्कार :- प्रथम ३१०० रूपए, द्वितीय 2100 रुपए, तृतीय 1500 रुपए एवं पांच सान्त्रना परस्कार प्रत्येक 100 रुपए (लेखिका वर्ग में दो विशिष्ठ सानवना पुरस्कार) -: प्रतिबोणिता के नियम :-- प्रतिकोगिता में किसी भी अगय वर्ग के स्वी पुरुष भाग ले

सकते हैं। 2 निर्वय फलस्केप कागव के लगभग 15 पृथ्डों में हो। कागब

के एक ही दरक सफर्ब से टेक्टिव

जैय जब 'बद्धागन्य' महान ॥ वा इस्तरिविक हो। निर्वंश दिशि 10 वनवरी 2000 होगी। असानी से निर्णावकों द्वारा पदा मा सके। इस हेव टेकिंग हो वो शामिल नहीं किए काएंगे। अच्छा है। इस्त्रलिखिद भी

गुणे बेचों का जवगान.

3. निकल की भाग आर्थ माब (हिन्दी) व लिपि देवनागरी होगी। अन्य भाषाओं के उदाहरण दिए व्या सकेंगे :

स्तीकार्य ।

4. निकथ लेखक/लेखिका अपना गाम, पता आदि अलग से एक कालब पर निबंध के साथ भेजेंगे। निजंध वाले पत्तों में कहीं भी अपना नाम/पहचान विन्त वस्ताक्षर स्वरि महीं वोने

च्यारियं । 5 सत्थार्व प्रकाश न्वास को निबंध प्राप्त प्रोपे की अधिम तत्परचार् प्राप्त निषंध प्रतिषोगिता मे

 पुरस्कार प्राप्तकर्त्व को इसकी सूचना दी काएगी। पुरस्कार विवरण **16 से 28 फावरी 2000 में उदयपर** में आयोजित सत्यार्थ प्रकान समारोह के अवसर पा होगा।

7. पुरस्कार के संबंध में परीक्षको

का निर्वय अस्तिम व मान्य होगा। प्राप्त सभी निवंधों के प्रकातनादि के संबंध में सर्वाधिकार सरवार्थ प्रकाश न्यास उदयपर को क्रीसा ।

9. उपरोक्त निक्मों की पूर्ण अनुपालना न होने की रियति में निश्चंय अस्मीकृत किए वा सकेंगे।

-सामी संस्थीय संस्थती अध्यक्ष

शी अधियाँ कुमार वी सर्म प्रक्रवेकेट महानती सम्पादक द्वारा कर हिन्द प्रिटिंग प्रैक्षपेरिकेट विंटर्न कार्रकर से मुनित होकर कार्य नर्नाय कार्यसन, मुख्यत नवन, जीवा विकासका, वालान्यर से प्रसंदी स्वामिनी कार्य प्रदिनिनि संन्य पंचाय के लिए जनसीरत हुन्छ ।



वब 50 अवा 40 18 पीच सम्बद् 2056 तदपुसार 30 दिसम्बर 1999/2 जनवरी 2000 दयानन्दाब्द 175 वाविक सुरुक 50 रुपये आजीवन 500 रुपय

#### बैदिक ज्ञान परिचय अनमोल राग मिति

आयाँ व आर्थ सन्तानो के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिक ज्ञान

परमात्मा का निज नाम-ओ३म् आर्य-ब्रेच्ड (उत्तम गुनयुक्त)

महरवना-गयत्री मन्त्र-अहेश्म मुर्पेत स्व । तत्सवित्ववरिश्यम् मर्गो देवस्य धीमहि। वियो नो न प्रचोदवात्।

वेद सहिताए चार है -वेद ज्ञान चार ऋषियों को मिला -

। ऋषेद(जनसम्बः) ऋषि अपिन मन्त्रसंख्या 10552/80 2 यञ्जेंद (कर्म काण्ड)

ऋषि वायु मन्त्र सख्या-1975 असमबेद (वपासना काण्ड)

प्रवीप अहदितम् मन्त्र संख्या 1875 4 अधर्वेद (विद्यान काण्ड) ऋषि अक्रिय मन्त्र सक्या 5977

ठएवेद-ऋ०-आयुर्वेद (सरीर की रक्षा एवम् चिकित्सा)। यजु० धनुर्वेश (अनुर्विद्या की

बानकारी ) । साम० धन्ववंदेद (सगीत विधा

का वर्णन) अथर्व० अर्थ वेद (ज्ञान

विज्ञान जिल्प विकास)। वेदाङ-वेदों को पढ़ने के लिए ऋषि मृनियो ने 6 वेदाको की रचना की।

1 शिक्षा~स्वर व्यव्यान इनके भेद तथा शुद्ध उच्चारण विधि 2 व्याकरण-शब्द रचना प्रकृति और प्रत्यय का विस्तृत

3 निरुष्ण-वैदिक राष्ट्री के **अनेक** राष्ट्री का 'जन : 4 सन्द -वेट भन्नो के अवों

विवेचन ।

हो बानने की सविधा। 5 म्लोतिय-प्रष्ठ उपग्रह सौरमध्यल खमोल धूगर्ग विका। 6 मारप-यात्रिक कर्न काम्स

का धर्णनः क्यांयु-इन्हे दर्शन अनन्त्र साहत

मा दर्शन सास्य कहते हैं—

१ सास्त्रम २ योग ३ न्याय 4 वैशेषिक 5 मीमस्य 6 वेटान्त उपनिषद-उप (निकट) + नि (निश्चित) + सद (नाश करना गति आणि शिथिल करना)। इनके अध्ययन से अन्धविश्वास मिथ्या

घारणाये दर होती हैं। मुख्य प्रामाणिक उपनिषद ग्यारत हैं -1 ईस 2 केन 3 कार्ठ 4 प्रश्न 5 मुण्डक 6 माम्ब्रुक्य ७ ऐवरेय ८ तैशिरीय

९ कॉन्दोग्य १० बृहद्शस्यकः ११ स्वेतस्वरहोपनिषद् । बाह्यण प्रन्य-अमुख बाह्यण

ग्रन्थ चार हैं। १ ऐक्टेन ३ शतपन ३ साम । गोपथ। वेदो को समझने के लिए बाइएण ग्रन्थों की रचना की गर्ह ।

अग्रज्ञयोग-योगके ग्रदशकरी 1 यम-सत्य अहिसा अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह।

2 नियम-हॉंब सन्तोब दव स्वाध्याय ईरवर प्रणिधान। 3 शास्त्र, 4 प्राणायाम 5 प्रत्यादार 6 धारणा ७ ध्यान ८

समाधि। त्रैसवाद-1 ईस्वर 2 जीव

3 प्रकृति। आसम व्यवस्था-जीवन मे 4 आग्रमो का वर्गीकरण -1 श्रद्धावर्ष २ गृहस्य ३ वानप्रस्य 4 सन्यसः।

वर्ण व्यवस्था-कार्यों के सभार पर 4 वर्षों का वर्गीकरण र सम्बन्धम<del>-पदमा प</del>दाना 2 **स**त्रिय-रक्षा करना १३<sub>५</sub>वैश्य-व्यापार समालन ४ साम-चोर्क करना। गोट-वर्ग अन्तर्व्य के अन्तर्गत

महिलाओ सहिदसमी वर्षों के लोग्हे को बंद पहले का ऑफिकार है। आर्थ प्रमान के प्रसर्गक चुन प्र**च्छा महर्षि दया**नन्द सरस्वती सभा प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा का आदेश

मैं पिछले कछ समय से अस्वस्थ चला आ रहा ह इसलिए मै आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान के कर्त्तव्यों का सही तार पर पारनन नहीं कर पारहा। अब मैं सभा के सविधान की धारा 24 मे वर्णित संख्या 7 के द्वारा प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करत हुए हा के क पसरीचा सभा वरिष्ठ उप प्रधान को आर्य प्रतिनिधि सभा प्रवास का कार्यकर्शा प्रधान नियुक्त करता हु और सभा के प्रधान क रूप म मुझ पो अधिकार प्राप्त हैं वह सब अधिकार भी मैं उन्हे देता ह। इसके l साथ हो आर्थ विद्या परिषद पंजाब में व आर्थ विद्या सभा म मझ जो अधिकार प्राप्त हैं वह भी मैं उन्हें देता हूं। उनकी देख रख में अब सभा का सारा कार्म कनेगा मैं केवल सभा की बैठको मे अध्यक्षता करूना बिस् भी बैठक में मैं उपस्थित दूगा। मेरी अनुपास्थति में सभा की बैठको की भी वह अध्यक्षता करेगे। मैंने यह सब इसलिए किया 📭 के ताकि सभा का कार्य सुचारू रूप से चलता रहे।

मेरा यह आदेश पुरन्त लागू समझा जाए और यह आदेश आगामी नाव वक लागू रहेगा। चुनाव एक लागू रहेगा 🚜 न ही यह आदेश निर -हरबस लाल शर्मा विसभा प्रजास जालन्ध

सेवा में ती डाके

जन्म 12 02 1824 जन्मस्या गबरात मीरवी प्रान्त टकारा ग्राम

माताका नाम-श्रीमधी यत्तोदा (अगुत्तबेन अपूचा) पिता का माम-श्री करसन शे विकरी।

**वृत्त का भाम-दण्डी** स्थामी गुरु विरजानन्द (प्रजा चक्ष) आर्थ समाज की स्वापना 7 4 1875 निर्वाण विचि 30

10 1883 1 अधर कृतिया – ऋग्वेद्धदिमाध्य भूमिकः चेद भाष्य सत्यार्थं प्रकात सरकार विधि आर्याधिकाम आर्थोदेश्य राज माला आर्य समाज स्वमन्त्रक्या मन्त्रक्य प्रकाश गोकरुवानिध आदि आर्य प्रन्यो की रक्त प्रजीवत के कल्वावार्य की।

सस्कार विधि-जीवन की शन्द्रसा हेत् १६ संस्कार -गर्थांचान 2 पुसचन ३ मीमनोज्यान ४ बात वर्ध ६ नामकरण 6 निकासण 7

अन्तप्रशान 8 चुडाकम 9 कर्णवेध 10 उपनयन 11 बेदारम्य 12 समावर्तन 13 विवाह 14 वानप्रस्य 15 सन्यास 16 अन्त्वेष्टि ।

भा महामन्त्री

सत्यार्थ एकरश मे सम्मुलास है -1 ईश्वर एक नार् अनेक 2 बाल शिक्षा 3 अध्ययन अध्यापन विधि 4 विवाह और गृहाश्रम का व्यवहार 5 वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की विधि 6 राग प्रजाधर्म 7 **इंस्व**र और वेद विचय 8 जगत कौ उत्पत्ति स्थिति और प्रलय 9 विश्वा अविद्या बन्ध और मोक्ष का व्यक्तिया १० आचार अनाचार भस्य और अभस्य विषय 11 भार्थावर्तीय मत मतान्तर का

আম্তণ মৃত্রণ বিষ্ণ 12

चार्षक बौद्ध और बैन मत समीक्ष

13 ईसाई मत विवेचन 14 इस्लाम त्रतंका विक्रमः। (शेष पत्र ८ पर)

## प्रेरक बलिदानी स्वामी **भद्धा**नन्द

स्वामी ऋग्रनन्द महर्षि दयानन्द के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी और शिष्य से उन्होंने ऋषि के चिन्तन मनन मन्तव्यो आदशौँ उद्देश्यो आदि को व्यावहारिक रूप देने मे सम्पूर्व जीवन आहुत कर दिया। स्विके कार्यों को उन्होंने आगे महाया। अपने गुरु को स्वामी ब्रह्मनन्द ने अपने आधरण कार्यों तथा बलियान से जो ब्रह्मावरित दी है वह मुगो तक इतिहास मे पठनाय वन्दनीय और स्मरणीय रहेगी ऐसा महापुरुष निरुषय ही अपने मे विलक्षण तपस्वी त्यागी कमर्ठ ब्रह्मवान और सकल्पी रहा होगा जो कहा से उठा और कहा पहुचा महापुरुष और महानग्नन्थ ससार की अमृरूप धरोहर होते हैं नो मानवता का असत्य से सत्य अध्य से धर्म पाप से पुष्य तथा मृत्यु से जीवन की और प्रेरित करते हैं स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व एव कृतित्व ऐसा ही था। वे सदा मूले भटके दुर्गुंच दुर्व्वसन म फसे लोगो के लिए प्रेरक प्रकार उत्तरम बने रहेगे। महापुरुषो के जीवन कर्म

कार्य सन्देश शिक्षाए आदि प्रत्येक काल परिस्थिति तथा परिवर्तन मे प्रसागिक उपयोगी एव सार्यक होते है। स्वामा श्रद्धानन का जीवन कार्य विचार तप त्याग सेवा चलिदान आदि आज के आर्थ समान ओर उनके अधिकारियो व अनुवायियों को बहुत कुछ सीखने करन सभलने और आग बढने का प्रेरणा ओर चेतना दे सकता इंबह तभी हा सकता है जब न्म ईमानदारी तथा सच्चाई से साखना सुधरना आगे बढना चाहरी है नहातों पर्वतसय बन्म दिन विलिदान दिवस आदि आते हैं। रस्य पूरी करक जलसे लगर माला फोटो तथा एक दूसरे की प्रशस्य ने पर हा जत है जा इन कार्यक्रमा का मूल चवना प्रयोजन ठाइस आदि होत है "स तक कोई बिस्ला ने रोव एता है जिन्होंने सोया समझा पकडा और जीवन को सुधार लिया उनके जीवन कुन्दन बनका चमके वे इतिहास पुरुष या गए। मुलशका शिक्सवि का रात जागकर स्वामा दवानन्द वन एए उनके जीवन ये एक शिवरात्रि न कायकस्य कर दिवा। हमारे णवनो मे किसना शिक्सत्रिक आई और बली नई ? इम वहीं खडे २ परधर भूषा में सिर रगडे जा

हों. आँठ नहेंका पर विकासनाम सिनारी रहे हैं ? जामीचन को आपि के एक राज्य ने हीरा बना दिवा का। मुनीरान को एक अस्तान ने अस्तिन्द को परवी पर जाता की अनियम मृत्यु की मुख्यान ने आसिक स्नामक आर्थ समाज का दीवाय कर दिया। उठाइरोंने से इंडियास कर पढ़ा है। अरोधी सिकार से कार पढ़ा है। अरोधी सिकार से पा पढ़ा है।

सहन भोग विस्तास पूर्ण वातावरण के रमण मुझीराम के जीवन मे नारितकता दुर्गुण दुर्व्यसन आदि आ गए से। जिसके कारण उनका जीवन अन्धकारमय होता या रहा था। ऋषि दयागन्द के चुम्बकीय व्यक्तित्व से निकलने वाली ज्ञान गगा ने मुझीराम के जीवन को बदल दिया। दोवो भरे वीका का पटाक्षेप हो गया । पूर्व गुप्त संस्कार जाग ठठे। जीवन में परिवर्तन और कपर उठने का दौर चल पडा। जीवन में नई क्लान्ति जागी। ऋषि के दर्शन विचार पाण्डित्य सत्यार्थ प्रकार और धर्म पत्नी शिवदेवी के सेका प्रेरण तथा सद्भावना से उन्हें यह प्रवित्र धार्मिक चीवन जीने की प्रेरणा मिली। भोग विलास मदिरा देश धर्म जादि गुरुकुल शिक्षा नारी शिक्षा एव शुद्धि यह का जहां बनकर इतिहास प्रसिद्ध ढल्लेखनीय व्यवणीय तथा चन्द्रनीय कार्य कर

जीवन से सीखना वाहे सिक्षा प्रेरणा आदर्स और भावना लेना चाहे। तो उनका जीवन कदम कदम पर हमे बहुत कुछ सीका समझा एवं कचा उठा सकता है। हो हम क्यो नहीं ऊपर उठ सकते हैं। हम भी समल व सुधर सकते हैं। पाप अधर्म एव बुराईयो की छोडकर महान व प्रभु भवत बन सक्ते हैं। अपना काषाकरण कर सकते हैं। यह तभी होगा जब हम अन्दर से जागेंगे ? हृदय में जाने ज्योति जानेगी। अपने पाप दोषो को दखेंगे। देखकर सोचेंगे व स्वीकार करेंगे कि मेरे अन्दर दोग है उन्हें मैंने दूर करना है। दूर करने के लिए दर्द वेपेनी मुखा आदि मन में शानी होगी। तप व त्याग करना होगा। उपस्था की भर्टा में तपना होगा। तम कहीं साका पूर्ण पुर्वासन पीका छोडेंने। विक्रिय खर है कि ठाव कोई अपने दोनो तना नुतायों को देखकर

यदि हम स्वामी ब्रद्धानन्द के

तक दुसरे को दीनी देखने की प्रश्नी यं को चल की ओर से अप मनुष्य को स्थान का नात ... रही है। श्वामी अञ्चल्द में अपना तन मन धन वीनों राष्ट्रविक में असूव कर रिए। प्रशिक्तन में कुछ नहीं बाह्य । यने मीर कपल में विपरीय परिविषयिकों और सावन-सुविकाले के अभाव में गुरुष्ट्रल कामडी की स्थापना करना। इसे बसाना आगे बद्धाना और विक्य प्रसिद्धि दिलाना स्वामी ब्रह्मनन्द की अमरता के लिए एक ही प्रमाम एवंदिस है। उन्होंने वैदिक शिक्षा प्रद्वति का पुनरुद्धार किया। अग्रेची की लिखा पद्धवि का विकल्प गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही हो सकती है। यह उन्होंने सिद्ध करके दिशा दिना। गुरुकुल कागडी स्वामी ब्रह्मनन्द के वर्ष त्वाग सेवा का फल है। के सस्या स्वामी जी का जीवना स्मारक है। कार्य सभाज का मान्यक प्राप्त विश्वविद्यालय केवल एक यही है। यदि इम स्वामी श्रद्धानन्द को **बीवित स्मरणीय तथा अनुकरणीय** रखना चारते हैं से गुरुकुल कागडी में स्थामी श्रद्धानन्द के स्वामी विचारो और आदशौँ को जीवित व क्रियान्विव रखना होगा जिस दिशा और दत्ता में आब गुल्कुल का रहा है। यदि यही दौर चलवा रहा वो वहा स्वामी ब्रह्ममन्द का नाम लेने वाला कोई न मिलेगा। हम सक्को स्वामी श्रद्धानन्द के बीवन से प्रेरणा

कर कर इस दूकर करने को

तवीं की है ? अपने की निर्वाप

की प्रवृति को छोते। तभी सस्था का दिव होगा। कोई भी सस्मा सगठन राभाव और राष्ट्र व्यक्तिको के उप स्थाग सेवा बलियान आदि से चलवे हैं। व्यक्तियों के बीवन और कार्यों से आने वाली नीडिया शिक्षा व प्रेरणा सेवी है। स्वामी बद्धानन्द के कार्य सदा प्रेरणः व सविश देते रहेंगे। रौलट एक्ट के किरोध में चादनी चौक मे विसाल क्लूस में सैनिकों के सामने बीश खोसकर खडे ही नागा। फले मेरे ऊपर गोली चलाओ फिर क्लूस पर चलाना। यह ठनके साहस वीरत एव निर्मीकता का परिवादना है। उनका वह कार्य इतिहास में अगर रहेगा। स्थमी भी पहले व्यक्ति थे विन्होंने बाख मीखर ये बेटनग बोलकर विन्दू-जुदलमधी की एकवा और पार्श्यारे कर सबोश निक्त था। क्रुक्तेने दोनों क्यों को प्रक्रम सन सथ एक परमारमा की सन्तान हैं।

और शिक्षा लेगी चाहिए कि उन्होंने

अपना सर्वस्य सस्या के लिए

नि स्वार्थ भाव से त्वाग दिया था।

पदलोलुपता स्वार्च लाम एव लोभ

हुने अवस्था में निश्त चुतकर रहनां चाईवर् । स्वानी भी पहले जीड श्रातिक व्यक्ति थे। किस्ते जामा महिलाद से प्रत्यकर करने कर अवस्थर मिला था किस्तोने येद और प्रात्यक्ता के सन्देश को मुनावा वा

स्मानी की ने दलियों परियो और मक्तों के लिए स्मरणीय कार्य किया है। ये सब मानव समान हैं। इस भावना के पुजारी थे। जो पिछक गए हैं। जो लोभ स्थार्थ अञ्चलता आदि के कारण विश्वर्मी का गए हैं। वो हमार पूर्वको की सन्तान थे। उन्हें पन सुद्धि के द्वारा अपने वर्ग मे वापि। लाना। उनका महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय कार्व रहा है। इपा कार्य के कारण उनके महात्मा गाबी से मतमेद दूए। इसी बद्धि के कारण उन्ह अपने प्राची का आहरी देनी पडी। उनके मलिदान से ब्रिन्ट् जाति के सगठन को समित मिली। उनका चलिदान भारतीय करण और राष्ट्रीय करण का सूचक है। उनके सभी कार्य और सेपाए राष्ट्र की भरोहर हैं। आज का जीवन और जगत स्वामी श्रद्धानन्द र बहुत कुछ रिक्षा प्रेरण तथा उपदेश ले सकता है। गणोक क्षेत्र म हा। दनसे दप त्याग और सेवा व्य भावना का सीच ए सकते <sup>क</sup> महाप्रकों के जन्म मरण बलिदान सदा हमे बनाने सभारत सवारत और ऊपर ठठने की प्रेरणा दन जाते हैं। स्वामी ब्रह्मनन्द जैसा चरित्र इतिहास में कहीं न मिलगा **अपने चारों औ**र मानव के समध **तरह काह की** समस्याये उल्हान शिक्षाद सकट आदि खडे हैं। मनुष्य मनुष्यत्व से इट व कट रहा है बोर न**रि**एकरन फैलवी <sup>चा</sup> रही <sup>क</sup> भोगविलास शृग्धर व षासन है के अम्बार लग रहे हैं। मानब भोगवाद में बिरता जा रहा 🕏 जीवन में वार्मिक व आध्यान पक्ष कुट रहा है। ससार विनास हा ओर बढ़ रहा है। ऐसे अशार सबर्व रोग भरे जीवन जगत को स्वामी अखानन्द का जीवन और कार्वों की प्ररणा संबोधनी सकित का कार्य कर सकती है। यदि हम सक्ते अर्थ में भागव जीवन क सार्वक व समल बनाना भारत है और देश वर्ग वाति की ओर मानवता आदि को सेवा करना कारत है को स्थानी ब्रह्मनन्द्र भ जीवन से प्रेरणा भावन यूच व्याप्त प्राप्त करो। यही उनका संस्थी म्हिदान दिवस गाग तमी **म** 

करें सक्ती महान्यला भीगा

100

## AT DOSET PARATA

इससे खेला इस पूर्व इसिंग्लं नामीत होना चाता कर हा है। उस १९०० कर हाई में हुई इस्ट्री स्थान हरा हाई हो हो हो हो हो है। हा खुद महान है जूद उस स्थान हरा हा हा है। ये हो उस कर 2000 कर में कार्य कर में हुए उस कर हो हा पहुंच कर में जा करें कर में इस कर है। अभिना मिलेक्स होंगे। स्वालिक होने में स्थान वर्ष इस कर एक अभिनात होना हमारे कर हा है। ही जी कर सहस्य हा एक ही कान्युट देशक और इस है। इस हो है। कर हा है। इस कर ही कान्युट हमा चोच हो कर है। इस कर हो कर हा है। इस कर ही कान्युट हमा चोच हो कर है। करा है जिस कर कर ही कान्युट हो हमारे कर हुए कर हो हो। करा हो कर हो के हैं। इस हम हमारे हमा

फाले कोई यह भी नहीं जनता था कि वित्र भी कल सकते हैं। पहले क्या पर विश्व वया उस पर लोगों को अध्यन्त्रा सा इका था कि वित्र कैसे चल सो हैं होठ कैसे हिल रहे हैं इन्सान दीहता धानतर काम करता हुन्य कियों में दिखाई दे रहा है। परन्तु सीम ही फ्लापित के साथ आवार्य भी 📾 गई सिनेमाचर बन गए फिल्मे वन गई परन्तु बढ़ा क्क ही बस नहीं इन्स कोटे पर्दे पर भी चल बित्र नव गन्ता। टेलीविका बन गवा पहले ब्लैक शब्द वर्डट फिर रगीन और अब घर घर मे टैलीवियन परच गया देश विदेश की सभी वार्ते शवकार आहार व्यवहार संस्कृतिया सभी कुछ देखी का सकती हैं। आब टेलीविकन के विदेशी चैनलो पर कई देशों के लोग भरत के लोगों को और बच्चों को अपनी सप्कवि घोल बोल कर टेलीवियन के मुख्य से पिला रहे हैं और वह देखकर भारतीय माता पिता हु त्यी हो रहे हैं कि यह क्या हो रहा है। टेलीविजन आसा तार द्वारा देलीफोन को जोडा गना। इसान एक दूसरे की बात बहुत दूर बैठे सुनने लग्ना। परन्तु सुनने का साधन बहुत दूर तक क्षर ही रही 'परन्तु अब विद्यान और आगे बह गया है किंग जम्मा लगाए किंग कर लगाए भोचाईल फोन पर इक दूसरे की अन्याय लोग सुनने लगे। किसी भी समय कहीं भी बैठकर कोई भी किसी से भी कतचीत कर सकता है। अब तो पहा तक हो नवा है कि घर से बाहर गए व्यक्ति से सडक में कलने चलते भी अरूप बात कर सकते हैं। मैंने कई कर देखा है कई लोग स्कटर पर सफर करते हर मोबाईल फोन निकाल कर बान से लगा लेते हैं और बाते करने लग करों हैं। कार में तो अवसर ऐसा हो सहा है कि कार में बैठे बैठे लोग स्वय भी फोन करते हैं अका वह बात करना चाहे वह कार के सफर मे भी बात कर सकते हैं। कई बार इसका एक दुव्परिवाम भी सामने आया है कि कार बस्ताने वाले ने ज्यों ही मोबाईल टेलीफोन कान से लगाया तो उसका आन समने से हट गया और एक दुर्बटना का शिकार हो गया। मोबाईल फोन लाधकारी भी हुआ परना इसके साथ ही द सकारी भी कारत का राज है।

## **20** 2000 মুমুলমূম হী

वर्ष 1999 की सम्माध्य पर और वर्ष 2000 के मुख्यान्य होने पर इस आर्थ सम्मीच के सभी पाठकों को आर्थ प्रतिनिधि तथा पर्वाच के राम्यानित्य सभी आर्थ सम्माची के आधिकारियों का सरस्यों को तथा से सम्माध्यान तथी रिका सम्माची के सिंपिएकों प्राध्यानित अध्यापकों राम्या-समितियों के सभी प्राध्यानित्यानों व सरस्यों को और सभी अर्थ भाई बार्चों के हार्वित स्थाप काम्याच र हुए काम्याच्य पेट करते हैं। यह वर्ष वसी के लिए मई उपने लेकर आर्थ और सम्माचे हुआ अरिश स्थापित देने साम्या हो एसी हमारी हुआ स्थापना है। अपने काम्याचार्य स्थितिय

इसकत साम राग्री का के के पातरीका अधिपानिकभार राग्री एक्सेकेट कार्यकर्स प्रधान समा प्रवान समा महामन्त्री तरवारी ताल असे की पाली राम कमार रामा नः समा क्षेत्राध्यक्ष सम्प्र राष्ट्राधान रजिस्टार विधा परिश्व \* पहती है। विज्ञान वह रहा है इन्सान के भोग विलास वह रहे हैं पाप अल्बाचार का रहे हैं रोग का रहे हैं विकित्सा साधन बद रहे हैं उन्हान की उच्छार अभिलाक्तर कह रही हैं। अराजकता वह रही हे कातकावद क्य रहा है। ऐसा लगता है कि प्रत्येक चीज बढ़ रही हे आक्रिर कड़ी वो इसकी सीमा होगी। कड़ी वो काकर यह चीजे स्केशी अवन इन्स्तर नात कारों ना रहा है यह प्रकृति पर भी हावी होत

क रहा है। यह खरी पर पहुंच रहा है। परमाना के नाम (निमाने का पी तोन्ने में पर साम है। ऐसा सामात है कि साम द रहत (सह उसना अन्त-के का इसना भी कुमों कर पर ने माना में समान है। यह पी औरचन्द्र अब्ह होने करदमा भी हो गए हैं। यह अस्तम्य काते का साम्यव हाते का यह हैं किनों परमाना भी हो गए हैं। यह अस्तम्य काते का साम्यव हाते का काहीं के अनों परमाना भी काता है हुए कहा सामाना का कि माना की और से का रहा है। यह सादा औरच का सादा आता. काला प्रात्त का अस्ताह है। यह सादा औरच का हता का आहा का मुझीन होता का रहा है हमान का खान कर हाते का सादा की हात काला हमा हमा के साथ है। उसना में से देश्य सामान हो हार ह एक्समा का हो साथ गए हैं। इसना में से देश्य सामान हो हार ह एक्समा का हो सोमा से माना का रहा है। इसना में से इस्थानका है।

इसलिए हम अपने जीवन में आने वाले अत्यक्त क्षर का सम्पान खरते हैं। अने चाले वह सन् 2000 के लिए भी हम सक के लिए मगलता क्ष' कामक करते हैं। वह सताब्दी हम सकके जीवन में से, कर समागे और मगलवाकों को लेकर आए का भी परमावा से हमारी प्रार्थन है

> —धर्मवेव आर्थ सक्षरापादक

#### खामी ग्रद्धानन्द सांस्कृतिक पथ प्रकृत

ले*ः ग. आवन्य अभिरासी भी १/१ आर्थ प्रमास*राज्य *न्यासा*तुर

स्वामी बद्धागन्द का वन्म स 1923 कं फाल्गुन कुम्म 13 को नालन्थर (पंजाब क वलवन ग्राम म हुआ। आपके पिता जी का नाम नानक चन्द्र था जो अग्रेजी राज्य मे रसालदार थे आपक पिता वी को बाद म पुलिस इस्पैक्टर बरेली और फिर बगारस में कोर्ट इन्सपैक्टर बनाया गया। वह बाल्यावस्या से हा शिव भवत व स्वामा श्रद्धानन्द का जन्म का नाम मुन्हा राम बा और न्योतिया न उनका नाम बहस्पति स्खा था।

वसपन स आपकी बुद्धि बहुत

तीव या रामामण का कथा सुनी जिससे सनकर अपको बहुत प्यार हा गया पिता सरकारा कर्मचारी थे बार बार बदली हो जाती थी इसलिए शुरू तुरू मे आफ्का पढाई मे मन न लगा और कुछ इद तक भावारागद मा हो गए आपको एक बार एक मन्दिर मे जान से इसलिए रोका गमा क्योंकि उस दिन वहा राना न आना था और ासपाहा **जन साधारण का मन्दिर** मे जान का अनुमति नहीं दे रहे थे मन्दिर के विवय में प्रश्नपात की न्छा कर स्वामा जा न **ईसाई ब**नने का ठानी परन्तु जब एक पादरी का एक नर्स के साथ घणित दशा म दखा तो ईसाई बनने का विचार भा कोड दिया बनारस मे एक नाग साथ ने एक अबला को पकड लिया उसे सन्तान के लोभ मे फसा कर वहा लाया गया था आपन तसक सतीत्व को रक्षा की इसा प्रकार दशहरे का भीड मे कुछ गुण्एक दवाक पीछे लग गए आपन उनकी चप्पलो स खुव मुस्मत का मधुत में एक नवयुवता का गारगई के पज स रक्षा का इसिंपिए आपको इदय में चीर बनन का धुन सवार हा गई

स 1834 म जब आप कवल वव क व आपकी शादा हो गइ आप कुसगत में पड गए और मद्यपान आरम्भ कर दिया 14 श्रावण सं 1936 का स्वामी दयानन्द जा के आगमन पर उनका दखभाल का काम मुन्शा राम जा के पिता का सौँपा गया उन्होन मुशा सम त' स आग्रह किया कि व भा ससग में चल और स्वामी जा के उपदश्च सुन स्वामा वी का उपदेश सन कर व बहत प्रभावित हुए और मातपना क विरुद्ध मन में धारणा

बैठ गई। मन्ही राम बी पहले नायक कसीलका को फिर आफो त्वापक दे दिया और लाहौर में कानून पहना जुरू कर दिया। मुख्यारी की परीक्षा पस की। एक पूर्टी में मध्यपन का दौर चल रहा बा। वहा अपने मित्रों की नशे में पूर दशा को देख कर मुन्ती राग जी की आखे खाल गई और इस व्यसन को सदा के लिए छोड दिया। बहा से तर् जीवन का आरम्भ हुआ। पहले वह ब्रह्म समाज की ओर झूके। अहला के पूर्नबन्ध की समस्या के समावान ने अवच्छो सत्यार्थ प्रकाश की और र्खीचा आठवे सम्मुखास को पक्षा और इतनी सन्तुष्टि दुई कि झट आर्थ समाज के सभासद हो गए। तब सत्यार्थ प्रकाश को गठराई से विचारा और पश्चामश्चय के समझास को पदा। मदा पहले ही

भोड चुके ने परन्तु मास फिर भी

खारो थे। एक दिन मास की टोकरी

को गजरते देखा और कटी

क्करियों के पैर बाहर लटके देखें।

सत्यार्थ प्रकाश की पवितया कान्ति

करने लगीं और उस दिन से मास

खाना भी छोट दिया इस प्रकार

मुशी राग से महत्त्वा मुशी राम बन

मुन्ती राम वी भल ही वकील बन चुके थे शेकिन धार्मिक विचार मन में इतने घर कर चुके थे कि यदि उनको पता चल जाता कि केस झुटा है तो पैसे वापिस कर देवे थ। एक साङ्कार का मुकदमा उसलिए छोडा दिया क्योंकि उसमे जालसाजी भी आपकी वकालव खूब चमकी और आफ्का नाम एक नामी वकील में हो गया।

धार्मिक क्षेत्र मे अनुदायी बहुत बदन लगे दूर दूर तक प्रचारार्थ जाने लगे एक कर कपूरवला में प्रचारार्थ गए और मुर्तिपुत्रा के विरुद्ध शास्त्रार्थं किया। सन् 1934 मे आपको श्रा गुरुदत्त विद्यार्थी के सत्सगका लाभ हुआ। आप उनको अपना पश्चप्रदर्शक समझते थे गुरुदत्त के निधन पर आपको बहुत दु ख और गुरुदत्त का सारा कार्यभार उन्हीं को सम्भक्तन पक्षा। स 1948 में 15 महापद को

आपकी पत्नी आपको छाडकर स्वर्गवास हो गह उन पर बहुए दबाव डाला गया कि दूसरा हादा कर ले परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया आप अपने महान् गुणो से

राज्यातिक केंद्र को पूर्व हो। आपके करण के विकास गांधी थी का न्यात प्रचान न्या होन कन्य एनका आपको पुर मानते थे। इंग्लैंग्ड के अनेश प्रसिद्ध पुरुष **अपसे आतीर्षाद मागते वे**।

पुन्ती राम भी के जीवन की एक घटना ने उन्हें महतमा मुन्ती राम से स्वामी अञ्चलन बना दिया। मुन्ती राम की बहुत शाहोपक में थे कि बाकी का समय बर्म प्रवार मे नुबारे या फिर चकालव का काम करे ? यर से वैयार होकर काला कोट पहन कर न्यायालय की ओर चल पढे। बहर निकल कर एक चौक पर सब्दे होकर सोच में हब गए। कभी सोचते कि वापिस बर चला व्यक्त और वह चेशभूषा उतार कर फैंक दूऔर सन्यसी वन वाक। कभी सोचरों कि नहीं यही शक ठीक है। इस सोच में दुवे करा खडे कही सोच रहे वे कि एक सफाई कर्मचारी सहक साक कर रही भी। यह सफाई करती करती वहा पहुच गई बहा मुन्ही जी सोच में दूने खड़े से। उस स्त्री ने सफाई फरनी वी और चौक मे वहा नुन्ती जी खडे थे। उसने कडा चवुएक ठरफ हो वाः मुन्ती जी को यह रूब्द गुबन लगा बाबू एक दरफ हो वा बाबू एक तरफ हो जा। निक्चम किया कि एक तरफ ही हो जला चाहिए

सन्यासी बनने का निरुष्टम कर लिया और इस प्रकार व्यावहारिक थये को छोड़ कर स 1971 मे सन्यास लेकर महात्मा मन्त्री राम से स्वामी ब्रह्मनन्द बन गए। आपने एक प्रस्ताव आर्थ

प्रतिनिधि सभा मे सन् 1898 मे रखा कि एक गुरुकुल खोला काए जिसमे वैदिक शिक्षा स्वामी दयानन्द जी के दिखलाए मार्ग के अनुसार दी जाए। आपने 30 000 रुपए सग्रह करने की प्रतिज्ञा नी। तीन वर्ष मे +0 000 रुपए एकत्र किए और इरिहार के समीप गगा के तट पर दानजील स्व अमर सिंह जी के दान की परिवा भनि पर कागढी गांव में 1959 विक्रमी ये गुरुकुल स्थापित किया। गुकरा बाला से 29 संक्ष्मकरी वहा लाए 1(t) 100000 10 000 100 पर्ण विकामिद्यासय का रूप ले चंकी है जहा हर प्रकार की शिक्षा का प्रकल्प है। और इसी प्रकार अनेक प्रान्तो में अनेक मुस्कूल चल रहे हैं। सन् 1908 ई (स 1935) मे आएक बरन से सार्वदेशिक सभा की स्थापना चुई

और जान उसके प्रधान निवासिक होते खे । महम्बल में चुर्निक पीडिता की सङ्ख्या के लिए 70 सहस्त क्षमा एकत्र किया। 54 सहस्य स अधिक खर्च हुआ शेष आय प्रक्रिनिय सभाको सीँप दिमा स्वामी अञ्चलक ने ईसाईकों के निरुद्ध बहुत प्रचार किया चुकि वन दिनो पारत पर विवेधा अधिक वा और ओंबो की सरकार होत के भारे अफसरों के यह कान धर गए कि अर्थ समाब सरकार का सन् है। अर इस राबद्रोही संस्था बतलाबा गयाः ३० मार्च १९१९ म दिल्ली में निष्क्रिय प्रतिराध आन्दोलन के सम्बन्ध में भारा **इडताल हुई** और स्टक्तन पर गाला चला। कम्पनी चाग मे सभा हर उस पर भी गोली चलाई गई परन्त चीर श्रद्धानन्द ने आगे वह कर कहा कि गौली बलानी है वो मेर सीन भ चलाओं स्वामी ब्रह्मानन्द क इसा साइस ने गोलियों की बौकार का वहा ही रोक दिया। इस प्रकार एक सन्यासी के आरम सम्पर्ण न अनिपनव लोगो का गोलियो स धन

वाने से बचा लिया आपका हिन्दा माचा और हिन्दुओं स बहुत प्यार वा हिन्दा को वह आय भाषा कहत ह गुरुकुल का प्रश्न स एक पात्रक उर्द भाषा म **गद्धम** प्रचारक निकासर 🗷 आपन उसका भ हिन्दा में कर दिया आपका हिन्दा भाषाओं के एक सम्मेला (भागलपुर) का सभापति बनायः भवा ।

शक्कि और हिन्दू सगठन का कार्यक्रम तो आपका प्राण थे शद्धि आन्दोलन ने हिन्दुओं में एक क्रान्ति पैदाकर दीमा व हिन्दुा मुसलमान बन गए थे उनका शुद्धि करके वापिस हिन्दू बनाया जा रण बा। जिसस मुसलमानो का आधा पद्दच रहा पर और सभा मुसनमान स्वामी जी के प्राणो के प्यास हा यए उन्हें धमकी के पत्र आन नग कि उनकी इत्या कर दी जाएगा एक प्रातः एक नवयुक्क स्वामी जा को भिलने आया और आकर उसन स्वामी भी के शरार को गोलिमो स कलमी कर दिया यह हत्यारा <del>ब्ल्युट स्थाद का धारते</del> लगा ग श्री धर्मपाल विकासकार न दम पुलिस के आने तक न्बोध गढ़ जीर इस प्रकार स्थामा अद्धानन अमर जडीद हो गए। स्थामा ज की जबबाज का समह इतना विज्ञा था कि बर्क तान माल तक लाग ही लोग दिखाई देत थ

#### पादरी भाग गया

ओन प्रकास त्याची

सकते हैं।

विश्सा की चारा सुनकर पादरी चीचका-सा रह गया और अपनी होंप मिटाने के लिए बोला-देखो माई। बदि तुम लोग ईसा की शरण में आ बाएगा तो तुमको फिर भूत-

प्रेत नहीं प्रकटेगा। निरसा-आप वैसे पहे-लिखे आदमी भी मूत प्रेत बैसी गिराधार एवं मूर्खकपूर्ण बातों में विश्वतस करते

पादरी-इम बक सभी वनवासी भूत-प्रेत मानते हैं और भूत-प्रेत के कारण जना प्रकार की वीमारियों में फसे रहते हैं।

विरस्त-पदरी सहब । बीमरियो के कारण भूग-प्रेत होते हैं ऐसा किसी बाक्टर के सामने मत कह दीविएगा अन्यक्ष यह आपको पागल मोवित कर देगा।

पादरी-गाव के अनुपद लोगों को ओर इसारा करते हुए पादरी ने कहा-आप लोग बतलाओ कि भूत-प्रेत से कीमारी डोकी ईंबा नहीं रे गाव के लोग-स, होती है।

बिरसा-यदि भूत-प्रेत से बीमारी होती हे और ईसा की सरण में आने में भत-प्रेत भाग वासा है तो पादरी मातब इस्बई लोग तो कथी बीमार नहीं होते होंगे।

(बिरस्त्र की बात सुनकर पाइसे सिर खुजनाने लगा और उसकी हालत देखकर गांव के लोग कड़कहा लगाकर हस पडे ()

बिरसा-पादरी औ। जब ईस्व की शरण में आपे से ही भत-प्रेत भाग जाते हे और कीमारी दूर हो बार्ता हे तो फिर आप लोग अस्पताल क्यो खोलते हैं और क्यों करोड़ो रपया दवाईयों पर व्यय करते

(पादरी फिर सिर खरबलाने लगा

और इसी का कारण बना।) विरसा-पादरी जी । क्या आप बतला सकते हैं कि ये भूत-प्रेत कैसे 'उरपन होते हैं और कहा रहते हैं ? पादरी-हम नहीं व्यनता ।

राहन-फदर्श जी । इसाइ लोग ही मरने के बाद भत-प्रेत बनते होंगे। वक्क में पड़े-पड़े ये परेक्षन हा जाते हाँगे या उनकी कम्र में वर्ष के दिनो में पानी भर खता होगा से ये वहा से निकल कर गावों में चले आहे होंगे और लोगों को तन करते होंने। पादरी माहब-सुनो । भूत-प्रेत कुछ भर्ती थह आपका पाक्षण्ड है। इस पाखण्ड से कमाने के लिए संसार भर के इंसाइंगों को असर्थ (हिन्दू) बन जाना वाहिए। यही मुक्ति का मार्ग है।

पादरी-मरने पर इंसाई भूत-प्रेत

बनत है, आर्व (हिन्दू) नहीं, इसका क्य प्रमान है ?

रोडन-फदरी की । हमारा आर्थ (किन्दू) वर्ग पुनर्जना में विस्वास

रखाता है। माने के परकार्य मनुष्य पुरना दूसरा जन्म बारण कर लेता है, परन्यु काप के धर्मानुसार ईसाई भर कर न्याय के दिन एक कहा में खेळ रहळ है । इससे सिद्ध होता है कि ईसर्व लोग ही पूत-प्रेत बन

पादरी-तुम दोनों शैतान हो. हमारा सब बात काट देख है। बिरसा-पादरी की । हमने यह

सुना है कि जाप लोग दूच और भी कें दिव्यों का लालव देकर इस गरीब और अनपढ लोग्डें को जब इंसाई बना लेते हैं तो फिर मिसन के जम पर उनसे चन्दा लेते हो. उनसे गिरका में बेगार लेते हो. उनके रीति-रिवान, पर्व और त्यौहार क्दलते हो, उनकी लढकियों को सादी क जाने के नाम पढ अपने यहा बुलाते हो, उनको प्रति रविकार गिरजाबर आने की विकल करते हो ओर न आने वाले को दण्डित करते हो और कारि मिरदरी का ध्यान किए किना उनके भवयुवक-नवववतियों की जादिया कराते हो। यदि वे बात सत्य है तो आप सेवा

नहीं अपित बढा भारी भाष कर रहे हो। आजादी की प्राप्ति के पश्चात इमारे कन्थों पर से राजा-महाराजाओं की गुलामी का जुआ अभी उत्तरा नहीं कि आपने अपनी दासरा की वलकर हमारे गले पर रख दी।

आपको विदित होना चाहिए कि इस वनकामी टेखने में भले थी काले. निर्धन तथा अनपद हैं, परन्तु हम चरित्रवान और स्वतन्त्रता प्रिय हैं। हम किसी की दासता में रहना पाप समझते हैं। हमें अपना आर्य (हिन्द) धर्म इसीलिए प्यारा है कि इसमें प्रमारे कपर किसी भी प्रकार की दासदा नहीं है। हम अपने धर्म को अपनी इच्छानुसार मानने में पूर्ण स्वतंत्र हैं। हम कहें तो मन्दिर में जा सकते हैं और चाहें तो घर में रहकर भी अपने भगवान को याद कर सकते हैं। इन्हरा पगवान् ईसा की भारत केवल गिरका में नहीं

रहता अपितु यह सर्वत्र है। पादरी की। इन आपके धर्म को बुरा नहीं कहते, परन्तू इससे देश, काल, अवस्था के अनुसार हमारा देशीय धर्म और सम्बता ही हमारे अनकल है। कोई भी विदेशी धर्म और सभ्यता इमारे अनुकृत

**जब हमारे धर्म में भी समार की** समस्य शेष्ठ वार्तों का सम्हवेश है तो फिर इस अन्य किदेशी धर्म को क्यों अपनार्थे ।

पादरी-बंदि उत्तप ईसा की आफ में नहीं आयेंगे तो आप को हम दूव नी का किन्ना नहीं देगा, आपको अपने बैंको से ठधार भान और पैसा महीं देगा और अपने स्कूलों तथा

जस्पतालों से आपको लाभ नहीं पहुचायेगा। बिरसा-पाटरी जी ! आजमे बरा आर्थों (हिन्दओं) को पश्चानने में भल की है। हम लोग सोने, चाटी

सकान और दुकान को धर्म के सामने कुछ नहीं समझते। हम श्रृत्रिय लोग है। महाराणा प्रकाप के स्तर्थ मिलकर हमारे पूर्वज घर बार छोड कर जंगलों में महरे-मारे फिरे और वास की रोटिया खाई परन्तु अकबर के प्रलोभनो और तलवारों के सम्पुता सिर नहीं शुकाया और अपने पूर्वजों के धर्म को नहीं कोडा ।

पादरी-देखो ! तुम्हारे धर्म में चूतकात के नाम पर तुम लोगों को अकृत माना जाता है। तुम्हारे हाथ का कोई पानी नहीं पीता व खाना भी नहीं काता। ऐसे धर्म में रहने से क्या लाभ है ? अगर तुम ईसाई बन जाओंगे यो एम्डें कोई अखरा नहीं मानेगा और तुम सबके समान हो जाओंगे।

विरसा-पाटरी जी । थे

सामाजिक करीतिया सभी धर्मों मे हैं परन्तु इमारी सरकार ने अब शृक्कात को कामूनन बन्द कर दिया है और जो कतकात को मानेना उसे दण्ड दिया जाएगा । इसके अविरिक्त हम्मो देश में आर्थ समाज वैसी संस्था गत 100 वर्षों से इस सामाजिक करांति को समाप्त करने का प्रयत्न कर रही है परन्तु जरा आप अपनी आस्तीन में तो मह दालिए। अपके ईसामसीड के शिष्य बूरोप, अमरीका और अफ्रीका में काले लोगो के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं ? क्या यह बात सच नहीं है कि वहा गीरे ईसाई काले लोगों के साथ बैठने, उठने चलने. पढने और ज़ादी-विवाह आदि करने तक में चुना करते हं और काले लोग ईसाइयों के इस अध्याचार

का लगातार विरोध करने पर मोत के बाट उत्तरते रहे हैं। (बिरसा की बात शुनकर पादरी भीचनका रह गया।)

रोहन-पादरी जो । क्या यह सक नहीं है कि अपना धर्म और संस्कृति कोड इंस्ट्रां बनने पर हमें हमारे बच्चो को सरकार झरा दी वा रही विशेष सुविधार्वे व सहायता प्राप्त न हो सकेगा। यह सब है कि फिर दो चार बी-दश के किच्चों पर हम अपना

इतन्त्र बढा लाभ वर्षी करेडे? **पादरी-दाकारी सरकार माल**म नहीं कम मदद करेगी, इम को पुम्हारी अभी मदद करता है।

रोहन-पादरी जी । इस डजारी वर्षों से इन जगलों में नमे और पखो भी मस्त रहते आए हैं और इम इस जीवन के आदी भी हो गए हैं। इसलिए हमें यदि कुछ दिन ओर अपनी रक्षा करते हुए इसी प्रकार रहण पड़े तब हम सहवं रहेंगे परन्त इस धोड़ों से प्रलोधन के लिए हर अपना और अपने परिवार का धम नहीं विगार्डेंगे।

पादरी-तुम हमारी बात समझता नहीं • हम तुमको पढा-लिखा कर इन्मान

बिरसा-पादरी जी । आपको विदित होना चाहिए कि हमारी सासार ने हमे शिक्षा प्राप्त करना अनिवाय कर दिया है। ऐसी स्थिति में हमारी सरकार हो हमारे लिए स्कूल खाल रही है। इसलिए इस प्रलोधन में भा हम नहीं फसेंगे।

पादरी-ईसाई हो जाने से तम्हारा कल्याण हो जाएगा।

रोहन-हमारा कल्याण हो या विन्द्रशः। जब आप हमारा धमः संस्कृति ओर सध्यता झीन लेगे ओर हम बहुसख्यक आय जाति में स निकालका विदेशों धम, संस्कृति आग सभ्यता को मानने वाले अल्पसञ्चन वर्ग में खड़ा कर देने तो फिर हमारा कल्याण केसे होगा /

पादरी-भाई प्रतीत होता ह कि आय समाजियों ने तुम्हारा दिमार खराब कर दिशा इ ओर वा तुम्हारा भस्त नहीं होने देगे।

बिरसा-पादरी औं । सोधान्य म आयं समाञ के संस्थापक भक्षणि दयानन्द की विचारचारा ने हमारी अग्व खोल दी हैं और अब आप इन जगना में हमारे निधन, भोल और अनपट भाइयो को लोभ-लालच देकर उनका धम न छीन सकोगे आर हमारे ही देश के विरुद्ध यहा विदशों के प्रचमागी दस्त पदा न कर समाग । आप भारत में सेवा करने नहीं आए, अपितु इंग्लैंड अमरीका आदि देशों से प्राप्त करोड़ों रुपयों के बल पर हमे खरीदने आए हो और पाकिस्तान की भारत इसाइम्तान बन्धने आए हो। आप द्वारा बनाए गाः ईसाइयों को स्वतन्त्र नागालेख आर जारखण्ड प्रात की मांग इस बात का स्पन्द प्रमाण हे कि आप हमारे सेवक नहीं-पश्चक हैं।

पादरी-हम समझ गया कि अल हमारी दाल यहा नहीं गलेगां।

ऐसा कहकर विदेशी इसाध मिलनरी बहा से भाग गया आर वट गाम उसके चपुल में आने रे कः

#### नारी सोन्वर्य, सोन्वर्य प्रतिकेतिका तथा भारतीय दक्ति कोण —वार्शुन निरातः अन्तर्ध औ पुरु विश्ववास्थ केवाहरू द्वार

1947 से पहले इपने पारत में कभी सीन्दर्व प्रतियोगिकाए नहीं देखी सूत्री थी। परन्तु स्थवन्त्रवा मिलने के बाद महिलाओं की सीन्दर्व प्रवियोगिताए देश में आरम्भ हाँ। मेरी बाद में सकते पहली नारी सीन्दर्व प्रतिकोगिता 1949 मे देहली के उपराज्यपाल की अध्यक्षत में देहली में हुई। जिसके ऊपर समाचार पत्रे में बहुत टीका टिप्पणी हुई और एक विदुषी महिला ने प्रश्न किया कि यह सौन्दर्य प्रतियोगिता करने बाले जो है उन्होंने सीन्दर्व की परिचाच कहा से सीखी और उन्हें सीन्दर्व क्या होता है उसका क्या जान है ? वह इसका

कारतव मे अरब तका यूरोप की सध्यता व संस्कृति ने नारी की केवल एक सरीर मानकर तथा उस मरीर को काम वासना के लिए उपयोग का साधन मात्र म न जिससे नारी का सीन्दर्य नांपने के लिए उसके शरीर की बनावट चेडरे का रंग कमर का मतला होना छातियों का उभार तच्च केश व नक्ष इत्यादि कैसे हैं वह सब सीन्दर्व के मापदण्ड रखे गए

परिचय दे ताकि पता चले कि वह

सीन्दर्य की जाच करने के गोरम

भी हैं कि नहीं

परन्तु भारतीय सभ्यता व सरकति ने नारी को कई रूपों से टेस्क जिनमे उपरोक्त रूप केवल एक है हमने नारी को कजक (क्वारी कन्य) के रूप में देखा जिसके हमने चरण छए हमने उसे भागिनी के रूप में देखा हमने उसे धर्मपत्नी के रूप मे देखक हमने ठसे महन्त्र के रूप में देखा हमने उसे रण चण्डी के रूप में देखा हमने उसे भवित भाव से भरपुर देवी रूप में देखा और हमने इसके सब रूपो मे स्त्री के शरीर को नहीं उसक आत्मा को मधत्व दिया। उसकी आत्मा बलशाली है उसका मन कितना परित्र है उसकी बुद्धि कितनी स्थन्त है हमने वह मापदण्ड समझे। हमारे कवियों ने कहा कि स्वी तब शोड़े बब उसके नवन सन्दर हों और मनन का सुन्दर हैं निनमें सभ्या हो। कह करियों ने कका कि माता यह धन है जो नक्षी को वो प्रवत को क

वक पा चर नहीं की जानी बचारत नाटे प को बे

गवावे पूर। हमने क्या स्थी को माता के रूप में देखा हो यह आसा की कि कह किसी स्टबीर पुत्र को कम दे। माता सुमित्र भी ने समीवनी बूटी हो

जाते हुए इनमान जी को प्रका कि

लक्ष्मण को सक्ति कहा लगी है। हुनुमान जी ने प्रश्न किया कि क्या यह अवसर यह प्रक्रमें का है कि सक्ति कहा लगी है तो माता सुनिक ने बढ़ उत्तर दिखा कि बंदि समित छाती में लग्नी है को मैं बन्य ह और यदि सक्ति पीठ में लगी है तो मैं कह गी कि सबीवनी मत ले व्हाओं। महो पेसे पत्र की आवश्यकता नहीं वो रचभूमि मे पीठ दिखाये। महाधारत में विद्वला की की कथा **अप्रती है जिसने रच भूमि से ली**टे अपने पत्र को कहा कि इससे तो मैं निपृती ही अच्छी भी। महा जीनामाई का किस्सा किसे ध्यान नहीं कि उसने अपने 16 18 साल के बेटे को सिखगढ़ के किले की ओर इसारा करके कहा कि बेटे व्यक्ती और यह किला विदेशियों में सीन कर मा के चरणों में अर्पित करो रिष्ठनीयों ने सिक्षों को जन्म दिया। गुर गे बिन्द सिंड बी ने चारो लाल

देश के लिए बार दिए और अपनी प्रभी से कड़ा कि चार मोये तो क्या हुआ जीविस कई हुजार। ऐसे सिंह पत्रों को जन्म देने बाली माताए इमारे लिए धन्य वीं और उनका सीन्दर्व आपर था। कई परिनयों की कचाप आती हैं जिन्होंने अपने पतियों को धर्म यद्ध में भेज और यदि वे वहा बसिदान हो गए तो वह बीर बालाए जीहर की चिठा जलाकर स्थय जल गई परन्तु शत्रु इनके सरीर को साभी नहीं पत्था। हमें गर्व है उन वीराञ्चनाओं पर बो अपने बच्चे अपने पीठ पर कव कर रानी झासी और दुर्शांबरी के

रंग में रंगभवी भगवर नेकर्ती। के लिए महत करना व का विश्वे पह मीच पार पति विश्ववे AUTHOR WAY

क्र क्ये की ब जांची पानी सभी की उपने को को देश के स्था क प्रमुक्ताके रूप में देखा किसे

कर नहीं भीतकों जी की गांधा 'में। के निरक्त चेपाल कृतव

इसमें नहीं की करना की और के निर्शाण है उसे सुन्दर नहीं माना परम् अस्य के सीन्दर्ग प्रतिमोनिसाए करने चलों के लिए सी एक डॉड मास का प्रतरा है और कारना तुष्ति की सामग्री है। वह उसके अंग प्रति अपहे का लेखा जेखा करो है और फिर गरी मान सम्मान की दक्षाई देते हैं। खेद का किका है कि आब नारी को पब्लिसिटी

भार्गव नगर जालन्वर असर कार्बेट पं. राज प्रशास विशिष्ट बनियान समारोह

आर्थ समाम महर्षि दक्तनद बबर वस बबर समिवन में गत रविकार 19 12 🤛 को प्रार 8 से 11 बने तक समर सतीद राम प्रसाद विस्मिल वी का वरियान दिवस समारोड पर्वक मनाया गया। समाचेद्व के ऑस्ट्रन में यह का आयोजन किया सिसे आर्थ सम्बन्ध के विद्वान् प सुरेन्द्र कुमार सास्वी जी ने सम्मन्न कराजा। बी देवपाल कार्य भी जनग कमार सद औं करिल्टिय क्यां औं सरेन्द्र आर्थ औ मुलदीय अर्थ एव अन्य तवमान्य व्यक्तियों ने बढ़ मे बद्धापूर्वक भाग शिया।

स्वामी सर्वातन्द जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय चाच्च में बहा है। साथ वट स्ती-स्वातीक <del>पन्नी केटरे प्रक्रियात स्त</del> क्षेत्रिक प्रमान में पर को गण में या प्रक्रियोगकर हो की हैं और बरकार द्वार इन्हें ओप्सवन विश्वाचारता है यो नहीं का अर्त्यन्त अपनान है। ऐसी प्रतिकेरिका करने करने को पन डी नहीं कि भारत का नदी के प्रति क्या फिरान है और नार्थ का सम्मान उसके शरीर के अनी से नहीं उसके नुषों से होना। सरीर बो आज नहीं कल इस जाने करत है परना नाता वयोधक डोकर थी अदि सम्मानीय है मेरा दल सम्मानीय नारी को प्रकार है।

केल-जी कारील भारत

कि गार्व समाय के सरमापक मक्रमिं दमानन्द सरस्वती द्वारा रविश सम्बर्ध प्रकार पन्य की शिक्षाओं के माध्यम से प राम प्रसाद कड़र आर्य समाजी बने भी रोजन लाल उनमें की बनाय कुमार जी बजा ने भी बिस्मिल जी के जीवन पर प्रकाश वाला। सम्परोड को ही एकेन्द्र बज्र ही मतबाल चन्द्र आर्थ महातमा समन्त्रवति की महाराज ने भी सम्बोधित किया। आर्थ कालेज प्रवस्थ समिति के प्रधान श्री राजेन्द्र विकास समित्र ही गरेन्द्र सिंह भल्ला आदि गयमान्य व्यक्तियो

ने भाग शिया। -आस्य प्रस्ताक

#### किववाई नगर में भद्धानन्द बालदान दिवस पक्रमाने की ।

नार्य समाच गठ विरवानन्द किदवर्ध नगर सुधिन्धना में स्थानी श्रद्धागन्द बलियान दिवस मनामा यका। 24 12 99 को प्राप्त समारोह से पूर्व यह किया निर्म अर्थ समान के प्रवेतित औ भक्त बिंद भी प्रशास में कारत अवस्थ सभी आर्थ महानभाव एव स्कक्त के अध्यापकरण एव विश्वार्थी सम्मितित हम् समारोह की अध्यक्षता श्री रोक्षण लास की

अर्थ प्रचान अर्थ यक्षक संघा

आर्य सम्बन के प्रधान श्री गलकरी लाल कोचण्यव शी गरीबक्स स्त्री समाज की प्रधाना बहुष मुक्कत्त्वल की भोगल श्री रकेद सी का आदि महानुभावो ने भाग शिखा। समावेश के परचार सभी को अल्पातर दिया गया कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा आर्थ समाय के प्रचन भी ने सभी अब अन्यसार विकास

क्रमेक ताल मागवी

#### है प्रकारी शक्कामर जी मक्राप्तम परेन प्रच्या आर्थ, प्रधान आर्थ काराज धरी

"विसाल सरीर में विसाल सारक्" स्वामी श्रद्धानन्द इस साय के मूर्तिमान स्वस्था थे ''कोई व्यक्ति बरी ग्रहों पर चलका भी, यदि बीयन को सुबारने का यदि प्रबल संकल्प कर ले तो का कल्याण मार्ग वन राही चन सकता है" इस ठक्ति को जियात्मक रूप में सिद्ध काले वाले महान अक्षमा स्वामी कक्कान्द के बच्चन का नम मुंतीराम था। मुंशीयम भी का जन्म पंजाब में जलन्यर जिला के वलवन गांव में 1856 में हुआ। पिशा सारत नामक चद को उत्तर प्रदेश में प्रतिस अपसर थे। उनका बचपन आम आदमी की तरह अपने पिता जो की पुलिस अफसरी के कारन आचारण अच्छा नहीं था. जवानी अवस्या में रूराय, अंद्रा, मास आदि के सभी दुर्व्यसन उनके जीवन में थे, ऐसा विचरण स्वामी श्रद्धानन्द की ने अपनी आत्मकथा में स्पष्ट रूप में निका होकर सुक्त कर लिखा है। मसी राम की करेली में अपने फिलाकी के साथ रह रहे थे। ठीक

ठसी समय बरेली में "परम पुष्प महर्षि दयागन्द सरस्वती'' वेदों के सूर्व की रोशनी को बिखेरते हुए अपना पूरा बोर लगा कर आर्व समाव

सबसे पहले गुरुकुल में अपने बिगर के दुकड़े दोनों पुत्रों को अजीज हरीत और इन्द्र की प्रवेश किया व्यक्ति लोगों में गुरुकुल में बच्चे पदाने की जिहासा वद सके। बाद में अग्रेजी सरकार ने स्वामी जी के गुरुकुल कागडी पर नजर रखनी जुरू कर दी। बर्धोंकि स्वामी जी ने वहां देशभवत, वैदिक मिस्नरी, सुद्रव समितसाली, सुसंस्कारित सस्कृत भाषा के उपदेशक तैमार करने शुरू कर दिए। स्वामी श्रद्धानन्द वी कभी भी नहीं चचराये चाहे कितने भी सकट आए। बाद में स्वामी भी ने हिन्दुओं को सुद्धिकरण का आन्दोलन जुरू किया। क्योंकि मुसलमान हिन्दुओं को लालच देकर इस्लाम धर्म में ले जा रहे थे। इस षटना से मसलमानों में स्वामी वो के प्रति बहुद शहरा ही गई। अंत में एक चडवन द्वारा 'अब्दुल रशीद' जनक मुसलमान द्वारा गोली चलाने पर स्वामी जी को अपना 23 दिसम्बर 1926 बलिदान देकर सारी मानवसति के पले के लिए प्राणों की आहुति देनी पडी। आज हर आर्थ समाव, इर भारतकासी, सारी मानवनाति को गर्व है।" जब ठक वहां चाद, सितारे, सूरव अपनी रोसनी देंगे तब तक हकते नर-नारी स्वामी भी से प्रेरणा पाकर ठापने जीवन को सुपर्ध पर ले चर्कर सुख क्रान्ति प्राप्त करते रहेंगे।" ''श्रद्धा से दुगर्वे पुकारते हैं, त्रम भी निवत्ता प्रश्नरा है,

लेकिन स्वार्थ को रक्का था, एरमार्थ में श्रीवन वहा है ह नेपर्भ को ता नुनन्त्रको नुस्कृत कानको कोला था, परो अवेस्ते निशंप होता समाने, न बोर्ड पोली न पेरह या ह **यन तक सुन्दि वर्गार्कि**गी, तम तक ब्रेड्डागन्द श्री का नाम हो, करें सोमजार्च इद्धानन्य करे मेरा कोटि कोटि प्रवान हो ॥''

बोली में जाए। मंत्रीयम वी के पिछ बी की पुलिस अपसर हेतू प्रवन्ध की बबुटी लगी बी उन्होंने मुंसी राम वी को भी स्वामी दशानन्द वी का उपदेश सुनने के लिए मेज दिया। मुंशीराम जी के चीवन में उधल-पुषक मन गई। परन्तु वह पूर्व रूप आस्तिक फिर भी नहीं बन सके।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का कम सुनते ही हर आर्थ सम्बन्धी का सिर श्रद्धों से नम्न हो आनक्षाई। उनके ऋम में ही येसी सन्दिकारी प्रेरण है मैं सदैव ठनके नतमस्त्रक हो बाद्य हं। उनके जम का अर्थ ही श्रद्धा और जानन्द है जो सभी को कान्ति और प्रेरण व सेवाधव का सदेश देता है।

महर्षि दयानन्द के संसर्ग ने मन्त्रीराम की के जीवन की भारा को ही बदल दिया था। जब लाहीर में मुंशीराम जी वकाशत की शिक्षा ग्रहण करने के लिए नए तो वहां इनका सम्बन्ध आर्थ समाज से वहा और वहां ही अत्थार्थ प्रकाश पक्षा : जालन्थर में वापिस काने तक मुसीराम आर्थ समाजी बन चके थे और बाद में उनको जालन्बर में आर्थ समाज का प्रधान बना दिया गया। श्रद्धानन्द की ने

के विद्यानों और वेलों का एका करते हए प्रक्रमध्यें को दूर किया। 4 नप्रैल 1919 को इसी निक्रर बलवान **और पवित्र आरम्ब ने''व्यम्ब मस्विद''** दिल्ली के मिन्बर पर खबे होकर जनसमूह को वेदों का उपदेश देवे हुए देश की स्वतन्त्रज के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने की प्रेरका दी थी। अपने उपदेश का शुभारम्भ वेद मङ ओड़म् सर्व हि म: पित्री वसो त्वं माता शतकतो वभूविष ! अधा ते सुम्ममीमहे । से विदा और समाप्ति ओवप शान्तिः शान्तिः शान्तिः से की थी।

स्वामी अब्दायन्द जी पहले व्यक्ति ये विन्होंने 1919 में अमृतसर में कांग्रेस के स्वागताच्यह के रूप में राष्ट्रीय महासभा के मंच पर हिन्दी में भाषन दिया। राष्ट्रपिता महात्म् •

गाधी जी ने उनके भावण के बाद कहा था, "स्वागत समिति के अध्यक्ष स्थामी श्रद्धानन्द जी का भावन उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और स**न्याई का** नमृत्र था'' हालांकि गांधी वी से स्वामी वी के कई बातों पर विचार भिन्न थे। गाधी वी नर्म वे स्वामी श्रद्धानन्द निहर बे दुइ सकल्पी वे। दोनों ने देश की आजादी में अपने-अपने हम से वोगदान डाला। अमृतसर मे जलियांवाले श्वद के बाद सभी नेता

तिहम गए से मना स्वासी सद्धानन की उसे की सोट पर निवर, निर्भय होकर कांग्रेस पार्टी का देश के डित में नेतरव किया। दिल्ली मे जलस का नेतृत्व करते 📭 सिपाहियों को अग्रेजों को ललकारा "लो मैं खड़ा हं, गोली मारो ! अपनी छाती सेंगीमों के सावने तान दी'' इतनी निर्मीकता और साइस देखकर सारे प्रशासन और अंग्रेजों में सन्तय छा गवा। फिर स्वामी जो महारमा गांधी वी के "असहयोग आन्दोलन" मे बड गए स्वामी जी ने सभी क्रान्तिकारियों के साथ सर्ह्रमन कमिशन रोल्ट एक्ट का विरोध करते इए पंडित चवाहर लाल जी जैसे बर्ड-बडे नेताओं के साथ देश की सेवा मे काम किया।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी का -अमरप्रथ **न्दरसर्थ प्रकाश** पढते ही स्वामी अवस्तन्द जा ने अपना जीवन वेद प्र**चार अक्**तोद्धार, ऋषे रवाशिक्षा व मुद्धि आन्दोलन में लगा दिया। सर्वप्रथम उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश मे बताई हुई "गरूकल शिक्षा प्रणाली" का विगृल बजाने का सकल्प किया। विसका दुढ सकल्प उन्होंने धन एकत्र करके हरिद्धार गे गंगा के किनारे "गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय" को स्थापना को। जिसमें विद्यार्थियों के साथ-साथ



आर्य समाज धूरी की वेद प्रचार गतिविधियां जब से वर्ष 1999 2000 का महिलो ने अर्ब समाज बरी के

प्रागण में आकार ओश्म् का ध्वाब लहराया । सारे शहर में धरी

की जलग अलग यूनियनो ने आर्य

समाज पूरी के स्थागत के लिए

विशेष द्वार बनाए। मानो यू लग

रहा था जैसे धूरी के सभी मगर निवासी आर्थ सभाज धूरी को पूरे

बोश से तन मन धन से सहयोग

दे रहे हैं आदरणीय की जगत कर्मा

जी भजनोपदेशक ने समय **वा**ध

दिया भीतों के द्वारा आयं सिद्धान्तो

का प्रचार किया स्वामी इन्ह्रबेश

जी ने बहुत प्रभावी भाषण वेट

मन्त्रो पर दिए। आदरणीय श्री वेद

शर्मा जी योग विशेषत ने योग क

आर्य समाज का दुष्टिकोण स्पष्ट

करते हुए लोगों का मन जीत

लिया। महात्मा श्री प्रेम प्रकाश जी

ने मच संचालन किया आर्थ संग्रांब

के मन्त्रा श्री वासदेव जी सतीश

पाल जो प्रहलाद जी रचुनाथ सर्था

जी पवन गर्ग जी कर्मेचन्द्र जी

हा सरीन महाक्रय प्रतिज्ञापाल जी

मास्टर प्रकास चन्द्र वी स्वी आर्थ

समाज की प्रधाना श्रीभवी दर्मिला

रानी मन्त्राणी कृष्णा अवर्ष सभी

सस्याओं के प्रिसीपल एव

विद्यार्थियो ने पूरा सक्ष्योग दिवा।

आर्य समाज धूरी का भवन मंदिर

रात्रि को लाहिंगे के साथ चम्पमा

रहाधा मानो प्रभ को कथा आर्थ

समाज पर पूरी करस गई हो।

जब से वर्ष 1999 2000 का आर्य समाज धूरी की नई कुंबा टीम का चुनाव हुआ तब से तीव गति से आर्थ प्रतिनिधि सभा के सहयाग से आर्य समाज भूरी हर क्षेत्र में शिक्षा में सेवा में और वेद प्रचार में ऐतिहासिक उन्नति की ओर अग्रसर है आर्य समाज धरा क यदा प्रधान महाशय साम प्रकाश आर्थ न बताया कि हमारा टाम का प्रमुख उद्दश्य आर्थ समाज और **पे**दों के प्रचार को बर मर तक पहचाना है डर व्यक्ति को आर्य समाज का ओर से इवन की सामग्री मुफ्त दी जाती है सारा समस्त प्रबन्ध आर्य समाज की ओर स फ्री किया जाता है

स्वातान कीम प्रकार की ने अनाव कि अर्थ तामा कि अर्थ तामा वहीं में सामी बीटक उत्तरक समाने कह हैं सामी बीटक उत्तरक समाने कह हैं तिकती देती क्रांति निर्माण कि उत्तर हैं तिकती देती क्रांति निर्माण कि उत्तर हैं तो अर्थ ते के स्वात हैं तो अर्थ ते के स्वात की की अर्थ तामा की ने उत्तर का निर्माण कि उत्तर हैं वह समान की ने उत्तर की की अर्थ कर साम की ने अर्थ ताम की ने अर्थ ताम की ने साम प्रमाण की अर्थ ताम की निर्माण की अर्थ हमें अर्थ ताम की माना पार्ट पार्ट को उत्तर हों की माना पार्ट पिता की अर्थ तामा की प्रमाण की की अर्थ तामा की प्रमाण की की अर्थ तामा की ताम की अर्थ तामा की ताम की अर्थ तामा की ताम की अर्थ तामा की अर्थ तामा की ताम की अर्थ तामा की अर्थ तामा

ज्ञान थन्न ५ कर्मयोग ॥ ध्यान

थोग अध्याय ७ से 11 तक

श्वद्यविद्या बाध 12 भवितयोग 13

क्षेत्र क्षेत्रह योग 14 प्रकृति के

गुण 15 उत्तम पुरुष 16 दैवी

और आसी सम्पत्ति 17 गुणत्रथ

बजोपकीत उपनयन सहस्रक

अच्छे कार्य के निकट से वाने

वाला आचार्य तथा शिष्य के बीच

और व्यवहार 18 मोश्र सन्यास

अनेक

(पृष्ठ 1 का रोष)
पीता ज्ञान-मेगीया के कृष्ण 1 अवि आण ज्ञान मिजान
भगावान (पष्टाभारत कारत) का परिषय प्राप्त करते हमे द्वान
प्रमावान (पष्टाभारत कारत) का परिषय प्राप्त करते हमे द्वान
प्रमाणाव्य के करणाण्यार्थ 18 अग्याय्यो देने वाले आविष्यो की देखा और
की प्रस्तुति । अंग्रम विस्मृति 2 ज्ञान प्रस्ता द्वारा वज्राण होने का
आल्य बोध 3 कर्तर्यमांच्या 4 प्रमात

2 पितृ प्रश्न माता पिता की सेवा और ठपके द्वारा किए गए ठपकारों से उत्रश्न होने का प्रभास। 3 देव ऋण दिव्य पुरुषी जनका देवताओं द्वारा कताए गए

जनवा दयराजा द्वारा बताए गए कर्त्तंच्य पथ निष्कमता पर चलकर उन्हम होने का प्रमास। निवेदम—आर्थंबन इस

ानकदम-आयवन इस अनमोल रल निधि को अपनी सन्तानों को पी अवस्थ देंगे वाकि उनके जन में वृद्धि हो सके।

प्रेम सूत्र का रुपूल प्रतिनिधि है। तीन बार तीन ऋषों से उञ्चल होने की बार दिलाते हैं अब यह पवित्र हैं। शिक्स १४८० क्या पुत्र केकी स्थापिक मूक आर्य **समाज** स्थान के बिन असून सिन्दे ।। गुपल बेहलार केहेतर

क्रिक सुन्यह क्रोंग वन क्रम रह नवा है आज यह तेश स्वराज। आज रावण से की बढकर यह कुरा है शामराज।

काज की नक्तुकड़ है बेकार कब है कामकाज। काज की संदेंगे के टुकड़े पर विके सीता की साज ह और सब कुछ देख कर की मुक है मेरा सकाज। काज की काज के बाजारों में विकास है सरा।

कार्य में मारत के बायारों में मकता है हुए। आज की हम मा के मतवाले हिज्ञाती कारता। आज की रोतला का कैंगाई है मजनू सिरफिरा। आज की दुवकों के सिक्षण कार्य में वित्र ही मरा। और सब कुछ देख कर की मूक है मेरा समाज

कर सब कुछ देख कर थी मूक है भरा सभा हम कहलाते गो रक्षक है गोहरण लेकिन हो रही! खाज गो के साथ ही गोकरुणानिकि थी रो रही! पूर्व से कराल किराने साथ जनभी खो रही! बिर भी पराधन से विमुख सरकान मेरी सो रही!

कीर सब कुछ रोख कर थी मूक है मेरा समाज आज सिनेमा बन रहे हैं पाठसारना प्रेम की। और कालेज बम रहे है योगसाला प्रेम की।

आज होटल बन गए है रमशाला प्रेम की। रात-विन सीलोन गता गीतमाला प्रेम की। और सब कुछ बेज कर भी मुक है मेरा सम्प्रज वर्ष और प्रवास्थ्य मिलते एरस्पर आज भी। सम्बन्ध कोचे प्रतिनित आज को सुर शहर की।

सर्व स्वीर प्रसम्बन्धा मिलते एरस्पर आज भी। वासमा होती प्रवर्धित आक ले कर आज भी। निक रहे हैं लीह के मिटटी के ईश्वर आज भी। वोष हैं जलशील होने का कला पर आज भी। और सब कुछ देख कर भी मुक्क हैं मेरा समाज।

कार सब कुन दे पत कर में मुक है गए। रागाओं। गांभ पर मज़ब्द के वह की वास्त्रवाह है राग्य। बाज की तुलारे पटारीगण से है सर बागा खा अब की करावतों के अव्यय रोज सावतें देवसा। बाती के मिंग्य रो कहते हैं। यो चूर्यि शहरता। और सब कुछ येवा कर की मुक है गेर समाज।

आर सब कुछ रख कर मा मुक ह मर समाज धीरे-धीरे बन रहा है परिचमी भारत का लाल। परिचमी हे वेषभूमा भारतनार साल-व्यास। परिचमी भोजन की रीती नृत्व है और बोलाचाल। धीरे धीरे बन रहा योक्तम मेरा भारत विशास।

भीर तार कुछ वेच कर भी नुष्ठ है गेरा समाज । आप भी पामिल के शरतक पर है पेसी किरीत गाव। आप बारोची के बानों पर भी बारीची का राज। हा ! कहे ताने तुम्मा कर तासक करनी के काद। मुझ के नदर स्थित इस बारा को बीर सह भी आप। क्यों यह तम कुछ वेचा कर भी मूक है मेरा समाज

स्वामी अद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

23 12 99 को अनर साहित स्थानी सहामन्द स्थापण का वरिपाटन विस्तर अर्थ वार्याव रामार्थ रामान्द्र मान्य सुरियम्द्रा से धारारेष्ट पूर्वके अन्यस्य गया। क्यांच्येत से यूर्व विशेष पढ़ा किया विश्वी सी सुरियम् कुमार मी सम्बद्धीत की। सी विकास को आगि तो ती तरी की सी प्रीमाण मान्य को। क्योंचेत की अम्बद्धा महात्य ग्रामान्द्र मी ती तरी की। क्यान्य के मुक्तन्वता भी दी तम की मान्य मुक्तन्वती की मी वी। क्यान्य के महत्त्वता भी दी तम का जी आग्रामान्द्र मुक्तन्वती की मी अम्बद्धान क्या क्या क्यांच्या की आग्रामान्द्र मुक्तन्वती की मी महत्त्वता भी दी तम का जी अम्बद्धान सुक्तन्व की पहल्ला क्यांच्या की सी

हीं अरिवारी कुमार की सार्य प्रकाशिक्ट महत्त्वकों सम्मारक प्राप्त कर रिवर सिटिंग डैक्क्प्रोसिकेट तिराजें करणब्ध के मुद्देश केकार आर्थ नर्माय कार्यासय पुत्रपण पूर्वत पाँक विकासकुत करणबार से इसकी स्वापित आर्थ अर्थिनियें क्रमा प्रकाश के सिर्ट प्रकाशित हुन्य ।

# Here's Where You Start: The Key Thought

The thought that you must carry all the time, like a big sign hanging over the stage of your living, is this:

I am going to keep my thinking and my attitude calm and cheerful right now.

That thought you are to have always with you, repeating it over and over to yourself until it sticks there without conscious effort. Just as the present moment is always with you, so is the thought, "I am going to keep my thinking calm and cheerful—right now."

Whatever happens, whatever situation arises as the day goes along, keep that one thought active and alive.

And, of course, situations will arise, every day, to which you have gotten in the habit of reacting with one of the unhealthy emotions. Then you will say to yourself, "Whoa, there, old fella, here's where we need calmness and cheerfulness."

Then you must substitute a healthy emotion—one containing equanimity, courage, resignation, determination, cheerfulness and pleasantness—for that unhealthy stress emotion you might otherwise have—the one containing fear, apprehension, remorse, disappointment, anxiety, or frustration.

#### **♦** Substituting Healthy Emotions for Stress Emotions

At first you'll find that you have usually started stewing over something, or you've already become irritated and upset before you remember to say to yourself, "I am going to keep my thinking and my attitude calm and cheerful — right now" As you practice, you'll be ahead of stress with the key thought, and be able to stop your descent into stressing emotions

Either way, the moment you remember, "I am going to keep my thinking and attitude calm and cheerful—right now," you stop the thinking that generates the stress emotion

and start a train of thought that will generate healthy emotions. Everybody develops his own tricks for substituting a healthy emotion for a stressing one—RIGHT NOW, when it is needed

On the occasions that are just "nasty little situations" of minor importance, one of my patients learned to begin whistling, and soon he trilled himself into complacency, equanimity and cheerfulness. Another patient, who had a good voice and liked to sing, learned that if she sang she could change her emotions for the better at once Another patient has learned to find beauty in the little things about her when she needs the lift And a man told me that he keeps planning a new experience ahead that he can turn to and think about whenever he finds his emotions are running toward the stressing side.

Many people find prayer a ready way for starting a pleasant stream of emotion. But it is important to get into the prayer the same attitude of calm and cheerfulness. For instance, it would not do to pray like this "Oh, Lord, I feel miserable, and the situation I am in is terrible. Won't you help me, God?"

The supplication should run more like this. "Thou hast created a wonderful, wonderful world for our enjoyment, O Lord. Give me the courage, the resignation, the determination, the equanimity, the cheerfulness, the pleasantness to enjoy this wonderful life Thou hast given me from Thy bounty."

These are all useful methods of substitution They will help you out of those numerous little snarls that come along every day — the sum total of which can get you down.

#### ▶ Mastering That Nasty Little Moment

These nasty little situations are easy to handle by remembering, "I am going to keep my thinking and my attitude calm and cheerful—night now," and then deliberately call-

ing up and tossing in a healthy emotion instead of allowing the stressing one to go ahead. It is very important in developing emotional stasis that you do handle stresses in this way. For although each of these minor stresses may seem trivial, yet these seemingly trivial episodes, if allowed each time to run a stressing course, will by themselves be enough to produce chronic emotional stress and E. I. I. Eighty per cent of the average patient's stress arises from these poorly-controlled and relatively minor situations.

#### If the Going Is Smooth

If you happen to be traveling through a good, smooth period of living, then, for heaven's sake, allow yourself to feel happy. Fill the hopper with equanimity, cheerfulness, and pleasantness Go the limit to enjoy the delightful magnificence of your world Life is wonderful if you allow it to be.

## Four Things to Do If The Going Is Rough

The big situations that may arise in your living, (you and I have had them, and will continue to) are not as readily dealt with as are "the nasty little moments" Suppose your wife is sick, you can't get (in fact, you can't afford) help, the children are at loose ends, and it looks as though your plant was about to shut down, you already are working only three days a week Creditors are after you. That, my dear fellow, is not a spot where simply substituting an emotion is going to do the trick.

There is a general mode of procedure to keep in mind

- 1. First, stay outwardly as cheerful and calm as you possibly can. Lighten an awkward situation with a bit of humor, wry though it may be (Wry humor is, after all, the best variety.)
- 2 Avoid running your misfortune through your mind like a repeating phonograph record. Do not let yourself get irritated, upset, or hysterical. Above all, don't start pitying yourself.

- 3. Lay your plans always to turn every defeat into some kind of a victory, remembering that the best victory is to have kept your courage, your equanimity and pleasantness Everyone will admire you for that
- 4. Run these flags up on your masthead and keep them flying:

Equanimity ("Let's stay calm")
Resignation ("Let's accept this setback gracefully.")
Courage ("I can take this, and more.")
Determination ("I'll turn this defeat into victory.")
Cheerfulness ("Bowed but not broken")
Pleasantness ("Still good will toward men")

#### The Story of Two Men

You should know about these two men, and remember them as you deal with your problems. They are as different as night and day. One of them, Sam, is the perfect example of emotional stress. The other, William, is the epitome of emotional stasss.

#### Sam, King of His Own Stew

Sam's world, if someone other than Sam inhabited it, would be a dreamland 'The *only* bad feature in Sam's life is his own condition of emotional stress, which, mind you, Sam is not accountable for, since he got it through bad family education

Sam is a well-to-do farmer and a director of a bank in a neighboring town Sam has a wonderful farm which he inherited from his father. From his father, too, he received a grouch of the kind fairly common among "successful men" I don't think a grouch like that is inherited, it's acquired by living in the shadow of someone else's grouch. His mother was grouchy too, I imagine she got it living with Sam's father, or, perhaps, his father married the woman because she had the type of grouch he felt went with a solid citizen.

In spite of the fact that Sam had never had any hardships,

no financial losses, no extraordinary family catastrophies, no blows beneath the belt from unkind fate, he, nevertheless, walked through life as though utter and complete rum were just around the corner

On Sam's side of the street, the sun never shone. Sam was like the man walking in a park telling a friend how unfortunate was his every move, saying, "Some people buy bonds—they go up Some people marry—she is a princess. For me—everything goes wrong" Just then a bird flew overhead, the complaining man took out a handkerchief and carefully cleaned a fresh spot from his lapel. "See?" he explained, "For some people they sing"

I have asked Sam's family, and Sam's neighbors, whether they have ever heard Sam say a hopeful, pleasant word, but none of them ever have Oh, yes, I almost forgot. His wife thinks that Sam did say something pleasant the first year they were married, but that was so long ago she is no longer sure.

To illustrate how Sam's disposition operates, I drove into his farm one day in July just about the time the oats were ready to be cut Sam had 60 acres of the nicest oats you'd ever want to see I said, "Sam, that's a wonderful field of oats you have there" Sam answered mournfully, "Yeah, but the wind'll blow it down before I get it cut"

I watched the oats Sam got it cut before it blew down He got it threshed before it burned up. And I knew he received a good high price for the oats. So the next time I saw Sam I said,

"Sam, how did the oats turn out?"

"Oh, I suppose good enough," he replied, "But a crop of oats like that sure takes a lot out of the soil"

Another year he had corn that ran 165 bushels to the acre. Before it was harvested, Sam was in my office and I said, (conversationally, as well as to see whether Sam was running true to form), "How's the corn this year, Sam?"

And Sam said, "Terrible! It's so heavy I don't know how we're going to get it in."

At another time in October, I met him on the street. It was one of those beautiful dreams of an October day that we so often have in Wisconsin With what I thought was contagious enthusiasm I said,

"Hello, Sam. Wonderful day, 1sn't it?"

Sam's answer was "Yeah, but when we get it, we'll get it hard"

These outlooks are typical of Sam

You will remember in Chapter 4 we talked about the type of emotionally induced illness that Sam has People with Sam's emotional color *always* develop emotionally induced illness, certainly by their middle fifties. And when they get it, they get it, like Sam's weather, *hard*. Very often they are invalids for the rest of their lives

#### William, King of Living

The other man to contrast with Sam is a man still to be seen on the streets of our town. His hat is respectable but old. His coat is clean but worn. His smile is sincere, the look in his eyes is glad. He is called William

William, too, inherited a good round sum from his father, just as Sam did And in an adventurous sort of way he tripled it and quadrupled it, and enjoyed it, as only William knew how to enjoy.

Then came 1929 and 1930. The bankers (and one was particularly bad) set upon William gleefully, and cleaned him out I am told, on good authority, that with a little lenience William could have come through the depression in good condition. But this one banker snapped up what William had, while the snapping was good. William went on W.P.A.

I stopped one day when I saw him digging in a ditch with a string of other men William was 60, and he hadn't worked at manual labor for years, if ever When he saw me he smiled a great big smile and rested on his shove!

"You might almost say," he laughed, "that you are watch-

ing an honest man earn an honest dollar. But it isn't quite true. I earn only 79 cents of it The rest of the time I lean on my shovel and talk But then that's what the Government wants—it's not so much to get this ditch dug as it is to help the public's morale, and so the 21 cents I don't earn shoveling, I make up for by boosting the general morale of these fellows working here with me"

All the fellows down in the ditch laughed with him They had been feeling good ever since he joined them. He always made everybody feel good.

William still had a few irons in the fire and he made a little money over and above his W.P A. intake But then both he and his wife, whom he adored, developed an abdominal malignancy at the same time

Each had an operation He lived and was cured But he lost his wife And it took all his recent savings to pay the hospital Through the whole thing, William never changed; he never talked about himself, nor complained

He had a pleasant story, an interesting anecdote, cheerful greetings, whenever anyone came to see him in his hospital room. His wife's death must have made a great hole in his life, but he never let on. He filled it with the old smile which shone now beneath the battered hat that was all he could afford. Here and there, he made a little to live on, one way and another, but always happy

Then he developed a malignancy of the larynx. More operations I'd see him in the office, and he had so many interesting things to tell me I had difficulty finding out how he was And, miraculously, he was cured of the malignancy in his larynx. He still goes around the town, smiling, interested in everything, and interesting everyone in something

Probably the most remarkable thing about William is this The banker who cleaned William out in the depression has never had a friend I have never heard anyone say a good or kind word about him — except William

William thinks the banker is a man of great capacity, and told me once, "People think the man has no heart, but he is

kind, really. Nobody seems to pay any attention when he is kind, but they sure talk about it when he does the kind of thing a banker necessarily has to do."

One of William's neighbors, having admired the manner in which Will kept his head up, the cheerful smile on his lips, and the friendly, unwhining greeting through all his misfortune, stopped Will one morning and said, "William, if you'll excuse me, I want to say simply that I admire the way you come through misfortune after misfortune. I'd sure like to know your recipe. Would you mind giving it to me?"

William smiled warmly Like everyone else, he liked a pat on the back.

"Well, I'll tell you. A long time ago I sat down to try to figure out my next move It didn't look as though there was another move I thought a long time And then the answer came to me I got up and repeated it to myself, 'William, you might just as well cooperate with the inevitable' And that's what I've been doing ever since—cooperating with the inevitable."

## ♦ The Importance of Handling the Average Moment

Let me give you one more example of the general procedure for you to follow, this time an example of how to handle, and how not to handle, the "nasty little moment"

Some time ago, I chanced to go Christmas shopping with two ladies in the department stores of Chicago These two ladies were twin sisters.

The first of these sisters had left a chronically-ill husband at home, and had a boy fighting in the Far East. The second sister had nothing in her life to cause a ripple.

The first sister knew the art of enjoyment, that is to say, she knew how to attain emotional stasis. She made herself enjoy the entire day.

When we went into a department store, she would look around at the holiday decorations in genuine pleasure and

say something like, "I just love to shop at Christmas, the stores are all so gay"

If we stopped at a counter looking for some particular article, she would exclaim with pleasure, "My, they have such a wonderfully rich selection of everything. I've got a better choice of better things right here than any Roman Empress ever had," or, "Oh, wouldn't Charles just be thrilled to death with this? Why it just suits him to a T"

We had lunch in a department store restaurant. She said as we entered, "I always like to eat in here, it's so nice and big, and the meals are always so delicious." She enjoyed the whole meal, and we started out again with a neat tip to the waitress.

Her twin sister, on the other hand, had no reason for acting differently, except her acquired habit

As we entered a store — the very same store — she looked around in horror, "Just look at all the crowds. I just hate to do Christmas shopping"

At a counter she would say, "They have so much you just don't know what to choose They simply have too much Last year the thing I got Charley he didn't like, and I know he wouldn't like this either. And look at the prices. It's positively robbery, that's what it is "

In the department store restaurant, nothing was right or satisfactory. She complained to the waiter of every bit of food that came before her, and finally she became irritated because the waitress reached in front of her. She made a scene with the manager that I thought would never be over. She entirely spoiled her own meal, and she could have spoiled her sister's and mine if we had not (knowing her) found her intensely amusing.

The next day the pleasant twin felt fine and chipper, and was about her usual work. But the self-made battle-ax was sick abed with a migraine headache, as I knew she would be. "Why in the world," she grumbled belligerently, "do I get these headaches? Oh, oh, I'm so sick."

#### A SUMMARY OF THE AIDS FOR DEVELOPING EMOTIONAL STASIS PRESENTED IN CHAPTER 8

- I. Practice thought control. When you catch yourself starting a stressing emotion like worry, anxiety, fear, apprehension, or discouragement, STOP IT Substitute a healthy emotion like equanimity, courage, determination, resignation, or cheerfulness.
- II Carry this idea every minute of every day: I am going to keep my attitude and thinking calm and cheerful—right now
- III When the going is good and smooth, allow yourself the delightful feeling of being happy.
- IV. When the going gets rough
- 1 Stay outwardly as cheerful and as pleasant as you possibly can Lighten an awkward situation with a bit of humor, wry though it may be
- 2 Avoid running your misfortune through your mind like a repeating phonograph record Above all, do not let yourself get irritated, upset, or hysterical.
  - 3 Try to turn every defeat into a moral victory.
- 4 Run these flags up on your masthead and keep them flying
  - Equanimity (Let's stay calm")
  - Resignation ("Let's accept this setback gracefully.")
  - Courage ("I can take all this and more.")
  - Determination ("I'll turn this defeat into victory.")
  - Cheerfulness ("Really, I'm holding my own," or, "Bowed but not broken,")
  - Pleasantness ("I'll still have good will toward men.")



# 9. TWELVE IMPORTANT PRINCIPLES TO MAKE YOUR LIFE RICHER



Your maturity and emotional stasis will take a great step forward if you can maintain certain attitudes toward several of the important broad aspects of living. These all involve departments of living that seem to give many people considerable trouble, departments of living in which people are apt to react with typical immaturity and develop much emotional stress

It is best to formulate a definite mature plan of action in handling these aspects of life that cause people so much stress. Let us examine such guiding principles. They will save you an immeasurable amount of stress

# 1. Keep Life Simple

Keep yourself responsive to the simple things that are always near at hand and readily accessible. Don't get in the habit of requiring the *unusual* for your pleasure, a failing one is very likely to find in people having more than a little money or education.

Life becomes a tremendously interesting adventure if you learn how to get your pleasures from the world that lies immediately before your five senses.

How easy and simple it is to live enjoyably when the simple, interminable blue of the sky, with its long wisps of white cloud, becomes a pleasant thing to behold, a thing of beauty that thrills you every time you care to look skyward. How easy to live when the grain in the panelling of the door arouses your admiration, or a scrambled egg satisfies, or plain Mrs. What's-her-name down the street becomes an object of keen interest because of her absorbing preoccupation with her lawn.

How simple and how nice to live like Gilbert White of Selbourne, like W C English, John Muir, or Thoreau, occupied with the constant, wonderful world of color, sound, smell, and sight that is available every single instant. If you tune yourself to it as Walt Whitman did, your every moment is a walk down an avenue of ready-made enjoyment.

W. C. English, a remarkable man. One of the finest men it has been my great fortune to know was a man who made himself entirely happy in the world that lies at the tips of our fingers, visible to our immediate sight, and always within hearing His name was W. C. English.

I met him when I was in college, he was already in his sixties W C. English was John Burroughs, John Muir, and Gilbert White of Selbourne all iolled into one. He enjoyed everything around him. His life was simple, his only needs were eyes to see, ears to hear, nose to smell and fingers to feel.

He needed no automobile to travel He could see more afoot. And in a mile afoot, he found infinitely more wonder than most people find in ten thousand miles on wheels. He knew every plant, every bush, every tree, by its scientific name, as well as its common name He knew the places where the pink lady's-slipper grew, where to find the fringed avens He knew what plants the Indians used for food, for paint, for other purposes; he knew how to prepare them The few people who have eaten one of his meals of wild Indian

vegetables beside an oak fire on the bluffs of the Wisconsin River have had one of the rare experiences men can have

He knew the insects They astounded him. Through personal observation he knew the life histories of some insects that were known to no other man. He enjoyed the birds and could spot and name them from far off The Wisconsin River Valley he knew as no other man has known it. He thoroughly knew his world, and was entirely at home in it At night he was at home with the stars and the sounds of the forest

He showed me how to catch sight of a wild deer, where to find the badger, how to trick a fox into showing where he lived, where to expect a rattlesnake and how to pick him up He knew about geology, fossils, and caves

In all this, he was not a pedant, but just a smiling, pleasant man with his hat tipped back on his head, striding along easily with long strides, enjoying a world in which everything interested him.

I have seen him spend a whole afternoon watching a jumping spider. He lectured when he needed money, or wrote an article But he had no great need for money, because he was richer than Henry Ford and John D. Rockefeller combined. He would chuckle when he heard of other people's misfortunes, asking why people should be foolish enough to cause themselves so much trouble. For him the people he met were as interesting as the plants and birds, and he treated them with the same solicitude

He was one man who was truly loved and respected by all who knew him. His wife always said that she adored him more every year They lived 60 years together.

We can't, of course, be W. C English's, or live like him But the point is, we should cultivate the ability to find our major and constant enjoyments in the common things which are always at hand. To be able to do so gives living a most tremendous lift whose value cannot be overestimated. Developing a capacity for enjoying what is at hand, of course, carries with it simplicity in living

Now, mind you, it doesn't preclude soaring into the heights,

but it makes soaring what it is, namely, a soaring, after which one again returns to set one's feet on the terra firma of the world of our five senses, rather than making soaring a permanently insecure detachment from which there is no return because there is no place to return to.

#### 2. Avoid Watching for a Knock in Your Motor

Among the world's most miserable people are those who cannot get over the idea that they have something terribly and intrinsically wrong somewhere — something very rotten in the state of their constitutions. They are forever miserable, listening for a possible knock in their motors, a grinding in their differentials. They belong to a tremendously large organization — the "Symptom-a-Day-Club," in which it is required that the members start the day by waking up and immediately asking themselves, "Where am I sick today?"

Bellyachers are miserable people deserving our greatest sympathy and help. They have gotten the way they are because of

- (1) Parents who were chronic bellyachers, and who gave their poor miserable children the idea that our bodies are hellholes of aches, pains, and agues.
- (2) Doctors who gave them an organic substitute explanation for their E I I These doctors were either inexperienced or were thinking more of their fee or their time, than they were of the patient
- (3) An interesting physiological fact if any of us stop and ask ourselves, "Where do I hurt?" we can by self-examination find some place where we hurt The bellyacher by habitual self-examination is constantly finding these places and playing them for all they are worth All one needs to do to turn one of these insignificant, unimportant pains into something genuinely severe is to keep one's attention on the pain. It soon grows ten times as severe

A common fuel for the bellyacher's fire is a common type

of muscle-sheath and tendon pain known as fibrositis Fibrositis never turns into anything serious. Although it is primarily an emotionally induced symptom, it is aggravated by muscular exertion, and by temperature and moisture changes. It is exceedingly common, and there are few people who do not have it.

Some people, like myself, have fibrositis somewhere practically all the time. The bellyachers manage to squeeze every ounce of pain out of their fibrositis. Not knowing that it is merely fibrositis, they add apprehension to it; if the fibrositis is in the chest, they are sure they have heart trouble, if it is in their scalp, they have a brain tumor, if it is in the abdomen, they have the cancer that is the beginning of the end

Sometime when you haven't anything else to do (God help you), center your awareness for an hour on the sensations that arise in your throat. At the end of the hour you will understand how a person who has allowed himself the apprehension that there is something wrong with his throat can feel so sure that his throat is plugged, swollen, inflammed, dripping, abscessed, cancerous — in short, fulminatingly catastrophic — beyond anything the medical profession has ever witnessed before What a sneering look of contempt the M D. receives who assures such a throat searcher that he has nothing wrong with his throat!

There are a terrific number of people, physiologically sound but emotionally unsound, who have developed the idea they are unwell, and who no more expect to be well in the future than you and I expect to grow younger. Sad to say, in the development of this idea they have often been ably abetted by some lazy physician who offered them an easy organic explanation for feeling the way they do

For instance, I had as a patient a lady who was sure she had some unusual fluid trickling about in odd ways in her abdomen. She had already had three major operations. She had a small myoma of the uterus that actually amounted to exactly nothing.

She had been told by a surgically-minded physician that the

myoma was the cause of her trouble and should be taken out. I thought I was doing pretty well in allaying her fears and explaining her feelings. Then, in a moment of doubt, she returned to the surgically-minded individual of the first part.

He operated, assuring her afterward that not only had he removed the offending uterus, but, that through his magnanimity, her ovaries, too, would never after cause her any trouble. She felt well and was fairly happy for two months. Then she had a new set of complaints

Now her thinking was, "If my former trouble was caused by something that had to be removed, this one is, too" Now rational treatment is even more difficult than it was before I am trying again, but I'm afraid the idea is pretty well fixed in her mind that she has a diseased organ again, and is never to be well She never expects to be well. She is a sitting duck for the next physician who suggests an operation

But it isn't always the doctor's fault Josephine was a pretty maiden lady who was sacrificing herself to take care of her mother and father. The plans she had once made for her own adventure in living had been laid aside. On the surface she appeared pleasant enough, but, fundamentally, she rebelled secretly against her lot.

She had an ulcer, and she centered all her complaints around that. Her complaints, and her parents' complaints, became so wearing that her physician consented to an operation for her ulcer. Now, several years later, she is just as miserable abdominally as she was before, this time without an ulcer. The physician was literally pushed into an operation. He knew he could remove her ulcer, but he also knew he couldn't remove the situation that would produce new abdominal difficulties after the ulcer was removed.

Never before in history have people been bombarded by so many warnings of ill health as we are today. The radio and television are constantly suggesting symptoms in order to sell a remedy which even the truly sick do not need Anyone in a properly receptive mental state can feel the necessary symptoms and buy a bottle of the stuff the commercial on

the radio or television makes so alluringly curative Daily papers and magazines whoop up a disease and recite enough average feelings as symptoms, so that anyone can imagine he has the disease, or that he soon will have it Never before in history has a public been made so aware and so afraid of the diseases which our clay is heir to This constitutes a tremendous factor in the onset of emotionally induced illness.

A person may have symptoms from wrong emotions. If he pays no attention to these symptoms, either because he knows what they are, or because he has other more important things to think about, he cannot be said to have emotionally induced illness. But the moment he gets apprehensive, and concerned, about the symptoms he feels, and allows them to make him miserable, he has emotionally induced illness.

One of my patients was an executive of a large concern. He was always under terrific pressure, with large responsibilities. As he went about his work, he frequently felt a tightness in his chest, and because it was not actually uncomfortable, and because he was intent on his job, he paid no attention to it but went on his way.

During a routine physical examination he mentioned the tightness to the company doctor, who told the executive that he probably had early coronary heart disease. From then on the poor fellow was licked, he thought of his heart all the time, and became extremely apprehensive whenever the tightness appeared. He became unable to work and was a complete invalid for a year. It took numerous examinations by the best heart specialists in the country, and very intensive assurative therapy, to get the man back to his work. Finally, he could again evaluate the tightness for what it was — a manifestation of the harrying and worrying, anxiety and hurrying, that was a part of his job.

But be sure you are organically sound. Here is the way to take care of your health. Have a good thorough physical examination every year by a sensible doctor, to assure yourself that you are sound, or practically sound. Between the yearly examinations believe you are sound. It something

turns up to cast any doubt in your mind as to your condition, go to the same doctor. If your fear turns out to be groundless (as fears usually do) make nothing further of it. It is so much more enjoyable to know that you are well than to believe there must be something morbidly wrong with you in spite of what the doctor says

We saw in Part I how a constant, morbid fear that there must be something wrong will eventually produce E I. I.

#### 3. Learn to Like Work

The chances are that you, like most of the rest of us, have to work for a living. As with every other necessary factor in your life, you might just as well like it and avoid making trouble for yourself by not liking it.

A person who has convinced himself that he doesn't like work has a monotonous repetition of unpleasant emotions while he is working, and he is well on the way to an E I. I. There was a time when I used to suggest to a person who didn't like the type of work he was doing that he find himself a job he did like. But I found that usually such a person didn't like the second job any better than the first The root of the matter was that he just didn't like work — period.

It is perfectly obvious that anyone not liking work will have a dreadful set of emotions while he is working. And, as is usual with such people, they intermittently find an excuse for not working. Then the economic pressures that go with no income produce an even more dreadful set of emotions.

The loafer is not the happy man. There has long been a myth, half-believed in every generation for centuries, to the effect that the lazy loafer is a happy person. A happy, lazy loafer is such an outstanding envy to the folks who slave for a living that he draws a great deal more comment than most human beings do, and more than he is entitled to. But he is, nevertheless, a very definite exception to the rule. The rule is that most lazy loafers are miserable people. Of 25 lazy

loafers I know personally, only one is outstandingly carefree and happy And he happens to be a very energetic man, he is merely energetic in unproductive ways.

Unless, then, you expect to end up either in prison or on relief, you had better persuade yourself that you like work Dislike for work carries with it unpleasant emotions in more ways than one

We have our likes and dislikes because they were suggested to us, sometimes boldly and outright, sometimes insidiously and slyly. It is very easy, especially if you are still young and not too strongly set in your ways, to keep suggesting to yourself that you like work. The stronger and more frequent the suggestion, the better the "take" After a little practice, you can get up in the morning, pound your fists on your chest, like Tarzan, and yell, "Come on, work! Bring on the work!"

A young person in high school or in college is often desperately troubled and bothered about what kind of work he should choose, or what kind he is most adapted to Actually what choice he makes is not very important. Any person can do a number of things equally well, some people could succeed in any kind of work. The important ingredient is that the individual wants to work. With that one quality, he will make a good doctor, a good plumber, or a good teacher. Without it, he won't be worth having around at any kind of a job. What's more, he will be a drug to himself.

If a person likes to work, and has learned the simple joy of doing something well, if he feels pleased at producing something of value to society, he will be generating pleasant emotions for himself all the time he is working, as well as for the chap who hires him.

A person who has more than enough work to keep himself occupied, and who likes work, seldom develops E I. I. He does not have time to "think." "Thinking" usually means thumbing mentally over troubles. I mentioned earlier in this book that the group in my local society who have E. I. I. least often are the farmers' wives who have eight or nine children,

who take care of their homes, and also work on the farm They don't have time to "think" or to get sick. As one patient, who had too little to do, put it, "I'm all right until I start to think."

Work is therapy Liking to work is a wonderful prophylaxis against E. I I.

## ♦ 4. Have a Good Hobby

A fascinating and creative interest apart from your work is an absolute essential for happy living. Two of our basic needs are the needs for new experiences and for creative effort A good hobby supplies them both.

Without a hobby, spare time becomes a boring span of time during which our minds are more and more apt to cogitate upon our troubles

There are any number of interesting and creative hobbies; I do not have to name them for you On the whole, I would say that the creative hobbies are more satisfactory than the collecting hobbies But collecting hobbies are not bad

I remember one patient, a lady in her early seventies, who for 40 years had carried on a monologue of how miserable her abdomen felt. She could occupy hours telling the miserable stories of her visits to the country's greatest doctors, what each did, what each said, what each tried, and how her abdomen emerged victorious each time and continued unimproved or even worse than it had been. There were embellishments and details which varied a bit with each recounting, but even these became old and worn to the immediate family, who were tired of the tale and probably tired of seeing the raconteur live on to tell it yet again. Her children avoided her to avoid hearing the story ad nauseam. She added their alienation to the current chapters of her miserable saga.

On one visit, as I listened to her extended story, as I had listened many times before, I managed to get a word in edgewise, saying, "Why don't you get yourself a hobby?"

I received no answer at the time — she went right on into her transverse colon and all the mischief that lay therein. But to my surprise, she called up two weeks later on the telephone and said, "I've got a hobby."

"Good," I answered, "What is it?"

"Button collecting," she replied.

My immediate feeling was, "Oh, pshaw — button collecting!" But since then, I have watched her collect buttons, and I think I'll take it up myself sometime. It has done the intestinal lady a world of good. In fact, it has made a likeable lady out of her.

Now when she hears about a certain button, she will go out searching for it—perhaps, the search may take many days. When she finds the button, she puts it on a card with similar buttons and puts the card up on the living room wall. Now when visitors come to see her, she actually finds it more to her liking to tell them the stories of the buttons than the story of her miserable bowel. Her family is drifting back, interested, also, in the buttons.

One day the lady went to Madison to see the Governor of Wisconsin, at that time Governor Goodland He was 84 years old, she 74 When she had been admitted to the Governor's presence, she said, "I've come, Governor, to ask you for a button from your vest to put in my button collection"

"I'll be glad to give you one," the Governor replied, "But I haven't anything to cut a button off with."

The lady had foreseen that difficulty She promptly extracted a scissor from her handbag and handed it to the Governor. That worthy man proceeded to cut all the buttons from his vest and all the buttons from his coat.

As he handed them to the lady he said, "There you are, madam. I'd give you more, but I have to get home"

#### ▶ 5. Learn to Be Satisfied

There is one understandable excuse for being dissatisfied when there is obvious negligence, dishonesty, carelessness, or incompetence on someone's part, for example, your Con-

gressman's. But it is obviously useless to be dissatisfied when a situation cannot be altered, or when dissatisfaction can be seen to be entirely useless.

For instance, you meet people who are obviously disturbed by the weather and, just as easily, by everything else Living in chronic dissatisfaction is about as close to living in Hell as anything the world has to offer. The real tragedy is that it is so useless and unnecessary.

You remember the twin sisters I went Christmas shopping with. The one found it just as easy, and much more pleasant, to be satisfied with all the things her sister found it necessary to be dissatisfied with.

This habit of dissatisfaction is often acquired innocently by a child living in a family where one or both parents are continually at odds with everyone and everything else.

Other people acquire the habit of dissatisfaction in a different way Albert was a boy who was awkward and "queer." The other children loved to use him as a scapegoat for their cruelty Albert gradually came to suspect and dislike all other people. He came to dislike things other people liked or thought important. Today he registers dissatisfaction with everything and everyone, excepting himself, whom he is unconsciously defending in everything he does and thinks.

A few others become habitually dissatisfied because a series of misfortunes has soured them on everything, and they weren't originally equipped with the fortitude to rise above it. This kind of thing is apt to happen to the man or woman who picks a lemon in marriage and then has to live with it. There are so many people attached, really tragically attached, to marital lemons that it is a great credit to homo sapiens that so few murders are actually committed. Henry once told me the secret, and Henry knew, for he was irrevocably riveted to about the sourest lemon I ever saw. Well, the secret, Henry said, was to cultivate a taste for lemons.

If I ever have enough money to erect a statue to anyone, it will be a statue for Henry. Henry, through 33 horrible years, took a terrible, unmerciful beating; while he took it,

he maintained a cheerful disposition, a warm, friendly outlook on the world and an unusual degree of good will toward men. There have been saints who were not half so deserving And many men like Henry are flowers born to blush unseen, and waste their sweetness on the desert air. I hope someday I can raise enough money for a statue, or a sculptured group to praise them all.

A classic example of dissatisfaction. A young lady patient of mine had to be hospitalized with emotionally induced illness. She was a mess Her underlying trouble was that she had become thoroughly dissatisfied with everything in her life. She had been educated in an excellent eastern school to be a secretary and had a wonderful position in Washington, D C, when World War II came along and brought a certain young handsome army captain in and out of the office in which she worked

One and one add up to four — I mean two, at first — they were married and had two children by the time the war was over, over, that is, for everyone but Ellen Then she found herself living in a trailer, bringing up her children in a trailer (soon there were three)

The first time I was called to see her, she was in bed at one end of the trailer, and the captain stood wringing his hands at the other end She told me then, in no uncertain terms, and in a voice that made the captain's fingers white, that she didn't like housekeeping "A-tall," AND she didn't like living in a TRAILER, OR keeping house in a TRAILER, AND bringing up children in a TRAILER was TERRIBLE, AND (this she didn't say, but implied) she wasn't sure she liked her husband in a TRAILER—AND she CERTAINLY wished she had stuck to her secretary's job in Washington.

I was sure, from other remarks, she was dissatisfied with her physician since he wasn't getting her over her nausea and dizziness. She welcomed the idea of the hospital for the simple reason it took her out of that so-and-so trailer Without giving her a diagnosis, I ordered her (we were past the suggesting stage) to send to the library for the four Pollyanna books they had.

Now, many people may consider them silly books, but usually the people who call them silly are on the defensive because of a rotten disposition, and they half-way know it Anyway, the young lady read the books I didn't say a thing; at the moment, she was enjoying the hospital.

One morning she volunteered her own diagnosis I had known all along she was bright enough. She said, "I've been thinking, or trying to think Good Lord, what a little fool I am. I've been dissatisfied with keeping house, I've been dissatisfied at having to bring up children in a trailer, I've been dissatisfied with my husband because he couldn't provide something better, I've been dissatisfied because I'm not a secretary with a good job

"All right, Doc, I've been thinking — I'm a damn fool I can't change this, at least not right away You and Pollyanna win; what am I making myself miserable for? Here's the answer: Keeping house in a trailer is, after all, very easy and no trick at all If Jud and I don't like the view out of our living room window, we can move the trailer and get a better view.

"As for bringing up children in a trailer, there is a great expanse of outdoors for them to run around in, and you don't get that on 33d Street I'm going to make a go of it, and I'm going to start planning a little house, the kind Jud and I want some day AND—bless me—I wouldn't trade this for the best secretarial job in the world."

You see, she had the idea, the simple idea, that it's easier to be satisfied than dissatisfied, and much healthier. She read all the Pollyanna books—I guess there must be about 16 She quickly learned the art of being satisfied. She evolved her own little mental tricks and had a lot of fun doing it. It wasn't long before she was perfectly well.

As I say, she really had a great deal of good sense. She soon found happiness in her family Finally they moved into the house she and Jud had dreamed of. I like to visit them to see

how pleasant and cheerful a family can be when they understand how important it is to stay that way

It's not hard to feel good. In regard to satisfaction and dissatisfaction, remember two things.

First, it is as easy, and much pleasanter, to find elements of satisfaction instead of dissatisfaction in the daily run of events. All that is required is the will to feel satisfied. The wise individual knows that life is one damned frustration after another if you allow yourself to be frustrated, but it is also one satisfaction after another if you are determined to be satisfied. Trouble is where you make it

Don't want what you can't have. Secondly, another trick for dispelling dissatisfaction is to quit wanting, wanting this, wanting that This, of course, goes back to our first aid, which was cultivating the simple and the things at hand I knew a man of moderate means with a large family, who made himself miserable wanting things he couldn't afford First, he longed for an expensive camera. He worked himself into such an irritation of desire that he finally bought it, although he could ill afford it, and his family could afford it even less. When he had that, he began to fairly itch for a power saw and could think of little else until he had that; next, he had to have a drill press. And so it went on He was always dissatisfied with what he had and thought he needed more. His family, meanwhile, were deprived of much they really needed

It would have been just as easy for this man to have found pleasure in things that it was easier for him to have. His education had been faulty, there had been no one to show him how to find enjoyment without expense. With a little help he might have learned to enjoy the beauties and wonders which surround us on all sides Had he invested a dollar for a copy of Gilbert White's, The Natural History of Selbourne, he would have found there is more in a simple walk than in a houseful of gadgets

Learning the trick of being satisfied goes a long way toward making us well-adjusted, efficient, happy, and the possessors of a rich and rewarding life

#### • 6. Like People and Join the Human Enterprise

In a world where people live next door to each other, rub elbows in the subway, and meet bumper-to-bumper on the highways, it is disastrous to emotional stasis to take a dislike to the race and to the individuals who comprise it. Letting people get in your hair is far, far worse than getting bats in it There are many more people than bats.

Some people dislike everybody. It is surprising in meeting people with E. I I how many people there are in the world who dislike practically everyone, from the president, whom they have never met to their next-door neighbor, whom they wish they had never met! They have nothing complimentary to say about a single soul, and are very derogatory toward everyone. Their immaturity has isolated them in a shell Yet they have to live in the world of people. The extent of their cooperation in the affairs of people consists in getting what they require out of society.

One of my patients was a man who had risen to be the superintendent of a manufacturing plant employing six thousand people. He was sick. In the beginning of his illness, he would suddenly be overcome by a spell of weakness, trembling, dizziness, and vomiting. This occurred whenever he went to his office, which he shared with the other assistant manager. These spells became more and more frequent, and, before long, he began having them at home whenever he merely thought about his office. Naturally he lost weight, and both he and his wife were quite certain that he had some serious malignancy and his days were numbered.

The root of his trouble was that he didn't like the other assistant manager who occupied the same office with him. He said, "The first time I saw him, I didn't like him. I didn't like the way he combed his hair I didn't like the way he whistled through his teeth, and the way he always started every sentence with the word 'listen,' and ended every paragraph with 'don't you know.'"

On questioning him further, I learned that he had never liked anyone He hadn't liked his father, his mother, his brothers and sisters He couldn't say that he cared for his wife. In short, he had never liked anyone

He was a surprised man to find that he recovered from his illness when he began to suggest to himself the things he could find likeable about the man he had to work with, to assure himself that this man had likeable qualities, and to take the trouble to cultivate him and take him out for a round of beers.

Most people's peeves are an expression of their dislike for other people. I asked one of my patients to write down a list of his peeves, since he seemed to have so many. He filled out both sides of a sheet of typewriter-sized paper

The first peeve he listed was "people chewing gum" "I can't stand anybody chewing gum," he said, "It just makes me grit my teeth." His second peeve was, "My wife rocking in a rocking chair. I just want to jump up and down and scream when she does that" His third peeve was, "My daughter playing the piano" And so on, and on You can imagine how miserable his peeves must have made his family

These dislikes are essentially childish. Dislikes like this are childish arrests in the selfish, self-centered attitude typical of childhood Because people so afflicted are in their shell, they either never make friends or they drop the friends they start to make. This they blame not on themselves (Heaven forbid) but on the other people, whom they regard as being incapable of friendship. Next, on finding themselves isolated, they begin to pity themselves and to feel persecuted They become hypochondriacal and develop deep-seated inferiorities. In all these ways, in addition to the plain irritations which other people cause them, these individuals lead a miserable life.

One of the finest sides to living is liking people and wanting to share actively in the human enterprise, the sum total of the effort the human race is making to get out of the jungle state and frame of mind. The greatest pleasures come by giving pleasure, to the fellow who works with us, to the chap

who lives next door, or to those who live under the same roof There is no such thing as an "individual" in our society Each one of us is an "individual-community". If everyone in the United States were to begin today to live entirely as an individual without the materials and services he receives from the community (the people around him) there wouldn't be more than a couple of hundred people alive at the end of a year.

Entering consciously into this human enterprise, feeling one's self a part of the community, and looking upon one's self as an "individual-community" is an important element in maturity.

# ▶ 7. Get the Habit of Saying the Cheerful, Pleasant Thing

There are some people, like Sam, who have never been heard to utter anything but a jarring note. Such a note ruins the present moment, a steady stream of them turns the whole day into a junk pile. Some people do it regularly; usually one hears it from the very high and the very low. The very low think they ought to gripe, so they gripe. The very high think they should sound worthy of their position, so they gripe at the taxes and the political opposition; they lambaste everyone under them

Hardly a moment arises during an entire lifetime that wouldn't benefit more by a sally of humor or a cheerful lift than by a mean barb or a sharp gripe. I know executives who carry on under tremendous pressure as affably and kindly as a girl skipping down the street. They are the boys who get along and stay out of the hospitals

On the other hand, there is the great-tycoon variety. They snarl and hiss and backfire, slugging everybody verbally—in short, making constant, ugly asses of themselves. You do not have to envy this great tycoon type, gentle reader, this constantly enraged bull who paws and bellows. You may be sure he is feeling just as miserable as he sounds. In his climb up

the ladder of success, he is just as miserable on the top rung as he was on the bottom rung. The added difference is that on the top rung he is dizzy with his own eminence, and that starts another immature rush of emotions that gives him, as well as those around him, a pain in the neck.

Get up on the right side of the bed. Get the habit of starting out the day right A neat little trick is to look at your husband, or your wife, when you are both awake, and, even if it is an overstatement, say, "Good-morning, dear; you look fine this morning"

The next neat little trick is to go to the window, look out, and in a beautiful baritone, or soprano, that reaches to the end of the avenue, sing, "Oh, What a Beautiful Morning" Should it be raining, you say enthusiastically, "Ah, what a fine rain. Certainly good for the soil"

Sounds a bit silly, of course, but it pays off Positively the easiest way to lift your mind out of the mud is to dash off a series of pleasant remarks, or still better, a good funny story. The more adept you become in pleasantries, cheerios, and humor, the easier it is to stay out of despondency, frustration, and E. I I Incidentally, good humor is a quality which endears you to other people No one loves a crepehanger. Everyone likes to have someone around who has a sense of pleasantness and humor.

Be pleasant to your family. It is particularly important in family life to develop the habit of pleasant conversation when the family is together. Do not, for your own, your children's, or your digestion's sake, make the family meal a recitation of troubles, anxieties, fears, warnings, and accusations. And what is more important, don't let the feeling pervade your family that everyone is so taken for granted that a pleasantness or kind word is unnecessary. The crabbed note that clangs daily in so many families is a good foundation for many of the neurotic characteristics of later life.

A sense of humor is a wonderful adjunct to common sense. There are various degrees and varieties. Practically everyone can develop a sense of humor if he goes after it

One of our town's clergymen was about as humorless as a dried apricot Moreover, it was very difficult for him to engage people in a conversation. He gradually overcame both defeats in this way every day he read a good story and memorized it. The next day he would tell his story to everyone he met. Every day he would do the same. Usually the person to whom he told his story gave one in return. Gradually he came to recognize a good story when he heard one, and gradually he could pull a story out of his bag for almost any occasion. He became known around the country as the clergyman with the good story. People were happy to see him approach.

#### § 8. Meet Adversity by Turning Defeat into Victory

Many people are precipitated into E. I. I. by some adversity Everything they had appears at one moment to have vanished, and they are completely at a loss to go on. Futility and frustration are piled on disaster The underlying crack in most of the people who give way beneath adversity is the immaturity of selfishness and egocentricity. The death of a person near to them is calculated in terms of what it means to them, personally, in the way of services lost

One poor woman who had always been highly selfish and self-centered became hysterical after her husband died, to the point where she insisted that her son withdraw permanently from college to keep her company "Otherwise, I'll be alone here! I can't be all alone! I've got to have someone here!" and so on. No real thought or kindness for the man who had passed away, or for the son whose life she was continuing to ruin.

Do you remember William — King of Living — we talked about in chapter 8? At the time his wife died of a malignant disease of the intestines, he was in the hospital convalescing from an operation for the same thing. No married couple had ever been more firmly attached to one another, nor more appreciative of each other's company than Mr. and Mrs. William had been.

He took the news of his wife's death thoughtfully. He considered it silently for a few minutes. Then in a very appreciative, straightforward tone, he began to tell of incidents which illustrated what a remarkable and fine person his wife had been. After that he never referred to her or her death He never bemoaned the fact that now he would be all alone. When he left the hospital to return to his two rooms, in which he was now to be alone, he did so without a mention that it would be changed or that the rooms they had called "home" would be without the presence of his wife

When I called on him there, he was just the same as before, he was just as cheerful, he was just as interested in the great wide world as he had ever been. He never dropped a note to indicate that his life was different now, or empty Soon he was out and around, talking to old friends (and everyone is his friend), apparently unperturbed

A few years later I met him on the street outside my office "Well, howdy, Doctor," he said, "You look as though you had to get somewhere fast."

"No," I replied, "No hurry, just a habit I'm on my way to see a type of patient one always hates to see — a woman who has been upset and in bed ever since her husband died four months ago." Then I added that few people were able to handle adversity the way he could

"It isn't hard to do," he said, "if you keep your feet where they belong—on the ground. When you can't change something—you'd better accept it, and figure out how you can keep living the best possible way. When a man loses his wife, or a wife her husband, what is mourning but just plain feeling sorry for one's self? There are long philosophical arguments leading up to that last statement, Doctor, but you're too busy to hear them right now. I'll give them to you later." He laughed, and walked on

### ▶ 9. Meet Your Problems with Decision

In the multitude of practical problems you are obliged to meet in the course of living, you cannot possibly always be right, or make precisely the move that would be to your greatest advantage. But if, by and large, you can act using the principles and aids you are reading about in this chapter, your mistakes will not loom large or be very important.

Furthermore, it is better to adjust your thinking to allowing and admitting a few mistakes than it is to keep milling and turning every little problem over and over in your mind. Doing that results in a troubled, apprehensive outlook that will certainly produce E. I I.

Of the total number of decisions we have to make, only a very small percentage will be improved as the result of long continued study and consideration. Also, a great many of the decisions fall into the same category as deciding whether one wants to buy the pink-flowered set of dishes, or the dishes with the gold design. These are decisions in which the issue is usually of a minor nature, either of two actions will do perfectly well

The best rule to follow, therefore, is to make your decisions without a long huffing, puffing, rumpus, and fuss. Decide what you are going to do about a problem, then quit thinking about it.

One of my patients had a severe recurrent fibrositis, so severe that she would be in bed with it at times for weeks. No type of therapy would do the least bit of good She was a very vigorous and self-assured individual, and I knew she would resent my telling her that her fibrositis was due to a wrong set of emotions. However, seeing her in a few of these attacks, I was certain that there was a recurring factor in her life that was responsible for her attacks

I was planning on how I could most diplomatically bring this to her attention, when (to my relief), she offered her diagnosis of her own accord, "I think I know what is bringing these attacks on, Doctor. You may disagree with me, but I am sure by this time that there is some sort of a connection. My idea may be all wrong, but I've noticed that every time my husband gets into one of his terrible scrapes, I get an attack of my pain and have to go to bed."

"You are perfectly right," I assured her, "I was just getting ready to suggest the same thing"

"Well, Doctor," the poor woman asked, "How am I possibly going to handle it?"

"You must, of course, continue doing your best to help your husband, and get the best help for him. On the other hand, he has gotten himself into a particular rut which he is likely to stay in for some time. Every time he precipitates himself into a mess, and you know he will continue to do so, decide at that time what you are going to do about it, then make yourself quit thinking about it. It is turning the thing uselessly over and over in your mind, even after you know what course you will take, that is the thing that brings on your fibrositis."

She practiced this simple instruction with understandable difficulty at first. But it gradually became easier as she practiced, and the husband gave her plenty of practice. Finally, when the tremendous decisions came, which she always had feared would eventually come, she was well enough practiced that she could pass through them with a minimal amount of somatic disturbance, and had nothing nearly as severe as her old fibrositis.

Some decisions just can't be made. In our living we are apt to come upon a piece of trouble (and it is usually a tough, large piece) to which there is no apparent solution. The important thing in handling this variety of trouble is to tell ourselves that there is no solution other than to QUIT THINK-ING ABOUT THEM.

Mrs K— had a family of three children and a husband who had been drunk just about every day for fifteen years. The depths of misery to which that woman and that family descended are beyond simple description. Every possible treatment and approach had been tried to break the man of his drinking habit. None had more than uvery short beneficial effect. For certain reasons, the woman did not wish to divorce him. Her misery, and the children's misery, grew deeper and deeper

Then one day she came to an important decision.

She said to herself, "We had better give up the idea that Albert ever can, or ever will, stop drinking From here on in, I'm not going to torture my mind anymore over Albert or his drinking. We'll take care of him, of course, but we'll quit worrying about him Instead, I am going to devote every energy I have toward making the rest of my life, and my children's lives, as happy as they can possibly be under the circumstances."

She realigned herself in relation to her problem

She was admitting that her problem was insoluble, and that there was no use expending any further worry or thinking upon it.

Her realigned efforts worked wonders She was like a new woman. The children began to take on a new dignity in place of the beaten looks they had worn so long

#### ▶ 10. Make the Present Moment an Emotional Success

Getting rid of lousy emotional habits should not and need not be a complicated procedure. Above all, keep it simple. Reduce it to the terms of a common denominator—keep your attitude and thinking as cheerful and pleasant as possible—RIGHT NOW.

The only moment we ever live is the present moment. It is the only time we ever have to be happy.

Some people live on an expectancy basis, always looking for something in the future, completely losing the only value they have — that which is in the present moment

The boy in high school anticipates college, in college, he anticipates the joy that will be his when he gets an engineering job When he gets his engineering job, he believes that joy will come when he marries Mary and has a home; and so he goes on anticipating.

There finally comes a time in his life when further anticipation is no longer rosy. That point is accompanied by a tremendous reorientation of thinking, values, and emotions. That is the point where the individual begins, visibly, to look

old, licked, and beaten At that point, too, anticipation is metamorphosed into thinking about the wonders and glories of the past (which are past)

Plan for the future, but don't brood on it. Naturally, we have to plan for the future, but we shouldn't make our present moment a constant thinking about it. Beyond the necessity of providentially planning the future, constant thinking of it and living in it, entail fear, concern, and apprehension.

It is utterly silly to be constantly worrying about what the future may do to our affairs, cattle, health, children, yes, even our life after death. Being upset over the future isn't going to alter it a great deal. Most of our worries are interest we pay ahead of time on things that never happen

The best insurance for a satisfactory future is to handle the present hour properly, do a good job of living now, be effective in your work, your thinking, your pleasantness, your helpfulness to other people, RIGHT NOW Yes, RIGHT NOW. The future will turn out to be as good as your present if you keep on handling THE PRESENT MOMENT correctly That's an important trick

### **♦** 11. Always Be Planning Something

A basic psychological need in every person is the need for new experiences. Without new experience, life sags down into a rut of interminable drudgery

To have the expectation of a new experience coming up is always a lift to the present moment, and you should always be planning an experience. It may be only a day's outing, or a half day of something on a Sunday, or merely a new feather in your hat Your planning needn't be anything elaborate, except on rare occasions. The important thing is that it be new experiences you are looking forward to.

The planning is just as beneficial in supplying the right kind of emotions as is the new experience itself. Barney Olds, whom I could just as well have used instead of William as an example of the king of living in chapter 8, was a man who had met one catastrophe after another with superb equanimity, resignation, determination, courage, and cheerfulness. He finally had an illness that kept him in bed for three months; then a recurrence kept him in bed for a solid year He never complained

I said to him once, "Barney, don't you get tired of being in bed?"

Barney laughed heartily, "No I have a good appetite, that's half of living And every day I have a good cigar; that's the other half"

Barney enjoyed life more, confined to bed, than most people do on a holiday. He loved to plan trips to distant parts of the world, to Tibet, Manga Reva, to Tasmania, and so forth. He would write to travel agencies and steamship companies for information. He would get books and literature from the library about the place he was "going to". At the end of each "trip" he knew as much about the land of his destination as though he had actually been there. One travel agency was afraid it was missing Barney's business, and sent a representative to see him. After that, the travel agency helped Barney play his game by sending him copies of official tickets to the places he was "visiting." Barney enjoyed himself all the more

### 12. Don't Let Irritating Things Get Your Goat

In almost every moment there are worries or irritations that would get under your skin if you LET THEM It is hard to conceive of a single irritation, at least in the usual run of things, that *ever needs* to get under one's skin.

Whenever you are confronted with an irritation that is knocking and trying to get in, try the trick of forming the "magic circle" with your forefinger and thumb, holding it out before you, and say, "Nuts to that I'm not going to let it get under my skin" A little practice with this magic circle and you will soon be able to say "Nuts" very agreeably and pleasantly to most of the potential irritations that come along.

### The Best Part of Being Human Is That You Can Learn

By including these twelve items in your general attitude, you will make a big stride toward emotional stasis and maturity Living will begin to take on a general glow of enjoyability You'll find yourself changing in very fundamental and effective ways, you'll begin to feel the grand feeling of "Boy, I feel good!" and life will become enjoyable

The really best quality of human beings is that they can always learn something new, once they see the necessity for learning it. In my practise, I have seen hundreds of people rise to that capacity and turn themselves from a state of emotional stress to a credible state of emotional stasis. If that hope and that possibility did not exist, I would long ago have left the practice of medicine for other fields, because more than half of the practice of medicine is curing E. I.

Before leaving this chapter, I wish to anticipate a question that is frequently brought up, "Why don't you include religion as one of your aids?"

### ▶ Religion and Emotionally Induced Illness

The answer is in no way a disparagement of religion

It is true that many people are relieved of emotional stress when religious faith comes into their lives to occupy the vacuum that was made by the lack of one of the basic psychologic needs that are discussed in Chapter 14. These are people in whom there is a deep sense of insecurity, or people in whose lives there has been a great lack of affection or a minimum of recognition, or people who have a deep feeling of complete personal incompetence.

But it is equally true that religion, per se, neither increases nor decreases the individual's chances of getting E. I. I

The clergy and strongly religious people have E  $\,$  I  $\,$  just as often as non-religious people

One excellent minister, for instance, developed a very bothersome colon because of the terrific pressure of work

that the great charge under his care entailed Another good churchman had marked dizziness, weakness, and headache as a result of a prolonged and tough campaign to raise money for a new church. These, of course, are stresses of the type anyone might have But sometimes the stress arises out of religion itself as in the case of the militant and crusading minister who was greatly concerned and disturbed over the wickedness of his small town congregation and who succeeded, after a violent campaign, in bringing them to do as he wished. The physical effect was a prolonged dyspepsia, which finally became a frank ulcer.

It is evident in medical practice that a religious person needs the attitudes we are presenting in this book just as much as the non-religious. As a matter of fact, the attitudes presented in this book will beautifully augment and complete religious living, because the attitudes that comprise maturity are exactly the things the great teachers of ethics have always been driving at.

### KEY POINTS IN CHAPTER 9

### Important Points to Watch in Living

- 1. Keep life simple.
- 2. Avoid watching for a knock in your motor.
- 3. Learn to like work.
- 4. Have a good hobby.
- 5. Learn to be satisfied.
- 6. Like people.
- 7. Say the cheerful, pleasant thing.
- 8. Turn the defeat of adversity into victory.
- 9. Meet your problems with decision.
- 10. Make the present moment a success.
- 11. Always be planning something
- 12. Say "Nuts" to irritations.



# ACHIEVING EMOTIONAL STASIS IN THE FAMILY



### The Family Is Our Number-One Cause of Disease

The most important single educational factor to which most people are subjected is the family in which they grow up Because of the amount of time a person spends in the family and the authoritative nature of the control which the family has over our early thinking the family has more to do with molding our personalities and our ability to handle living than any other factor

In view of this tremendous effect the family has upon its charges, it is very sad that such a tremendous number of families are muffing their opportunities, and are doing a poor job.

It is very obvious, in seeing patients in the office, that our families are by far the greatest cause of wrong emotions our society has Not only in their childhood families do so many people contract emotional stress, but equally in the families of which they have themselves become a head. The family—

our past family, and our present family — is by far the most common cause of E I I., by far our most prevalent disease.

The saddest part of this family failure is that with a small amount of steering the families that have been off-center for generations might be guided into the proper channel, where they would become an effective educational factor for good But, as in other fields of emotional guidance, there are no organized programs for accomplishing such an improvement

First, let us review the family atmospheres that produce immaturity and emotional stress.

### Family Atmospheres That Produce Stress

I A kill-joy atmosphere in the family. One of the common family atmospheres productive of the wrong kind of emotions is the KILL-JOY ATMOSPHERE. In such families a dismal, pessimistic attitude toward everything prevails "Oh, what do we want a picnic for anyway? It will probably rain, if it doesn't, the ants will eat everything up" In families like this, joy is nipped in the bud before it ever starts to bloom

Betty came from a family like this, a family of constant gloom Like the rest of her family, Betty had no sparkle or lustre, nor did any of her known ancestors. Her family life provided her with none of the qualities that would make her popular at school Betty was passed over by the students and by the teachers, it wasn't a dislike they had for her, but she was so negative that she always faded out of consideration She was just never invited to other childrens' homes because a gloomy atmosphere always attended her presence Betty's mother never invited other children over to play with Betty because her mother was gloomy and didn't like fun And, of course, Betty developed a gloomy attitude toward her own physiology, the same attitude her mother had regarding her own health

By the time Betty was 13, she was a confirmed hypochondriac. She was apprehensive of every manifestation that her gloomy emotions produced, until her health, or her supposed

lack of it, became her major concern. She joined the great and numerous Symptom-a-Day Club. When she awakened in the morning, her first thought would be, "How am I sick today?" After she was 13, Betty was not without medical attention any year of her life. Her apprehension concerning her health was strongly augmented by her mother's insistent concern. By the time she was 40, she had had four operations and a surgical menopause.

Betty's father, as well as her mother, was a glum pessimist, entirely taciturn and humorless. He was that way because of the family he was brought up in. The line of such families probably went back to neolithic times. He was the "Sam, King of his own stew" you read about in chapter 7 whose wife said that possibly he had said something pleasant the first year they were married, but that it was so long ago she could no longer be sure

2. The critical atmosphere in the family. Another family atmosphere that breeds the wrong kind of emotions is the CRITICAL ATMOSPHERE. In such families, the atmosphere is charged with criticism of everybody. Usually the father starts it originally, but it becomes so universally prevalent among all the members of the family that all a visitor can say is, "Who flang that last brick?" An argument in the family is frequently this, "I'm not either losing my temper. You're the one who is losing your temper." As a matter of fact, all of them have permanently lost their tempers.

Barbara had the missortune to have been born into a family like that. As she grew up she became, of course, the mirror of the family, and carried the atmosphere of criticism to school with her. In school she had a great deal of trouble because of her critical attitude toward the teacher and children And at home her life consisted in running a critical gauntlet in which all the other members of the family were arraigned against her At ten, Barbara had emotionally induced illness.

Cold war in the home. There are some families in which the critical atmosphere is maintained in the form of cold warfare instead of more or less open flinging of bricks. The criticism here is in the nature of sharp cutting insinuations, often delivered in dulcet tones. Clifford was a master at this sort of thing, when he and his wife Betty had guests in of an evening, Clifford would get in a cutting criticism of Betty by saying at the bridge table, "Better not let Betty keep score, she'll just get our accounts hopelessly bawled up," insinuating that Betty couldn't keep her household accounts straight. Or he might say conversationally, "At our house we never know when or where we're going to eat until the can is opened."

This sort of thing, which went on year after year, always hurt Betty a great deal, and as time went on, Betty was sick a great part of the time with emotionally induced illness Notice that Clifford, who was responsible, was hit by the boomerang of having to pay the medical bills.

Critical influences from outside the family. Sometimes an illness-producing stream of criticism may issue from an odd source in an otherwise normal family. Jane was a fine girl and married George, a fine boy, who was deeply in love with her, and who, in a very understanding way, took good care of Jane. Jane's life was going along splendidly until she brought her first-born home from the hospital George secured the services of a practical nurse to help Jane with the housework and with the baby.

This practical nurse was an old-timer who knew everything better than Jane did, or the doctor did, for that matter, and she openly criticized the way in which Jane was handling the baby. She would criticize everything, including the formula the pediatrician had given the baby. She would make remarks, "I don't think the baby is getting along well. There is something wrong with it, it just doesn't act like a baby should." Then Jane would cart the baby off to the pediatrician who would assure Jane that the baby was perfectly all right. Whereupon, back home, Old Battleaxe would remark, "Well, you know sometimes these doctors don't tell you everything."

As this sort of thing continued, Jane began to feel poorly

without knowing why George and the doctor, at first, did not know what was wrong, either Then they both caught on Jane was a capable girl, intelligent and alert Her baby was a great event to her, a great challenge and opportunity for intelligent, creative motherhood But the Old Battleaxe had completely deflated Jane's confidence in herself and had sent her into a state of constant worry and deep-seated concern When the doctor and George found Jane's trouble, the remedy was simple and George applied it promptly He fired the Old Battleaxe. Jane was soon getting along fine.

The remedy isn't always that simple. Barbara, for instance, couldn't fire her father and mother

3. The atmosphere of dislike. Another common family atmosphere which produces the wrong kind of emotions is the Atmosphere of dislike, or the atmosphere of lack of affection, an atmosphere that is fatal to anything good that the family as an institution stands for.

Usually this atmosphere of dislike stems from the basic fact that father and mother do not like each other, and the only reason they hang together is "for the children's sake." In the atmosphere of such a home, the children quickly learn not to like each other Love, or dislike, comes to children largely by example. The parents have no genuine affection for the children, and the children reciprocate with even less

In this kind of family nobody wants any of the other members. No one is necessary to anyone else, and when a person feels he isn't necessary, he never develops full mature individuality. No one in a family like this is made to feel important or desirable for himself. No one ever gives or receives any appreciation. Life is like eating dried, tasteless prunes.

Ellen was the youngest of seven children in a home where no one really cared about anyone else Being the youngest, she was the target of everyone else's ill will Every member of the family was criticizing Ellen as soon as she was old enough to understand "Oh, she's dumb" "She isn't going to be able to get through school." No one ever helped Ellen

By the time she got into school, she had a deeply grounded

inferiority complex. She looked past her teachers because everyone told her she was stupid. When Ellen, after a hectic childhood, at last grew up, she married a boy who had had the same kind of a past and the same kind of an inferiority complex. When she had children, she was sure she lacked the ability to rear them, she had no confidence in her ability as a housewife. Hers was a constant life of worry

Ellen has been sick most of the time since childhood and is still sick today. It is not so easy to correct the factors in her illness as it was in the case of Jane, George, and the Old Battleaxe

4 The atmosphere of selfish egoism. Another family atmosphere that breeds the wrong kind of emotions is the ATMOSPHERE OF SELFISH EGOISM, which is a little different from the atmosphere of criticism, although it, too, usually starts with the father

Virginia, who had been doing all right alone, married a boy who was a pathological egoist of the kind whose only concern is himself. This was not immediately apparent in Roger because he was the kind of an egoist who doesn't talk about himself. But every thought he had was for himself. When Virginia married him, of course, she didn't know what she was getting in to

Roger was decent enough, but he used Virginia solely for his own purposes Roger was addicted to hunting and fishing, and that's what he was forever doing—without taking Virginia along Outside of that, he liked to play cards, and bowl, so he did that Virginia was alone at home most of the time Roger liked only a few foods, so they were what the family ate Roger's work took him on the road much of the time, and Virginia was alone at home bringing up one, two, three, and four children When Virginia began to complain about not feeling well, Roger had no sympathy and no patience

Today, Virginia is a very sick girl and her health will not readily be brought back to normal. Roger does not see what he has to do with her health, and he now regards Virginia

as an obstruction to his pleasure. Virginia's children are maladjusted and are functionally ill too

5. The complaining atmosphere. Another bad atmosphere in a family is the COMPLAINING ATMOSPHERE. No family is more miserable than the one that has in it a perennial and perpetual bellyacher Most often the bellyacher is the mother, although I have seen families in which it is the father.

When a family contains someone who is constantly complaining, there is no possible enjoyment for anyone. These complainers awaken in the morning and start analyzing themselves for symptoms. It's usually easy to find a symptom somewhere, especially in the morning before you've had breakfast Everyone of us has a pain somewhere or other most of the time, if we wish to make something of it. If you ask yourself, as you sit there, "Where do I hurt?" you can find a place that hurts. These complainers are forever looking for those places and allowing their minds to play over the painful areas all day long. The most pitiful part is that they paddle the rest of the family with their miseries.

In 99 cases out of 100, these complainers have nothing more wrong with them than an emotionally induced illness, but to hear them expound on their health, you would think they were fully equipped pathological museums. In the family they succeed in producing an atmosphere of gloom and anxiety, and these are the elements the children acquire. Gloom, anxiety, and hypochondriasis is the educational influence such families give their children.

In addition to making the family miserable, these complainers are poison to the bank account. One lady had, during the course of her miserable life, seen fifteen doctors, four cultists, two spiritualists, and had eight operations, had been in three sanitaria, and had spent a total of \$32,000.

6 The atmosphere of fear and anxiety in the family. One businessman I know gets up in the morning with an anxiety, and jumps anxiously from one anxiety to the next until he goes to bed, and then keeps himself awake with more anxieties

For instance, every morning he hesitates and debates what particular tie he will wear, and sometimes goes into a dither over it At breakfast he worries whether he is using too much sugar on his cereal and immediately wonders whether he has diabetes Driving downtown to work he will debate with himself whether to take one street or another and, having taken one, worries that he should have taken the other, lest fate decree that he have an accident on the street he is on. Coming to his store he worries about the show windows and about the whistling of one of his clerks.

His family has caught the same worrying habit—it's very contagious. His wife picked it up, his children have grown up in it. To them, it is the normal natural way to live. They just haven't experienced any other way

Some day, if they are lucky, they may be released from the habit sufficiently to realize they are unhappy, that they are personally maladjusted, and that they have emotionally induced illness.

7 The atmosphere of in-law domination. Another atmosphere that can be very bad for the family's emotions is the Atmosphere of in-law domination In-law domination may be very obvious and yet not easy to deal with.

Helen was a fine young lady who hailed from Philadelphia. She married a young man and went to live in his home town, a small village of 250, loaded with his relatives, some of whom were Banshees Some of these relatives saw Helen settled in a new modern house and felt that Helen was getting the deal they deserved but didn't get. They made good every opportunity to pick on Helen, to hurt her in little underhanded ways Helen became ill, and after a while she was too sick to work. Then the Banshee relatives really swooped down on her like vultures, and finished her up. After that, the only time Helen ever felt well was when she returned to Philadelphia for a month's visit. In the course of a few years she became practically incapacitated by functional disease She was finally carried off the battlefield by the divorce court, and within a year she was back to her normal self. Ever since then she has been well.

Young people should live by themselves. With few exceptions, it is best for young people, just starting out, to live independently and far enough removed from their elders to have complete control and command of their own families In close proximity, parents are always finding it easy to offer suggestions, if not orders, a thing which neighbors do only when asked, but a thing which parents are apt to do when not asked. In one family where the newlyweds lived in the same house with the parents, the mother-in-law was wellmeaning and only wished to be helpful. The daughter-in-law, too, wished, above all, to get along with the mother-in-law. They did get along, seemingly very nicely, but with the mother in the lead and guiding position, which frustrated the daughter-in-law's need for independent, creative living Inlaws, grandmothers, and grandfathers had best live apart from the children and allow the children an independent life.

### ♠ A Family Doesn't Need to Be a Bad Influence

Those we have reviewed are, of course, only a few of the bad atmospheres that make our families our most important breeding ground for disease. In a physician's office, it becomes apparent that a great many families are doing a perfectly rotten job and are providing their members with the wrong kind of emotions. Many other families are not doing as good a job as they might.

The pitfalls that a family can fall into are so numerous that it might seem discouraging to the well-intentioned homemaker or the intelligent newlywed

However, there is no need for discouragement

If you introduce into the family atmosphere the same rules that bring emotional stasis to the individual, you will have a family whose influence on its members is a healthy one You will have an atmosphere which develops maturity. You will have a family that is a unit of enjoyable life for everyone in it.

### Home Is the Place Where -

Robert Frost once said, "Home is the place where, when you have to go there, they have to let you in"

We can paraphrase that to define what a home should be: "A good home is the place where, when you desperately need a lift, you'll be sure to find one." A lift, you understand, not more irritation, not nagging, not arguments, not a scathing look, not a lack of sympathy, but a LIFT.

Your first job, as a member of your family, is to keep your attitude and your thinking calm and cheerful — RIGHT NOW.

Your second job is to help the other members of your family keep their attitudes and thinking calm and cheerful RIGHT NOW

Here are a few ingredients to work into the daily living of your family

# ▶ Family Atmospheres That Produce Emotional Stasis and Maturity

1. Emphasize simplicity in living and simplicity in enjoyment. As the American standard of living has increased, a greater and greater array of mechanisms have been dangled invitingly before the consumers' eyes. The trend in American living has been to put so much emphasis on the means for enjoyment—fine houses, automobiles, better television sets, cameras, electric ranges—that in the process of getting the means, we provide ourselves with frustration and anxieties. Yearning, longing, and then paying the installments become so constant we never learn how, indeed, we never have the opportunity to learn how, just simply to enjoy.

The way to proceed is to learn the art of enjoyment first Minimize the need, or the longing in the family, for new installments. Right now enjoy what there is the green of the trees, the blue of the skies, your own whistling, having fun with each other. Leave out conversation of yearning for what you haven't.

The idea is to utilize the little, ever-present opportunities for pleasantry, the immediately available chances for a humorous sally, the RIGHT NOW moment for being nice to each other

2 Get the idea of the family enterprise. As soon as the children are old enough to understand, indoctrinate them with the idea that the family is meant to be a wonderful place for everybody in it; it's everybody's job to make it a wonderful place for everybody else; it's an enterprise for everybody, by everybody. The family enterprise is a cooperative effort in which father, mother, sister, brother, all have an active interest and a personal responsibility. The family enterprise is the primary and most important activity and responsibility that father, mother, brother and sister have

Don't forget this, the children will acquire and carry on the family enterprise if mother and father do their share. Usually it's the father who is just a boarding and bored member, always off to business, the races, and Heaven knows where. If the top brass takes the proper initiative, the children will invariably follow

The family enterprise becomes a continual round of mutual projects, of things done together, games played together, stories told around the fire, group studies of interesting things and places, Sunday afternoon nature jaunts, yearly family trips to the fair, laughter, conversation, and gaiety that everyone (and that includes father) engages in and which everyone helps everyone else to enjoy

3. Attach the family to the human enterprise. An important idea to get into family living is that the family is in tune with the wide community which surrounds it. Beside the responsibility the members have to one another in the family enterprise, they have a similar responsibility to the HUMAN ENTERPRISE This is quite a necessary step in the development of the children's maturity. It is part of that aspect of maturity which consists in turning our ego away from purely selfish considerations out toward the welfare of others. Never to develop this sense of the human enterprise is to bury

ourselves for life in a pit of very stinky little emotions. If the children get the idea that the most important thing for anyone is the welfare and the happiness of the other people in our individual-community, they will have the instrument for producing a highly satisfactory emotional color, and they will find that life is filled with the highest kind of enjoyment.

Furthermore, the idea of the human enterprise in the family brings to the members of the family a kindliness, a sympathy, and an understanding for other people, which you cannot live happily without

Part of the family enterprise consists in projects directed toward meeting, knowing, and helping the great wide world outside parties, "get to know your neighbors" picnics, family trips through industrial plants, family trips into the great wide world, adopting a war orphan, other projects that the family can, as they go about them, specifically label "Human Enterprise" Getting to use the name "Family Enterprise" for one type of activity and the name "Human Enterprise" for another, in itself teaches maturity and awareness of purpose in the children. Whatever helps the children is sure to help father and mother.

4 Develop a family ability for turning defeat into victory. Whatever happens, when events occur that might disappoint or frustrate, the attitude in the family should always be, "We are not going to let that get us down, we are going to make the best of it, and the best is going to be pretty good!" This gets easier and easier to do, and as the family becomes competent in its use, there will be very little that can sour the family's day

The particular maturity that is taught to the children by the tactic of turning defeat into victory is flexibility and adaptability.

The family is all set to go to Parfrey's Glen on a picnic when the rain begins to pour, so what?—yipee—it's just as much fun playing games in the living room with the picnic later on the living room floor.

Handling the lesser upsets in that way makes it easier to

meet the tougher assignments Mother gets sick and goes to the hospital, everyone pitches in, not only on the work, but in holding up the family morale and mother's morale. It's doubly important, then, that every member keep the family clicking with heads up and chins out.

The trick of turning defeat into victory can become a game, with everyone trying to see who has the best solution for licking the upset, and then all cooperating on the best suggestion

5. Without affection, the family is a failure. General affection is easily generated in a family if there is affection between father and mother Affection must include everyone equally and must not be partial Everyone is made to feel necessary and indispensible to the general family operations Animosities between the children need never exist if they are nipped in the early bud, and if no animosities ever exist between father and mother. If there is bickering, strife, and verbal warfare in the top brass section of the family, the children will almost surely grow up to be bickering and disagreeable They in turn get married and start another cycle of foolish disagreement and bickering

A doctor gets tired of seeing these silly nincompoops who lose most of their affection for each other before the first year of marriage is over It is so completely childish and unnecessary. The answer to any marriage is that you should be mature enough to rise above the problems it entails. With ten cents worth of good intentions, a nickel's worth of sympathy, and a quarter's worth of understanding, affection would grow through the years.

If the parents have affection, one of the rules in the family can be that no one is *ever* to quarrel or bicker with anyone else That rule is not hard to maintain if the example comes from the top.

6 The general tone should be kindly cheerfulness. There is no such thing as the "dumps" in families where everyone pitches in to help the one who, because of some outside factor, needs a lift Such a home is the place where, when you need a lift, you'll find it.

Here again the example is set by the top brass If the parents never get crabby at one another, or allow themselves the misery of feeling lousy and mean, a rule in the family can be that no one is to engage in this nefarious activity.

7 Discipline should be reasonable, firm, yet pleasant. Parents in unhappy families probably will not believe this, but in a happy family there isn't much call for discipline. Misbehaving children are unhappy children If the children are provided with a happy, pleasant atmosphere, two-thirds of your disciplinary problems disappear

Children must be taught certain fundamentals, like respect for others' rights and for others as individuals. They should be taught to respect their elders, they should be taught the advisability of not flouting convention and living well within the law. Honesty and integrity are absolute requisites

There will be times, of course, when discipline will be necessary Then discipline should be based on the reasonable ground that we act thus and thus because that way of acting is for our own good, and we do not act otherwise because it is bad for us and bad for those around us. This basis for action can be explained just as well in a pleasant, well-meaning manner, it adds nothing to do it in a fit of splenic anger. For a wrong action there should be corrective explanation, and then a disciplinary measure carried forward without wavering or retracting. Punishment twice for the same offense will hardly ever be necessary.

8. The family should instill confidence into its members. It is important that the family should give the child a feeling of confidence — not only confidence in financial security, even if it isn't there, but confidence in his place in the family as someone who is respected for himself and as someone who has an important responsibility in contributing to the welfare and enjoyment of the family. No child, however awkward or backward he may be, must be made to feel that he is any less useful or important to the family.

Thus a basic psychological need is satisfied and a step in the development of an important aspect of maturity is made.

9 Mutual enjoyment in the family – right now. An indispensable idea in the family is that family living is a series of mutual enjoyments – every moment and RIGHT NOW. It means mutual enjoyment to its members, a pleasant quip or a jolly phrase when father passes son in the hall, or when Mary comes into the kitchen with mother The family means mutual enjoyment, the glad word, the bit of fun, the happy smile – RIGHT NOW

RIGHT NOW, of course, "What are we waiting for — why wait — this is the time — right now — right now is the time to show affection — now is the time to operate the Family Enterprise — this is the moment — why wait any longer?" It is perfectly all right to plan for the future, but don't spend your present in the future

### ▶ How Does Your Family Rate?

Stop right now and ask yourself, "What kind of a family do I belong to?" Is it the kind of an enterprise that is producing the wrong kind of emotions, functional disease, personal maladjustments, and unhappiness? If it is, be fair to yourself and admit it

Then take the next step Set an example

And the next step Hold a get-together with your wife or your husband, include the children if they are old enough, and talk this over, lay plans to have the kind of a family where, when your spirits are low, you will be sure to find a lift.

### THE IMPORTANT POINTS TO REMEMBER IN CHAPTER 10

Your family will become a center of good, happy living, and an influence for maturity and emotional stasis in its members, if you introduce into the family these things:

• 1. Simplicity in living, and simplicity in enjoyment.

- 2. The idea of the family enterprise.
- 3. The idea that the family is part of the human enterprise.
- 4 A family attitude for turning defeat into victory.
- 5. An atmosphere of affection, mutual respect, and regard.
- 6. A general tone of kindly cheerfulness.
- 7. Reasonable, firm, yet pleasant discipline.
- 8. A feeling of mutual confidence and security
- 9. An atmosphere of enjoyment RIGHT NOW.



# II.

### HOW TO ATTAIN SEXUAL MATURITY



There is one very important spot in human living in which people's education has been either nothing at all or worse than nothing at all. That spot, of course, is sex

More people show immaturity in their sexual life than in any other field of human activity. That is why doctors see so many people whose emotional stress is intimately related to immaturity in sex and sexual matters. There are a tremendous number of people who have made a mess of sex, or sex has made a mess of them.

Maturity in any field has to be learned. How can you possibly blame anyone for an immaturity in sex when no sensible effort is made to show him how to become mature? Where but on society and its institutions responsible for education—the family, the school, the church—does the blame rest for sexual delinquency, sexual stress, sexual mess?

### ▶ Biology and Civilization

The sex instinct is a relatively weak instinct compared to

some of the others. The biological urge for food is much stronger, and so is the desire for security A person can go for a long time, even for a lifetime, without satisfying the sex urge, but no one can stand food and security deprivation very long

The relative insignificance of the sex instinct is further apparent in the fact that the cooperative effort we call "civilization" is mainly an attempt to supply food and security, not sexual satisfaction. Had the sex instinct been the strongest and most demanding of our biological urges, civilization would, doubtless, have been patterned to supply sexual satisfaction.

The biological urges being what they are, and civilization being the kind of thing it is, everyone can be allowed to be promiscuous in eating, or promiscuous in developing security, but it became apparent thousands of years ago that the very basis of civilized society would be destroyed if everyone were to be allowed to be promiscuous sexually. The social and economic consequences of complete sexual promiscuity would be simply catastrophic.

The restraints are necessary. Granting that we want the economic benefits of a cooperative enterprise like civilization, we have taken the only course in regard to the sexual instinct that we possibly could have taken That course has been to put the sexual instinct into well defined shackles of restraint. And that is what provides our sex problem.

The only way to shackle a thing as fundamental as a biological instinct, without upsetting the individual, is to develop a good educational process for showing the individual how he can possibly manage the instinct within its shackles But civilization had to curb the instinct long before it developed wisdom enough to devise an educational process

Is it any wonder we have the trouble with sex we do? You've got to be careful how you put a cork in a bottle of highly charged liquid. Either the cork will blow out or the bottle will burst.

The more you study a tough problem like sex, the more you become amazed that we human beings get along as well as we do, and the more you become convinced that the bunch of us are pretty remarkable little people. The whole race muddles through.

## The Sex Urge Is Not the Mainspring of the Human Being

Sigmund Freud and the psychoanalysts have developed the idea that sex is the mainspring of the human personality. It is true that sex causes a great deal of trouble for people for the reasons set forth above, but not because it is the mainspring It isn't. Sex is, as human biological urges go, a relatively little spring that has been jumping all over the box. It is a spring that has been jumping all over the box because of these factors.

- 1 Every person is equipped with the sex urge
- 2. The structure of our civilization makes it imperative to curb this urge to a very considerable extent, so that it still serves the purpose of reproducing our kind without upsetting social and economic structures
- 3 Although society makes such a curb necessary, society makes no organized effort to show people how they can handle their urge without trouble to themselves
- 4. There are numerous agencies, within society, deliberately fanning up people's sexual desires, largely because they find it profitable to do so

Many commercial enterprises capitalize on shaking up the fizz in the charged bottle. These efforts to shake up the fizz have never been as prevalent as they have been in the last fifty years, and are one of the chief reasons why one out of three marriages is ending in divorce.

Commercial advertising, newspapers, magazines, movies, television, find "cheesecake" attractive to the unrequited yearnings and earnings of a sexually-uneducated public. It

helps roll the dollars in, but is hard on those whose excited sexual desires get them into emotional or legal trouble.

Some youth (or immature adult) who is having trouble trying to adjust his sexual inclinations opens a magazine (any of our better weekly magazines) and he finds stimulating "cheesecake" on every other page. The sexual longings that he has been trying to stifle are freshly stimulated, his imagination is stimulated, and a fresh set of stressing emotions are stimulated. If he stops there, the youth (or the immature adult) is just plain lucky. He may go on to get into trouble.

#### ♦ The Popular Brand of So-Called Sophistication Is Immature

"Sophistication" has become a popular concept in midtwentieth century United States A person is not in the mode if he is not "sophisticated," by which is meant a varying degree of looseness concerning sexual taboos. There are, of course, various levels, or depths, of sophistication, beginning with sexy stories in open mixed society (the more shrickingly daring, obviously the more sophisticated) and progressing in ten easy lessons to situations of grossly illegal intimacy, in which the intimacy gradually becomes rancid and the illegality ever more bitter.

The philosophy underlying sophistication assumes that sophistication is sexual maturity — maturity in the same sense we defined it in chapter 7, namely, that maturity is the capacity to handle human living with a minimum of trouble and a maximum of enjoyment

There are two distinct parts to the philosophy of sophistication. Some people subscribe only to the first part, others go along with both parts

The first part states that treating sex as an unmentionable human misfortune, to be regarded definitely as a sordid affair to be admitted reluctantly even into marriage, is merely to increase the amount of misery that the tromped-upon sex urge can produce This first part of the philosophy of sophistication is, doubtless, correct. I am in full accord with it.

The second part of the philosophy of sophistication is that sex constitutes a major sport that is always in season, that licenses are free, and the game is to be pursued through all the byways of so-called romance

This second part is a gross error, as most of those discover who have to learn the hard way Almost without exception, the apple that is picked turns out to be much less of a pippin than it seemed to be on the tree, and worse still, it contains a large worm of discomfiture. The miscreant realizes too late that it is much easier to stay out of trouble than to get out of it once he is in it.

### **♦** The Trouble with So-Called Sophistication

A person who has strong sexual urges that he represses and denies can develop a severe and serious, acute and chronic, anxiety state But the person who resorts to the liberation of "sophistication" will suffer equally severe anxiety states. He can bring himself, as I shall show you in a moment, to the brink of considering and committing suicide There is no anxiety state more advanced than that.

Even short of the state in which suicide becomes a consideration, the devotee of "sophistication" has other anxiety backgrounds. Being apprehended by the law, or being dragged before a court is neither the major trouble nor its culmination. There is the personal degrading effect of lying, the constant fear of apprehension, the feeling of guilt. Then there is the broken home, or worse, a home in which things are not going smoothly, or still worse, a home in which growing children are being brought up in a poor atmosphere

What a silly, foolish, "sophisticated" adult does to himself is to a considerable extent his business, but it leaves the realm of private affairs when children are ruined for life because their family gave them wrong emotional patterns and habits Even the sophisticate acknowledges the futility of "sophistication" when he has arrived at the point where he is ready to jump from a bridge or reach for a pistol. No system of action is mature or good that can possibly bring a person to the brink of suicide And "sophistication" can Let me give you a couple of examples.

### Anything That Can Lead to Suicide Is Best Omitted

Richard Roe was a smart, quiet fellow At least he thought he was He meant no harm to anyone He was a good husband, and a good father Also, he didn't intend to be exactly mid-Victorian Well, you know—it wasn't infatuation for another woman—not that kind of "triangle" thing, just an arrangement with a person of the other sex who, too, wasn't exactly mid-Victorian, but, shall we say, merely modern or advanced

Richard carried on for a long time without anyone being the wiser (not even Richard) He thought, "This isn't hurting anyone else. I wouldn't want it to." He met the girl in various ways, at various places

Then one night they were at a motel they had often frequented. The manager suspected an irregularity and intercepted the couple in the midst of a tryst Richard had registered under an assumed name as husband of the lady. He was in a legal "spot" In fact, he was in a hot spot. He and the lady left before the police could be called, but the manager had secured his right name and address

For two days Richard sweated He came to see me because of indigestion—and told me his trouble. In addition to a physician, he had gone to a lawyer, too

Believe me, there was a miserable man He was trying to stave off utter and complete disaster. Mind you — utter and complete disaster. Mind you — utter and complete disaster For two days, Richard was as miserable as any human being could be Physically he felt terrible, and he needed medical aid.

On the third day the motel manager filed his complaint,

at ten-thirty, Richard was given the summons; at ten-forty-five Richard had put a bullet through his head

The newspapers did not print news of the summons. They printed news of Richard's death. The reason why Richard died never got out. The family honor was saved. Richard was not Richard was dead.

Doctor Mac, let us call him, was a nice sort of a guy, until he decided to give in to the urge and look at life in a broad, serene way (Without any malice, you understand, but why shouldn't there be a little fun? After all, there are the Kinsey reports)

So he made advances and the affair went on, until his accomplice became pregnant. Seeing the commercial value of her situation, she refused to let the doctor perform an illegal abortion (she would have had him there, too) but threatened him with suit.

The woman had come to me for examination when she thought she was pregnant, and told me the story in a boastful sort of way Doctor Mac faced complete ruin — the suit would have thrown things wide open, of course. But more than that, in the state in which Mac lived, immoral conduct would cost him his medical license to practice Knowing that the woman was just as responsible for the affair as was the doctor, I tried to talk her out of her intended law suit She was too silly to listen.

On the first inkling that she had seen a lawyer to start a suit, Doctor Mac committed suicide by taking arsenic Everyone thought he died a natural death I never saw the woman anymore, but I read of her drowning a month later.

## More Often, the Trouble with Sophistication Lies This Side of Suicide

Alwin had been a pretty stable fellow and an astute businessman. Then he came to my office with something obviously functional. He tried to act his usual self. He swore he

had nothing to upset him or worry him. His trouble became more acute and gradually took a new course. He was apprehensive and worried, which was unusual for him. I told him he wasn't fooling anyone by playing anxious-free, and jokingly suggested he was having an affair. Whereupon, he unfolded a lurid tale. He hadn't met any legal noose, like Richard or Mac had, but he was worried just the same.

### It Is Easier to Stay Out of Trouble Than to Get Out

The point in all this is, why start out on a track that can lead to a spot where suicide becomes a serious consideration, or, short of that, a course that can result in serious emotional illness?

There are communities in which sexual irregularity has become so accepted that discovery is not often attended by anything as drastic as suicide. But I know from personal conversations with the doctors in such areas that functional illness holds a terrifically large place in the lives of the people in these communities.

### • Other Forms of Sexual Immaturity beside "Sophistication"

I have talked about "sophistication" first because so many people mistakenly consider it to be sexual maturity. But there are other forms of sexual immaturity that produce much more emotional stress than does "sophistication"

A doctor's office during the course of a year sees many people with emotionally induced illness because they have brought sexual immaturity into marriage. Less often we see young people, or unmarried people, to whom sexual immaturity is also a source of emotional stress.

### ♦ Sexual Difficulties before Marriage

Youth is as innocent in the awakening of his sex curiosity as he was in his desire to eat, but the attitude of his elders

makes the whole business seem at once bad and yet darkly inviting and mysterious. He is ordered to abstain, and then subjected to numerous varieties of sexual suggestion. Finally, the intimacy and privacy necessary for experimentation are only as far away as the car in the family garage. It, of course, isn't, and wasn't, even in the horse and buggy days, anything like a good or a healthy set-up

Then we add the final spice, which is that, owing to economic circumstances, marriage must be delayed ten or fifteen years beyond the awakening of the urge

Here is a spot where a little planning by society, or the development of an educational method, would be an excellent thing. As it is, the advice these young people get is pretty poor and misleading stuff.

Youth's sexual urge leads them in one of three directions First, the youth may be lucky enough to have someone with the necessary amount of good sense steer him, or her, in the less troublesome direction

Secondly, they may break down the barriers and experiment with sex, possibly they may break down the barriers forcibly and come up for assault or murder. If they cross the barriers amiably, they precipitate themselves into the types of trouble we spoke of above. Thirdly, they may take masturbation as a way out.

### Masturbation Is Often the Source of Poor Emotions

Many people come to the doctor with emotionally induced illness because they are worried and apprehensive over a strong unconquerable habit of masturbating.

For instance, a twenty-eight-year-old single woman had tiredness, headaches, and a long string of symptoms because she was sure that her habit of masturbating was wrecking the foundations of her health. Her symptoms had become more severe after she found and read an old family health guide in which the writer stated that masturbation is invariably fol-

lowed by such dire physical consequence as sterility, tumors, heart disease, cancer, and insanity. The author of that article was a far more enthusiastic moralizer than scientist, it fact which the poor lady did not know. She felt that she had all the physical degeneration described by the author, and she was certain that her mind was going too. She had arrived at the point where she was unable to do her usual work.

There is another variety of poor emotions that result from masturbating, that are even more prone to produce E I I. These emotions arise because masturbating causes the individual to withdraw into himself and into a dream world of his own making. He develops introvert tendencies, lives in social isolation, and prefers to live in his world of dreams and fantasies. As a consequence, he lacks effectiveness in the real world, he lacks decisiveness, he staggers along through life, unproductive, unhappy, and alone. His emotions are predominantly brooding, regretful, and generally unhappy. He or she presents a sad regressing picture.

To put it simply—masturbation is immaturity. It is a childish way of satisfying one of the basic needs. Just as with other forms of immaturity, it is bound to be unsuccessful in a world which calls for maturity.

### Sexual Perversion As a Source of Poor Emotions

There are, of course, people made miserable by the guilt, the difficulties, or the stigmata encountered by following one of the many types of sexual perversion, of which there are 14 or 15 different varieties, the most common being homosexuality. Sex perversions are evidence of deeply-seated personality difficulties that require individualized treatment

Consequently, we will dismiss further discussion of the perversions in this book, except to offer assurances to the reader that boys and girls whose lives are rich with outside interests, who have had good training at home in thinking and acting carefully and critically, do not develop sexual perversions

Nor need parents be afraid about the danger of their sons and daughters coming in contact with homoerotics and thus being misled into unnatural sexual relations. Careful investigations disclose that the individuals who take up homosexuality were definitely homosexuals before they met their seducer.

Another misconception that requires correction is that it is the man who is markedly feminine, or the woman who is markedly masculine, who are most apt to be homoerotic. There is not the slightest connection. The male homoerotic is just as apt to be the athletic masculine type, and the female homoerotic a perfect feminine type. The unfortunate feminine man and the unfortunate masculine woman have enough of a handicap without adding this misconception.

### Sexual Immaturity in Marriage

Sexual difficulties in marriage are extremely frequent, extremely provocative of emotional stress, extremely apt to start the schism that leads to divorce, and are always caused by sexual immaturity on the part of one or (usually) both the partners. There are many varieties, of course, of sexual difficulties in marriage, and we can mention only the most frequent here

The difficulties start most often on the honeymoon, which to most newlyweds is the end of the dream world youth paints of the marital state. The usual experience on the honeymoon is that the boy and the girl find that it isn't as wonderful as they thought it would be, and they blame each other. If the boy and the girl can overlook the first years in which their experiences are vaguely somewhere between success and failure, they may find at the end of 30 years that the experience can be the rainbow they found it wasn't on their honeymoon

Most young men, when first married, have the imagination of rabbits, the romantic capacity of sloths, and the sexual technique of oysters. When you mix this combination with the

fears, the discomforts, and the misinformation which the girl has accumulated, you end up with nights filled with horrible experiences

If a fair amount of maturity exists in the couple, such as sympathy, understanding, comradeship, and good-will, all may not yet be lost and the marital craft may yet be rescued before it flounders. But with many couples, who have no maturity in other directions to save their sexual immaturity, the disillusionment of the beginning grows into the final break of the end.

When sexual immaturity brings one, or both, of the partners into the doctor's office with E I I, it is very apt to center around frigidity in the woman. Over 40 per cent of the married women I see in my practice get no sexual enjoyment out of their marriage, and provide little enjoyment for their husbands. Wife happy? No — miserable Husband happy? No — just as miserable

Frigidity is most often the husband's fault. Much of this frigidity on the part of the wife is not her fault, but is due primarily to the clumsy, selfish technique of the husband, not merely in the first delicate experiences of marriage, but forever after

As many women put it, "He has not thought of anything but his own wishes. He leaves me cold and disgusted. Now it only makes me nervous I hate the whole thing"

You will always find that these husbands are immature children in other aspects of living as well as in sex. Mentally, their maturity stopped at age eight, physically, they went on to develop hair on their chests. Many an otherwise excellent girl has been precipitated into chronic illness and chronic unhappiness by this common variety of inept and immature husband. Even though she may try to meet the situation philsophically, the situation proves to be too difficult.

Frigidity may be the result of faulty education. In a relatively smaller number of women, such frigidity is sometimes the result of poor sex education in their childhood Rose, for instance, was the unusually attractive daughter of a family

that lived in a tough part of town Because of the bad influences of the neighborhood, the mother stringently indoctrinated the young Rose against the entire matter of sex, scaring her on the entire subject until Rose had the idea that sexual intercourse was far and away the worst experience that could ever befall a woman, that it was, in fact, worse than death Rose never did know why or just how she ever became married Marriage for her was a hateful, hideous experience. After bearing two children, conceived in utter agony, Rose added the fear of another pregnancy to her already unwholesome sex outlook. She developed an intractable ulcerative colitis and has spent years in and out of hospitals

Frigidity in the wife is an important cause of yet another grave marital difficulty—unfaithfulness in the husband. As one English Earl remarked, he greatly preferred to have his romantic efforts returned by the appreciative and enthusiastic embraces of the chambermaid than to suffer the reluctant frigidity of the Countess. Every man, earl or no earl, is made of the same material

Appetite is not the same in both partners. Another common source of difficulty in marriage is a failure on the part of the partners to recognize the usual difference in sexual appetites in man and woman. In general, men are moved by the sexual instinct more frequently than are women. Unless this difference is appreciated by the partners, and each tries to meet the difference at least half way, irritation, disgruntlement, and deep displeasure are bound to result. This common situation can be avoided only if each has enough maturity to appreciate the individual needs and desires of the other

There are many other varieties of difficulties arising in the complex relations of marriage. We are not going to review them, but deal with them merely by saying that they all, without exception, result from immaturity, and are all to be corrected by developing maturity.

## Sexual Maturity

Sexual maturity begins with the attitude that sex is not bad in itself, and, when rightly used, will enrich life and add materially to the pattern of enjoyment

The phrase, "rightly used," is the key to the whole business.

First, "rightly used," means acknowledging the existing restrictions on sexual activity as a necessary and a good thing so long as people are trying to continue the social and economic projects we call civilization Obviously, to keep out of trouble, sex had best be used within the legal limits, that is to say, only in the married state. This is the one side to maturity — minimizing trouble

Secondly, "rightly used," means developing the capacity to make the sexual aspect of marriage a satisfactory, complete, and constantly finer experience for husband and wife. This is the other side of maturity—developing the capacity to handle living for maximum enjoyment.

The first meaning of "rightly used" concerns chiefly the person out of wedlock, and the second concerns those who are married

## **♦** Handling Sex Before Marriage

As far as a sex program for youth is concerned, an excellent, or even a good, solution does not exist. The best that can be done to help youth is to mobilize a few factors in their behalf that will help tide them over

The first thing we can do for youth is to be frank about the whole business It doesn't do to tell these young people they have no problem, or to imply that if they have, it is of their own making It is best to lay the cards on the table, and admit their elders had the same problem—and for them, as for youth now, the fact is that before mairiage, there is no altogether satisfactory answer. Then we should try to make it clear that marriage is a satisfactory answer only if personal

qualities of maturity can be developed before they get married.

The second help is not to insist, or even to imply, that the sexual urge should be forced out of mind. Instead, the youth's mind should be given interests and urges, important and lively enough to take up a good portion of his time, interests worthy in their own right of demanding the best the youth has.

Ways to help control the urge. Such urges are the urge to become proficient in a sport, adept and skilled in a handicraft, socially accepted and liked, capable of adding a desirable skill to the community enterprise. Not only will a wealth of such pursuits serve to enable the youth to forget much of the time that he is a sexual animal, but it will also develop the maturities so necessary to his future.

General mental maturity, the capacity to think, is the best step toward sexual maturity. A family which gives the youth a sense of belonging to the family enterprise, an education that gives the youth a keen sense of being a part of the human enterprise, a good mind with generally sound ideas — these are the best measures for sublimating the sex urge to a distinctly secondary level. Such a sublimation of interest and such a development of new urges must be provided, principally by the family, and also by the schools, churches, and by youth centers.

The need for youth centers is usually underestimated by our communities, and when the youth centers are provided, it is often in too niggardly a fashion. A good youth center in a community, designed to give youth high interests in their off-hours, is the most important organization outside the family Any community with the interests of its young people truly at heart can much less afford to be without a youth center than it can afford to be without paved streets or a municipal water supply.

A youth center is in the nature of a necessary public utility which only the municipality can provide

The third help is for adult society to fan the sexual flames

of youth as little as possible. It is entirely laudable to lift sexuality out of 19th Century prudery, but it is still necessary that parents, teachers, psychologists, and psychiatrists take pains to point out to adolescents the dangers of "petting"—the danger of excessive sex stimulation under conditions which do not provide for its proper gratification

One sees high school teenagers, either regrettably pregnant, or what is almost worse, with wrong emotional habits resulting from petting, which will give them lifelong nervous difficulties. If young people are to be overstimulated by sexy literature, sexy movies, sexy stories from their elders, plus the opportunity provided by the family automobile, their elders should not be surprised when they seek a natural outlet for their sexual tension. By and large, our society is dealing youth a wretched hand, and then asking them to play a good game. The pay-off is apparent in present-day divorce rates and marital difficulties. For the foolish things people do all the people pay.

### Sexual Maturity in Marriage

Lamentable as poor handling of sex may be in the premarital individual, it is even more lamentable when sex produces clouds of wrong emotions to a married couple, as it does with great frequency.

In marriage, as in adolescence, general maturity is the best guarantee of sexual maturity. The same sympathy, understanding, and willingness to cooperate that stamp maturity in general are absolutely essential if marital sexuality is to be something other than a source of trouble and internecine strife. The golden rule of sympathy, understanding, and kindliness must be the basis of marital sexuality, just as it must be the basis of mature social ethics. Most people at the time of marriage have for each other the feeling we call affection. Affection is entirely essential, but unless it is augmented by the golden qualities of sympathy, understanding, and kindliness on the part of both marital partners, it will

soon be replaced by remorse, disillusionment, bickering, and dissatisfaction.

Sex must be a mutual delight. The sexual relationship in marriage should be a truly cooperative enterprise in which neither wishes to derive pleasure at the expense of the other, and each is more intent in providing the maximum enjoyment for the other rather than for himself. They learn that finding pleasure in each other is a much wider thing than sex, and includes many more things than sex, but in which sex is an important factor.

Creating a mutually enjoyable experience becomes the object of each, and no rules apply except that whatever is done be good and pleasant to both, and enjoyed by both.

When two married people are personally mature together, sexual married life consists of mutual appeal and response, offer and acceptance, enticement, surprise, suspense—all achieved by constantly shifting aggressiveness and passivity, activity and relaxation on the part of each partner.

To two such people the pleasure to each from pleasing the other becomes so intermingled with the pleasure of being pleased and of knowing that the partner is pleased and wants to return the pleasure, that their two personalities become indistinguishable and become truly one through the years.

Each shared pleasure reinforces and builds up a long series of potentially limitless shared experiences of ecstasy. The physical and mental components of pleasure react and enforce each other Such married partners become more and more indispensable to each other. No marriage can be a successful enterprise in which there is not such a sexual unity.

Egocentricity and selfishness are the childhood arrests that most commonly make a mess of marriage. The only person capable of true affection is the person who can forget himself and his own immediate interest while he places the welfare and interest of someone else foremost. When both husband and wife can do that, they will have no domestic nor sexual trouble.

Assuming now that both marital partners are capable of working for the other's welfare, the stage is set for marital success

The next quality to maintain in the family between husband and wife, and later between parents and children, is the idea that TODAY, RIGHT NOW, we are going to be cheerful and pleasant and make living enjoyable Quarreling and fighting and bickering are permanently and completely out of the picture because they accomplish exactly nothing. Under no circumstances are they justifiable.

The "value" of "blowing your top." There is a school of psychiatrists who think that "blowing one's top" is a good way to work off something bad. This view is held mostly by psychiatrists who cannot control their own tops. There is nothing to it. Blowing one's top serves no good purpose, one blowing more firmly sets the habit for the next blowing. If both husband and wife are given to blowing their tops, something usually cracks sooner or later, such as patience, affection, or the standing invitation to cooperate. Children blow their tops, it is a childish adult who finds it necessary to do so.

Marriage should and can be based on this fundamental assumption. "We can make life more enjoyable for each other by living together; neither of us has any right to make any moment miserable for the other." That becomes a perfectly simple, satisfactory, and practical formula if husband and wife each have about a dime's worth of sympathy, understanding and good-will

In such an atmosphere, the sexual side of marriage becomes a growing experience that constantly makes each more indispensable to the other; sexually their experiences are as cooperative, sympathetic, and understanding as are the other aspects of their life together.

Young married couples should know something about the anatomy and physiology of sex Ignorance is the only deterrent to human possibilities. When I see young couples going afoul in marriage because their sex life is going sour, along with their other marital enterprises, I refer them to a sensible and concise discussion of sexual relations such as Sex Manual by G. Lombard Kelly, MD\*, which I advise them to read together. Sometimes it is sex that goes sour first in marriage, sometimes it goes sour because everything else has gone sour.

When a marriage gets sour, the first thing for wife and husband to do is for each of them to bring cheerfulness and pleasantness back into their attitude toward the other.

#### KEY POINTS TO REMEMBER IN CHAPTER 11

The individual's sex problem consists in adapting his biological urge to the restrictions imposed by society Society has imposed the restrictions, but hasn't taken the trouble to teach the individual how to make a mature adjustment. Maturity and emotional stasis in sexual matters boils down to three rules

- 1. Tell yourself, in no uncertain terms, that in matters
  of sex you are going to play the game according to
  the rules. It is easier to keep out of trouble than to
  get out of it once you are in it. For all-important
  reasons—legal, moral, social, economic—sex must
  be confined to marriage.
- 2. The successful sublimation of sex in the unmarried person (or in the married wolf) consists in providing the individual with interesting, absorbing, and vigorous activities, and in helping him mature in as many other departments of living as possible.
- 3. Sexual maturity in marriage is dependent on developing the qualities of general maturity, especially sympathy, understanding, unselfishness, cooperativeness and affection.

<sup>\*</sup> Published by The Southern Medical Supply Company, Augusta, Georgia This book cannot be secured without a prescription from a doctor



# 12. WHAT TO DO WHEN YOUR WORK IS GIVING YOU THE JITTERS



## ▶ The Emotional Stress of Our Industrial System

Never has the civilized world had the wealth of useful goods and materials that our present-day industrial system provides That, of course, is a wonderful benefit and help to all the people

But never has a method of production inflicted on its personnel such a flood of disagreeable emotions as does our present day industrial system. This, of course, is a primary source of unhappiness and emotionally induced illness for a great many people

When the industrial system began in England, it was the laborer in the sweat shops who had most of the bad emotions provided by the system But today it isn't primarily the common laborer, or the white-collar man at the foot of the ladder, who suffers most emotionally because of the system. The greatest victim is the man at the top, or near the top, who masterminds and manages the system. We see here the operation of nature's balance of compensations

The businessman or the craftsman, before the industrial

age, experienced few of the conditions that in today's world produce tense emotional states in corporation executives, vice-presidents, store managers, sales force, assembly line workers and so forth. The incessant competitive business growth, departmental growth, and the pressure of piece-work, competitive striving, angling for advancement, low-interest, repetitive jobs, are at once the elements that make the industrial system great, and the elements that give men the emotional jitters and emotionally induced illness.

### ♦ The Executive Has Stress

Werner had come up the hard way in the sales division of a company that makes several well-known nationally advertised products. The company was old, and didn't amount to much, until one of its new products made a national hit far above anything even the company heads ever expected. From then on, the board of directors wanted to continue putting out "hits"

Werner, by working around the clock for the company, on a small salary, and having no fun for himself or his family, had achieved a good position in the sales division. Then he was placed in charge of sales for a new product that the board hoped would outdo the original "hit." What an opportunity! Werner thought; and there were opportunities, including the opportunity never to feel physically well again. The board would call Werner in and show him a comparative chart silhouetting him against some more successful department. The board would ask him for a progress report before the expected time. The board would ask for an explanation of a lower-than-expected sales curve. The board would pound its fist upon the table

With every new pressure from the board, Werner developed a new pressure in his upper abdomen and chest After one board meeting he checked his lungs, after another his heart, once his stomach, again his gall bladder.

He was an organ on which the board was playing a dismal tune Even before Werner was made head of sales, he could never brag that he felt fit as a fiddle But after his climb to sales manager, with the heat of the board upon him, he became a symphony of complaints, which included a completely equipped indigestion, finally centering around a perennial full-blown ulcer.

I met him the first time on a train. The poor fellow told me of his symptoms, ending with, "And the doctors don't seem to understand it." That last statement usually means the patient doesn't understand it

Werner worked up a tremendous tension and a diabolical indigestion, trying to bring his product before a reluctant public. Actually, the product he was given by the board to promote was developed 20 years too late. It died a slow, expensive death, and with it, Werner went down in the company, a functional wreck. The effect of the system was exactly the same as if the board had inoculated Werner with tuberculosis. Yet the members of the board considered themselves kindly human beings, they were playing the part of good businessmen, as far as Werner was concerned

Now take a top-flight success from one of the boards - as a matter of fact, he has been on twenty-two boards at the same time - Old H---. He worked, he pushed, he pulled, he got there. But getting there meant holding on, holding on meant advancing with a bunch of enterprising young fellows yelping at his heels There came a steady competitive fight to stem off a reorganization, sleepless nights on which he'd gotten out of bed and walked for blocks, attery spells when he tried to rest a minute on plane trips he took to secure stockholders' votes, finally a blackout when he hemorrhaged from an ulcer that he had, in his frenzy, tried to ignore. He was a great success - he beat the reorganization - he controlled the stock - he was really a great financier But as a man he was jumpy, jittery, restless, constantly nursing an ulcer - himself a financial success, and also a financial success for the doctors.

## The Half-Way Man Has Stress

Now let us look at some of the lower rungs on the ladder. There is no form of modern business management that is more competitive than being the manager of a chain store I've known many of these managers—fine fellows, everyone of them, smart, honest, hard workers. They had to be to survive the rigid screening process they went through to ascend from clerk to manager. But I have not seen a single one who did not have, in the course of his managership, some form of functional disease

Bill went farther than any of the others I ever knew, he finally ended as a manager over ten large districts. We X-rayed Bill four times from stem to stern while he was store manager in our town, to assure him that his abdominal pain and constipation were no more serious than his sour stomach and frequent belching. Every advancement, every move to a new city, was punctuated with more X-rays. The last time I saw him in his plush office in Chicago, he was still belching, still eating antacid tablets by the handful, and I could tell from the occasional wince that strolled across his face that he was still having abdominal pain.

Then take Joe. Joe had been a good man in the brass foundry; so good he was made foreman of 27 men. Then his headaches began, and the pain in his neck and in his chest. Then men above him wanted output; the men below him wanted to loaf. Between them, Joe was in a vise.

## ▶ The Laborer's Job Gives Him Stress

Take a look at the lowly assembly lines. Henry left the farm for the glamour of the factory There he was given the thrill of putting the spark plugs into the engine block as it came down the line. The company speeded up the line. Incidentally, Henry had to speed up too. Then the engineers added two more cylinders, they weren't thinking of Henry.

Henry became more and more ailing. After a necessary leave of absence, he was put on a punch press doing piece work After two years he broke down again Now he's back on the farm. He wonders why he ever went to the factory

A very interesting thing happened in another plant — in one division a dozen men run grinders over sheet metal, producing a piercing terrific noise. I've seen four men from that division with ulcers in the last two years, how many more quit because of stomach trouble, I do not know. You remember that Dr Hans Selye produced ulcers in dogs by subjecting them to a constant piercing disagreeable noise!

## **♦** Worry and Accidents

It's the worried man in industry who has most of the accidents. Attention to the job is interrupted by a train of thought about a disagreeable problem—possibly trouble with the wife at home—possibly worry over the house mortgage—possibly anxiety over a dozen different things—then zingol zip! he loses his hand in a press, or a moving rod pierces his arm Seventy-five per cent of the accidents happen to repeaters.

## ▶ The Pressure Is the Same in All Industry

In every line of modern industry and business, the competitive pressures are the same, probably nowhere greater than in the newspaper game. An editor friend of mine says there is no one on his paper from the editor (himself) on down who doesn't have a few physical complaints. And he adds, "In addition to feeling punk physically, these fellows are fundamentally unhappy, because the pace and the pressures are so great"

## Perhaps Industrial Civilization Is Worth It

What price modern productive methods? What good is

wealth acquired with a raw stomach? Far better a sweet stomach and a modest living But where, in modern business-industry, can you find a sweet living without a sour stomach? The tension of bigger and better commercialism ruins almost every job you can pick up.

Modern business and industry is one of the great reasons for the terrific prevalence of the emotionally induced illness of our time. In certain respects the system is a childhood arrest—it is psychologically immature. At a certain age the child is constantly competitive, pitting and matching himself against all comers, striving to beat his fellows, constantly endeavoring to excel. As a person matures, this competitive spirit melts into a cooperative willingness to share with the other fellow, to give rather than to take Such maturity is frightened off by our present economic Frankenstein

To be mature in this sense, to act with mature decency when competitive striving calls for selfish pushing ahead, means inevitable failure in the kind of system we have Anyone who follows such mature principles as noncompetitive cooperation, a desire to be of benefit to human beings as human beings, a feeling for helping people out of difficulties, can be a financial success only by a most miraculous series of accidents

I know several financial failures, that is to say, men who never succeeded in any business or in any commercial endeavor they ever undertook Almost without exception, they are among the finest human beings I have ever met

## Still, We've Got to Eat

Nevertheless, we do have to make a living Maybe you've gotten your functional illness as a direct result of our business-industrial system. You are going to have to continue living in it and being a part of it.

Then (to yourself) play it as a game, something that's a great big lark, something done because it's ENJOYABLE, not

a duty Play it cheerfully and pleasantly, and don't let the trap of competitive striving catch you

It's barely possible that following this advice, you may never drive a Cadillac, but you'll enjoy eating peanuts and watermelon at a picnic you get to in a rattling good 1937 Chevvy. You may even end up in the poor house, but you'll have a good time getting there, and you'll live to sing at the funerals of the poor devils who beat you up the ladder

#### A BRIEF SUMMARY OF CHAPTER 12

The industrial system, as we know it in this country, is a wonderful provider of human needs. But unfortunately it is also a great provider of stressing emotions to the people who make it run. Great responsibilities, the constant demand for great effort, and the fight to maintain his gains are common stresses of the top executive. The competitive fight for advancement, with its overshadowing insecurity, is the lot of the man on the way up. Non-creative and low-interest jobs with monotonous repetitions bring a deep form of stress to the laborer.

The only good, long-range answer is that industry must gradually humanize itself, as some portions of industry are already trying to do.

For the individual who is caught in his job, the only answer is to try to sneak enjoyment in through the back door, to make himself as cheerful as possible, and to be upset by the irritations of the job as little as possible. He himself must dictate the level of his emotions, not allow the job to dictate them for him

In short, the man who is being crushed by industrialism can put the methods you are reading about in this book to good use.



## 13. MEETING THE AGING YEARS



## ▶ Emotional Stress Increases with the Years

E I I is prevalent at all ages, but it grows more and more prevalent in the declining years of life—the very time an individual should be gliding into a calm, easy harbor, instead of back into the storm. This is true partly because of the conditions and situations that the aging person must try to cope with, on the other hand many people handle age poorly simply because they never handled any part of their lives well The inability grows larger like a giant snowball toward the end.

This increase with age in the incidence of E. I I is a new development in our century. It has come about because aging today is attended by far more stress than ever before in history. For several thousand years the social and economic status of the aged did not change at all, the conditions of the aged in the Fourth century, B.C. were practically identical with those of the Nineteenth century, A.D. Today, the status of the aged is very different from what it was 100 years ago, and, in another 50 years, the changes will be even greater.

The important change in our time has been a tremendous increase in the absolute and relative number of people over 65. In 1900, one person in twenty was over 65. Today one in eleven is over 65, and by 1980, it will be one in seven

## \* "Senility" Is Often E. I. I.

The functional illnesses of age may be any of those of earlier years, but they tend to assume one similar pattern because the prevalent emotional picture in old age is insecurity (of finances, of health, of the future), apprehension, disappointment, discouragement, and so on

These emotions, you will remember (Chapter 3), are the ones that stress the pituitary to produce the somatotrophic hormone (STH) with its attending joint, arterial, and kidney effects In other words, STH effects are degenerative effects

We have no way of judging, as yet, just how much of the degenerative disease of the aged is emotionally induced, but probably a large part of it is. Without the degenerative diseases, which are so chronic and slow and debilitating, the aged person would go along smoothly and fairly vigorously to a happier and more kindly end.

It is important to note that the group of people over 65 is the *only* group whose life expectancy has not increased since 1900. At any age up to 65, you can expect to live longer than an individual of the same age in 1900. But after 65, you cannot expect to live longer than a person of the same age did a hundred years ago. This holds in spite of the fact that practically no old person today dies of pneumonia or other infection, and in spite of the fact that people even with some of the degenerative diseases, such as heart disease, can be carried on for years longer than might have been possible even 20 years ago. It can mean only that degenerative disease has been accelerated in our time, and the cause of the acceleration is an increase in emotional stress

At first sight, it is hard to believe that much of what we

regard in the aged as natural deterioration is actually E. I. I. But let me give you an example that will illustrate the truth of such a statement.

George W\_\_\_\_\_ illustrated perfectly the way in which the emotions characteristic of old age produce degenerative disease, and how a change toward the right kind of emotions will produce a reversal of the degenerative changes. You have to see this sort of thing to believe it

I was introduced to George by his physician, Dr. K. M. Bowman, a well-known San Francisco psychiatrist George, at 83, was working on the stage of the theater in the San Francisco Municipal Home for the Aged. He was the stage manager, and he was getting ready for a production the people of the Home were putting on that night George was as active as a good man of 60, and you could tell he was greatly enjoying his work.

"George," Dr Bowman said, "Hold out both your hands" George did. There was a slight tremor in them, especially in the right, but it didn't amount to much.

"How bad did you shake two years ago?," Dr Bowman asked

George demonstrated with a terrific wobbling of both hands

"He isn't exaggerating" Dr. Bowman said

Then he told me the story. When he had first seen George two years before, George was hving with his son and daughter-in-law. He had been bedridden for six months, he shook so hard he had to have help in eating, he was so weak he couldn't take care of his own toilet

George had been a stage manager on Broadway in his prime. He was a master at his work, one of the best in the business. He had one child, a boy, who moved to the West Coast when he became of age. When George was 48, his wife died. The theater business was declining, some of his shows went sour For a number of reasons, George began to drink, and he lost the job he had had for 23 years. From then on, he

went from job to job, occasionally managing a small, obscure stage, but usually just a common stagehand.

At 72 he was destitute, and his son sent him enough money to come to San Francisco. There George lived with his son, to whom he had become almost a stranger. His habits were not too tidy; his ways were not those of his hosts. I suppose at first his son and daughter-in-law had intended to make the old man happy. But the relationship, especially on the part of the daughter-in-law, became one of belligerent and bare tolerance. George knew he wasn't wanted. The city was new to him, he had no friends there, there was no one around the few legitimate theaters who cared to talk to him. So George began to ail, his degeneration became more and more rapid, and it was not too long before he was in bed. They had a doctor once or twice. The doctor called it hardening of the arteries and senile debility.

Then Dr Bowman chanced to see him. He examined George and said, "We're just finishing a new theater with a fine stage up at the Municipal Home for the Aged, and we need a stage manager from Broadway. I'm going to take you up there"

George was excited, but he didn't think he could ever get out of bed again. His son and daughter-in-law were even more dubious, but secretly they were happy to have him move out of their care

He was moved in an ambulance, and carted out to the theater stage in a wheelchair. In two weeks he was walking out, and, in another two, he was as active as an old tomcat. He improved rapidly after that.

Around the Home, Dr. Bowman showed me at least eight other people we just chanced to meet who had stories of a reversal of their degenerative disease just as remarkable as George's

The demonstration that degenerative processes in the aging can be the result of emotional stress as well as "natural semility" requires a laboratory—like the San Francisco Municipal Home for the Aged. In the average community there

is usually little chance to reverse the stressing situation which is producing the degeneration of the aging person

The San Francisco Municipal Home for the Aged has that necessary difference most homes for the aged do not have One of the best contrasts is afforded by the unimaginative, expensive depositories being built in so many counties for the aged. The central idea of the San Francisco Home is that it is a community of elderly people, run by elderly people. The bookkeeper, the vegetable purchaser, the engineer, the plumber, the stage manager are residents who are old hands at their trade. The Home aims to be self-supporting in a financial way, in a recreational way, and in an essential-service way

## ♦ What Getting Old Today Means

Don't think that getting old today is the same kind of thing that getting old was 50 years ago. Times change, and so do the factors that the aging have to contend with

Financial insecurity. First is the matter of financial security How well off are you, or how well off are you going to be at the age of 65? With the depreciation of the dollar, which means lower annuities, with the high tax level, with the hesitancy to employ people older than 45, more people than you think are not going to be self-sufficient at the age of 65. The average family today, maintaining the standard of living that everyone has become accustomed to, is just barely able to scrape along, let alone save. We always think that next year we will start to save The only person who doesn't procrastinate with saving is the financier, or the banker, or the insurance salesman. Don't envy them. They have other problems that give most of them severe functional disease.

One third of people over 65 have no income whatever of their own, and 75 per cent have an income of less than \$1000, including old age assistance. At least there's the Federal old

age assistance, you say (if you're under 50) Thank somebody for that. That, at least, is the difference between eating something and eating nothing, between sleeping in a bed somewhere and sleeping out in the park. Would you (supposing you are 40) like the idea of having to go on "relief"? You can bet your last dollar you won't like it any better when you are 65

Job insecurity. The last resort of the scoundrel is to suggest, "Why doesn't the old fellow get a job?" The scoundrel doesn't appreciate that in the present labor market it's getting hard for the fellow over 45 to pick up a fresh job

Here is a man of 60. He is a skilled tool maker, his accident liability is considerably less than a younger man's, his absenteeism will be definitely less, his dependability in a pinch will be greater, he will be less aggressive in fomenting labor trouble. Yet he can't get a job, even though a doctor would pronounce him physically fit. Why can't he, why can't the others of 60 or over—no, let's say 50 or over—get a job so that they might support themselves?

Because, being a vigorous young nation, we worship youth and slight (that's a mild term) old age Old age is regarded as a regrettable incident, necessar (God forbid) for others, an incident which we hope will not be prolonged beyond reason (which isn't long), an incident which will be as troubleless to the younger members of the family as possible (somehow they cannot see themselves at 65).

The older man doesn't get a job. Some efficiency expert found the younger man more dextrous, turning out more parts for the company He didn't stop to think that the older man was putting something human into the company, he didn't know that something human in a company would be worth more than lucre He didn't find out that the company would be still making enough for everyone (including the stockholders and management) to live

The insecurity of children's indifference. There's the matter, for instance, of changing family sentiment regarding the aged. I can remember the time when "Honor thy father and mother" was taken seriously. If it was the last thing they were able to do, the children felt obliged to see that their aging parents were well cared-for.

Today it is usual for children to stand by without emotion (except a sigh of relief) and see their parents placed upon Federal aid, or if the presence of their elders becomes irksome, it is quite satisfactory to see them placed in a nursing home. This has gradually become the attitude that is acceptable to the society in which we live. It is not going to be changed for decades, if ever

But the truth is that it's terribly hard on the old folks. They remember when these same children had to be fed, had to be protected, required long hours of their time and care. And the compensation is to be set aside as though they had never mattered. For these children they lived. What has it brought them? These children they loved. Now who returns any love? There are plenty of people, don't you fear, who have broken hearts (that is to say, severe pituitary stress) because they have been so damnably let down in their needy years.

More than just the children are at fault. But it isn't only the children. It's everybody. Everybody around them regards the aging person as someone who is just in the way impeding progress. Slow on the street; slow getting off of buses, yes, slow to die. Actually and truthfully, the old folks aren't wanted by society. The best indication of that is that we call them a "problem" A problem and the makings of it are not wanted. The kind of county homes we throw them into as a last resort is an indication that we don't really care a great deal for the aged

Don't think the aged don't sense these attitudes, don't think for a moment that these factors do not have a great deal to do with the health of the aging That is the point I'm trying to get across. The social solution is evident enough—either children should become old-fashioned enough to care,

or society become interested enough to provide adequate community life for those it is now throwing out of society But that still isn't all that stresses the pituitary to produce STH in the aged

Fear of ill-health. There's the matter that they don't feel well (suppose it is functional) always, always, they fear that complete disability may be just around the corner. The ordinary young person goes into a tailspin when he is told that he needs to be incapacitated for two years. As a matter of fact, it is very seldom that we doctors dare to put it to a patient so simply. Well, now, suppose you have to be afraid, as an elderly patient always has to be afraid, that your age may bring you to your bed tomorrow of a wasting disease you can never be rid of!

It takes a lot of courage in the aged just to act cheerful and never say anything about these fears!

Fear of death. And, too, — you youngsters to whom death is still something that never happens — to the aged (and they think of it, never fear) death is closer at hand than it has ever been. Most every living thing, unless it is very, very miserable, wants to keep on living And so they think, during those long nights (many are the aged who don't sleep well) of the experience that lies threateningly just ahead. They feel like the Irishman, "If I knew where I was going to die, I'd sure stay away from that damn place" But for them the situation has lost its humor. It's the big thing that's just ahead, how and when is it going to be?

Loss of friends. But there are all kinds of other sad things for the older person. Their friends who once dropped a cheerful word, their spouse, who once offered a helping hand, their dog, who once wagged his tail, have all gone. Have you ever in the deepening twilight stood out on a lonely sweep of the earth — have you ever felt an awful lonesomeness pulling you down into the soil — a lonesomeness so deep as if to say, "This and only this is all, there is no more?" If you have, you have just a little inkling of how the aged person feels who is really

alone in the twilight, without a soul to care, or show the least parting affection.

You'd think that after 70, 80, 90 years, one would at least deserve, — if not a band and a celebration — some appreciative recognition from society for having accomplished his feat — staying out of jail, bringing up a family, and just generally carrying on through all the difficulties of the years But a posthumous text is the best the children and society can wring from hearts that (never fear), too, will grow old.

Poor housing for the aging. Then take another social cause of distress to the aged — the matter of housing Fifty years ago, two-thirds of our elderly people lived in rural areas. Today, two-thirds live in cities With this change they have lost the sympathies, friendliness, and neighborliness of the small communities. Today, 50 per cent of our aged have unsatisfactory housing and living arrangements, and a large portion of the other 50 per cent are realizing with dismay that their industrial pensions or other income that had, heretofore, been adequate, no longer cover increased rentals and increased food costs. A person on a Federal pension is expected to feed and house himself on seventy-five dollars a month. Housing on such an income can be only the very worst available, a dreary inhospitable room where one must be ashamed to have visitors.

An age that is dark when it should be golden. And so, old age is for most of the aging in our society the dark age instead of the golden age. For more and more people, the last years mean more and more misery. Those who are now under 55 may think they have their troubles, but when they are 65, they will really know what trouble is

The troubles of the aging are so acute and so fundamentally devastating, that the miseries of the older people are frequently sending them beyond emotionally induced illness into frank mental derangement. Twenty years ago most of the people in mental institutions were young or middleaged. The old stayed sane. Today four out of every ten admissions to mental institutions are over 65! The cause?

Simple! The conditions our aged are asked to meet are enough to break men's minds. These patients are often labeled "senile dementias" But don't forget, they are degenerative dementias, emotionally induced. The proportional admissions of the aged to mental institutions has increased considerably faster than the increase in the total number of the aged.

## It's Your Problem, Too

Practically every adult living today will live to be 65 and over In 1925 there were 20 younger people for every person over 65 Today there are only 11 younger for everyone over 65, and in 1975, there will be only 8 younger for everyone older than 65. You see, you are going to get there tool The problem of the aged is not like the problem of India You will probably never have to live in India, but you will most certainly live to be older than 65 What is to be done about the problems of oldsters?

You are 20 or 25 or 30

What are you doing about your old age? Now is the best time to start planning

You are 40 or 45 or into the fifties.

You cannot afford to waste time when time is so precious.

You are 60 or 65

There is still time to do much - you have a long time to live.

You are in the seventies or eighties

Contentment, which is something inside and not outside, can still be yours for the trying

## **♦** What Will We Do About Old Age?

This

Whether you are 20 or whether you are 60, the sooner you develop a mature idea of what your program will have to be

after you are 65, the happier your old age is going to be.

Maturity in old age means essentially what maturity at any age means—it means that as an individual lives, he enjoys what there is to enjoy, his friends, family, work, spare time, and the wonderful world, and he develops a great kindness and thoughtfulness which enables him to be a giver to all, but especially to those weaker and less fortunate. Finally he is able to compromise and see the other fellow's point of view instead of disagreeing and rearing up into a fight

## ▶ Practically, Maturity in Old Age Means This -

If you are young

1. Develop emotional stasis now. We talked about the tough situations our oldsters are faced with But the most important source of trouble 1s not any of these By far the greatest trouble oldsters have - I should say about 75 per cent of their trouble - is that in their upper years their emotional states have at last caught up to them, as emotional states always do by the time we are 65 The reactions a person allowed himself to have when he was 20 become more obvious as a person grows older. Nine times out of ten, the old man "who is just as sweet as he can be" was always a kindly, understanding person. The old lady with an acid tongue and a battleaxe approach to the ordinary incidents of life, was that way when she was 40, and also, though possibly less obviously so, when she was 20 Unless we work on them with conscious thought control, our emotional states in old age are the quintessence of our earlier dispositions with most of the masking flavors filtered off

So, whether you are 20 or 60 you can still learn kindliness, love for your fellows, cheerfulness, and an eye for the thousands of little enjoyable things about us that cost nothing

All through life we have a choice — we have the same choice whether we are 20, or 40, or 60, or 80, except that, at 80, we have more strongly established the habit of making the choice

in one certain direction But even at 80 a resolute person can change the habit in his choice We have the choice between reacting with equanimity, resignation, courage, determination, and cheerfulness on the one hand, or with crabbiness, grumbling, worry, and apprehension on the other.

The choice is your's - RIGHT NOW

If a person realized that he had a conscious choice between the two ways of reacting to his world, and he knew the consequences of taking one or the other path, he would not hesitate in choosing equanimity, resignation, determination, courage, and cheerfulness. As in many simple truths, the better choice is so obvious it is missed. Somewhere our education should have made it crystal clear that the choice was ours, and that with a flip of our mind a good emotional state was ours, with all the trimmings.

- 2. Plan future finances. Save something regularly to add to retirement income. Cut your present scale of living if you need to. Remember what Thoreau once said, that any event that requires a new outfit is not worth the trouble
- 3. Plan a place to live when you are advanced in years Will you have your home or will you have money to pay rent?
- 4. Expand your interests by developing hobbies gardening, farming, or anything that you can use later when you are done in the office or the shop

Instead of retiring, start a little trade or a little business, be it ever so small Get your mind active in new fields; go to night school, take a correspondence course in some new subject. Get acquainted with books.

5. Since you are going to be old some day, start making people see the problems of the aged as realistically as you do—they are going to get there too Above all, help turn sentiment against the type of county old-age homes that are being built in so many states. These are poor solutions to the problems of the aged and the very fact of their existence will, in years to come, forestall a better answer. Throw your opinion

and your efforts toward the establishment of the San Francisco-type of home for the aged, which is a community plan on a community scope. These obviously cannot be built by most counties. They will have to built at the state or Federal level

If you are already aged:

- 1. Cooperate with the inevitable and accept gracefully whatever fate may bring.
- 2. Whenever an old friend departs, seek a new one; life is as empty or full as you make it.
- 3. Try to be flexible and adaptable in your thinking; avoid prejudice; don't criticize youth for being as they are.
- 4. Dress neatly; sew up the holes in the old garments very carefully. Retain good, clean manners.
- Do not dawdle; pursue interests as though you meant business.
- 6. Above all, keep the disposition pleasant and cheerful. Greet people with a smile and a kind word. Don't gripe except when no one else can hear you, and when you can't hear yourself.
- 7. Never let yourself know how tired you are. Just sit down for a while, telling yourself that doing so was what you had in mind, anyway.
- 8. Don't worry about dying. Everyone who lived before you stood it.

#### A SUMMARY OF CHAPTER 13

Instead of being a Golden Age, the sixties, the seventies, and eighties are an age of increased emotional stress owing to financial insecurity, job insecurity, children's indifference, the fear of ill health, fear of death, the loss of friends, poor housing, and general public indifference. Much of what is

regarded as senile degenerative disease is actually emotionally induced illness, in which STH factors are prominent

If you are young, prepare for age by developing emotional stasis, that is to say, a happy disposition—now Plan future finances and a place to live when you are old Develop new active interests, against the time when your job runs out

If you are already aged, you can produce contentment inside, even if there isn't any reason for it outside Cooperate with the inevitable, find a new friend when an old one leaves Stay flexible and adaptable in your thinking. Do not criticize youth. Dress neatly. Keep that disposition pleasant, greet people with a smile. Sit down when you must, but don't let yourself know how tired you are. And as for death—didn't everyone before you stand it?



## 14. THE FULFILLMENT OF YOUR SIX BASIC NEEDS



There are some people with E I I. who are unaware of any emotions that might be responsible for their illness. These people frequently have fundamental emotions of a wrong variety because their basic psychological needs are not being filled.

The ordinary human being, like you and me, has six basic instinctive needs—six psychological wants—things that he feels deeply inside himself he must have. If one of these needs is not filled, a deep-seated restlessness is produced, a vague unrequited longing, and an undercurrent of disappointment that colors every minute of the day and night

Such an individual may be adapting himself very well, otherwise, to his environment, managing to put up a cheerful pleasant front, but deep down inside, there is a great gnawing longing because one or more of his psychological needs is only an empty yawning sore of misery.

## 1. The First of These Basic Needs Is the Need for Love

Everyone (even the person who seems to hate everybody

else) has an inner desire and need for love — he wants to receive the affection and high regard of at least one other human being. Receiving such affection makes us feel important and valuable, it makes us feel that we have a place in the order of people and things.

The proper fulfillment of this need adds a glow of warmth, richness, and beauty to what is otherwise very dull living. If there is no love from anyone, no high regard from a single other soul, a deep vacuum is made in a person into which are sucked the emotions of distress, longing, lonesomeness, and, eventually, social hostility. And these unhealthy emotions are present constantly, day and night, tainting the fundamental background of living

This lack may begin in childhood. There are many unfortunate people who feel the sting of the lack of affection from early childhood on, because they have the bad luck to have been born into a family where real affection simply does not exist. Mother and father wage a continual cold war against each other, with periods when the war gets pretty hot and the air is filled with angry words, with, perhaps, a dish or two for punctuation. What they can't take out on each other, the parents take out on the children

The children, learning by imitation, imagine that constant bickering, quarreling, spite, and hatred are the stuff that all life is made of, so sisters and brothers return blow for blow Everyone feels alone, hunted, exploited, uncomfortable, and on the defensive. These boys and girls may get quite old, or may go all the way through life, without ever getting the idea that there is such a thing as affection, or that there are human beings capable of it. But the psychological need for it is present, and these people have a restlessness, and a yearning, for something they haven't got. Basically, they are very unhappy.

The odd and tragic thing is that they don't consciously realize it and, of course, they don't know that it is lack of affection that underlies their restlessness.

This sort of thing isn't at all uncommon. It often shows its effects (which are functional disease and gross unhappiness) in some of the best families.

Verna was a beautiful girl whose mother died when she was a baby. Her father, who showed very little affection for her at any time, put the girl in an orphanage where she found more abuse and psychological torment than affection. At the age of fifteen, she met Eugene, an only child and a wealthy boy, with a very protective and selfish mother.

Eugene was captivated more by Verna's sexual attractiveness than anything else, and for the first (and only) time in his life, he did something his mother did not want him to do—he eloped with Verna Verna had received no affection in the orphanage and she received less as the wife of Eugene Eugene was too selfish, too self-centered and dependent on his mother to be capable of affection for Verna Eugene's mother, who always lived just a few blocks away, resented Verna's position with her son and did her best to hold Eugene and turn him against Verna in every way she could.

For years this went on. When children came, the mother worked on them to turn them against Verna, in this she succeeded to the point where a 16-year-old daughter repeatedly told Verna, "I hate you!" The need for affection wasn't the only need that went empty in Verna, some of the others that we are going to talk about, likewise, were empty gulfs of despair Verna experienced years of functional disease which grew gradually to the point of complete disability. When the cause of her illness was explained to a much-doubting husband and mother-in-law, they went through the outward appearance of affection But wise Verna sensed this as a sham The only thing that could have altered the situation would have been for Verna to start life all over It was only with great difficulty and self-discipline that Verna began to feel a sense of value in the returned good-will of other people when she went into Red Cross work on an all-out scale

Even worse than Verna's situation is the situation of a girl

who has been brought up in an affectionate family atmosphere and then finds herself married to a man who is capable of about as much affection as a cold blob of cottage cheese. These husbands (and there are a lot of them) forget their wives are human beings with human wants and feelings.

These chaps have little idea that there are such things as human wants and feelings—outside their own. They have a childhood arrest in certain essential compartments of their personalities. If they are capable of any affection, they never show their wives the capacity. After all, it would be easy for the big lugs to show the little woman some affection in many little ways every day. A hug, a kiss, a pleasantry, a compliment on her appearance, or an appreciation of a meal, would put a few blooms in the arid desert that such a woman, unfortunately, inhabits

It finally serves the big fool right when he has to pay a long, hard medical bill for functional illness of which he is the cause But this, too, he turns against the wife, blaming her for the sickness his immature stupidity produced. Men like this are one of the big reasons for functional illness in married women.

Sexual love is basically important. The thing we call love, the kind of thing we mean by affection, is a complex thing composed of various parts, and part of this basic need for love is the basic need for sexual love. In any marriage, conjugal affection is intimately bound with sexual affection. A marriage can seldom be unified, affectionate, and mutually satisfactory if the sexual experience between the partners is not unified, affectionate, and mutually satisfactory.

If, for one reason or another, sexual love never develops in a marriage, or fades away and disappears, one or both of the married couple becomes restless, dissatisfied, grumbly, irritable, and complaining The functional disease produced by this kind of a situation is often hard to treat because the patient would rather not tell about the trouble, consequently it can never be remedied. Sometimes this kind of trouble is

hard to remedy anyway. But this type of trouble produces some very odd results

For instance, Mrs T\_\_\_\_had a severe fibrositis of the lower back, so severe that she went to many clinics and many hos pitals The usual treatment did her very little good.

Mrs. T\_\_\_\_ was a career woman. Both she and her husband held important and responsible positions that took precedence over their home life. After their day's work, they came to a home (managed by a housekeeper) used only for meals or for social entertainment. Their sexual life gradually grew thinner and more disinterested, partly because of Mrs. T\_\_\_\_'s tendency to deprecate sexuality in favor of her career, and finally because Mr. T\_\_\_\_ found more satisfaction in a secret mistress

At first the decreasing sexual atmosphere of their marriage was welcomed by Mrs. T\_\_\_\_\_ Then she developed fibrositis, which on the surface had nothing to do with Mrs. T\_\_\_\_'s womanliness. But then she, too, was catapulted into the arms of a lover, and for the first time in her life experienced sexual satisfaction. The remarkable thing was that her fibrositis disappeared at once.

Because of her career position, and also because of a profound feeling of guilt, Mrs T\_\_\_\_ periodically tried to deny herself to her lover With each of these episodes, the fibrositis returned, only to disappear when this illicit love was allowed again into her life.

In many other ways, sexual incompatibility or unhappiness in marriage is the primary cause of functional disease in husband or wife, or both.

The old people must be loved, too. A group of people who commonly suffer from the need of love and affection are the aged, who must walk more and more alone as those whom they loved, and those who loved them, are taken away by the robber, death An old man loses his wife, the only person who showed him affection, and finds in her place a daughter-in-law, who shows him in many little open or half-hidden ways that he belongs in the category of a "necessary-care-

which-we-will-have-to-tolerate" And so the last of life, for which the first was made, becomes a toasting on a spit turned by a mean wench, assisted by her children, silently aided by the unfeeling attitude of the man's own son. A great deal of what in older people appears superficially to be degenerative disease characteristic of old age is in fact functional disease, the result of the lonesomeness, futility, despair, and sadness that have become the closest companions of their nights and days

## 2. Your Second Basic Need Is the Need for Security

Freud said that man wants most of all to be loved Adler, that he wants most of all to be significant Jung, that he wants security. All three are valid, man is complex and needs many things.

You feel secure if — and only if — there is enough income to buy at least the necessities of life now and in years to come, if your right to life is protected from irresponsible fiends and egomaniacal tyrants by a just government, if you are relatively sure that you will not be struck down by a devastating disease or catastrophe, if you have about you people you know will help you through a deal of trouble

Because complete security is an impossible thing, many worry warts defeat an otherwise secure state by worrying over the insecurity of security. They worry about cancer, and experience, thereby, more agony than death, again and again. To them, government policies spell their certain ruin 30 years hence. They are sure that disaster, in one of its endless forms, is always around the corner.

Such people, of course, never know a feeling of security. Because of continual insecurity, they lead miserable lives, mentally and physically They become wracked with functional disease. The trouble with people like these is obvious, they are always worrying right out in plain sight before the entire world

But many people who are in insecure positions never show it outwardly, and very often even minimize their insecurity to themselves. Yet down beneath the surface of moment-tomoment emotions, they have a deep feeling of insecurity, felt through its physical manifestations.

An executive may feel an insecurity in regard to his position because capable younger men are coming up and pushing at his heels. A man may feel insecure about life itself—the boy in battle, the Jew in Nazi Germany, the anti-communist in Soviet Russia. There may be the insecurity felt by a woman whose husband wants a divorce. There may be the insecurity felt by the boy who is the target of bullies in a boarding school. There is the insecurity felt by a man in any kind of a serious jam.

There are hundreds or, perhaps, thousands of varieties of insecurity this world can concoct for those who live in it. Even though we keep them in the background of our thinking, these insecurities can become the type of monotonous repetitions of unpleasant emotions that lead to functional disease.

One of the common ingredients that people discover in old age is a feeling of insecurity. They need to fear ill health, particularly disabling illness. Many need to fear financial insecurity. Many feel insecure as to what the end of life may bring them. There is the inevitable feeling of insecurity at losing loved ones whom they depended upon for certain assistance and qualities of life.

So, to a lack of affection many aged people must add lack of security. At the time when life should be gentle and kind, it becomes cruel and forbidding. When the race is nearing the end and a fellow is coming down the homestretch, there should be the cheering of the audience along the way, instead there is the jeering of the insensitive, and the interrogation of the welfare department.

The types of emotion that these situations saddle upon the elderly persons are those emotions that stress the pituitary production of STH. The chronic STH effects are essentially

those of degeneration of the kidneys, the arteries, and the organs, in general, as you saw in Chapter 4 Thus it is that degenerative changes are accelerated by the old person's adverse situations. If the type of emotion in such individuals is changed by fulfilling the basic needs in which they have been deficient, such as the needs for love and security, the processes of degeneration are reversed to such a degree that the individual seems to become years younger.

Many families are made to feel the pangs of insecurity because of a nonsupporting husband, whether the lack of support stems from alcoholism, laziness, or bad luck alters only the intensity of the emotions, not their essential color. The impending loss of home, property, and prestige add up to headaches, disturbances of the gastrointestinal system, and a host of other functional effects.

# ⇒ 3. The Third Basic Need Is the Need for Creative Expression

The child building with blocks, the housewife making a set of curtains, the financier planning a new holding corporation, the girl writing poetry, the carpenter building a house, — all have the very satisfying feeling that out of raw materials they are creating something new

No one, including you and me, has fundamental happiness if he is not being constructive either in his leisure hours or in his work. It is natural for everyone to identify himself with the world of human beings and to feel that he is assuming a part in that world. The universal urge toward creative expression is a vague kind of restlessness that becomes more and more unpleasant and disturbing if it is not put into action. But when it is put into action, there is the accompanying thrill—a sort of mental breathlessness, and an inward joy of doing and creating.

Creative activity must not be thwarted. There is probably no frustration greater than a thwarted person with an intense

desire for major creation. There was Ethel, for instance, whom I saw because of a functional illness she developed because her desire for creation was nipped in the bud by an unthinking family

Ethel married Roger They were both fine people with excellent families behind them Through high school and college, Ethel had built up plans of the kind of home and the kind of family she wanted to raise. At the time of their marriage, economic conditions in the country were bad, and Roger's parents invited the newlyweds to live on the first floor of their own home. They moved to the second floor. Ethel's mother-in-law was a considerate, kind individual who wished to be tactful and kind to Ethel She cautiously and carefully suggested to Ethel that she might do a certain thing in such and such a way Ethel was truly grateful for the tip and followed the suggestion. The mother-in-law was encouraged, by Ethel's enthusiasm, to make more suggestions.

As Ethel's children came, the mother-in-law took a more and more active hand Ethel had an inner, unexpressed feeling that she had in fact become a member of Roger's family and was rearing no new family, was creating no home of her own Her dreams were dissolving into nothing. Worse still, she couldn't get out of her predicament without being rude in the extreme and making life miserable for all of them Ethel grew gradually more frustrated and began more and more to suffer ill health. This was an additional indication to the mother-in-law that her help was needed. The mother-in-law was, in fact, the mother of both families; Ethel was a dependent child. And Ethel became quite ill

Because Roger and his parents were intelligent people, the doctor could at last make them see Ethel's predicament, they could be shown that Ethel needed above all to be the Ethel she had always hoped to be, she needed to be allowed to create her own home and her own family Ethel and Roger moved away by themselves in a new home they planned together Ethel recovered.

There are many people just as deeply upset, just as frus-

trated as Ethel, because they have been unable to follow an urge to do or to create certain things, an urge they may have felt since childhood. These people may appear to be cheerful people on the surface, but the deeper color of their emotions is anything but happy—their thwarted drives end in restless, unrequited yearning, anxiety, discouragement, and finally, perhaps, a loss of self-esteem

# ♦ 4. The Fourth Need Is the Need for Recognition

There is in everyone the need to feel that he and his efforts are being appreciated — appreciated by those for whom we strive

Everyone needs to be regarded by someone as being of some importance, and doing something that is of some good

It often happens that a man may leave a perfectly good position because he feels that his efforts are not being properly appreciated. He resents the fact that although he worked above the call of duty and did an extraordinarily good job, none of his superiors or equals showed any indication of having recognized it. His need for recognition is given a severe blow He leaves

The unthanked home-maker. But consider the housewife. Actually, from a standpoint of sheer dreamness and the amount of time spent on the job, she has the toughest job there is But most of our housewives never receive a word of recognition from one year's end to the other. They, and their washing and ironing, come to be taken as a matter of course by their husbands and children. The meals are accepted in the same silent air of "after all, we have this coming." Everyone assumes that the house cleans itself, that the things they drop pick themselves up, that clean clothes get into the closets automatically, that the comforts of home just naturally exist without anyone's skillful touch

This lack of recognition for a difficult job, this thanklessness, goes a long way to make homemaking the world's tough-

est job. The husband quits his job because of lack of recognition, but the housewife doesn't quit hers. But she feels all the more keenly the disappointment at the lack of recognition. Much of the tiredness that goes with constant housework rises directly out of the lack of recognition the housewife receives. Her tiredness is the tiredness of a human being who is being relegated to the position of a lifeless, meaningless drudge.

The unthanked oldster. Again in old age, there is this matter of lack of recognition.

Most of the recognition for his work, or recognition of him as an individual, goes out of an older person's life with the death of his friends. An important element in what we mean by friendship is the trading of mutual recognition A man who has no friends can fill his need for recognition only by sheer capacity, and that avenue is no longer open to the elder who is denied a job at his old trade. The people who remain surrounding the elder regard age as incapacity, and generally do not regard the old as worthy of respect because they are old. Especially when he is poor, the elder is regarded as a social inconvenience. If he is rich, he becomes an exploitable opportunity In place of recognition, the aged person is treated as a failure, a burned-out being who is about to be flicked away A person who lived courageously and well. whose earlier actions benefited the younger generation who are now critical, is often ushered out coldly and unsympathetically, under a hail of spiritual, if not physical, stones. Gone the recognition, gone the acclaim, just an old man no one really wants Such a crying need of recognition brings emotions that hasten the end

Appreciate your child, but don't spoil him. At the beginning of life, too, recognition is important—just as important as love. The intelligent, advanced child is apt to be showered with too much recognition—he may be buried in it so that he can never get his head out into the clear and really evaluate himself for what he is, and forever after he lives under the handicap of too high an opinion of himself.

On the other hand, the slow and awkward child's feeling of recognition may be very negligible. He tries in his halting imperfect way to do something that might bring a bit of the recognition which he, like everyone else, longs for. But instead, the reactions of those around him make him feel that his efforts belong in the failure class. He feels that he does not measure up to his brothers or sisters. All the attention he receives is on the disciplinary level. Compliments rarely come his way. He develops an increasing sense of incompetence. The important element of self-esteem gradually leaves him, perhaps never to return. He is always miserable and restless. He may seek even the kind of recognition that the doer of bad deeds receives. He becomes a lost cause because his need for recognition is a lost cause.

## ▶ 5. The Fifth Need Is the Need for New Experiences

A human being cannot be kept in a dull monotonous routine without developing a monotonous repetition of unpleasant emotions, and functional disease with it. Any kind of a job, long continued, carries with it a certain amount of monotony. But the most monotonous job can be made bearable by the thought of a new experience that lies ahead. As one housewife said, "I'd scream if I didn't have that trip to the Black Hills next month to look forward to"

It's an emotionally bad day that starts without the hope or expectancy of a single lift. Even a trip to the meat market might be called a lift, so might an airy conversation, or an interesting person.

Here again the housewife is decidedly in a more unfortunate position. The average day offers more variations and opportunities for new experiences for the male of the species. He goes outside the house and outside the neighborhood to work, meets and talks to people, and his work itself may hold interesting variations. These ready opportunities for new experiences are not available to his wife.

Probably the best example I have seen of how a dearth of

new experiences can produce severe functional disease was Mrs. S....... She was only 26 when I first saw her. She was staying with her mother because she had been sick abed almost three months Whenever Mrs. S...... tried to get up, she became so dizzy and faint she had to go back to bed. She was obviously hyperventilating. I remember when the call first came to see her. I was occupied, and I sent a fourth-year medical student who was a preceptee in my office.

He returned all aglow, "Oh, boy, do I have a dandy hyperventilator for your clinic!" The lad was a smart student The several doctors, who up to that time had cared for Mrs. S\_\_\_\_\_, had labeled her illness variously as "anemia," "female trouble," and even "heart disease," so that, in addition to being discouraged, she was also confused

Because of the husband's need for sleep, and because of the small children, the couple found it impossible to go out evenings. Besides, there was nothing convenient to go to. After her husband left in the wee early hours, Mrs. S\_\_\_\_\_felt afraid to be alone with the children in that desolate place. A restless, questionable watch dog offered poor solace. The brown, weathered rocks outside added a dismal dreary note during the day.

Had the husband had a dime's worth of understanding, five cents worth of sympathy, and two cents worth of good intentions, he might have sensed what the situation meant for his wife. He made his bread rounds, joked with the other truckers and workmen, saw things and did things. Mrs S\_\_\_\_\_ couldn't even leave the place because Mr S\_\_\_\_ had to take the car to work.

He was surprised and disgruntled as his wife became increasingly more complaining and sick. Her increasingly long stays with her mother he regarded as depriving him of a home he was rightfully entitled to. He criticized her for the medical expense she was creating. Finally, after the medical student had discovered Mrs. S.\_\_\_\_\_\_'s true illness, Mr. S.\_\_\_\_\_ thought the doctor's explanation was an unrealistic figment of the imagination.

But later on, Mr S\_\_\_\_\_ did develop more of an appreciation for his wife's needs when he found that after treatment she was again a functionally valuable housewife who could get his meals and wash his clothes She improved even more after he had moved her to a nice little place in an attractive little town where she had a tree in the yard, pleasant neighbors, and a sandbox for the children. It was little enough.

But, as I said, Mrs S\_\_\_\_ was a normal person—she had a good power of adjustment It had been the utter impossibility of new experiences (which a sensitive, life-loving girl like Mrs S\_\_\_\_ needs) plus, of course, the lack of security, the absence of affection, and the depressing effects of that awful environment, that had tossed her into bed for three long months But now she is doing fine

## ♦ 6. The Sixth Basic Need Is Self-Esteem

In spite of disappointments, in spite of the little or big personal failures that a person experiences through life, most everyone, nevertheless, manages to think sufficiently well of himself to be encouraged to go ahead. His actual capacities may be ever so minute, his deficiences may (to others) fail overshadow his insignificant good qualities, but he himself is able to find some field for personal satisfaction—at least a rebuttal against criticism, supporting it with an injustice complex.

A person who is fired from a job he thought he was holding down well, or a person who is "told off" by someone whose good-will he assumed, or a person who loses, by some catastrophe, all he has been working for, feels afterward as though there were nothing left, he feels the utter emptiness of failure, he is done up. But after a little time, his assurance, his feeling that he is worth something after all, gradually returns, and though it may be nicked and chipped a bit, his self-esteem is back. He hardly notices the nicks.

But there are many people who lose every vestige of self-esteem, they look upon themselves as failures in every respect, there is nothing more to do or to try. They feel they have no place in the world, no worth, no importance, no ability, no judgment, no future, no past except guilt and failure. There is no bottom to the despair these people feel. They are the most miserable, the sickest, and the most deplorable of all human beings. Such a condition in which all self-esteem is gone is called a depressive state. The sheer hopelessness of it all, hour after hour, may finally bring a fling of desperate bravado, this is known as a manic-depressive state.

Two types of person prone to depression. Two types of people are most apt to lose their self-esteem and have depressive states. One type is the person with a great abundance of self-confidence and esteem without much in the way of abilities to back it up. The other is the person who starts out with a strong inferiority complex in youth, never rises above it, and finally succumbs to a series of failures

Depressions can occur anytime during life, but are most common alter middle life, about the time when one looks back and recoils from the obvious fact that one's accomplishments and achievements have nowhere measured up to early plans and hopes 'This alone will not bring on the depression, but if there is added a set-back or two, preventable or unpreventable, what is left of self-esteem begins to vaporize

John Doe was always a confident fellow who bragged rather easily. He was always ready to criticise the other fellow's political or religious views and "set him straight." This made him somewhat of an irritation in any office, particularly to the boss whose abilities John Doe regarded as far lower than his. At forty, John Doe stormed out of the office one day. He had quit! What was more, he had put the boss in his place. Work at that time was easy to get, and J. D. joined a much larger company where he figured his abilities would be recognized and amply rewarded.

But he was never advanced His politics grew very nasty. He began to be sharp to everyone and anyone And one day, when he was 56, he was calmly told his services were no longer necessary. This time a job was much harder to find, and before he found one, he became truly alarmed that possibly another job was not to be had. He was on his new job only two months when he was laid off. His wife, who had never been too easy to live with, berated him day and night.

John was at last completely flattened out. All that he thought he was, he now recognized as a mistake, everything he had prided himself on was now a delusion; the things he had always dreamed of being and doing had melted away. The only future lay with the welfare department John Doe went into a severe depression and was institutionalized at the expense of the state.

There are all sorts of variations on that theme Sometimes the failure of the individual is unquestionable, but sometimes the failure is not nearly so great as the victim imagines it is.

What happens in either case is that the person does not have enough self-confidence to go on or to do anything. He is in a state of being personally whipped

The loss of this sixth psychological need has more immediate and apparent effects than does the lack of any of the

other basic needs The others lead eventually to an agitated feeling of vague anxiety and unrest. The loss of self-esteem is characterized by the depressive state.

Gradually the feeling of complete failure wears off, and after months or years, the person again acquires enough selfesteem to become useful to himself and others.

If a person who is developing a depression can put into action the program of conscious thought-control, which we are outlining in these chapters, he can avert his depression. Once a classical depression has developed, there are only two things that can be done to help the patient take care of him and wait until the depression wears off naturally, or give the patient electroshock therapy, which snaps him out of it in two or three weeks. The alternative to this is, of course, to exercise conscious thought-control and keep yourself out of a dangerous depression.

### ▶ What to Do About Your Basic Needs

Review for yourself the presence or absence in your life of these six basic psychological needs. Ask yourself Do I in my private world:

- 1. Receive the love of others, or am I a lone, unwanted mdividual;
- 2. Have security, or am I afraid of my finances, my job, my social status, my legal status;
- 8 Exercise creative expression in my work, in my hobbies, or in any other way;
- 4. Receive the recognition of any of my fellow men;
- 5 Have the possibility of new experiences, or am I an old fossil in a deep rut;
- 6. Have my own self-esteem, or am I going down in my own estimation?

You might as well be frank, candid, and objective in your answers — it is yourself you are dealing with.

1. If you are situated somewhat like Verna, and there is

no one in your world who really cares a penny's-worth about you, the best compensation is to give your love to those about you, and do for them as you would like to be done by Part of maturity, you will remember, is to have the giving rather than the receiving attitude. It becomes a great satisfaction to love and do good for the people around you who do not deserve or expect it

- 2 If it's security you lack, decide what you are going to do about it and then quit turning it over and over in your mind. If you cannot do anything to increase your security, there is no use adding worry to it, it's already bad enough. Remember how William, King of Living, handled insecurity? You might re-read Chapter 8
- 3. If it's creative expression you lack, if you feel you are not making or creating anything, that you are just a machine for menial chores, get busy and don't let it eat you any longer. Try doing something you have always hankered to do, try it on your own, or go to the nearest vocational school and pick up a creative art. You might as well start to live!
- 4 If it's recognition that you yearn for, quit yearning, accept the compensation of knowing that you are doing as good a job for other people as you possibly can Give them the recognition instead.

It could be, madam, that if your husband reads this the big goof might give you a little recognition tomorrow by saying, "It is a wonderfully good dinner, my darling!" It would feel good, wouldn't it? But even if you get no recognition from him, you tell him, "You look fine and nice this morning, Fred! I've got a swell-looking man!" He'll like that, and your recognition of him will help you almost as much Maybe someday he'll give some of it back.

5. If you've become a drudge, caught tight in dull routine, by all means, bust out into some new experience. You should be looking ahead and planning a new experience all the time. Buy something; do something, something exciting, join something, go somewhere. Off with you, this minute, into planning a new experience!

6. If your self-esteem has been jolted lately, smooth your-self with humility. Don't try to be, don't think yourself as being, too much. Just an ordinary person. There have been lots of them — many more of that kind than any other. Lincoln was a plain person, with humility, just like you. Then smile! Put conscious thought control into action to substitute equanimity, courage, determination, and cheerfulness for those stress emotions of failure, disappointment, futility. You are just as good as I am, and we are just as good as they are, God bless them!

### THE IMPORTANT POINTS TO REMEMBER IN CHAPTER 14

There are six basic psychological needs in every person. If a person lacks any one of them in his life, he will be basically unhappy, tense, and restless without knowing why These needs are the need for affection, security, creative expression, recognition, new experiences, and self-esteem.

- If you lack love and affection from others —
   Give more than your share of love and affection to
   others.
- If you lack security —
   There is no use adding worry to a bad situation; run the emotionally healthy flags up on your masthead.
- If you lack creative expression Go to it, nothing is holding you.
- If you lack recognition —
   Give recognition to other people instead; some of it will
   come back.
- If you lack new experiences —
   Go out and get them, be planning something all the
   time
- If you have lost your self-esteem —
  Remember this: you are just as good as I am, you and
  I are just as good as they are, God bless them.



# 15.

# HERE IS YOUR FINAL BLUEPRINT



# The Choice Is Yours

Practice thought control. When you catch yourself starting a thought that will produce a stressing emotion like worry, anxiety, fear, apprehension, discouragement, or the like, stop it, and substitute thinking that brings a healthy emotion, like equanimity, resignation, courage, determination, and cheerfulness.

# ▶ Keep This Always in Mind:

The key thought: Carry this idea every minute of every day: I am going to keep my attitude and thinking calm and cheerful—RIGHT NOW

# ▶ Handle Life This Way:

When the going is good: Tell yourself life is good, and allow yourself the delightful feeling of being happy

When the going gets rough: I. Stay outwardly as cheerful and as pleasant as you possibly can. Lighten an awkward situation with a lift of humor, with kindness, or a bit of a smile.

- 2 Avoid running your misfortune through your mind like a repeating phonograph record. Above all, do not let yourself get irritated, upset, hysterical, or self-pitying
  - 3. Try to turn every defeat into a moral victory
- 4. Run these flags up on your masthead and keep them flying.
  - Equanimity ("Let's stay calm.")
  - Resignation ("Let's accept this setback gracefully.")
  - Courage ("I can take all this and more.")
  - Determination ("T'll turn this defeat into victory.")
  - Cheerfulness ("See, I'm coming up.")
  - Pleasantness ("I still have goodwill toward men.")

## Important Areas in Living to Watch

- Keep life simple
- · Avoid watching for a knock in your motor.
- Like work.
- Have a good hobby
- Learn to be satisfied.
- · Like people.
- · Say the cheerful, pleasant thing.
- Turn the defeats of adversity into victory.
- · Meet your problems with decision.

- Concentrate on making the present moment an emotional success.
- · Always be planning something.
- Say "Nuts" to irritations.

# Make Your Family an Asset Rather Than a Liability

Put These Things into the Family:

- Simplicity in living, and simplicity in enjoyment.
- The idea of the family enterprise.
- The idea that the family is part of the human enterprise
- The attitude of turning defeat into victory.
- An atmosphere of affection, mutual respect and regard.
- A general tone of kindly cheerfulness.
- Reasonable, firm, yet pleasant discipline.
- A feeling of mutual confidence and security.
- An atmosphere of enjoyment right now.

### ♦ Control Your Sex Urge Rather Than Having It Control You

- If you are unmarried: Sublimate your energies into interesting, absorbing and vigorous activities, and develop your general maturity.
- If you are married: Every relation between you and your wife, or husband, and this includes the sexual relation, needs to be mature, that is to say, sympathetic, understanding, unselfish, cooperative, and affectionate.
- In any case: Be content to keep sexuality within the accepted bounds. It is easier to stay out of trouble than to get out of it once you get in it.

## Fill Up Your Own Unfulfilled Basic Needs

#### Here Is How:

- If you lack love and affection from others —
   Give more than your share of love and affection to other
   human beings.
- If you lack security —
   There is no use adding worry to a bad situation; run the emotionally healthy flags up on your masthead.
- If you lack creative expression Go to it, nothing is holding you.
- If you lack recognition —
   Give recognition to other people instead; some of it will
   come back.
- If you need new experiences—
  Go and get them; be planning something all the time.
- If you have lost your self-esteem —
  Remember this: you are just as good as I am; you and I
  are just as good as they are, God bless them.

## This Blueprint Leads to Maturity

By following the blueprint (and the choice is yours) you will be developing maturity and emotional stasis

### Maturity Is This:

- Responsibility and independence, instead of dependence.
- · A giving rather than a receiving attitude.
- Cooperativeness and a feeling for the human enterprise, instead of egoism and competitiveness.
- Gentleness, kindliness, and good-will, instead of hostile aggressiveness, anger, hate, cruelty, and belligerence.

- The ability to distinguish fact from fancy.
- Flexibility and adaptability, instead of awkward and stubborn resistance to changes dictated by fate, fortune, and intelligence.

# Good Living Is Yours

If you are going to limp through year after year of anxious, troubled misery, 100 years, or 75, or even 50, is an interminable hell on earth, the shorter life is, under such conditions, the better, none at all would be best

But once you learn the trick of striding along, eyes calm with equanimity, head up with determination, chest out with courage, a pleasant word for fellow travelers, and resignation on meeting rocky rough roads, your years will beg repetition, and your living will be a fascinating enterprise that you would welcome for a hundred years

The choice of whether to limp or to stride is yours — RIGHT NOW.



# A WORD TO THE PROFESSIONAL READER



The physician who prescribes this book for his patient, or the teacher who is interested in "total" education, may wish to know more about the psychological concepts underlying my method of treating emotionally induced illness.

# ▶ The Basic Psychological Concept in the Method

The basic psychological concept of the method of treatment presented in this book is the learning-maturity concept. Simply stated, this means that emotional stress is the result of miseducation, or lack of proper education, and that emotional stasis can be achieved by learning the qualities that comprise maturity. Stress is bound to arise in an immature person because he is trying to handle adult situations and problems with primitive and childish techniques. The learning-maturity concept has gradually been emerging from the constantly boiling cauldron of psychiatric and psychological thinking. This concept is the direct antithesis of Freudian psychiatry, which has been oriented by the concept that emotional stress is conditioned early in life by an unacceptable experience that is relegated to the dusky murkiness of the subconscious, where it preys on the host forevermore

The learning-maturity concept further implies that the treatment of emotional stress consists in showing the patient precisely what maturity means in the handling of everyday

living, and then showing him a practical discipline for carrying on his living with a passable degree of maturity

In contrast, the therapy of traditional psychiatry consists quite largely of digging into the personal history and the half-buried past, a very interesting though, in my opinion, not a very fruitful method of treatment. It does afford the therapist an excellent idea of the particular variety of immaturity a patient has, but this is a matter which can be determined fairly readily, without hours spent on a psychiatric couch Being interested mainly in the past, the traditional psychiatrist often prefers to do very little about the present or the future

The learning-maturity concept, on the other hand, insists that, regardless of the omissions and commissions of the past, a person has to start in the present to acquire some maturity so that the future may be better than the past. The present and the future depend on learning new habits and new ways of looking at old problems. There simply isn't any future in digging continually into the past.

Instead of recreating the past, as does the conditioning concept, the learning-maturity concept emphasizes an improved approach for the present and future

# ▶ The Common Denominator in Emotionally Induced Illness

The starting point in the treatment of E. I. I. becomes simple and clear when one realizes that the underlying emotional problem has the same common denominator in every patient. This common denominator is that the patient has forgotten how, or probably never learned how, to control his present thinking to produce enjoyment. Constant fear, anxiety, apprehension, irritation, frustration, and discouragement absolutely preclude the possibility of enjoyment. Emotional stress can be helped only by learning to react to situations right now with equanimity, courage, determination, and cheerfulness. The person who learns to handle the ma-

jority of life situations with equanimity, courage, determination, and cheerfulness has taken a long step into maturity. Beyond this step there remains the development of unselfish cooperativeness and good judgment to make maturity fairly complete.

My method of therapy places the patient on the enjoyment principle by a conditioned reflex through conscious thought control, by substituting equanimity, courage, determination and cheerfulness, whenever anxiety, apprehension, and so on, begin to make their appearances. This substitution is done by conscious thought control until habit can eventually take over. Such substitution is what people with emotional stasss are doing habitually all the time

## ♦ The Practical Application of the Common Denominator and the Learning-Maturity Concept

The point of greatest practical difference between the traditional adequate psychotherapy and the learning-maturity method is this adequate psychotherapy requires hours and hours of the doctor's time and can, therefore, be used only on an extremely small fraction of patients who need therapy, the learning-maturity method can be applied in ways that require practically none of the doctor's time.

How can the learning-maturity method be applied without hours of the doctor's time?

First, because maturity in one person is the same thing as maturity in another person, and second, because there is the same common denominator in every person with emotionally induced illness, the course and procedure of therapy is the same in every patient, regardless of how their problems may differ in detail.

The essential thing to show patients is how they may henceforth meet the ordinary life situations with maturity and emotional stasis, and how they may introduce enjoyment into the present moment. This can be done in the same way for everyone. Therapy for emotionally induced illness can be standardized to a single pattern and yet help practically 100 per cent of the patients. If one can develop a system of instruction that will help *one* patient develop maturity and emotional stasis, the same system would work for almost any other patient

For the past 20 years I have tried various methods and various techniques, working always with this requirement in mind: Because there are so many patients with E. I. I., the doctor must have a method that does not require much of his time. I submit that unless a method meets this criterion, it is useless in medical practice.

One method that at first seemed to promise well was group therapy Ten, 25, 50, even 75 patients would meet periodically for orientation lectures, followed by general group discussion. But this grew to a point where I was spending three hours every night with such groups. This was not saving the doctor's time and it was a grueling program!

The results of group therapy were encouraging, but not too satisfactory. Much still remained to be given the patient in private sessions

After several false starts with sound alone, I finally tried an audiovisual demonstration, using wire recordings, and later tape recordings, coupled with colored slides projected on a screen. Almost at once patient response indicated that this was it!

The method was perfected so that one patient, and his spouse, could receive instruction in private. What this method lacked by not having the doctor talking directly to the patient was more than compensated by the thoughtful care that could go into the preparation of a tape recording far superior to an off-the-cuff lecture, plus the additional interest of slides on a screen giving point and interest to the demonstration. The doctor saw the patient briefly before and after each audiovisual demonstration.

Here was a method which worked during the day while the doctor was attending his other patients. Bit by bit the audiovisual demonstrations were pieced together, changed here and altered there, until they developed a hitting power that far exceeded the group therapy sessions. The present demonstrations can admittedly be vastly improved upon, and, indeed, they are constantly being added to and changed

The audiovisual sessions are attended by the patient and his spouse at weekly intervals. He sees the doctor for a period of five minutes before and after each session, so that the doctor may make certain that the patient is being suitably oriented. The tape recordings present essentially the same material contained in this book, greatly augmented by the visual aid of the screen projections

During the past six years, thousands of patients have attended these therapeutic sessions. The majority have either been cured of their ailment, or have been shown how to tolerate their symptoms. Most of them have been shown how to live happily. The doctor, too, benefits by removing his greatest worry and care, which is "How can I possibly bring effective help to these scores of people with emotionally induced illness?" The layman cannot possibly appreciate what a tremendous burden functional disease produces for the doctor. The doctor needs a method of therapy as much as does the patient.

Having seen what can be accomplished by audiovisual sessions utilizing the learning-maturity concept, and failing to see how the tremendous number of patients can be given the necessary therapy in any other way, I am of the opinion that eventually this system, or some modification of it, must become the universally accepted method of treating emotionally induced illness.

# ♦ A Comparison of the Learning-Maturity Method and "Adequate Psychotherapy"

Adequate psychotherapy for E. I. I. consists of three distinct phases, the period of explanation, the period of ventilation, the period of education

The emphasis is placed on the period of ventilation, the

period of explanation is very sketchy and often unconvincing; the period of education varies in intensity with various psychiatrists. Some leave it out altogether.

Psychoanalysis consists only of the period of ventilation The analyst considers a period of education entirely superfluous

The learning-maturity method by audiovisual presentation emphasizes the period of explanation and the period of education. The period of ventilation is turned into a period of demonstration.

The period of explanation. The initial step, in both adequate psychotherapy and in the learning-maturity method, is to explain to the patient that he has emotionally induced illness, and to give him some idea of how E I I works

The adequate psychotherapist has considerable trouble in doing this because his explanations are exceedingly ephemeral, and leave the average patient completely unconvinced.

As an example, a patient of mine who was seen by a psychiatrist was given this explanation of his diarrhea. "You hate your mother-in-law, and you would like nothing better than to have her out of your life. Your diarrhea is your body's organ-language of that repressed desire." To the patient that sounded pretty weak. He was not convinced that his diarrhea had anything to do with his mother-in-law, especially when his diarrhea did not stop after his mother-in-law had been killed in an accident (with which the patient had nothing to do)

Admittedly the man's mother-in-law had much to do with the emotional stress which was manifesting itself in his colon, but to give the explanation that the body is acting out a phrase of language, which the mind dare not express, is, in my opinion, just as silly as it sounds. It sounded silly to the patient.

Another symbolic psychiatric explanation is, "You feel a lump in your throat because that is your body's expression of the fact that you have things in your life you can't swallow." There is, of course, a connection between the "things in your

life" and the lump, but why can't the explanation be factual, that is to say, physiological, instead of merely figurative?

It is much easier to convince patients that they have E. I I. if the explanation is physiological, as in the first part of this book. After the audiovisual sessions on explanation, the patient usually says, "Sure, you were describing me all the time. Why didn't someone tell me before how this worked?"

We know, today, what the mechanism of E I I is Why not use it? In fairness, it must be noted that psychiatrists are turning more and more to physiologic explanations of the emotion-symptom relationship But many of them still rely on the hokus-pokus of symbolism

The period of ventilation. Traditional psychiatrists, and especially psychoanalysts, place their main emphasis on the part of their therapy they term "ventilation," which consists in having the patient talk about himself

The ventilative sessions of an hour each, at weekly intervals, extend from weeks to years, depending on how deeply buried the subconscious material happens to be.

From such ventilation, the psychiatrist hopes to have the patient uncover the mainspring of his illness, the theory being that emotional stress is due to repressed and buried complexes that tend to disappear as soon as the patient knows of their presence and significance. The main objection to this theory is that it does not often work, it does not often produce a cure of the patient's emotional stress.

In the audiovisual presentation of the learning-maturity method there is obviously no place for ventilation. Instead of listening to the patient ventilate, as in "adequate psychotherapy," the doctor ventilates for the patient. In the audiovisual sessions, as in this book, the patient is presented with the clinif situational and personality factors that produce emotional stress. He has time to compare his own situation with the hypothetical ones presented during the sessions, he analyzes himself and realizes that perhaps what he has always considered normal for himself is, after all, abnormal.

Very often, a person who has attended several audiovisual sessions will voluntarily reveal a situation in his life that he had been hiding. If the patient doesn't voluntarily bring me an assay of himself after a reasonal number of sessions, I ask him, "Now that you have seen the kind of thing that produces E I I. in most people, what do you think is doing it in you?" If he doesn't have an immediate answer, I ask him to bring it with him before he attends the next session

The period of education. After the explanatory and ventilative periods, the psychotherapist usually discusses, with the patient, ways and means of alleviating his difficulties. This period of education is by no means universally used by all psychiatrists. Many psychiatrists do not give the patient any directive program and believe educational efforts are useless. Their emphasis, of course, is on the cathartic effect of the ventilative period.

The learning-maturity concept emphasizes the educative period. The main effort is not to dig up the past but to show the patient how he may go about acquiring the qualities that will make his present and future more endurable and satisfactory than his past.

A person is what he is because of the sum total of influences that he has met in the past. Whatever those influences were does not preclude the application of new influences and new learning patterns now or in the future. If a poor swimmer is shown how, the chances are he can be a better swimmer. Once in a great while, of course, there will be someone who just can't learn to swim, but the majority can be helped.

The final know-how for developing maturity and emotional stasis we do not yet have, it is something that will have to be acquired through trial and error. However, there is already quite a bit we do know, let us begin to apply that





#### A

Accidents, worry and, 165 ACTH, see Adrenocorticotrophic hormone Adaptability, quality for maturity, 81-82 Adequate psychotherapy, 5 drawbacks. 5 education period, 213 explanation period, 211-12 learning-maturity concept and, comparison, 210-13 ventilation period, 212-13 Adler, Dr Alfred, 187 Adrenocorticotrophic hormone (ACTH), 47-51, 53, 54, 56 counteracts STH, 43, 44, 47 stress disease, 48-51 Adversity, meeting, 116-17 Affection, family atmosphere, 138 Aggressiveness, overcoming hostile, 77-79 Aging persons, 168-81 children's indifference, 174-75 death, fear of, 175 emotional stress, 168-69 financial insecurity, 172-73 friends, loss of, 175-76 getting old, meaning of, 172-77 housing for, 176 ill-health, fear of, 175 10b insecurity, 173 love basically important, 186-87 maturity in, 178-80 problem, 177-78 senility, 169-72 unrecognition, 192

Anger, manifestations, 10-12
Annals of Internal Medicine, 54
Anxiety, family atmosphere, 132-33
"Appendicitis," emotional, 24
Apprehension, physical, avoiding,
100-104
Asthma, 45-46
Attitudes, definite, maturities and, 82
Autonomic nervous system, 17, 18
Average moment, importance of
handling, 94-95

#### R

Bacterial invasion, 41
Battle emotions, 61
Belching, emotionally induced, 26-27
Biology, civilization and, 142-44
Blood vessels, muscles of, emotional
manifestations in, 27-29
Bowman, Dr K M, 170, 171
Burroughs, John, 98

#### G

Cannon, Dr. W. B., 10, 38
Cardiospasm, 20
Cheerfulness, 90
family atmosphere, 138-39
fundamental emotion, 62
Children's indifference, aging persons, 174-75
Church, emotional stress educational influence, 69
Civilization, biology and, 142-44
Cold war in the home, 128-29
Colon
emotional "appendicitis," 24

Colon (cont) emotional manifestations in, 22-23 Common denominator in EII, 207-208 application of learning-maturity concept and, 208-10 Complaining family atmosphere, 132 Confidence, family atmosphere, 139 Conversation, developing cheerful, 114-16 Co-operation, equality for maturity, 74-76 Courage, 90 Creative expression, need for, 189-90, 199 Critical family atmosphere, 128-30	Emotionally Induced Illness (cont)- intelligence as factor in, 8–9 new knowledge concerning, 39 physical disease, 7–8 prevalance, 3–4, 168 psychological concept in method, 206–207 psychological needs, basic, 182–200 senility, 169–72 substitution therapy, 5–7 symptoms, 7–8 production, 16 unpleasant emotions as cause, 13–16 Emotional Maturity, 72 fn Emotional stasis developing, 84–96, 204–205 family atmospheres that produce,
D	135-40
Death, fear of, aging persons, 175 Decision, meeting problems with, 117-20 Depression, persons prone to, 196-98 Desoxycorticosterone (DOCA), 42 Determination, 90 Discipline, family atmosphere, 139 Dislike, family atmosphere, 180-31 Diuretic hormone, 41-42 DOCA, see Desoxycorticosterone Dunbai, Dr., 38	family influence on, 126-41 maturity and, 69-70 principles to make life richer, 97-122 religion and, 123-24 sex and, 142-60 trouble versus, 67-68 Emotional stress, see Stress Emotions anger, manifestations, 10-12 battle, 61
E	definition, 9
Educational failure, emotional stress due to, 68–69 church influence, 69 family influence, 68 friends' influence, 68–69 schools' influence, 69	fundamental, 59-60 hattle emotions, 61 cheerful, 62 effect, 60-61 immaturity, from, 61 unfilled basic needs, from, 61 glands, disease through, 58-52
Education period, adequate	duretic hormone, 41–42

pituitary gland, 39-41

best medicine, 53-54

"miracles" and, 56-57

produced by, 56

nervous system and, 18-33

blood vessels, 27-29

"appendicitis," emotional, 24

kınds, general, 9-10

belching, 26-27

cardiospasm, 20

colon, 22-23

levels, 59-60

effects, 54-55

body reactions to, 53-58

optimal hormone balance

good

psychotherapy, 213 Egotism, selfish, family atmosphere, 131-32 Emotionally Induced Illness (EII), 3 adequate psychotherapy, 5 drawbacks, 5 education period, 213 explanation period, 211-18 learning-maturity concept and, comparison, 210-13 ventilation period, 212-13 common denominator in, 207-208 application of learning-maturity concept and, 208-10 dark spot in modern medicine, 4-5 ever present, 66-67

Family (cont )

127-34

anxiety, 132-33

atmospheres that produce stress,

Emotions (cont) gall-bladder-like pain, 23-24

Jump in throat, 19-20

muscle tension, 18-19

1 10	ministery, 104-00
neck pain, 19	complaining, 132
skeletal muscles, 29–31	critical, 128-30
skin trouble, 28–29	dislike, 130-31
stomach pain, 20-22	fear, 132-33
overbreathing, symptoms resulting	in law domination, 133-54
from, 34-37	kill-joy, 127-28
single	selfish egotism, 131-32
cause of severe illness, 12-13	cause of disease, 126-27
producing single symptom, 12	emotional stress, educational
superficial, 59-60	
	ınfluence, 68
unpleasant	Fear
cause of emotionally induced	family atmosphere, 132-33
ıllness, 13–16	ill-health, aging persons, 175
monotonous repetition, 13–15	Fibrositis, 29–31, 101
Endrocrine glands, 39-51	Financial insecutity, aging persons,
research, future of, 51	172-73
English, W C, 98-99	Flexibility, quality for maturity,
Enjoyment, mutual, family	81-82
atmosphere, 140	Freud, Dr Sigmund, 144, 187
Enterprise, family atmosphere, 136	Friends
Equanimity, 90	emotional stress, educational
Esophagus	influence, 68–69
tightness of lower muscles, 20	loss of, aging persons, 175-76
tightness of upper muscles, 19–20	Frost, Robert, 135
Executives, emotional stress, 162-63	Fundamental emotions, 59-60
Experiences, new, need for, 193-95,	battle emotions, 61
199	cheerful, 62
Explanation period, adequate	effect, 60-61
psychotherapy, 211-12	immaturity, from, 61
F2/	unfilled basic needs, from, 16
F	
m	G
Fact distinguished from fancy,	Gall-bladder-like pain, emotionally
quality of maturity, 79-81	ınduced, 23-24
Family	Gas pains, emotionally induced, 24–26
asset rather than liability, making,	
203	Giving attitude, quality for maturity,
atmospheres that produce stasis,	78
135-40	Glands
affection, 138	emotions produce disease through,
cheerfulness, 138-39	38–52
confidence, 139	endocrine, 39
discipline, 139	pituitary, 39-41
enterprise, 136	adrenocorticotrophic hormone,
human enterprise, 136-37	47–51
mutual enjoyment, 140	diuretic hormone, 41-42
simplicity in living and	somatotrophic hormone, 42-47
enjoyment, 135-36	
turning defeat into victory,	H
137-38	Half-way man, emotional stress, 164
	•

Hobbies Learning-maturity concept, 206-207 adequate psychotherapy and, aging persons, 179 developing, 106-107 comparison, 210-13 application of common Hormones, 40, 41 adrenocorticotrophic (ACTH). denominator and, 208-10 Libbman, Dr E, 31 47-51, 53, 54, 56 Liddell, H S, 14-15 stress disease, 48-51 counteracts STH, 43, 44, 47 Living a richer life, principles, 97-125 adversity, meeting, 116-17 diuretic, 41-42 optimal balance, 53-54 conversation, cheerful and pleasant, good emotions produce, 56 developing, 114-16 somatotrophic (STH), 42-44, 54, 56, decision, meeting problems with, 169, 188 117-20ACTH counteracts, 43, 44, 47 hobby, developing, 106-107 prolonged STH stress, 44-45 irritation, avoiding, 122 stress disease, 44-47 liking for people, developing, 112-14 Housing for the aging, poor, 176 physical apprehension, avoiding, Human enterprise, family atmosphere, 136-37 100-104 planning, need for, 121-22 Hunter, John, 11-12 Hyperventilation syndrome, 34-37 present moment an emotional success, making, 120-21 Hypothalmus, 18 satisfaction, 107-11 Ι simplicity of living, 97-100 work, learn to like, 104-106 Love need for, basic, 182-87, 198-99 sexual importance, 185-86 fundamental emotions from, 61 sexual, in matriage, 152-54 M Marinage. for maturity, 72 sex before, handling, 155-57 161 - 67sexual immaturity in, 152-54 Infection stress, emotional stress sexual maturity in, 157-60

Tatrogenic illness, 7 Ill-health, fear of, aging persons, 175 Immaturity Independence, responsible, quality Industrial system, emotional stress,

versus, 46 In-law domination, family

atmosphere, 133-34 Irritation, avoiding, 122 Ivy, Dr Andrew C, 23

James, William, 9 Job insecurity, aging persons, 173 Jung, Dr Carl Gustav, 187

Kelly, Di G Lombard, 160 Kill-joy family atmosphere, 127-28

Laborers, emotional stress, 164-65 Lange, Dr., 38

sexual difficulties before, 149-50 Masturbation, 150-51 Maturity adaptability, 81-82 aging persons, 178-80 co operation, 74-76 definite attitudes and, 82 developing, 84-96, 204-205 emotional stasis and, 69-70 fact distinguished from fancy, 79 - 81family atmospheres that produce, 135 - 40family influence, 126-41 flexibility, 81-82 giving attitude, 78 hostile aggressiveness overcome, 77-79 misconception of, 70-72 qualities that make for, 72-82

	7.7		
Maturity (con't)	Nervous system, emotions and (cont)		
responsible independence, 72	blood vessels, 27-29		
sex and, 142-60	cardiospasm, 20		
biology and civilization, 142-44	colon, 22-23		
difficulties before marriage,	gall-bladder-like pain, 23-24		
149-50	lump in throat, 19-20		
handling, before marriage,	muscle tension, 18-19		
155-57	neck pain, 19		
immaturity in marriage, 152-54	skeletal muscles, 29-31		
masturbation, 150-51	skin trouble, 28-29		
perversion, 151–52	stomach pain, 20		
restraints are necessary, 143-44	Neurodermatitis, 28-29		
sophistication, immaturity of, 145–49	New experiences, need for, 193-95, 199		
urge not mainspring of human	О		
being, 144-45	011		
sexual, 76–77, 155	Optimal hormone balance, 53-54		
ın marrıage, 157–60	good emotions produce, 56		
Miracles, good emotions and, 56-57	Overbreathing, emotional, 34-37		
Moore, A V, 14-15	P		
Muir, John, 98	Pain		
Muscles	"appendicitis," emotional, 24		
blood vessels, emotional manifesta-	colon, emotionally induced, 22-23		
tions in, 27–29	gall-bladder-like, emotionally		
esophagus	induced, 23-24		
tightness of lower, 20	gas, emotionally induced, 24-26		
tightness of upper, 19-20	muscle tension and, 18-19		
neck, pain in, 19	neck, 19		
skeletal, emotional manifestation	sensitivity to, 31-32		
ın, 29–31	stomach, emotionally induced,		
stomach, emotional manifestation	20-22		
ın, 20–22	People, liking, 112-14		
tension, pain and, 18-19	Perversion, sexual, 151-52		
Muscular rheumatism, 29–31	Pituitary gland, 18, 39–41		
Mutual enjoyment, family	adrenocorticotrophic hormone,		
atmosphere, 140	47-51, 53, 54, 56		
Myofibrositis, 29–31	counteracts STH, 43, 44, 47		
	stress disease, 48-51		
N	diuretic hormone, 41–42		
Natural History of Selbourne, 111	somatotrophic hormone, 42-44		
Neck pain, emotionally induced, 19	ACTH counteracts, 43, 44, 47		
Needs, basic psychological,	prolonged STH stress, 44-45		
fulfillment, 182-200	stress disease, 44–47		
creative expression, 189-91, 199	Planning, need for, 121-22		
fill your own, 204	Pleasantness, 90		
love, 182-87, 198-99	Present moment, emotional success,		
new experiences, 193-95, 199	making, 120-21		
recognition, 191-93, 199	Psychic stressors, 41		
security, 187-89, 199	Psychoanalysis, 212–13		
Self-esteem, 195-98, 200	R		
what to do about, 198-200			
Nervous system, emotions and, 18-33	Recognition, need for, 191-93, 199		
"appendicitis," emotional, 24	Religion, emotional stasis and, 123-24		
belching, 26–27	Research, endocrine, future of, 51		
-			

Resignation, 90 Responsible independence, quality for maturity, 72	Stress, emotional, 40-41 ACTH disease, 48-51 educational failure, due to, 68-69
S	emotional stasis versus trouble, 67-68
100 11	executives, 162-63
Satisfaction, learning, 107–11 Saul, Dr. Leon Jr., 72 fn	family atmospheres that produce, 127-34
Schools, emotional stress, educational	anxiety, 132-33
influence, 69	complaining, 132
Security, need for, 187–89, 199	cutical, 128-30
Self-esteem, need for, 195–98, 200	dislike, 130-31
Selfish egotism, family atmosphere, 181–32	fear, 132-33
Selye, Dr Hans, 39, 40, 41, 42, 44, 49,	ın-law domination, 133–34
54, 165	kill-joy, 127-28
Senility, 169–72	selfish egotism, 131-32
Sex, 142-60	half-way man, 164
biology and civilization, 142-44	increases with the years, 168-69
difficulties before marriage, 149-50	industrial system, 161-67
handling, before marriage, 155-57	infection, emotional stress versus, 46
immaturity in marriage, 152–54	laborers, 164-65
love basically important, 185-86	prolonged ST H, 44-45
masturbation, 150-51	STH disease, 44–47
maturity in, 76-77, 155	stressors and, 40–41
in marriage, 157-60	Stressors, stress and, 40-41
perversion, 151-52	Styloid process, 31
testraints are necessary, 143-44	Substitution therapy, 5-7
sophistication, so-called	Superficial emotions, 59-60
immaturity of, 145-46	Symptoms, emotionally induced
trouble with, 146-49	illness, 7–8
urge	single, single emotion producing,
controlling, 203	12
not mainspring of human being, 144-45	production, 16
Ser Manual, 160	Tetany, 35, 37
Simplicity in living, 97-100	Thoreau, David, 98
family atmosphere, 135-36	Thought-control, conscious, 85–90
Skeletal muscles, emotional	practicing, 201–202
manifestation in, 29-31	Throat, lump in, emotionally
Skin trouble, emotionally induced,	induced, 19-20
28-29	Trouble, emotional stasis versus,
Somototrophic hormone (STH),	67-68
42-44, 54, 56, 169, 188	v w
ACTH counteracts, 44	
prolonged STH stress, 44-45	Ventilation period, adequate
stress disease, 44-47	psychotherapy, 212-13
Sophistication, so-called	Virus infection 41
immaturity of, 145-46	White, Gilbert, of Selbourne, 98, 111
trouble with, 146-49	White, Dr Paul, 54-55
STH, see Somatotrophic hormone	Whitman, Walt, 98
Stomach pain, emotionally induced,	Wolf, Dr , 38
20–22	Wolff, Dr., 38
Story of the Adaptation Syndrome,	Work, learn to like, 104-106
39 fn.	Worry, accidents and, 165